Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RAM TEERTH JAN-MAY 1964 G.K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112555

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RF-854

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112555

112555

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव जाति के उत्थान का प्रतीक
हिन्दी जगत् का सर्वोत्तम मासिक

सम्पादक—
योगीराज
उमेशचन्द्रजी

रामतीर्थ

वर्ष—५—अंक १०
जनवरी १९६४

इस अंक का मूल्य
[illegible]० न. पै.
वार्षिक शुल्क ५ रु.
डाकव्यय सहित

टेलीफोन
सम्पादक
व्यवस्थापक } 62899
विज्ञापन
तार—प्राणायाम दादर

लेख	लेखक	पृष्ठ
वैदिक प्रार्थना	संकलित	८
उमेशवाणी		९
मनोबल बढ़ाने के महत्वपूर्ण उपाय	सम्पादकीय	१३
काव्य और संगीत	राजेन्द्रकुमार पाटनी	१७
अमरत्व प्राप्ति	के. मुरार	२२
गीत के देवता (कविता)	राजेन्द्रसिंह चौहान	२६
पाप पुण्यका स्वरूप	लक्ष्मीनारायण अलौकिक	२८
बच्चों के बाल	प्रभाती	३७
नारी	मंगल आनंद	४०
कबीर	अजय वर्मा	४४
अर्धनारीश्वर	विजय	५१
मानव सभ्यता के युग में	सुरेशचन्द्र माहेश्वरी	५५
रामनाम पंचामृत	गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर'	६१
मेरा अपराध	हरिहरप्रसाद बरियार	६९
भूले हुए हम (कविता)	नामवर	७६
रोटी और स्वास्थ्य	डा. कुलरंजन मुखर्जी	७८
जब हावड़ासे पहले पहल रेल चली	[illegible]	८२
जिन खोजा तिन पाइयां	कु. मु. महानुभाव	८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख	लेखक	पृष्ठ
मारक और तारक	[illegible]	९१
धर्म बाधक है या साधक	भास्करानन्द शास्त्री	९८
विश्वात्म का उत्सर्ग	जयमूर्तिसिंह	१०९
रामचरित मानस	टीकाकार योगीराज उमेशचन्द्रजी	१२१
सर्वश्रेष्ठ भक्त	वि. गु. नारायण खेडकर	१३१
मृत्युका स्वरूप	श्याममनोहर व्यास	१३५
गर्भाशय विकृति	नन्दकिशोर शर्मा	१४१
आत्मबल	लक्ष्मीकान्त मिश्र	१४८
जीवन और साहित्य	रामस्वरूप खरे 'दीपक'	१५५
विवाह	वासुदेव तिवारी	१६२
आनन्द प्राप्तिका मूल स्रोत	रामेश्वरप्रसाद सिन्हा	१६७
पाठकों के अभिमत		१७२
प्रश्नोत्तर	सम्पादकीय कलम से	१७४
धर्मोपदेश	स्वामी रामतीर्थ	१८८
लोकमान्य तिलक	श्रीपाद शास्त्री	१९३
आश्रम समाचार	संवाददाता द्वारा	२०१

मुखपृष्ठ का परिचय

श्री रामतीर्थ योगाश्रम के साधना कक्ष में साधकगण साधनारत दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

विशेष सूचना

लेखक महानुभावोंने रचना भेजने से पहले "लेखकों से" पृष्ठ को अवश्य पढ़ लेना चाहिये। अपनी रचना के अंत में अपना पूरा नाम व पता लिखना नहीं भूलना चाहिये। बिना नाम पते लिखे रचना छपने में नहीं आवेगी। सिर्फ रचनाएँ ही निराला मुद्रक १४०, आर्थर रोड बम्बई ११ के पते पर भेजें।

सम्पादक श्री योगीराज उमेशचन्द्रजी ने निराला मुद्रक १४० आर्थर रोड बम्बई ११ में मुद्रित कर, श्रीरामतीर्थ योगाश्रम के लिये विन्सेन्ट स्क्वेर स्ट्रीट २ बम्बईनं.१४ से प्रकाशित किया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता जनार्दन का सद्भावनाहस्त

श्री रामतीर्थ योगाश्रम विगत २९ वर्षों से जनता जनार्दनके तन-मन विकासार्थ जिस जी तोड़ प्रयत्न में लगा है, उसी सेवा से प्रभावित होकर उसके सेवा पूर्ण हाथों को अधिक शक्तिशाली बनने हेतु

दिसम्बर मास में प्राप्त सद्भावना राशि

१-श्री नरेन्द्र मूलजी और दुलेराय मूलजी बम्बई १५) रु.
२- ,, बोरिस वेन्डफ पेरिस (फ्रान्स) ११-१५
३- ,, के. जी. पिण्डोलिया नैरोबी (केनिया) २०-१०
४- ,, सरोजिनी ए. दांडेकर वाशिंग्टन (अमे.) २५-००
५- ,, राजेश्वरी द. सिन्हा जार्जटाउन (गायना) ३०-००
६-कु. स्नेहलता एम. कागळ धौलपुर ?७-००
७- ,, अरुण सी. देशपांडे नई दिल्ली ३५-००
८- ,, चिदंबरराव व. शेणै बेंगलोर ५-००
९- ,, अम्बालाल नि. जैन राजकोट ११-००
१०- ,, सिकंदर उस्मानखान अमृतसर ११-००
११- ,, रबेलो फर्नांडिस बम्बई २५-००
१२- ,, सोराबजी डी. आरसीवाला कराची २५-००
१३- ,, बमन यु. दारुवाला हैदराबाद (सिंध) ५१-००

सद्भावनाराशि निम्न पते पर भेजें:—
श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर, बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रामतीर्थ' मासिक में स्वीकार करने योग्य मुख्य विषय—

शारीरिक रोग निवारण, सशक्त एवम् सदानिरोगी मानसिक रोग दूर करके मन की शांति, एवम् आत्म साक्षात्कार करने योग्य, उपरोक्त लाभ प्राप्त करा देने योग्यअष्टांग योग, (यम, नियम आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधी, राजयोग, भक्ति योग, लय योग, मंत्रयोग, शिवस्वरोदय, वेद उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, महात्माओं का जीवन चरित्र एवम् उपदेश, प्राकृतिक चिकित्सा, (आकाश, वायु, तेज, जल तथा पृथ्वी द्वारा इलाज) महिलाओं के जीवन सुधार के लिये, बालकों के संस्कार सुधारने के लिये, अनुरूप लेख, कहानी, धारावाहिक उपन्यास, गीत, कविता, निबंध, प्रवास वर्णन, नाटक, धर्मकथादि रचनायें स्वीकारकी जाती हैं कागजकी एक ओर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखी हुई रचनायें भेजनी चाहिये, अश्लील विषयोंकी रचनायें स्वीकार नहीं की जायेंगी।

विशेषः—अन्यत्र प्रकाशित रचनायें रामतीर्थ मासिक के लिये न भेजें केवल स्वीकृत रचनाओं की सूचना एक मास बाद दी जाती है, अस्वीकृत रचना को वापस मंगाने वाले लेखकों को पोस्टल टिकिट साथ में अवश्य भेजना चाहिए, स्वीकृत रचनायें समयानुकूल छपेंगी, लेखकों को चाहिये कि वे इस विषय में वारंवार पत्र लिखने का कष्ट न लें, रचना प्रकाशित होने के बाद, रचना जिसमें छपी होगी वह मासिक अंक, और आश्रम की ओर से निर्धारित किया गया पुरष्कार भेजा जायेगा, रचना में लिया गया कोई द्रष्टांत हो तो वह किस ग्रन्थ के आधार से लिया गया है यह अवश्य लिखें। अन्य पत्र पत्रिकाओंमें रामतीर्थ मासिककी रचना अन्य भाषाओं में अनुवादित की इच्छावालोंको रामतीर्थ मासिकके संपादकसे लिखित अनुमति लेना आवश्यक है रचना भेजनेका पताः निराला मुद्रक १४०, आर्थर रोड बम्बई ११.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकांस

१. 'रामतीर्थ' अंग्रेजी मासकी पहली तारीख को प्रकाशित होकर ग्राहकों को डाक से भेजा जाता है।

२. वार्षिक शुल्क रु. ५ विदेशों के लिए १५ शिलिंग अथवा रु. ७॥ है।

३. रामतीर्थ का नया वर्ष अप्रैल से शुरू होकर मार्च में पूरा होता है। परन्तु ग्राहक किसी भी मास से बन सकते हैं।

४. ग्राहकों को अंक विशेष देखभाल से भेजा जाता है तिस पर भी यदि किसी को १५ तारीख तक अंक न मिले तो अपने डाक घर से पूछिए वहाँ से जो उत्तर मिले उसे हमारे पास भेज दीजिए ताकि उस पर गौर किया जावे।

५. पताबदलने के लिए कमसे कम १५ दिन पूर्व सूचना साफ साफ अक्षरों में लिखे पतेके साथ मिलनी चाहिए। वह भी अधिक समय के लिए पता बदलना हो तभी हमें लिखें।

६. ६५ न० पैं० मिलने पर ही नमूना अंक भेजा जाता है परदेशवालों को एक शिलिंग भेजना चाहिए।

७. पत्र व्यवहार करते समय ग्राहक अपना पता तथा ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

८. वार्षिक शुल्क मनीआर्डर से भेजना लाभदायक है क्योंकि वी० पी० से एक तो रजिस्ट्री खर्च लगकर ६ रु० पड़ेगा दूसरे देरी से अंक मिलेगा तथा विदेश में वी० पी० तो होती ही नहीं।

९. रामतीर्थ के साथ पुस्तकें आदि नहीं भेजी जातीं।

१०. व्यवस्था सम्बन्धी समस्त पत्र व्यवहार निम्न पतेपर करें।

व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रामतीर्थ मासिक, श्रीरामतीर्थ योगाश्रम, दादर

रोगों से मुक्ति पाने के लिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे अवश्य पढ़िये

योगिक—प्राकृतिक चिकित्सा डाक व्यवस्था विभाग

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ उठाकर शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्त बनिए।

शारीरिक एवं मानसिक रोग निवारणार्थ रोगी योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा के आधार से अपने रोग निदान के डाक द्वारा लिखित सलाह निम्न नियमानुसार ले सकते हैं।

१–व्यक्तिगत रूपसे निदान पूछने के लिये प्रथमबार ५) रु. फीस होगी, दूसरी बार ३) रु. और फिर हर बार के लिए दो रुपये फीस होगी।

२–रोगी को इसके अन्तमें छपी बातों का उत्तर स्पष्ट रूप से अलग कागज पर लिखकर भेजना होगा।

३–रोगी को फीस मनिआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर से ऊपरोक्त पते पर स्पष्ट निर्देश के साथ भेजने होगी।

४–रोगी को उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी मेंसे जिस भाषा में चाहिए उसके लिए लिखना चाहिए।

५–प्रश्नावली रजिस्ट्रीसे भेजनी चाहिए और उत्तर भी रजिस्ट्री से ही भेजा जायगा सामान्य डाक से भेजी गई प्रश्नावली खो जाने की जवाबदारी भेजने वाले की होगी विदेश से प्रश्नावली भेजने वालों को डाकव्यय के लिए अतिरिक्त धन भेजना होगा।

६–योगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा विभाग की सलाह और सूचनानुसार रोगी को पथ्य पालन करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७–फीस देकर इलाज कराने वाले रोगी को निदान की शुरुवात से विवरण रखना होगा और मांगने पर उसे दे देना होगा।

८–रोगी को योगिक उपचार, और प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी के लिए हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती मराठी में छपे उमेश योगदर्शन ग्रंथ को अपनी इच्छित भाषा में रु. १५–५० मनि आर्डर द्वारा भेजकर उपरोक्त पते से मंगाना पड़ेगा।

रोगी को सलाह पूछने के लिए निम्न बातों को स्पष्ट करके भेजना चाहिए।

रोगी का नाम व पता, उम्र, वजन, ऊंचाई। मल बद्धता रहती है? अपचन है नींद गाढ़ी आती है? शरीर में अशक्ति है? रात को स्वप्न आता है? रात को कितने घंटे सोते हो? दिन को कितना समय सोतें हो? वीर्य दोष है? शरीर में कोई चर्म रोग है? कफ विकार है? पित्त विकार है? वात विकार है? कोई मानसिक चिंता है? शरीर में जड़ता है? स्मरण शक्ति कैसी है? मांसाहारी या शाकाहारी? विवाहित अथवा अविवाहित? हाथ पैर के तलुवे गरम या ठंडे रहते हैं? पेशाब का रंग कौनसा है? केवल बौद्धिक परिश्रम है अथवा शारीरिक? प्रातः भ्रमण, तैरना, और कोई व्यायाम चालू है? स्नान ठंडे या गरम जल से करते हो? दारू, गांजा, तम्बाकू, सिगरेट बीड़ी, तपकीर, चाय आदि का व्यसन है? पहले कौनसा रोग हुआ है? शिरदर्द कबसे है? वर्तमान रोग का विवरण? वर्तमान में कौनसी दवा चालू है। कभी प्राकृतिक अथवा योगिक चिकित्सा करवाई है? कब?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भद्रकर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक - **रामतीर्थ** योगीराज श्री उमेशचन्द्रजी

वर्ष ५] जनवरी १९६४ [संख्या १०

वैदिक-प्रार्थना

अपश्यं गोपामनि पद्यमान मा च पराच पथिभिश्चरन्तम् ।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः ॥

ऋ. वे. आ. सू. १-१६४-३१

भावार्थ—यथा गोपाल पशुधन रक्षण के लिये सावधान रहता है और जैसे सूर्य निरलस अपनी किरणों के साथ सारे लोक में व्याप्त बनकर सबका रक्षण करता हुआ अपनी उदय अस्त गति को धारण करता है वैसे ही वह सर्व रक्षक पालक पिता परमेश्वर है जिसका मैं दर्शन करता हूँ। वह परमात्मा सर्व रक्षणार्थ विविध मार्गों से गमनागमन करता है और अपनी मायिक शक्तियों के साथ इन लोकों में व्याप्त बनकर घूमता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

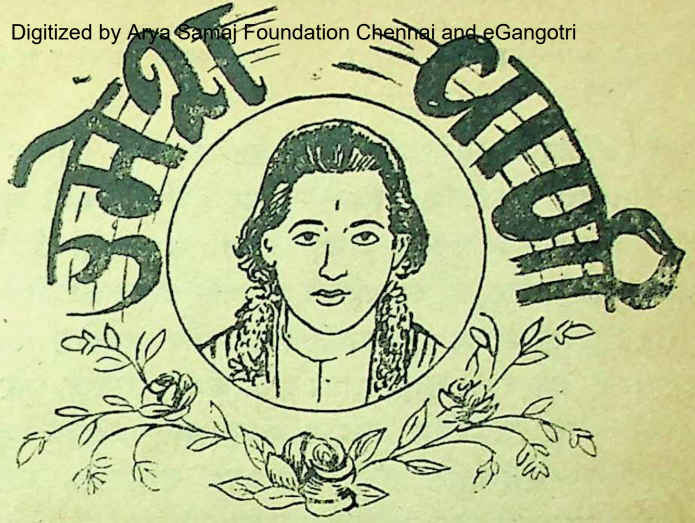

(२०७) मानव-जीवन प्रकृति और परमात्मा की ओर से प्रदत्त एक अलभ्य सुअवसर है। यह प्रकृति की नित्य नूतन विकासोन्मुख सत्ता का साक्षी और प्रभु के दिव्य प्रकाश का प्रतिबिम्ब है। हमें इसका सदुपयोग कर प्रकृति और प्रभु के नित्य साक्षात्कार के आनन्द से अनुप्राणित रहना चाहिये। यही जीवन की सार्थकता है।

(२०८) "सादा जीवन और उच्च विचार" की कहावत यथार्थ है। जिन लोगों का आचार-व्यवहार तदनुसार चल रहा है, वे निस्सन्देह इस कहावत के महत्त्व का अनुभव कर रहे हैं।

(२०९) "सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात्" का आदर्श जीवन को माधुर्य रस से सराबोर बनाकर प्रसाद गुण संपन्न बनाता है। सत्य और प्रिय वाणी जीवन की सुवास है। सत्य और प्रिय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीवन-लक्ष्य बनाने से आशा और उत्साह की प्रेरणा मिलती है।

(२१०) ईश्वर-भक्ति और सन्तों का समागम, योगाभ्यास और सततोद्योग जिसके जीवन-सहचर होंगे, वे कभी निराश नहीं हो सकते। उनकी आशा तथा आत्मश्रद्धा निरन्तर जाग्रत रहेगी और कर्ममय जीवन की ओर प्रवृत्त करेगी।

(२११) जो मानव सदाचार, संयम और तपोनिष्ठ जीवन बिताता है, वह स्वयं सुखी होता और अपनी सन्तान, परिवार पड़ोसी आदि के लिये आदर्श प्रेरणाभूति बनकर उनका कल्याण करता है। व्रत, तप, संयम आदि जीवन की कसौटी हैं, जो जीवन को सिद्ध और सफल बनाती हैं।

(२१२) श्रेय और प्रेय जीवन की दो प्रमुख प्रवृत्तियां हैं। दोनों के बीच विशाल गहरी खाई है। श्रेय मानवीय वृत्तियों को उर्ध्वमुखी बनाकर संयत आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रवृत्त करता है और प्रेय भोग विलासों में निरत रखकर जीवन वास्तविकता की ओरसे पराङ्मुख कर पतन की ओर ले जाता है।

(२१३) "परमात्मा घटघटवासी है, प्राणिमात्र के हृदय में प्रतिष्ठित है" जब यह भावना दृढ़मूल हो जाती है, तब मनुष्य सबमें सर्वत्र प्रभुके दर्शनकर सबके प्रति हार्दिक प्रेम प्रकट करता है।

(२१४) सुखकी परिभाषा क्या है और संसार में किसको सुखी माना जायेगा और दुःख क्या है और सुखी किसको कहा जायेगा? क्या ऐसा सम्भव है कि किसीको आजीवन सुख ही सुख मिला हो, कभी दुःख का सामना न पड़ा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा क्या ऐसा उदाहरण जगत् में प्रस्तुत है जहां नित्य दुःख अपनी चरम सीमापर पहुँचा हो, सुखका लेश भी न हो। सुख--दुःख के समन्वय से ही इस जीवन का निर्माण हुआ है-यदि सच मुच वे हैं तो, क्योंकि योगियों ने सिद्ध कर दिया है कि मानव उस दिव्यानुभूति पर पहुँच सकता है, जहां न सुखजन्य कलरव है और दुःखजन्य आर्तनाद। योगसाधन से अधिकारी साधक 'जीव' कोटिसे ऊपर उठकर 'शिवत्व' की भूमिकापर पहुँच जाता है।

(२१५) सर्वशक्तिमान् प्रभुका सदैव स्मरण करते रहना चाहिये। उसकी सत्ता और प्रेरणा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। जीवात्मा परमात्मा के हाथ की कठपुतली है—खिलौना है। ऐसी श्रद्धा हृदय में धारणकर अनासक्त भावसे कर्मभूमि में निरन्तर प्रवृत्त रहना चाहिये।

(२१६) इस जगत् में हमें जो भोग--प्रसाधन प्राप्त हुये हैं, वे प्रभुकी कृपा के फल हैं, अतः उनका उपभोग त्यागपूर्वक करना चाहिये। "तेन त्यक्तेन भुंजीथा"—यह उपनिषद्वाक्य इसी अर्थ का प्रतिपादक है। यही जीवन की सामंजस्यपूर्ण स्थिति है। इससे मानव को उपराम मिलता है। प्रबल भोगेच्छा बन्धन में डालती है, जो दुःखद है। भोग--साधनों की प्रचुरता भोगवृत्ति का उसी तरह अधिकाधिक उद्दीपन करती है, जैसे घी से अग्नि।

(२१७) मानव इस संसार में न कुछ लेकर आया है और न कुछ लेकर जायेगा, अतः यह विचार होता है कि अर्थ--कामादि भोगवस्तुओं के पीछे क्यों पागल हो रहा है और एतदर्थ अकथ्य कहन अनुचित कर्म, और नाना प्रकार की अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविवेकी प्रवृत्तियों में लगा रहता है।

(२१८) भगवान् मानव को पद--पद पर दुःखानुभूति क्यों कराता है? इसलिये कि जगत् के नाशमान अनित्य भोगों से विरक्त होकर अलौकिक अविनश्वर आनन्दधाम की खोज में प्रवृत्त हो। मानव मुक्ति--मार्गका अनुगमन तभी करता है, जब उसे भोगेच्छा-तृप्तिके पीछे महान् कष्ट उठाना पड़ता है।

(२१९) जो सच्चा भक्त है, वह भगवान् पर पूर्ण विश्वास रखता है और संसार के किसी भी संकट या कठिनाई की कसौटी का समय आनेपर विचलित नहीं होता। परन्तु जो सांसारिक भोगवस्तुओं में लीन हैं, वे थोड़ा संकट देखकर भी विचलित हो उठते हैं और सोचने लगते हैं कि कहीं हमारे यह सुख-भोग के प्रसाधन छिन न जायें

(२२०) संसार में भौतिक सुख की आशा क्यों की जाये योंकि यह सुख कल्पनाप्रसूत है और कल्पना एक आभास मात्र है न कि वास्तविकता। श्रम और पुरुषार्थ के द्वारा उपलब्ध साधनों में तृप्त और मग्न रहना ही सुख है।

(२२१) आलस्य और प्रमाद मानव जीवन के लिये अभिशाप है। यह तमोगुणजन्य हैं। जिस मानव या जिस देश में इसका प्रभाव जम गया है, वह कभी सच्ची स्वतन्त्रता और तन्मूलक सुख-समृद्धि और शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। स्वतन्त्र और निरापद सुख-समृद्धि का विधान वही कर सकते हैं, जो शक्तिशाली हैं, कर्मशील बुद्धिशाली हैं, तेजस्वी हैं, वर्चस्वी हैं। आलसी और निकम्मे लोग एक ही आघात लगनेपर ढेर हो जाते हैं। क्या ऐसे लोगोंको राष्ट्र का सामर्थ्य कहा जा सकता है? कदापि नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

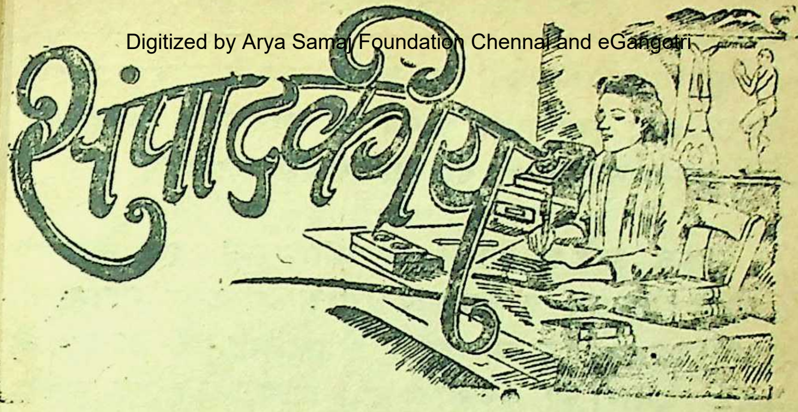

मनोबल बढ़ानेके महत्वपूर्ण उपाय

आधुनिक युग में विज्ञान की प्रगति के साथ २ सभ्य समाज के नरनारियों में मानसिक बीमारियां बढ़ गई हैं। मानसिक बीमारी दुर्व्यसन, दुष्कृत्य, मजबूरी, आघात आदि कारणों से हुआ करती हैं बीमारी का प्रभाव इन्द्रियों एवं शारीरिक अवयवों पर पड़ता है फलतः किसी भी कार्य में मन न लगने से कोई प्रगति नहीं हो पाती। व्यक्ति बीमारी से छुटकारा पाने के लिये अनेक प्रकार की दवाएं लेता है पर कोई लाभ नहीं होता तो जंत्र-मंत्र, जादू-टोना, देवी-देवता आदि की मानता, आशीर्वाद, दर्शन, प्रसाद, ताबीज, भस्म आदि से आराम पाने के लिये दौड़ धूप करते हैं। अंत में हताश-निराश होकर अपने भाग्य को कोसते हुये अपने समस्त जीवन को नीरस बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुदरत का नियम है कि विना कारण के कार्य नहीं हुआ करता, अतः सर्व प्रथम कारण की जानकारी आवश्यक है फिर उसके निवारण का दृढ़ निश्चय प्रथम उपाय है।

मन न माने तो शरीर को योगाभ्यास द्वारा परिश्रम दीजिये। सत्संग व सच्छास्त्र (गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद्, पातंजल योगदर्शन, योगवाशिष्ठ,) के अध्ययन से मनके विचारों को उच्चगति दो। क्रोध, लोभ, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष से परे रहिये। जहांतक बन सके परोपकार में समय लगाइये।

प्राणायाम और मनोबल

प्राण वश में होने से मनोबल बढ़ता है और मन वश में होने से प्राण का बल बढ़ता है। अतः प्रातःकाल स्नान के बाद संध्या करते समय अनुलोम विलोम प्राणायाम ३ से १२ बार और सायंकाल अथवा रात्रि में भोजन के ३० मिनिट पहले ३ से १२ बार तक करें। पूरक, कुंभक, रेचक, उड्डीयान बंध, जालंधर बंध और मूलबंध के साथ ४–१६–८ मात्रा (सेकंड) के साथ प्राणायाम करें। यह मर्यादा आरम्भावस्था वालों के लिये है। अभ्यास बढ़ने के बाद मात्रा को बढ़ा सकते हैं। प्राणायाम से सप्त धातुएँ शुद्ध बनती हैं। अवयवों में बल बढ़ता है। उससे मानसिक शक्ति बढ़ती है। जिससे मानसिक बीमारियों के कारण दूर होते जाते हैं। मनोबल बढ़ाने योग्य विचारधारा बढ़ती जायगी। जीवन की उन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का राजमार्ग प्रशस्त होगा।

मानसिक बीमारी पुरानी हो अथवा नई हो। निराशामय जीवन के विचार दुःखप्रद हैं। प्रथमतः आश्रय आशामय विचारों को देना होगा। 'यह दिन भी जायगा' इस कहावत के समान वर्तमान कालमें आप भले ही सुखी अथवा दुःखी हों, यह सुख दुःखका संसार एक दिन अवश्य बदल जाने वाला है। सदा सुखी रहने के लिये अभ्यास और वैराग्य को महत्व देना होगा तथा गृहस्थी जीवन को भी मोह रहित बनाना होगा।

विचारों का चमत्कार

कारण और प्रत्यक्ष-स्थूल रूपसे अनुभव द्वारा विचार परिवर्तन करना होगा। विचारों में शक्ति का भंडार रहता है। विचारों से जीवन का परिवर्तन होता है। असद् विचारों पर सद्‌विचारों की जय के लिये सदा प्रयत्नशील रहना चाहिये। भय के विचारों से समस्त शरीर के अवयवों का संकोच होकर शरीर कंपायमामान होता है। आनन्द-उल्लास के विचारों से सारे शरीर का रोमांच होकर मध्याह्नकाल के जल कमल के समान सर्वांग विकसित सुशोभित-देदीप्यमान शरीर बनता है।

अमूल्य बचनामृता

प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठकर किसी भी आसन पर मेरुदंड, कमर और सिरको सम रेखा में रखे सुखपूर्वक बैठ जाइये फिर ५ बार दीर्घश्वास-प्रश्वास का अभ्यास करिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर सामान्य श्वास-प्रश्वास की गति रखकर यदि आपको नौकरी नहीं मिल रही तो ५१ बार विचार कीजिये कि अल्पावधि में अच्छी नौकरी मिलेगी और अवश्य मिलेगी। इसी प्रकार जो कोई भी कामना स्वार्थ अथवा परार्थ की आपके मनमें है उसका ५१ बार विचार कीजिये।

विचारों की सिद्धि के लिये याद रखें।

प्रातःकाल, मध्याह्न तथा सायंकाल अथवा सोते समय ५१-५१ बार उपरोक्त प्रकार से विचार कीजिये। फल प्राप्ति के लिये सतत श्रद्धापूर्वक अभ्यास को चालू रखने की आवश्यकता है। ५१ बार से अधिक विचार करेंगे तो अधिक लाभ होगा। उपरोक्त विचार करते समय अन्य विचारों को प्रश्रय देने से फलसिद्धि में बाधा होगी। तैलधारावत् विचारधारा की आवश्यकता है। विचारधारा के केंद्रीकरण के लिये गुरु निर्देशित कोई मन्त्र अथवा प्रतीक को सामने रखिये फिर मन के केन्द्रित होने पर उपरोक्त विचार कीजिये। शांतस्थान को चुनकर नित्य एक ही जगह तथा समय में धीरे २ समय बढ़ाते हुये आगे बढ़िये तो सब प्रकार से आप सुखी बनकर मनोबलशाली बन जायेंगे।

ए. एच. व्हीलर के रेल्वे बुक स्टालों पर
रामतीर्थ मासिक मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य और संगीत

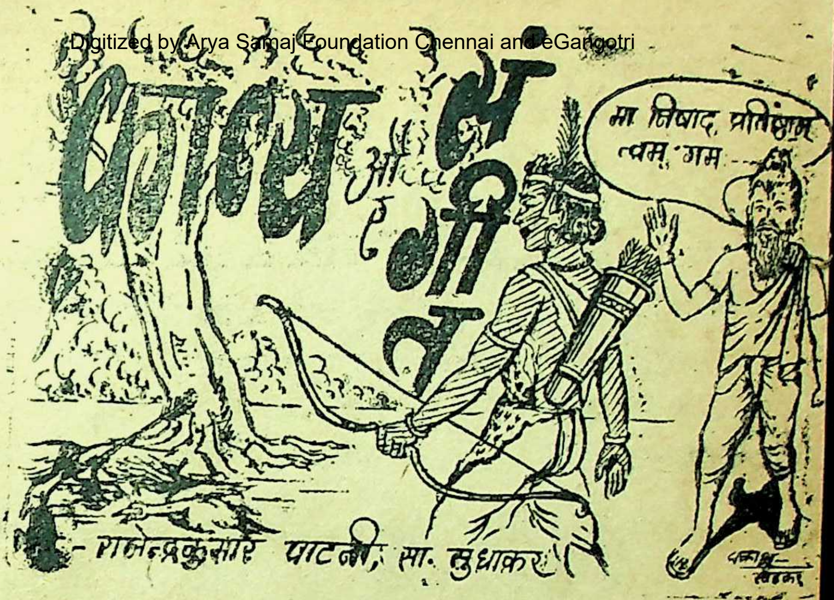

– राजेन्द्रकुमार पाटनी, सा. सुधाकर

अनुभूति की सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति ही कला है। कला मानव जीवन की सफलता परिपूर्ण अंश है एवं 'काव्य' कलाओं का प्रतिनिधि है। किन्तु क्या संगीत कला काव्य कला से श्रेष्ठ नहीं? यह विचारने योग्य है। गहरे पैठने पर हमें ज्ञात होगा कि काव्य एक मधुर स्मृति है और संगीत मधुर स्मृति का कर्णप्रिय नाद। दोनों कलाएँ अपने आप में बिखरे हुये मोती हैं, किन्तु एक होनेपर कलाविदों के गले का हार नयनों की ज्योति एवं प्रकृति का अपूर्व संयोग है। मानव हृदय की भावनाओं का उच्छ्वास ही काव्य या संगीत है।

सब भूतों का रस पृथ्वी है, पृथ्वी का रस जल है, जल का रस औषधियां हैं, औषधियों का रस पुरुष है, पुरुष का रस वाणी है, वाणी का रस ऋग्वेद है, ऋग्वेद का रस सामवेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सामवेद का रस उद्‌गीथ या मानवीय हृदयस्थ भावनाओं का उच्छ्‌वास है। जितना गाया हुआ काव्य साहित्य अथवा संगीत है, सब ओंकार है और जो कुछ ओंकार है वही सब गाने की चीज़ है। सम्पूर्ण सृष्टि में यही एक मुख्य स्वरगान है और इसी में चारों वेद काव्य एवं संगीत निकलते हैं।

निषाद के बाण से काम मोहित क्रौञ्च पक्षी का वध हुआ देखकर महर्षि बाल्मिकी का हृदय करुणा से आप्लावित हो उठा और उनके मानस से संगीतपूर्ण स्वर लहरी कानन में गूंज उठी—

मां निषाद प्रतिष्ठांत्व गमः शाश्वति समाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्॥

इतना कहते ही नारद प्रगट होते हैं और विश्व संगीत के ओज से परिपूर्ण रामायण की छन्दबद्ध रचना प्राप्त होती है।

विश्वगुरु एवं नोबल विजेता टैगोरने भी काव्य का उद्‌गम संगीत को ही चुना है और इसीलिये उनके काव्य में संगीत का आमूलचूल मूल्यांकन पाया जाता है। एक दिन प्रातः रविबाबू को ज्ञात हुआ कि सारा विश्व एक गीत है, और उनकी हृदय माधुरी से संगीत की अविकल धारा फूट पड़ी—

"फुलेर मते अपनि फुटा ओ गान
हे आमार नाथ एइ तो तोमार दान
ओगे से फूलदेखिया आनन्दे अभिभासि
आभार बोलिया उपहार दिते आसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमि निजे हाते तारे कलैल, अमेले केदामि
दया करे प्रभु राख मोर अभिमान"।

"भगवान् पुष्प की भांति आप ही आप प्रफुल्लित होनेवाला यह गीत आपका ही वरदान है। इस फूल को देखकर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ। यह मेरा है और इसलिये मैं आप को अर्पण करता हूँ। आप इसको अपने हाथ से लें, प्रेम से हँसे। प्रभो दया करो मेरा अभिमान रक्खो।"

कविता में संगीतमय रस या कवित्व भरना प्रासादिक कवियों का ही कार्य है। कौन श्रेष्ठ है? 'को बड़ छोट कहत अपराधु' संगीत कला में सप्तस्वरों के उतार चढ़ाव से मनकी कलियों को खिलाया जाता है। संगीतरूपी फुहार जब मन रूपी कमलपर पड़ने लगती है तो ऐसा लगता है मानो देह में रक्त के प्रत्येक परमाणु आनन्द विभोर होकर उछल-कूद मचा रहे हों।

स्वयं सृष्टिरचियता का नाम भी कवि है। वह 'कु' धातु से बना है, उसका अर्थ है गानेवाला। मां के उदर से उदित होते ही बच्चे का रोना भी क्या मानव में काव्यमयी संगीत की चाहका परिचायक नहीं? माता जब पुत्रशोक से विह्वल होकर आवाज निकालती है तो उसे भी हम दुःखपूर्ण संगीत की संज्ञा दे सकते हैं।

महान् विदूषक आस्टीन का मत है आपके विचारों से जितना कुछ भी साहित्य हैं सब संगीत से ओतप्रोत होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये, न सिर्फ शब्दों में नहीं बल्कि सारी संयोजनाएँ संगीतमय हों। आपका मत है कि संगीतमय विचार ही कविता है। जो इस बात को समझता है वही कवि है। मनुष्य की सच्चाई और उसकी तत्वदर्शिता ही वह युक्ति है जो उसे कवि बना सकती है, आप अपने हृदय कमल में आसीन होकर देखो सारी मानवीयता ही संगीतमय पाओगे।

कोकिल कंठ जयदेव कहते हैं—

"पश्यति दिसि, दिसि रहिसि भवन्तम्" यहाँपर देखने वाले शब्द इसलिये कहे गये हैं क्योंकि दृश्यकाव्य में हाव-भाव में जो अनुभव दृष्टिगत होते हैं वे भी संगीत से ही उठते हैं। महाकवि पोप के अनुसार "द साउन्ड शुड सीन मैन इको टु द सेन्स"

भक्तिकाल के सिरमौर बाल-किशोर संयोग वियोग के श्रेष्ठतम उजागर कवि सूरदासजी के पदोंका तो सारा सार ही संगीत की दिव्य पताका के नीचे विराजित है।

"पिय बिन नागिन कारीजात।
कबहुँ कन्हैया होति जुन्हैया,
डसि उलटी ह्वै जाव,
सूरस्याम बिन व्याकुल विरहित,
भर-२ लहरे खात।

गण वृत्त के श्लोक में संगीत की महिमा अन्ततक चरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ हुई है। कोई विरहिनी बाला प्रियतम की वियोगाग्नि में कामज्वर से सन्तप्त होती हुई अपनी सहेली से कह रही है "सखीरी घनसार मेरे शरीर से उतार ले, मोतियों का हार निसार ले, इन कमलों से क्या होगा प्यारी ये ठण्डे २ मृणाल भी बस रात दिन कष्ट से मुझे वियोगिनी ही कहते हैं।

कोमलकान्त की पदावली में ताज बीबीकी रचना भी संगीतमय काव्य का सरलतम उदाहरण है।

"कल्माकुरान छोड़ आई हूँ तिहारे पास
भाव में भजन में ही दिन को बिताउंगी
गाउंगी तिहारो गीत नेकु न लजाउंगी
खाउंगी प्रसाद प्रभु मन्दिर में जाय जाय
माथ पे तिहारी पद रज को चढ़ाउंगी
आशिक दिवानी बन रीझि पग पूजि–पूजि
कान्ह की मैं ताज राधिकासी बन जाउंगी

हम अपने साहित्य संगम के अवलोकन के आधार पर इस निष्कर्ष पर आते हैं कि 'पोएट्री इज द बेस्ट वर्ड्स इन दैयर बेस्ट आर्डर' उदाहरणों के आधार पर काव्य और संगीत का यह युगल जोड़ा संसार की रमणीक कृतियों में एक महत्व पूर्ण स्थान रखता चला आ रहा है, जब भी कविता अपने कोमल पदोंपर बिखर पड़ती है तो अपने आप ही संगीत की मधुरिमा कवियों के मुखचन्द्र से मुखरित हो उठती है।

卐 इति 卐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विषय पर प्रकाश डालने से पहले हमारे सामने एक प्रश्न उठता है वह यह कि "मृत्यु" क्या चीज है? विद्वानों का मत है कि शक्ति के अभाव का नाम ही मृत्यु है। लेकिन अधिकतर लोगों को कहते हुए सुना जाता है कि मृत्यु शक्तिशाली है। इस दृढ़ विश्वास ने ही इसे और प्रबल बना दिया है लेकिन इसे शक्तिशाली कहना भूल है। वास्तव में यह प्रबल नहीं है।

काल को बलवान् मानते हुये भी सभी यह चाहते हैं कि हम अमर हो जायें लेकिन फिर भी वे भूल जाते हैं—

"नश्वर देह जगत् है नश्वर देख रहे हैं सपना"

लेकिन इतना होने पर भी मानव के हृदय में अमरत्व की भावना वास कर रही है।

आज का युग दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आज के मानव ने अपनी बुद्धि से क्या नहीं कर दिखाया। आज से २० वर्ष पूर्व जो बात असम्भव मानी जाती थी वह आज सम्भव हो गई है। नैपोलियन ने स्वयं कहा है "असम्भव नाम का शब्द मूर्खों के शब्द-कोष में पाया जाता है।" असम्भव कुछ नहीं है, यत्न करते जाओ। जैसे बड़े बड़े वैज्ञानिक और नई वस्तुओं के आविष्कार में संलग्न है ठीक इसी तरह से कुछ लोग अमरत्व की भी खोज में लगे हैं। मनुष्य का सबसे बड़ा लक्ष्य अमरत्व को पा जाना ही है। मानव को उस दिन कितनी प्रसन्नता होगी जब वह मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेगा लेकिन इस बात का अनुमान करना भी बहुत कठिन है। दूसरी ओर कई व्यक्ति इस मत के भी अनुयायी हैं कि अमर होना व्यर्थ है क्योंकि रोग निर्बलता बुढ़ापा आदि तो शरीर के साथ लगे ही हैं। इन कारणों से वे मृत्यु को ही पसन्द करते हैं। पर सोचने की बात तो यह है कि जो व्यक्ति मृत्यु पर विजय पा सकेगा क्या वह सांसारिक दुःखों से मुक्ति न पा सकेगा? मेरे मत से तो ऐसा हो ही नहीं सकता। हां जिन साधनों द्वारा हम "मौत" पर विजय पायेंगे उन्हीं साधनों से हम कमजोरी बुढ़ापा आदि को भी दूर कर देंगे।

कई विद्वानों के दृष्टान्तों को देखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अमर होना असम्भव नहीं है। बहुत से योगी तो ऐसे हैं जो कहते हैं कि हिमालय के जंगलों में सैकड़ों महात्मा हैं जो अमर हैं। पुराने व्यक्ति अमर हुये हों या न हुये हों, हिमालय में अमर व्यक्ति हों या न हों पर उपरोक्त ज्ञान को जानकर, उसके अनुसार चलकर और उसपर ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास रखते हुये हम अवश्य अमर हो सकते हैं।

इस बात को तो पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि मृत्यु शक्ति-हीन है। संसार की किसी भी वस्तु पर अगर दृष्टि डाली जाये और सब में देखा जाये कि कौन सी वस्तु शक्तिहीन है तो हमें शक्ति-हीन वस्तु मृत्यु ही मिलेगी। जहां पर सर्व प्रकार की शक्तियों का अभाव हो समझ लीजिये वहीं पर मौत का वास है। जबतक जीवन है तबतक शक्ति है। जीवन और शक्ति में कोई भेद नहीं है, दोनो एक हैं। जहां शक्ति का वास है वहां मृत्यु का वास नहीं हो सकता। जीवन के सामने मौत कुछ नहीं कर सकती। जीवन आता है आत्मा से लेकिन आत्मा और जीवन दोनों एक ही हैं। आत्मा के वास से ही शरीर में सब प्रकार का बल रहता है और इस : लोप होते ही सब शक्तियों का लोप हो जाता है।

उपरोक्त तथ्य से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आत्मा शक्ति का खजाना है। इस शक्तिमयी आत्मा का निर्जीव पदार्थ मृत्यु कुछ नहीं कर सकती। आदमी की मौत उसके विश्वास पर ही निर्भर करती है। क्योंकि यह के दिल और दिमाग में सर्वदा भरा रहता है और भरा हुआ है कि उसे एक न एक दिन तो मौत के मुंह में जाना ही है इसलिये उसे एक न एक दिन मरना ही पड़ता है। अगर हम अपने हृदय में यह विचार कर लें कि मौत हमारा कुछ नहीं कर सकती तो वास्तव में वह कुछ नहीं कर सकता। मौत तो शक्तिहीन है अतः यह कुछ नहीं कर सकती, कर तो वह सकता है जिसके पास कुछ बल हो। कुछ भी हो मौत के बल-हीन होनेपर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोग इस से डरते हैं। व्यक्ति का विश्वास ही उसे मार डालता है इसकी सत्यता निम्न उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है।

एक गांव में दो समूह थे। एक का कहना था कि मौत व्यक्ति के भय पर ही निर्भय है पर दूसरे दल का कहना था कि यह झूठ है। तब एक निर्भीक व्यक्तिने कहा अगर ऐसी बात है तो इस का प्रमाण बताओ। तब पहले वाले दल ने उस निडर व्यक्ति को एक लोहे का खूंटा देते हुए कहा कि आधी रात को यह खूंटा कब्र पर ठोक कर वापिस आओ। वह व्यक्ति गया और खूंटा जमीन पर (जहां कब्र थी) ठोकने बैठ गया लेकिन उसकी असावधानी से उसकी धोती का कुछ हिस्सा खूंटे के साथ जमीन के अन्दर फंस गया। ज्योंही वह व्यक्ति खूंटा ठोककर उठने लगा तो वह आगे न बढ़ सका क्योंकि धोती का कुछ हिस्सा जमीन के अन्दर रह गया था। तब अचानक उसके दिल में विचार आया कि उस मृतक शरीर ने उसे पकड़ लिया है। वह वहीं भय के कारण मर गया। जब वह व्यक्ति लौटकर न आया तो प्रातः होते सब व्यक्ति उसे देखने गए लेकिन उसे मरा हुआ पाया। इस बात से सिद्ध हो गया कि डरनेवाले का विश्वास ही उसे मार डालता है।

इन सब बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यदि अपने हृदय से मृत्यु के भय को निकालकर इस बात का पक्का निश्चय कर लें कि आज से हम अमर हो गये और मृत्यु जैसी शक्तिहीन वस्तु हमारा कुछ नहीं कर सकती तो वास्तव में हमने काल पर विजय प्राप्त कर ली क्योंकि वीर पुरुष मरकर भी अमर रहते हैं लेकिन डरपोक आदमी दिन में १०० बार मरते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ मौत के देवता ! आओ-आओ ।
अपनी सारी शक्ति, लाओ—आओ ॥

मुझे ले चलो वहाँ,
"रामतीर्थ' हो जहाँ,

हो सुविधा के हिमायती या सदाचार के !!
आचार के उपासक या काले व्यापार के !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी, आपकी नहीं, सबकी कहानी है।
सजी फुलवारी आज जो, कल विरानी है॥

श्रम-सित मानव को, लाओ-आओ।
चमकीले प्रासादों में भरमाओ॥

अतृप्त किनारे हों,
ज्ञान के दुलारे हों,

बिखरी निराशा का, दिल में न दाग हो!!
निठुर पिपासा की, हृदयमें न आग हो!!

अंक में समाजाऊँ, आशा की जलन न हो।
लोभ-क्रोध-काम की, मन में घुटन न हो॥

मजबूरी की दास्तान ले जाओ।
आध्यात्म की निशानी दे जाओ॥

ओ मौत के देवता! आओ-आओ।
अपनी सारी शक्ति, लाओ-आओ॥

---

* मननीय विचार *

संसार में न कुछ बुरा है न भला, बल्कि हमारे। विचार ही उन्हें भला बुरा बना देते है।

* * *

मूर्ख स्वयं को बुद्धिमान् समझते हैं जबकि बुद्धिमान् स्वयं को मूर्ख मानता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति में सबसे ज्यादा विवाद, विचार और दिलचस्पी का विषय है—पाप पुण्य का स्वरूप।

किसी आकस्मिक विपदा, दुर्घटना, अर्थहानि, स्त्री, पुत्र की मृत्यु आदि अवसरों पर लोगों के मुँह से स्वभावतः छूट पड़ता है—प्रारब्ध !...प्रारब्ध !! इस प्रसंग में प्रारब्ध का अर्थ हुआ पापों का अथवा दुष्कर्मों का परिणाम। पाप चाहे इस जन्म के हों या पूर्व जन्म के, किंतु हैं तो पापों का ही फल। इसी तरह किसी भयंकर दुर्घटना से बालबाल बच जाना, संकट काल में अकस्मात धन लाभ, प्रथम बार अनैतिक, असामाजिक कार्योपरान्त प्रतिष्ठाभंग एवं निर्धारित दण्ड से बचाव, ऐश्वर्य प्राप्ति एवं वांछित सुखोपभोग की लब्धि आदि को जनसाधारण पुण्य अथवा सुकर्मों का प्रतिफल मानता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

....लोक और शास्त्र की दृष्टि में मानवता के मूलभूत तत्वों को अपने जीवन में तदाकार करना अर्थात् मानवीय परम्परा का समुचित निबाह निर्वाह ही सत्कर्म सम्पादन और पुण्य संचय का आदि स्रोत माना गया है। इसके विपरीत उच्छृंखल वृत्ति को धारण करना—मानवीय परम्पराओं एवं मनुजत्व की सीमा का अतिक्रमण ही अकर्म, दुष्कर्म और पाप है।....

पुण्य से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है अतएव पुण्य को सर्व सुखों का दाता कहा गया है। तथा पाप आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक पीड़ाएँ प्रदान करता है अतः उसे हम दुखों का मित्र और ऐश्वर्य पथ का शत्रु मानते हैं। ...पाप-पुण्य से दुख-सुख का होना न होना सभी मानते हैं, जानते हैं, किन्तु पाप पुण्य से सम्बन्ध रखने वाले कर्मों का स्पष्ट रूप आज जगती के समक्ष कहाँ? इस सम्बन्ध में लोगों की विचित्र धारणाएँ असली सत्य को दबाये बैठी हैं। यही कारण है कि 'मानवता' का शोरगुल तो सभी ओर से सुना जा रहा है किन्तु उसकी ऋतंभरी बोधगम्य परिभाषा 'एक सत्य अनेक मत—अनेक मत एक सत्य' की आत्मकष्ट परक चादर में ढकी हुई है या उसके कुहरे में अस्पष्ट है।

यह सर्वथा सत्य है कि सदियों से चले आ रहे अंध-विश्वास एवं प्रतिस्पर्धा की भावनाओं में उत्पन्न हुए विविध सम्प्रदायों ने कर्म अकर्म और पाप पुण्य की वास्तविक परिभाषा को वैगल्य-बुद्धि-जन्य सहज अज्ञान से बहुत कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रच्छन्न कर रखा है। उन्हींका कौशल मानिये कि आज लोक में पाप पुण्य को किसी निश्चित कर्म का उत्तर रूप नहीं माना जाता। यदि हम सभी सम्प्रदायों की विभिन्न एवं विचित्र मान्यताओं को, जो पाप पुण्य के तथ्य विहीन हास्यास्पद, घुणाक्षर ज्ञानमूलक मार्गों का नेतृत्व कराते हैं, संकलित करना चाहें तो पता नहीं यह लेख कितना बड़ा हो जाए।

किन्तु इससे हमारा अभिप्राय यह नहीं कि पाप पुण्य से सम्बन्ध विविध विचारसरणियों में सचाई है ही नहीं। सचाई और शाश्वत सिद्धान्तों की छाया है तो सभी में, पर उनका अस्तित्व; सम्प्रदाय निर्माण कौशल और उनकी चित्ताकर्षक विशेषताओं के बीच सुरक्षित नहीं रह पाया है। क्योंकि मानव स्वभाव हमेशा हर कार्य में सरलता ढूढ़ने का आदी है और वह उसीको अंगीकार करता है।

अब हम विषय के मूल में प्रवेश करेंगे। पाप पुण्य किन्हीं विशेष कर्मों का नाम नहीं है। 'विशेष' से हमारा अभिप्राय विविध सम्प्रदायों के मौलिक क्षेत्र में उपजायी हुई कर्माकर्म की मीमांसा से है। मनुष्य को मनुष्य के साथ किये गये कर्म, आचरण और व्यवहार का फल मुख्य रूप में एवं इतर जीवों के साथ किये गये आचरण का फल गौण रूप में प्राप्त होता है। इसलिये कि संसार में सर्वश्रेष्ठ योनि मनुष्य की ही है। मनुष्य योनि कर्मयोनि तो है ही साथ विशिष्ट सुखों की भोग योनि भी है। अन्य योनियां केवल अकर्म वाहक हैं, पापों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खुटाने का एक यत्न और यन्त्र मात्र। अतएव मनुजत्व धारण करना ही जीवन का चरमलक्ष्य माना गया है, जो सुखों का मूलकेन्द्र एवं जीवन प्रशस्ति का अन्तिम सोपान है। मनुजत्व अर्थात् जीवात्मा के अन्तर्ज्ञान का तेजोमय विकास और शांति तथा समृद्धि से पूर्ण निखार। सभी जीवों के साथ यथा योग्य वर्तना ही मनुजता का पहला और अन्तिम अध्याय है।

अस्तु! प्रत्येक विवेकशील, विचारवान एवं अध्यात्म ज्ञान के जिज्ञासु मानव को यह वस्तु स्मरण रखनी चाहिये कि मनुष्य को उसकी प्रत्येक चेष्टा, प्रत्येक कर्म और हर छोटी से छोटी क्रिया तक का फल (पाप पुण्य में परिवर्तित होकर) भविष्य की सम्पदा के रूप में प्राप्त होता है। मानव की कोई भी चेष्टा निरर्थक नहीं होती। मानव की हर चेष्टा, हर क्रिया उसके अनन्त भविष्य का निर्माण करती है। कर्मों का फल महान् एवं अनिर्वचनीय माना गया है। जैसे एक बीज बोने पर उसका फलविस्तार कई गुना होता है ऐसे ही मनुष्य को प्रत्येक अच्छे बुरे, सोद्देश्य निरुद्देश्य कर्म का उस श्रणी का अनन्त गुणा फल मिलता है यह इसीसे स्पष्ट है कि मानव की जीवायु लगभग १००वर्ष है। इसमें लगभग १०-१२ वर्ष तो वह होश संभालने में या अपने आपको पहिचानने में खो देता है। कहते हैं कि १२ वर्ष की आयु तक किये गये कर्मों का यथेष्ट फल कर्त्ता को प्राप्त नहीं होता। अस्तु। इस समय को निकालते हुए शेष जीवायु में किये गये कर्मों का फल जीवात्मा ८४ लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद भी उतार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं पाता इसीसे कर्मों की महिमा जानी जा सकती है। मनुष्य योनि में अच्छे कर्म करके जीवात्मा अनन्त वर्षों का मोक्ष सुख प्राप्त करने के बाद में भी पुनः बचे हुये सुखों को पुनः प्राप्त मनुष्य योनि में सेवन करता है। इसलिये शास्त्र आज्ञा देते हैं, गुरुजन, आप्तजन उपदेश करते हैं कि हे मानव तू अपने कर्मों को खूब सोच समझकर कर। कहीं ऐसा न हो कि अज्ञान से तू पथभ्रष्ट हो जाये और 'कृष्ण' कर्म में लिप्त रहकर अपने अनन्त भविष्य को संकट और पश्चाताप के जुए पर दाव लगादे।

आज के व्यस्त जीवन में (जिसकी तीन चौथाई वजह विलासिता और अकर्मण्यता है) मनुष्य यह अनुभव करता है कि उसे स्वाध्याय, सत्संग और ईशभक्ति करने का समय मिलता ही नहीं अतः वह अपने जीवन को सफल कैसे बनाये ! गंभीर विषयों में जनसाधारण पैठ नहीं सकता यह एक निर्विवाद सत्य है। इसी चीज को ध्यान में रखते हुये हम इस प्रसंग में उस सन्त को हार्दिक साधुवाद देते हैं जिन्होंने पाप पुण्य और दुखसुख के कारण की खोज इतनी सचाई और सरलता के साथ की है कि उनका यह पद हमारे कर्मों की तराजू ही बन गया। उनके कथन में सचाई ही सचाई है। देखिये—

चार वेद छह शास्त्र में बात लिखी हैं दोय।
दुख दीने दुख होत है, सुख दीने सुख होय॥

यह पद छोटा होनेपर भी महान् है, सरल होनेपर अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्तार की दृष्टि से बड़े महत्व का है। दुख देने से दुख होता है—सुख देने से सुख होता है। निश्चय ही सभी शास्त्रों का निचोड़ है यह। बिलकुल ठीक, सुखप्राप्ति की इस व्यवस्था में कोई आडम्बर नहीं, कोई झंझट नहीं, न किसी तरह का अविश्वास और संदेह ही। ....तुम किसी के साथ अन्याय, अधर्माचार मत करो—तुम्हारे साथ भी नहीं होगा। मन से, वचन से, कर्म से तुम किसी आत्मा को दुखी मत करो—तुम्हें भी कोई नहीं करेगा। तुम औरों को मन वचन कर्म से प्रसन्न और सुखी रखने का प्रयास करो—तुम्हें भी प्रसन्न और सुखी रखने का प्रयास दूसरे जन करेंगे। उपरोक्त पद एक ज्ञानात्मक प्रश्न को जन्म देता है जो हमारे कर्म प्रवाह में परिष्कार और संमार्जनी करता है। कितना आकर्षक एवं सरस है, यह पद—

करनी करे तो क्यों डरे, क्यों करके पछताय।
बोये पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय॥

संत और शास्त्रों का एक ही मत है कि फल कर्म का मिलता है, कोरे ज्ञान एवं निरुद्देश्य ईश्वर भक्ति का नहीं। ज्ञान को हम कर्म का प्रेरक, परिवर्तक एवं व्यवस्थापक मानते हैं। इसलिये मनुष्य को ज्ञान संग्रह की अपेक्षा कर्म संग्रह में प्रवृत्त होना चाहिये। घड़ा कैसे बनाया जाता है यह ज्ञान जब कुम्हार को हो जाता है तो वह घड़े बनाता और लाभ उठाता है। किन्तु यदि वह हमेशा ही औरों से घड़े बनाना सीखता रहे तो? यही न कि हम उसे मूर्ख अथवा बुद्धु कहेंगे? इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह कर्म अकर्म का ज्ञान मनुष्य को जब माता-पिता के उपदेश, गुरु की शिक्षा, शास्त्रों के स्वाध्याय एवं विद्वान मनीषियों का समीपता से हो जाता है तो उसे लाभ तो तभी होगा जब वह सुकर्म सम्पादन की सरिता में अवगाहन शुरू कर दे। उसके हित का पोषण सत्कर्मों में संलग्न होने पर ही है। हमेशा ज्ञान प्राप्त करनेवाला अथवा हमेशा ज्ञान और कर्मकाण्ड के ग्रन्थ पढ़नेवाला व्यक्ति यदि अपने कर्मों और आचरणों में मनुजता, सभी जीवों के प्रति आत्मीयता नहीं उतार पाता तो उस ज्ञान को क्या हम कालक्षेपक या मिथ्या-चार नहीं समझें? ईश्वर भक्ति के बारे में भी इसी चीज का पुष्ट रूप सामने आता है। ईश्वर भक्ति इसलिये नहीं की जाती कि उससे हमारे दैनिक अथवा पूर्वसंचित अपराध क्षमा होते रहें। प्रत्युत इसलिये कि हम पाप में प्रवृत्त ही न होवें। सांसारिक नाशवान वैभव हमें अपने पथ से न डिगाये यही कामना हम ईश्वर से करते हैं। भक्ति ज्ञान को सूक्ष्म शरीर में अधिष्ठित करके मन और बुद्धि को पवित्र बनाती है। किंतु हम चाहकर पापमार्ग की ओर बढ़ते रहें और संस्कार या अंधविश्वास के वशीभूत होकर कुछ समय ईश्वर भक्ति में लगाया करें तो क्या उसका कुछ उल्लेखनीय परिणाम निकल सकता है? कदापि नहीं, कदापि नहीं! दवा का नाम जानने मात्र से या आरोग्य की कोई पद्धति जानने मात्र से रोग ठीक नहीं हो जाता। इसी तरह दृढ़ संकल्प के साथ जहाँतक हम अच्छे रास्ते को अख्तियार नहीं कर लेते वहाँतक हमारे ज्ञान और भक्ति का कोई मूल्य नहीं बनता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम पाप पुण्य को समझने का एक और मार्ग देखते हैं। यह मार्ग न तो पेचीदा है न आडम्बर पूर्ण व्यवस्थाओं से आच्छादित। इस मार्ग पर चलने में न तो विशालकाय विविध ग्रन्थों के स्वाध्याय की आवश्यकता है न 'संशयात्मा विनश्यति' का भय ही। इस राजमार्ग का नाम है—आत्मानुकूल बर्ताव। हम दूसरों से अपने प्रति जैसे आचरण की अपेक्षा रखें, समझें या अनुभव करें वैसा ही आचरण हम औरों के (सभीके) साथ बर्तें। यही शुभकर्म एवं पुण्य संचय का सच्चा स्वरूप है। इसके विपरीत हम अपने साथ जिस व्यवहार को अनुचित, अनपेक्षित एवं अवांछनीय समझें वही अकर्म एवं पाप का स्वरूप है।.....कितनी सरल परिभाषा बन गयी। किन्तु इस परिभाषा को जीवन में, कर्मक्षेत्र में उतारने के लिये अपनी हर चेष्टा के बारे में लाभालाभ का निर्णय कर लेना अत्यावश्यक है। अधिक और अपेक्षित लाभ को ही महत्व दिया जाना चाहिये।

इस संदर्भ में एक बात और सामने आती है। हम किसी के साथ शुभ आचरण करें और वह अशुभ सोचे तो? किन्तु ऐसा कभी नहीं होता। और होता भी है तो समझना चाहिये कि वह हमारे भाग्य की वस्तु है। किसीका अहित सोचना या करना कदापि उचित नहीं है। यह बात पृथक है कि दुष्टों को उनकी बुद्धि ठीक करने के लिये योग्य दण्ड दिया जाये। यहाँ यह स्मरण रखिये कि कर्मफल कर्त्ता को छोड़ेगा नहीं। देखिये संत गा रहे हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो तोकू कांटा बुये, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥

हम प्रत्यक्ष में देखते ही हैं कि दूसरों का अहित सोचने वाले खुद ही अहित के गड्ढे में देर सबेर गिर जाते हैं। अंतमें सुखों के आधारभूत पुण्य सम्पादन की अनोखी कला कबीरदासजी इन शब्दों में प्रस्तुत करते हैं—

कबीरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजे, और ठगे दुख होय॥

शीशे के नल
शीशे की चद्दरे
शीशे की पट्टियां तार आदि

१" से १२" गोलाई के मुंहके सब तरह व साइज के सख्त शीशेके नल तथा चद्दरें बनाने वाले।

—: भारतमें सर्वप्रथम निर्माता :—

अशोक मेटल इंडस्ट्रीज

६ शिवडी क्रोस रोड, बम्बई-१५
फोन : ६३९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

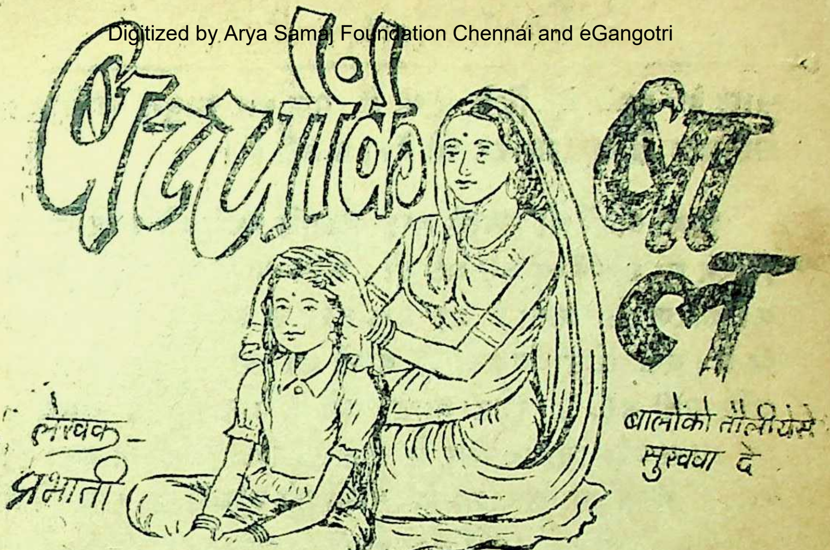

छुटपन में बालिकाओं के बाल सुन्दर, मुलायम और घने होते हैं, वे जब बारह-तेरह साल की होती हैं तो उनके बालों में प्रायः वह बात नहीं रह जाती। वे झड़ने लगते हैं या मोटे हो जाते हैं। माताओं को यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है, किन्तु यह अकारण नहीं है। यदि बचपन में शिशु के बालों की अच्छी तरह से देखरेख की जाय तो ऐसी खराबियां कभी नहीं उत्पन्न हो सकतीं।

प्रत्येक माता को चाहिये कि वह अपने बच्चों के बालों को हरदिन धोकर नरम तौलिए से सुखादे और मुलायम ब्रुश से उन्हें संवार दे। जब बाल बढ़ने लगें और कुछ बड़े हो जायें तो यह प्रतिदिन का धोना बन्द कर देना चाहिये। तीन-चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साल के बच्चे के लिये हफ्ते में एक बार साबुन आदि की सहायता से खूब मलकर धो देना काफी है।

बिना बालों को अच्छी तरह सुखाये बच्चे को इधर-उधर फिरने या खेलने-कूदने मत दो। कभी-कभी यह सर्दी जुकाम का कारण हो जाता है जो एक तरह से मां की असावधानी ही है। एक छोटी बच्ची के बालों को बहुत बढ़ने देना भी बुद्धिमानी नहीं है। छोटी बालिकाओं के बाल हमेशा समय २ पर आवश्यकतानुसार सिर से कुछ छोड़कर कैंची से कतरती रहो। नन्हीं बालिकाओं के बालों को बांधने की राय तो मैं कदापि न दूंगा। बालों को कैंची से कतरकर इतना छोटा करदो कि उन्हें बांधने की जरूरत ही न पड़े। यदि तुम्हें बच्ची के बालों को बांधने का ही शौक हो तो खूब कसकर मत बांधो। और न ऐसा बांधो कि खोलने में घंटों लग जाएँ। मैंने देखा है कि खूब कसकर बांधे जाने के कारण ही बहुतसी लड़कियां चोटी करवाने से डरती हैं। इससे नुकसान भी ज्यादा होता है। रात्रि में सोने से पूर्व तो कसे बालों को अवश्य ही खोल देना चाहिये। ताकि वह नन्हा मस्तक तकिये पर आराम से नींद ले सके।

यदि घर में कई बच्चे हों तो उन सबके लिये अलग २ ब्रुश या कंघियों का प्रबंध करो। देखा गया है कि एक ही कंघी इस्तेमाल करने के कारण एक बच्चे के बालों से उत्पन्न हुआ रोग सभी बच्चों को हो जाता है। लड़कियों को यह शिक्षा भी देना चाहिये कि वे शाला आदि जगहों में दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियों की कंघी से परहेज रखा करें।

यदि किसी बालक के बालों की जड़ में दाद या खाज हो जावे तो उस हिस्से के बालों को जड़ से कटवा दो और उस पर "आयोडिन" लगाओ। या नीम की पत्ती में उबाले हुये पानी से जबतक आरोग्य न हो जाय प्रतिदिन धोकर सुखाती रहो। यदि शीघ्र आराम होता हुआ न जान पड़े तो किसी चिकित्सक को दिखाओ।

बहुत-सी माताएँ बालकों के बालों में जूं या लीक देखते ही उन्हें जड़ से कतरवा देती हैं। यह ठीक नहीं है। सिर्फ इसीलिये सुन्दर और बहुत परिश्रम से बढ़ाये गये केशों को नष्ट कर डालना उचित नहीं है। आजकल बाजारों में बहुत से ऐसे अर्क मिलते हैं जिनके लगाने से जूं आदि नष्ट हो जाते हैं। किन्तु ऐसी दवाइयों के उपयोग से बालों को लगातार कई रोज तक धोना और कंघी करना अच्छा नहीं है। क्योंकि इन दवाइयों के अधिक उपयोग से बालों की जड़ें कमजोर पड़ जाती हैं।

छोटे बच्चों के लिये जहांतक हो सके सबसे उत्तम और लाभदायक साबुनों का ही व्यवहार करें सुगंधित और सस्ते साबुन की बहुत परवाह मत करो। क्योंकि ऐसे बहुत ही कम साबुन मिलते हैं जो चमड़े को हानि पहुँचानेवाली औषधियों से बचे हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याविदोंने अनेक रूपों में नारी तुम्हें परखा है। जिनमें अबला और सबला दो रूप ही प्रधान माने हैं। यों तो तुम पहेली और मायावनी भी हो। ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं। किसी कवि के शब्दों में—

अबला-जीवन! हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध-और आखों में पानी॥
सबला-जीवन! सत्य तुम्हारी यही प्रणाली।
हाथों में है मृत्यु और आखों में काली॥

कोमलता-कठोरता, दोनों तुम में हैं।

अहिंसा-करुणा-पोषकता-साथ ही उद्‌भट हिंसा, क्षेमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षयकारी घातकता। याने पालक साथ ही घालक।

ब्रह्मा की ब्राह्मी, विष्णुकी वैष्णवी तथा रुद्र की रुद्राणी। सत-रज-तम त्रिगुणमयी माया। फिर सिद्ध होता है कि विराट प्रकृति, मानव प्रकृति और व्यवहारिक प्रकृति इनमें भी ओत प्रोत। विश्व-अन्तरिक्ष में पूर्णरूपेण विस्तृत। सूर्य, शशांक के प्रकाशों में, उषा की अरुणाई में, सन्ध्या की स्निग्धता एवं नक्षत्रों की झिलमिलाहट में भी व्याप्त। विहंगावलि की चहक में, विकसित सुमनावलिपर भ्रमरावलि के मधुर गुञ्जन में भी तुम्हारी ही मोहकता दृष्टिगोचर हो रही है। उत्तुङ्ग पर्वत शृंखलाओं के कीटों में, धरती के अन्तराल में छिपे ज्वालामुखियों की विनाशकारी लावा में, सागर की ऊँची उच्छ्वासों में, नदियों की भयंकर गर्जनों में और पवन की विकराल आंधी में भी तुम्हारी ही कठोरता है।

कोमलता-कठोरता तो स्पष्ट हो गया। रही पहेली और मायावनी। सो पहेली तो वह है जिसका यकीन अप्रगट होवे। मानो तुम कुछ हो और परखने में भिन्न सिद्ध होवे। ऐसा दृष्टिगोचर भी कई स्थलों पर होता है। जैसे कभी तुम ताप देती हो-कभी शीतलता और कभी मुरझाये हृदयों में उल्लास भर देती हो। पता नहीं, कब तुम्हारा कौनसा रूप प्रगट और अप्रगट होवे, एक पहेली ही होती है। तभी मायावनी भी कहलाती हो। तुम्हारी सेवाओं, मृदुव्यवहारों द्वारा जगत् मोहित हो रहा है। सर्वस्व तुमपर न्यौछावर करते भी नहीं झिझकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत विभाजन काल में भी विष्णुने तुम्हारे ही रूप को अपना कर "पहेली और मायावनी"—तुम्हारे दोनों नामों को सार्थक किया था। असुरों को छलने के लिये इस प्रक्रिया से भिन्न और कोई सुन्दर मार्ग, शायद विष्णु को भी नहीं दिखा था, जिससे वे उन दुर्दैवों को परास्त करते।

फिर तो निश्चय ही जहां शान्ति, स्नेह, धैर्य, क्षमा, त्याग, सौन्दर्य, माधुर्य का प्रतीक हो। वहां शक्ति, तेज, कठोरता, भयंकरता, चंचलता, कर्कशता, दाहकता तथा मायावनी-पहेली भी तुम्हारी ही साकार विग्रह है।

धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र एवं समाजशास्त्र के आचार्योंने ठीक ही कहा है कि पुरुष समाज स्त्री जाति का सत्कार करे। क्योंकि तुम्हारी अनुकूलता पर ही विश्व का कर्म, धर्म सुरक्षित रह सकता है। संतति सृजन का प्रमुख भार जो तुम्हारे ही ऊपर है। सन्तानों के दोषयुक्त होने से विश्व के राष्ट्र अवनति पर पहुंचेंगे, फिर अशांति होगी, विश्व का सर्वनाश हो जावेगा।

परन्तु आज के युग में तो तुम्हें नारी से नर बना देना ही अभिष्ट माना जा रहा है। क्या हृदय से तुम इसे स्वीकार करोगी? तुम इस सत्कार से प्रतिष्टित होना चाहोगी! विश्वास नहीं होता कि जननी के पद को तुम सहर्ष छोड़ सको। तुम इस युग की पुकार को, पुरुषों के भ्रान्तिमूलक बहकावे को आसानी से समझ सकोगी। अपने मातृत्व के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान को कदापि नहीं छोड़ोगी। तुम्हारी सन्तानों को विनाश की ओर से फिर कौन रोक सकता है। तुम से ही अमरत्व की भी तो प्राप्ति होती है। जगत् तुम्हारे चिद्विलास में ओत-प्रोत है। सन्तानों के चित्त में व्याप्त जगत् की छाया तुम से ही प्रेरित है। समाज की सुव्यवस्था, दुर्व्यवस्था, शांति, अशांति, धर्माधर्म आदि तत्वों के जीम्मेदारी, तुम्हारी ही कर्तव्यनिष्ठा पर निर्भर है। यहां पर ही वास्तव में तुम्हारे सत्कार-तिरस्कार का प्रश्न उठता है। अमुक व्यक्ति ने माता का दूध सार्थक किया या लजाया, यही कहते सुना जाता है। नारी से नर बनने में तुम्हें फिर कौन पूछेगा-विश्व के इतिहास में जो आदर, प्रतिष्ठा तुम्हारे लिये है, कायम रहेगी, एक जटिल समस्या है।

अतएव तुम जननी के पदपर ही प्रतिष्ठित रहकर जगत को कल्याण की ओर अग्रसर करती रहना, न कि तितली बन चहुमुख नृत्य में तुम्हारी आस्था हो और कुछ विषयी पुरुष अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहें। जबकि अधिक से अधिक जन मत अपनी श्रद्धा, प्रेम एवं सत्कार की भावना तुम्हें जननी के पद पर ही आरुढ़ करने पर तत्पर हैं। वे नहीं चाहते कि तुम्हें आदर्श से विचलित कर तुम्हारी ही सन्तानों को कमजोर बनाया जाय। जिससे पतन अवश्यम्भावी हो जावे।

*** मननीय विचार ***

कुछ मनुष्य जन्म से ही महान् होते हैं, कुछ माहनता प्राप्त करते हैं और कुछ पर महानता लादी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(उदात्त मानवीय गुणों के गायक)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर

लेखक
अजय वर्मा

कबीर भारतीय धर्म-चेतना के अग्रणी एवं मुख्य स्तम्भ रहे हैं, जैसे ईसाई धर्म-चेतना के लूथर। जब कबीर का आविर्भाव हुआ; देश में साम्प्रदायिक भेदाभेद, जातिगत ऊँच-नीच, बाह्याचार एवं पाखंड का बोलबाला था। उनकी विद्रोही आत्मा को यह सब स्वीकार्य नहीं हुआ और उन्होंने उसका निर्भय एवं कठोर हो विरोध किया। वे कोई पंडित या तर्कशास्त्री नहीं थे किन्तु उनका ज्ञान व्यवहारजन्य तर्क एवं आत्मानुभव से परिवेष्ठित था। इसीसे उन्होंने व्याप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाह्याचार एवं पाखंड के विरुद्ध जेहाद छेड़ा तथा अपने आध्यात्मिक सिद्धान्तों का सृजन किया। किन्तु उनके आध्यात्मिक सिद्धान्तों की मूलधुरी उदात्त मानवीय गुण थे। उनकी सफलता का मूलमन्त्र ही चरित्रबल था। यही कारण है कि उनके साहित्य में, हमें केवल उनके आध्यात्मिक सिद्धान्तों का ही प्रतिपादन नहीं मिलता, अपितु आधे से अधिक साहित्य उदात्त मानवीय गुण या नैतिकता एवं चारित्र्य उपदेश में ही रच डाला है। कबीरने नैतिक एवं चारित्र्यबल पर जितना जोर या महत्व दिया है उतना अन्य किसी संत के साहित्य में देखने को नहीं मिलता।

कबीर बाह्य आडम्बरों की अपेक्षा—

"मन माला तन मेखला भय की करो भभूत।"

-का जहां उपदेश देते थे वहीं वे समदृष्टा होने एवं श्रेष्ठता को ग्रहण करनेवाली 'सुप बुद्धि' का उपदेश देते हुये कहते थे—

"साधु ऐसा चाहिये, जैसे सूप सुभाय।
सार-सार को गहि लहे, थोथा देय उड़ाय॥"

मानव मात्र के बीच परस्पर भ्रातृत्व, सद्भाव एवं सहिष्णुता हेतु प्रेम की कोमलतम एवं पुनीत भावना का होना आवश्यक है। प्रेम के बिना उक्त किसी भी भावना का उदय होना असंभव है। यही कारण है कि रुमी ने इश्क (प्रेम) की महानता का जिक्र करते हुये कहा है—

प्रेम चाहे मनुष्य से किया जावे या भगवान् से, अन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में ईश्वर के दर्शन होते ही हैं।

सूफियों ने भी इश्क (प्रेम) को बालजाग की इस भावना में ही स्वीकारा है—

कहने का अर्थ है सूफी सारे ब्रह्माण्ड को प्रेममय ही नहीं मानते हैं अपितु स्वतः ईश्वर को इश्क (प्रेम) कहते हैं, जैसे अंग्रेजी में कहा गया है—

"लव इज गौड" अर्थात् प्रेम ही ईश्वर है।

कबीर भी प्रेम की इस कोमल भावना को उच्च महत्व ही देते हैं तथा इससे रिक्त मन को श्मशान का दर्जा देते हुये कहते हैं—

"जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।

साथ ही प्रेम की भावना को जीवित रखने हेतु वैर व घृणा नहीं करने की सीख दे, सलाह देते हैं—

"निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटि छवाय।"

और इसी क्रम में सहनशील होने की भी शिक्षा देते हुये कहते हैं—

"करगस सम दुरजन वचन, रहै संत जनटारि।
बिजुली परै समुद्र में, कहा सकैगी जारि॥"

प्रेम के समान ही दया एवं क्षमा भी उदात्त मानवीय गुणों की गणना में आते हैं। कबीर लोभ एवं क्रोध जैसे मानवीय दुर्गुणों का तिरस्कार करते हुये कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जहां दया तहं धर्म है, जहां लोभ तहं पाप।
जहं क्रोध तहं काल है, जहां छिमा तहं आप॥"

आप संतोष के आगे लोभ के जनक सभी प्रकार के धन का तिरस्कार करते हुये आगे कहते हैं—

"गोधन गजधन बाजिधन, और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान॥"

यही नहीं आप शील, संतोष, समदृष्टि एवं अच्छे आचार-विचार को ही नहीं उसके दर्शन या छूने को ही सभी तरह के कलह के विनाश हेतु रामबाण ठहराते हुये कहते हैं—

"सील संतोष सदा समदृष्टि, रहिन-गहिन में पूरा।
ताके दरस परस भय भाज, होइ कलेस सब दूरा॥"

आप सत्य की सर्वोत्कृष्ठता प्रतिपादित करते हुये कहते हैं—

"सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप॥"

सत्य के मार्ग का अवलम्ब सबसे कठिन काम है। हम सत्यवादी हरिश्चन्द्र के जीवन में इसकी स्पष्ट झांकी देख सकते हैं। शायद यही कारण होगा कि उन्होंने सत्य को सर्वोच्च तप बता उस पर चलने का उपदेश दिया।

कबीर जहां—

"लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
कहकर, विनम्र होने का उपदेश देते हैं, वहीं वे विनम्रता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त सुक्ष्मतर रूप को अपनाने की सलाह देते हैं। पाखंड व अभिमान त्यागकर मार्ग के पत्थर के समान होने हेतु कहते हैं किन्तु उससे राही को कष्ट हो सकने की सम्भावना से डरकर धूल के समान होने का उपदेश देते हैं। धूल भी उड़कर राही को लगती है इसलिये पानी होने तथा पानी में भी गरम-ठंडा होने का गुण होने के कारण खुद ईश्वर के समान होने का उपदेश देते हैं। लेकिन हरि (ईश्वर) सकल कर्ता है इसलिये उन्हें उसकी विनम्रता से भी संतोष नहीं होता है और इसलिये वे कहते हैं—

"हरिजन ऐसा चाहिये, हरि भजि निर्मल होय।"

अर्थात् इतना विनम्र होना चाहिये कि स्वयं ईश्वर उसे स्मरण कर निर्मल हो जावे। विनम्रता की इतनी सूक्ष्मतर भावना की अभिव्यक्ति अन्य संत में मिलना कठिन है।

कबीर किसी के भी प्रति विकार रखने को अनुचित ठहरा निर्विकार होने हेतु कहते हैं—

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय॥"

आप किसी के आगे हाथ फैला कुछ मांगने की याचिकी प्रवृत्ति के बारे में कहते हैं—

"आब गई आदर गया, नैन गया सनेहि।
ये तीनों तब ही गये, जबहिं कहा कुछ देहि॥"

रहीम ने भी तो इसी याचिकी प्रवृत्ति की निन्दा करते हुये कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रहिमन वे नर मर चुके, जो कहीं मांगन जात।"
कबीर जहां—

"ऋतु बसंत जाचक भया, हरषि दिया द्रुम पात।
ता ते नव पल्लव भया, दिया दूर नहीं जात॥"

कहकर, परमार्थी होने का उपदेश देते हैं, वहीं धीरज रखने की भी शिक्षा इन शब्दों में देते हैं—

"धीरे-धीरे रे मना, धीरे सबकुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय॥"

मनुष्य बहुधा दुखों से घबराकर या तो हताश हो जाता है या उससे बचने के लिये गलत राहपर चल पड़ता है। किन्तु ऐसा तब होता है जब उसमें बुद्धि गांभीर्य नहीं होता है। इसीलिये कबीर उपदेश देते हैं—

"देह धरे का दंड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञानते, मूरख भुगते रोय॥"

यही नहीं वे दुख या पीड़ा को भावी जीवन की भलाई या सुखमय होने की जननी ठहराते हैं, और कहते हैं—

"पीर सहे बिनु पदमिनी, पूत न लेत उछंग।"

कबीर जहां नैतिक भावना में सत्य, प्रेम, परमार्थ, निर्वैर, निर्विकार, दया, क्षमा, निर्लोभ, संतोष तथा निष्काम आदि गुणों को शामिल कर इनको जीवन में उतारने का उपदेश देते हैं, वहीं वे खान-पान में भी सावधानी बरतना महत्वपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मानते हैं। वे मदिरा की बुराई की चर्चा करते हुये कहते हैं—

"औगुन कहौं शराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय।
मानुष से पसुआ करै, द्रव्य गांठी को देय॥"

ऐसे ही आप मांस-भक्षण करने की आदत को भी बुरा बताते हुये कहते हैं—

"बकरी-पाती खात है, ताकि काढ़ी खाल।
जो बकरी को खात हैं, ताको कौन हवाल॥"

स्पष्टता इसके पीछे उनकी अहिंसक भावना का दर्शन भी होता है।

कबीर ने नैतिक एवं चारित्रिक, उदात्त मानवीय गुणों को ही अपने आध्यात्मिक सिद्धांतों की मूल धुरी बना, साम्प्रदायवाद को अनुचित ठहराया। वे नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान के बाद किसी सम्प्रदाय की आवश्यकता अनुभव नहीं करते थे। वे कहते हैं—

"सिंहों के लहंड़े नहीं, हंसों की नहिं पांति।
लालों की नहिं बोरियां, साधु न चलैं जमाति॥"

स्पष्ट है कि कोई भी मनुष्य जब उदात्त मानवीय गुणों से पूर्ण हो जावेगा तो उसे किसी सम्प्रदाय में रह उसके जन्मदाता के सिद्धान्तों पर चलने की आवश्यकता नहीं रहेगी। वस्तुतः पूर्ण मनुष्यत्व ही ईश्वरोन्मुख होनेकी पहिचान है तथा पूर्ण मनुष्यत्व, उदात्त मानवीय गुणों की फ्रेम में जीवन को मढ़ लेने से ही प्राप्त हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्धनारीश्वर

(वैज्ञानिक विश्लेषण)

भगवान् शिव को 'अर्धनारीश्वर' के नाम से भी स्मरण किया जाता है क्योंकि उन्होंने देवी को अपने आधे शरीर में स्थान दिया है। शिवमहिम्नः स्तोत्र की निम्न पंकियाँ इसका प्रमाण भी हैं—

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्।
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनियत देहार्धघटना—
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥

(अपनी लुनाई के भरोसे गिरिजा ने लखो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

योगसंतन मनका विकास कालजय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाप नहिं दाप लौ कुसुम धनु धारौ है,
संजम निरत पुरभंजन ! भयौ सो तहाँ
सामुहैं तिनूका सौ तुरत जारि घारौ है।
ताहू पै तिहारे तन आधे मैं निवास पाय
दास तिय कौ जो तुम्हैं करति बिचारौ है,
चारौ कहा, बरद ! बिचारौ पती गूढ़ बात,
मूढ़ जुवतीन की जमात निरधारौ है ॥)
॥ शिवमहिम्नः स्तोत्र, २३ ॥

लेकिन क्या कभी हमने सोचा है अर्धनारीश्वर नाम शिव अर्थात् पुरुष को ही क्यों दिया; उमा अर्थात् नारी को क्यों नहीं दिया ? दैहिक शास्त्र के आधार पर हम यह भी कह सकते हैं कि दोनों में भग और लिंग के अवशेष हैं। पुरुष को अर्धनारी बनाने की क्या आवश्यकता थी ? स्त्री को ही आधा पुरुष बना देते। जबकि लेखक पुरुष है उसको अपने आपको आधी औरत कहने में क्या मजा आया। यह रहस्यमय है। हो सकता है उसका ज्ञान हमारे पूर्वजों को प्रज्ञा द्वारा सीधा ही मिल गया हो जिसको शायद हम आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर परखने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आधुनिक दैहिकशास्त्र के अनुसार मानव प्राणी के प्रत्येक कोषा (Cell) में २४ जोड़े (अर्थात् ४८) क्रोमोसोम होते हैं। लेकिन शुक्रकीट तथा रजकीट में केवल २४ पृथक् क्रोमोसोम होते हैं। स्त्री के अण्ड में दो, एकसे विशिष्ट क्रोमोसोम होते हैं जिनका एक्स (X) क्रोमोसोम कहते हैं। लेकिन पुरुष में एक X तथा एक y दो क्रोमोसोम होते हैं। आधे शुक्रकीट में X तथा दूसरे आधे में y क्रोमोसोम होता है। इस प्रकार मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास एक X क्रोमोसोम है जो स्त्री के पास है, लेकिन दूसरा Y भी है जो स्त्री के पास नहीं है उसी के पास है।

बालक जन्म लेगा या बालिका इसका निश्चय यही विशिष्ट क्रोमोसोम करते हैं। यदि स्त्री का X तथा पुरुष का X क्रोमोसोम मिलता है तो बालिका उत्पन्न होती है। और यदि स्त्री का X तथा पुरुष का y मिलता है तो बालक उत्पन्न होता है। इस प्रकार नर या नारी का निश्चय पुरुष के विशिष्ट क्रोमोसोम पर आधारित है। शायद यही कारण हो कि शिव का 'अर्धनारीश्वर' का नाम दिया गया हो। और इसी कारण व्ही. एच. मोल्ट्राम ने भी अपनी पुस्तक 'द फिजिकल बेसिस आफ परसनलिटी' के पेज ३८ पर लिखा है—

'वीमेन आर वीमेन बट मैन इज हाफ वीमन फ्रौम द प्वाइन्ट आफ व्यू आफ क्रोमोसोमस, अर्थात् क्रोमोसोम की दृष्टि से पुरुष अर्ध नारी है।

यदि अंक-शास्त्र की दृष्टि से देखें तो 'अर्धनारीश्वर' नाम की सार्थकता का भी थोड़ा सा भान होगा ही। स्वरों को शून्य का अंक दिया जाता है लेकिन व्यंजनों को उनके वर्ग में स्थान के अनुसार जैसे 'ख' को २ क्योंकि अपने वर्ग में इसका दूसरा स्थान है, और 'ग' ३ इसका तीसरा स्थान है। इस प्रकार च वर्ग, ट वर्ग, तथा त वर्ग आदि में भी देते हैं। सुविधा के लिये तालिका भी दिये देता हूँ।

तालिका

१	२	३	४	५
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श
ष स ह

अब यदि अक्षरों को अंकों में परिवर्तित करना है तो अक्षरों के स्थान पर अंक रख दें। उनका योग कर दें। तो उसकी (शब्द की) संख्या मिल जायेगी जैसे 'लकी नम्बर' के लिये किया जाता है। यहाँ शब्द है 'अर्धनारीश्वर' जिसको अक्षरों में उसको अ र् ध न आ र ई श् व र लिखा जायेगा। उसकी संख्या होगी केवल २४, विश्वास न हो तो देखिये—

अ = ० सभी स्वरों को शून्य अंक देने के कारण
र् = २ तालिका में स्थान देखें
ध = ४
न = ५
आ = ०
र् = २
ई = ०
श = ५
व = ४
र = २

योग २४

इस प्रकार प्राचीन 'अर्धनारीश्वर' की धारणा तथा आधुनिक दैहिक-विज्ञान का मानव के विषय में जैविक (बायलौजी) दृष्टि से अंकन लगभग एकसा ही लगता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव सभ्यता के युग में

लेखक
सुरेशचन्द्र माहेश्वरी

विज्ञानाचार्यों ने मानवजाति को विश्वास दिलाया कि विज्ञान मनुष्य के जीवन से सारा कड़वापन निकाल फेंकेगा। यह वायदा झूठा तो नहीं था किन्तु सच्चा साबित अभी तक नहीं हो सका है। बुद्धिजीवी लोग समझने तो लगे हैं कि जब संसार की आधी जनता भूखों मर रही है, बची खुची आधी में से भी आधी जनता आधा पेट भोजन ही भर पाती है तब क्या जरूरत है कि अरबों रुपये चांद सितारों पर राकेट और स्पूटनिक भेजने पर खर्च किये जायें। हमारी प्रिय मान्यता कि विज्ञान की सभ्यता में ही हम अपने आपको उत्कृष्टतम रूप में फलाफूला बना सकेंगे, अब टूटती सी प्रतीत होती है। इस मशीनीयुग से पहले मानव कमसे कम आत्मसंतोषी आशावादिता और मानवीय प्रकृति में भोला भाला विश्वास तो रखता था जिसे वो आज सब कुछ लुटा चुका है। ठीक 'इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव एक नये सिरे से तथा एक नये तरीके से बनता तो जा रहा है, किन्तु दूसरी ओर बराबर ढहता भी जा रहा है।

मनुष्य के जब अभाव दूर होंगे, जब जीवन की अनवरत निराशाओं से उसे मुक्ति मिलेगी, जब विज्ञान के बूते पर स्वस्थ और सुखद आशा उसे अधिकार के रूप में मिलेगी तब (ऐसी आशा की गई) उसे दृष्टि का सन्तुलन मिलेगा और जीवन के प्रति उसकी आस्था बढ़ेगी। लेकिन विज्ञान द्वारा अभावों और निराशाओं से मुक्ति पानेवाली बात कब तक सोचने और समझने का फैशन बनी रहेगी ? विज्ञान के इस मशीनवाद में मानव जीवन एक कोलाहलपूर्ण अस्तव्यस्तता का प्रतीक बन गया है, विश्व का यह यांत्रिक चित्र विषाद रूमानी उद्दंडता का एक रूप है जिसे विश्व अनन्य ध्यान नहीं दे रहा है या उनकी अहंताओं की तुष्टि नहीं कर पा रहा है।

कल्पना कीजिये कि विज्ञान की कार्य सीमा अलडुअस हक्सले के 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' तक पहुँच जाय, जिसमें बच्चे कांच की नलियों में पैदा किये जा सकें, हर तरह की बड़ी से बड़ी भी मशीन ही बनाये, भोजन के लिये अनाज की जरूरत ही न पड़े बल्कि कुछ रासायनिक पदार्थों की बनी सिर्फ दो टिकिया खाकर ही काम चलाया जा सकें, सामाजिक बन्धन का कोई चक्कर ही न हो, किसी को भी माता-पिता, चाचा-ताऊ, भाई-बहिन आदि रिश्तों के बारे में बिलकुल भी ज्ञान ही न हो, तब क्या होगा ? दुनिया भर के तमाम बखेड़ों से अनभिज्ञ ऐसे मानव का क्या होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एटम शक्ति को हमने पिछले महायुद्ध में एटमबम के रूप में ही जाना है। हिरोशिमा व नागासाकी का मृत्यु-ताण्डव किसे याद नहीं ? यह सब एटमबम की कृपा थी। इस भयंकर अस्त्र से लगभग दो लाख मनुष्य मृत या मृतप्राय हो गये। वहाँ हर १० में से ९ मकान बुरी तरह टूट-फूट गये। मानव ने शेर चीते जैसे भयंकर जानवरों को मारने के लिये भाला, तलवार और बन्दूक जैसे हथियार ईजाद किये पर मानव ने मानव को मारने के लिये एटम बम और हाईड्रोजन बम ईजाद किये। क्या मानव इतना भयंकर है ?

एटम की वही विखंडन-प्रक्रिया अब सुख, शांति और प्रगति के साधन प्रदान करने को प्रस्तुत है। किन्तु क्या विश्वास किया जाये कि मानव निरन्तर सही प्रवृत्तियों की ओर चलता रहेगा तथा गलत दिशा की ओर झुकाव भूलकर भी नहीं करेगा ? अगर यह भूल हो गई तब ? कमसे कम यह तो सोचना ही है कि अणुशक्ति में विकास और विनाश के फैलाव में अनुपात क्या है ? मनुष्य डरा हुआ सा प्रतीत होता है कि कहीं विज्ञान के इस मंदिर में अणुशक्ति की वेदी पर इतने ज्यादा फूल न चढ़ा दिये जायें कि विज्ञान के सब साधन ही चुकते हो जायें।

बड़े राष्ट्र अणुबम परीक्षणों से दुनिया का जो वातावरण खराब कर रहे हैं, लोग उससे अपरिचित नहीं हैं। अकेले अमरिका में दो हजार औद्योगिक फर्म ऐसी हैं जो अणु अर्जित आयोग से अनुज्ञा पत्र लेकर रेडियो-आइसोटोप का प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं जिसका परिणाम होता है लोगों पर विकिरण का विषाद प्रभाव। आधुनिक गवेषणाओं के अनुसार अणु-विकिरण और रेडियो की सूक्ष्म तरंगें मोतिया बिन्दु का प्रबल कारण है। युरेनियम की खानों में काम करनेवाले बेचारे मजदूरों का तो कहना ही क्या जो विकिरण के विषाक्त प्रभाव से पीड़ित हो असमय में ही इस संसार से विदा हो जाते हैं। आज की इस समयका ?हान् अन्वेषण जिससे हम दुनिया को स्वर्ग बनाने की कल्पना अपने मन में संजोये हुये थे आज मुंह फाड़कर विकराल दैत्य के रूप म हम सब को ले जाने के लिये सामने खड़ा है।

हमें समुद्र में मछलियों की तरह तैरने में खुशी हो रही है, हवा में परिन्दों की तरह उड़ने में सुख मिल रहा है, किन्तु इन्सानों की तरह पृथ्वी पर चलने में बड़ी कठिनाई महसूस कर रहे हैं। पशु-प्रवृत्ति को अपनाने में हम कितने लालायित से दीख पड़ते हैं। क्या विज्ञान और वैज्ञानिक टेकनीक पर आधारित हमारा मानव समाज कभी भी स्थायी रह सकेगा? आज की सभ्यता इस दुनिया में जितने वरदान लेकर आई है उससे कहीं अधिक अभिशाप लेकर आई है।

मशीनी सभ्यता के इस युग में मानव का रूप कितना विकृत होता जा रहा है। मनुष्य को ऊपरी तौर पर सभ्य नाई, चमार और जुलाहे ने बनाया है। लेकिन इस तरह के सोचने का पैमाना अब कोई काम में नहीं लेता। कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलाकार अगर मिट्टी की औरत बना दे तो वह बिलकुल जानदार मालूम पड़ती है। लेकिन सचमुच की चलती फिरती जिंदा औरत बिलकुल ही नकली मालूम पड़ती है। सभ्यता की सबसे बड़ी देन ही लीपापोती है। हमने अपने आप पर लीपा-पोती की सो की, प्रकृति को भी अछूता नहीं छोड़ा। चीन के संत लाओजे के वे शब्द याद आ जाते हैं "जँमी को एकसा करके जँमी की जवानी उतार कर दी, नदिओं और दरियाओं पर पुल क्या बना दिये, इनका हुस्न ही बिगाड़ कर रख दिया। ऐसी दुनियाँ में मैं रहकर क्या करूँ?"

आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करनेवाला रहस्यवादी संत कवि लाओ-जे कहीं दूर प्रकृति के किसी सुनसान कोने में जा छिपा। पलट कर वापिस नहीं आया।

आज मनुष्य मनुष्य को पहचानने में लज्जा अनुभव करता है। सभ्यता के नखरे जो ठहरे। खैर...अब उसने प्रकृति के सौन्दर्य और शांतिमय आध्यात्मिक जीवन से भी आंख चुराना शुरू कर दिया है। गांवों और देहातों का ग्रामीण जीवन शांति और भोले-भाले प्रेम से ओत-प्रोत, फक्कड़ और मस्तीपन से भरपूर, छल, कपट और बेईमानी के चक्रव्यूह से मुक्त, शहरियों के जंझड़-बंझड़ और चिल-पों से बहुत दूर हमें लुभाता नहीं। मानव जीवन में सौन्दर्य की गहरी अनुभूतियों के प्रति उदासीनता का प्रगट होना गंभीर चिंतन का विषय है। परन्तु एक दिन मानव जाति को पुनः प्रतीति हो जायेगी कि भौतिक वस्तुएँ आनन्द नहीं देती और इनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोग स्त्री पुरुषों को सृजनशील तथा शक्तिशाली बनाने में बहुत कम है।

हर जगह हल्ला-गुल्ला, शोर-शराबा और थुक्का फजीयत। अराजकता का ऐसा नंगा नाच शायद ही कभी देखने में आया हो। पलायनवाद की तरफ हमने खिसकना शुरू कर दिया है। बरसाती घास की तरह पैदा हो रही आज की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक संस्थायें, जो अपने आप से अराजकतावाद और पलायनवाद की शत्रु, लीडर तो पैदा कर रही हैं किन्तु प्रेम नहीं। प्रसिद्ध मानवशास्त्री वेरियर एलविन ने ठीक ही कहा—"आज प्रेम संसार में इतना दुर्लभ है कि हम किसी भी कीमत पर इसका पल्ला नहीं छोड़ सकते, आओ, किसी भी तरह, कहीं से भी इसे समेटने में हम शरमायें नहीं।" वेदों की इन दो पंक्तियों का मर्म हमें अपने दिल में अटकाना ही पड़ेगा।

तदिदं ब्रह्म, त्वमेव ब्रविमि
"न हि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किञ्चित्।"

ब्रह्म यही है केवल तुम्हें ही मैं बतला रहा हूँ "मनुष्य से श्रेष्ठ यहाँ और कुछ भी नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[जून-६३ अंक से आगे]

रामनाम-तत्व

प्राकृतिक चिकित्सा का मूल साधन रामनाम-तत्व है। अर्थात् रामनाम के स्मरण बिना प्राकृतिक चिकित्सा निरर्थक है।

महात्मा ईसा ने कहा है—"तुम ईश्वरको प्राप्त करो तो जगत् और उसके पदार्थ तुम्हें स्वतः प्राप्त हो जायेंगे। क्योंकि जगत ईश्वर का है। यही उपदेश संसार के अन्य धर्मों और धर्माचार्यों का भी है। और परमात्मा को प्राप्त करने का मुख्य साधन उसका नाम स्मरण करना है-उसकी प्रार्थना करना है।

प्रार्थना से समस्त सांसारिक चिन्ताओं और क्लेशों का नाश हो जाता है। मनुष्य जिनकी कल्पना तक नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता, ऐसी चीज प्रार्थना द्वारा प्राप्त हो जाती है। इस तथ्य से पता चलता है कि एक महाशक्ति है जो सर्वत्र उपस्थित रहकर सबसे सबकुछ कराती रहती है। उपनिषद् में आया है—'एक ही चेतन-तत्व इस सारे ब्रह्माण्ड को चला रहा है। प्रार्थना द्वारा जब उस महाशक्ति का ज्ञान होता है तो उसके चरणों में लिपट जाने की प्रबल इच्छा होना स्वाभाविक है। यही प्रार्थना की पराकाष्ठा है। महर्षि श्री अरविन्द घोष ने लिखा है—'मनुष्य के अन्दर भगवान् है। यह एक महान् सत्य है। प्रार्थना और तत्पश्चात् ईश्वरानुग्रह से ही मनुष्य इस सत्य का साक्षात्कार कर सकता है।

ईश-प्रार्थना से मन का कलुष धुल जाता है और आत्मा विशुद्ध हो जाता है। आत्मा विशुद्ध होने पर ही अपना संबंध परमात्मा के साथ स्थापित कर सकता है, जिससे उसे स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है और रोग-शोक से छुटकारा मिल जाता है। यथाः—

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मयोवेद
निहितं गुहायां परमेव्योमन् ।
सोऽश्नुते सर्वान कामान् ॥'

—उपनिषद्

अर्थात्, ब्रह्म सत्य और ज्ञान अनन्त है। यह हृदयाकाश की गुफा में रहता है। जो उसे जान लेता है, उसकी सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

मगर परमात्मा को जान लेना हंसी-ठट्ठा नहीं है। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये सर्वप्रथम हृदयाकाश की गुफा को स्वच्छ और परिष्कृत करना होगा। जिस प्रकार धूल जमे शीशे में चेहरा साफ दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार मनुष्य के कलुषित हृदय में परमात्मा की झलक की आशा करना दुराशा मात्र है। महात्मा गांधी, जो रामनाम को प्राकृतिक चिकित्सा में प्रयोग करने के विशेषज्ञ थे, ने एक जगह लिखा है—'मनुष्य को पहले अपना हृदय स्वच्छ करना चाहिये। ईश्वर की प्रार्थना को छोड़ हृदय को स्वच्छ करनेवाली वस्तु कौनसी है? ईश्वर के नाम के झाड़ू से अपने हृदय को झाड़कर साफ करो।'

एक स्वच्छ हृदय की सच्ची प्रार्थना जिस में कठिनाई में भी ईश्वर दिखाई देता है, हमें कठिनाई से मुकाबिला करने का बल ही नहीं देती बल्कि कठिनाई की जगह सुख ला देती है। जगत्प्रसिद्ध द्रोपदी, गजराज, गणिका आदि की प्रार्थनाएं कुछ इसी कोटि की सच्ची और प्रभावोत्पादक प्रार्थनाएं थीं जिनसे भगवान् का आसन पल मात्र में डोल गया था।

प्रार्थना से मनुष्य का हृदय स्वच्छ होकर उसका स्वभाव बदल जाता है, जिससे उसे शान्ति और सन्तोष की उपलब्धि होती है। सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां ने भी एक बार कहा था—'प्रार्थना या नेमाज का एक ही मकसद है, और वह यह कि हम अपने आपको तमाम गन्दगी और कमीनेपन से बरी कर लें।....प्रार्थना की मदद से हमें इस काबिल बनना है कि हम किसी एक कौम या फिरके की नहीं बल्कि खुदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के समूचे मुल्क की खिदमत कर सकें। खुदा ने इसलिये इस Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri दुनिया में हमको भेजा है।'

विश्ववन्द्य बापू के योग्य शिष्य आचार्य विनोबा भावे ईश-प्रार्थना को भूख से बढ़कर मानते हैं। वे कहते हैं— 'भूख से बढ़कर हमारे पास उपमा के लिये शब्द नहीं हैं, इसलिये भूख के साथ प्रार्थना की तुलना करते है। लेकिन दर असल प्रार्थना ऐसी चीज है जिसकी उपयोगिता का वर्णन करने के लिये हमारे पास शब्द नहीं हैं।...परमेश्वर का भजन, उसका नामस्मरण, व्यक्तिगत तौरपर और सामूहिक तौरपर मिलकर करना, अकेले एकान्त में भी करना, मनुष्य जीवन के लिये, उसकी उन्नति के लिये, सामाजिक उन्नति के लिये, चित्त-शुद्धि के लिये, आत्मनिष्ठा की प्राप्ति के लिये, और शोक-मोहादि प्रसंगों में सावधान रहने के लिये अतिशय उपयोगी है। इस विषय में कोई विचार-भेद मैंने किसी धर्म में नहीं देखा।'

प्रार्थना करते समय भगवान् के सामने अपना हृदय बिल्कुल खोल देना चाहिये। दिल में किसी प्रकार का खोट या छल-कपट नहीं रखना चाहिये। ऐसा करने से प्रार्थना करनेवाले का हृदय एक विचित्र प्रकाश से भर उठता है और उसमें अलौकिक दैवीशक्ति का सञ्चार हो जाता है। यह कभी न भूलना चाहिये कि परमेश्वर से ही यह सब कुछ है। वह सर्वत्र है, तथा वही सब प्रकार की शक्तियों का भण्डार है, और जब हम उसकी प्रार्थना करते हैं तो उसका अर्थ यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है कि हम उस शक्ति-भण्डार से शक्ति प्राप्त करते हैं जो हमारी जीवन-यात्रा में काम आती है और उसे सफल बनाती है।

हृदय में प्रार्थना की शुद्ध भावना रहने से निःशब्द प्रार्थना भी की जा सकती है। प्राचीन भारतीय ऋषिगण मौन धारण करके ही ईश-प्रार्थना करते थे और उनकी प्रार्थनाएं ईश्वर कबूल करता था और तदनुसार फल प्रदान करता था। लेकिन उन शब्दों में ऋषिगण अपने प्राण भर देते थे—समस्त जीवन ही प्रार्थनामय बना देते थे। वे केवल प्रार्थना-मन्त्रों को जपते ही नहीं थे, अपितु जप के साथ तप भी करते थे। तप का अर्थ यहां साधना है। बिना साधना के चित्त-शुद्धि असम्भव है। और बिना चित्त-शुद्ध हुये प्रार्थना सफल नहीं हो सकती।

प्रार्थना, विश्वास और श्रद्धापूर्वक करनी चाहिये यह आशा करते हुये कि ईश्वर हमारा पथ अपनी रीति और इच्छानुसार सुगम बना रहा है। वह हमारी समस्याओं को अपनी इच्छित विधि से सुलझा रहा है। प्रार्थना में धैर्य को खोना एक बड़ी भारी बाधा है। क्योंकि प्रार्थना का अर्थ होता है—अपने प्रिय और शुभैषी से मिलना। वहां अधैर्य का क्या काम?

प्रार्थना में ध्यान का प्रमुख स्थान होता है। ध्यान को आत्मा का प्राण कहा जाता है। जिस काम में ध्यान न लगे—ध्यान न जमे, उसे पूरा हुआ कर्म न समझिये। मनुष्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तिष्क केवल ध्यान द्वारा ही तथ्योंका दर्शन कर पाता है। परमात्माने हमारी इन्द्रियों को बहिर्मुख ही बनाया है जिसके सहारे हमें केवल बाह्य जगत् का ही ज्ञान होता है। अन्तर्जगत या अन्तरात्मा का ज्ञान उन इन्द्रियों से नहीं होता। परन्तु ध्यान द्वारा जब हम उन इंद्रियों को आवृत्त या अन्तर्मुखी कर लेते हैं तो हमारे लिये अन्तर का भी ज्ञान सम्भव हो जाता है। अन्तर, अमृतत्व, आत्मा, परमात्मा, एक ही चीज के अनेक नाम हैं

साधना से ध्यान जमने लगता है। अधिकारी महिलाओं ने बताया है कि जब प्रार्थना समय ध्यान न जमे, चित्त चञ्चल हो जाय तो भगवान् का नाम-जप आरम्भ कर देना चाहिये। तत्पश्चात् पुनः ध्यान में प्रवृत्त हो जाना चाहिये। मन का बन्दर की तरह इधर-उधर उछलना-कूदना और एक स्थान पर, एक लक्ष्य पर स्थिर न रहना ही विक्षेप कहलाता है। प्रार्थना के समय यह एक भारी विघ्न है। इसे अवश्य रोकना चाहिये। इसके लिये अभ्यासी को प्राणायाम, सुदृढ़व्रत, निरन्तर उद्योग तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

ध्यान जमाने के लिये मौन रहना सीखना चाहिये। मौन और एकान्तवास एक महान तप है। इससे आत्मिक उन्नति और शक्ति प्राप्त होती है, जिससे मन पर विजय पायी जा सकती है। मौनावस्था में मनुष्य दुनिया के सारे बन्धनों से छूटकर अपने प्रभु से अपना सम्बन्ध स्थापित कर पाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा मानसिक एवं आत्मिक शान्ति का अनुभव कर सकता है।

पतित पावन राम के नाम--स्मरण द्वारा जब भाग्य तक बदल दिया जा सकता है तथा आत्मा को पवित्र, शुद्ध एवं स्वस्थ बनाया जा सकता है, तो क्या आत्मा पर आश्रित मन और शरीर को अस्वस्थ होने पर उन्हें स्वस्थ नहीं किया जा सकता? अतः शुद्ध हृदय से निकली हुई नियमित प्रार्थना अथवा भगवन्नाम--स्मरण आरोग्य--लाभ करने--कराने का सर्वोत्तम और अचूक प्राकृतिक उपाय है। आत्मा को परमात्मा से मिलने की सर्वदा तीव्र इच्छा रहती है। क्योंकि वही उसका लक्ष्य होता है। सच्ची प्रार्थना से आत्मा को परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है जिससे उसको सन्तोष होता है और तब उसे सांसारिक विषय–भोगों से विराग हो जाता है जिनमें वह पुनः लिप्त होना नहीं चाहता। फलतः उसे रोग--शोक से मुक्ति मिल जाती है। क्योंकि सांसारिक विषय–भोग, आहार--विहार तथा अहंभाव ही संसार में सब प्रकार के रोग--शोक के मूल होते हैं, जिनसे आत्मा, प्रार्थना के बल से, निर्लिप्त हो जाता है।

प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि टेनिसन के शब्दों में–More things are wrought by prayer than the world dreams of."

अर्थात्, जितना संसार समझता है उससे कहीं अधिक कार्य प्रार्थना से सिद्ध हो जाते हैं।

पाश्चात्य देशों में प्रार्थना द्वारा चिकित्सा करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-एक अस्पताल भी अब नये बने हैं, जहां केवल प्रार्थना और ईश्वर-भजन द्वारा सभी रोगों का इलाज सफलतापूर्वक होता है।

प्राचीन काल में विभिन्न देशों में साधु--संत प्रार्थना द्वारा रोगों का शमन करते थे, इसके कितने ही प्रमाण आज भी मिलते हैं।

* मननीय विचार *

परमात्मा की नजर सब ओर है उससे बच सकना किसी के बसकी बात नही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा अपराध

लें० हरिहर प्रसाद 'बरियार'

तीसरी जनवरी' ६३।

आज से कोई तेरह साल पहले, मैंनें अपराध करना शुरू कर दिया था। उस समय मेरी उम्र करीबन ९ साल की थी। हो सकता है, मैंने उसी दिन से अपराध करना शुरू कर दिया हो, जिस दिन मेरा जन्म हुआ था। लेकिन तब की और तब से लेकर कोई आठ साल तक की बातें मुझे बिलकुल याद नहीं। किसी नये पैसे का सौवां भाग और हो सके तो उसका भी सौवाँ भाग जितना बड़ा हो सकता है, मेरी समझ और उसकी शक्ति उस समय उससे कहीं अधिक संकुचित थी। सुतरां, उन दिनों की बातें मेरे कब्जे की परिधि से काफी बाहर हैं। अपनी ९ वर्ष की उम्र से लेकर अब तक (जबकि मैं पूरे बाईस वर्ष का हूँ और लगातार तीन दफा बी. ए. फेल कर चुका हूँ तथा आगे पढ़ने की अब कोई गुन्जाइश भी नहीं) के अपराधों के बयान में दावे के साथ कह सकता हूँ कि वे नाइन्टी नाइन पॉयन्ट नाइन तक खरे उतरेंगे। तो लीजिए—

मेरा अपराध गाँव के नत्थू गुरुजी से शुरू होता है। नत्थू गुरु जी थे तो बड़े अच्छे, लेकिन उनकी सपसपाती हुई बेंत बड़ी चुड़ैल थी। पढ़ने से जी चुराता था, इसलिए उसकी असीम अनुकम्पा मुझ पर ही अधिक होती थी। मेरी पीठ पर वह जब कभी भी उतरती, मैं चेंगा मछली की तरह फड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फड़ा कर रह जाता। मन ही मन, उस चुखीली बेंत की मार के चलते, गुरु जी पर बड़ा गुस्सा आता। सोचता, गुरुजी को तो सिर्फ बेंत ही उठाना आता है! पढ़ते और पाठ सुनाते वक्त, अगर कहीं गलती कर ही बैठता हूँ तो क्या हुआ! उन्हें कम से कम प्यार से काम लेना चाहिए और कहना चाहिए- 'बेटा, देख, यहाँ तुमने गलती की है! इसे सौ बार पढ़!' लेकिन ऐसा कहने के बजाय, वे तो सिर्फ बेंत ही उठाते हैं! कितने बेरहम हैं गुरुजी!

गाँव की पाठशाला से मेरा घर कोई सौ या डेढ़ सौ कदम पीछे पड़ता था मैं अक्सर हाँ अपने घर से बाहर निकलकर या खेलते-घूमते वक्त उस पाठशाला की ओर देखा करता था, और देख-देख कर सोचा करता था कि काश मेरे गाँव में वह पाठशाला न होती। मुझमें ऐसी बुद्धि उपस्थित करने वाली वह सपसपाती हुई बेंत ही थी जो गुरुजी के हाथों की शोभा बढ़ाती थी।

अपने गँवारू मित्रों में मोतिया चमार को मैं बहुत चाहता था। उम्र में वह मुझसे कुल्लम तीन या चार साल का बड़ा होगा। उसकी फूस की झोपड़ी मुझे बहुत भाती थी। मुझे याद है, वह मुझे घंघरी और मक्के खिलाया करता था। मेरे लाख कहने पर भी साथ खाता न था। कहता था— 'लाला, तुम्हारे साथ कैसे खाऊँ! मैं चमार ठहरा और तू कायस्थ! एक थाल में खाने से तेरी जात न चली जायगी!' उसकी इस बात पर मैं हंस देता।—कहता 'मोतिया, मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोथी में गांधी जी का नक्शा है। उसके नीचे लिखा है कि सभी मनुष्य एक ही जाति के हैं।' मेरी बात काट कर वह कहता—नहीं लाला, अगर ऐसी बात होती तो मैं चमार न होता और तुम कायस्थ न होते ! उसकी इस बात से बड़ी पीड़ा होती। उसे अपने गले से लगा कर कहता—'मोतिया, तू मेरा दोस्त है न !' बात बदल कर, रुँधे हुए गले से वह कहता-'लाला, सुनने में आया है, नत्थू गुरुजी तुम्हें बहुत पीटते हैं !'

'हाँ'-अपराधी की भाँति मैं कहता-'मुझसे सबक याद नहीं होता !'

'सबक याद क्यों नहीं होता ?'

'तू भी नाम लिखा कर देख ले, पता चल जायगा !'

जवाब में मोतिया ठठा कर हंस देता। फिर मुह बना कर कहता—'लाला, मोतिया चमार का नाम लिख कर तुम्हारे नत्थू गुरुजी गाँव वालों के लिए नत्थू चमार क्यों होने लगें ? उनकी पाठशाला में ताला जो लग जायगा !'

मोतिया की माँ मुझे बेटे की तरह मानती थी। वह कहती थी—'बेटा, तू बड़ा आदमी बनेगा। गाँव से बड़ी दूर एक महल में रहेगा। मैं कहता था—'नहीं मैया, मैं तो तुम्हारी ही झोपड़ी की तरह एक झोपड़ी बनाऊँगा।'

'ऐसा नहीं कहते बेटे !' मेरे मुह पर हाथ रख कर वह कहती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब कबड्डी और गुल्ली डंडे से मुझे बड़ा इश्क था। सपनों में भी कबड्डी वाली पलटनिया गाड़ी चलाया करता था। गुल्ली डंडे की चाल जीत कर जगदीशवा को चार गछीवा से कुलकुलाही तक गुड़ाया करता था हमारे गाँव के ये दो प्रसिद्ध आम के पेड़ हैं। एक दूसरे के बीच की दूरी एक चौथाई मील से कुछ ऊपर ही होगी।

अपनी तन्दुरुस्ती काफी थी, इसलिए दादा जान खुश होकर दादी-माँ से अक्सर कहा करते थे—'देख नारी, यह बड़ा होकर दारोगा बनेगा।' लेकिन साथ-साथ मैं काला—कलूटा था, इसलिए मेरी बड़ी दीदी मुझे 'करूवा' कह कर चिढ़ाती थी। यह उपाधि मुझे बहुत बुरी लगती थी। सो खिसयानी आवाज में, मैं उसे भिखमंगनी कह दिया करता था। चिढ़ कर वह मुझसे उलझ पड़ती थी। मैं भी उससे उलझ पड़ता था। काफी देर तक हम दोनों के बीच गुत्थम गुत्थी होती रहती थी। लेकिन, दादी-माँ की आवाज कान में पड़ते ही हम दोनों को अलग हो जाना पड़ता था।

पिताजी की नौकरी गाँव के बाहर थी, इसलिए काफी स्वतंत्र था। मेरी माँ मुझे अपनी ममता में समेटी रहती, इस-लिए उससे डरता न था। वह ऐसी-ऐसी कहानियाँ सुनाया करती थी जो मर्म को छू लेतीं थीं। उनके ट्रेजिक-भ्यू आँखों से आंसू छीन लेते थे। लेकिन, भारतीय नाट्य-परम्परा की तरह उनका अन्त कोमेडी लिए हुए होता था और 'हीरो' मौत के मुह में जाकर भी मरता नहीं था। इसी कारण वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेडी नहीं हो पाते थे। उनके नायक प्रायः अपने सभी गुणों से परिपूर्ण होते थे। कथा के मध्य, नायक और खल-नायक के बीच का कॉन्फ्लीक्ट (संघर्ष) भी महत्व पूर्ण होता था।

दादा जान को तो बात ही बात में टाल दिया करता था। उनके मुख से दम भर भूतों और प्रेतों की कहानियाँ सुना करता था। घर में किसीसे डरता था तो सिर्फ दादी से। क्योंकि वह मुझे और साथ-साथ दीदी को भी यह कह कर धमकाया करती थी कि अगर तोहिन लोग ठीक से पढ़े-लिखेगा नहीं तो तोहिन लोग के बापू को चिट्ठी लिख पठा-ऊँगी। पावरफुल दादी की यह शक्ति मुझे नत्थू गुरुजी की पाठशाला तक ढकेलती रहती थी।

बेसिलसिलेवार, परती पड़े और लहलहाते हुए खेतों तथा सूखे-अधसुखे, भरे-अधभरे पोखरों के किनारे, मुझे आमन्त्रित करते रहते थे। इन जगहों में मैं अकेले जाया करता था और काफी देर तक बैठे-बैठे क्षितिज की ओर देखा करता था मुझे ऐसा लगता था, मानो मैं वहीं का रहने वाला होऊँ।

उन्हीं दिनों की एक घटना मैं अब तक भूल नहीं पाया हूँ। मेरे दिमाग-देवता उसकी परिक्रमा करते हैं। घटना कुछ इस प्रकार की है—

एक दिन, जब मैं अपनी पाठशाला की राह गुजर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था तो, मोतिया की आवाज मेरे कानों में पड़ी--'लाला!' फिर कर देखा--वह अपने सुअरों को खे रहा है। उसके पास आकर मैंनें कहा--'क्या बात है मोतिया ?' उसने कहा--खस्सियों को खेते--खेते तंग आ गया हूँ ! लाला, तुम्हें पाठशाला की तरफ जाते देख कर, मेरा भी मन पढ़ने को करता है। गद्गद् हो कर मैंनें कहा -तो नाम लिखा ले ! हम दोनों साथ ही पढ़ने जाया करेंगे !'

कुछ देर, चुप रहने के बाद मोतिया बोला—'तुम्हारे गुरुजी मेरा नाम नहीं लिखेंगे !'

वह एक कराहती हुई आत्मा की आवाज थी।

काफी देर तक खामोश रहने के बाद, मैंनें कहा—'गुरु जी तुम्हें पहचानते तो नहीं हैं।' उसने कहा—'नहीं'

'तो एक उपाय है। तू अपना नाम मोतीलाल बताना, गुरुजी नाम लिख लेंगे। और हो सके तो दो सेर मक्के ऊपर कर ले !'

'दो सेर मक्के ? काहे लाला !'

'अरे, गुरु जी जरा लालची ठहरे। मक्के देख कर तुमसे ज्यादा पूछताछ नहीं करेंगे।'

दूसरे दिन दो सेर मक्के की पोटलीके साथ मोतीलाल जी, मेरे साथ मेरी पाठशाला तक आये। गुरुजी ने मक्के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पोटली को ग्रहण करते हुए उनका सहर्ष स्वागत किया। पूछा—'तुम्हारा नाम क्या है?'

मोतीलालजी ने मेरी ओर देखते हुए कहा—'मोतीलाल!' मैं उनकी बगल में ही खड़ा था।

गुरुजी ने फिर पूछा— तुम्हारे बाप का नाम?'

मेरे हाथ से स्लेट छूट गई। अपनी मक्के की ओर देखते हुए (जो गुरुजी की हो चुकी थी) मोतीलालजी, सत्य की रक्षा में, काँप कर कह गए—'लाटो चमार!'

'लाटो चमार!' गुरुजी ने भी एक बार कहा। उनके इस कहने में आश्चर्य की कड़क थी फलस्वरूप, मोतीलालजी फिर मोतिया हो गए। उनकी नाक चलने लगी। छीः छीः करते हुए गुरुजी ने उन्हें दुरदुरा दिया। मगर, मक्के की पोटली अपने पास ही रखे रहे। मुझ पर बेंतों की बारीश हुई।

इस घटना की समाप्ति के बाद, मैं अपनी (इस) यथार्थ-वादिनी लेखिनी को डिसकॅन्टीन्यू कर रहा हूँ। क्योंकि इस तरह मेरी इस रचना के नामकरण को बल मिलता है। बाबजूद इसके, आपको भी एक फायदा है, कि आप बड़ी आसानी के साथ इसका अन्दाजा लगा सकते हैं, कि 'मेरा अपराध' में मेरा अपराध क्या, कहाँ, कैसे, और किस हद तक है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूले हुए हम

(कविता)

लेखक
नामवर

हम गगन का गोल घुटती सी परिधि में,
रात दिन के व्यंग सहते जी रहे हैं।
हम अहम् की आँच में दिन भर पिघलते,
जिन्दगी का जहर हँसकर पी रहे हैं।

हम किताबों की लकीरों में उलझकर,
ज्ञान को जैसे खरोंचे जा रहे हैं।
सत्य को उन्माद में कहकर पुराना
तथ्य को कितना दबोचे जा रहे हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम नई हर बात, जो कुछ धतुकी है,
सृष्टि का अवतार कहकर पूजते हैं ।
शब्द के आतंक से होकर प्रभावित,
अर्थ की धुँधली तहों में जूझते हैं ।

हम किसी कोने में बैठे सोचते हैं,—
ऊँट-सा अपना अहम् कितना बड़ा है !
किन्तु पर्वत भी तो कितने सामने हैं ?
आँख पर पर्दा अभी कितना पड़ा है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोटी और स्वास्थ्य

ले. डा. कुलरंजन मुखर्जी

पंडित लोगोंने हिसाब करके देखा है कि मनुष्यों को संस में चार लाख वर्ष निवास करने के बाद गेहूँ का पता मि था। जब और दूसरा खाद्य नहीं मिलता तब आदिम मनु जंगली घास खाकर रहते थे। अन्त में जब इसका पोषणत वेद अवगत हुये तब इसकी खेती शुरू की।

पहले जमाने में सारे संसार में ही हाथ से बनी हुई चप रोटी ग्रहण की जाती थी। इसके बाद मिश्र के आदिवासि ने सबसे पहले डबलरोटी का आविष्कार किया। मिश्र के ए पिरामिड में तीन हजार पांच सौ वर्ष पहले के एक चित्र डबलरोटी प्रस्तुत करने का तरीका खोदा हुआ है।

पाश्चात्य जाति में सभी लोग डबलरोटी ग्रहण करते हैं किन्तु हाथ से बनी हुई चपटी रोटी भारतवर्ष, मेक्सिक इरान, आरमेनिया, खासकर एसिया तथा अफ्रिका में व्याप रूप से व्यवहृत होता है।

रोटी हरेक वस्तुसे प्रस्तुत की जा सकती है। साधा रणतः यह गेहूँ, जौ, मकई, ओट, मिल, चावल, बाजर सोयाबिन और सेरदोना से प्रस्तुत होती है। ऐसा कि केला आलू और बादाम से भी रोटी प्रस्तुत होती है। किन्तु सबसे अच्छी रोटी प्रस्तुत होती है गेहूँ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्र के आदिवासी इजिप्टों का आविष्कार करने के बाद संसार में रोटी प्रस्तुत करने की विधि मे थोड़ी ही उन्नति की है। रोटी बनाने के लिये गेहूँ आदि चूण करने के बाद उसमें जल मिलाकर उसे मर्दन किया जाता है। इसके साथ इष्ट मिलाने से ही रोटी ऊँची तथा हल्की हो जाती है। अन्त में चूल्हे के भीतर सेंकने से ही रोटी प्रस्तुत हो जाती है। खासकर रोटी बनाने के लिये आटा, पानी, थोडी सी चीनी, नमक और इष्ट का प्रयोजन होता है। अधिकांश रोटी वाले तो आटे के साथ दुग्ध चूर्ण मिलाते हैं। इसके साथ तेल मिलाने से रोटी बहुत नरम होती है।

गेहूँ के भीतर हरेक प्रयोजनीय धातव लवण एवं विटामिन वर्तमान रहते हैं। एवं यह मिलता है प्रधानतः गेहूँ के चोकर और बीज के भीतर। इसके भीतर सबसे ज्यादा प्रयोजनीय उपादान ही रहता है लोहा। खून बढ़ाने के लिये लोहा विशेष रूप से मदद करता है। इसके अलावा वह विटामिन, रिवोफैालवीन और निकोटीनक एसिड आदि किमती बी विटामिन का प्रधान आधार है। स्वास्थ्य रक्षा के लिये इसका इतना प्रोयजन है कि खाद्य में केवल (विटामिन बी १ का अभाव होने से ही अवसाद, आलस्य, चिड़चिड़ा मिजाज एवं स्वाभाविक दुर्बलता प्रकाश पाती में है। निकोटनिक एसिड के अभाव होने से मानसिक उत्तेजना तथा चंचलता प्रकाश पाती है। इसके अलावा यह विटामिन भूख बढ़ाता है, भोजन के परिपाक में मदद देता है, सभी परिपाक यन्त्रों को कार्यक्षम रखता है और उसकी ताकत बढ़ाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेहूँ के आखरी भाग में गेहूं का बीज अवस्थित रहता वह समूचे गेहूँ का सैकड़ा पांच भाग होता है। वह अच्छे प्रोटीन से समृद्ध है और इसके भीतर विटामि कम्पालेक्स, विटामिन ए एवं काफी मात्रा में धातव ल वर्तमान रहता है। वह एक तरह का बहुत कीमती तेल आधार है। इसे गेहूँ का तेल कहा जाता है। वह बी तथा विटामिन का एक प्रधान जरिया है। गेहूँ के दूसरे अंश इसमें ही ज्यादा धातव लवण मिलता है। गेहूँ के चोक ऐसा कई जातीय पदार्थ रहते हैं जो पचते नहीं। इसलि गेहूँ की रोटी कोष्ठ सफाई के लिये बहुत लाभदायक सि हुई है।

किन्तु मशीन में जब गेहूँ की सफाई करके उसे मैदा परिवर्तित किया जाता है तब उसके प्रायः सभी गेहूँ बीज प्रायः सभी चोकर वर्जित होते हैं। इस कटा हुआ चो और गेहूँ बीज के साथ सारा विटामिन एवं धातव लव बाहर हो जाता है।

इसलिये किसी अवस्था में भी साफ किया हुआ सफे मैदा ग्रहण करना नहीं चाहिये। इसके भीतर खाद्य का प्रा ही नहीं रहता और वह शरीर के लिये बोझ बढ़ानेवाले खा में परिणत हो जाता है। साधारणतया डबलरोटी मैदा से प्रस्तुत होती है किन्तु बाजार में लाल आटे से बनी डबलरो भी मिलती है। स्वास्थ्य के लिये हमेशा ही लाल आटे रोटी खाना अच्छा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ से बनी हुई आटे की रोटी किसी के लिये कठिनाई से पचने वाली मालूम होती है किन्तु वह आटे का दोष नहीं है, प्रस्तुत विधि का दोष है। रोटी बनाने के पहले आटे को मथकर जल से तीन घंटे ढककर रखना आवश्यक है। इसके बाद खाते समय एक एक करके रोटी सेंककर खाने से रोटी बहुत सुपाच्य होती है। इच्छा होने से रोटी सेंककर इसकी एक तरफ घी लगाया जा सकता है।

हाथ से बनी हुई रोटी बनाते समय पानी के बदले में विभिन्न साग सब्जी का सूप आटे के साथ मिलाकर पकाया जा सकता है। पालक का साग, धनिया का पत्ता, पूदीना का पत्ता, गाजर, बीट, लेट्टूस तथा बथुआ आदि उबालकर उसका पानी आटे के साथ मिला लेने से आटा का पोषण तत्व बहुत अंश में वृद्धि पाता है। इसके अलावा दूध के साथ आटा मथकर रोटी बनाई जा सकती है इससे रोटी जैसा स्वादिष्ट होती है वैसा ही पुष्टिकर होती है।

जो लोग हमेशा चावल खाते हैं उनको भी दिन में एक बार गेहूँ की रोटी व्यवहार करना उचित है। चोकर समेत आटा केवल कोष्ठ साफ करता है ऐसी ही नहीं, यह प्रोटीन आदि खाद्य मूल्य में भात से भी अधिक समृद्ध है।

आटा हमेशा ही ताजा होना चाहिये। गेहूँ यदि दीर्घ अवधि तक रख दिया जाय तो उसका पोषण तत्व बहुत अंश में नष्ट हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के इतिहास में सन् १८२५ की २७वीं सितम्बर एक महत्वपूर्ण तिथि थी और था आश्चर्यजनक दिन ! जब पहली बार रेलगाड़ीने चलना प्रारम्भ किया। रेलगाड़ीने अब तो संसार में युगान्तर उपस्थित कर दिया है। यात्रा पद्धति एवं मनुष्य के सामाजिक जीवन के विकास में इसका बहुत बड़ा हाथ है। भारत के इतिहास में यह स्मरणीय तिथि सन १८५३ की १५ वीं अगस्त थी। उस दिन इस देश में प्रथमबार ईस्ट इंडियन रेलवे का श्रीगणेश हुआ। आज तो सारे भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में रेल की पटरियां फैली हुई हैं। जिस दिन हावड़ा से पहले पहले रेलगाड़ी छूटी थी, उस दिन की कुछ घटनाएँ लोक कथाओं से कम मनोरंजक नहीं हैं।

आजकल जो हावड़ा का विशाल स्टेशन है उसकी बात ही कुछ और है। जो पुराना स्टेशन था उसका भी उन दिनों नामोनिशान तक नहीं था। भागीरथी नदी के किनारे से पांच मिनट रास्ता चलने पर एक छोटी-सी झोंपड़ी मिलती थी, वही पहले-पहल हावड़ा का स्टेशन था। सर ब्राफोर्ड लेस्ली की कृपा से भागीरथी नदी पर फ्लोटिंग ब्रिज बना है। इस पुल का भी उस समय पता नहीं था, और न रेलवे कम्पनी का बड़ा बकलैंड जहाज ही उन दिनों बना था। उन दिनों नाव पर भागीरथी नदी पार करके, कीचड़ से भरे पांव उठाते हुये लोग हावड़ा स्टेशन पर पहुँचते थे। उतरने के लिए कोई पक्का घाट भी नहीं था। नदी-तट से स्टेशन तक जाने को कोई गाड़ी या पालकी का भी प्रबंध नहीं था। गोरे, हिन्दुस्थानी, छोटे-बड़े, सब एक ही तरह स्टेशन तक पैदल जाते थे।

आजकल की तरह हावड़ा शहर भी उन दिनों नहीं था, केवल एक छोटा-सा गांव था। स्टेशन के पास हरा-भरा अवश्य था। जितनी रेलगाड़ियां तैयार होती थीं सब हावड़ा में ही रहती थीं। हावड़ा उन दिनों कलकत्ता से बिलकुल अलग था। वहां एक छोटे-से खपरैल घर में टिकट कटता था। बहुत ही हल्ला-गुल्ला, धक्कम-धक्का हुआ करता था। दो बंगाली सज्जन टिकट बेचा करते थे। उन बेचारों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बड़ी आफत रहती थी। एक तो नया नया काम, दूसरे मुसाफिरों की भीड़ के मारे एड़ी-चोटी का पसीना एक हो जाता था।

टिकट खरीद लेने ही से गाड़ी में जगह मिल जायगी, इसका भी पक्का भरोसा नहीं था। कुल तीन प्रथम श्रेणी के, दो दूसरी श्रेणी के और तीसरी श्रेणी के लिये तीन खुली हुई गाड़ियां रहती थीं। वे सब भी इसी देश की बनी हुई थीं जिनमें यात्रियों की सुख-सुविधा का बहुत कम ध्यान रखा गया था।

हिन्दुस्थान में जिस दिन पहले-पहल रेलगाड़ी हावड़ा से चली उस दिन पंद्रहसौ आदमियोंने टिकट खरीदा था। उनमें गोरी चमड़ेवाले ही अधिक थे। लेकिन सौ आदमियों को भी जगह नहीं मिल सका। इसलिए बाकी सब निराश होकर अपने-अपने घर को लौट गये।

उन दिनों एक हफ्ते में ६ दिन ही रेलगाड़ी चलती थी। रविवार को आफिस की तरह रेल को भी छुट्टी रहती थी। उन्हीं दिनों अंग्रेजी के 'हरकारा' नामक अखबार में प्रिंटर्स 'डविल' नाम देकर एक महाशयने लिखा था:—

"हिन्दुस्थान में पहले रेलगाड़ी नहीं थी। नई चली है। हजारों आदमी रेल देखने के लिये स्टेशन जाते हैं, लेकिन हमलोगों को रविवार के सिवा और किसी दिन छुट्टी नहीं रहती। अगर रविवार को भी रेल चले तो हमलोग इस लोहे के घोड़े को एकबार देख लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर २४ थियेटर रोड में उन दिनों ई० आई० रेलवे का मुख्य कार्यालय था। मिस्टर मेकडोनल्ड स्टीफेन्सन इस रेलवे के पहले एजेन्ट हुये थे। स्टीफेन्सन साहबने एक विज्ञापन दिया—

"लोगों की प्रार्थनानुसार हमलोग अब रविवार को भी रेल चलाएँगे। दो रेलगाड़ियां पांडुआ तक जाया करेंगी।" तभी से रविवार को भी रेलगाड़ी चलने लगी। उन दिनों दिन को ही रेलगाड़ी चलती थी। रातको गाड़ियों का चलना एकदम बंद रहता था। कुछ हदतक रेल चलने की उस प्रारंभिक अवस्था में यह बात स्वाभाविक थी।

पहले-पहल विलायत में जार्ज स्टीफेन्सन ने भाप से रेल चलाने की विद्या निकाली और हिन्दुस्थान में राबर्ट मेकडोनल्ड स्टीफेन्सन ने ई० आई० रेलवे के एजेन्ट के पद पर रह कर भारतवर्ष में पहले-पहल रेलगाड़ी चलायी।

गाड़ियों में तब की अपेक्षा अब आकाश-पाताल का अन्तर हो गया है। बहुत दिनों की बात है, प्रयाग की प्रदर्शनी में पहले की रेलगाड़ियां और इंजन दिखाये गये थे। उन दिनों के डिब्बे से आजके डिब्बे में बहुत अन्तर है।

एक दिन की बात है। एक आदमी सन्ध्या समय चितपुर रोड की ओर दौड़ा जा रहा था। जिसके जी में जो आया, उसने वही उसके दौड़ने का अर्थ लगाया। एक सिपाहीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेह किया और उसको पकड़ लिया। पूछने पर उसने जवाब में कहा—थोड़ी देर हुई, मैं रेल से उतरकर आया था और उसी की चाल की नकल करके दौड़ रहा हूँ।

रायालंकार वंद्योपाध्याय नामक निष्ठावान और कृतविद्य ब्राह्मण को एक बार रेल पर चढ़ने की इच्छा हुई। उन्होंने पत्रा देखकर शुभलग्न में यात्रा की। वे नित्य त्रिकाल स्नान करते और कृष्णदेव का एक सहस्र नाम जपते थे। खैर, जब तक गाड़ी में रहे और गाड़ी चलती रही, तब तक मौन होकर चुपचाप अपने स्थान पर बैठे रहे। हुगली में ज्यों ही गाड़ी लगी, डब्बे से ब्राह्मण देवता उतरकर भागे। कारण पूछने पर उन्होंने बड़ी गंभीरता से उत्तर दिया—'देखते नहीं, कहां हावड़ा और कहां हुगली! जो अग्नि-गर्भ-यान पथ ह्रास कर सकता है वह जीवन-पथ का ह्रास नहीं करेगा? बार-बार रेल पर यात्रा करने से आयु क्षय होने का भय है।' जब आप लौटकर घर पहुँचे, तब पड़ोसियों के पूछने पर बोले—'इंजिन के गम्भीर गह्वर में एक दैत्य है। उसकी दुम में जलता अंगार लगाने से यह कल घुमाने लगता है, इसलिये रेल चलती है। जब गर्म लोहे की छड़ से दैत्य मारा जाता है, तब वह रह-रहकर चिल्लाया करता है।'

जोन्स नामक एक साहब रेल चलने पर तीन दिनों तक लगातार रेल पर सवार होते रहे। प्रतिदिन एक बार वे हुगली जाकर लौट आते थे। एक दिन उनके दिमाग में एक विचित्र बात समाई। उनके पास एक घोड़ागाड़ी थी। एक बूढ़ा घोड़ा बहुत दिनों से उनका दाना पानी खाकर गाड़ी खींचता था। एक दिन रेल से लौटने पर बूढ़े घोड़े को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाबुकों की मार से उन्होंने बेहोश कर दिया। उनका मतलब था कि चाबुक मारकर घोड़े को रेल की तरह चलाएँ।

जिस समय भारत में पहली बार रेल चली, कई एक कोने से इसका विरोध किया गया। धर्मबुद्धि के लोगों ने इसका विरोध इसीलिये किया कि उनके अनुसार रेल चलकर ईश्वर को दंडित करती थी। भोली जनता को भाँति-भाँति से प्रेत और शैतान का भय दिखला कर इसके विरुद्ध उभाड़ने की चेष्टा की गई। इसकी प्रारंभिक अवस्था की अनिवार्य खामियों को कई गुना बढ़ा-चढ़ा कर लोगों के सामने प्रदर्शित किया गया। रेल के चलने से जिन-जिन व्यवसायियों के व्यवसाय पर धक्का आया, उन्होंने भी इसके विरुद्ध जनमत जागृत करने का प्रयास किया, इसे अंग्रेजों के शोषण का हथकंडा बतलाकर इसका तिरस्कार किया गया, किन्तु इन तमाम आलोचना, प्रत्यालोचना, विघ्न-बाधाओं के बाद भी रेल का चलना बन्द नहीं हुआ। धीरे-धीरे सारे भारत में इसकी यात्रा फैलती गई। स्वल्प समय में ही इसने अपना आशातीत प्रसार कर लिया, क्योंकि रेलगाड़ी युगधर्म का प्रतीक बन कर सामने आई थी। आज के जीवन की दो ही प्रमुख विशेषताएँ हैं—समष्टिगत चेतना तथा शीघ्रता, और रेल में ये दोनों ही बातें एक साथ पायी जाती हैं। एक रेलगाड़ी में अकेला एक व्यक्ति यात्रा नहीं करता, वह बहुतों के लिये है, सब के लिये है। साथ ही वह आज के शीघ्रगामी वाहनों में से एक है। उसने महीनों की यात्रा को घंटों में बदल दिया है। इसलिये वह निरन्तर विरोधों पर विजय प्राप्त करती, विपत्तियों को दूर फेंकती बढ़ती जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

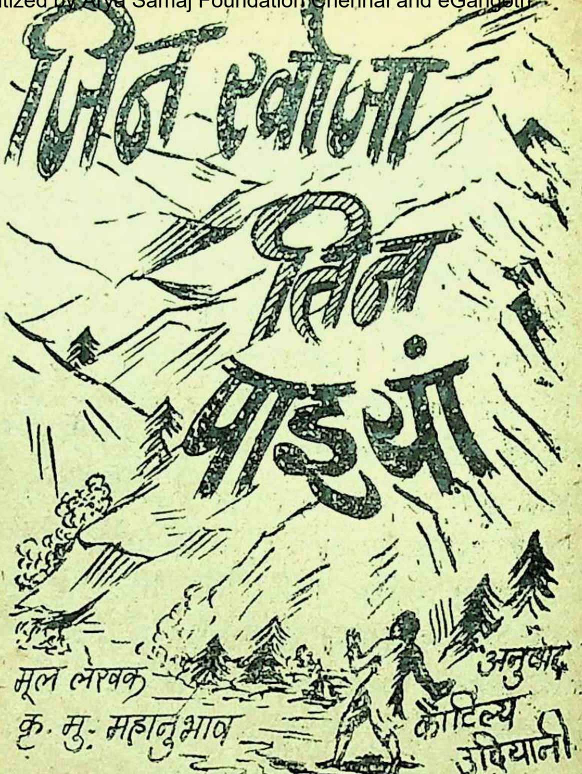

अखिल-विश्वको यदि सरसरी-दृष्टिसे भी देखा जाय तो भी यह बात शीघ्र ही ध्यान में आ सकती है कि समस्त जगत में मनुष्य नामधारी यह जीव कितना क्षुद्र है! अरे दंभी मानव! तू अपने बुद्धि-चातुर्य व प्रखर ज्ञान का व्यर्थ ही अभिमान क्यों करता फिरता है? क्या तू नहीं जानता कि स्वयं को अज्ञानी समझना ही ज्ञान-प्राप्ति का प्रथम-सोपान है। इसलिये हे नादान! यदि तू यह चाहता है कि अन्य लोग तुझे मूर्ख न समझें, तो स्वयं को तू बुद्धिमान् समझना छोड़ दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार साधारण--से वस्त्र भी सुन्दर स्त्री को हर प्रकार से सुशोभित करते हैं, उसकी सुन्दरता को बढ़ाते हैं; उसी प्रकार प्रशस्त और पवित्र-आचरण भी बुद्धिमत्ता का सर्वश्रेष्ठ अलंकार है। यह मनुष्य को सब तरह से सुयोग्य बनाता है। सदाचारी-मनुष्य के विनययुक्त भाषण से सत्य अधिकाधिक प्रभावी और तेजस्वी बनता है।

प्राणिमात्र को सदैव अपनी वाणी पर संयम और अविश्वास अनुभव करना चाहिये। कोई भी बात साहस, पूर्ण-विश्वास और बल पूर्वक नहीं कहनी चाहिये; क्योंकि प्रत्येक बात के सत्यासत्य का निर्णय मनुष्य की अपूर्ण और अल्प बुद्धि पूर्णतः नहीं कर सकती। केवल अपनी बुद्धि पर ही पूरा विश्वास रखकर किसी कार्य को अंधाधुन्ध करना ठीक नहीं। अपने सहयोगी मित्र-बन्धुओं के परामर्ष की ओर भी ध्यान देना चाहिये। उससे अवश्य लाभ प्राप्त होगा।

जब कोई तुम्हारी प्रशंसा करे तो तुम्हें उसकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं देना चाहिये और न ही उस पर विश्वास ही रखना चाहिये। क्योंकि वह स्तुति मद्यपान से भी बढ़कर हानिकर होती है। परमेश्वर को छोड़कर दूसरा कोई भी निर्दोष नहीं। इसलिये स्वयं को सदोष समझना ही श्रेयस्कर एवं कल्याणकारी है।

जिस प्रकार स्त्री के मुख पर पड़ा अवगुण्ठन उसकी सुन्दरता को अधिकाधिक वृद्धिगत करता है, उसी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय की परछाईं भी मनुष्य के सद्गुणों को अत्यधिक श्रेष्ठता प्राप्त करवाने में समर्थ होती है। परन्तु अभिमानी मनुष्य! वह तो सुन्दर रंगबिरंगे वस्त्र पहन कर ठाटबाट से अकड़ते हुये मार्ग में चलता है। उसे सदा यही चिन्तन बना रहता है कि लोग उसे देखें, उसके ऐश्वर्य से चकित व प्रभावित होवें और नम्रता के साथ झुककर उसे अभिवादन करें। पर वह अपना मस्तक सदा अकड़ाये ही रखता है। गरीबों की ओर वह आंख उठाकर भी नहीं देखना चाहता और अपने से छोटे लोगों के साथ नम्रता का व्यवहार नहीं करता। उसके इस तरह के दंभयुक्त बर्ताव का परिणाम यह होता है कि सब लोग उसकी मूर्खता और घमण्डीपन का मजाक उड़ाने लगते हैं। वह सबकी नजरों से गिर जाता है।

दम्भी-मनुष्य दूसरों की सम्मति का अनादर करता है, क्योंकि उसे केवल एक अपनी बुद्धि पर ही विश्वास रहता है। परन्तु अन्त में उसे इसके लिये पर्याप्त हानि उठानी पड़ती है। वह अपने ही अहंपूर्ण विचारों में भटका रहता है। दिन-रात अपनी ही प्रशंसा सुनने और सुनाने में उसे ब्रह्मानन्द प्राप्त होता है। वह आत्मश्लाघ्यता में इस प्रकार निमग्न हो जाता है कि चारण-प्रकृतिवाले खुशामदी लोग उसे चूसकर, त्याग देते हैं। अपने कार्य की सिद्धि होने तक ही वह उसकी हां-में-हां मिलाते हैं।

— 卐 —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहक्प्रपन्न पशु पाश विमोक्षणाय,
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽललाय।
श्रीमद्भागवत् ८-३-१७

एक तांगा शहर से रवाना हुआ और दस मील दूर एक देहाती गांव में जा कर रुका। तांगेवाले ने घोड़ा खोला और रामलाल अहीर का मकान पूछता हुआ गांव में गया।

छोटे गांव में किसी के भी मकान का पता लगा लेना आसान है। शीघ्र ही तांगेवाला एक मकान के सामने जाकर रुका और मालकिन को पुकारा।

आवाज सुनकर रामलाल की पत्नी कमला बाहर निकली और मुँहपर पल्ला डालकर खड़ी हो गई। देहाती स्त्रियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनजान आदमी के सामने मुँह खोलकर बात करना पसन्द नहीं करतीं।

रामलाल शहर के एक कारखाने में काम करता था और उसकी स्त्री तथा उसका छोटा बच्चा देहात में उसके ... रहते थे।

तांगेवाले ने कमला से कहा—"आज सबेरे रामलाल ... दुर्घटना से घायल हो गया है जो अब अस्पताल में पड़ा है और तुम्हें जल्दी बुलाया है।"

समाचार सुनकर कमला की आंखों में अंधेरा छा गया। वह हाय! भगवान्! कहकर जोर जोर से रोने लगी।

"अबला जीवन हाय तेरी है यही कहानी।'
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।"

गेहूँ कटने के दिन थे गांव के सब जवान मर्द औरत खेतों पर गये हुये थे। गांव में कुछ वृद्धों और बच्चों को छोड़ और कोई न था।

कमला का रोना सुनकर एक वृद्धा आई और सब हाल सुनकर ढाढस बंधाते हुये शीघ्र जाने की सलाह दी।

कमला ने शीघ्र सामान इधर उधर कर चलने की तैयारी की। घर में जो कुछ नकद व जेवर था वह भी यह सोचकर कि इलाज के लिये इनकी आवश्यकता हो सकती है साथ ले लिया।

कमला झट बच्चे को गोद में लेकर तांगेवाले के साथ ... ली। एक अजनबी आदमी के साथ अकेले जाने में उसको ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय धड़क रहा था। गांव में और कोई था ही नहीं जिसे अपने साथ लेती या कम से कम जिसकी सलाह से काम लेती। अनेक प्रकार की भ्रम और आशंकाओं को चिन्तन करती कमला रवाना हुई। जाना तो अवश्य था ही।

तांगा जल्दी रवाना हुआ। मार्ग में थोड़ा जंगल आता था। करीब आधा रास्ता पार करते ही एक कुएं पर तांगा ठहरा। कुएं के आसपास आम का बगीचा था। पेड़ इतने सघन थे कि लोग उसे 'अन्धेरा बाग' कहा करते थे।

तांगेवाले ने कहा—"पानी वानी पी लो।"

कमला तांगे से उतरी। बच्चा इधर उधर जमीन पर खेलने लगा। तांगेवाले ने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और त्यौरी बदलते हुये कमला से कहा—"पास में जो कुछ नकद व जेवर हो सब मेरे हवाले कर दो वरना बच्चे को कुएं में डाल दूंगा।"

पुत्र के अनिष्ट की संभावना से कमला का रक्त सूख गया। वह सोचती लगी कि क्या करूं और क्या न करूं? उसने रूंधे कण्ठ से तांगेवाले के सामने झोली पसारते हुये कहा—"भगवान् के लिये हम गरीबों पर दया करो।"

उस पाषाण हृदय में दया कहां—उसने कड़कते हुये स्वर में कहा—"देती है या बच्चे को कुएं में डालूं।

कमला के पैरों तले से जमीन निकल गई। किससे सहायता मांगे यहां कौन है? उसने भगवान् का स्मरण किया और अपने पुत्र को बचाने के लिये अपने पति की जीवन भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कमाई उस तांगेवाले के हवाले की।

तांगेवाले ने बच्चे को जमीन पर उतार दिया और धन को तांगे के भीतर गुप्त तहखाने में रक्खा। कमला सहमी हुई एक ओर खड़ी थी। वह इतनी भयभीत थी कि बच्चे को भी गोद में लेने का साहस न कर सकी।

जेवर को रख देने के बाद तांगेवाले ने झपट कर कमला को पकड़ा और घसीटते हुये कुएं की ओर ले चला। अब कमला अपना आवेग न रोक सकी। वह पूर्ण शक्ति से चिल्लाई इस आशा से कि शायद कोई चिल्लाहट सुनकर सहायता को आ जाय। किन्तु वह अरण्य-रोदन तो था ही, सब प्रयत्न निष्फल हुआ।

तांगेवाले ने शीघ्रता से ले जाकर कुएं में धकेल दिया। एक के बाद एक लगनेवाले आघातों को कमला न सह सकी और बेहोश हो गई।

कुएं की तली पर पैर टिकते ही कमला होश में आई और एकदम खड़ी हो गई। खड़ी होते ही उसने देखा कि उसका सिर पानी के बाहर आ गया है। गरमी के दिन थे, अतः कुएं में पानी कम था। वह सोच भी नहीं पा रही थी कि क्या करे? और क्या न करे? उसने दीनों के नाथ भक्तवत्सल भगवान् का मन ही मन स्मरण आरंभ किया। जब कहीं से भी सहायता की आशा न हो तब उस सर्वदृष्टा भगवान के अतिरिक्त और किससे प्रार्थना की जाय?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सम्भल कर कुएं की दीवार के पास सटकर खड़ी हो गई। इसी बीच ऊपर बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। वह परिस्थिति को समझने का यत्न कर ही रही थी कि उसके सामने ही ऊपर से कोई चीज आकर कुएं में गिरी। बच्चे के अनिष्ट की आशंका से चिन्तित वह एकदम चिल्लाई—"दयासिन्धु रक्षा करो।" उसने धड़कते हृदय से शीघ्र ही पानी में इधर उधर हाथ चलाये तो बच्चा उसके हाथ में आ गया। उसने सन्तोष की साँस ली। बच्चे को अपने कन्धे पर बिठा लिया। आपत्ति पर आपत्ति आते देखकर वह पागल सी हो गई। केवल श्रद्धापूर्वक ईश्वर-स्मरण की क्रिया उसके अन्तर में चलती रही।

कुएं के अन्दर से आई कमला की आवाज सुनकर तांग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वाला भय से कांपने लगा। वह जीवित है! अब क्या होगा? उसने कुएं में झुककर देखा तो कमला को दीवार के सहारे खड़ी पाया।

तांगेवाले पर खून सवार था। उसे षड्यन्त्र के प्रकट हो जाने का भय होने लगा। अपने भविष्य के संबंध में विचार कर वह हत् प्रभ सा हो गया। सहसा उसका ध्यान पास ही पड़े एक बड़े पत्थर की ओर गया। उसने षड्यन्त्र को सफल बनाने का अन्तिम प्रयास किया। और उस पत्थर को उठाकर कमला के सिर पर डालने की तैयार की।

तांगेवाले ने ज्यों ही पत्थर को उठाया कि उसके नीचे से एक काला नाग निकला और उसने तांगेवाले के बायें हाथ को अपने पाश में जकड़ लिया।

इस आकस्मिक घटना को देख तांगेवाला घबरा गया। उसने दायें हाथ से नाग को हटाने का यत्न किया तब तक नाग ने उसके दायें हाथ को भी अपने पाश में कस लिया। तांगेवाला भय से रोने चिल्लाने लगा--"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।"

कमला कुएं के भीतर तांगेवाले का रोना सुन रही थी किन्तु स्थिति को समझ नहीं पा रही थी। उसका भगवत भजन अनवरत चल रहा था।

थोड़ी देर बाद उधर से पुलिस की एक गश्ती जीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकली। तांगेवाले की हालत देख जीप की पुलिस वाले विचार करने लगे कि तांगेवाले की किस प्रकार सहायता की जाय।

कुएं के भीतर कमला ने भी मोटर की आवाज सुनी। उसके रुकने का भी अनुमान किया और अब लोगों को आपस में बात-चीत करते भी सुना। वह अन्दर से ही चिल्लाकर बोली—"भाइयो, भगवान के नाम पर मेरी भी सहायता करो।"

कुएं के भीतर से आनेवाली आवाज को सुनकर पुलिस वाले दौड़कर कुएं पर गये। उनने शीघ्र कमला को कुएं से बाहर निकाला।

कमला को तथा बच्चे को कुएं से सकुशल बाहर आया देख नाग देवता ने अपना फन फैलाया। उसने ध्यानपूर्वक कमला और बच्चे की ओर देखा और एकदम तांगेवाले को पाशमुक्त कर एक झाड़ी का रास्ता लिया।

नाग देवता को जाते देख कमला दौड़ी—"हे भगवान्! कुछ देर तो ठहरिये। मुझे आपके दर्शन तो कर लेने दीजिये।"

बोलो भक्त और उनके भगवान् की जय!!

*** मननीय विचार ***

हास्य वह यन्त्राश है जिसके अभाव में जीवन रूपी यन्त्र बिगड़ जाता है।

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भास्करानन्दजी शास्त्री, सिध्दान्तवाचस्पति, प्रभाकर

आज विश्व का मानव "धर्म" शब्द को सुनते ही चौंक उठता है, भौंहे सिकोड़ने लगता है, बुरा मानने लगता है और इस पर विचार भी करना पसन्द नहीं करता है, वह धर्म को जीवन के लिये एक निरर्थक, निस्सार, त्याज्य वस्तु समझता है। यह क्यों? इसलिये कि वह धर्म के वास्तविक स्वरूप को ही नहीं जानता और न उसके जानने का यत्न ही करता है। जिस दिन वह धर्म और धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझ लेगा उस दिन ही उसके जीवन में क्रान्ति आ जायेगी, मानव समाज का प्रेमी बन जायेगा, अमरता की ओर चल पड़ेगा, विश्व के निर्माण-कार्य में जुट जायगा। वह निर्भय हो जायेगा, सच्ची राष्ट्रीयता और विश्वकल्याण की सर्वोच्च भावना उसके अन्तर्निहित हो जायेगी। महर्षि दयानन्द, स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गान्धी, कवि-सम्राट रवीन्द्रनाथ टैगोर इन सब श्रेष्ठ महानुभावों ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को अपने जीवन में धारण करके सम्पूर्ण विश्व को दिखला दिया, कि धर्ममय जीवन ही वास्तविक जीवन है।

धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझ कर आज विश्व का मानव आकर एक ऐसे दलदल में फँस गया है जिससे निकलना उसको अत्यन्त कठिन हो रहा है। भय ने उसे सब ओर से आक्रान्त कर लिया है। आज उसको हाईड्रोजन बम, नाइट्रोजन बम, अणुबम, परमाणुबम, और महान् विनाशकारी राकेटों का दिन-रात स्वप्न आता रहता है, उसका सारा जीवन आनन्द से प्रायः विलुप्तसा होता चला जा रहा है। पता नहीं विश्व कब महाकाल के गाल में चला जाय कुछ कहा नहीं जा सकता। इसका मूल कारण आज संसारके बड़े बड़े वैज्ञानिकों के सोचने विचारने का सारा ढंग ही बदल गया है, जो हमारे प्राचीन भारतीय परम्परा और संस्कृति के बिलकुल विरुद्ध है।

भारत के प्राचीन आर्य ऋषि, महर्षि, ब्रह्मर्षि एकान्त शुद्ध पवित्र वायुमण्डल में नदियों के किनारे, पर्वतों के उच्च शृंगों पर कई कई घण्टों की समाधि लगाकर, परमपिता परमात्मा के ध्यान में निमग्न होकर यह प्रार्थना किया करते थे और सोचते थे प्रभो! हमें ऐसी मेधा शक्ति, ऋतम्भरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ज्ञा प्रदान करो कि एक भी ऐसी चीज का (शक्ति का) आविष्कार करें जिससे करोड़ों, अरबों मनुष्यों का ही नहीं प्राणीमात्र का कल्याण हो। वे ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि उन्हीं उदात्त श्रेष्ठ भावनाओं से प्रेरित होकर बड़ी से बड़ी शक्ति का आविष्कार करते थे जिससे सब लोगों का जीवन सुख और शान्ति पूर्वक व्यतीत होता था। और वे लोग जीवन के सर्वोच्च चार फल, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ होते थे। लेकिन आज पश्चिमी संस्कृति और सभ्यता के सांचे में ढले हुये बड़े बड़े वैज्ञानिक जिनके ऊपर राष्ट्रों का करोड़ों, अरबों, असंख्यों रुपया खर्च हो रहा है, वे सर्वसाधन सम्पन्न महलों, अन्वेषण शालाओं में बैठकर राक्षसीय, आसुरी मनोभावों और विचारों से प्रेरित होकर पहले से ही सोच समझकर ऐसे ऐसे वैज्ञानिक आविष्कारों के करने में प्रवृत्त होते हैं, कि एक ऐसा विनाशकारी बम बनायें कि कलकत्ता जैसा बड़ा शहर जिसकी आबादी ६० लाख है, टोकियो जैसा बड़ा शहर जिसकी आबादी ५० लाख है, न्यूयार्क जैसा बड़ा शहर जिसकी आबादी ६० लाख है और लण्डन जैसा बड़ा शहर जिसकी आबादी ८० लाख के करीब है, ऐसे ऐसे बड़े बड़े विश्व के शहरों के ऊपर एक एक ही बम डालें कि सारा का सारा शहर नष्ट भ्रष्ट होकर हमेशा के लिये समाप्त हो जाय, यह है आजकल के विश्व के बड़े २ वैज्ञानिकों और प्राचीन ऋषियों, महर्षियों एवं ब्रह्मर्षियों के विचारों और आविष्कारों में आकाश पाताल का महान् अन्तर।

यदि इनके उन अन्तरों पर सूक्ष्म रूपसे विचार किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय तो यह पता लगेगा कि हमारे प्राचीन आर्य ऋषियों, महर्षियों, ब्रह्मर्षियों का जीवन धर्म से युक्त था, धर्म ही उनके जीवन का सर्वस्व था, वह धर्म को एक क्षणमात्र के लिये भी नहीं छोड़ते थे, इसी कारण उनके अन्दर दैवीशक्ति, राष्ट्रीय शक्ति एवं मानवीय उत्तम शक्ति का पूर्ण विकास हुआ था किन्तु आजकल के वैज्ञानिकों के अन्दर वह दैवी शक्तियां खपुष्प (आकाश कुसुम) के समान असम्भव सी हो गई है यह क्यों? आजकल के वैज्ञानिकों ने धर्म के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है। आधुनिक युग के वैज्ञानिक ज्ञान की क्रमोन्नति में धर्म को सबसे बड़ा शत्रु समझते हैं। अधिक तो क्या, संसार की बड़ी २ यूनीवर्सिटियों (विश्वविद्यालयों) ने धर्म को जड़ से समाप्त करने के लिये बड़ी २ योजनायें बनाली हैं, इसलिये सबसे पहले यह विचार करना आवश्यक है कि धर्म है क्या?

धर्म शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, यह धारणार्थक 'धृ' धातु से निष्पन्न होता है इसलिये 'धार्यते इति धर्मः' अर्थात् जो धारण करनेवाला तत्व है वही धर्म है। महर्षि जैमिनि अपने मीमांसा दर्शन में इहलोक और परलोक की सुख सिद्धि के लिये गुण और कर्म के प्रवृत्ति की प्रेरणा को धर्म का लक्षण मानते हैं। वैदिक साहित्य में धर्म शब्द वस्तु के स्वाभाविक गुण और कर्तव्य अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसे ताप और प्रकाश पैदा करना अग्नि का धर्म है, वैसे ही प्रजाका पालन और रक्षण राजा का धर्म है। महर्षि मनुजीने धर्म का लक्षण किया है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौच मिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥ मनु०

मनुजी एक और स्थल पर लिखते हैं:—

'आचारः परमो धर्म' अर्थात् सदाचार ही परम धर्म है।

वेदव्यासजीने महाभारत में लिखा है:—

घारणाद् धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजा ।

अर्थात् जो धारण किया जाता है वही धर्म है ।

वैशेषिक दर्शनकार कणाद ऋषि धर्म का लक्षण करते हैं-

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस्सिद्धि स धर्मः ।

अर्थात् जिससे लोकोन्नति और मोक्ष की सिद्धि होती है वही धर्म है। इस युग के महान् सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने पक्षपातरहित न्यायाचरण तथा सत्य भाषणादि सदाचार को ही धर्म स्वीकार किया है।

वैदिक वाङ्मय में धर्म शब्द कहीं भी सम्प्रदाय अर्थात् मजहब अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है । अथवा किसी बाह्य चिह्न से धर्म का अनुमान नहीं किया गया है । इसलिये धर्म शास्त्रों में कहा गया 'न लिंगं धर्म कारणात' अर्थात् बाह्यचिह्न धर्म का कारण नहीं ।

धर्म और मजहब क्या एक वस्तु है ? इस पर विचार करने से पता लग जाता है कि मजहब का अर्थ किसी विशेष व्यक्ति द्वारा प्रचारित मत विशेष है, शास्त्रोक्त धर्म के लक्षण के साथ मजहब शब्द के अर्थ का कोई सम्बन्ध नहीं है । धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजहब से सम्पूर्ण रूपेण अलग चीज है। धर्म क्रियात्मक और मजहब विश्वासात्मक वस्तु है। धर्म मनुष्य को सच्चा मनन-शील मनुष्य बनाता है, परन्तु मजहब मनुष्य को मजहबी दीवाना, अन्ध विश्वासी बनाता है। धर्म से, दैहिक, मानसिक आत्मिक सामाजिक राजनैतिक सभी प्रकार की उन्नति होती है--मजहब से नहीं।

धर्म को मुँह से न कहता हुआ भी ऐसा कौन देशोद्धारक तथा मानवता प्रेमी व्यक्ति है जिसको धृति (पेशेन्स), क्षमा (फॉरगिवनेस), अस्तेय (नॉटस्टीलथ), शौच (किलन्लीनेस), इन्द्रिय निग्रह (सेल्फरिस्ट्रेन्ट), विद्या (विजडम), सत्य (ट्रूथ), अक्रोध (डिसपैशेनेट्नेस) स्वीकार योग्य नहीं।

कोई भी मानवता हितैषी मनुष्य उपरोक्त बातों के उपयोगिता से इनकार नहीं कर सकता तो धर्म को परे कैसे हटा सकता है। जैसे भोजन के बिना मनुष्य जी नहीं सकता उसी प्रकार धर्म के बिना मनुष्य का जीवन असंभव है। जो लोग कहते हैं कि धर्म के कारण ही बहुत कुछ बुराइयाँ देश में फैली हुई हैं अतएव धर्म को अब नष्ट कर देना चाहिये, वह धर्म के तत्व को अभी समझ ही नहीं सके हैं। यथार्थ धर्म के पालन से बुराइयों का नाश ही होता है। हां मजहब (सम्प्रदायों) के कारण देश को तथा विश्व को बड़ी हानि पहुँची है, इसके कारण उत्पन्न दोष को हम धर्म के सिर मढ़ें यह उचित नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक धर्महीन शिक्षा प्रणाली देश और जाति के लिये महान अनिष्ट कारक सिद्ध हुई है। इससे उत्पन्न हुये विनाशकारी परिणाम को कितने राष्ट्रोंने अनुभव किया, और अब भी कर रहे हैं। आज संसार में सम्पूर्ण अशान्ति का कारण धार्मिक शिक्षा का प्राय: अभाव ही है। जिस प्रकार व्यक्तिगत उन्नति के लिये वैयक्तिक धर्म का पालन करना आवश्यक है, उसी प्रकार राष्ट्र की उन्नति के लिये राष्ट्रीय धर्म का पालन अनपेक्षणीय आवश्यक है। जिस राष्ट्र के व्यक्तियों के अन्दर अहिंसा नहीं, प्रेम नहीं, दया नहीं, ब्रह्मचर्य नहीं, सन्तोष नहीं, कष्ट सहने की शक्ति नहीं, सच्चाई नहीं बल्कि जिस राष्ट्र के लोगों में चोरी, हिंसा, द्वेष, द्रोह, दूसरे के धर्म में लोभ, अनाचार, मूर्खता, असदाचरण, दुर्बलता आदि अधर्म हैं वे चाहे संसार में ४० अथवा ५० करोड़ भी क्यों न हों कभी भी राष्ट्र को समुन्नत करने और उस राष्ट्र की स्वतन्त्रता को चिरस्थायी रखने में समर्थ नहीं हो सकते। हमारा प्राचीन वैदिक इतिहास साक्षी है जब यहां भारत के आर्य लोग वैदिक मर्यादा अर्थात् शुद्ध धर्म का पालन करते थे उस समय इस राष्ट्र के राष्ट्रपति महाराजा अश्वपति दावे के साथ घोषणा करते थे—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्, न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

महाराजा रामचन्द्रजी के राज्य का वर्णन हम पढ़ते हैं रामराज्य की कितनी सुन्दर व्यवस्था थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहृष्टो मुदितो लोकः तुष्टः पुष्टः सु धार्मिकः ।
निरामयोह्यरोगस्य दुर्भिक्षः भयवर्जितः ॥
न चाऽपि क्षुद्भयं तत्र न तस्कर भयं तथा ।
नगराणि च राष्ट्राणि धन धान्येन युतानि च ॥
—बा० रामायण

मनुस्मृति भी प्रमाण कोटि में है । जब यहां के धार्मिक विद्वानों, ऋषियों, महर्षियों, ब्रह्मर्षियों के पवित्र चरणों में बैठकर अन्य देशों के लोग दूर दूर से आकर धर्म, राजनीति, सदाचार, कला कौशल तथा विज्ञान की शिक्षा लिया करते थे । यथा—

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवः ॥

उस समय हमारा यह भारत राष्ट्र इतना समुन्नत क्यों था ? उसका मूल कारण यह था कि यहां के लोगों का जीवन धार्मिक जीवन था, वे सब वेदोक्त शिक्षाओं का पालन करते थे, वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार जीवन का संचालन करते थे । पैदा होने से लेकर मरण पर्यन्त प्रत्येक व्यक्ति का जीवन धर्म से बँधा होता था, धर्म की मर्यादा का भंग करना पाप समझते थे । धर्म का ही पालन करते हुये आर्यों ने एक सौ, दो सौ वर्ष नहीं बल्कि १ अरब ९७ करोड़ २९ लाख वर्षों तक सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य का उपभोग किया । उन सार्वभौम चक्रवर्ती महाराजाओं की पंक्ति में मनु, इक्ष्वाकु, मान्धाता, दिलीप, अज, दशरथ, रामचन्द्र, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिर और परीक्षित इन महाराजाओं का नाम सुव
अक्षरों में लिखने योग्य है। उन्ही श्रेष्ठ महाराजाओं के
शासन समय में ही यहां वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, भर
अगस्त, कपिल, कणाद, पातञ्जलि आदि बड़े २ ऋषि,
ब्रह्मर्षि उत्पन्न हुये जिनके पवित्र ज्ञान गंगा में स्नानकर
आज भी अपने को कृतकृत्य समझते हैं। पुरुषों के सा
साथ भारत की देवियां भी आगे बढ़ीं, कौशल्या, सुमि
गार्गी, सुलभा, मन्दालसा, दमयन्ती, लोपामुद्रा ऐसी मात
वीर विदुषी देवियों ने भारत-वसुन्धरा के मुख को समु
कर उसके यश में चार चाँद लगा दिया।

आत्म निर्भयशील धर्म परायण व्यक्ति ही स्वाधीनता
करने और उसके संरक्षण करने में समर्थ हो सकता
अथर्व वेद में एक मन्त्र इस प्रकार का आया है--

तद्वै राष्ट्रमा स्रवति नावं भिन्नाभिवोदकम्।
ब्रह्माणं यत्र हिंसन्ति तद्राष्ट्रं हन्ति दुच्छुना॥
अथर्ववेद ५। १९। ८

मन्त्रका तात्पर्य यह है कि धार्मिक ज्ञानी पुरुष को जि
राष्ट्र में सताया जाता है, वह राष्ट्र दुर्गति को प्राप्त होता
वेदों में स्वराज्य सम्बन्धी वर्णन इतना मनोहर है कि
अन्यत्र मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। उनमें से एक मन्त्र
स्वराज्य व्यवस्था के ठीक ठीक चलानेवाले लोगों का व
निम्न प्रकार पाया जाता है--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ यद् वामीय चक्षसा मित्रं वयंच सूरयः ।
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥
ऋ. ५ । ६६ । ६

इस मंत्र का भाव यह है कि हे मित्र दृष्टिवाले लोगो ! विशाल दृष्टि सम्पन्न सज्जनो ! आप सब तथा हम सब धार्मिक विद्वान् मिलकर विस्तृत तथा अनेकों की सहायता से जिसका पालन होता है ऐसे स्वराज्य में, स्वराज्य व्यवस्था ठीक प्रकार से चलाने का उत्तम प्रयत्न करें ।

स्वराज्य के लिये (१) मित्र दृष्टिवाले धार्मिक लोग, (२) विस्तृत दृष्टि के लोग, (३) ज्ञानी लोग ये तीन प्रकार के लोग योग्य होते हैं । इसके विपरीत संकुचित दृष्टिवाले, आपस में निरर्थक लड़ाई झगड़ा करनेवाले लोग स्वराज्य चलाने में समर्थ नहीं हो सकते हैं ।

राष्ट्र विकास के लिये, उन्नति के लिये, मानवता लाने के लिये जिन २ वस्तुओं की आवश्यकता है उसका वर्णन अथर्ववेद के निम्न मन्त्र में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है । यथा—

ओजश्च, तेजश्च, सहश्च, बलञ्च, वाक्चेन्द्रियंच, श्रीश्च, धर्मश्च, । ब्रह्मश्च, क्षत्रञ्च, राष्ट्रंच, विशश्च, रूपंच, नामच, कीर्तिश्च, प्राणश्चापानश्च, चक्षुश्च, श्रोत्रं च । पयश्च, रसश्चान्नं चान्नाद्यं चर्तंच, सत्यं चेष्टं च पूर्तंच प्रजाच पशवश्च । तानि सर्वाण्यपक्रामन्ति ब्रह्मगवीमाददानस्य जिनतो ब्राह्मणं क्षत्रियस्य ॥
अथर्ववेद १२ । ५ । ७-११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(धर्म बाधक है या साधक?)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरोक्त सम्पूर्ण श्रेष्ठ गुणों को अपने अन्दर
करने से ही राष्ट्र का तेज विकसित हो सकता है। आ
लोग, पूर्ण व्यवहारिक, स्वाध्यात्मिक स्वाधीनता एवं
फलस्वरूप अक्षुण्य आनन्द को स्वराज्य कहते थे, अगर
सच्चे अर्थों में अपने अन्दर राष्ट्रीयता एवं मानवता का वि
करना चाहते हैं और सम्पूर्ण विश्व के प्राणीमात्र को
स्वतन्त्र, आनन्दित देखना चाहते हैं, तो उसका ए
उपाय पवित्र श्रेष्ठ धर्म का आचरण करना ही है।
द्वारा ही हम लौकिक तथा पारलौकिक सभी सुखों
आनन्दों को प्राप्त कर सकते हैं। इससे यह सिद्ध होता
धर्म राष्ट्रीयता एवं मानवता के मार्ग में साधक है बाधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वात्मा का उत्सर्ग

ले. जयमूर्तिसिंह एम. ए. बी. एड.

विश्व विख्यात नेता जान केनेडी की हत्या के समाचार श्वके लोगों को शोकाकुल कर दिया। हत्यारे ओसवाल्ड स महान् नेता के ऊपर तीन गोलियाँ चलाई जो उनके और दिमाग को चीरती हुई पार कर गयीं और उन्हें सदा के लिये हमसे छीन लिया। राष्ट्रपति की हत्याने को झगझोर दिया। वे एक महान् राष्ट्र के एक महान् ष्ट्रपति थे, उनकी जान लेकर हत्यारे ने अनेक अविक- राष्ट्रों को महान् क्षति पहुँचाई। संसार का एक महान् नीतिज्ञ इस प्रकार से हमसे छीन लिया गया जिसका कोई न नहीं कर सकता। स्वर्गीय केनेडी एक सम्पन्न परिवार होते हुये भी गरीब दीन दु:खिओं एवं पिछड़े वर्गों के हित लिये सदैव प्रयत्नशील रहे। उनका झुकाव सदैव विश्व न्ति की ओर था। उत्तरी अमेरिका में नीग्रो लोगों के चित विकास के लिये वे बहुत कुछ किये। विद्यालयों, लों एवं अस्पतालों में उनके प्रवेश के अधिकार पर जोर और उस पर प्रयोग किये। वे मानवता के सच्चे पुजारी वर्ण भेद नीति को वे कतई प्रश्रय देना नहीं चाहते थे। का यह दृढ़ विश्वास था आखिर सभी इन्सान तो भगवान् सन्तान हैं। तो हम फिर क्यों काली और गोरी चमड़ी के धार पर एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखें। यह शरीर अस्थायी है इसका महत्व क्या है? महत्व तो है व्यवहारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आदान प्रदान का। अस्तु भाई चारे की भावना के पर ही हम संसार में सुख एवं शान्ति का घर स्था सकते हैं। इस प्रकार जान केनेडी में वही गुण वि जो महात्मा गौतम बुद्ध, ईसा, एवं महात्मा गां थे। उनकी हत्या नहीं हुई है बल्कि आदर्शों की हत्या इससे स्पष्ट है कि विश्व में आज भी जघन्यता का फैला हुआ है।

आज केनेडी की हत्या संसार के लिये एक घोर वस्तु है। समाज के सभी लोगों के लिये एक वि तथ्य है। ऐसा लगता है कि आधुनिक युग में भी लोगों का जमघट है जो विष रस भरे कनक घट के हैं। आज भी छिपे हुये गद्दारों की तूती बोल रही किसी भी समय श्रेष्ठ आत्माओं का हनन कर स उनकी शक्ति कहीं हमसे अधिक है। उनकी गुन्डागर्दी बोलबाला है, शान्तिप्रिय व्यक्तिओं का किसी भी समय निकल सकता है। रावणी साम्राज्यवादी नीति आज भी रही है। तो क्या आदर्शविहीन समाज की ही विजय होनेवाली है? क्या हम इसे पनपने देना चाहेंगे? क्या ऐसे थोड़े दुष्काण्डियों के हाथों से अपने प्रिय नेता होना पसन्द करेंगे? क्या विश्व की इस प्रकार की क्षति हम सहन करेंगे? ये सभी समस्याएं हमारे और सामने मुंह बायें खड़ी हैं। आज जो घटना जान के साथ घटित हुई कल किसी अन्य नेता के साथ भी हो है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। विश्व आज उस बर्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर जा रहा है जब कभी वह जंगली अवस्था में था। मनुष्य जब जंगली था, वह मानवीय गुणों से बहुत कुछ अपरिचित था। वह मांस-मछली, शिकार एवं शक्ति के सहारे जीवित था। मारकाट ही उसके प्रधान गुण थे इसी के आधार पर वह समाज में टिकता था परन्तु उस जंगलीपन के बावजूद भी वह ऐसे की हत्या नहीं करता था जो शस्त्र विहीन होता। जो किसी भी प्रकार से उसका अवरोध नहीं करते। निर-पराधी, अनाड़ी पर वह शस्त्र चलाना एक दुष्कर्म समझता था उसे भी वह सामने आकर ललकार कर कहता था। धोखा घड़ी उसमें नहीं थी परन्तु आज की क्या दशा है ? आज मनुष्य पग पग पर शंकित है। वह विश्वास घात से तंग हो उठा है। झूठी दोस्ती का दम भरता है। पद लोलुपता का चोला पहनकर वह अपने प्रिय मित्र के साथ धोखा करता है। आधुनिक युग धन को प्रधान मानता है। लक्ष्मी की पूजा से ही वह सब कुछ कर सकता है। झूठ को सच कर सकता है और सत्य को झूठ। लेकिन यह देखा गया है कि जिस युग में धन को प्राथमिकता दी गयी है उसमें भयंकर गड़बड़ी हुयी है। मनुष्य विलासिता की ओर झुकता है। वह नाना प्रकार के व्यभिचार का शिकार बनता है। उसका मन उसके वश में नहीं रहता। वह भोगवादी स्वभाव का हो जाता है। अपनी तृप्ति की पूर्ति के लिये अनेक कुकर्मों को करता है। इस प्रकार वह पथ भ्रष्ट होकर सारे परिवार को भी पथ भ्रष्ट बना देता है। उसके बच्चे भी कुमार्ग के यात्री बन जाते हैं। इस तरह धीरे धीरे क्षय रोग की तरह पूरे समाजको बुराई घेर लेती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और समाज अशान्ति का अखाड़ा बन जाता है। इतिहा
पृष्ठ इसके साक्षी हैं। जयचन्द, औरंगजेब, जाफर, वा
अलीशाह, इत्यादि। इन राजओं के युग में व्यभिचार
तूती बोलती थी। लोककल्याण की भावना की सामन्त
लोगोंने कुछ भी परवाह नहीं की। जनता के खून पर
खूब मौज उड़ाते रहे। फलस्वरूप सबके सब बुरे दिन दे
इनके साथ जो अच्छे भी थे उनके चमकने का अवसर
मिल पाया। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस यु
भोगवाद का साम्राज्य फैलता है उसमें अवश्य खून खरा
होती हैं। कुछ थोड़े से लोग ऐसे होते हैं जो जनता
कुचलकर गुलछर्रे उड़ाना चाहते हैं। अपने परिवार
जाति वालों को दूसरे छोटे समाज से दूर रखना चाहते
गरीब को सदैव नीच एवं साधनहीन समझते हैं उन्हें
सम्पर्कमें लाने में अपनी मानहानि समझते हैं। वे समझ
जो गरीब है, उसके पास कोई सभ्यता नहीं, कोई म
नहीं। चारों ओर वह अपने ही को बड़ा देखता है।
दूसरे जो उसके आधीन हैं वे सब नहीं के बराबर हैं।

उत्तरी अमेरिका में आज से लगभग. दो सौ वर्ष प
ऐसे ही साम्राज्यवादिओं का बोल बाला था। वे नीग्रो ल
को बहुत तुच्छ समझते थे और उनके ऊपर अनेक प्रका
अत्याचार करते थे। नीग्रो लोग दास का जीवन व्यतीत क
थे और उन्हें कुत्ते बिल्ली की तरह उनके घर पर र
पड़ता था। नीग्रो हर प्रकार से मौलिक, राजनैतिक
सामाजिक अधिकार से वंचित थे। उनके ऊपर कोड़े ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते थे और जुल्म का पहाड़ ढाया जाता था। कुछ दिनों के बाद उनमें राजनैतिक चेतना जागृत हुई और वे अपने अधिकार के लिये कटिबद्ध हो गये। उनके इस आन्दोलन में रूजवेल्ट एवं अब्राहम लिंकन जैसे महान् नेताओं का समर्थन प्राप्त हुआ। अब्राहम लिंकन ने तो अपने जीवन का महान् समय नीग्रो के उद्धार में व्यतीत किया। अब्राहम लिंकन भारत के महात्मा गांधी जैसा एक महान् पुरुष था। उसमें मानवीय गुण कूटकूट कर भरे थे। वह नीग्रों के ऊपर हो रहे अत्याचारों को देखकर शोकाकुल हो उठा और उनकी आजादी के लिये तन मन धन से जुट गया। वही पहला व्यक्ति था जिसने निर्भीक होकर कहा—'दासता मनुष्य के लिये अभिशाप है और इससे मनुष्य का कभी भी कल्याण नहीं हो सकता है।" यही नहीं उस महान् युगदृष्टा ने यह भी कहा—"प्रजातन्त्र सरकार जनता से बनती है और यह जनता के हित के लिये ही पूर्णतया होता है।" इस प्रकार वे लोकतन्त्र के प्रथम निर्माता थे। नियति की कुछ ऐसी मर्जी हुई कि उस जनप्रिय नेता के विरुद्ध भी षडयन्त्र शुरू कर दिया गया और एक दिन उन्हें एक थियेटर में निमंत्रित किया गया और वहां वे एक नाटक देखने के लिये बैठ गये। उसी समय रंगमंच पर से ही किसी हत्यारेने उनकी हत्या कर दी और राष्ट्रपति स्वर्गलोक सिधार गये। सारी दुनिया सुनकर स्तब्ध हो गयी। अब्राहम लिंकन जनता जनार्दन के नायक थे। जनता ही के लिये जीवित रहना चाहते थे। उन्होंने अपनी जिन्दगी एक सामान्य मजदूर से शुरू की और राष्ट्रपति के पद पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहुँचे। इस अवधि में उनमें अभिमान और बेईमानी का एक उदाहरण भी नहीं मिला। लेकिन मरकर भी जीवित हैं। जो कार्य वे कर गये हैं वह चिर स्मरणीय रहेगा। अमेरिका की जनता उसका ऋण नहीं चुका सकती।

स्वर्गीय केनेडी भी उन्हींके पदचिन्हों पर चल रहे थे। उनका भी उद्देश्य यही था कि संसार में स्वतंत्रता की रक्षा करनी ही होगी। कोई भी देश हो अगर वह गुलामी की बेड़ी में जकड़ा हुआ है तो वह कदापि नहीं आगे बढ़ सकता और वहां मनुष्यता कभी खिल नहीं सकती है। इसीलिये वे अर्द्ध विकसित देशों के हितों पर बराबर सजग रहते थे और उन्हें आर्थिक मदद देने में कोई संकोच नहीं होता था। वे गरीबी के घोर शत्रु थे। वे कहते थे कि दुनिया में हम कम्यूनिस्टों के विषाक्त कीड़ों को तभी मार सकते हैं जब हम गरीबी पर विजय प्राप्त करले जायं। जबतक संसार में गरीबी का आसन जमा हुआ तबतक कम्यूनिस्टों के कीड़े अवश्य फैलेंगे। दुनिया की कोई भी शक्ति उन्हें रोक नहीं सकती है। यह समझ-बूझकर वे गरीब देशों की मदद करना अपना कर्तव्य समझते थे।

इन बातों के अतिरिक्त उनमें विश्वबंधुत्व के भी भाव कूटकूट कर भरे हुये थे। दुनिया में विश्वयुद्ध होने की कई बार नौबत आई परन्तु उन्हें अपनी कुशलता से उसको सुलझा दिया। रूस जो अमेरिका का घोर शत्रु माना गया उसको वे अपने बहुत निकट ला दिये। क्रुशेव एवं केनेडी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों ने मिलकर विश्वशान्ति का समर्थन किया परिमाणु बम परीक्षण को रोकने का पूरा प्रयास किया। चीन की धोखेबाजी पर उन्होंने खेद प्रकट किया। भारत की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा के लिये उन्होंने गहरी दिलचस्पी दिखाई और खुल्लमखुल्ला हथियारों से सहायता की। वे भारत के महान् शुभचिंतक थे। भारत उन्हें कभी भूल नहीं सकता है।

जो कुछ भी हो, जान केनेडी की मृत्यु से सारा संसार दुःख के सागर में डूबा हुआ है। पर हमें यही तक उन्हें नहीं देखना है। बल्कि इससे भी बढ़कर अब हमारी गहरी जिम्मेदारी हो जाती उनके आदर्शों की रक्षा करना, जिन आदर्शों की रक्षा राष्ट्रपति जीवनभर करते रहे उसे हम लोगों को करना है।

---

* मननीय विचार *

न विधिं ग्रहते प्रज्ञा प्रज्ञां तु ग्रहते विधिः
विधि पर्यागतानर्थन् प्राज्ञो न प्रति पद्यते ॥

महा. आ. प. ११६–१०

मनुष्य की बुद्धि होनहार को नष्ट नहीं कर सकती। किन्तु होनहार मनुष्य की बुद्धि का नाश कर देती है। दैव की इच्छा से होने वाले कार्यों को विद्वान् मनुष्य भी नहीं जान सकते।

—सं. क. व्रजवल्लभ विशारदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल

स्पेशल नं. १

(रजिस्टर्ड)

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल [स्पेशल नं. १] का महत्व और ला

विगत २० वर्षों से यह तेल अनेक महत्व पूर्ण वनस्पति (जड़ी बूटियों) से निर्मित किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु (ग के दिन) वर्षा ऋतु (बरसात के दिन) हेमन्त ऋतु (ठंडी दिन) में स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयोगी रहे, ऐसी शा विधि से तैयार किया जाता है। रामतीर्थ ब्राह्मी ते वनौषधीय मधुर सुगंध होने से उपयोग करने वाली महि तथा पुरुष वर्ग हमेशा के लिये इसे अपना लेते हैं, और लोगों को महत्व बताकर व्यवहार में लाने के लिए स देते हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल युवक तथा वृद्धों के लिए उपयोगी नहीं अपितु छोटे से छोटे बच्चे तक के लिए ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायी है ऊपरोक्त रेखाचित्र में माता अपने बच्चो के सिर में रामतीर्थ ब्राह्मी तेल की मालिश करके सौन्दर्य, स्मरण शक्ति वृद्धि तथा आंखों की दृष्टि अच्छी बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल सिर के बालों के लिये ही नहीं है, किन्तु शरीर मालिश के लिये भी लाभ दायक है। आगे के रेखा चित्र में आप देख सकते हैं कि लोग अपने हाथों से तेल मालिश कर सारे शारीरिक अवयवों को नीरोग एवं सशक्त बना रहे हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान के १० मिनट पहले सारे शरीर तथा सिर की तैल मालिश १० से २५ मिनिट तक अवश्य करें। ऊंचाई और आयु के हिसाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से शरीर का वजन कम होने से वजन बढ़ जायगा। अधिक वजन होने की हालत में आहार परिवर्तन के साथ २ रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का प्रयोग करने से आवश्यक परिमाण में रहेगा।

आप आगे के रेखाचित्र को सूक्ष्म दृष्टि से देखिये। हाथ को, पेट को तथा पीठ के ऊपर मालिश करने के सुलभ तरीके बताए गये हैं। अनेक महिलाओं तथा पुरुषों का विचार है कि अपने हाथों से तैल मालिश अच्छी प्रकार से नहीं कर सकते हैं। दूसरों से करानी पड़ेगी। यदि दूसरों से मालिश कराने की सुविधा होवे तो अवश्य करा सकते हैं। सुविधा न होने पर आलस्य, शंका, और शर्म को छोड़कर अपने हाथों से हर दिन मालिश करने की आदत डालें, किसी कारण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

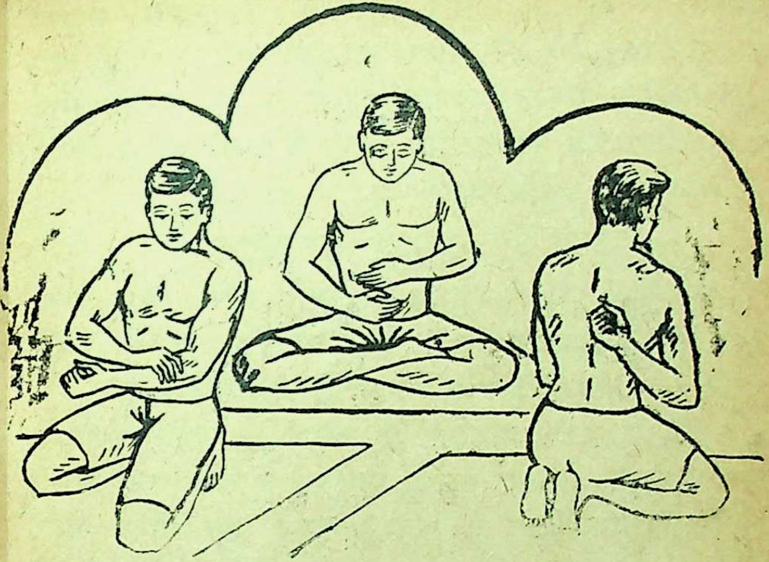

यदि हर रोज मालिश न हो सके तो सप्ताह में १ से ३ बार रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य मालिश करें या करावें।

विशेष सूचना और लाभ

आपने ऊपर छपे सर्व रेखा चित्रों को देखकर यह समझ लिया ही होगा कि रामतीर्थ ब्राह्मी तैल की मालिश से आबाल वृद्ध–बालक, माता, (महिला) तथा पुरुष वर्ग कितने आरोग्य-मय सुडौल शरीर वाले तथा आकर्षक मुख मुद्रा वाले और कितनी सुन्दर केशभूषा वाले हैं। इतना ही नहीं हरेक अवयवों को हृष्ट–पुष्ट बनाने में सामर्थ्यवान बन गये हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के प्रयोग से गहरी नींद, स्मरण शक्ति की वृद्धि, बाल काले, घने तथा लम्बे बनाने में अनुकूल है तथा इससे बालों का झड़ना बन्द कर गंजा पन दूर करने में लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायी है। कान में डालने से कान के सूक्ष्म अवयव नीरोग बने रहते हैं। ऐसे अनेकानेक महत्त्वपूर्ण लाभों की दृष्टि से ही वैद्यराज, डाक्टर, प्रख्यात विद्वान् वर्ग, राजनीतिज्ञ और अन्य प्रतिष्ठित वर्गों से रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के गुणों के विषय में स्वानुभव पूर्ण अनेक प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

छात्र वर्ग के लिये लाभदायक

ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, ऋषि-मुनि, साधु-सन्त, त्यागी-वैरागी उदासीन वृत्ति के लोगों को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अनेक प्रकार के लाभ अवश्य ही प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों के कारण से छात्र-छात्राओं, (बेसिक स्कूल, मिडिल स्कूल, हाय स्कूल तथा कालेज के) को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य लाभ प्राप्त होगा। जैसे, आखों की दृष्टि सतेज रहेगी। मस्तिष्क शान्त रहेगा। स्मरण शक्ति बढ़ जायेगी। शरीर मालिश से शरीर में स्फूर्ति बढ़ेगी, स्नायु संस्थान तथा रस ग्रन्थियों में शक्ति का संचार होगा।

वैसे तो त्वचा की कान्ति, रक्त परिभ्रमण के साथ स्वस्थ रहना, चर्मरोग निवारण, शारीरिक जोड़ों में बल, समस्त शरीर में समशीतोष्णता आदि अनेक लाभ सबको प्राप्त होता है। यदि आपने अभी तक रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का उपयोग कर लाभ नहीं लिया हो तो आज ही अपने शहर अथवा गांव के दवा बेचने वाले अथवा जनरल मर्चेन्ट से खरीद करें। दो साइजों में प्राप्त है।

न मिलने पर निम्न पते पर लिखें।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गतांक से आगे)

मैं जाना तुम्हार गुण-शीला,
कहहुँ, सुनहु अब रघुपति-लीला;
सुनु मुनि आज समागम तोरे,
कहि न जाय जस सुख मन मोरे।

मैं तुम्हारे शील और गुणों को जान गया हूँ अब भगवान् राम की लीला कहता हूँ, सुनो। हे मुनिवर! सुनो, आपके समागम से आज मुझे जो सुख-आनन्द प्राप्त हो रहा है, वह अकथनीय है—उसे कहा नहीं जा सकता।

रामचरित अति अमित मुनीशा,
कहि न सकहिं शतकोटि अहीशा;
तदपि यथाश्रुत कहौं बखानी,
सुमिरि गिरापति प्रभु धनु-पानी।

हे मुनीश्वर! भगवान् राम का चरित अनन्त है, अपरि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित है, शतकोटि शेषनाग भी उसका वर्णन कर नहीं सकते फिर भी, जैसा कुछ मैंने सुना है, वह सब धनुर्धारी, गि पति प्रभु का स्मरण करके कहता हूँ।

शारद दारुनारिसम स्वामी,
राम सूत्रधर अन्तर्यामी;
जेहिपर कृपा करहिं जन जानी,
कवि उर अजिर नचावहि बानी।

शारदा-सरस्वती तो दारुनारी (कठपुतली) के समा जड़ और मूक हैं, अन्तर्यामी रामही सूत्रसंचालन द्वारा चेतन प्रवृत्तिशील और मुखर बनाते हैं—वाक्-शक्ति प्रदान कर हैं। वे राम जिसको आप्तजन मानकर कृपा करते हैं उसी के हृदय-प्रांगण में वाणी-सरस्वती को नृत्य करने के लिये बाध्य कर देते हैं।

वन्दौं सोई कृपालु रघुनाथा,
वरणौं विशद जासु गुण-गाथा,
परम रम्य गिरिवर कैलासू,
सदा जहां शिव-उमा-निवासू।

उन कृपासिंधु रघुनाथजी की मैं हार्दिक वन्दना करता हूँ, जिनकी विशद-उदात्त गुण-गाथा का मैं कीर्तन करने जा रहा हूँ। वह गिरिवर कैलास परम रमणीय है, जहां भगवान शिव और पार्वती सदा से निवास करते आ रहे हैं।

सिद्ध तपोधन योगिजन, सुर किन्नर मुनि वृन्द,
बसहिं सदा सुकृती सकल, सेवहिं शिव सुखकन्द।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कैलास पर्वत पर सिद्ध, तपोधन, योगी, देव, किन्नर, मुनि आदि सभी सुकृती, सदाचारी और साधु-सज्जन निवास करते और भगवान् शिव की सेवा करते हैं।

हरि-हरविमुख धर्मरति नाहीं,
ते नर तहँ सपनेहुं नहिं जाहीं;
तेहि गिरिवर वटविटप बिशाला,
नित नूतन सुन्दर सब काला।

जो लोग हरि-विष्णु और हर-शिवजी की भक्ति से विमुख हैं और धर्मपालन में निष्ठा नहीं रखते, वे इस कैलास गिरिपर कभी स्वप्न में भी नहीं आते। उसी कैलास पर एक विशाल वटवृक्ष है, जहां नित्य नई सुन्दरता प्रकट होती है और जो सर्वकाल सुखद है।

त्रिविध समीर सुशीतल छाया,
शिव विश्राम विटप श्रुति गाया,
एकबार तेहितर प्रभु गयऊ,
तस विलोकि उर अति सुख भयऊ।

जहां त्रिविध-शीतल, मन्द-सुगन्ध समीर प्रवहमान, जिसकी सुखद शीतल छाया है, वह विटप-वटवृक्ष भगवान् शिवका विश्राम-धाम है, ऐसा श्रुतियों का-वेदों का कथन है। एकबार इसी मनोरम विटप के नीचे प्रभु गये और उसे देखकर आनन्द से उत्फुल्ल हो उठे।

निज कर डासि नागरिपु छाला,
बैठे सहजहिं शंभु कृपाला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुन्द, इन्दु दर गौर शरीरा,
भुज प्रलम्ब परिधन मुनि-चीरा।

अपने हाथ से ही नागरिपुछाला (सिंहचर्म) बिछाकर कृपामय भगवान् शिव सहज भाव से उसपर समासीन हुये। उनका कुन्द और चन्द्रमा के समान गौर और दीप्तिमान शरीर है। उनकी भुजाएँ लम्बी हैं और वे मुनिचीर-ऋषि-मुनियों के वस्त्र का परिधान किये हुये हैं।

तरुण अरुण अम्बुज सम चरणा,
नखद्युति भक्तहृदय तम-हरणा,
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी,
आनन शरद्चन्द्र छबिहारी।

तरुण-नवोत्फुल्ल और अरुण-लाल कमल के समान शंकरजी के चरण हैं और नखों की ज्योति भक्तों के हृदयान्धकार को दूर करनेवाली है। वे त्रिपुरारी भुजग-सर्पों और भूति-राख से अपने आपको आभूषित किये हुये हैं। उनका मुखमण्डल शरद्-चन्द्र की छटा को भी दबा रहा था।

जटा-मुकुट सुरसरितवर, लोचन नलिन बिशाल,
नीलकण्ठ लावण्यनिधि, सोह बालविधु भाल।

वे शंकरजी जटाओं का मुकुट पहने हैं, शिरपर सुरसरिता-गंगाजी सुशोभित हैं, उनके नेत्र कमल के समान सुन्दर और विशाल हैं, वे नीलकण्ड हैं, लावण्यनिधि हैं और उनके भाल-मस्तक पर बाल चन्द्रमा सुशोभित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे सोह कामरिपु कैसे,
धरे शरीर शान्त रस जैसे,
पारबती भल अवसर जानी,
गईं शंभु पहँ मातु भवानी।

वह सिंहचर्मासीन कामरिपु भगवान् शिव इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे, मानो स्वयं शान्त रस शरीर धारण कर मूर्तिमान हो गया है। यह सुअवसर देखकर जगदम्बा भवानी शंकरजी के पास गयीं।

जानि प्रिया आदर अति कीना,
बाम भाग आसन हर दीना,
बैठीं शिव समीप हरषाई,
पूरब जन्म-कथा चित आई।

पार्वतीजी को अपनी प्रिया--अर्धांगिनी जान कर भगवान् शिवने उनके प्रति अत्यधिक आदरभाव प्रकट किया और बाम भागमें आसन प्रदान किया-बैठाया। शिवजी के समीप वे प्रसन्न भावसे बैठ गयीं। उसी समय उनके मनमें पूर्व जन्म का वृतान्त जाग्रत हो उठा।

पतिहिय हेतु अधिक अनुमानी,
बिहँसि उमा बोलीं मृदुबानी,
कथा जो सकल लोक-हितकारी,
सोइ पूछन चह शैल कुमारी।

पति के हृदय में अत्यधिक प्रेमभाव देखकर पार्वतीजी मुसकरा कर मृदुबाणी बोली। जो कथा अखिल लोकजीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मंगल विधान करनेवाली है, उसी को शैलकुमारी पार्वतीजी पूछना चाहती हैं।

विश्वनाथ मम नाथ पुरारी,
त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी,
चर अरु अचर नाग-नर देवा,
सकल करहिं पद-पंकज सेवा।

हे विश्वनाथ, और मेरे प्राणनाथ त्रिपुरारी! तुम्हारी विराट् महिमा से तीनों लोक परिचित हैं। यह चर-अचर जगत् और नाग, मानव तथा देवगण--सभी तुम्हारे पद्मों की सेवा--पूजा में सदैव लगे रहते हैं।

प्रभु समरथ सर्वज्ञशिव, सकल कला-गुण धाम,
योग--ज्ञान वैराग्यनिधि, प्रणत कलपतरु नाम।

हे प्रभो! आप सर्वसामर्थ्यवान् हैं, सर्वज्ञ सबकुछ जानने वाले हैं, समस्त कलाओं तथा गुणों के धाम हैं, योग, ज्ञान और वैराग्य के निधि हैं और प्रणत--शरणागत के कल्पवृक्ष हैं। आप उक्त सभी गुणों के लिये विश्वविख्यात हैं और लोग इसी नाम से आपको पुकारते हैं।

जो मोपर प्रसन्न सुखराशी,
जानिय सत्य मोहिं निज दासी,
तो प्रभु हरहु मोर अज्ञाना,
कहि रघुनाथ कथाविधि नाना।

हे सुखराशि! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं और सचमुच ही मुझे अपनी दासी मानते हैं तो हे प्रभो! भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकी नानाविध लीलाओं की कथा बताकर मेरे अज्ञान का निवारण करने की कृपा करें।

जासु भवन सुरतरु तर होई,
सह कि दरिद्रजनित दुख सोई,
शशिभूषण अस हृदय विचारी,
हरहु नाथ मम मति--भ्रम भारी।

जिसका घर कल्पवृक्ष के नीचे है, उसे भी क्या दरिद्र-जन्य दुःख भोगने की आवश्यकता है? हे शशिभूषण! हृदय में ऐसा विचार कर मेरे मतिभ्रम का परिहार करें।

प्रभु जे मुनि परमारथवादी,
कहहिं रामकहं ब्रह्म अनादी,
शेष शारदा वेद पुराना,
सकल करहिं रघुपति गुणगाना।

हे प्रभो! जो मुनिगण परमार्थवादी हैं अर्थात् मोक्षमार्ग के व्याख्याता और साधक हैं, वे भी रामको अनादि ब्रह्म कहते हैं। शेष, सरस्वती, वेद, पुराण आदि सभी उच्च तत्त्व भगवान् राम का गुणगान निरन्तर करते रहते हैं।

पुनि तुम राम--राम दिन--राती,
सादर जपहुँ अनंग अराती,
राम सो अवध नृपति सुत सोई,
की अज, अगुण, अलख गति कोई।

हे अनंग कामदेवको दग्ध कर देनेवाले हे भगवान्! आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी दिन-रात राम--नाम का जप सादर-भक्तिपूर्वक
रहते हो। वह राम अवधराज--दशरथ के पुत्र ही हैं
वे कोई अजन्मा, निर्गुण और अदृश्य शक्ति हैं।

जो नृपतनय तो ब्रह्म किमि, नारिबिरह मतिभोरि,
सुनत चरित महिमा अमित, भ्रमतिबुद्धि अतिमोरि।

यदि वे राजकुमार हैं तो उनमें ब्रह्म की अभिव्यक्ति सम्भव है और यदि ब्रह्म हैं तो पत्नी के वियोग में इस प्र उनमें मतिभ्रम कैसे प्रकट हुआ ? उनकी यह चारित्रिक म महिमा सुनकर मेरी बुद्धि भी विभ्रमित हो रही है।

जो अनीह व्यापक विभु कोऊ,
कहौ बुझाय नाथ मोहि सोऊ,
अज्ञ जानि रिस जनिउर धरहू,
जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू।

यदि वह कोई अनीह (उद्यमहीन) सर्वव्यापी विभु अ सर्वशक्तिधर तत्व है, तो वह भी मुझे अच्छी तरह समझा हे नाथ ! मुझे अल्पज्ञ मानकर रुष्ट न होना और ऐसा वि व्याख्यान करें—ऐसे ढंगसे समझायें, जिससे मेरा मोह हो जाये।

मैं बन दीख राम प्रभुताई,
अति भय-विकल न तुमहिं सुनाई,
तदपि मलिन मन बोध न आवा,
सो फल भलीभांति मैं पावा।

मैं वनमें रामका प्रभाव देख चुकी हूँ परन्तु मैं इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक भय-विह्वल हो उठी थी कि आपको वह सब बता न सकी। फिर भी मेरे मलिन मनको उद्‌बोधन नहीं मिल पाया और उसका फल मुझे अच्छी तरह मिल चुका है।

अजहुं कछु संशय मन मोरे,
करौ कृपा विनवौं कर जोरे,
तब प्रभु मोहिं बहुभांति प्रबोधा,
नाथ सो समुझि करिय नहिं क्रोधा।

आज भी मेरे हृदय में कुछ सन्देह वर्तमान है। आप मुझ पर कृपा करें। मैं हाथ जोड़कर विनीत भाव से जिज्ञासा प्रकट कर रही हूँ। हे प्रभो ! उस समय आपने मेरा हर तरह से प्रबोधन किया-मुझे सान्त्वना दी। यह सब समझकर आप मेरे प्रति रोष न प्रकट करें।

तब कर अस विमोह अब नाहीं,
रामकथा पर रुचि मनमाहीं,
कहहु पुनीत राम-गुण-गाथा,
भुजगराज-भूषण सुरनाथा ।

तबका ऐसा मोहमूढ़भाव-अज्ञानभाव अब मुझमें नहीं रहा, अब रामकथा की ओर मेरी रुचि अत्यन्त उत्कंठित हो रही है। हे भुजगराजभूषण, हे सुरनाथ ! अब आप भगवान् रामके गुणों की पुनीत गाथा मुझे सुनायें।

वंदौ पद धरि धरणिशिर, विनय करौं कर जोरि,
वरणौ रघुवर विमल यश, श्रुति सिद्धान्त निचोरि ।

मैं भूमिपर शिर रखकर आपके पदों की वन्दना करती हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और करबद्ध होकर–हाथ जोड़कर आपकी प्रार्थना करती हूँ। हे भगवन्! आप वैदिक सिद्धान्तको निचोड़कर—उसका निरसन कर तन्निर्दिष्ट भगवान् राम के विमल यश का वर्णन कीजिये।

यदपि योषिता अन अधिकारी,
दासी मन-क्रम-बचन तुम्हारी,
गूढ़ौ तत्व न साधु दुरावहिं,
आरत अधिकारी जहँ पावहिं।

यद्यपि नारी होने के कारण यह सब जानने-सुनने का मुझे अधिकार नहीं है। फिर भी मैं मन-कर्म-वचन से आपकी दासी हूं। जब सन्त-महात्माओं के समक्ष कोई आर्त अधिकारी अपनी जिज्ञासा प्रकट करता है, तब वे उसकी अवहेलना नहीं करते और उसे गूढ़तम रहस्य भी बता देते हैं।

—क्रमश:

* मननीय विचार

बिना हास्य में भाग लिए हुए को हास्य स्फुटित कर देना हास्य के प्रभाव को और भी बढ़ा देना है।

—बाल्जक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वश्रेष्ठ भक्त

ले - वि. गु. नारायण खेडकर

नारदमुनि सोचने लगे, 'सर्वश्रेष्ठ एवं महान भक्त मैं ही हूं। मेरे सिवा इस स्वर्गलोक में ही नहीं अपितु मृत्युलोक में भी कोई ऐसा भक्त नहीं है, जो मुझ से श्रेष्ठ तथा महान् हो।' सोचते-सोचते वे भगवान् विष्णु की ओर गये। प्रणाम करके उन्होंने पूछा, 'भगवन्, आपका सबसे प्रिय तथा श्रेष्ठ भक्त कौन है?'

यह सुनते ही भगवान् विष्णु हँस पड़े। वे समझ गये कि नारदजी को अभिमान आ गया है। उनका अभिमान भंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिये उन्होंने कहा, 'मेरा प्रिय तथा सर्वश्रेष्ठ भक्त मृत्युलोक में निवास करता है।'

यह सुनते ही नारदजी चौंक पड़े। वे समझ रहे थे कि भगवान् विष्णु उन्हें ही 'सर्वश्रेष्ठ भक्त' कहेंगे। उन्होंने आश्चर्य से पूछा—'वह कौन है? क्या करता है?'

'एक गरीब किसान है, जिसे खेती है, घर-‐दार है, पत्नी तथा बच्चे हैं और कुछ सम्बन्धी है, जो पूर्णतया उसीपर निर्धारित है।'

नारदजी के मनमें उत्सुकता जाग उठी। 'मामूली किसान और मुझसे श्रेष्ठ? मैं उसकी परीक्षा लूंगा। मन-‐ही-‐मन सोचकर वे सीधे मृत्युलोक पधारे और उस किसान के घर गये। रात का समय था। दिनभर काम करके थका हुआ किसान सोने की तैयारी कर रहा था। वह सोते समय दोनों हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में बोल उठा, 'भगवन्, आपकी कृपा से मेरा आज का दिन बहुत ही आनन्द में गया। आपने ही मेरी तथा मेरे परिवार के लोगों की रक्षा की और हम सब की लाज बचायी। प्रभु! जन्म-‐जन्म तक आपका कृपा-‐वरदहस्त हमारे सिरपर रहे, यही मेरी आपके चरणों में प्रार्थना है।' और वह सो गया।

दूसरे दिन नारदजी पुनश्च भगवान विष्णु के पास गये और बोले, 'भगवन्, मैं आपका दिन-‐रात नामस्मरण करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं। आप ही के भजन गाता हूं, किन्तु वह किसान सिर्फ सोते समय ही एक बार आपका नामस्मरण करता है। अब आप ही बताइये कि वह 'श्रेष्ठ भक्त' कैसे हो सकता है।'

भगवान् विष्णु हंसकर बोले, 'आपके प्रश्न का उत्तर मैं फिर कभी दूंगा। पहले मेरा एक काम करो। भगवान् शंकर जी का पेट बहुत ही दर्द दे रहा है, इसलिये अश्विनीकुमारने औषधि से भरा हुआ यह पात्र भेजा है। इसे भगवान् शंकर जी को दे दो। स्मरण रहे, इस औषधि का एक बून्द भी नीचे न गिरने पाये। पात्र पूर्णतया औषधि से भरा हुआ है। सावधानी से ले जाओ वरन् शंकरजी क्रोधित होंगे।'

औषधि का पात्र लेकर नारदजी कैलास की ओर प्रस्थान किए। वे बहुत ही सावधानी से जा रहे थे। औषधि का एक बून्द भी नीचे न गिर पाये, इसलिये वे उसे बहुत ही संभल कर ले जा रहे थे। उनका पूर्ण लक्ष उसी पर केन्द्रित था। अन्तमें उन्होंने वह पात्र भगवान् शंकरजी को ले जाकर दे दिया।

दूसरे दिन जब वे भगवान् विष्णु की ओर आये, तब भगवान् विष्णुने पूछा, नारदजी, कल दिन में आपने कितनी बार मेरा नाम-स्मरण किया ?' यह सुनते ही नारदजी क्रोध से बोले-'वाह ! यह ठीक है भगवन् ! कल आपने मुझपर जिम्मेदारी सोंपी थी। और कहा था कि उस औषधि का एक बून्द भी जमीन पर न गिरने पाये। मेरा सारा लक्ष उस पर ही केन्द्रित था। तब भला मैं आपका नाम कैसे ले सकता ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् विष्णु हँस कर बोले ! मामूली औषधि का प सावधानी से ले जाने के काम से आप मेरा नाम-स्मरण न कर सके, किन्तु वह गरीब किसान, जो दिन भर खेती कर है, अपनी पत्नी तथा बच्चोंकी देख भाल करता है, अपने संबंधियों की सहायता करता है, जरा सी संधि मिल ही मेरा नाम-स्मरण करता है। अब आप ही बताइए 'श्रेष्ठ भक्त' वह है या आप ?"

यह सुनते ही नारदजी का मस्तक लज्जा से नत गया। उन्हें विदित हुआ कि अगर कोई भक्त दिन-रात भज पूजन, कीर्तन करता होगा तो कोई महत्व नहीं है, जब उसमें श्रद्धा, भक्ति तथा तन्मयता न हो।

* मननीय विचार *

पृष्टो हि साक्षी यः साक्ष्यं जानानोऽप्यन्यथा वदेत्॥
स पूर्वानात्मनः सप्त कुले हन्यात्तथा परान्॥
महाभारत आ. ७-

पूछे जाने पर जो जानते हुए भी झूट बोलता है व अपने से पूर्व और पीछे के सात पुश्त तक का हनन करने वाला होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति में स्थान स्थान पर मृत्यु के सम्बन्ध में जो विचार हैं, वे गम्भीर और दार्शनिकता से परिपूर्ण हैं। हिन्दू-संस्कृति में मृत्यु की भीषणता नहीं है। मृत्यु तो जीवनवृक्ष में लगा हुआ मधुर फल है या ईश्वर का ही एक स्वरूप है।

जन्म और मृत्यु इस जीवन रूपी सदन के प्रवेश और अन्तिम द्वारा हैं। जीवन, मरण वस्तुतः एक रूप ही हैं। जिस प्रकार रात्रि से ही अरुणोदय होता है और अरुणोदय से ही रात्रि होती है उसी प्रकार मरण से जीवन मिलता है और जीवन से मरण। ईश्वरांश जीवात्मा का स्थूल शरीर से पृथक होना ही मृत्यु है। मृत्यु के उपरान्त भी आत्मा तो अमर ही है! जीवन का प्रवाह अनन्त है हम अगणित वर्षों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जीवित हैं और अगणित वर्षों तक जीवित रहेंगे। डरना कायरता व अज्ञानता है। गीता व उपनिषद् आदि दार्शनिक ग्रन्थों में मृत्यु को गौण समझा गया है।

गीता में श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं।

> अथ चैनं नित्य जातं नित्यं वा मन्यसेमृतम्।
> तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि॥
> जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
> तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥
>
> (२-२६-२७)

अर्थः—['हे अर्जुन ! यदि तू इस आत्मा को सदा जन्मने और सदा मरने वाला माने तो भी, इस प्रकार शोक करने को योग्य नहीं है। क्योंकि ऐसा होने से तो जन्मने वाले की निश्चित मृत्यु और मरने वाले का निश्चित जन्म होना सिद्ध हुआ, इस से भी तू इस बिना उपाय वाले विषय में शोक करने योग्य नहीं है।']

पश्चिमी विद्वान् हयूगो ने एक स्थान पर लिखा है—

'मनुष्य क्या है? यह तो मिट्टी का गोला है लेकिन उसमें एक दैवी कला है। उस दैवी कला के कारण ही इस मिट्टी के गोले का महत्व है।'

जिस प्रकार बालक खेल ही खेल में एक मिट्टी के गोले को बदल कर दूसरा तैयार कर लेता है उसी प्रकार अविनाशी जीवात्मा पुराना शरीर छोड़ कर नया शरीर धारण करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह तो क अनिवार्य स्थिति है। यदि जीवन प्रश्न है तो मृत्यु सका उत्तर। जब मृत्यु का निमन्त्रण आता है तो कोई उसे स्वीकार नहीं कर सकता ! मृत्यु महायात्रा है, मृत्यु महा-स्थान है, मृत्यु महा निद्रा है। कायर मृत्यु से डरते हैं ीर नहीं।

बहुत से व्यक्ति अज्ञानतावश सगे सम्बन्धियों की मृत्यु र बड़ा शोक मानते हैं। रोते चिल्लाते हैं। ऐसे अज्ञानी यक्ति मृत्यु के रहस्य को नहीं जानते। आत्मा की अमरता ो नहीं पहचानते। नश्वर शरीर के लिये शोक करना व्यर्थ । कबीर दासजी भी कहते हैं।

कबिरा जंत्र न बाजई, टूटि गये सब तार।
जंत्र बिचारा क्या करे, चले बजावनहार॥

जीवन में जन्म और मृत्यु का बराबर महत्व है।

मृत्यु मानो एक प्रकार का विस्मरण है। संसार में स्मृति के समान विस्मृति का भी उतना ही महत्व है। जन्म लेने के ाद से हमने जो जो बातें की, जो जो सुना, जो-जो देखा, जो-जो मनमें सोचा यदि उन सबका हमें हमेशा स्मरण रहें तो कितना बड़ा बोझ हो जायगा। वह जीवन भार स्वरूप है। अतएव मृत्यु भी एक वरदान ही है जिसके कारण नवीन जीवन प्रदान होता है।

मृत्यु के कारण ही संसार में प्रेम व मानवता का प्रसार है। यदि हम अमर होते तो एक-दूसरे की बात भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछते। तुच्छ स्वार्थ के लिये आये दिन नर हत्यायें रहतीं! हम सब पत्थरों के समान एक दूसरे से दू पड़े रहते! किन्तु हमें विचार आता है कि हम सबको आ में मर जाना है क्यों किसी का बुरा कर पाप मोल जिसने मृत्यु का रहस्य समझ लिया वह कभी पाप करेगा और न किसी का बुरा सोचेगा।

भगवान् बुद्धने मृत्यु के बारे में सोचकर ही दिव्य प्राप्त किया। तुकाराम कहते हैं।

कहत तुकाराम हे भगवान्,
हमें जन्मदे, दे फिर जीवन।

हिन्दू-संस्कृति में मृत्यु अमर आशावाद है। मृत्यु भीषणता से डरने के लिये मनुष्यों ने अमृत की कल्पना। ऋषिमुनियों ने जिस उद्देश्य से अमृत की कल्पना की हम भूल से गये हैं। उनके कथनानुसार आत्मा की अम पहचानना ही अमृत प्राप्त करना है।

गीता में कहा है कि जैसे पुराने वस्त्रों को त्याग नये वस्त्र धारण किये जाते हैं वैसे ही जीवात्मा पु शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करता है। हम वस्त्र तब ही बदलते हैं जबकि वे बहुत जीर्ण शीर्ण हो या अकस्मात् किसी दुर्घटनावशः फट जायं, इसी प्रकार यह स्थूल शरीर वृद्धावस्था में अशक्त व जीर्णशीर्ण हो है तब हम इसे छोड़कर नवीन जन्म ग्रहण कर नया श पाते हैं अथवा जब किसी दुर्घटनावशः किसी का शरीर प्रायः हो जाता है तब जीवात्मा उसको छोड़ देता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्जन्म आर्य ग्रन्थों में लिखा है 'प्राणो मृत्युः' मृत्यु प्राण है अतः मृत्यु से भय करना व्यर्थ है। देश विदेश में मृत्यु को गौण समझकर उसका हंसते २ आलिंगन करने वाले हजारों महापुरुष हुये हैं।

धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले हकीकत राय, बन्दा वैरागी आदि के कई सुनहरे उदाहरण हमारे समक्ष हैं।

यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् सुकरात मरते समय विष के प्याले में अमृत्व का स्वाद ले रहे थे।

गेटे ने मृत्यु के समय कहाः-'अधिक प्रकाश अधिक प्रकाश।' स्वामी दयानन्द मृत्यु के समय में भी प्रसन्न मुद्रा में थे। शंखिया (पीसे हुए काँच) से उन्हें असह्य शारीरिक यन्त्रणा होरही थी तो भी उनकी मुख मुद्रा शान्त थी।

जब उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा:-

'स्वामीजी तबियत कैसी है।'

उन्होंने कहा—'अच्छी है, अन्धकार व प्रकाश का मिलाप हो रहा है।' कितना साहस था इनमें मृत्यु का निर्भीकता पूर्वक आलिंगन करने में।

एक जर्मन कवि ने मृत्यु के समय कहाः-'मैं इस दुनियां को देख चुका अब नई दुनिया को देखने जा रहा हूँ जो प्रकाशमय है और शान्त है।'

मृत्यु की घड़ी के निकट पेशवा माधवराव ने वैद्यों से कहाः-'ऐसा काम करो जिससे मेरा कफ मुँह के बजाय शौच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वारा निकल जाय और मैं मुख से राम राम कहता मरूँ।'

'मैंने जो किया उचित किया, मुझे खुशी से फाँसी जाय।' यह कहने वाले सन् ५७ के वीर तांत्या टोपे थे।

क्रान्तिकारी भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव माता की जय बोलते हुये देश हितार्थ फाँसी के तख्ते पर गये। क्रान्तिकारी वीर रामप्रसाद बिस्मिल गीतापाठ हुये फाँसी के तख्ते पर चढ़े! स्वतन्त्रता संग्राम के एक को काले पानी की सजा हुई, जहाज में ही उसने अपने को काले पानी में अपवित्र नहीं करने के लिये एक सिपाही रिवाल्वर छीनली और गोली खाकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

इस प्रकार हम देखते हैं भारतीय वीर मृत्यु को समझते रहें है अतः आप भी मृत्यु से भयभीत नहीं वह केवल एक कार्य प्रणाली है जो एक तत्व (आत्मा) को वस्तु (देह) में से निकाल कर अन्य वस्तु में रखती है।

शरीर जड़ है वह तो अवश्यमेव नष्ट होगा ही। उसके लिये शोक करना अज्ञानता व मूर्खता है।

संसार में किसी का जड़ देह अमर नहीं हुआ है! चेतनमय आत्मा ही अमर है।

आपका तो केवल यही कर्त्तव्य है कि सत्कर्म हुये संसार में ईश्वराधना करें। मृत्यु को गौण समझते आत्मा की महत्ता व अमरता को हृदयगंम करिये। मधुर संगीत का रसास्वादन करने से भय मत करिये।

ईश्वर भक्ति, सत्कार्यों एवं आत्म चिन्तन में व्यतीत करना ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भाशय विकृति

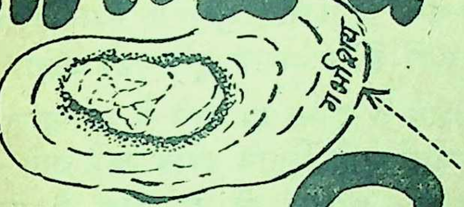

लेखक
पं. नंदकिशोर शर्मा

स्त्रियों के गर्भाशय में कई प्रकार की विकृतियां हो जाती हैं, जिनका पूर्ण विवरण लिखने से एक बड़ा ग्रंथ निर्माण हो सकता है। हम यहां हमारे अनुभव में आये हुए कुछ विकारों का दिग्दर्शन मात्र करते हैं। गर्भाशय की अशुद्धि या दोष वृद्धि यह भी एक गर्भाशय की विकृतियों में से मुख्य विकृति है जिसकी ओर चिकित्सकों का बहुत कम ध्यान पहुंचता है। प्रथअ इसके ही विषय में लिखेंगे।

निदानः—गर्भवती स्त्री के विकारों का ठीक ठीक उचित औषधोपचार न करने से अथवा प्रसूति के समय गर्भाशय में दूषित रक्त के रह जाने से या गर्भस्राव अथवा बार बार गर्भपात के कारण आन्तरिक उस्मा के बढ़ जाने से या रजो विकार (मासिक धर्म के ऋतुस्राव में विकृति) से गर्भाशय में दोष संचय होकर वह विकृति हो जाता है अथवा उपदंश या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुजाक ग्रस्त पुरुष के संयोग से अति, मैथुन से या स्थान में विशेष रहने से या गीले कपड़े पहने रहने (प्रायः स्त्रियां स्नान करने के पश्चात् शुद्धि के ख्याल से वस्त्र ज्यादा पहने रहती हैं) गर्भाशय दूषित हो जाता है।

इस प्रकार गर्भाशय के दूषित हो जाने से गर्भधारण हो पाता। गर्भ धारणार्थ चाहे जितने उपाय किये जावें जाते हैं। कभी कभी उक्त कारणों से गर्भाशय के र दूषित कफ का प्रकोप होकर गर्भाशय अशुद्ध हो जाता ऐसी अवस्था में गर्भ धारण होकर जो संतति होती है, रक्त विकारों से ग्रस्त शीघ्र ही काल के गाल में चली है।

विशेषलक्षणः—अग्नि मांद्य हो शरीर का वर्ण बदल विशेषतः चेहरे पर या गालों पर काले धब्बे या चट्टे जाना त्रिक स्थान में दर्द बना रहना, बार बार पेशाब हो योनि मार्ग से श्वेत चेपदार कीचड़ या स्राव होते र सिर पीड़ा, जी मिचलाना दुर्बलता, आदि लक्षण होते हैं

उपचारः—ऋतु काल या मासिक स्राव अंदाज से जिस शुरू होता है। उसके दो या तीन दिन पूर्व ही स्निग्ध विरे और वमन विधि से रुग्णा की कोष्ठ शुद्धि करली चाहिये। पश्चात्:—

(१) तालकादि गुटिका-शुद्ध हरताल, पारद, गं हिंगुल (ये सब शुद्धि कर लेवे) सुहागे की खील और त्रि (सोंठ, मिर्च, पीपल) समभाग कर, प्रथम पारद, गंधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कज्जली कर शेष द्रव्यों का महीन चूर्ण उसमें मिला एक दिन अद्रक रसमें घोट मूंग जैसी गोलियां बना रखें। इसमें से १-१ गोली प्रातःसायं उत्तम घृत (२ से ५ तोले तक) के साथ सेवन करावें ऋतु काल के प्रथम दिन से ७ दिन तक।

(२) अथवाः—उत्तम हरताल भस्म दो रत्ती तक घृत के साथ ७ दिन तक सेवन कराने से भी लाभ होता है।

(३) सरिवादि चूर्णः अनंत मूल, मंजीठ, निशोथ, मुन्नका शतावर खरैटी, सौंफ, पीपल, देवदारु, दारु हल्दी, जवाखार, सज्जी, सुहागा, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नाग केशर, त्रिफला, मोथा, मुलैठी, सोंठ, और पांचों नमक, समभाग कर महीन चूर्ण मात्रा दो माशे सारिवाद्यासव के साथ मात्रा १ से २ तोले तक में समभाग जल और ४ तोला हल्द मिला प्रातः सायं सेवन करावें।

(४) अथवाः—त्रिफला क्वाथ के साथ शास्त्रोक्त, प्रमदानंद रस मात्रा १ से २ रत्ती तक सेवन कराने से भी उत्तम लाभ होता है।

(५) अश्वगंधादि योगः—असगंध, कमलगट्टा की और बादाम की मगी १-१ भाग, नाग केशर, शतावरी, जायफल, और जावित्री प्रत्येक अर्धभाग, तथा उत्तम केशर, और लौंग प्रत्येक चतुर्थ भाग सब का महीन चूर्ण कर उसमें मिश्री ५ भाग मिला रक्खें। मात्रा ६ से १० माशे तक प्रातःसायं गरम गोदुग्ध से सेवन कराया जावे।

(६) अथवाः—केवल असगंध १ तोला कूट कर १ पाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदुग्ध और १ पाव जल में एकत्र पकावें अष्टमांश रहने पर छानकर १ तोला गो घृत मिला गरमा गरम पि जावे ।

(७) बिडंगादि योगः--बाय बिडंग, गाजरबीज, अ यन, और मेथी, समभाग का मोटा चूर्ण कर रखे, इस ४ तोले चूर्ण को ३२ तोले जल में चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध प्रातः काल में पिलाया जावे । तथा रात्रि में लघु योग गुग्गुल का सेवन यथोचित मात्रा में बृहन्मंजिष्ठादि के साथ सेवन कराया जावे ।

(८) अथवाः--प्रातःकाल कुमारी आसव का सेवन क और रात्रि में उपयुक्तानुसार योगराज गुग्गुल का सेवन क से भी लाभ देखा गया है ।

(९) चन्दनादि चूर्णः--श्वेत चन्दन, लालचंदन, नील की जड़, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, मुरा (मुरमुकी)पीपल, गज पीपल, निशोथ, मुन्नका, जटामां मुलैठी और नागर मोथा, समभाग महीन चूर्ण कर रखे मात्रा २ से ४ माशे तक उष्ण जल के साथ सेवन करावे।

(१०) अथवा,--उत्तम विधि से तैयार किया हुआ सिंदूर १ या २॥ नारियल के शुद्ध तेल २ माशे में मिला से कराने से भी अपूर्व लाभ देखा गया है ।

नोटः--उक्त प्रयोगों में से किसी भी प्रयोग का से रुग्णा की प्रकृति एवं बलाबल विचार कर ऋतुकाल में ९ या दिनतक सेवन करावें । रुग्णा को उष्णोदक या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ नित्य कराया जावे तथा गर्भस्थान पर (नाभि के नीचे पेट पर) असली को जल में पीस कर लेप कर दिया जावे। और सुहागे की खील को सुखोष्ण जल में मिला उत्तर वस्ति देते रहना चाहिये। रुग्णा को मैथुन, विशेष परिश्रम, एवं उष्ण वीर्य पदार्थों के सेवन से बचते रहना चाहिये। निम्नांकित दशमूलादि क्वाथ का सेवन भी ऐसे विकारों पर परम हितकारी सिद्ध हुआ है।

(११) दशमूलादि क्वाथ:—दशमूल, कमल कूट, खस, तगर, सेवती मूल, और अरंड मूल समभाग कूट कर ५ तोले चूर्ण को ४० तोले जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर छानकर उसमें औटाया हुआ गोदुग्ध १० तोले मिला प्रातः सायं पिलाने से उत्तमतया गर्भाशय शुद्धि हो जाती है—कहा है—

"दशमूलानि च नलिनं कुष्ट मुशीर न तस्पृक्के।"
"एरंड शिग्रुंच पिवेद् गर्भाशयशोधनाय गोपपसा।।

"वैद्यमनोरमा !"

गर्भाशय में कफ संसृष्ट रक्त दुष्टि का उदाहरण

एक स्त्री आयु २५ वर्ष इसका विवाह १७ वर्ष की आयु में हुआ था दो वर्ष बाद एक लड़का हुआ, एक वर्ष का होने पर इस बालक के शरीर भर में पीली फुंसियां होकर शीघ्र ही बड़ व्रण के रूप में परिणत होगई। मुख के अंदर भी बड़े २ छाले होगये बहुत कुछ इलाज किया गया किन्तु लड़का नहीं बचा। बाद एक वर्ष के पुनः लड़का हुआ जिसे चौथे माह में में ही उक्त प्रकार की शारीरिक विकृति हुई और वह भी शीघ्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चलता हुआ फिर एक लड़की हुई वह होते ही उसी हाल में गुजर गई।

डाक्टरी इलाज हुए, झाड़ फूंक, जंतर मंतर आदि भी काफी किया गया। पश्चात् निराश होकर हमें बतलाया गया। हमने देखा कि पुरुष और स्त्री दोनो स्वस्थ हैं किसी प्रकार की गर्मी की बीमारी उपदंशादि उन्हें नहीं है। ९ वर्ष के अंदर ४ बेगुनाह बच्चे शरीर खुजलाते व्रणों से ग्रस्त होकर काल के गाल में चले गये थे। दोनों स्त्री पुरुष परम दुखी थे। विशेष पूछताछ करने से बड़े पते की बात हमें यह मालूम हुई कि स्त्री का मूत्र चूना जैसा श्वेत रंग का होता है तथा जमीन पर उसकी श्वेत पपड़ी सी जम जाती है। योनि मार्ग में खुजलो ज्यादार हती है। तथा रजस्राव झागदार चेपदार होता है। इस परीक्षण से हमने निश्चित् किया कि रुग्णा के रज में दूषित कफ का मिश्रण होने से रक्त दुष्टि एवं तज्जन्य गर्भाशय की अशुद्धि है। इसी से यह विलक्षण रक्त विकृति की व्याधि इसके गर्भज सन्तानों को नष्ट कर डालता है। अतः इस केस में गर्भाशय को शुद्ध करना ही आदि कर्तव्य होना चाहिये।

ऐसा विचार कर हमने रुग्णा के कोठे की गर्मी को शांत करने एवं गर्भाशय को शुद्ध एवं पुष्ट करने के उद्देश्य से फल

घृत (शाङ्गर्ग धरोक्त ६ माशे में शहद ३ माशा मिला प्रातःकाल में तथा प्रमदानंद रस मात्रा १ रत्ती त्रिफला चूर्ण २ माशा पकाये हुए गोदुग्ध १० तोले में मिला दिन में ३ बजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रात्रि में शयन के पूर्व त्रिफला क्वाथ के साथ आरोग्य वर्धिनी मात्रा ४ रत्ती सेवन करना शुरू किया।

पथ्य में गेहूं का दलिया, मूंग का यूष, पालक परवल, मेथी चौलाई का शाक और गौदुग्ध दिया जाता था। पूर्ण ३ मास तक इसी प्रकार पथ्य पूर्वक दवा सेवन कराई और एक वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करने की हिदायत कर दीगई, पश्चात् गर्भ धारण होकर जो संतति हुई वह लड़की अभी ५ वर्ष की है शरीर में कोई विकार नहीं पुष्टांग है। अंत में प्रातःस्मरणीय कवि वर श्री गोस्वामी तुलसीदासजी के शब्दों में—

"परहित बस जिन्ह के मनमांहीं।
तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

"ॐ शांति"

---

* मननीय विचार *

जो दूसरों को स्वतन्त्रता से वंचित रखने की चेष्टा करते हैं, वे स्वयं भी स्वतन्त्र होने क अधिकारी नहीं होते। और ईश्वर की सृष्टि में वे अधिक दिन तक अपनी स्वतन्त्रता कायम नहीं रख सकते।

—लिंकन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

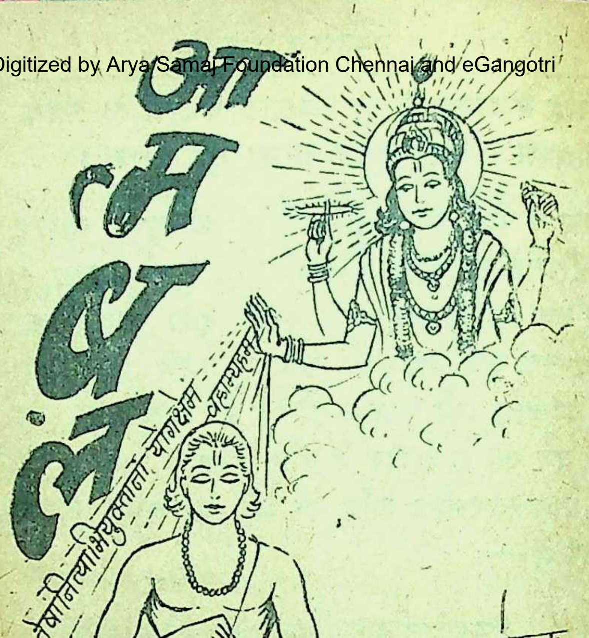

साधारणतः यह देखा जाता है कि व्यक्ति अपनी असफलतापर हिम्मत खो देते हैं। निराश होकर वे अपने विषय में अशुभ चिन्तन करने लगते हैं। जीवन में कुछ भी आकर्षण न देख वे व्यर्थ की बातें बोलने लगते हैं—'अब मुझसे कोई काम नहीं होगा। भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया। मुझपर ईश्वर का प्रकोप है। दुनिया में मुझसा दुःखी और अभागा कोई नहीं। मेरे दिन अब नहीं लौटेंगे। मैं सदा बीमार ही रहता हूँ। शरीर दुबला-पतला है। भूख नहीं लगती। ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जिन्दगी से तो मौत ही श्रेयस्कर है।' ऐसी बेतुकी बातें वे ही व्यक्ति सोचा करते हैं जिन्हें अपनी गुप्त शक्ति में विश्वास नहीं है। क्या आप भी जीवन से ऊब गये हैं? क्या हीनता के पुराने अशुभ विचार ने आपकी शक्ति को पंगु कर रखा है? आप अपने को हीन न समझें। ईश्वर ने किसी भी मनुष्य को हीन नहीं बनाया। हीनता की सृष्टि स्वयं मनुष्य करता है। ईश्वर की सृष्टि तो त्रुटीहीन है। फिर आप निराश क्यों हैं? आप अपनी छुपी हुई आत्मशक्ति को पहचानें। आत्मशक्ति से अपरिचित व्यक्ति ईश्वर की दृष्टि में दोषी है। ईश्वर ने आपका निर्माण अपने विषय में अशुभ चिन्तन करने के लिये नहीं किया है। प्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्टेन ने लिखा है:—

"मनुष्य का निर्माण अपना सिर ऊँचा करके चलने और विजेता की तरह आगे बढ़ने के लिये हुआ था, गुलाम की तरह झुककर खड़े रहने के लिये नहीं, सफल होने के लिये हुआ था, असफल होने के लिये नहीं, ईश्वर द्वारा दिये गये जन्मसिद्ध अधिकार का उपयोग करने के लिये हुआ था। अपने को हीन बनाना जुर्म है।"

निश्चित जानिये-शान्ति, सफलता और शक्ति का आदि स्रोत आपकी आत्मशक्ति है। यदि आप शान्ति और सुख चाहते हैं तो हीनता की भावना को मन-मन्दिर में स्थान न दें। भूल से भी यह न सोचें कि आप दूसरे के समान शक्तिशाली नहीं; कि आप उतने योग्य नहीं, कि आप अमुक काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कर सकते। ऐसी भावना आपकी उन्नति के मार्ग की बाधक है।

आप अपना उचित मूल्यांकन करें। जब आप अपनी आत्मशक्ति से परिचित होंगे तो आपको वे संभावनाएँ दिखायी देंगी, जो आपने कभी स्वप्न में भी न देखी थीं। आप अपने आपको सफलता का आकर्षक केन्द्र बना सकते हैं। आप जब दीन स्वरों में कहते हैं 'तो क्या अच्छा होता, यदि परिस्थिति बदल जाती' तो क्या चाहने मात्र से ही परिस्थिति बदल सकती है ? नहीं ! कथमपि नहीं !! चाह या इच्छा का कोई महत्व नहीं, यदि उसके पीछे प्रयत्न, संकल्प और दृढ़ता न हो। आत्मशक्ति 'डाईनमो' का काम करती है जो व्यक्ति को निराशा के क्षणों में शक्ति प्रदान करती है। आत्मशक्ति से शून्य मनुष्य भाग्य का खिलौना है। अतः निराश होकर सर्वथा अपने मन में गुप-चुप भाव भरे रहकर अपनी आत्मशक्ति का हनन न करें। नित्यसंगी सर्वशक्तिमान का इस तरह अपमान न करें। भगवान् की घोषणा याद रखें:—

मच्चितः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादत्तरिष्यसि

(गीता १८।५८)

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

(गीता ९। २२)

'मुझमें चित्त लगा लो, फिर मेरे प्रसाद से, अनुग्रह से सब कठिनाइयों से तर जाओगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जो अनन्य पुरुष मेरी भलीभांति उपासना करते हुये मेरा अनन्य चिन्तन करते हैं, उन नित्य मुझमें लगे हुये भक्तों का 'योग-क्षेम' मैं वहन करता हूँ।'

आपके भीतर महान् शक्ति का निवास है। उस आत्म-शक्ति का आप अपमान न करें। कभी ऐसी भावना मन में न लावें कि "मैं बेवश हूँ, गिरा हूँ। मेरा कोई सहारा नहीं है। अब मेरा भविष्य अंधकार में है। ऐसा सोचना ही आत्मा का अपमान करना है। आत्मदृष्टि से कहा जाय तो जो आत्मा भगवान् शंकराचार्य, बुद्धदेव, जनक, भीष्म, युधिष्ठिर, अर्जुन आदि में था, वही आप में है। आप अपनी सुप्त आत्मशक्ति को जगावें। आत्मा की अनन्त शक्ति पर विश्वास करें। शक्ति अन्दर से आती है। भले ही आपके पास शारीरिक शक्ति नहीं है, फिर भी आप आत्मशक्ति से वैसा कार्य कर सकते हैं जिसकी आशा तक आप पहले नहीं कर चुके थे। किस शक्ति के बल पर पूज्य गाँधीजी ने हमें आजादी दिलायी? निश्चित है, वह थी—'आत्मशक्ति'। डा० रामचरण महेन्द्रजी ने एक जगह लिखा है "मनुष्य केवल शरीर ही नहीं, आत्मा है। जहाँ शारीरिक और मानसिक शक्ति काम नहीं करती, वहाँ मनुष्य की आत्मशक्ति अपना चमत्कार दिखाती है। हमारा स्वास्थ्य और सुख केवल उस भोजन या व्यायाम पर स्थिर नहीं जो हम लेते हैं। यह हमारे आत्मभावों पर निर्भर है। जिस कार्य के करने में हमारे आत्मभावों की शक्ति प्रबलता से लगती है, जो शुभ हैं, उन सुकार्यों में मन लगाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हमारे मनोभाव समुन्नत होते हैं और आत्मशक्ति में वृद्धि होती है। अच्छाई ऐसा चमत्कारमय भाव है कि उसके मन में आते ही सद्वृत्तियाँ सुश्रृंखलित होकर नैतिक सामर्थ्य की वृद्धि करती है। सत्कार्य का पुरस्कार मनोबल की शक्तिवृद्धि है।" भाव यह है कि सद्वृत्तियों द्वारा आप अपनी आत्मशक्ति को बढ़ावें। सूक्ष्म में ही शक्ति होती है। आत्मशक्ति का केन्द्र आत्मा अति सूक्ष्म है लेकिन यह अति बलशाली है। आत्मबली को कर्त्तव्य-पथ से कोई डिगा नहीं सकता। स्वामी विवेकानन्द की वाणी आज भी हमें प्रेरणा दे रही है कि "हमारे जीवन रूपी बन में अनेक जाल बिछे हुये हैं, बहुत से साँप, बिच्छू, सिंह, सियार स्वेच्छा से घूम रहे हैं, उनसे बचकर अपना रास्ता सुधारने में हमारे शरीर को चाहे जितने कष्ट सहने पड़ें, हाथ-पैर टूटकर हमारा सारा शरीर खून से लतपथ क्यों न हो जाय, हमें अपनी मानसिक दृढ़ता ज्यों की त्यों बनाये रखनी चाहिये—अपने कर्त्तव्य-पथ से जरा भी न डिगना चाहिये।'

क्यों आप दुःखों के लिये मन में घर बनाकर रखते हैं? दुःखी मन में यदि दुःख आकर बसें तो इसमें उस बेचारे का क्या दोष है? दोष तो आपमें है कि आप उसका प्रतीकार नहीं करते। जहाँ गन्दगी होती है वहीं मक्खियां जाकर बैठती हैं। जहाँ मरा हुआ जानवर पड़ा रहेगा, वहीं कौए, गीध, श्रृंगाल और कुत्ते उसे खाते हुये दीख पड़ेंगे। रोग जब किसी शरीर को अपने बसने लायक समझ लेता है, तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसमें प्रवेश करता है। क्यों आप भाग्य को इसके लिये दोषी ठहराते हैं? आपका भविष्य लिखनेवाला भाग्य मुख्य रूप से आपका अपना संकल्प है। कार्य का फल भाग्य पर नहीं, बल्कि स्वयं आप पर निर्भर है। जिस परिस्थिति को आप भाग्य का फल बता रहे हैं, उसका मार्गदर्शक वास्तव में आप स्वयं हैं। परिणाम आपकी अपनी शिक्षा पर, आपके अपने व्यवहार पर निर्भर है। क्या कभी आपने किसी व्यक्ति का नाम सुना है जिसने अपने जीवन को पूर्णतः भाग्य के हाथों में सौंप दिया हो? जो लोग भाग्य पर निर्भर करते हैं वे कायर हैं, डरपोक हैं। वे जीवन में संघर्ष करने से डरते हैं। ऐसे ही व्यक्ति जब असफल होते हैं तो आत्महत्या तक करने के लिये उतारु हो जाते हैं। पर मेरे नौजवान दोस्तो—उत्तेजना के समय आप विवेक से काम लें। अपनी आत्मा की आवाज को सुनें? आप ही बतावें कि वाशिंगटन, नेपोलियन, लिंकन, रूजवेल्ट के जीवन का निर्माण करने में भाग्य ने कौन सा साथ दिया? सूर और मिल्टन अन्धे थे। किन्तु उन्होंने अन्धेपन का सदुपयोग किया। दोनों महान कवि बने। अष्टावक्र, चाणक्य और सुकरात में शारीरिक सौन्दर्य की कमी थी, नेपोलियन और हिटलर के पास धनाभाव था, कीट्स, लॉरेंस तथा पोप सदा रोगग्रस्त रहा करते थे, किन्तु ये महापुरुष कभी भी अपनी त्रुटियों पर चिन्तित नहीं हुये। अपनी आत्मशक्ति के द्वारा इन्होंने चिन्ता और नैराश्य भावना को अपने पास फटकने तक नहीं दिया। सत्यवादी हरिश्चंद्र, महाराणा प्रताप, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी आदि आत्मिक बल-विकास के अनु[illegible] आदर्श हैं। धन्य हैं आदर्श की ये मूर्तियाँ।

फिर आप अपने को क्यों हीन समझते हैं? [illegible] बाह्य-जगत पर आपका अधिकार नहीं हो, परन्तु [illegible] पर तो पूर्ण अधिकार है। यदि आप इसी भावना को [illegible] पहले से ही सोचते रहें तो आपको दुःखों का सामना करना पड़ेगा।

क्रोध

विश्वामित्र के शाप से मृत्यु को प्राप्त अपने १०० [illegible] के शोक से अरुन्धती का हृदय अत्यन्त सन्तप्त हो रहा [illegible] वशिष्ठ उन्हें समझाने का यत्नकर रहे थे। इसी वार्ता[illegible] में तपस्वियों की बात चल पड़ी।

वाशिष्ठ ने कहा—'वर्त्तमान काल में सारे संसा[illegible] विश्वामित्र के समान कोई तपस्वी नहीं।'

अरुन्धती बोली—'जब ऐसी ही बात है तो आप [illegible] ब्रह्मर्षि कह क्यों नहीं देते? यदि आप पहले ही ऐसा [illegible] देते तो मुझे अपने १०० पुत्रों से क्यों वंचित होना पड़ता [illegible] क्यों व्यर्थ विश्वामित्र के कोप का भाजन न बनना पड़[illegible]

वशिष्ठ ने कहा--'यह उनका क्रोध ही तो उनके [illegible] बनने में बाधा डाल रहा है, जिसको वे आज तक न [illegible] सके।'

सं. क. ब्रज वल्लभ मि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ीवन और साहित्य

मानव एक विचारशील प्राणी है। व्यक्ति का मस्तिष्क ाग्रदवस्था में कुछ न कुछ विचार करता ही रहता है। विचार भाव का उदय भाषा से होता है। भाषा के बिना विचार कोई अस्तित्व ही नहीं। अक्षर ज्ञान न रखनेवाले भी पने ;विचार तो भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करते हैं। से व्यक्तियों की ज्ञान प्राप्ति का साधन संगति है तथा अक्षर ान रखनेवालों को पुस्तक-पत्रों से भी उपलब्ध होता है। ाहित्य मस्तिष्क का भोजन, मानव जीवन का साथी है। स प्रकार भक्ष्य पदार्थों के सेवन से हमारे स्थूल शरीर वं मन का निर्माण होता है उसी प्रकार साहित्य के द्वारा स्तिष्क का पुष्टिकरण होता है। मस्तिष्क में आये विचारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रभाव मन पर भी पड़ता है। इस प्रकार सा
स्वभाव का निर्माण होता है।

विद्वानोंने साहित्य के अन्तर्गत ओज, प्रसाद एवं
नामक गुणों का समावेश निर्धारित किया है। साहि
प्रभाव भी तीन प्रकार का पड़ता है, ऐसा कह स
सत्साहित्य से तत्वगुण का उदय होता है तथा इसी
साहित्य के रूप के अनुसार रजोगुण और तमोगु
अभ्युदय होना भी सम्पूर्ण सत्य है। इतिहास इस
साक्षी है कि साहित्य ने समय-समय पर समाज में
पुथल मचा दी। मानव जीवन का रुख बदल दिया है।
की राज्यक्रान्ति जैसी घटना का कारण बेकन के ले
सत्साहित्य की प्रेरणा से मानव उच्च स्थिति प्राप्त क
तथा इसके विपरीत निरोपयोगी एवं अश्लील साहि
प्रभावित होकर वह गर्त में पड़ जाता है। प्राचीन
गुरुकुलों में शिक्षार्थी सुशिक्षा प्राप्तकर समाज में
व्यक्ति के रूप में आते थे। विदेशी शासन काल में श
योगियों की कमी होने लगी तथा साहित्य के उप
अश्लीलता की लता पनपने लगी। इसका जो परिणा
वह हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। प्राचीन का
साहित्यकार धनलोलुपता में पड़कर अश्लील साहित्य
सृजन ही नहीं करते थे। कालान्तर में यह हुआ कि सा
कार भोली-भाली जनता के समक्ष साम्प्रदायिकता से
तथा कामोत्तेजक आकर्षक साहित्य प्रस्तुत कर धन
लगे। प्राचीन साहित्य में आप स्त्री पुरुष का प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येंगे, पर उसमें आदर्शवाद की झाँकी मिलेगी। महाकवि लिदास का 'शकुन्तला' नाटक ही लीजिये। इसमें राजा ष्यन्त का प्रेम कुमारी शकुन्तला से हो गया था, पर जब जा को पूर्व की घटनायें विस्मृत हो गयीं, तो उसने ऐसी ष्ठ सुन्दरी को भी अवैध रूप में लेना अस्वीकार कर दिया। ब प्रेम की स्मृति पुनः सजग हुई तो उसे खोजने का प्रयास रके उसने अपने कर्तव्य का पालन किया। आज चित्रपट र्माण हेतु जो नाटक लिखे जाते हैं, उनमें जो कुछ पाया ाता है वह मुझे कहने की आवश्यकता नहीं, आप स्वयं ानते हैं। क्या अधिकांश चलचित्र ऐसे नहीं हैं कि जिन्हें खकर अनुचित और अनावश्यक रूप से कामोत्तेजना उत्पन्न ोती है? इसी कारण तो आज जहाँ देखिये वहीं निस्तेज मुख मण्डल ही दृष्टिगोचर होते हैं।

यह प्रसन्नता का विषय है कि अब भारत की जनता को अश्लील साहित्य से घृणा तथा सत्साहित्य से प्रेम होता जा रहा है। हमारे देश में जो व्यापकता अश्लील साहित्य को प्राप्त हो चुकी, वही यदि सत्साहित्य को प्राप्त हो तो भूलोक में स्वर्ग के दर्शन होने लगेंगे। भारत एक दिन फिर जगद्गुरु कहलाने का दम भर सकेगा। अब कुछ जन-जागृति की किरण फूट रही है तथा भारतवासी अपना पूर्वकालीन गौरव स्मरण करने लगे। निकट भविष्य में मानव दानव से देव बन जायगा ऐसी आशा की जा सकती है।

साहित्यकार को लेखनी उठाते ही यह ध्यान रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये कि वह समाज का मार्गदर्शक है। चारित्रिक
में साहित्य का विशेष हाथ होता है। आर्थिक लाभ कि
जो साहित्यकार अधिकांश समाज की रुचि का ध्यान
हैं, वे यह क्यों भूल जाते हैं कि समाज की रुचि का
तो उनके ही हाथ में है। अश्लील साहित्य का सृजन क
धन भले ही अर्जित कर ले, पर उसके विषैले प्रभाव
समाज का पतन होगा, उस पाप का भागी वह अवश्य
उसका फल उसे एक दिन भोगना ही पड़ेगा। जो सा
कार अपनी लेखनी की नोक से समाज के उत्थान का
करते हैं, अपनी साधना द्वारा अर्जित सुयोग्य ज्ञान क
करते हैं, वे धन्य हैं, वे सौभाग्यशाली हैं। उनको
संतोष प्राप्त होता है। विचारों को लिपिबद्ध करने से पूर्व
आवश्यक है कि उनमें सत्य का दर्शन हो तथा वास्तवि
हो। अनुभव का आधार लेकर ही लेखनी चलाने का
करना चाहिये।

श्रीरामचरित मानस, भगवद्गीता, बाईबिल तथा
आदि उच्चकोटि के धार्मिक ग्रंथ हैं। इनके रचयिता
अमर कृतियाँ छोड़कर समाज का कितना कल्याण कर
हैं! धार्मिक ग्रन्थों में जीवन को पवित्र बनाने तथ
कल्याण हेतु प्रत्येक क्षेत्र में अतीव सुन्दर मार्गदर्शन
होता है। अनेकों भक्त साहित्यकार अपनी एक एक पंक्ति
तत्व ज्ञान में डुबो कर रख गये हैं। महाभारत के एक छो
विभाग में कितना गूढ़ ज्ञान समाविष्ट है। जीवनोप
उपदेशों का भंडार उसमें 'गागर में सागर' की भाँति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूट कर भरा है। तभी तो भारत क्या समस्त विश्व के विचारक, विभिन्न धर्मावलम्बी ज्ञानी इससे प्रभावित हुये बिना न रह सके। नत मस्तक हो गीताकार की भूरि भूरि प्रशंसा मुक्त कंठ से करनी ही पड़ी। गीता के ज्ञान की थाह कोई पा नहीं सका।

पाठकों से दो बातें कह दूँ। शास्त्रों के सिद्धान्तों पर आंख बन्द करके विश्वास कर लेना भी उचित नहीं। उद्भट विद्वानों द्वारा प्रतिपादित विचारों पर भी देशकाल के अनुसार बुद्धिपूर्वक विचार कर लेना विवेक है। यह सदैव ध्यान रखना चाहिये कि कुभावनाओं को प्रोत्साहित करने वाले साहित्य का अध्ययन करने से मानव जीवन के उद्यान में दुष्चरित्रता के बीजों का वपन निश्चित रूप से हो जाता है। पुनः जो फल प्राप्त होगा वह प्रत्यक्ष रूप में पाठक को भोगना ही ही पड़ेगा। हम जैसे साहित्य का अध्ययन करेंगे, हमारे विचार भी तदनुरूप होंगे। विचारों से इच्छाओं की उत्पत्ति होती है, तब इच्छा की पूर्ति हेतु भलाबुरा स्थूल कर्म होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हमारे चारित्रिक निर्माण में साहित्य का बहुत बड़ा हाथ होता है। सत्संग एवं सत्साहित्य पर जितना व्यक्त किया जाय थोड़ा है। सत्साहित्य से उत्तम विचारों का उदय होता है। उन विचारों को जीवन में उतारना भी वांछनीय है, क्योंकि कोरा ज्ञान व्यर्थ होता है। किसी जीवनोपयोगी सिद्धान्त का ज्ञान होते हुये भी यदि उसको व्यवहार में न लाया जाय तो उसके जानने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई लाभ नहीं। अध्ययन करने के पश्चात् मनन करना बुद्धि और व्यवहारिक ज्ञान की कसौटी पर कस कर मूल्यांकन करना भी महत्व रखता है। किसी के विचार तोलने के लिये सम्यक निष्पक्ष बुद्धि की तुला (तराजू) चाहिये, तभी पूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सकता है। पास प्रस्तुत सभी पत्र-पुस्तकों में जो उपयोगी स्थल उनकी सूची बनाकर रखना चाहिये। अवकाश के उनको रुचि व आवश्यकतानुसार देखते रह सकते हैं।

आज हमें सुषुप्त समाज में जागृति की लहर फैलाना आजकल पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा विचारों का आदान-प्र व्यापक रूप से हो रहा है। सम्पादक-प्रकाशक वर्ग इस ओर ध्यान दें कि प्रकाशन में जीवन को उत्थान की ले जाने वाले साहित्य को प्रमुख स्थान दिया जाय, तो धी धीरे समाज की रुचि का भी आमूल परिवर्तन होकर सा हित्य की ओर ही प्रवृत्ति हो जायगी। अल्पकाल में ही प्रकार बुराइयां दूर हो जायगी तथा समाज सत्कर्मों की प्रेरित होने लगेगा। भारत में ऐसी संस्थाएँ इनी गिनी ही जो धनोपार्जन पर दृष्टि न रखते हुये सत्साहित्य के द्वारा करते हुये मानव कल्याण हेतु कटिबद्ध हैं। श्री राम योगाश्रम द्वारा प्रकाशित मासिक इसका एक जीता जा उदाहरण है। इसके लगभग तीन हजार पृष्ठ (एक वर्ष अंक) केवल ५ रु. में घर बैठे उपलब्ध हो जाते हैं। प्रकार ५-६ पृष्ठों का मूल्य एक नया पैसा पड़ता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटकर लेने पर बाजार में कोरा कागज का मूल्य है। उसमें श्री स्वयं योगीराज उमेशचन्द्रजी, श्री बुद्धिप्रकाशजी वाजपेयी बीतराग नारायण स्वामी तथा अन्य कई धुरन्धर विद्वानों की ऐसी अमूल्य रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं कि एक-एक लेख जीवन में उथल-पुथल मचा देता है। रामतीर्थ मासिक के पाठक यह स्वयं अनुभव करते होंगे कि उससे कितना मानसिक आनन्द प्राप्त होता है तथा जीवन को समुन्नत बनाने में कितनी सहायता मिलती है! सन् १९६१-६२ के अंकों में विभिन्न विषयों पर सर्वोत्कृष्ट सामग्री प्राप्य है।

एक संस्था 'गीता प्रेस गोरखपुर' भी इस ओर निस्वार्थ-भाव से कार्यरत है। भारत में इतना सस्ता साहित्य अन्यत्र सुलभ नहीं। उसकी विषय सामग्री धार्मिक विचारों से ओतप्रोत रहती है इसी प्रकार 'मानस मणि' आदि पत्रिकाएँ जीवन को पवित्र बनाने में मित्र की भांति सहायक है। ऐसी आदर्श संस्थाओं से प्रभावित होकर अन्य प्रकाशकों को भी प्रेरित होना चाहिये।

जीवन को गर्त की ओर ले जानेवाले साहित्य को तिलांजलि दीजिये। सर्प की भांति उसे भयावह समझकर उससे दूर रहिये तथा सत्साहित्य को अपना सच्चा साथी बनाइये। यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

*** मननीय विचार ***

सबसे सुन्दर हास्य उसीका है जो अन्त तक हंसता रहे।

—अंग्रेजी लोकोक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

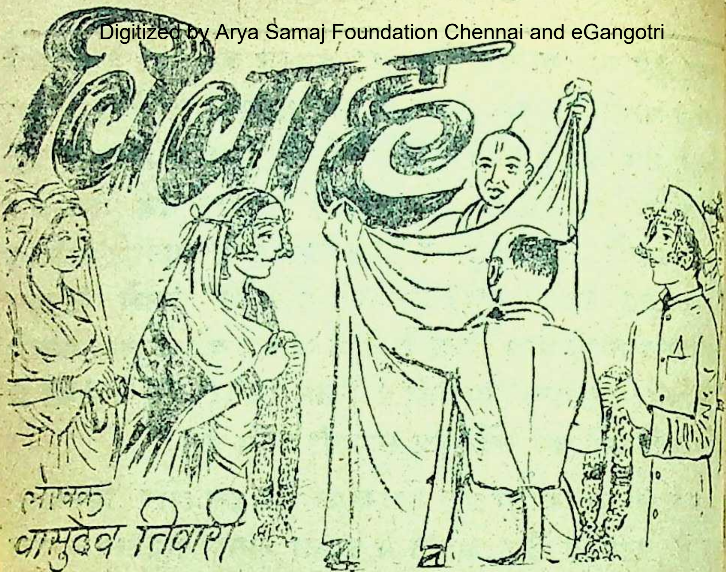

मनुष्य अपना जीवन-यापन केवल अकेले ही नहीं करता उसकी मंजिल का एक अनोखा और दिलचस्प साथी "नारी" भी है। एक दूसरे के समन्वय के बिना जीवन यदि असम्भव नहीं तो कठिन और काँटों से भरा हुआ अवश्य ही प्रती[त] होता है। बाल्यावस्था से लेकर मृत्यु तक जीवन के अखा[ड़े] में मानव कभी हारता है, कभी जीतता है, कभी प्रकृति उ[से] हँसाती है, कभी रुलाती है फिर भी दोनों एक दूसरे का हा[थ] पकड़े सहारा देते जीवन की मंजिल हँसते-हँसते तय कर[ते] हैं।

इस समन्वय को ही दूसरे शब्दों में हम "विवाह" क[ह] सकते हैं। विवाह वह स्थिति है जब समाज की स्वीकृति [के] साथ यौवनापन्न नर-नारी अपनी वासनाओं की तृप्ति खुलक[र]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिये स्वतन्त्र हो जाते हैं। इसके पूर्व दोनों के मिलन को व्यभिचार, पाप आदि की संज्ञा देकर समाज उनका बहिष्कार करता है।

क्या यह सम्मिलन अर्थात् "विवाह" सबके लिये आवश्यक ही है ? इस विषय में हम ऊपर कह ही चुके हैं कि उसके अभाव में जीवन यदि असम्भव नहीं तो कठिन काँटों से भरा हुआ अवश्य प्रतीत होता है। हमारी संस्कृति के अनुसार विवाह केवल शारीरिक-भोग्य की प्रधानता का ही द्योतक नहीं है। जीवन में समरस संचार करनेवाला, आजन्म सच्चे सहयोगी के रूप में रहने का भारतीय वैवाहिक-जीवन एक सच्चा विश्वमान्य उदाहरण है। नवयौवना की लहलहाती बेल को चूमकर आधे पर से काट देने का लक्ष्य यहाँ का युवक नहीं रखता बल्कि उसकी एवम् अपनी स्नेह-शाखाओं से वह एक ऐसा मण्डप तैयार करता है जिसमें बैठकर दोनों जीवन की अन्तिम साँस ले सकें।

जब "विवाह" अनिवार्य ही है तो अब प्रश्न उठता है कि वह कैसे सम्पन्न हो ? प्राचीनकाल में हमारे देश में स्वयंवर-प्रथा प्रचलित थी पर बाद में चलकर विदेशियों के आक्रमणों और उनकी शक्तियों से अपनी संस्कृति को ध्वस्त होने से बचाने के लिये संस्कृति-स्रोत-नारी को हमने परदे के भीतर छिपा दिया और "विवाह" की बागडोर बुजुर्गों के हाथ में ही दे दी गई। लेकिन युग ने फिर करवट बदली और यह परदा अधकचरे-ज्ञान रूपी आँधी-तूफान में उड़ने की कोशिश करने लगा। आज के युवक और युवती डंके की चोट पर कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं—ये बुड्ढे हम तुम्हारे विचारों का समर्थन कदापि न
कर सकते। हम तो अपने जीवन-साथी का चुनाव स्वयं
करेंगे। आज जहां देखिये वहीं प्रेम-विवाह की धूम मची
हुई है और अन्य विवाह-प्रथाओं की कड़ी आलोचना की जा
रही है तथा इस नवीन पद्धति को हर तरह से प्रोत्साहन
दिया जा रहा है। लेकिन इतना होने पर भी अधिकांश
ये विवाह असफल ही हो रहे हैं और बढ़ती हुई तलाक की
संख्या की ओर दृष्टिपात करने पर ऐसा लगता है कि क्या
हमारी संस्कृति भी पाश्चात्य ढंग की तरह केवल शारीरिक
भोग तक ही सीमित रहने को उद्यत हो रही है। जब हमारे
गुरु पाश्चात्य लोग ही हो गये, हमें ज्ञानी और सभ्य बनाने
का ठेका उन पर ही है तब उनके कार्यकलापों की छाप यदि
हमारे धर्म और हमारी संस्कृति पर भी पड़े तो इसमें आश्चर्य
की गुंजाइश ही कहां रह जाती है?

हमने पाश्चात्य ढंग तो अपना लिया पर इस को अमल
में लाने की शक्ति और क्षमता क्या हममें आ चुकी है? यह
प्रश्न हमें अपने आप से पूछना चाहिये। बड़े प्रेम से हम
प्रेम-विवाह कर लेते हैं और यह भी चाहते हैं कि पत्नी
पाश्चात्य ढंग से रहे लेकिन जब वह वैसा व्यवहार शुरू कर
देती है तब हमारा दिल जलने लगता है और इसे हम अपने
किये का प्रायश्चित न मानकर अपने पूर्वजों के संस्कार की
आड़ में छिपने की कोशिश करते हैं और पीछे की ओर मुड़ते
हैं लेकिन पीछे की भूमि को तो हमने पहले ही वीरान और
रेगिस्तान बना रखा है। यह गति त्रिशंकू की भांति स्वर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और मृत्युलोक के बीचमें लटके रहने की सी हो जाती है।

नर और नारी रूपी युगल-वृक्ष को सींचने के लिये जल, हवा, अन्न आदि के अलावा स्नेह की बड़ी आवश्यकता है। जब तक मानव-जीवन में स्नेहामृत नहीं टपकता तब तक उसका जीवन खूँखार सा रहता है। वास्तव में स्नेह ही उसे मानवत्व प्रदान करता है। स्नेह पवित्र और अनंत है। इसका स्वरूप स्थाई है। इससे ही भक्ति, श्रद्धा और प्रेम का उदय होता है। यह मानव-हृदय का अपूर्व स्पन्दन है। इसके स्पन्दित होने पर मन खिल उठता है और जैसे वातवरण का योग पाता है वैसे ही रूप में प्रस्फुटित होता है।

प्रेम इतनी सस्ती वस्तु नहीं कि उसे हर कोई आसानी से पा सके। वह बहता हुआ पानी नहीं है कि जहां चाहे ढुलक पड़े। नहीं वह आँधी और तूफान ही है कि उसके झकझोरने से मानव-रूपी वृक्ष सिहर उठे और जड़ से उखड़ जाय। वह ऐसी मन्दगति से प्रवाहित होनेवाला सौरभ-युक्त पवन है जिसके स्पर्श से आत्मा विभोर हो उठती है। ऐसे अद्भुत प्रेम को पाने के लिये बड़ी साधना की जरूरत पड़ती है। वह सड़कों, गलियों और मात्र रूपदर्शन और वाक्पटुता में ही नहीं मिल सकता। यह सत्य हो सकता है कि ये सब उसके समीप पहुंचने के लिये किंचित साधन मात्र हों लेकिन वह टिक तो तभी सकता है जब उसमें स्थाइत्व हो और स्थाइत्व तो त्याग, साहचर्य, सहनशीलता और विवेक-बुद्धि आदि से ही सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विवाह" चाहे वह प्रेम विवाह अथवा अन्य किसी प्रकार से हो उसका मतलब तो यही है कि स्त्री और पुरुष एक साथ चाहे जिस तरह रहें और चाहे जिस तरह मिलने के लिये स्वतन्त्र हो जाते हैं। यह स्वतन्त्रता स्थाई तभी हो सकती है जब उसके लिये उपर्युक्त रीतियां बरती जाएं अन्यथा प्रेम विवाह ही क्यों कोई भी विवाह असफल हो सकता है। विवाह वह उर्वरभूमि है जिसमें पति-पत्नी दोनों मिलकर प्रेम का बीजारोपण करते हैं और उसके पनपने, फलने, फूलने के लिये हमेशा स्नेह, श्रद्धा और भक्ति रूपी रस से उसे सिंचित करते रहते हैं। सामाजिक विवाह में यह भूमि सुहागरात से बनती है। लेकिन प्रेम-विवाह की यह भूमि विवाह के पूर्व की भी होती है। अतः केवल रूप सौन्दर्य तथा इन्द्रियों के वशीभूत और उच्छृंखल न होकर धीरज और विवेक के साथ प्रेम का बीज बोया जाय और उसे अंकुरित होने दिया जाय फिर विवाह के बन्धन में बँधने पर अपने २ कर्तव्यों की ओर सजग रहकर उसे ठीक तरह से हमेशा सींचा जाय। इन सब चीजों को छोड़कर केवल प्रेम की रट लगाना तो मात्र मृगतृष्णा है। यदि सचमुच वैवाहिक-जीवन में सच्चा प्रेम प्राप्त करना हो तो अपने उत्तरदायित्व की परीक्षा जो पग पग पर होती है, में उत्तीर्ण होने की धीरज के साथ निरन्तर कोशिश करते रहना चाहिये यही सुखमय वैवाहिक-जीवन का द्योतक है।

— 卐 —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार बराबर अन्धकार में चलने वाल प्राणी का जीप्रकाश की सुनहली किरणों के लिए तरस उठता है, उसी प्रकार सांसारिक जीवन की समस्याओं में उलझा मानव भी सदैव किसी न किसी रूप में आनंद के लिए आतुर रहता है, प्रयत्नशील रहता है। वह अपने दुख को भूलकर आनन्द की झिलमिलाती लहरों में, एक पल के लिए भी, खो जाना चाहता है। यह केवल एक की बात नहीं, बल्कि सब के हृदय की बात है, सब के अन्तर की चाह है। सबका उद्देश्य ही है आनन्द की प्राप्ति। इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी है, वह इस साध्य की प्राप्ति के लिए बस साधन-मात्र।

प्रश्न—आनन्द है कहाँ? वह कौन-सी शक्ति है, जहाँ हमें सच्चे आनन्द का अनुभव होता है? यह आनंद सब में अन्त-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहित है, सब में वास करता है। वह है—ईश्वरीय अंश आत्मा। यह आत्मा ही ज्ञान एवं आनन्द है। बृहदारण्यकोपनिषद् ९-२८ में लिखा हैं—विज्ञानमानन्दं ब्रह्म, यह ज्ञानानन्द सब में निहित है। लेकिन हम आनन्द की प्राप्ति-मार्ग का प्रायः ठीक-ठीक अनुसरण नहीं कर पाते। वहाँ हम भूल जाते हैं और गलत मार्ग का निर्धारण कर बैठते हैं। फल यह होता है कि हम बाह्य पदार्थों में ही आनन्द की खोज करते हैं और उसमें ही उलझ जाते हैं। सांसारिक वस्तुओं की ओर अधिक ध्यान रहता है हमारा जो अनुपयुक्त है, आनन्द की प्राप्ति में बाधक है। असल बात यह है कि हमें यह अनुभव ही नहीं होता, ज्ञान ही नहीं होता कि वास्तविक एवं सच्चा आनन्द हमारे मानस में ही है, हमारे स्वच्छ ज्ञान में ही है, हमारी आत्मा में ही है। फलतः हम उस मृग की भाँति इधर-उधर भटकते फिरते हैं, आत्मानंद की खोज करते हैं, जो अपने अन्दर ही कस्तूरी को छिपाये हुए है, जो तत्वहीन वस्तुओं में भी तत्व की आशा रखता, जब कि उसके शरीर में ही वह मूल तत्व वर्तमान है कबीर ने लिखा है—

तेरा साईं तुझ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों फिर फिर सूंघे घास॥

ब्रह्म न्यूनाधिक रूप में सब में (सत्, चित्, आनन्द) है, इसलिए आनन्द भी। क्योंकि आनन्द ही ब्रह्म है, ईश्वर है अपर ब्रह्म ही आनन्द। यही कारण है कि ऐश्वर्य के पालने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता हुआ व्यक्ति, धन की गोद में सुख की चाह रखनेवाला शक्ति आनन्द का वह अमृत--रस नहीं पा सकता। इसका कांश क्या, करोडांश भी नहीं। इसलिए कि धनैश्वर्य से ह संतुष्टि का सफेद आँचल नहीं पकड़ सकता, आनन्द का नुभव नहीं कर सकता, वरन् असंतुष्टि के गहन अन्धकार में टकने लगेगा। धन से सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती, ानन्द का मीठा फल नहीं मिल सकता, क्योंकि वह लौकिक हीं, अलौकिक है। लौकिक आनन्द स्थायी नहीं, क्षणभंगुर। परिणामतः आत्मानन्द के लिए हमें अपने अन्तर को टोलना होगा। अपनी चेतन शक्ति को झंकृत करना होगा, योंकि बाह्य पदार्थ हमारी चिर--तृषित अभिलाषों एवं ामनाओं को तृप्त नहीं कर सकते। 'मनुस्मृति' में एक जगह खा है।

न जातु कामः कामनामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

अर्थात् विषयोपभोग से विषयेच्छा की तृप्ति कभी नहीं ोती, बल्कि घी से अग्नि की तरह बढ़ती ही जाती है।

अब प्रश्न है—आत्मा हमें सच्चा एवं स्थायी आनन्द कैसे सकता है? हम पहले ही कह आए हैं कि बाह्य िषय पदार्थों में आनन्द नहीं है। दूसरी बात कि ये वस्तुएँ ाशोन्मुख हैं, असत्य हैं, क्षणिक हैं। अतः इनसे प्राप्त आनन्द ी क्षणिक एवं असत्य होगा। वास्तविक एवं स्थायी आनन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हमें वही वस्तु दे सकती है, जो स्वयं वास्तविक स्थायी हो।

संसार के सभी चर-अचर, चेतन-अचेतन में एक ई रीय सत्ता या चेतन सत्ता व्याप्त है। चेतन से अलग स की कल्पना ही नहीं। सृष्टि में चेतना है अपर चेतना के लि सृष्टि। चेतन या आत्मा के अस्तित्व को भूलना, ठुकरा स्वयं सृष्टि को भूलना या लुप्त करना है। इस प्रकार चे पूर्णचेतन या दूसरे शब्दों में सार्वभौम आत्मा ही वास्तवि रूप में १६ मूल तत्व हैं, जो सभी बाह्य सृष्टि में परम स होकर स्थित है, व्याप्त है। ईशावास्योपनिषद् में लिखा है

'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्'

"समग्र सृष्टि परमात्मतत्व से अभिभूत है। अबाध ग से परिचालित सृष्टि में जो कुछ भी गतिशील है, सब उ से उत्प्रेरित है।"

आत्मा ही एक ऐसी सत्ता है, जो कभी भी परिव नहीं होती। वह स्थायी है। बाल्यावस्था से यौवनाव एवं वृद्धावस्था में भी यह अपनी एक रूपता बनाये रख है, भले ही शरीर एक बीज की भाँति अंकुरित हो, फू और मुरझा जाय। आत्मा ही इन्द्रियों को शक्ति प्रदान कर है, उनमें प्रेरणा एवं उत्तेजना भरती है। वह स्वयं मन नहीं बल्कि मन को विचार शक्ति देनेवाली सत्ता है, स्वयं बु नहीं, वरन् बुद्धि को तर्क, विवेक एवं संकल्प या दृढ़ता दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ती है। वह स्वप्न, सुषुप्ति एवं जाग्रति की अवस्था में भी जग है, उनका द्रष्टा एवं ज्ञाता है। 'कनोपनिषद्-५ में इसका लेख है—

'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्'

अर्थात् 'आत्मा को मन के द्वारा नहीं समझा जा सकता, क आत्मा ही मनको सोचने समझने की शक्ति प्रदान ती है।' यह नित्यानन्द हैं, सांसारिक सुख-दुखों से परे की सत्ता है। यह आनन्दों का आनन्द है। संसार के सभी आनन्द इससे ही उद्भुत होते हैं।

इस प्रकार आत्मज्ञान में ही आनन्द है। आत्मा ही वह ता है, संप्रर है, जो आनन्दमय है। यह आनन्द, यह चेतन ता संभार के सभी वस्तुओं में वर्तमान है, निहित है। यही संसार के कष्टों से मुक्ति प्रदान करनी है। अतः हमें अपने तः करण को ही टटोलना चाहिए, अपने भीतर ही झांकना हिए, न कि बाह्य रूपों की ओर आकृष्ट होना चाहिए, भ्रम के सिवाय, मृग तृष्णा के अतिरिक्त ऊपर कुछ भी हीं। आत्मा ही सभी आनन्दों की जड़ है, स्रोत है। वही य है और वही मूल भी।

* मननीय विचार *

मैं हर वस्तु पर हंसने की शीघ्रता इसीलिए करता हूँ कहीं मुझे रोना न पड़े। —व्यूमाकीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के अभिमत

रामतीर्थ मासिक पढ़नेसे चिन्ता दूर होती है, तीर्थ जैसा होता है, रामतीर्थ मासिक जिस के हाथमें मिले उनको भाग्यहीन समझना, रामतीर्थ मासिक पढ़ दुराचार नष्ट होकर सदाचार लानेवाला है प्रत्येक पुरुष इसे पढ़कर आनंदित होते हैं। रामतीर्थ मासि वेदान्त, अध्यात्म और योगाभ्यासियों सबको उपयोगी

आपका–श्री रामशेट्टी शंकरशेट्टी पा
मु. पो. वज्रसलगर,
ता. आळंद जिला–गुलबर्गा

मैं 'रामतीर्थ' मासिक का लगभग एक वर्ष से निय पाठक हूँ। यह पत्र मेरे अध्ययन का एक आवश्यक अंग चुका है। मैंने उमेश–योग–दर्शन भी मँगाकर पढ़ा है। आशातीत लाभ हुआ। मैं एक कृश शरीर का कमजोर यु था। आप के निर्देशित आसनों का अभ्यास कर के मैं हृष्ट–पुष्ट युवक बन गया हूँ। अब मैं एक खासा जवान ल हूँ। माँसल उभड़ आये हैं। आसनों के निरंतर व्यवहार मेरे स्वास्थ्य में आश्चर्य जनक परिवर्तन हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तु, यह कहना अत्युक्ति न होगी कि रामतीर्थ मासिक जैसा भारत में कोई हिन्दी मासिक नहीं है जो भारत के प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित करे। यह स्वस्थ साहित्य से भरपूर है। इस आपत् काल में, मेरा दावा है कि 'रामतीर्थ' भारतीय नव युवकों के मनोबल को बढ़ायेगा। मेरे मत से यह आबाल--वृद्ध--बनिता के लिये उपयोगी है।

आपका ही
रमेश चंद्र लाला
गारुलिया २४ परगना--प. बं.

"रामतीर्थ" एक उच्च कोटि की सुन्दर मासिक पत्रिका है। इसमें योग, वेन्दात, भक्ति, शारीरिक व मानसिक रोग निवारणार्थ अनेकानेक उच्च कोटि के विषयों का संकलन रहता है। 'रामतीर्थ' का भविष्य उज्वल है।

—हरिकृष्ण छँगाणी, शास्त्री, बी. ए.
अध्यापक,
फलोदी (राजस्थान)

मैं दो साल से 'रामतीर्थ' मासिक का ग्राहक हूँ। अपने अनुभव के आधार पर यह विश्वास आ गया है कि मैं दो साल से ही मनोशांति के साथ सुखमय जीवन बिताता हूँ। इसके अध्ययन से तन, मन के साथ धन का भी विकास हो जाता है। अतः इससे 'रामतीर्थ तन मन धन विकासक मासिक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना अधिकतर उचित मालूम पड़ता है। मैं ससन्तो मत प्रकट करता हूँ कि भारत के ही नहीं, दुनिया व्यक्ति 'रामतीर्थ' मासिक पढ़कर आनन्द में रह सकता

आप का नम्र,

के. सुकुमारन नायर उत्तर

रामनाड, मद्रास रा

प्रतिवेदन है कि प्रतिमास का रामतीर्थ नियमि होता रहा है। रामतीर्थ दिन प्रतिदिन एक संग्र पुस्तक का रूप धारण कर रहा है जो अतिहर्ष की ब प्रतिमास का रामतीर्थ अपनी नवीनता लिए होता है।

आप का ही

प्र. ग. यावलक

पिछले २ वर्ष से मुझे भी आपके मासिक को पढ़ सौभाग्य प्राप्त हुआ—वस्तुतः आपका प्रयास सराहनीय इस मासिक में प्रकाशित प्रत्येक रचना किसी न किसी से प्रशंसनीय होती है और जन साधारण को सच्ची प्राप्ति के लिये अमूल्य ही अच्छी सामग्री प्राप्त होती है।

दिन प्रति दिन इस मासिक के लिये शुभ का स्वीकर करें--और ईश्वर करे आपके प्रयास से पत्रिका ख्याति प्राप्त करे।

आपका शुभचिंतक

प्रेमचंद माहेश्वरी,

चिकित्साधिकारी, रा. आ. चि.

जि. किन्नौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[यह स्तभ पाठकों के शारीरिक व आध्यात्मिक प्रश्नों के समाधान हेतु रखा गया है यदि आप किसी समस्या का समाधान चाहते हों तो प्रश्न लिख कर भेजें—सम्पादक]

डॉ. कुलदीप महरोत्रा पुरमँडल जम्मू

पत्रसंख्या-१-प्रश्न-१—व्यायाम, आसन इत्यादि हर ऋतु में किये जा सकते हैं या कि नहीं। बहुत-सी पुस्तकों में वर्षा-ऋतु में व्यायाम न करने के लिये लिखा है।

प्रश्न-२—भूत, प्रेत, डाकिनी, यन्त्र-तन्त्र आदि पर कुछ प्रकाश डालें।

प्रश्न-३—मैं चार वर्ष से कृमी रोग से पीड़ित हूँ। गुदा में कृमियां होती हैं। (ऑक्सिजन क्सोरमस) अधिक मात्रा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने से अनिद्रा, पीलिया, स्मरणशक्ति में कमी, वव जैसे रोगों से पीड़ित रहता हूँ। बहुत से अंग्रेजी, आयु उपचार किये हैं परन्तु कोई स्थाई लाभ नहीं होता। म १५ दिन दवाई के प्रयोग से आराम होता है। मैं इस रो बहुत चिन्तित हूँ। आपसे नम्र निवेदन है कि मेरे लिये चिकित्सा पत्रिका में प्रकाशित करें। कई बार दवा प्रयोग के साथ गर्म जल तथा नमक के पानी का एनिमा लिया है।

उत्तर-१—व्यायाम और आसनों का अभ्यास हर ऋ ८ से १०० वर्षतक कर सकते हैं। योगाभ्यास पुरुष महिलाओं को समान रूपसे लाभदायी है। विधि विधान नियम के साथ हर ऋतुमें करने से अवश्य ही लाभ प्राप्त है। अन्य व्यायामों की अपेक्षा आसन व्यायाम से अ लाभ होता है। अतः प्रत्येक घरमें स्वास्थ्य संवर्धन के आसनाभ्यास आवश्यक है।

उत्तर-२—भूत-प्रेत आदि के विषयमें मेरे मत के में यदि जानना हो तो दीपावली (अक्टोबर) के राम में आश्रम समाचारान्तर्गत छपा मेरा व्याख्यान पढ़िये।

उत्तर-३—कृमिरोग के निवारणार्थ प्रथमतः उ लक्षणों का समझना अनिवार्य है। लक्षण इस प्रकार से हैं भूख अधिक बढ़ती है। शरीर में रक्त का अंश कम होता हाथ पैर की चमड़ी ढीली पड़ जाती है। उदर का भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ मालूम पड़ता है। आँखें निस्तेज मालूम पड़ती है। शरीर निर्बल हो जाता है। मल विसर्जन तथा अन्य समय गुदाद्वार में खुजली के समान वेदना होती है।

यह रोग अधिकांशतः छोटी उम्र वालों को होता है तथा पेट में शक्कर का भाग अधिक बढ़ जाने से होता है। इस लिये पर्याप्त मात्रा में आरोग्यवर्धक षट् रसों का सेवन अनिवार्य है। (षट् रस—मधुर, लवण, कटु, तिक्त, आम्ल, काषाय) जब शरीर में मधुर रस वृद्धि पाता है तब कृमियों का जन्म होता है। इन कृमियों से सप्तधातुओं में व्यवधान होकर दुःखदाई पीड़ा होती है। कटु तथा काषाय रसोंसे कृमि दूर होकर रोग से मुक्ति मिलती है।

उपचार—३ दिनतक कटु नीमकी पत्तियों के एक औंस रस में काली मिर्च और जीरे का थोड़ासा चूर्ण मिलाकर प्रातःकाल सेवन करें। यह कृमिरोग की रामबाण औषधि है। नीमरस पीने के १५ मिनट बाद ठंडा जल ६ औंस पीयें। तीन दिन के बाद नीमरस बन्द कर चौलाई की पत्तियों के एक औंस रस के साथ जीरा मिलाकर सेवन करें तथा रस पीने के २० मिनट बाद १० औंस जलका सेवन करें। उसके तीन दिन तक पीने के बाद उसके बदले कड़वे करेले के १ औंस रस को तनिक जीरेके चूर्णमें मिलाकर ३ दिन तक सेवन करें। रस पीने के २० मिनट बाद १० औंस ठंडा जल पियें।

भोजन— भोजन के समय मिठाई आदि मीठे पदार्थ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण करें। सुवा, मेथी और पुननवाकी भाजी मिलाकर भोजन के समय सेवन करें। चावल हथकुट अधिक लाभदायक होंगे। कटु, आम्ल और काषाय पदार्थों के खाने की ओर विशेष ध्यान दें। हर १० दिन के बाद अरंडी के तेल को दूध में मिलाकर जुलाब के लिये लें। अरंडी के तेल न लेने की इच्छा में सोनमुखी का जुलाब लें। १५ दिनमें एकबार उपवास रखें। उपवास के दिन तीन बार प्रातः मध्याह्न और सायंकाल मेथी के १ औंस रस में जीरे का चूर्ण मिलाकर सेवन करें। दो बार नीबू के रस का नमकवाला पानी दो बार सेवन करें। उपरोक्त आहार ६ मासतक चलना चाहिये।

आसनाभ्यास— पवनमुक्तासन, २ मिनट, नौकासन नं. १ एक मिनिट, और नं. ३ दो मिनिट, धौतिकर्म (मार्गदर्शक के बताये अनुसार) करें। कपालभाति ३ बार, अनुलोम विलोम प्राणायाम ३ बार। शवासन ६ मिनिट।

कन्हैयालाल सिंधी बैतूल (म. प्र.)

पत्र संख्या-२, प्रश्न-१

मेरी आयु लगभग ३२ वर्ष की है मेरे ९९% बाल सफेद हो गये हैं क्या आप बता सकते हैं कि मेरे बाल काले कैसे हो सकते हैं?

प्रश्न-२— मेरा पेट छाती से बाहर है, तथा सीधे हाथ की तरफ कमर में हमेशा थोड़ा २ दर्द रहता है। मैं नितप्रति सुबह ६ बजे उठता हूँ और पाखाना भी साफ आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपया उपाय बतायें।

उत्तर १—छोटी उमर में बाल सफेद होने के अनेक कारण हैं जैसे अज्ञानवश अप्राकृतिक जीवन व्यतीत करने से, दारु, सिगरेट तथा अन्य नसीली वस्तुओं के सेवन से, रातको ८ घंटे से कम सोने से, चिन्ता से, अधिक मिर्च, इमली, नमक के सेवन से, मांस, मच्छी आदि तमोगुणी आहार से, क्रोध से, तली हुई वस्तुओं के सेवन से (सेव, गांठिया, पूरी आदि) पित्त प्रधान प्रकृति से, पुरुषों के वीर्य तथा महिलाओं के रजस दोष से, वीर्य तथा रजस के दुरुपयोग से—अधिक व्यय से, अधिक बौद्धिक परिश्रम से, अपौष्टिक आहार से, किसी प्रकार के अचानक असह्य आघात से, रस-रक्त आदि धातुओं में अशुद्धि होने से, विजातीय द्रव्य—मल, मूत्र, पसीना, नख आदि के शरीर से यथोचित मात्रामें शरीर से बाहर न निकलने पर, रक्त में अधिक उष्णता होने से बाल कम आयुमें सफेद होते हैं।

अधिक देरतक बोलने से और अधिक उग्र विचार करने से सिर का रक्त गरम होता है, फलतः शरीर की समशीतोष्णता में अन्तर आजाता है। व्यायाम के अभाव व अपौष्टिक आहार से शारीरिक रासायनों में बाल काले रखने की शक्ति नहीं रहती। चाय के सेवन से पित्त बढ़ता है, नींद कम आती है और बाल सफेद हो जाते हैं। सिनेमा देखने से आंखें और मस्तिष्क का कार्य बढ़ जाता है। विषय-भोग के विचार बढ़ जाते हैं, फलतः वीर्य अथवा रजस की सशक्तता में कमी हो जाती है। वह पतला होकर विषयभोग बढ़ जाते हैं अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर्य या रजस दोष हो जाते है जिससे पसीने में रजस या वीर्य निकल जाता है। अतः सिनेमा शरीर, मन, और पवित्र जीवन के लिये कतई अच्छा नहीं। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना चाहिये अप्राकृतिक जीवन से मुक्त रहना चाहिये।

उपचार— अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने तथा शुद्ध रक्त से बाल काले रखने के लिये योग्य जीवन सत्व को पूर्णतया बढ़ाने के लिये शीर्षासन का अभ्यास है। क्योंकि शीर्षासन से समस्त शरीर का रक्त संचार सुव्यवस्थित रूपसे होकर पंच ज्ञानेन्द्रियों की संबंधित नाड़ियों का बल बढ़ जाता है। अशुद्ध रक्तको सिर से हटाकर शुद्ध रक्त पहुँचा देता है जिससे बालों का भोजन उपयुक्त मात्रा में उन्हें मिलने लगता है। इसके अलावा शीर्षासन से आँखों की दृष्टि बढ़ती है। स्मरण शक्ति बढ़ती है। कानों के अवयव मजबूत रहकर ज्ञान एवं क्रिया तन्तुओं की गति सुव्यवस्थित रहती है। सारे शरीर का रक्त शुद्ध रहता है। बाल लम्बे, काले और झड़ने से रोकने के लिये शीर्षासन लाभदायक है। शीर्षासन के लाभ-विधिका विशेष वर्णन उमेश योगदर्शन ग्रन्थ में किया गया है।

नये साधक को आठ दिन तक १ मिनट शीर्षासन करना चाहिये। बादमें २ मिनट शवासन करें। ८ दिन के बाद हर ३ दिनमें १ मिनट बढ़ाते रहकर ३० मिनट तक समय बढ़ाना चाहिये। शीर्षासन के पश्चात् ५ मिनट शवासन अनिवार्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य आसन और प्राणायाम— जो व्यक्ति शीर्षासन नहीं कर सकता उसे शीर्षासन का लाभ प्राप्त करने के लिये पूर्ण पद्मासन १ मिनिट, विपरीत करणी ४ मिनट, सुप्त धनुरासन १ मिनट, सुप्त वज्रासन २ मिनट हररोज प्रातःकाल स्नान के पीछे करे। यह कार्यक्रम ८ मास तक रखें। सूर्य भगवान् में प्रचण्ड शक्ति है। उसका उपयोग करने के लिये सुबह सूर्य किरण सेवन करना चाहिये। सूर्य के प्रकाश में सात रंग सात विटामिन के रूपक हैं सूर्य किरण चिकित्सा में इसका विस्तार से वर्णन है!

सिर पर स्नान के बाद ब्राह्मी तेल का उपयोग करना चाहिये। धनिया, भृंगराज, चन्दन, लौकी (घिया), नीबू, शीतल चीनी, खस, वज, घउला आदि महत्वपूर्ण जड़ी बूटिओं से शास्त्रीय पद्धति से बने ब्राह्मी तेल का उपयोग करना चाहिये। रामतीर्थ ब्राह्मी तेल में ५२ वनौषधियों का योग है जिनसे बालों का विशेष पोषण होता है।

आसनाभ्यास के ५ मिनट बाद ४ बार अनुलोम विलोम प्राणायाम करें।

आहार— पथ्य पालन के लिये कारण में बताये गये आहार आदि वर्ज्य हैं। दही, घी, छाछ, मक्खन, सब्जी, दाल प्रकृति के अनुकूल चावल, रोटी, शरीर में अधिक गर्मी होने पर ज्वार और जौकी रोटी उपयोगी है। बन सके तो चावल का आहार में अधिक उपयोग किया जाय। प्रकृति और ऋतु के अनुकूल फलाहार का सेवन करें। अंगूर, सेव, संतरा, केला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आदि उपयुक्त हैं।

अन्य महत्वपूर्ण उपचार-प्रातःकाल ब्राह्मीतेल की मालीश सारे शरीर तथा सर में करके सूर्योदय के समय नंगे शरीर पर सूर्यकिरण पड़ने दें। सूर्योदय के समय सुर्य सेवन का कार्य नित प्रति अपना लेना चाहिए सूर्य की कोमल किरणों में बालों के लिए उपयोगी विटामिन्स अवश्य प्राप्त होंगे।

उत्तर २ योगाभ्यास-पेट के बढ़े हुए भाग को कम करने के लिए उड्डीयान १ से २ मिनट, पवन मुक्तासन २ मिनट, उर्ध्व हस्तासन १ से २ मिनट, नौकासन नं. २ और, ३, १ से २ मिनट, करें।

आहार परिवर्तन-हर रविवार को उपवास करें तथा दो बार नींबू शरबत, दो बार मौसम्बी का रस, २ बार गन्ने का रस लें। सारे दिन में एक लीटर (सेर) जल का सेवन करें। सोमवार के दिन छिलके वाली मूंग और चावल की खिचड़ी २ बार। मंगलवार को मध्याह्न में गेहूँ की रोटी तुवर की दाल और सब्जी, और सायंकाल मूंग की खिचड़ी, बुधवार को दोपहर को गेहूँ की रोटी, तुवर की दाल और सब्जी, सायंकाल को तुवर की दाल और चावल की खिचड़ी तथा सब्जी और छाछ, गुरुवार को दोपहर तथा सायंकाल ७॥ बजे गेहूँ की रोटी मूंग की दाल और सब्जी, शुक्रवार को दोपहर में गेहूँ की रोटी व सब्जी सायंकाल को गेहूँ का दलिया तथा सब्जी, शनिवार के दिन व सायंकाल गेहूं और जौके समभाग आटे की रोटी तथा तुवर की दाल तथा सब्जी का सेवन करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हर रोज प्रातःकाल १२ आंस जलमें छोटे १ चम्मचभर मधु मिलाकर पी लें। भोजन के दो घंटे पहले फल सेवन। यह उपचार ३ मास तक चालू रखिये। अवश्य पेट की चर्बी कम होगी, शक्ति बढ़ेगी। आरोग्य सम्पन्न रहोगे। यदि इच्छा हो तो उपरोक्त चर्या हमेशा के लिए उपयोग में ले सकते हैं।

आर. के. शर्मा देवास (म. प्र.)

पत्र संख्या ३-प्रश्न -१

मानसिक रोगों की योगिक चिकित्सा बतलावें।

प्रश्न-२ त्राटक का अभ्यास किस प्रकार शुरू करना चाहिए व त्राटक अभ्यासी की आयु क्या होनी चाहिए स्पष्ट करें।

प्र.३-मस्तिष्क को नीरोग एवं बलशाली बनाने के लिए कौनसे आसन उपयुक्त हैं, कृपया मार्गदर्शन करें।

उ. १-कारण से कार्य होता है। कारण सूक्ष्म तथा कार्य स्थूल रूपमें होता है। मानसिक रोग स्थूल नहीं सूक्ष्म है किन्तु स्थूल रूपमें परिणत होने में बाधक होने से अथवा सूक्ष्म रूप धारण करने के बाद असफलता मिलने पर रोग रूपमें सूक्ष्म गतिसे व्यक्त करता है। यदि आप प्रथम कारण की खोज करेंगे तो मानसिक रोग दूर करने में जल्दी समर्थ होंगे। सांसारिक सुख साधनों के साथ संबंध रखते हुए इच्छा—अनिच्छा पूर्वक मानसिक रोग बना रहेगा किन्तु परमार्थ-मार्ग को मुख्य और सांसारिक -भौतिक सुख साधनों को गौण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझोगे तो बहुतशीघ्र मानसिक रोग से मुक्ति मिल जायगी।

पतंजलि योग दर्शन में लिखा है--अभ्यास वैराग्याभ्याम तन्निरोध अर्थात स्थूल, सूक्ष्म, कारण एवं महा कारण शरीर को वशमें रखने हेतु अभ्यास तथा वैराग्य का आश्रय लेना होगा। अष्टांग योगांतर्गत यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि के अभ्यास से मानसिक रोग ठहर नहीं सकता, भयभीत हो शरीर से निकलेगा।

संसारी तथा त्यागी

अष्टांग योग के अधिकारी संसारी तथा त्यागी दोनों ही बन सकते हैं। केवल श्रद्धा भाजन बनकर कर्तव्य निष्ठ होने की आवश्यकता है फिर अधिकारी बन अधिकार प्राप्त होता है। शरीर दुर्बल बननेसे मनोबल कम होता है तथा शरीर अधिक स्थूल (चर्बीयुक्त तथा विषय भोग के अतिरेक से) होने से भी मनोबल घट जाता है। इस संसारमें मानसिक रोगी अधिक संख्या में हैं और रहेंगे। क्योंकि परिवार, समाज, देश, सत्ता, धन, मान आदि के लिए मानसिक चिन्ताओं को प्रश्रय देनेवाले लोग बहुत मात्रा में हैं। यह बात केवल गृहस्थियों के लिए नहीं अपितु उन वैरागी त्यागियों के लिए भी है जो शिष्य वृद्धि, अधिक संख्या में ग्रंथ निर्माण, संस्था मठ-मन्दिर विस्तार, विधर्मियोंको शास्त्रार्थ में जीतने तथा गद्दी की परम्परा को चालू रखने के लिए प्रयत्नशील हैं।

मानसिक चिंता रूपी सूक्ष्म पीड़ासे अधिक संख्या में संसारी लोग त्याग, वैराग्य तथा अध्यात्म ज्ञान से वंचित रहने के कारण जीवन को नीरस समझ कर परेशान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते हैं। जब कि अध्यात्म ज्ञान वाले लोग सहनशील बन- र जीवन व्यतीत करते हैं। जिस क्षण ही किसी वस्तु शेष की इच्छा उत्पन्न होती है उसी क्षण सुख दुःख का जारोपण हुआ समझना चाहिए।

शुद्ध सात्विक आहार, बिहार, सत्वगुण संपन्न, योगाभ्यास वित्र स्थानों में निवास करने से सत् शास्त्रों के श्रवण–मनन सुख दुःख को उत्पन्न करने वाली इच्छाओं को समझकर श में रख सकोगे। इच्छाएं अपने आधीन होने के बाद ानसिक रोग रहेगा ही नहीं। उपरोक्त विधि विधान से ाया और मन बलवत्तर रहने के साथ ही पवित्र रहेंगे। नायास से कोई प्रसंग मानसिक कलेश के आने पर भी ल्पकाल में दूर हो जायगा।

उ. २-त्राटक का अभ्यास चन्द्र, तारा मण्डल वृक्षों के ते, दीपक ज्योति, ॐ में, त्राटक चार्ट आदि में अनेक हत्वपूर्ण विधि से आप अपने घरमें कर सकोगे, इसका वस्तार से वर्णन उमेश योग दर्शन के प्रथम खंडान्तर्गत षट् लशोधन कर्म प्रकरण में देख सकते हैं। प्रत्येक विद्या के लिये मार्गदर्शक गुरु की आवश्यकता पड़ती है। आठ वर्ष से १०० वर्ष तक की उमर वाले त्राटक कर्म कर सकते हैं।

उ. ३-मस्तिष्क बलवान बनाने के लिए शीर्षासन २० से ३० मिनट, पूर्ण पद्मासन ३ मिनट, विपरीत करणी ५ मिनट, चक्रासन १ मिनट करें, शीर्षासन के बाद ५ मिनट शवासन करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार—दूध में बादाम, पिस्ता, अखरोट, खस- अंजीर पानी में पीस करके छोड़े और फिर उस दूध का करें, ब्राह्मी घृत, ब्राह्मी की चटनी का उपयोग करें। रा ब्राह्मीतेल की प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान के बाद तथा में शयन के समय सिर पर ५--५ मिनट मालीश करें को ८ घंटे निद्रा लें।

श्री विष्णुदत्त शर्मा सलेमपुर खुर्द (राज

पत्र संख्या ४ प्रश्न ?

यज्ञोपवीत क्यों पहनते हैं ? क्या एक साधक के जोकि ब्राह्मण वर्ण का है यज्ञोपवीत पहना जरूरी है ?

प्र. २—एक सामान्य स्वस्थ व्यक्ति के लिए क्या कितना व्यायाम जरूरी है।

उ. मानव जीवन पशु जीवन से उत्तम है। अन्य प्राणी जैसे खेचर, भूचर, तथा जलचर प्राणियों से- जंतुओं से मानव जीवन श्रेष्ठ है। मानव भूचर प्राणि से एक होते हुए भी गुण कर्म, स्वभाव में अन्य प्राणियों भिन्न है। शास्त्रों में ८४ लक्ष योनियों में सर्व श्रेष्ठ मानव कहा गया है। कर्मानुसार कार्य व्यवस्था हेतु समाज ने ब्रा क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चातुर्वर्ण की व्यवस्था की कालान्तर में त्याग की अधिकता और न्यूनता के आधार समाज में वर्णों का आदर हुआ। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वै के ऊपर कुछ विशिष्ट नियमों के पालन की जबाबदारी इस हेतु उनके लिए यज्ञोपवीत परिधान की व्यवस्था तन काल से की गई। मानव जन्म किस हेतु है ? आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमात्मा क्या है ? जड़-चेतन, सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, र्म-अधर्म, स्वर्ग-नरक, सुख-दुःख, पवित्र अपवित्र जीवन ा लक्ष्य क्या है ? इन सबका निचोड़ जानने के लिए योग-दान्त, गीता, योग वाशिष्ठ आदि धर्म ग्रंथों के अध्ययन की वाबदारी मानव जन्म में है । इसकी स्मृति दिलाने हेतु ही ज्ञोपवीत धारण करना आवश्यक समझा गया । ब्राह्मण पनी त्याग वृत्ति से समाज में श्रेष्ठ माना जाता रहा फिर से अवश्य ही यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए ।

जन्म से वैसे सभी शूद्र ही उत्पन्न हुआ करते हैं परन्तु संस्कारों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण की प्राप्ति होती है । शरीर शुद्धि के लिए जिन सोलह संस्कारोंकी आवश्यकता हैं उनमें से यज्ञोपवीत भी एक है । यज्ञोपवीत धारण कर्ता को सांकेतिक रूपसे उसके कर्तव्यों की स्मृति दिलाने के लिए यज्ञोपवीत का विधान है । आज लोग उन तथ्यों की ओर ध्यान न देकर केवल रूढ़िगत भावना से ही यज्ञोपवीत धारण करते हैं अच्छा तभी है जबकि मौलिक तथ्यों की ओर ध्यान दिया जाय ।

उ. २ सामान्य स्वस्थ व्यक्ति के लिए अपने स्वास्थ्य को समुचित स्थिति में बनाये रखने के लिए आसन, प्राणायाम का अभ्यास आवश्यक है । आसनों में से जो भी आयु, शरीर व बल के अनुसार अनुकूल बैठें ऐसे दो चार आसन भी यदि नित्य प्रति कर लिये जायें तो व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है । आसनों का चयन करते समय यह ध्यान रहना चाहिए की उनसे सर्वांग व्यायाम हो रहा है । श्वास-प्रश्वास के व्यायाम के लिए प्राणायाम भी आवश्यक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मोपदेश

(गतांक से आगे)

वैज्ञानिकों का कथन है कि हम तो यह कर्म की मान
नहीं मानते। हम तो वंश-परम्परा से उत्तरोत्तर उप
होनेवाली विशेषताओं को ही विशेष महत्त्व देते हैं। प
वेदान्त का कहना है कि कर्मवाद वंशपरम्परागत विशेष
की अवहेलना नहीं करता। यह उसके विरुद्ध नहीं, ब
इस मतका अपने आपमें समावेश करता है। इसके अति
मृत्युकाल में वासना का जो लय होता प्रतीत होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तका भी सन्तोषजनक स्पष्टीकरण कर देता है। "वंशपरम्प-
गत विशेषता"—इतना कह देने मात्र से ही इन सभी बातों
स्पष्टीकरण नहीं होता, अतः कर्मवादियों, तत्त्ववेत्ताओं
र विज्ञानविशारदों के लिये विशेष मननीय वस्तु है।
र्मवाद वंशपरम्परा की विशेषताओंको किस प्रकार हृदयंगम
राता है? जब मानव की मृत्यु हो जाती है, तब बाह्य दृष्टि
उसकी वासनाओं का लय भी प्रतीत होता है, परन्तु यह
सनाएँ-मानसिक शक्तियां जैसे दीपक के जलते रहनेपर
र्बन नामक पदार्थ आक्सीजन नामक वायुमें आकर्षित होकर
ल जाता है, उसी तरह सभी एकत्र स्थिति में भी तुम थे,
न्य प्राणियों के रूपमें भी तुम थे, इसीलिये तुम्हें उसमें
नन्द आता है। अब अन्य तर्कोंसे हम इस बात को प्रमाणित
रेंगे।

जो तर्क यहां उपस्थित करेंगे, वे सुकरात अथवा विशेष में
हें तो प्लेटो के तर्क का अनुकरण मात्र है। स्मृति का अर्थ
या है? जो बात फिलहाल हमें याद आती है, उसे हम
रूर पहले से जानते हैं। मान लें कि मेरे भाषण सुनने के
लये कुछ लोग सदैव साथ-साथ आते हैं। अब कुछ भाषणों
सभी साथ आये, किन्तु कभी एकाध आदमी नहीं आता
तो सभी याद करते हैं कि अमुक आदमी क्यों नहीं आया?
ह प्रश्न मूल स्मृति होने से ही उद्भूत होता है। सबको
मेशा साथ-साथ देखते हैं, सभी एक ही व्यक्ति जैसे हमारे
नके हो जाते हैं, अतः यदि इन में से एकाध व्यक्ति कम हो
ाये तो तुरन्त ही विचारों की परम्परा के नियमानुसार न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आनेवाले व्यक्ति का स्मरण हो आता है।

प्रत्येक मानव नाशमान् है। "जान मानव है" इतना देने के साथ ही समझ में आ जाता है कि "जान भी नाशमान् है।" इस प्रकार क्यों याद आता है? क्योंकि हम जानते कि मानवमात्र नाशमान् है। प्रत्येक बालक अथवा सभी जिनमें विवेकबुद्धि है—इस प्रकार विचार कर सकते हैं से सिद्ध होता है कि पहले का ज्ञान उस ज्ञान के साथ रखनेवाला विषय निकले कि तुरन्त ही प्रकट होता है। का इसे प्रकार स्मरण होने से वह ज्ञान पहले किसी अवश्य उपलब्ध किया गया था. परन्तु हम जानते हैं ज्ञान हमने इस जीवन में प्राप्त किया ही नहीं, अतः यह आया कहां से? वेदान्त का कहना है कि वह पूर्व-जन्म ज्ञान है।

फिर एक दूसरा प्रश्न यह उठता है कि यदि हम ही भविष्य के कर्ता हैं तो कोई भी ऐसा नहीं, जो निर्धन पिता के घरमें जन्म लेने की इच्छा करे। ऐसी दशा में नावस्था में जन्म क्यों होता है? सभी धनाढय के घर में लेना चाहते हैं। फिर भी गरीब के घर में क्यों अवतरित हैं। वेदान्त का कथन है कि प्रत्येक बातको उसके वास्तविक स्वरूप में देखना चाहिये। चारों ओर से विचार करके को खोज निकालना चाहिये। उतावला और ऊपरी किसी काम का नहीं। प्रत्येक व्यक्ति महान् होनेकी करता है, यह भी सत्य नहीं। एक मनुष्य को पांच मिल जायें तो वह दस रुपये प्राप्त करने की इच्छा करे परन्तु उसके मनमें एकदम कोट्याधीश (करोड़पति) बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ी इच्छा कभी जाग्रत नहीं होगी। एक व्यक्ति यदि नीच से ीच है तो उसके मन में एकदम उच्चातिउच्च स्थितिपर हुँच जानेकी कल्पना कभी नहीं होगी। बीरबल को बाद-ाह ने दण्ड किया और उसका निर्णय हरिजनों से कराया, तः दण्ड की रकम अत्यल्प निश्चित की गई। इसी प्रकार त्येक व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार ही इच्छा कर सकता है।

अब दूसरे पहलू से इस बात का अनुसन्धान करें। लोग जो-जो इच्छाएँ करते हैं, औचित्यानौचित्य का विचार नहीं करते, बल्कि इच्छाओं के दास बनकर करते हैं और इस प्रकार पनी इच्छाओं के कारण ही वे चिन्ता और दुःख में आ पड़ते । उदाहरणतः कोई मानव अपनी विषयेन्द्रिय को तृप्त करना चाहता है और और उसे ज्ञान, धर्म, नीति आदि की कोई चिन्ता नहीं—कोई अपेक्षा नहीं। कालान्तर में जब उस मनुष्य की मृत्यु हो जाती हैं, तब (मात्र एक दृष्टान्त के रूप में यह बात कही जाती है) किस प्रकार के माता-पिता पसन्द करेगा? सकी इच्छाएँ ऐसी है, जिससे विद्वान् माता-पिताके घर में जन्म लेनेकी उसे आवश्यकता नहीं तथा धनाढ्य माता-पिता की भी जरूरत नहीं। वेदान्त का कथन है कि अपनी इच्छाएँ तृप्त करने के लिये वह श्वान या शूकर-जैसी नीच योनि में जन्म धारण करेगा, क्योंकि वैसा शरीर धारण करने से अपनी विषयेन्द्रियको वह यथेच्छ रूपमें तृप्त कर सकेगा, इस लिये इस प्रकार अपने ही भविष्य का वह स्वयं ही कर्ता है—भले ही वह श्वान हो, शूकर हो अथवा और कुछ। —क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

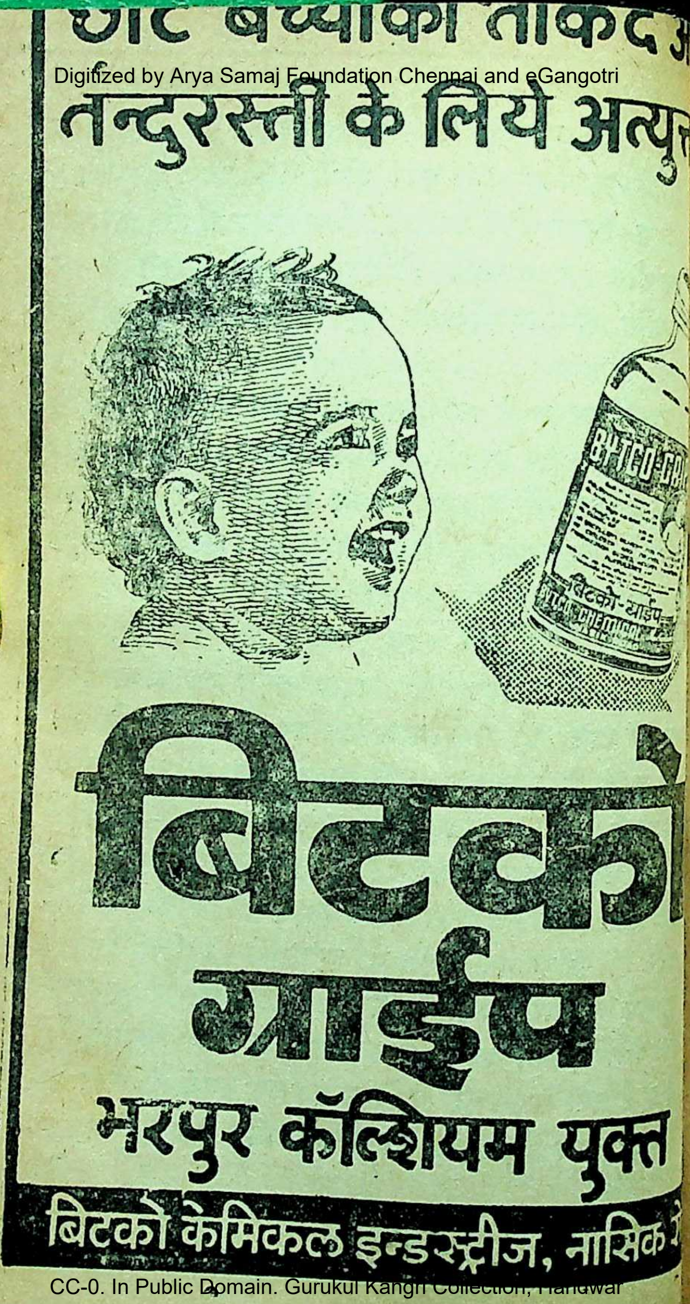

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(स्वराज्य के मंत्रद्रष्टा)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकमान्य तिलक

लेखक
श्रीपाद शास्त्री

लोकमान्य तिलक को काल की सीमाओं में परिबद्ध नहीं किया जा सकता। उनकी कीर्ति देश, भाषा तथा काल की सीमाएं लांघकर समस्त विश्व में व्याप्त हो गई है। वे केवल देशभक्त ही नहीं थे, अपितु महान् राजनीतिज्ञ, उत्कृष्ट वक्ता, मराठी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के उद्भट विद्वान, कुशल पत्रकार, ज्योतिष के अनन्य-विद्वान तथा उच्चकोटि के इतिहासज्ञ भी थे।

इस प्रकार प्रतिभा, प्रज्ञा एवं प्रेम से ओतप्रोत महापुरुषों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आविर्भाव के कारण बताना कठिन है। महापुरुष साधारण का व्यतिक्रम होते हैं। लोकमान्य तिलक ने न केवल महाराष्ट्र के अपितु भारत के तत्द्वारा निखिल विश्व के परतन्त्र लोक मानस के अर्द्धचेतन आवेगों-संवेगों तथा भावनाओं को प्रत्यक्ष आकार दिया। उन्होंने अपनी ओजस्वी वक्तृता एवं वज्र लेपिनी लोह-लेखनी द्वारा लोकमानस की भावनाओं आकांक्षाओं का अमूर्त-अप्रकट रूप मूर्त-व्यक्त कर दिया। लोक मानस की उन भावनाओं, अनुभावनाओं-स्पन्दनों को जिन्हें इस (जनता) ने क्षीण रूप में जाना था। लोकमान्य ने प्रकट किया है। उनके वाग्वज्र से अंग्रेजी शासन विचलित हो गया था। वे उन्हें 'भारतीय असन्तोष के जनक' कहते थे।

इस असाधारण प्रतिभा के धनी का साधारण व्यक्तियों के सामान्य जीवन के निकट संबंध रहा है। इससे वे लोकमान्य है-विश्वमान्य हैं।

लो० तिलक के आविर्भाव काल के समय पाश्चात्य जातियों के आगमन-अधिशासन से भारतीय लोक-मानस की गम्भीर विचारधारा में एक आलोड़न-सा उत्पन्न हो गया था।

पश्चिमी बाहरी चमक से लोक मुग्ध हो रहे थे तथा तत्कालीन समाज सुधारक पश्चिम के अन्धानुकरण में स्वयं को धन्य समझने लगे थे। ऐसे प्रतिकूल काल में इस महापुरुष का अवतरण भारत के लिये प्रसाद ही था। अभिजात ब्राह्मण कुल में जन्म होने के कारण वे प्राचीन भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्पराओं के अभिमानी थे। इतना ही नहीं वे केवल पुरातन साहित्य से, अपितु धार्मिक एवं सांस्कृतिक-मूल्यों, मान्यताओं तथा आस्थाओं के रक्षक-प्रहरी थे। वे भूस्वामी वर्ग (तथा शासक पेशवा वर्ग) के प्रतिनिधि होकर भी लोक भावनाओं का आदर एवं सत्कार करते थे। तत्कालिक तथाकथित शिष्ट-जन उपहास में उन्हें तेलीतमोलियों के नेता कहते थे। इसमें जो भी कुछ विनोद अथवा व्यंग रहा हो, वे तथाकथित शिष्ट-जन ही जानें, लेकिन लोकमान्य थे ही जनसाधारण के प्रतिनिधि नेता।

लो० तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ को रत्नागिरी नामक स्थानपर हुआ। १८५६ के समय भारत की वास्तविक चतुःसीमाओं में अंग्रेजी राज्य पूर्णतः विस्तार पा चुका था। और उसके निषेध का आन्दोलन समाप्त नहीं हुआ था। उसका जन्म 'स्वातंत्र्य समर' (जिसे अंग्रेज गदर कहते थे) से हुआ था, वह अभी नहीं हुआ था। ई० स० १८४८ को यूरोपीय क्रान्तिकारी विचारों के उद्गम का वर्ष मानते हैं। वहां ई० स० १८५७ भारत में स्वदेशी राज्य के विनाश का वर्ष है। इन वर्षों में अनेक व्यक्ति जन्में, किन्तु अंग्रेजी राज्य के परिणामकारी निषेध का श्रेय जितनामात्र लो० तिलक को है और को नहीं।

लो० तिलक का समस्त जीवन देश की सेवा में व्यतीत हुआ। राजनीति के दावपेचों में वे उलझे रहे। अपनी इच्छा के प्रतिकूल, किन्तु कर्तव्य के निर्वाह के लिये। एक स्थान पर उन्होंने कहा था—'देखिये, मनुष्य का चरित्र कैसे बनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मेरी प्राध्यापक होकर शास्त्रीय परिशीलन-संशो इच्छा थी। नवीन मतों की स्थापना की कामना थी, स्वेच्छा के विपरीत स्वतः स्थापित विद्यालय को मुझे राजनीति में आना पड़ा। लिखने के प्रति अत्य त्साह होने पर भी आमरण पत्र-सम्पादक का कार्य पड़ा।' उनकी प्राध्यापक होनेकी इच्छा के अन्तः अथवा पत्र सम्पादक की भूमिका के अन्तरंग में एक ही था—वह था परकीय आर्थिक, मानसिक, राजनीतिक मुक्त होना—स्वतः ही नहीं, अपितु समस्त देशवा साथ।

सन् १८७९ में एल. एल. बी. हो जाने के बाद महोदय ने सन् १८८० में 'न्यू इंग्लिश स्कूल' नामक विद्यालय की स्थापना की, किन्तु मात्र अच्छे विद्यार्थि निर्माण ही ध्येय न होने के कारण उन्हें वृत्तपत्रों एवं लयों की आवश्यकता तीव्रता से अनुभव होने लगी थी उसके लिये सन् १८८१ में 'मराठा' (अंग्रेजी) एवं (मराठी) नामक दो समाचार पत्र निकाले जाने लगे दौरान में 'फर्ग्युसन कालेज' नामक शिक्षणसंस्था का हुआ, जिसमें विद्यार्थियों को आप गणित विषय पढ़ाया थे। इन्हीं दिनों कोल्हापुर के महाराज के साथ वहां के द्वारा किये गये असदृव्यवहार के विरोध में—बहुत से लो० तिलक ने लिखे। परिणामस्वरूप उन्हें कारावास यहीं १८८१ से १९१६ तक उनका अंग्रेजी शासन से होता रहा और उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज उन्हें अपना सबसे बड़ा शत्रु समझते थे । फलस्वरूप उनके सिरपर सदा कानून की तलवार झूलती रहती । राजद्रोह के अभियोग में उन्हें सात वर्ष कारावास में रहना पड़ा । किन्तु उन्होंने आपदाओं की यत्किंचित चिन्ता नहीं की और आमरण स्वदेश, स्वदेशी के लिये जूझते रहे । सहकारिता के विषय में वे कहा करते थे कि 'हमें बाहर आन्दोलन करना है, साथ ही विधायिकाओं में रहकर शासन से दो-दो हाथ भी करने चाहिये ।' जो कुछ मिला है, उसे 'अधूरा' कहकर छोड़ना उचित नहीं । जो भी कुछ मिला है, उसका पूर्ण लाभ लेना चाहिये और ध्येय पूर्णतः सिद्ध होने तक आन्दोलन तीव्रगति से करना चाहिये । हमें कौंसिलों में प्रवेश करना है और उनपर कब्जा करना है । अस्पृश्यों के प्रति होनेवाले सामाजिक अन्याय से वे अत्यन्त व्यथित थे और उन्होंने एक स्थान पर कहा है—अगर ईश्वर अस्पृश्यता को बर्दाश्त करे तो मैं उसे ईश्वर न मानूंगा ।

अस्पृश्यता के रोग का निर्मूलन होना ही चाहिये । देश के श्रमिकों के हितों की उन्हें सदैव चिन्ता रहती थी तभी उन्होंने एक स्थान पर कहा है—मैं निश्चय ही श्रमिकों को संगठित करूंगा—मैं इसे समाज कल्याण के आधार पर करूंगा । उनके लिये जीवन बीमा, अस्पताल, मनोरंजन के साधन, सेविंग तथा सहकारी को-आपरेटिव, क्रेडिट सोसायटी की स्थापना के लिये उनके द्वारा किया हुआ उद्यम लोक-विश्रुत है । 'मद्यपान-निषेध, आन्दोलन में लोकमान्य तिलक का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है । १९०७ में डा० भोजकर, डाक्टर मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि द्वारा मद्यपान विरोध में पिकेटिंग हुआ था, उसमें
तिलक का महत्वपूर्ण सहयोग था।

लो० तिलक के हृदय में 'स्वदेशी' के लिये इतना
था कि होमरूल आन्दोलन के प्रत्येक सदस्य ने
स्वदेशी वस्त्र ही पहनना चाहिये ऐसा नियम बनाया
एक बार स्वदेशी वस्तु प्रदर्शनी में अपने भाषण में कहा
दूसरे के सुन्दर बालक की अपेक्षा अपने काले कुरूप बा
पर माता का वात्सल्य अधिक होता है। हमारी देश की
हुई वस्तुएँ भले भद्दी हों, सुन्दर न हों, उन्हें उपयो
लेना ही चाहिये।

गीतारहस्य के परम मर्मज्ञ स्थितप्रज्ञ तिलक वैयक्ति
आध्यात्मिक उन्नति की आकांक्षा नहीं रखते थे। उन्होंने
बार कहा था—"साक्षात् परमेश्वर भी यदि मोक्ष प्रदान क
लगे, तो भी मैं उसे कहूँगा, पहले मुझे मेरा देश पारतन्त्र्य
मुक्त देखना है, क्योंकि मोक्ष कितनी भी उच्चकोटि
क्यों न हो, है तो पराकोटि की स्वार्थ साधना ही।'

इंग्लैंड के निवास के दौरान में उनकी वहां पर स्थ
बसे अनेक भारतीयों से मुलाकातें हुई। उन्हें वे कहां
थे "यहां अकेले स्वतंत्रता का उपयोग लेने की अपेक्षा
अपनी मातृभूमि में जाकर देशबांधवों के उद्धार के लिये
प्रयास नहीं करते? जब तक देश स्वतंत्र नहीं होता त
हम काले आदमियों को बाहर स्वतंत्रता कहां?"

लो० तिलक श्रेष्ठ राष्ट्रीय नेता के साथ ही महापण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिनीयर रॅंगलरों को अनाकलनीय गणितीय समस्याओं को वे सहज ही में सुलझा देते थे। उनके व्यक्तित्व की अनेक थे। छटाएँ हैं, वे उच्चकोटि के तत्ववेत्ता, युगद्रष्टा मनस्वी थे। उनका मन वर्तमान की अपेक्षा अतीत के गौरव की स्मृति में रमा हुआ रहता था। उनकी अन्तःप्रवृत्ति विद्याध्ययन-अध्यापन की ओर ही अधिक थी। पाश्चात्य विद्वान प्रो. मॅक्समूलर को लिखे अपने पत्र में उन्होंने लिखा था कि वे अपना शेष समय वैदिक संस्कृति के अध्ययन में व्यतीत करते हैं। सनातन शास्त्रीय घर में जन्मे होने के कारण बाल्यकाल से ही संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्होंने अपने पिता से उत्तराधिकार में पाया था-गीता का अमर शाश्वत तत्वज्ञान। सामान्यतः हम लोग वेदादि के अथवा हमारे पौराणिक ऐतिहासिक राजाओं के काल के विषय में पश्चिमी विद्वानों पर निर्भर रहते हैं। यह बात लो० तिलक को मान्य नहीं थी "वेदकाल निर्णय" के विषय में उन्होंने अपने विचार और सिद्धान्त "ओरायन" (अग्रहायण) में प्रस्तुत किये हैं। उसे ओरिएण्टल कांग्रेस लन्डन ने बहुत सराहा है। प्रो. ब्लूंफिल्ड, प्रो. जेकोबी आदि ने इसकी सराहना की है। उनका विश्व विख्यात ग्रन्थ है, "आर्कटिक होम इन वेदाज" अर्थात् आर्यों का मूल स्थान" इस ग्रन्थ में आर्य लोग उत्तरध्रुव-निकट प्रदेश के निवासी थे। इस संबंध में कहा गया है कि पाश्चात्य जगत् की तत्पूर्व की मान्यताओं को इस सिद्धान्त से बहुत बड़ा धक्का लगा। उनका तीसरा ग्रन्थ है 'गीता रहस्य' इसमें प्राचीन आचार्यों की परम्परा से विलग स्वतंत्र स्वप्रज्ञा द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने उनकी कर्मपरक व्याख्या की है। इस प्रकार तत्वज्ञान में रमनेवाला यह-महायोगी जन-जीवन के सभी क्षेत्रों को आलोकित कर उस परम तत्व में दिनांक १ अगस्त १९२० को विलीन हो गया।

रामतीर्थ

श्री रामतीर्थ योगाश्रम की पत्रिक

ऑर्डर फॉर्म

श्री व्यवस्थापक 'रामतीर्थ योगाश्रम' दादर बम्बई १४.

प्रिय महाशय,

मैं 'रामतीर्थ' का वार्षिक सदस्यता शुल्क ५)रु. मनी ऑर्डर/पोस्टल ऑर्डरसे भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया निम्नांकित पते पर दि०——से प्रति भेजने का कष्ट करें:-

नाम...

पूरा पता...

....

....

तिथि...................

भवदीय/भवदीया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

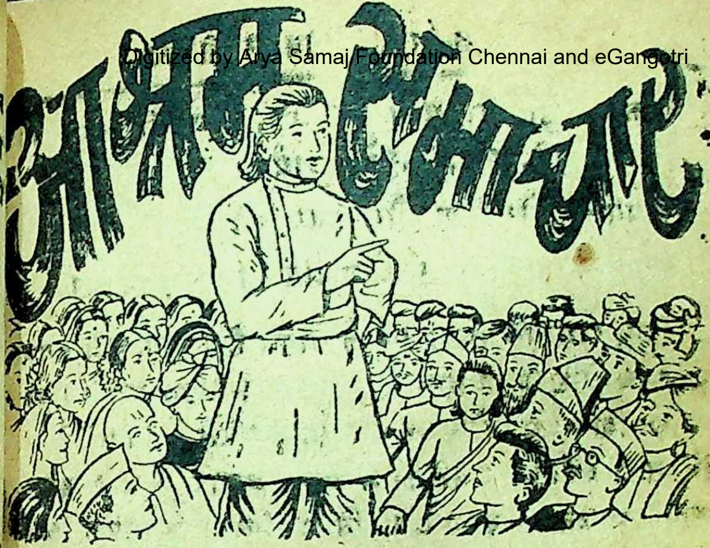

[श्री रामतीर्थ योगाश्रम के व्याख्यान खंड में हर शनिवार सायंकाल ५-३० बजे और हर रविवार प्रातःकाल १० बजे व्याख्यान होता है। उसके सारांश रूप में आश्रम समाचार स्तंभ से प्रकट किया जाता है। सप्ताह में एकबार आश्रम के संचालक योगीराज श्री० उमेशचन्द्रजी का व्याख्यान होता है और एक बार अन्य आगन्तुक उच्चकोटि के योगी, ऋषि, महात्मा, साधु संत एवं प्रखर विद्वानों का व्याख्यान होता है। बहुधा सप्ताह में एक बार शारीरिक आरोग्य और एक बार आत्मदर्शन के बारे में योग, वेदान्त, भक्ति आदि के बारेमें सार्वजनिक सत्संग होने से सर्व धर्म के अनुयायी वर्ग इस सत्संग का लाभ उठा सकते हैं।

—सम्पादक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्ता— डॉ. राममूर्ति एम. ए., एम. डी., एफ. सी. एस., आयुर्वेदाचार्य

विषय— योगविद्या और मानव जीवन

स्थान— श्रीरामतीर्थ योगाश्रम का व्याख्यान कक्ष

[डॉ. राममूर्ति पूर्वत: बम्बई वासी हैं। गुण, कर्म, स्व से उच्चकोटि के विद्वान हैं। आप ग्रहस्थाश्रमी हैं। अधिकांश समय परोपकार में व्यतीत करते हैं। हाल में विगत ८ वर्षों से अमेरिका में योग प्रचार में लगे हुये आपके मिलनसार स्वभाव व विनयशीलता से आपके चाहने वालों की संख्या दिनोदिन बढ़ रही है। अमेरिकावासी विशेष दिलचस्पी से योगविद्या को ग्रहण करने में लगे और लाभ उठा रहे हैं। आजकल आप अमेरिका में १०८ शिक्षण कक्षाओं को विभिन्न केन्द्रों में संचालित कर रहे हैं। इन केन्द्रों की देखभाल उनके शिष्य बड़ी सतर्कता से करते हैं। आप पिछले दिनों जब जन्मभूमि के दो मास के दौरे पर आये थे तभी आपने श्रीरामतीर्थ योगाश्रम में सप्रयोग भाषण द्वारा जनता जनार्दन को लाभान्वित किया था। उसमें ही आपने यह स्पष्ट कर दिखाया कि योगविद्या मानव जीवन के लिये कामधेनु का काम करती है। पाठकों के हितार्थ आपके भाषण का सारांश आगे दिया जा रहा है—सम्पादक]

उपस्थित बन्धुओ एवं बहिनो! मैं विगत ८ वर्षों से अमेरिका में निवास कर रहा हूँ। वहाँ के निवासी योग से विशेष प्रेम रखते हैं। कर्तव्यरूप से अपनाते हैं। गृहस्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग योगाभ्यास के लिये आतुर रहते हैं। मुझे प्रथमतः शंका थी कि अमेरिका वासी वैभवशाली होनेके नाते वैभव में रमे रहकर उसे ही सर्वोपरि मानते हैं। इसका निवारण अमेरिका के अनेक शहरों में निवास करने के बाद दूर हुआ। वहाँ पर भारत की तरह अनेक धर्मावलम्बी रहते हैं और सभी योगाभ्यास में रुचि रखते हैं। अतिथि सत्कार, प्रेम भावना, परोपकार, विनय, सद्भावना आदि सद्गुणवाले व्यक्ति वहाँ अधिकमात्रा में पाये जाते हैं।

योग विषयक रुचि का वर्णन करते हुये आपने बताया कि जहाँ कहीं भी अमेरिका में योग विषयक भाषण अथवा प्रत्यक्ष प्रयोग हुआ करते हैं वहाँपर लोग पर्याप्त मात्रा में उन भाषण और प्रयोगों में भाग लिया करते हैं। कार्यक्रम के निश्चित समय के ५ मिनट पहले ही व्याख्यानहॉल श्रोताओं से भर जाता है। लोग आपसमें कोई वार्तालाप न कर शांतता से सुनते देखते हैं और अन्त में शांतता से अपने २ घर चले जाते हैं। पुरुषों के समान महिलाएं भी हरएक काम में अपने उत्साह को प्रदर्शित कर अपनाने की कोशिशमें है। योगाभ्यास से पुरुषवर्ग की भांति ही महिलावर्ग भी लाभ उठाता है। स्वामी विवेकानन्द के समय से कई योगाभ्यास की संस्थाएँ अमेरिका में काम कर रही हैं। सब संस्थाओं की आर्थिक दशा अच्छी है। भारत के कई व्यक्ति वहाँ योग प्रचारार्थ गये थे, उनमें से बहुतसे वहीं रहकर योग शिक्षण संस्था संचालन में लग गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की मनोवृत्ति तथा आर्थिक अवस्था

अमेरिका में व्याख्यान व प्रत्यक्ष प्रयोग के लिये टिकट की व्यवस्था रहती है। वहाँ पर ऐसी अनेक कम्पनियां हैं जो उचित व्याख्यान और प्रयोग के लिये प्रचार टिकट बिक्री, स्थान आदिका प्रबन्ध कमीशन के आधारपर करती हैं। इस प्रकार यदि भाषणकर्ता आर्थिक सहायता का इच्छुक है तो अयाचित रूप में उसे अर्थ प्राप्ति हो जाती है। यह बात उल्लेखनीय है कि जो व्याख्यान विना टिकट के होते हैं उनमें टिकटवाले व्याख्यानों की अपेक्षा उपस्थिति कम रहा करती है। इसके साथ ही व्याख्याता की भाषण के बाद भूरि भूरि प्रशंसा कर कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

भावना तथा दृष्टिभेद

भारत जो कि योग साधना का उद्गम स्थान है यहाँपर योग विषयक व्याख्यान सुनने के लिये अन्तःकरणपूर्वक लोग बहुत कम संख्या में मिलेंगे जबकि अमेरिका जैसे देशमें इस का विपरीत उदाहरण ही प्राप्त होगा। इसमें भारत का दुर्भाग्य ही समझना चाहिये। योगविद्या भारत की महान् शक्ति एवं शान्ति प्रदायिनी विद्या है षट्दर्शनों में एक दर्शनयोग है। प्रथम योग पश्चात् वेदान्त ऐसा संबोधन किया जाता है। आज अज्ञानतावश योगविद्या की ओर भारतीय अवहेलना कर रहे हैं। जबकि पाश्चात्य देशों के वासी प्राण समवेत योग को अपना रहे हैं, योगाभ्यास से किसी प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हानि नहीं यदि उसे समुचित मार्गदर्शन के साथ किया जाय। योग से अनेक प्रकार के लाभ हैं।

मैं अमेरिका में दस केन्द्रों का संचालन विभिन्न शहरों में करता हूँ। कोई आर्थिक कठिनाई नहीं। जबकि भारत में इस प्रकार की संस्थाओं को चलाने में अनेक कठिनाइयां होती हैं। लोगों की मनोवृत्ति संकुचित है। अच्छी आमदनी होनेपर भी लोगों की परोपकार सद्भावना के विषय में संकोचनवृत्ति रहती है। भारतवर्ष के विभिन्न शहरों में चलने वाले अनेकानेक योगाश्रमों में से किसी विरले ही आश्रम की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। इसे भारत का दुर्भाग्य कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। फीस और दान के बारे में निराश होकर संचालकों को नगरपालिकाओं, राज्य सरकारों, केन्द्रीय सरकार से मदद मांगनी पड़ती है। योगविद्या जैसी दैवीविद्या का प्रचार प्रसार करनेवाली अनेक संस्थाओं की यह अवदशा है। मैं गृहस्थाश्रमी हूँ। अभी मेरे परिवार के सदस्य बम्बई में ही हैं। स्थायी रूपसे सपरिवार अमेरिका में बसने के लिये प्रयत्नशील हूँ। भारत से गये अनेक लोग स्थायी रूपसे वहाँ बस गये हैं।

योग और मानव जीवन

भाइयो तथा बहनो! सर्व सामान्यतः योगके बारे में भाषण करनेवाले लोगों के मुखसे "योगश्चित्तवृत्ति निरोधः" यह सूत्र निकलेगा। योग का संक्षिप्त अर्थ चित्तकी वृत्तियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरोध है। दूसरा सूत्र है 'तदा द्रष्टु स्वरूपे अवस्थानम्' वृत्तियों के निरोध के बाद आत्मा अपने मूलस्वरूप में अवस्थित होता है। पतंजलि मुनि ने मानव उद्धारक अपने योगदर्शन में सूत्र रूपसे उच्च कोटि के तत्व को समझाया है। योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं। इन सबका अथवा किसी एक अंगका मानव यदि अपने जीवन में सक्रीय रूपसे उतारेगा तो उसके सामने आपत्तियाँ नहीं आ सकतीं। वह दैवी गुण संपत्ति से विभूषित रहेगा। आज मैं आपके सामने त्राटक के बारे में प्रयोग के साथ समझाना चाहता हूँ।

प्रथम प्रयोग— ऐसे किसी आसन पर (स्वस्तिकासन, सिद्धासन, पद्मासन) जिसपर आराम से बैठ सकें, बैठकर मेरुदंड, कमर, सिर का भाग एक रेखा में—सीधे रखकर मन के विचारों को एकाग्र करिये। अपने कानों में सुनाई दे ऐसे मधुर आवाज में ॐ ध्वनि मुखसे निकालिये। अधिक देर तक ॐ की ध्वनि कानों में सुनाई पड़े ऐसा अभ्यास करें। ५ बार दीर्घ कालीन ध्वनि मुख से निकालें। पश्चात् मन में विचार करें कि मेरा शरीर शिथिल हो रहा है महाशक्ति शरीर में प्रवेश कर रही है। शुद्ध चेतन समस्त शरीर में व्याप रहा है। ५ मिनिट तक यही भावना कर फिर ॐ की ध्वनि मुख से निकालिये। मनमें विचार करें कि सारे शरीर में सचेत शान्ति प्रवेश कर रही है। कभी उच्च स्वर कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न स्तरीय [illegible] ओ३म् की [illegible] निकालें।

पहले प्रयोग का महत्व— सज्जनो! अष्टांग योग के छः प्रकार के मलशोधन कर्मों (नेति, धौति, नौली, बस्ति, त्राटक और कपालभाति) में से त्राटक एक हैं। त्राटक के अनेक प्रकार हैं। इच्छाशक्ति द्वारा फल प्राप्ति करने के अनेक उपायों में से यह एक प्रयोग है। महाशक्ति शरीर में प्रवेश करने के पश्चात् इच्छाशक्ति बलवान् बनती है। बलवान् इच्छाशक्ति से मनुष्य का जीवन उज्वल, प्रेरणादायक, सुखमय हो जाता है। संसार में रहते हुये सांसारिक जीवन व्यतीत करते हुये तन, मन, धन से एवं आत्मज्ञान से सम्पन्न रह सकते हैं। योग-विद्या कल्पवृक्ष के समान है। इच्छाफल को देनेवाली है। इसके लिये योगसाधकों तथा मेरा वर्षों का अनुभव प्रमाण है। दूसरी बार योग के बारे में सप्रयोग भाषण करूँगा। आज के कार्यक्रम का समय समाप्त हो चुका है।

मद्रास, केरल, मैसूर, तथा आंध्र प्रदेश में हिग्गिन बॉथमस के रेल्वे बुक स्टालों पर रामतीर्थ मासिक मिलता है। तथा ए. एच. व्हीलर के रेल्वे बुक स्टालों पर रामतीर्थ मासिक मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामतीर्थ योगाश्रम नियम

१-इस योगाश्रम में प्रविष्ठ होने के बाद साधकों को सिगरेट, शराब आदि व्यसनों से दूर रहना होगा। किसी दुर्व्यसन अथवा दुश्चरित्रता की बात संचालक को मालूम होगी तो उसे किसी अग्रिम सूचना के बिना आश्रम से हटा दिया जायेगा।

२-ली हुई फीस किसी भी दशामें वापस न होगी।

३-टुवाल, नोटबुक, नेति, धौति. ब्रह्मदातून आदि साधन की वस्तुयें उपयोग में लाने के बाद साफ कर स्थान में रखनी होंगी।

४-सामान्य आरोग्य के साधारण अभ्यास में साधक पारंगत समझे जायेंगे, तभी उन्हें योग के अन्तरंग अभ्यास की शिक्षा दी जायेगी इस सम्बन्ध में संचालक को पूर्ण संतोष होना आवश्यक होगा।

५-योगाश्रम के संचालक उचित और सात्विक दान स्वीकार कर सकते हैं और उसमेंसे एकत्रित सम्पत्ति संचालक की इच्छानुसार योगविद्या के प्रचारार्थ खर्च की जायेगी।

६-कमसे कम आठ वर्ष और इससे ऊपर की अवस्था वाले ही योगाश्रम में प्रवेश पा सकेंगे।

७-आश्रम में प्रवेश पाने की फीस ५रु. है। रोगियों को रोग के आधार पर अधिक फीस देनी होगी। नीरोगी साधकों के लिये १ महीनेकी फीस १० रुपये और ३ मास के २५ ...

८-नवीन प्रवेश पहली या १५ को ही किया जायेगा। बीच में प्रवेश करनेवालों की फीस पहली या १५ तारीख से प्रारम्भ मानी जायेगी। साधकको फीस अग्रिम देनी होगी। समय प्रात:काल ७॥ से ९॥ और सायंकाल ६ से ७॥ ... मेंसे किसी भी समय को अपने अनुकूल बना सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामतीर्थ योगाश्रम की प्रवृत्तियां

(महत्वपूर्ण सूचनाएं और आपकी उन्नति)

छः प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार और संयम का अभ्यास तथा रोगियों के लिये जलोपचार, मालिश, मानसोपचार आदि प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगोपचारकी व्यवस्था है।

पुरुषों के लिये समय:—प्रातःकाल ७ से ९॥
सायंकाल ६ से ७॥

महिलाओंके लिये समयः—मध्याह्न ४ से ५

महिलाओंका इलाज (अभ्यास) महिलाएं करती हैं। रविवार को सबेरे १० बजे योग, वेदान्त, गीता तथा रोग निवारण के लिये प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा आदि पर रामतीर्थ योगाश्रम के संचालक अथवा अन्य प्रतिष्ठित विद्वान का व्याख्यान होता है। व्याख्यानमें आनेवाली आम जनता से किसी प्रकारकी फीस नहीं ली जाती है।

प्रति शनिवार को सायं ५॥ बजे और रविवार को प्रातः १० बजे व्याख्यान होता हैं।

शनिवार तथा रविवार को व्याख्यानों के साथ-साथ भजन, कीर्तन वेदमन्त्रपाठ, ध्यानाभ्यास तथा व्याख्यानों के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष प्रयोग भी बताये जाते हैं।

विशेष सूचना:— योगाभ्यास एवं रोग निवारणार्थ बाहर गांव से आनेवालों के लिये श्रीरामतीर्थ योगाश्रम में रहने तथा भोजन का प्रबंन्ध नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

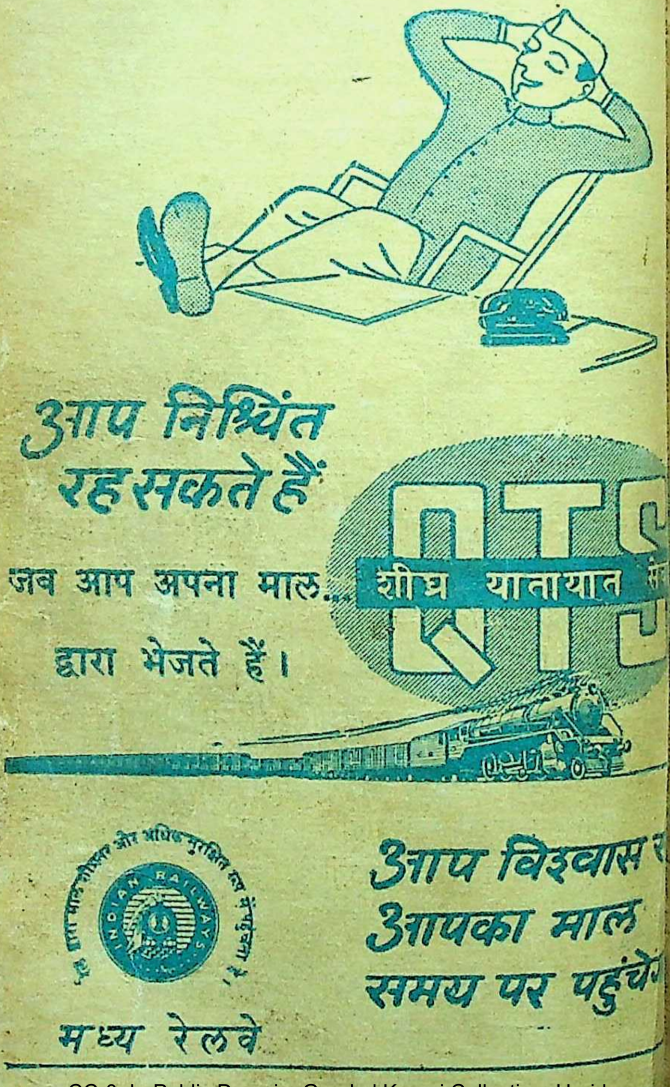

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ पंचम वर्षीय ईश्वरांक

रामतीर्थ हिन्दी मासिक, आगामी अप्रैल ६४ से चौथा वर्ष सम्पूर्ण करके पांचवें वर्ष में प्रवेश करेगा। ईश्वर कृपा और पुरुष प्रयत्न की कहावत के अनुसार रिद्धि, सिद्धि और बुद्धि के दाता, योग विद्या के आदि प्रणेता भगवान् श्री शंकरजी का ईश्वरांक प्रसिद्ध होगा। सुख, सामर्थ्य, समृद्धि और आत्मदर्शन की भावना रखनेवाले महानुभाव रामतीर्थ मासिक को निरन्तर पढ़कर, एवम् अपने घर में संग्रह कर अबतक पूर्ण शान्ति प्राप्त कर चुके हैं। वैसे ही शिवांक और आगे के मासिक पढ़कर संतोष का अनुभव करते रहेंगे।

सन १९६४ के अप्रैल का ईश्वरांक अनेक विषयों से भरपूर रहेगा। योग, वेदांत, भक्ति, रामायण, गीता, प्राकृतिक चिकित्सा, कहानी, स्वानुभव, आश्रम समाचार, प्रश्नोत्तर और विशेष करके भगवान् श्री शंकरजी का अलभ्य रहस्य समाविष्ट रहेगा।

अप्रैल विशेषांक का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक बहुरंगी और संग्रह करने लायक रहेगा।

भूतकाल के अनुभव

प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, रामायण, उमेशवाणी, योग, वेदान्त, प्राकृतिक चिकित्सा आदि रामतीर्थ मासिक के सम्पादक तथा श्री रामतीर्थ योगाश्रम की ओर से प्रगट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनाएँ और कहानियाँ—महिला जगत, बालकों के लिये, समाज सुधार, और उनके प्रतिष्ठित लेखक; लेखिकाओं की रचना के विषय में आत्मसंतोष प्रदर्शित करनेवाले पाठकगणों की संख्यामें अधिक वृद्धि हुई है, और वृद्धि होते जा रही है। इसके अनेक कारणों में दो कारण मुख्य हैं। पहला कारण यह है कि मलिन संस्कारों से मुक्त होकर पवित्र संस्कारों को उत्पन्न करवाने का महत्व। दूसरा कारण, पढ़ने के पश्चात् प्रत्यक्ष रूपमें सक्रियात्मक ढंग से जीवन में उतारकर प्रत्यक्ष अनुभव लेना। इन दो कारणों से पाठकगणों के मन रामतीर्थ मासिक की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

लेखकों से निवेदन

सन १९६४ के फरवरी मास के अन्ततक 'ईश्वरांक' भगवान् श्री शंकरजी के विषय में महत्वनीय रचनायें भेजें। सदा की भाँति मासिक के ध्येय के अनुसार विशेषांक के लिये अन्य रचनायें प्रेषित कर सकते हैं। लेख कमसे कम १० पृष्ठों का स्वीकार किया जायेगा।

मद्रास, केरल, मैसूर, तथा आंध्र प्रदेश में हिग्गिन बूथमस के रेल्वे बुक स्टालों पर रामतीर्थ मासिक मिलता है। तथा ए. एच. हीलर के रेल्वे बुक स्टालों पर रामतीर्थ मासिक मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मानव जाति के उत्थान का प्रतीक
हिन्दी जगत् का सर्वोत्तम मासिक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ

सम्पादक—
योगीराज
उमेशचन्द्रजी

वर्ष—४—अंक ११
फरवरी १९६४

इस अंक का मूल्य
५० न. पै.
वार्षिक शुल्क ५ रु.
डाकव्यय सहित

टेलीफोन
सम्पादक
व्यवस्थापक } 62899
विज्ञापन
तार—प्राणायाम दादर

लेख	लेखक	पृष्ठ
वैदिक प्रार्थना	संकलित	९
उमेशवाणी		१०
धर्मोपदेश	श्री स्वामी रामतीर्थ	१३
मयूरी आसन	उमेशयोगदर्शन ग्रंथ से	१६
थोड़ी देर चुप बैठिये	शिवनारायण सक्सेना	१७
जीवन का अर्थ	शं. खानवेलकर	२३
आत्मा और शरीर	लक्ष्मीकान्त मिश्र	३५
भारत देश हमारा है (कविता)	पूरनचन्द्र 'सुमन'	४४
सिसकते आंसू (कहानी)	गिरिजेश	४६
छुरी (कहानी)	हरिहर प्रसाद बरियार	५३
जीवन का मूल्य	दुर्गाशंकर त्रिवेदी वेदालंकार	६८
वस्तु और उसका स्थान	कान्तिलाल जैन	७२
काशी की साहित्य परंपरा	ईश्वरचन्द्र विद्यालंकार	७७
आजका मानव किस ओर ?	प्रतिभाकुमारी गुप्त	८६
प्रोफेसर साहब (कहानी)	रामचन्द्र ठाकुर	९२
क्या तुलसीदास नारी निंदक थे ?	रामचन्द्र छांगाणी	१०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख	लेखक
वर्षा ऋतुमें छाते की खेती	एस. एस. कनोई
स्वामीजी (कहानी)	सीताराम जैन 'हीरा'
प्रेम मार्ग	रामकृष्ण सिंह
स्वानुभव	जीवनलाल च. अग्निहोत्री
संस्कृत साहित्यमें समस्यापूर्ति	बी. सुब्राय अडिग
निःशस्त्रीकरण (कविता)	देवी प्रसाद गुप्त
पाठकों के अभिमत	
सभी काम नियत समयपर करिये	अगरचन्द नाहटा
हिन्दू मुस्लिम कवियों और सन्तों की होली	एस. एस. कनोई
प्रश्नोत्तर	सम्पादकीय कलम से
रामचरित मानस	टीकाकार योगीराज उमेशचन्द्रजी
आश्रम समाचार	संवाददाता द्वारा

मुखपृष्ठ का परिचय

मयूरी आसन की स्थिति में श्री रामतीर्थ योगाश्रम के संस्थापक-संचालक का चित्र चित्रित है। विशेष इसी अंक के पृष्ठ १६ पर देखें।

विशेष सूचना

लेखक महानुभावोंने रचना भेजने से पहले "लेखकों से" पृष्ठ को अवश्य पढ़ लेना चाहिये। अपनी रचना के अंत में अपना पूरा नाम व पता लिखना नहीं भूलना चाहिये। बिना नाम पते लिखे रचना छपने में नहीं आवेगी। सिर्फ रचनायें ही निराला मुद्रक १४०, आर्थर रोड बम्बई ११ के पते पर भेजें।

सम्पादक श्री योगीराज उमेशचन्द्रजी ने निराला मुद्रक १४० आर्थर रोड बम्बई ११ में मुद्रित कर, श्रीरामतीर्थ योगाश्रम के लिये विन्सेन्ट स्ट्रीट १ बम्बईनं.१४ से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता जनार्दन का सद्भावनाहस्त

श्री रामतीर्थ योगाश्रम विगत २९ वर्षों से जनता जनार्दनके तन-मन विकासार्थ जिस जी तोड़ प्रयत्न में लगा है, उसी सेवा से प्रभावित होकर उसके सेवा पूर्ण हाथों को अधिक शक्तिशाली बनाने हेतु

जनवरी मास में प्राप्त सद्भावना राशि

१–श्री.	नरेन्द्र मूलजी और डुलेराय मूलजी	बम्बई	१५)रु.
२–,,	अेकनाथ वालावलकर	कानपुर कैंट	५–००
३–,,	अच्युत एन. गाडगील	मालेगांव	२५–००
४–,,	गणेश वी. नार्वेकर,	काशी	३१–००
५–,,	त्र्यंबक चि. आठवले	पूना	५१–००
६–,,	स्वामी शंकरानन्द सरस्वती,	वाराणसी	५१–००
७–श्रीमती	मालती ग. केणि,	सिद्धापुर, (मैसूर)	५१–००
८–श्रीमती	जयन्ती के. वर्मा,	पटना	२५–००
९–श्रीमती	जया बहेन निरंजन शाह	राजकोट	११–००
१०–श्री.	महन्त नारायण देव,	शिमला	२५–००
११–श्रीमती	गौरी म. वाटवे,	केन्या (अफ्रिका)	५१–००
१२–,,	स्वामी चिदानन्द तीर्थ,	जबलपुर	११–००
१३–कुमारी	बिन्दु स. कंसारा	महेसाणा	११–००
१४–श्री.	अनिल अ. वैष्णव	बम्बई	५१–००
१५–श्री.	श्रीधर शं. टकले	कलकत्ता	५१–००
१६–श्री.	नंद बिहारी लजपत राय	लुधियाना	२५–००
१७–कुमारी	नन्दिनी बी. मुर्डेश्वर	दिल्ली	५१–००
१८–कुमारी	आरुन्धती म. लोखंडवाला	जकार्ता	५१–००

सद्भावनाराशि निम्न पते पर भेजें:—

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर, बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों से

'रामतीर्थ' मासिक में स्वीकार करने योग्य मुख्य वि

शारीरिक रोग निवारण, सशक्त एवम् सदानिरोगी मानसिक करके मन की शांति, एवम् आत्म साक्षात्कार करने योग्य, उपरो प्राप्त करा देने योग्यअष्टांग योग, (यम, नियम आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधी, राजयोग, भक्ति योग, लय योग, शिवस्वरोदय, वेद उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, महात्माओं जीवन चरित्र एवम् उपदेश, प्राकृतिक चिकित्सा, (आकाश, वायु, जल तथा पृथ्वी द्वारा इलाज) महिलाओं के जीवन सुधार बालकों के संस्कार सुधारने के लिये, अनुरूप लेख, कहानी, धार उपन्यास, गीत, कविता, निबंध, प्रवास वर्णन, नाटक, धर्मकथादि स्वीकारकी जाती हैं कागजकी एक ओर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखी हुई भेजनी चाहिये, अश्लील विषयोंकी रचनायें स्वीकार नहीं की जायेंगी

विशेषः—अन्यत्र प्रकाशित रचनायें रामतीर्थ मासिक के लिये केवल स्वीकृत रचनाओं की सूचना एक मास बाद दी जाती है, रचना को वापस मंगाने वाले लेखकों को पोस्टल टिकिट अवश्य भेजना चाहिए, स्वीकृत रचनायें समयानुकूल छपेंगी, चाहिये कि वे इस विषय में वारंवार पत्र लिखने का कष्ट न दें, प्रकाशित होने के बाद, रचना जिसमें छपी होगी वह मासिक और आश्रम की ओर से निर्धारित किया गया पुरष्कार भेजा रचना में लिया गया कोई दृष्टांत हो तो वह किस ग्रन्थ के आ लिया गया है यह अवश्य लिखें। अन्य पत्र पत्रिकाओंमें मासिककी रचना अन्य भाषाओं में अनुवादित की इच्छा रामतीर्थ मासिकके संपादकसे लिखित अनुमति लेना आवश्यक रचना भेजनेका पताः निराला मुद्रक १४०, बायर रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगों से मुक्ति पाने के लिए

इसे अवश्य पढ़िये

योगिक—प्राकृतिक चिकित्सा डाक व्यवस्था विभाग

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ उठाकर शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्त बनिए।

शारीरिक एवं मानसिक रोग निवारणार्थ रोगी योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा के आधार से अपने रोग निदान के डाक द्वारा लिखित सलाह निम्न नियमानुसार ले सकते हैं।

१–व्यक्तिगत रूपसे निदान पूछने के लिये प्रथमबार ५) रु. फीस होगी, दूसरी बार ३) रु. और फिर हर बार के लिए दो रुपये फीस होगी।

२–रोगी को इसके अन्तमें छपी बातों का उत्तर स्पष्ट रूप से अलग कागज पर लिखकर भेजना होगा।

३–रोगी को फीस मनिआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर से उपरोक्त पते पर स्पष्ट निर्देश के साथ भेजने होगी।

४–रोगी को उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी मेंसे जिस भाषा में चाहिए उसके लिए लिखना चाहिए।

५–प्रश्नावली रजिस्ट्रीसे भेजनी चाहिए और उत्तर भी रजिस्ट्री से ही भेजा जायगा सामान्य डाक से भेजी गई प्रश्नावली खो जाने की जवाबदारी भेजने वाले की होगी विदेश से प्रश्नावली भेजने वालों को डाकव्यय के लिए अतिरिक्त धन भेजना होगा।

६–योगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा विभाग की सलाह और सूचनानुसार रोगी को पथ्य पालन करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७–फीस देकर इलाज करानेवाले रोगी को निदान … शुरूवात से विवरण रखना होगा और मांगने पर उसे दे… होगा।

८–रोगी को योगिक उपचार, और प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती मराठी में छ… उमेश योगदर्शन ग्रंथ को अपनी इच्छित भाषा में रु. १७-… मनि आर्डर द्वारा भेजकर ऊपरोक्त पते से मंगाना पड़ेगा।

रोगी को सलाह पूछने के लिए निम्न बातों … स्पष्ट करके भेजना चाहिए।

रोगी का नाम व पता, उमर, वजन, ऊंचाई। मल पद्धत… रहती है? अपचन है नींद गाढ़ी आती है? शरीर में अशक्ति… है? रात को स्वप्न आता है? रात को कितने घंटे सोते हो? दिन को कितना समय सोतें हो? वीर्य दोष है? शरीर में कोई चर्म रोग है? कफ विकार है? पित्त विकार है? वात विकार है? कोई मानसिक चिन्ता है? शरीर में जड़ता है? स्मरण शक्ति कैसी है? मांसाहारी या शाकाहारी? विवाहित अथवा अविवाहित? हाथ पैर के तलुवे गरम या ठंड़े रहते हैं? पेशाब का रंग कौनसा है? केवल बौद्धिक परिश्रम है अथवा शारीरिक? प्रातः भ्रमण, तैरना, और कोई व्यायाम चालू है? स्नान ठंडे या गरम जल से करते हो? दारू, गांजा, तम्बाकू सिगरेट बीड़ी, तपकीर, चाय आदि का व्यसन है? पहले कौनसा रोग हुआ है? शिरदर्द कबसे है? वर्तमान रोग का विवरण? वर्तमान में कौनसी दवा चालू है। कभी प्राकृतिक अथवा योगिक चिकित्सा करवाई है? कब?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्ठुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितंयदायुः ॥

सम्पादक – **रामतीर्थ** योगीराज श्री उमेशचन्द्रजी

वर्ष ५] फरवरी १९६४ [संख्या ११

वैदिक-प्रार्थना

य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात ।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश ॥

ऋ. वे. आ. सू. १–१६४–३२

भावार्थ—वह अज्ञानिजन है जो अपने स्वार्थ में निरत है और जिसकी दृष्टि संसार की ओर लगी है। ऐसा संसारी जन प्रकृति के कार्यभूत संसार के अवरोधों में फंसा रहता है और जन्म मरण के चक्र में निरन्तर घूमता रहता है। ऐसा परवश अज्ञानिजन परमात्मा के गूढ़ रहस्य को नहीं जान सकता और उसकी नजर से परमात्मा का दर्शन दूर ही है। स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ रूप आत्मज्ञान प्राप्त करना ही परम आनन्द है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२२२) जो लोग अपने वाणी, विचार और आचार-
में मुक्त आत्म-स्वरूपकी सत्ता प्रकट करते हैं, वही मुक्ति
के सच्चे पथिक हैं। देहाध्यास अनात्मा की उपास
फिर भी आत्मा का मंदिर होने के नाते शरीर को
सुपुष्ट और स्वच्छ रखना आवश्यक है।

(२२३) मानव का पूर्व-जन्म का पुरुषार्थ ही प्रत्य
में प्रारब्ध रूप में प्रकट होता है। शुभ कर्म सुख-स
रूपमें प्रतिफलित होते हैं और अशुभ कर्मों के फल
में भोगने पड़ते हैं। यही मानव-जीवन का सिद्धान्त

(२२४) संसार की यह विषमता या विचित्रता
मानव जो चाहता है, वह उसे नहीं मिलता और
चाहता, वह अपने आप सामने आ खड़ा होता। तात्प
कि जो कुछ उपलब्ध है, उसी का आनन्द और तृप्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपभोग करो और जो नहीं है, उसकी वियोग-वेदना में कुंठित होने की आवश्यकता नहीं।

(२२५) इस जगत् के गुण या भाव तीन हैं—सत्त्व, रजस और तमस। सत्त्वगुण ज्ञान-प्रकाश का प्रवर्तक है, जिससे आन्तरिक सुख-शान्ति का अनुभव होता है, रजोगुण प्रवृत्ति का प्रसारक है, जिससे लोभजन्य अशांति, विवाद, झगड़े आदि उत्पन्न होते हैं और तमोगुण अज्ञान का द्योतक है। इससे प्रमाद, आलस्य और मोहजनित मूढ़ता जीवन को निराशा के अन्धकार में घसीट ले जाती है।

(२२६) शरीर को नीरोग बनाने के लिये यौगिक क्रियाएँ, मलशोधन कर्म, आसन, प्राणायामादि मुख्य रूप से आचरणीय हैं। इनके अभ्यास से शरीर के अन्तःबाह्य मल-दोष दूर होकर श्वास-प्रणाली बलवान् तथा नियमित बनती है।

(२२७) साधु, सन्त महात्मा—यह प्रभु के प्रतिबिंब और संदेशवाहक हैं। उनके सामने विनयावनत वन्दनभाव प्रकट करना ही धर्म है। वे जैसा बतायें, वैसा आचरण बिना विचार किये करना ही कल्याणकारी है। वे अमंगल और दुर्गति की ओर नहीं ले जायेंगे, ऐसा विश्वास रखना चाहिये।

(२२८) सत्य, अहिंसा, तप और दान—जीवन के यह चार मूलाधार हैं। व्यावहारिक जीवन में इन चारों का सामंजस्य रखना चाहिये।

(२२९) विषय-चिन्तन में मग्न रहना ही सभी अनर्थों का मूल है। योगाभ्यास में यही चिन्तन परमात्मा की ओर प्रवृत्त होता है, फलतः मन आत्मिक चेतना का वाहक बनता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२३०) यह चार काम हानिकर हो सकते हैं—अनि
जीवन-आहार-विहारादि, बिना भूख के खाना, बिना
के लड़ना, और बिना पूंजी के व्यापार करना।

(२३१) रामायण, महाभारत, उपनिषद्, भागवत आ
पठन परमोपयोगी है। इनके आख्यानों और आख्यायि
के चरित नायक धीरोदात्त और सर्वगुणालंकृत हैं। य
गुणों को धारण किया जाये तो सच्चे अर्थों में सब त
बलवान् और समृद्ध होंगे तथा अपने देश की स्वतन्त्र
रक्षा के लिये स्वयंभू शक्ति संपन्न बनेंगे।

(२३२) परमात्म-साक्षात्कार को कर्म, भक्ति और ज्ञा
संपादन आवश्यक है। निष्काम कर्म करना-लोकसेव
अहैतुक भाव से लगे रहना परमात्मा की ही सेवा-पूज
भगवान् के प्रेम में मग्न रहना, उनका गुण-कीर्तन क
भक्तिभाव का द्योतक है और अदृश्य प्रभु की अनुभू
तन्मय होना, प्राणिमात्रको परमात्मा का प्रतीक मा
वर्ताव-व्यवहार करने का सामर्थ्य ज्ञान ही प्रदान कर
है।

(२३३) मनोवृत्तियों तथा इच्छाओं को दबाना मनुष्य
धर्म है। वर्तमान कर्म में वफादारी के साथ लगे रहना
उनके द्वारा उपलब्ध फलपर संतोष-पूर्वक निर्वाह
चाहिये; यही वृत्तियों का दमन है। सांसारिक इच्छा
उदय और उनकी अतृप्ति अकारण दुःख, ईर्ष्या-द्वेष का
देगी। इसलिये इच्छा मुक्ति की करनी चाहिये, जो
का परिहार कर मानव को निश्चिन्त और निरुपाधि
है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मोपदेश

(गतांक से आगे)

जगत् में लोग इच्छा करते समय इस सम्बन्ध में तनिक भी विचार नहीं करते कि इन इच्छाओं का परिणाम क्या होगा ? और अन्त में जब परिणाम की प्रतिपत्ति होती है, तब भाग्य को दोष देते हैं, ग्रह-दशाओं की निन्दा करते हैं, रोते हैं, आकुल होते हैं, हाथ-पैर पछाड़ते हैं, शिर पीटते हैं; अतः इच्छा भले करो, परन्तु करते समय परिणाम पर पर्याप्त विचार कर लेना चाहिये । मानवमात्र स्वयं ही अपने दुःख का जन्मदाता है, अन्य कोई नहीं ।

अब भारत के एक कवि का दृष्टान्त उपस्थित करता हूँ । यह कवि मुसलमान था । बहुत अच्छा बुद्धि-प्रतिभा संपन्न और विनोदी स्वभाव का था । राजसभा में कवि का प्रभाव था और राजा की अनुकम्पा अच्छी थी । एक दिन राजाने इस कवि को बार्तालाप, कविता आदि से विनोद करने के लिये रातभर अपने पास रखा । राजा बातों में इतना अधिक तन्मय हो गया था कि अत्यधिक रात बीत जाने पर उसे सोने की याद आई । रानीने पूछा—आज इतनी अधिक रात तक जागरण क्यों किया ? प्रत्युत्तर में राजाने कवि की बातें बताईं; अतः रानी को भी कौतूहल हुआ और राजासे अनुरोध किया कि कवि को मेरे पास—अन्तःपुर में बुलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय। दूसरे दिन कवि को रानी के पास पहुँचाया गया। भारत में स्त्री तथा पुरुष पृथक्-पृथक् खण्ड में रहते हैं और खासकर मुसलमान स्त्रियाँ तो ओझल परदे में ही रहती हैं। वे मुँह पर बुरखा डालती हैं और पति के सिवा अन्य किसी को भी अपना मुख नहीं दिखलातीं। अब इस कविने अन्तःखाने (अन्तःपुर) में पहुँचकर अपनी कविता-कहानियों का स्वाद रानी को चखाया। रानी उस समय परदे में बैठी थी। यद्यपि कवि की दृष्टिशक्ति मौजूद थी और वह सब कुछ देख सकता था। फिर भी, उसने कहा—मैं नेत्ररोग से पीड़ित हूँ। मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। कवि की दुराकांक्षा अन्तःपुर में रहकर रानी के सौन्दर्य-दर्शन की थी, अतः उसने यह बहाना निकाला। कवि को अन्तःपुर में रहने की अनुमति मिल गई, स्त्रियाँ उसे अन्धा समझकर अपनी बातचीत, घूमना-फिरना आदि सभी काम निस्संकोच होकर करती थीं। परन्तु सत्य कभी छिप नहीं सकता। एक दिन वह प्रकाश में आकर ही रहता है। इसी प्रकार एक दिन इस कथित अन्धे कविने एक दास से कोई वस्तु मांगी। अमीर-उमराव लोग अपने हाथ से कोई काम नहीं करते। गाड़ी में बैठना, वस्त्र परिधान आदि कोई भी छोटे से छोटा कार्य क्यों न करना हो, वे दूसरे की सहायता लेकर ही करते हैं। इसीको उनकी धनाढयता का चिह्न माना जाता है। इस परतन्त्रता को सम्मान और ऐश्वर्य के नाम से पुकारा जाता है। यदि किसी की सहायता न ली जाये तो उसे परतन्त्रता और हीनता का द्योतक कहा जाता है। इस कवि को शाही महल में बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…व-सम्मान प्राप्त हुआ; अतएव वह भी अपना कार्य स्वतः …र लेने में हीनता मानने लगा। एकबार उसे बैठने के लिये …क कुर्सी की आवश्यकता आ पड़ी और उसने दासी को कुर्सी …ने का हुक्म दिया। दासी ने उद्धतभाव से उत्तर दिया— …मैं अभी काम में हूँ, मुझे समय नहीं।" इस दासी के चले …ाने के बाद दूसरी दासी आई, उसे बुलाकर कुर्सी लाने को …हा। दासीने कहा—"यहां कुर्सी है ही नहीं।" अस्तु, …स ढोंगी अन्ध कविने जलपात्र लाने को कहा। जलपात्र भी …स कमरे में नहीं, अन्यत्र से लाकर अभी थोड़ी देर में देती …। अन्ध कवि बोल उठा—"अरे वह क्या रखा है जलपात्र, …खती नहीं? जा, जल्दी ले आ।" इस प्रकार जलपात्र पाने …की जल्दबाजी में धैर्य न रहा और उसकी पोल खुल गई। …त्य सदैव इसी प्रकार असत्यवादियों की विडम्बना करता …। प्रकृति का नियम है कि जिस बातको हम छिपाना चाहते …, वह अपने आप प्रकाश में आ जाती है। दासी को इस …ात का पता लगते ही वह रानी के पास जा पहुँची और …मग्र वस्तुस्थिति कह सुनाई। कवि की भावना दूषित प्रतीत …ई; अतः उसे महल तथा नौकरी से भी हटा दिया गया। …स प्रकार हटाने के तीसरे ही दिन वह कवि सचमुच अन्धा …ो गया। इसका कारण क्या है? कर्मवाद का कथन है कि उसने स्वयं स्वेच्छा से ही अन्धता अपनाई थी। उसकी स्वकीय इच्छाने ही उसे अन्धा बना दिया था। फिर भी जब अन्धता आ जाती है, तब मानव चीत्कार कर उठता है।

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयूरी आसन

उमेश योगदर्शन ग्रंथ से

मयूर आसन की विधि में बताये अनुसार के पश्चात् उसी अवस्था में पद्मासन लगा लें। पद् लगाते समय शरीर के डावांडोल होकर गिर ज सम्भावना है। परन्तु जिनकी कलाइयों में अधिक शक्ति और जो शरीर के समग्र अंग-प्रत्यंगों पर नियन्त्रण र करने में समर्थ होंगे; वही लोग इस आसन का भले साधनकर समुचित लाभ उठा सकते हैं। पद्मासन की में ही शिरको और पैरों को ऊपर उठाने का प्रयास करें समय आंखों को अच्छी तरह खोलकर रखें। इस आ यथोचित साधन के पश्चात् जमीन में उतरते समय पैरों को सीधा करके सिकोड़ लें और फिर बैठ जायें।

समय

इस आसन का समय वही है, जो मयूरासन का है

लाभ—मयूरासन के सभी लाभ इस आसन से प्रा हैं। इसके अतिरिक्त इस आसन के अभ्यास से पैरों के मजबूत होते हैं। कमर की नस-नाड़ियां सशक्त हो गुदाद्वार के संकोच-विकास की शिथिलता दूर हो अर्थात् वह शक्तिवान् बनता है। अण्डकोष की बीमारी लिये यह आसन अतीव लाभदायक समझा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी देर चुप बैठिए

लेखक
शिवनारायण सक्सेना
एम्. ए. विद्यावाचस्पति

आपके दैनिक जीवन में ऐसे कितने ही आदमी आते जाते होंगे जो जरा देर को भी चुप बैठना अपना बहुत बड़ा अपमान समझते होंगे। ऐसे व्यक्ति व्यर्थ में कुछ न कुछ कहना अपना उद्देश्य समझते हैं कोई सुने या न सुने इन्हें अपनी बात कहने से मतलब। ये बातूनी लोग अपना समय भी खराब करते हैं और दूसरे को भी बातों में लगाए रहते है। अधिक बोलने वालों के पास उस तरह की कोई भी सामग्री नहीं होती, इधर उधर की बुराइयों, गाली-गलौज तथा गप शप को ही अपने प्रवचन का विषय समझ लेते हैं।

इन व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करते हुये पं. नेहरू ने कलकत्ता के एक भाषण में कहा था 'बकवास करते रहने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई मनीषी नहीं हो जाता। आजकल हर जगह लोग [illegible] में भी शामिल हूँ भारी बकवास करते रहते हैं। चिन्तन [illegible] प्रक्रिया है, यह वाद विवाद की प्रक्रिया नहीं है।"

अधिक बकवास करने वाले को उचित और अनुचित [illegible] ध्यान नहीं रहता और सुनने वाले को आघात करने वा[illegible] बात भी निकल जाती है ऐसे समय बड़ी आपत्ति का साम[illegible] करना पड़ सकता है। कभी कभी लड़ाई झगड़े तक का न[illegible] आ जाता है। वेद मूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य[illegible] ने कहा है 'कड़वी बात जहर से भी बुरी होती है यदि [illegible] की वाणी मधुर नहीं है तो जीवन में कटुता बढ़ती ही च[illegible] जायगी।'

ऐसा कहा जाता है कि तीर का घाव तो धीरे २ औ[illegible] धियों के प्रयोग से भर जाता है पर वाणी का घाव एक ऐ[illegible] घाव होता है जो जीवन भर हरा रहता है। इस तरह के घा[illegible] जो लोग करते हैं, वे न तो समाज में अच्छा स्थान ही प्र[illegible] कर पाते हैं, वरन् कभी कभी तो यह देखा जाता है कि लो[illegible] उनसे बात तक करने में मुँह छिपाते हैं, इस सम्बन्ध में हि[illegible] साहित्य सेवी पं. बालकृष्ण भट्ट के कथन पर भी विच[illegible] करना आवश्यक जान पड़ता है:—

'नुकसान भी आदमी कडुई या बदजवानी से इतना उठा[illegible] है कि सब उमदा सिफतों के होते भी लोग कटु भाषा [illegible] बद जवान के पास जाते हिचकते हैं, कटहा कुत्ता-सा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबों से बरकाया जाता है। जबान को समस्त सभ्यता और शाइस्तगी का साराँश कहना अनुचित नहीं है। अब तक जो कुछ तरक्की संसार में हुई है इसका द्वार जबान ही है। इन्सान और हैवान में यही अन्तर है कि जानवर हम लोगों की तरह अपने ख्याल जबान से कह कर नहीं अदा कर सकते, नहीं तो और सब इन्द्रियों के लालन पालन में, आहार-निद्रा-भय आदि के द्वारा पशु और मनुष्य की समता होने में कौन सा अन्तर बच रहा?'

ऐसी वाणी जो अग्नि के दाह से भी अधिक कष्ट देने वाली हो, बोलने से क्या लाभ है? मनुष्य का विकास और पतन, उन्नति और अवनति, अच्छाई और बुराई, निन्दा और प्रशंसा वाणी पर ही निर्भर रहती है। व्यर्थ की बातें करने से तो चुप रहना ही अच्छा होता है। एक जैन सन्त का विचार है कि बोलना यदि चान्दी है तो मौन सोना है। फिर क्यों न स्वर्ण प्राप्त कर के धनी हो जावे। यह ऐसा स्वर्ण है जिस पर 'स्वर्ण नियंत्रण' का कानून भी कारगर नहीं हो सकता। ऐसे आभूषण से अपने को अलंकृत करने की राय भर्तृहरि जी ने दी है—

'मनुष्य द्वारा धारित एक मात्र सुसंस्कृत वाणी ही उसको अलंकृत कर सकती है। अन्य भूषण नष्ट होते रहते हैं लेकिन वाणी का भूषण सच्चा भूषण है जो कभी नष्ट नहीं होता।"

वास्तविकता तो यह है कि छोटे मोटे लड़ाई झगड़ों की कौन कहे महाभारत जैसे युद्ध के अन्तराल तक में वाणी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्टता का कारण स्पष्ट दिखाई पड़ता है। किसीको मिठाई न खिला सके तो कम से कम मीठी बात तो करे, मीठी बात से मिठाई खाने से भी अधिक सुख मिलता है। यह एक ऐसा वशीकरण मंत्र है जिसके प्रभाव से शत्रु मित्र बन जाते हैं, निन्दक-प्रशंसक का रूप धारण कर लेते हैं फिर क्यों न मधुर भाषी बनने का अभ्यास करें। इसके लिये बोलने से पूर्व विचार कर लें। सन्त कबीर ने तो बोली को मूल्यवान बताया है जिससे बोलनेवाले के हृदय को ही शीतलता प्राप्त नहीं होती वरन् सुननेवाला भी अमृतवाणी को सुन धन्य हो जाता है। अतः उनके शब्दों को सुनिये:—

बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिये तराजू तौलिके, तब मुख बाहर आनि॥

* * * *

मधुर बचन है औषधि, कटुक बचन है तीर।
स्रवत द्वार है संचरै, घालै सकल सरीर॥

कहने का तात्पर्य यह है कि कुटिल वचनों से पूरा शरीर दुख पाता है। मधुर वचन तो एक ऐसी रामबाण औषधि के समान है जिससे भयंकर मानसिक रोगी भी आराम पा जाता है। शारीरिक रोगों में भी कभी कभी दवा से अधिक वाणी का असर देखा जाता है। यदि कोई चिकित्सक रोगी से यह कहदे कि "आपका रोग असाध्य है, बचना बड़ा कठिन है।" तो आप निश्चित समझिये कि उसका रोग साधारण होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुये भी अब असाधारण होता जा रहा है और वह दिन दूर नहीं जब व ह मौत के मुख में चला जावेगा।

मुझे आश्चर्य तो तब होता है कि कितने आदमी अपने जीवन में सैकड़ों मन मिठाई, शक्कर, शहद तथा मीठे पदार्थ तथा सेरों बरफ खाजाते हैं पर वाणी में न मिठास ही, और न शीतलता ही आती है। मीठो बातों से ही तो पराये अपने और कड़वी बातों से अपनी सन्तान, पत्नी, माता, और बहिन तक बात नहीं पूछती।

गन्दी बातों का सामनेवाले पक्ष पर ही बुरा प्रभाव पड़ता हो ऐसी बात नहीं अपनी मानसिक शक्ति का कितना ह्रास होता है इस का भी कभी अनुमान लगाया है। उतने गपशप के समय में अपने विकास के आप अनेक काम कर सकते हैं। बोलने से क्षय होनेवाली मानसिक शक्ति का सदुपयोग अन्य स्थान पर किया जा सकता है। ऐसी बातों से वातावरण भी कलुषित होता है, सुननेवाले बच्चों के स्वभाव बिगड़ने लगते हैं। फिर ऐसी भयंकर त्रुटियां हम क्यों करते हैं? इसका एक ही उत्तर हो सकता है कि समय की अधिकता या बुरा स्वभाव। महिलाएँ भी खाली समय में आसपास रहने वाली स्त्रियों की कहानी लेकर बैठ जाती हैं और बुराइयों का पिटारा खोल देती हैं। यह कितना बुरा होता है। हाँ! यह बात अवश्य है कि खाली दिमाग शैतान का अड्डा होता है। इससे बचने के लिये कार्यों में जुटे रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक आत्म निरीक्षण करने से भी बात करने के ढंग में सुधार हो सकता है। भगवान् कृष्णने तो गीता में इसे वाणी का तप बताया है:—

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितंचयत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मय तप उच्चते॥
गीता १७।१५

अर्थात्—"दूसरों को उद्विग्न न करनेवाले सत्य प्रिय और हित वाक्य को कहना और आत्मा को ऊँचा उठानेवाले ग्रन्थों का स्वाध्याय करना इसको वाणी का तप कहते हैं"

अच्छा मित्रो! है न वाणी का संयम एक अच्छी चीज हमारी योग्यता इसी में है कि हम थोड़ा और सारयुक्त बोलकर अपना काम चलावें और यह ध्यान रखें कि जैसे कोयल मीठी बात कहकर सबके मनको आकर्षित कर लेती है वैसे हम भी मधुर भाषी बनकर लोगों के प्रिय बन सकते हैं। अतः ऋग्वेद के उपदेश "न दुरुक्ताय स्पृहयेत्" (अपशब्द बोलने की प्रवृत्ति से बचना चाहिये) पर चलकर स्वयं सुखी हों और दूसरों को भो शान्तिमय जीवन व्यतीत करने का अवसर प्रदान करें।

* मननीय विचार *

हास्य वह यंन्त्राश है जिसके अभाव में जीवन रूपी यन्त्र बिगड़ जाता है। —स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

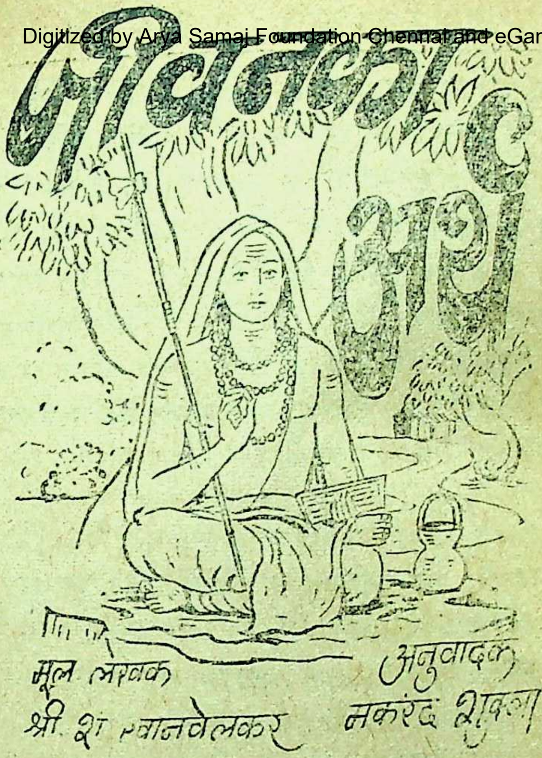

कस्त्वं कोऽहं कुत आयात: का मे जननी को मे तात: ।
इति परिभावय सर्वमसारे विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारम् ॥

श्री. शंकराचार्य

मानव जीवन में मनुष्य को विविध दुःखों को सहना पड़ता है । दारुण निराशा, तीव्र मनस्ताप, निर्भत्सनाके विकट प्रसंग, आशाओंका होम आदि कारणोंसे कई लोगोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन असार, दुखमय एवं निराशामय दिखाई देता। इसीलिये वे प्रपंचकी नश्वरताका एवं शोकका रोना चालू देते हैं। धनवान हो या गरीब, बूढ़ा हो या जवान, बुद्धि हो या मूर्ख, नारी हो या नर, अधिकारी हो या सेवक, व्यक्तिको नियतिके निर्मम हंटरोंके कोड़े हमेशा सहने प हैं। असहाय और निर्बल, वे लोग फिर किसी भी त सहारा ढूंढ़नेका प्रयास करते हैं, भरसक कोशिश करते उस सहारेसे वे दया, करुणा, वात्सल्य, प्रेम एवं इष्ट काम पूर्ति आदिकी याचना करते हैं।

सुशिक्षित मानव जब इस प्रकारकी परिस्थितिके भँवर फस जाता है, या कहिये कि कोई जिज्ञासु जब उस जिज्ञासापूर्तिके लिये अपने चारों ओर पसरे विश्वकी नजर दौड़ाता है, तब उसके सामने कई प्रश्न उपस्थित जाते हैं। उन प्रश्नोंका सही हल ढूंढ़नेकी वह भरसक कोशि करता है। मौतके समान भीषण और दारुण प्रसंग देखनेप लाखोंकी जायदाद कुछ ही क्षणोंमें स्वाहा हो जानेके कार कोपिनके लिये भी यदि कोई वस्त्र न बचे तब, या ज तंदुरूस्त और बलशाली मानव रोग से जर्जर होनेप मनुष्य अपने इर्दगिर्द पसरे विश्वका अपने निजी संबंध विचार करने लगता है।

एकान्तमें, किसी सुनसान कमरेमें बैठकर या किस विशाल मैदानपर हरियालीमें, लतावृक्ष हवाके साथ आँख मिचौली खेलते समय, किसी वृक्षकी घनी छायाके नीचे बै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर या किसी पर्वतशिखरपर बैठकर, वह विश्वको बड़ी गौरसे देखता है। दुनियाका नजारा देखकर वह विचार करने लगता है। "इस विश्व और मेरा कुछ संबंध है क्या? मेरा शरीर आज इस स्थानपर बैठा है। उस शरीरको देखने से मुझे क्या दिखाई देता है? इस शरीरको मैंने सुन्दर और कीमती वस्त्रोंसे सुशोभित किया है। रोज सुबह मैं बड़ी फिकरसे और बिना कोई नागा किये इस शरीरकी शुद्धि करता हूँ। तरह तरह के सुगंधि एवम् सुवासिक तेल, इत्र, साबुन आदिका उपयोग इस शरीरके लिये करता हूँ। बारबार इस रूपको मैं दर्पणमें निहारा करता हूँ और मन ही मन प्रसन्न होता रहता हूँ। सिर या दाढ़ीमें यदि एक भी सफेद बाल दिखाई दिया तो मेरा मन विचलित हो उठता है। मैं बेचैन हो जाता हूँ। कभी कदा आंखमें कंकड़ जानेके कारण या पैरमें कांटा चुभनेके कारण मुझे पीड़ा होने लगती है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध आदि पंच विषयों का भोग इस शरीरको प्राप्त करने के लिये हो सके इतनी पराकाष्ठा करता हूं। इतना ही नहीं अपितु दिनके चौबीस घंटे में इस शरीरको हो सके उतना सुख पहुंचाने की इच्छा से, उसे सुखी बनाने की धुन में घुला जाता हूं। दिनमें जब मैं शेखचिल्ली जैसे मनसूबे किया करता हूं और रातको, जिस समय मेरा कुछ भी अधिकार नहीं चलता, उस समय भी मैं जो जो सुहाने सपने देखा करता हूं, वे सारेके सारे इसी शरीर सबंधी विचारों से भरे रहते हैं। इतना सब होनेके बावजूद भी मैं इस शरीर के किसी भी चोचले की पूर्ण रूपेण पूर्ति नहीं कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिशामें यदि मैं कोशिश भी करूं तो अल्प काल अवधि में ही मेरी तसल्ली हो जाती है। किन्तु थोड़े स के बीतते ही इच्छा की अग्नि फिरसे प्रज्वलित हो उठती और इंद्रियोंके तृप्ति के लिये वह लगातार ईंधन मांगते र है। यदि उसे उसको खुराक न मिली तो उसीकी चिन् वह मग्न रहता है। इस प्रकार फिरसे तीव्र इच्छा उत्पन्न हो है। यदि उसकी इच्छापूर्ति नहीं हुई तो फिर उसे अत् दुःख होता है। अन्तमें उसकी क्रोध-ज्वाला भड़क उ है। देहबुद्धि, शरीर के हरपल नये नये चोचले पूरे क की कोशिश, मनकी इच्छापूर्ति की पराकाष्ठा और अ कामनाओंकी पूर्ति न होनेके कारण मनमें उत्पन्न होनेवा क्षोभ, ये सब मुझे परेशान करते हैं। फिर इन्हीं पचड़ों मेरा मन मग्न रहता है। इसीके ही कारण इस शरीर आशाओंकी पूर्ति करने की मेरी क्षमता और शक्ति भी सम होने लगती है।

"किन्तु इस शरीरकी शक्ति समाप्त होनेपर भी उसे ह समय नयी खुशी मिले, नये आनंद की अनुभूति मिले लिये वह छटपटाता है। बुढ़ापे के कारण हिल नेवाली ग और बिन दांतोंका मुंह उठाये बड़ी ललचाई आंखोंसे विष की ओर टकटकी बांधे देखनेवाली ऐसी मनहूस श देखकर तो यह मेरा कयास ताजा हो उठता है। शरीर शक्ति जब घटने लगती है, जिस समय भुजाओंका बल होने लगता है, इसी प्रकार इन्द्रियों की कार्यक्षमता नष्ट हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी मनुष्य की वासनाओं को किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचती। वह जैसी की तैसी बनी रहती है। वह मनुष्य के साथ वृद्ध नहीं होती। किसी भी वृक्ष की टहनियों का रस जब उसकी पत्तियों की शिराओं में पहुंच नहीं पाता, तब पत्तियां पीली हो जाती हैं, पक जाती हैं और एक दिन एक मामूली हवाके झोंके से वह टहनी से पृथक होकर भूमि पर झड़ जाती है। किन्तु इस मानवीय शरीर में मौजूद रहनेवाले रसका एक एक कतरा भी यदि सूख जाये तो भी इस वासनारूपी पेड़पर उसका कतई असर नहीं होता है। इस वासनारूपी पेड़ को हरहमेश नयी नयी पत्तियां आया करती हैं। वह पेड़ हमेशा हराभरा रहता है।

"यह वासना और जिस शरीर में वह रहती है वह शरीर, उसी प्रकार इस शरीरको "मैं" माननेवाला "मैं", यह "अहं" का स्फुरण, इस शरीर में निवास करनेवाले चैतन्यका विलास, मुझको कहां से प्राप्त हुये हैं? यह शरीर मेरा है क्या? यदि मैं ही इसका निर्माता था तो खूबसूरत नाक, पानीदार आंखें, केतकी समान कांति, वज्र समान स्नायु, घुंघराले और मुलायम बाल, लंबी लंबी उंगलियां, रूआबदार ऊंचाई तथा प्रमाणबद्धता आदि गुण मैं अपने शरीर में क्यों न निर्माण कर सका? यह सफेद बाल, कृष काया, छरहरा बदन, मिचमिची आंखें, और चेहरेपर का पीलापन ये सब मैं कहांसे लाया हूँ? मेरे मां बाप के पास से ही ना? मेरे जन्मसे पहले मैं सूक्ष्म रूपसे उनके शरीर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौजूद था। उससे भी पहले उनके पूर्वजों के खून में था और उससे भी पहले मेरा इस विश्व में कोई अ था क्या? यह काया बेकार हो जानेपर, उसके अं प्राणज्योति बुझनेपर, इस शरीर में भासमान होनेवाला यह "अहं" का तत्व, किधर जायेगा?

"इस जगत में जो चैतन्यता है और उस चैतन्य प्रकट तथा सुप्त विलास हमें दृष्टिगोचर होता है, उस कुछ अंश मुझमें मौजूद है क्या? यदि वह मौजूद उसका और मेरा क्या संबंध है? यदि उस संबंध जानकारी मुझको होनेपर उसके परे और कुछ सं करने लायक रहता है क्या? उसका भी ज्ञान प्राप्त मेरे अस्तित्वकी जानकारी, और ज्ञान हो जानेपर, मैं सीबतें, मृत्यु आदि बातोंसे बच सकूँगा क्या?

सागरमें जिस प्रकार चंचल लहरें विहार करती रहती उसी प्रकार मेरे "अहं" के पृष्ठभागपर जो जो विकार, वि और वृत्तियों की अनन्त लहरें, तरंगें उठा करती हैं, उन्हीं ऊपर से मेरी जीवन नैय्या आगे बढ़ रही है। किन्तु पृष्ठभाग के नीचे यदि हम गोता लगायें तो मौलिक वि हमें प्राप्त हो सकेंगे क्या? मुझको विचारमोती प्राप्त क्या?"

इस प्रकार एक नहीं बल्कि हजारों विचार उस दु मानव के दिमाग में मँडराते रहेंगे और उसके चहुंओर प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्व के पसारे की ओर वह और भी अचरज के साथ देखने लगेगा।

अंतमें खूब दिमागपच्ची करनेपर वह समझ सकेगा या उसे ज्ञात होगा की इस जगतमें हरपल अखंड उथलपथल मची रहती है। खुर्दबीन के शीशेमें भी न दिखाई देनेवाले असंख्य जीवजंतुओं से लेकर तो हाथी जैसे अजस्र प्राणियों से यह सृष्टि अनेक रूपोंसे सुशोभित है, सजी है, अलंकृत है। प्राणी, वनस्पती, जड़ पदार्थ, जल, आकाश आदि कई तत्वों से यह जगत भूषित है। वह प्रकट एवं अप्रकट चैतन्य का एक सुन्दर विलास है, मनोविनोद है। चित्‌के अस्तित्व को चैतन्य कहते हैं। चित् यह सत् है। मेरा इससे यही मतलब है कि चैतन्यका अस्तित्व है। सत् का अर्थ है रहना। इसीलिये चैतन्य रहता है। फिर वह चैतन्य प्रकट हो या अप्रकट। अति विशाल, अनाकलनीय, दिक् और काल को भी अनाकलनीय, अविच्छिन्न, निराकार, अनादि अनंत ऐसा यह चित्, अनन्त रूपों से सजा है। उसे इस विलास की जानकारी है या नहीं, कहा नहीं जा सकता। किन्तु हरएक प्राणी इसी चैतन्य से अपनेको उपयुक्त ऐसी जीवनसामग्री लिया करता है।

मिट्टी, हवा और जलसे ही अनाज उत्पन्न होता है। कांटों से भरा हुआ लेकिन अपनी मनमोहक महक से मनको प्रसन्न करनेवाला गुलाब का फूल भी इसी मिट्टी में पैदा होता है बरगद जैसा विशालकाय वृक्ष, राई के बराबर फूल, बेल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैवाल और घास ये सभी मिट्टीमें ही उत्पन्न होते हैं। मिट्टी में धतूरा, अफीम, चरस, गांजा जैसी जहरीले नशीली चीजें पैदा होती हैं। रत्न, सोना, तांबा, लोहा खनिज पदार्थ भी तो इसी मिट्टी में पाये जाते हैं। घास के ही कारण गाय और भैंस दूध देती हैं। दूध से पौष्टिक पदार्थ तैयार किये जाते हैं। इसीमें से साँप का भी बनता है। सूखी लकड़ी से दीमक चैतन्य निकाल है, तो कागज में से दीमक चैतन्य ढूंढ़ निकालती है। से शहद ढूंढ़कर उसे अपने पोलेमें इकट्ठा करनेवाली मक्खियाँ हमारे कुतूहल का विषय बन जाती हैं, कि चीज से चित् तत्वका विविध प्राणियोंने जो आविष्कार है उसे बिना सूक्ष्म निरीक्षण किये हम देख नहीं स फूल, पत्तियाँ, वृक्ष, लता, विविध प्राणी, आकाश में दि देनेवाले मनोहर रंग, आकाश का मूल स्वरूप, स नदियां, तालाब, नहरें, झरनें, कुअें और बादलों के अंद पानीका स्वरूप, हरियाली से आच्छादित मैदान, भोर पत्थर, आँखों को चकाचौंध करनेवाली घाटियां, चुम्बी पर्वत राशियां और उनकी चोटियां, आकाशमें करनेवाले, विविध रंगों के, आकारों के तथा आदतों के उनकी विविध ध्वनि, जमीन में अपने आपको गाड़े रखने प्राणी, पंचमहाभूतों पर प्रभुत्व प्रस्थापित कर, अणुमें बसनेवाली अणुशक्ति को अपनी दासी बनाकर उसे भलाईके लिये काममें लानेवाला विश्वका सम्राट मानव सारे उसी चैतन्य के बालक हैं, उसकी ही एक लीला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चैतन्य का सिर्फ अस्तित्व है। उसे ना तो कोई जन्म है ना मृत्यु। आकार, गुण आदियों से वह अबाधित है। सागरकी लहरें सागरसे अलहदा नहीं की जातीं, गुलाब के फूलों से उनका रंग, सुगंध तथा महक अलग नहीं किये जा सकते हैं। उसी प्रकार चैतन्य वस्तुसे अलग नहीं किया जा सकता। फिर भी वस्तु चैतन्य नहीं, यह तो हमें मानना ही होगा। तार में बिजली प्रवाहित होती है, फिर भी तार बिजली नहीं हो सकता, उसी तरह विश्व में चैतन्य मौजूद है, किन्तु विश्व चैतन्य नहीं बन सकता। इसका अनुभव मनसे नहीं लिया जा सकता। सिर्फ बुद्धिमानों को ही उसके अस्तित्व की झलक दिखाई देती है। इसका सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है उन लोगों को जो योगी, उपासक, भक्त, अध्यात्म की राह में काफी आगे बढ़े हुए साधक और सन्त हैं।

यही है वह चिद्विलासवाद! श्री. ज्ञानदेव महाराजने अपने अनुभव से इसका रसभरा वर्णन "अमृतानुभव" में कितनी सुन्दर और रोचक रीति से किया है? किन्तु परतत्व के मामले में उनकी वाचा और कलम दोनों निखट्टू सिद्ध हुये हैं।

चिद्विलास! उसे कोई परमेश्वर की लीला कहते हैं। किन्हीं औरों का विचार है कि द्वैतका खयाल आते ही ब्रह्मने धारण किया हुआ प्रकृति-पुरुष का आकार यही है। कोई लोगों का कहना है कि ब्रह्मको जब अकेलापन अखरने लगा तब उसने गर्जना की, "एकोऽहं बहुस्याँ प्रजायेय" और जिस प्रकार एक पेशीय अमीबा अपने खुदके दो टुकड़े कर द्वैत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डुबकी मारता है उसी प्रकार ब्रह्माने खुद होकर द्वैतमें प्र
किया है। शिव और शक्ति का खेल, आदिपुरुष और
शक्ति की लीला, ब्रह्म और मायाका विशाल पसारा, त्रिगु
णात्मक मायाने आदिपुरुष से शक्ति उधार लेकर बसाया
जगतका पसारा, आदि विविध कल्पनायें, इस स्थूल
सूक्ष्म जगत् संबंधी, कवियोंने तथा पंडितोंने किया है

किन्तु मानव शरीर में चमकनेवाला यह चैतन्य, उ
का आत्मतत्व का आवरण, उसपर का "अहं" स्फुरण
कवच, और उसपर की देहमंजुषा, यह सब उस "चिद्"
ही विलास है। और जिनको देहभावना, वासना, सं
आपत्तियां, मृत्युभय आदि दुःखों के तथा उद्वेगों के का
का निरसन करके अपनी वृत्ति को चिन्मय करना हो,
तो इस चिद्विलास का ज्ञान प्राप्त करना अत्यावश्यक
अनिवार्य है। वह भी स्थूल शब्दों से नहीं, वाणी से ही
अपितु परा, पश्यन्ति, मध्यमा, और वैखरी इन चारों भाषा
के परे, आत्मतत्व का जो मनोरम विलास इस शरीर में,
अंदरकी ओर कहां तो भी चल रहा है, उसका पीछा क
हुये, वह आत्मतत्व और विश्वांतर्गत वस्तुजाति के मूल
रहनेवाला चैतन्य इनकी अपने बुद्धि से मिलाप करके साक्षा
अनुभव लेकर। साक्षात् अनुभव लेनेके लिये देहबुद्धि
जीतना पड़ता है, वासनाओं का क्षय करना पड़ता है,
करना पड़ता है और योग्य साधन करना पड़ता है।
मतलब यही है कि मन, चित्, बुद्धि, आत्मतत्व और चैत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनका मिलाप करके आता है, संयोग करके आता है।

इसी मिलापको या कहिये इसी संयोगको योग कहते है। जिस समय चित्-चैतन्य की एकाग्रता होकर सिर्फ शुद्ध आत्मतत्व का भान रहता है, और यह शुद्ध आत्मतत्व आदि चैतन्यके साथमें रहनेका अधिकार प्राप्त करता है, उसी समय योग सधता है। केवल देहबुद्धि और वासनाओं के जालमें फँसकर, पशुसमान जीवन बिताना, शरीरका नाश होनेपर मिट्टीमें मिल जाना, यह जीवन का अर्थ नहीं है। किन्तु इस प्रकारका योग साधना यही मानव जीवन का सही-सच्चा अर्थ है।

योग शब्द का मूल अर्थ, जोड़ना ऐसा है। (युज् १-साथ-३.५. जोड़ना). जिस समय चित्को एकाग्रता-स्थिरता-प्राप्त होती है और वह चित् अविनाशी आत्मस्वरूप की जगह स्थिर होता है तब यह योग सधता है, ऐसा कोई समझते हैं। कोई लोग अणुमय मनको विश्वमय मनसे जोड़ने की क्रिया को ही योग कहते हैं।

भगवान् पतंजलिने कहा है कि चित्तवृत्तियोंका निरोध होनेसे मन आप ही आप आत्मस्वरूपकी जगह स्थिर होते रहनेके कारण चित्तवृत्तिको स्थिर करना ही योग है, अपने शरीरके मूलाधारमें बसनेवाली कुँडलिनी शक्तिरूपी परा प्रकृति जिस समय सहस्राधारस्थित शिवसे तन्मय होती है उसी समय योग सधता है, ऐसा कोई विद्वानोंका कहना है. आत्मा और परमात्माका मिलन, चित्त और चैतन्यकी एकतानता, देव और भक्त इनमें अद्वैत साधना या शरीरकी नन्हीसी शक्तिका विश्वशक्तिसे तादात्म्य प्रस्थापित होना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार योगके अनेक अर्थ विचारवतोंने निकाले बताये हैं, जिसे जैसा अनुभव प्राप्त हुआ वैसा उसने उस अर्थ लगाया है।'

योगका स्वरूप क्या है, यह योग किस तरह साध चाहिये, और उस योगकी साधना करते समय साधक क्या क्या अनुभव प्राप्त होते हैं, उसके अंदर कौनसी श जागृत होती है, उसे कौनसी गति प्राप्त होती है, योग ध्येय क्या है? इन सवालोंका जवाब ढूंढ़नेके लिये टटोलनेकी, ढूंढ़नेकी जरूरत नहीं, बल्कि अपने चित्त "आत्मन्येव वशं नयेत्" करनेपर यह योग सधता किंतु आत्मस्वरूपकी जगह चित्तको स्थिर करनेवाला यो किस प्रकार साधना चाहिये? यह देखना तो उद्बोध होगा ही, साथ ही वह दिलचस्प और मनको रिझानेवा होगा।

सफेद मल
बी-टेक्स
गजकर्ण, खाज, खरुज, नायटा, इसब,
तोंडावरील मुरूम, हातापायांवर पडणारे
चीरे आणि जनावरांच्या जखमेवर जालीम
बी-टेक्स मुंबई नं. ३.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य और असत्य का ज्ञान ही तत्त्वज्ञान है। इसका अभाव दुःखों का मूल कारण है। प्रायः हम सत्य को असत्य एवं असत्य को सत्य मान दुःख के भागी स्वयं बनते हैं। अतः दुखः का निदान 'सत्यासत्य-विवेक,' में निहित है। असत्य वह है जो आज है, कल नहीं। सत्य वह, है जिसका कभी नाश न हो। गीता कहती है—

"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः" अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
असत् वस्तु का तो अस्तित्व नहीं है और सत्य का
अभाव नहीं।

उक्त सिद्धान्त के अनुसार आत्मा सत्य है और शरीर असत्य। परन्तु अज्ञानता के कारण हम ठीक इसके विपरीत सोचते हैं। हम शरीर को ही सत्य एवं आत्मा को असत्य मान लिये हैं। यह मौलिक सत्य नहीं है। यदि शरीर सत्य रहता तो वह सदा एक समान रहता। आज की भाँति ही वह कल भी रहता। परंतु ऐसा हम नहीं देखते। आज जैसा है, वैसा कल नहीं। यह शरीर तो पल-पल में बदलता रहता है। आज स्वस्थ हैं, कल अस्वस्थ। आज बालक है, कल जवान, आज प्रौढ़, तो कल वृद्ध। यह परिवर्तनशील है। उसमें नित्य परिवर्तन होता है। आधुनिक शास्त्रज्ञों का तो कहना है कि सात साल में शरीर बिलकुल बदल जाता है और खून का पुराना एक बूंद भी शेष नहीं रहता। हमारे पूर्वज मानते थे कि बारह वर्ष में पुराना शरीर मर जाता है और इसलिये प्रायश्चित, तपश्चर्या, अध्ययन आदि का भी समय बारह-बारह वर्ष ही रखते थे। तो क्या यही प्रतिक्षण बदलनेवाला शरीर सत्य है? नित्य परिवर्तनशील शरीर भला कहीं सत्य माना जा सकता है? उसे सत्य मानना मिथ्या है, भ्रम है। शरीर बिलकुल असत्य है।

आत्मा ठहरा स्वभावतः सत्य। यह अजर, अमर, अविनाशी है। यह आत्मा किसी काल में न जन्मता है और न मरता है। शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गीता-२-२०) में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं—

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं
भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शास्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

अर्थात् यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है अथवा न यह आत्मा होकर फिर होनेवाला है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, शरीर के नाश होनेपर भी यह नाश नहीं होता है।

अनश्वर आत्मा कभी मरता नहीं। जो आत्मा एक शरीर में है, वही दूसरे में है, जो पण्डित में, वही चाण्डाल में; जो छोटे में, वही बड़े में; जो पशु में वही पक्षी में। घट घट में वही आत्मा प्रकाशित हो रहा है।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपोवभूव।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपोवहिश्च॥
(कठ. २।२।९)

नाम-रूप के ये भेद अस्थायी हैं। भीतर तो सर्वत्र एक ही आत्मा लहरा रहा है।

शरीर और आत्मा एक दूसरे से अत्यन्त भिन्न हैं। क्योंकि शरीर जड़ और मिथ्या है तथा आत्मा चेतन और सत्य है। इसीसे न आत्मा शरीर का सम्बन्धी है और न शरीर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा का संबंधी। समस्त भाव विकारों से नित्यमुक्त निर्लिप्त आत्मा न कभी उत्पन्न ही होता है और न कभी विनष्ट ही होता है। वह सदा सर्वदा एक रूप से रहता है। शरीर तो आत्मा का आवरण मात्र है। आवरण का जीर्ण होना स्वाभाविक है। शरीर भी आवरण की भांति जीर्ण होता है और अन्त में उसका नाश हो जाता है। कोई भी उसे मृत्यु से बचा नहीं सकता।

तब इस शरीर का इतना मोह क्यों? दिन-रात हम देह की सेवा में लगे रहते हैं। सतत यही विचार कि मेरा यह शरीर कितना मोटा-ताजा हुआ या कितना दुबला हो गया। जरा भी कहीं दर्द का अनुभव हुआ कि फौरन हकीम, वैद्य और डाक्टर का आश्रय लिया। शरीर को कहीं ठंड न लग जाय इसका हम ध्यान सदा शीतऋतु में रखा करते हैं महिनों तक तो बहुत 'फ्रेंच-बाथ' से ही संतोष कर लिया करते हैं। गर्मी में कहीं लू न लग जाय—इसके लिये 'खस' की टट्टी एवं वायुनियंत्रित (एयरकंडीशन्ड) कमरों की व्यवस्था करनी पड़ती है। बाल कहीं सफेद दिखाई दिये तो लगे 'लोमा' की शीशियों को सिर पर उण्डेलने। वाह रे मोह! धन्य हो तुम। तुम्हारे ही कारण कितने डाक्टर, वैद्य, पूँजीपति आदि की जीविका चलती है। श्री कृष्णदत्त भट्टजीने ठीक ही लिखा है:—

"देह का मोह हमें न हो तो—भूखों मर जायं ये हलवाई जो चमचम और गुलाबजामुन, रसगुल्ला और मोहनभोग के बल पर अपनी तिजोरी भरते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवाला निकल जाय उन कंपनियों का जो रात दिन पफ और पाउडर, क्रीम और पोमेड, शृंगार और फैशन के नाम पर अपना 'बैंक-बैलेंस' बढ़ाती रहती हैं।

तबाह हो जायं ये डाक्टर और वैद्य, हकीम और जर्राह, जिनकी फीस का दरोमदार इस शरीर की ही व्याधियों पर है।

बन्द पड़ी रहें पैंसलिन और स्ट्रेप्टोमाइसिन की शीशियां, च्यवनप्राश और मकरध्वज के डिब्बे, यदि हम शरीर के मोह के पीछे पागल न हों।"

मोह का जाल इतना व्यापक है कि सोचने पर आश्चय होता है। मोह-जाल को फैलाकर हमने आत्मा को कैदी बना डाला है। उसकी याद तक हमें नहीं होती। आत्मा व्यापक होने के लिये छटपटाता रहता है। परन्तु देहासक्ति के कारण हम आत्मा के पवित्र स्वरूप को भूल बैठे हैं। शरीर सेवा ही जीवन का साध्य बन गया है। इसके सामने संसार में कोई दूसरा आनन्द ही नहीं। देहासक्ति तो ही सारे अनर्थों की जड़ है। मोह का विस्तार देहासक्ति से ही होगया है। नश्वर शरीर के लिये शोक करना व्यर्थ है। जिस शरीर के लिये हम दूसरे का शोषण करते हैं, बेईमानी करते हैं, तरह-तरह के पाप करते हैं वह तो एक दिन धूल में मिलने वाला ही है—

'वह धूल धूसरित हो जायेगा
सोने सा शरीर तेरा'

काल-चक्र के आगे किसी की शक्ति काम नहीं करती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते-देखते यह सबको नाश कर देता है। अर्जुन और रा
जैसे वीर भी इससे बच न सके।

"सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बलीते।
'हम' 'हम' करि धन धाम सँवारे अंत चले उठि रीते॥
(विनयपत्रिका)

इस असार संसार से खाली हाथ ही प्रयाण करना
सिकन्दर जैसे पराक्रमी राजा का भी साथ धन, जन
न ले सका। कहावत है "सिकन्दर जब चला दुनिया से दो
हाथ खाली थे।" जगत् नश्वर है। फिर इसके लिये शोक
क्यों? गीता (२।२७) में भगवान् कहते हैं—

"जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥

अर्थात् 'जन्म लेनेवाले की निश्चित मृत्यु और मरनेवा
का निश्चित जन्म होना ध्रुवसत्य है। अतः तू (अर्जुन) बि
उपायवाले विषय में शोक करने को योग्य नहीं।"

यह शरीर तो जीर्ण-वस्त्र के समान है। पुराने फट जा
हैं इसी से तो नये धारण किये जाते हैं। जिस प्रकार वस्त्र
जीर्ण होने पर मनुष्य नवीन वस्त्र धारण करता है उसी प्रका
शरीर के जीर्ण होने पर आत्मा नवीन शरीर धारण करता है
यदि एक ही शरीर आत्मा से सदा के लिये चिपका रहता
तो आत्मा की बुरी गत होती। सारा विकास ही रुक जाता।
अतः देह का नाश सोचनीय नहीं हो सकता। जन्म लेना,
रहना, बढ़ना, मरना आदि विकार शरीर के ही होते हैं, आत्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नहीं। परन्तु भ्रमवश लोग उसे अपने आत्मा को मान लेते हैं।

'जन्मादयस्तु देहस्य विक्रिया नात्मनः क्वचित्।
कलानामिव नैवेन्दोर्मृतिर्ह्यस्य कुहूरिव ॥
(श्रीमद्भा. १०।५४।४७)

अर्थात 'जन्म लेना, रहना, बढ़ना, बदलना, घटना और मरना—ये सारे विकार शरीर के ही होते हैं। आत्मा के नहीं। जैसे कृष्णपक्ष में कलाओं का ही क्षय होता है। चन्द्रमा का नहीं; परन्तु अमावस्या के दिन व्यवहार में लोग चन्द्रमा का ही क्षय हुआ कहते-सुनते हैं; वैसे ही जन्म-मृत्यु आदि सारे विकार शरीर के ही होते हैं, परन्तु लोग उसे भ्रमवश, अपना—अपने आत्मा को मान लेते हैं। विशुद्ध आत्मा जब अपने को शरीररूप मानता है, तब वह बद्धजीव कहलाता है, और जब वह देहाध्यास को छोड़ देता है, तब आत्मा तो वह स्वयं है ही और इस कारण स्वरूप से ही वह जन्म-मरण रहित तथा शुद्ध, बुद्ध और नित्य है।

आत्मा को देह का सङ्ग होने के कारण अपने स्वरूप की विस्मृति हो जाती है तथा संग अनादि काल से होने के कारण उसमें अध्यास बँध जाता है। इस प्रकार देहाध्यास अज्ञान-मूलक है। उसकी निवृत्ति ज्ञान से ही होती है। अष्टावक्र मुनि का कहना है:—

गुणैः संवेष्टितो देहस्तिष्ठत्यायाति याति च।
आत्मा न गन्ता नागन्ता किमेनमनुशोचसि ॥

पंचमहाभूतों का बना हुआ यह देह जन्म लेता है, जीता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। आत्मा न जन्मता है और न मरता है, अतएव उसके लिये खेद क्यों करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा तो सर्वव्यापक है। जो वस्तु सर्वव्यापक है सर्वत्र है। इसलिये मृत-शरीर में भी आत्मा है। प्रश्न उ है कि तब क्यों नहीं उसका प्रकाश दिखलाई देता? इस उत्तर स्पष्ट है कि आत्मा के प्रकाश को ग्रहण करनेव सामग्री—अन्तःकरण वहाँ मौजूद नहीं है। इसी बात बिजली के दृष्टान्त से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। बिजली स्वयं कुछ कार्य नहीं करती परन्तु जब उसका सं किसी विद्युत-चालित यन्त्र से हो जाता है तो उसकी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। जब बिजली के बल्ब में विद्युत का प्रवेश कराया जाता है तो वह प्रकाशित हो जाता बिना बल्ब के विद्युत प्रकाश नजर नहीं आता। ठीक प्रकार आत्मा स्वयं कुछ कार्य नहीं करती परंतु जब इ प्रकाश को ग्रहण करनेवाली सामग्री—अन्तःकरण में प्रवेश कराया जाता है तब आत्मा का प्रकाश वहाँ नजर आ लगता है। अतः सिद्ध है कि आत्मा अजर, अमर, अविनाश सर्वव्यापक है।

दूसरी ओर शरीर विकारग्रस्त, दोषयुक्त, जड़, अचेत अपवित्र, अशुद्ध, अनित्य एवं असत्य है। शरीर के संसर्ग आकर आत्मा भी दोषयुक्त हो जाता है। स्वभावतः आत्म विशुद्ध है। जिस प्रकार आकाश से गिरा हुआ पानी पृथ्वी संसर्ग से दोषयुक्त हो जाता है उसी प्रकार निर्मल आत्मा शरीर के संसर्ग से दूषित हो जाता है। अतएव इस देहाध्यास को छुड़ाने के लिये आत्मस्वरूप को समझना होगा। देहासक्ति प्रेम नहीं है। इसे दूर किये बिना सच्चे प्रेम का उदय नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम कठोर-हृदय और प्रेम-विहीन हो जायं। देह की रक्षा करना स्वधर्माचरण के लिये आवश्यक है। इस शरीर से काम लेना है, इसलिये भोजन देना आवश्यक है। इस प्रकार यदि हम शरीर का उपयोग करें तो क्षुद्र होने पर भी उसे प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

भगवान् गीता के दूसरे अध्याय में ही जीवन के महासिद्धान्त बता देते हैं। ऐसा उन्होंने इसलिये किया कि यदि शुरू में ही जीवन के वे सिद्धान्त आ जायं जिनके आधार पर जीवन का भव्य-भवन खड़ा करना है तो आगे का मार्ग सरल हो जायगा। भगवान् के मुख्य जीवन-सिद्धान्त निम्न हैं:—

(१) आत्मा अखण्ड, अमर और सर्वव्यापक है।
(२) शरीर नाशवान् एवं क्षणभंगुर है।
(३) स्वधर्माचरण साध्य है।

इनमें प्रथम दो ज्ञातव्य हैं तथा तृतीय कर्त्तव्य रूप है। जो मनुष्य उक्त सिद्धान्त के अनुसार आचरण करेगा वह नर से नारायण हो जायगा। मानव जन्म की सार्थकता भी इसी में है। स्वयं भगवान् की वाणी है:—

एषा बुद्धिमतां बुद्धिर्मनीषा च मनीषिणाम्।
यत् सत्यमनृतेनेह मर्त्येनाप्नोति मामृतम्॥
(श्रीमद्भा० ११।२९।२२)

अर्थात् 'विवेकियों के विवेक और चतुरों की चतुराई की पराकाष्ठा इसी में है कि वे इस अविनाशी और असत्य शरीर के द्वारा मुझ अविनाशी एवं सत्य तत्व को प्राप्त कर लें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर हटो ऐ चीनवासियो, हिन्दुस्तान हमारा है
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, भारत देश हमारा है

है संकट आज हिमालयपर, गंगा यमुना की धारा
हर हिन्दु-मुस्लिम सिक्ख और, मन्दिर मस्जिद गुरुद्वा
इतना साहस इतना गुमान, कर रहे आज चीनी ब
मैत्री की लेकर आड़ हमें, धोखा देते सत्यान

हम प्रलय धरा पर ला देंगे नेफा लद्दाख हमारा है।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा भारत देश हमारा है॥

भाई भाई कह गले लगा हमने जिसका सम्मान कि
जग देख रहा कितना अनुपम उसने हमको प्रतिदान दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने पहले तिब्बत लूटा, अब आँख उठाता हिमगिरि पर,
पर टकराना आसान नहीं, वह जरा देखले नजरें भर,
बरदाश्त बहुत करता आया यह अत्याचार तुम्हारा है।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा भारत देश हमारा है॥

जाग उठो भारतवासी, चिंतन करने का समय नहीं
इतना आगे बढ़ जाओ तुम दुश्मन को मौका मिले नहीं
हमें हमारी धरती लेनी, लेनी नहीं पराई है
सिर्फ शान्ति के रक्षाहित हमने तलवार उठाई है
साम्यवाद के पुतलों को अब यह सन्देश हमारा है।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा भारत देश हमारा है॥

मातृभूमि की लाज बचाने, हमको बढ़ते जाना है
आखिर जीत हमारी होगी निश्चय हमने माना है
निशदिन चकमा देने वालों को कुछ मजा चखाना है
आजादी की कीमत हमको किसी मूल्य पर पाना है
हम आँच न आने देंगे इसपर, पग पग पर अंगारा है।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा भारत देश हमारा है॥

कसम तुम्हें राणा प्रताप की, ले नंगी तलवार बढ़ो,
कसम तुम्हें हल्दीघाट की, लेकर नव हुंकार बढ़ो,
कसम तुम्हें लक्ष्मीबाई की, सजकर तीर कमान बढ़ो
कसम तुम्हें भारत माता की दुश्मन पर ललकार बढ़ो
यही हमारा अन्तिम निर्णय, यही हमारा नारा है।
प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, भारत देश हमारा है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—(कहानी)—

वह सामने जो चौराहे पर नीम का पेड़ है, वहां से
हाथ की ओर मुड़नेवाली गली, जिसे आजकल, हम 'वि
गली' कहते हैं ना। उसी विजय गली के सातवें नंबर का
मकान, कभी युवकों का जमघट अपने आप में छिपाये र
था। आज उन बातों को, उस गये गुजरे जमाने को बीते
बरस होगये, पर इनकी हालत में रत्ती भर फरक नहीं आ
ऐसी ही टूटी हालत में यह तब भी था और अब भी
हां...हां तब ये बिजलियां, नल, पक्की सड़कें आदि
थी इस शहर में। वहीं नदी किनारे वाले कुए का
पीते थे सब के सब और थी कच्ची सड़कें, और घरघर
टिमटिमाते दीपक का प्रकाश। लेकिन उन दिनों में इस
में जो गम्भीर बैठकें हुआ करती थीं। तरह तरह के वि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिमय हुआ करते थे....गरम बहसों में युवकों में एक जान आ जाती थी... नया जोश, नया खून कुछ कर गुजरने की ठान लेता था। उसे गांव के बुजुर्ग क्या नवयुवक भी जो तब बच्चे....भूले नहीं हैं और शायद ही उन दिनों की स्मृति को भूलें।

मकान की हालत भी अब जरा कमजोरसी ही है। सामने से तो कुछ नजर नहीं आता है, पर हां, इसी मकान का वह पिछला हिस्सा जहां बैठकें होती थीं, अब कभी का गिर चुका है। इतने लम्बे चौड़े भव्य मकान में, अब मुश्किल से दो तीन कमरे ही रहने योग्य हैं। पहले इसी सहन में पाँच पांच भैंसे बँधी रहती थीं, पर अब तो बहुत दिन होगए, उनमें से एक का भी पता नहीं है।

......और शारदाने तो वर्षों से खाट पकड़ रखी है। पचास वर्ष की आयु में ही मानों उसने जिन्दगी के सारे जल्वे देख डाले हों। अब तो उसकी हालत उसी पथिक की तरह है जो 'अम्पटी पॉकेट' लिए बिना किसी उद्देश्य के मेले में घूम फिर कर थकान का शिकार बन चुका हो। शारदा भी एक ऐसी ही ऊब और निराशा को अपने अन्तर्मन में छिपाए बैठी थी। दो तीन मास होने आए, उसको भयंकर खांसी हो चली थी। सांस लेते तक नहीं बनता था, उससे। कभी कभी जब वह खांसते खांसते बेदम हो जाती है, सत्येंद्र आज फिर सदा की भांति हंसता हंसता आ गया है। आते ही उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारदा को अपने समीप खींच लिया, तभी उसे याद आया वह किवाड़ खुले छोड़ आया है और वह उसे छोड़ फिर अटकाने दौड़ पड़ता।...फिर सत्येन्द्र उसे अपनी भारी कम आंखों से एकटक निहारता रहता, मानो उसने शारदा को आज पहली बार देखा हो और शारदा कह उठती—'टुगुर टुगुर मत देखा करो जो कहीं नजर लग जायगी फिर.......।'

.......और तब सत्येंद्र उसे अपने समीप खींच लेता उसका सारा प्रेम एक साथ उसके सिर, वक्ष, ललाट, होंठ बरस पड़ता और बरसता रहता न मालूम कितनी देर तक।

शारदा बिस्तर पर पड़ी पड़ी इन्हीं सुखद स्मृतियों खोई सी रहती। भावावेश में वह अपने आंसुओं पर नियंत्रण नहीं रख पाती है और तब नीली पलकों की तन्द्रा तोड़ है....सत्येन्द्र की षोडशी कली वीणा।'

वह एकटक वीणा को देखती रहती है और कह उठती सत्येन्द्र के चित्र की ओर देखकर 'देखलो' यह तुम्हारा खिला हुआ पुष्प! देखो, देख लो ना, इसे देख लो।'

......और सिसकियों में रो उठती और वीणा के आंसू भी तब रोके नहीं रुकते और तब रोते वे दोनों नारी हृदय निद्रा देवी की शरण में जा पहुंचते।

* * * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीणा दिन भर बुनाई का काम किया करती थी। राजीव नित्यप्रति उसे ऊन दे जाया करता था और जो बताना होता, उसकी डिजाइनें भी। फिर वह बहुत रात गये, दूकान बन्द कर लौटता था, तब आकर अपना सामान ले जाता और शारदा को मजदूरी दे जाता था, कभी एक रुपया, तो कभी बारह आने, तो कभी आठ-दस आने ही। जी तोड़कर मेहनत करती जल्दी जल्दी हाथ चलाती, पर इससे अधिक काम होता ही नहीं था, आखिर वह करे तो भी क्या?

शारदा बिस्तर पर पड़ी पड़ी देखती रहती कि उसकी फूल सी वीणा....चूल्हा फूंक रही है....चाय छान रही है.... आटा गूंध रही है....स्वेटर बुन रही है...कि उसकी कजरारी आँखें काम करते करते लाल पड़गई हैं कि लटें बिखरी हैं, कि उसके कपड़े गंदे होगए हैं....और शारदा को वे दिन अनायास ही याद आ जाते हैं जब उसके कानों में सत्येन्द्र की मधुर ध्वनि गूंजा करती थी—'शारदा, देखना तो सही तेरी वीणा, किसी राजमहल की शोभा बढ़ायेगी, लाखों दासियां इसके चरण चूमेंगी...इसे हम खूब पढ़ा लिखा कर.... बनायेंगे....और शारदा उस कोमल कली को देखते ही रो पड़ती है, जिसके जीवन में मानो भोर हुआ ही न हो, जो नित्य प्रति सबेरे से शाम तक ऊन में ही उलझी रहती है; जिसने सुख नाम की कोई चीज देखी ही नहीं है....बस वह तो अपना पेट भरने को दिन रात ऊन बुनती रहती है.... बदले में मिलता है पेट का भाड़ा रूखा सूखा।

* * * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिस्तर पर पड़ी शारदा को याद आती हैं वे रातें, या आते हैं वे दिन जब सत्येन्द्र की वजह से गुलजार रहे थी....पर शादी के पांच साल बाद ही तो, जब वीणा केवल सवा साल की थी, अचानक वह दिन आया और सत्येन्द्र शारदा को अपनी वीणा को रोता बिलखता छोड़ चल दिया जहां से कोई वापस नहीं लौटता है। पर इस प्यार और मस्ती भरी वे रातें अभी भी उसकी नस नस में जिन्दी हैं पर अब प्रत्यक्ष में रह आया है एक दर्द, केवल एक दर्द और एक तड़फन, एक ही उदासी भरी टीस।

*　　*　　*　　*

...शारदा, शारदा देख यह कौन आया है।...और सत्येन्द्र ने शारदा की ओर इशारा करके उसे कहा था—'यह तेरी भाभी है महेन्द्र और यह है मेरी फूल की कली वीणा।'

पर महेन्द्र उसे भाभी नहीं कह सका। एक दिन, शायद वह दिन राखी का था। उस दिन उसने शारदा से राखी बंधवाई थी और कहा था 'बहिन! प्यारी बहिन शारदा।' फिर तो वह कभी कभी आता रहा, करीब ३, माह तक।

....और एक दिन सत्येन्द्र आया, रोता, रोता। आंसू थे कि बन्द होने का नाम ही नहीं ले रहे और जब शारदा ने झकझोरा तो वह और भी जोर से रो उठा, बोला 'शारदा महेन्द्र को गोली लग गई।' उस रात किसी ने खाना नहीं खाया।

पर शारदा ने तो उसे भी समझाया था, 'प्राणनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम ऐसे काम में मत पड़ो।' पर सत्येन्द्र सच मानने वाला था, उसने किसकी बात सुनी जो शारदा की सुनता। वह भी निरन्तर क्रांतिकारियों को साथ देता रहा, उनका नेतृत्व करता रहा।

* * * *

राजीव आज सामान लेने जरा देर से तो आया पर, वह खूब प्रसन्न नजर आ रहा था। उसे प्रसन्न देख वीणा ने पूछा—'क्यों भैय्या! आज क्या बात है, ऐसी, जो बड़े प्रसन्न नजर आरहे हो।'

'वीणा. कल गणतंत्र दिवस की वर्षगांठ है ना इसी अवसर पर नगरपालिका सत्येन्द्र बाबू की आदम कद मूर्ति की स्थापना करवा रही है।' राजीव के स्वर फूटे।

शारदा ने यह सुना तो वह बिस्तर पर ही चौंक पड़ी और एक गहरी निश्वास खींची।

राजीव ने तुरंत ६२ न. पै. उसकी ओर फेंक दिए और बुना हुआ सामान लेकर चल दिया। वीणा देर तक खड़ी खड़ी उन पैसों की ओर ताकती रही।

* * * *

शारदा को सत्येन्द्र के जीवन के वे दिन याद आए जब वह 'अंग्रेज भारत छोड़ दो।' के गगन भेदी नारे लगाता था। पर वह खुश थी, क्यों कि उसकी खुशियों का खजाना था, सत्येन्द्र। किसी का राज्य हो, उसे तो अपने पति से ही काम था। वह तो यही जानती थी कि जो राज करेगा, वही खून पियेगा। गरीब तो ईमानदारी पर मरता है और अमी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोंकी आंखों पर पट्टी चढ़ी रहती हैं।

...और वह भयंकर दिन भी याद आगया उसे, जि दिन सत्येन्द्र के साथी उसे, कंधोंपर ढोकर लाए थे शारदा से रोते रोते कहा था—'भाभी, दादा सदा के लि चल दिये। एक लाल लंगुर की गोली ने उसे हमसे छी लिया है।'

....और शारदा रो पड़ी थी, सिसक सिसक कर।

* * * *

आज ब्राह्ममुहुत से ही बच्चों के मन में नया उत्साह थ गणतंत्र दिवस मनाने का उत्साह किस में नहीं होता। नीम वाले चौराहे पर आज सत्येन्द्र की मूर्ति का अनावर होगा। प्रातः ग्राम भर में अनाउन्स किया गया था उसं अनुसार प्रसिद्ध-क्रांतिकारी नेता सत्येन्द्र के मित्र डा. राममूर्ति सिंहजी ही मूर्ति का अनावरण करने वाले थे। उत्साह व शारदा-वीणा भी देखने आई। अनावरण हुआ, भाषण हु तुमुल जय घोष हुआ।

तभी भीड़ में से एक आवाज शारदा के कानों में पड़ी 'मूर्ति के साथ ही साथ भाई सत्येन्द्र की लड़की वीणा शादी भी नगरपालिका करवा देती तो सत्येन्द्र की आत्मा शांति मिलती।'....शारदा ये शब्द सुनते ही वीणा का हा खींचकर घर आगई और बिस्तर पर पड़ गई।

समारोह से लौटती भीड़ तरह तरह की बातें कर जा रही थी।....और ४ दिन बाद बात पुरानी होगई, वी आज भी सदा की तरह स्वेटर बुन रही है और शारदा बिस्त पर पड़ी पड़ी खों खों खांस रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

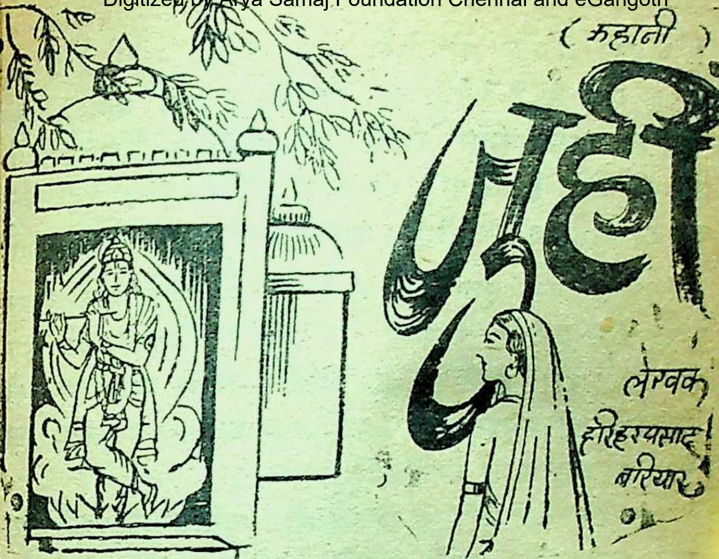

काले काले बाल थे उसके। न गोरी थी न काली। टेसू रंग था उसका। सीप जैसी आँखें और उन आँखों में काजल— जैसे आसमान के तट पर लकीरी बादल! ....काजल वह रोज लगाती, अपनी घुंघराली अलकों को रोज संवारती-शाम हो जाने पर-गाँव के कामों से छुट्टी पा जाने पर।

बैरिया एक छोटा सा गाँव है। कुल दस-बारह घरों की बस्ती। इसी गाँव में षोड़शी जुही की एक कुटिया थी-नदी-किनारे।

वह किसी के यहां बर्तन मला करती। किसी के घर पानी भर देती। किसी के घर झाड़ू भर दे देती। यही उसके प्रतिदिन के काम थे और यही उसके खुदा और राम थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग उसे भोजन भर देते और त्यौहारों-उत्सवों में
कपड़े-लत्ते भी दे देते। वह किसीसे कुछ न मांगती।
मिलता, उसीसे खुश रहती। न उससे कोई झगड़ता,
उस पर कोई बिगड़ता। वह रोते हुये को हंसा देती।
हुए को काम पर लगा देती। उसका आग्रह कोई नहीं टाल

उसका एक बूढ़ा बाप था। माँ तो बहुत पहले ही
चुकी थी—जुही के खिलने के पहले! गाँव से जो कु
मिलता, जुही अपने घर ले आती। पहले अपने पापा
खिलाती, फिर खुद खाती। पापा उसे बहुत प्यार करता।
पापा को बहुत प्यार करती।

उसी नदी में जुही रोज नहाती— सूर्योदय के पहले-
जाड़ा क्या गर्मी? अपने कपड़ों को रोज साफ करती—
से। अपने बालों को रोज धोती—दुधियाही मिट्टी से।

गाँव का टिकैत उसे अपनी बेटी की तरह मानता।
उसे मना भी करता, "तुम धाय का काम छोड़ दो।" पर
इसे क्यों सुनने लगी! वह तो मुस्कराकर यही कहती—
"मैं कोई रानी थोड़े हूँ!" हाँ, टिकैत के घर से वह सेर-
भर चमेली का तेल ले आती। हररोज, दुधियाही मिट्टी
अपने काले-काले बालों को धोकर, चमेली का तेल मलती।
जुही के माथे चमेली का तेल!

वह पढ़ी-लिखी कुछ भी नहीं थी। हाँ, कपड़े सी
जानती। स्वेटर और झिल्लीदार गंजी भी उसे बुनना आता
जाड़ा आता-गाँववालों के लिये वह स्वेटरें बुनती। झिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वेटर गंजियां तो वह हर मौसम में बुनती-बनाती। नन्हें-मुन्ने बच्चों के लिये। बड़े-बूढ़े, सबों के लिये।

वह गाती भी थी। पर, हर मौसम में नहीं। अधिकतर बरसात में, अधिकतर बसंत में। बरसात के मौसम में जब पानी नहीं बरसता, वह गाती—

"पुरवा हौले बहो...!
तोरे दरदवा से रोये बदरवा...
पुरवा हौले बहो...!

फिर तो बादल घुमड़ने लगते और वसुन्धरा के नरम हृदय से गरम आह बाहर निकल आती। वह शीतल हो जाती। बसंत आ जानेपर जब आम के वृक्षों में मंजरी नहीं लग पाती, वह गाती—

"अमवा के डलिया पे कुहकै कोयलिया...
मंजर तू ना हरैहा..."

फिर तो आम के वृक्षों में मंजरी उग आती। आम जब कुछ बड़े हो जाते, जुही को अचार बनाने के लिये दिया जाता। पहले अचार वह खाती, फिर सारे गाँववाले खाते। जब आम पक आते, पहले जुही को चूसने के लिये दिये जाते। वह आम चूसती और अपने कंठ-पराग को सिक्त करती। फिर तो वह कोयल हो जाती—

"हम हूँ कोयलिया तोरे संग गैबो...
फर-फर उड़ि जैबो !..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सोचती—'काश! मेरे भी दो पंख होते!...मैं कोयल की तरह उड़ सकती!...आखिर कोयलिया उड़कर जाती है कहाँ?...' पर, इस विषय में वह किसी से न कहती मन ही मन दबाकर रह जाती।

गाँव के मन्दिर में जब उत्सव होता, जुही जरूर आती उसे फल कतरने के लिये दिया जाता, और भगवान के चरणों में वही प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता। गाँव का बच्चा-बच्चा उसे दीदी कहकर पुकारता। कभी-कभी तो बच्चे आपस में झगड़ पड़ते। कोई कहता—'जुही हमारी दीदी है।' कोई कहता—'नहीं, हमारी दीदी है।' छोटे-छोटे बच्चे तो अपनी तुतली बोली में बोलते—दुही अमाली दिदि अे!...' अमे लोद लोती तिलाती अे!... कतोली-कतोली दुधू पिलाती अे!..लेकिन जुही उन सबों को झगड़ने नहीं देती। बड़े प्यार से कहती—'मैं सबकी दीदी हूँ।' फिर वह किसी को अपने कन्धे पर चढ़ा लेती। किसी को पीठ पर किसी को अपने सर पर। और बच्चे किलकारी मारकर बोल पड़ते—'दुही अम तब की दीदी...जुही हम सब की दीदी!'

जब कटनी का समय आता, जुही को जरूर बुलाया जाता। फसल का स्पर्श पहले वह अपने हाथों से करती, फिर सारे किसान। किसानों के लिये यह एक प्रकार का कटनी-उद्घाटन होता।

जुही जब सोती, कुछ सोचा करती। चिन्तन करने का उसे अभ्यास सा हो गया था। एक रात उसने एक अजीब स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपना देखा—"एक गोल तस्तरी पर एक नीबू रखा हुआ है।...उसके बगल में एक चाकू है !... कुछ देर बाद चाकू अपने आप ऊपर उठता है, फिर नीबू के ठीक बीचोबीच गिर पड़ता है। नीबू दो टुकड़ों में बँट जाता है। बाद उसके, उसी तस्तरी पर क्रमानुसार अनेकों नीबू गिरते हैं और वही चाकू उन्हें कई टुकड़ों में बाँटता चला जाता है।"

'ऐसा क्यों हुआ ?' वह सोचने लगी, इसका क्या कारण है पौ फटते ही उसने गाँव भर में तहलका मचा दिया। सबों से यही पूछती, मैंने ऐसा स्वप्न क्यों देखा ? सभी सुनकर अवाक् रह जाते। किसीसे इसका उत्तर देते नहीं बनता। सुतरां, जुही उदास रहने लगी। यह प्रश्न ही उसे खाने लगा।

अब न वह अपने बालों को सँवारती न आँखों में काजल ही लगाती। बहुत कम काम करती। अधिक सोती। पगली की तरह इधर-उधर भटकती फिरती। जिस-तिस से वही प्रश्न कर बैठती। एक रात वह खूब रोई। रोते-रोते सो गई। फिर उसने एक स्वप्न देखा—"एक अठारह वर्ष का युवक उसके सामने खड़ा है...उसके हाथ में एक मुरली है...बड़े प्यार से वह उसकी ओर देख रहा है...मन ही मन मुस्करा रहा है...वह रो रही है !...कुछ देर तक युवक उसकी ओर गौर से देखता रहता है, फिर बोल उठता है—'जुही, रो मत मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा ! लेकिन, एक शर्त पर' 'किस शर्त पर ?'...खुशी में वह एकाएक बोल उठती है। युवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसकर कहता है—'तुम्हें मुझसे शादी करनी पड़ेगी।' कौन हो?...कहां रहते हो?' 'तुम्हारे गांव का जो मन्दिर है न, वहीं मैं रहता हूं।' 'नटखट गोपाल'... विह्वल होकर कह उठती है। 'हां'... फिर युवक उसकी खाटपर बैठ जाता है।...'जुही, तुमने जो स्वप्न देखा है, उसका बहुत सीधा-सादा अर्थ है। यह संसार तस्तरी है। इस पर जितने जीव हैं वे 'नीबू' हैं। सबों पर बारी-बारी काल रूपी चाकू फिरेगा और....सब मर जायेंगे।' 'तब तो मैं भी मर जाऊँगी।' डरकर जुही प्रश्न करती है।

'नहीं, मुझसे ब्याह कर लेने पर तुम्हें कुछ न होगा।'

'सच?...तो कर लो न ब्याह!'

'ठीक है, तुम अपनी अंगूठी मुझे पहना दो!'

वह अपनी अनामिका से अंगूठी खोलकर उसे पहना देती है। फिर, उसके हाथ से मुरली छीनकर बोल उठती है—'तुम तो मुरली खूब बजाते हो!...मुझे भी सिखा दो।' 'उहूँ'... इतना कहकर युवक दौड़ पड़ता है...."

और तभी,...

उसकी नींद खुल गई। पहले उसने इधर-उधर देखा, फिर, उठकर मन्दिर की ओर दौड़ पड़ी। वह कहती जा रही थी—'अपनी मुरलिया ले लो गोपाल....अपनी मुरलिया ले लो गोपाल'...

बाहर जोरों की बारिस हो रही थी। बिजलियाँ कड़क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थीं। लेकिन, जुही को जैसे कुछ पता ही नहीं! वह अपने-आप में रहे तब न!

मन्दिर के प्रवेशद्वार पर आकर वह धड़ाम से गिर पड़ी। उसके समूचे शरीर से कँपकँपी छूट रही थी। लेकिन, उसके रोम-रोम से निकल रहा था—'अपनी मुरलिया ले लो गोपाल.. अपनी मुरलिया....ले लो गोपाल !...'

* * * *

सवेरा हुआ। कोयल की कुहू कुहू करती मीठी आवाज सुनाई पड़ने लगी। पूरब की घाटी पर सूर्य अपनी लालिमा बिखरने लगा। छोटे-छोटे बच्चे जुही के घर की ओर दौड़ने लगे। पर, जुही आज थी ही नहीं! आते ही, बच्चों ने जुही के बूढ़े बाप से पूछा—

'बाबा, दीदी कहाँ गई है ?'

'तुम्हीं लोगों के यहाँ गई होगी बेटा!'

'अभी नहीं गई है!'

'तो देखो; नदी पर नहाने गई होगी'

बच्चे दौड़कर नदी के करीब आये। पर; जुही कहीं भी नहीं! सभी हारकर इधर-उधर देखने लगे। इसी बीच उनमें से एकने कहा—शायद, जुही दीदी पूजा करने के लिये मन्दिर में गई हो सभी बच्चे मन्दिर की ओर दौड़ पड़े।

मन्दिर के प्रवेश द्वारपर जुही अब तक ज्यों की त्यों पड़ी थी। उसे देखते ही सारे बच्चे खुशी से नाच उठे।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जुही दीदी...जुही दीदी !!..तुम यहाँ सोई क्यों हो...यहाँ सोई क्यों हो !!...उठो...उठो !! अभी हम लोग अपने घर से खाना ले आते हैं...अभी हमलोग अपने घर खाना ले आते हैं... !!...तुम्हें खिलाना पड़ेगा...तुम्हें खिलाना पड़ेगा !...

बच्चे अपने-अपने घर की ओर दौड़ने लगे। गाँव भर में सबों ने तहलका मचा दिया कि जुही मन्दिर के दरवाजे पर पड़ी हुई है।

*　　*　　*　　*

सभी ग्रामीण मन्दिर के निकट आये। बच्चों के घेरे में जुही पड़ी थी।

'जुही दीदी !...हमें खिलाओ न !...देखो तो हम कब से बैठे हैं !'

जुही कराहती हुई बोली—'अब से तुमलोग अपने हाथ से खाना सीखो। अब मैं.. तुम लोगोंको...नहीं खिला सकती !'

जुही जो कहती, बच्चे वही करते। सो सभी अपने-अपने हाथ से खाने लगे।

सभी ग्रामीण मूर्त्तवत् खड़े थे। किसीसे कुछ कहते नहीं बन रहा था।

'जुही, तुम यहाँ किस लिये पड़ी हो ?' कुछ देर बाद उनमें से एक ग्रामीण ने प्रश्न किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पड़ी कहाँ हूँ ! उसने ही तो मुझे यहाँ ला गिराया है ! मैं उसे...मुरली देना चाहती हूँ,...वह लेता ही नहीं !...उल्टे, मेरी अंगूठी पहन बैठा है !'

—'अपनी मुरलिया ले लो गोपाल !...अपनी मुरलिया ले लो गोपाल !!

'उठो जुही, उठो !'-गाँव वाले उससे आग्रह कर रहे थे। और, वह कह रही थी—'कैसे उठूँ ! उसने मुझसे व्याह जो कर लिया है !'

'पागल हो गई है क्या जुही ?'

'नहीं, उसने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया है ! मैं उसकी हूँ; वह मेरा है !'

जुही गाँववालों को उस प्रश्न का उत्तर सुनाने लगी। सुनाने के बाद वह उठ खड़ी हुई और हँसती हुई बोली—

अब मैं जाती हूँ !'...

'कहाँ जाती हो जुही ?' यह ग्रामीणों का स्वर था।

'पी के घर'... इतना कहकर वह दौड़ने लगी। पर, कुछ दूर जाकर गिर पड़ी। बस....

अब न उस गाँव में जुही थी और न वह चहल-पहल ! गाँव वाले सोचा करते—खेती के समय पानी नहीं पड़ने पर वर्षा को कौन बुलायेगी ? स्वेटर और झिल्लीदार गंजियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ से आयेंगी ? नन्हें-मुन्ने बच्चों की दुनिया में प्यार मीठी-मीठी बातें करने के लिये कौन आयेगी ?....लेकिन सबों को मात्र सोचकर और दो-चार बूंद आंसू बहा कर रह जाना पड़ा। क्या करते ? होनी पर किसी का वश नहीं ! जो होना होता है, होकर ही रहता है।

आज, इस घटना को बीते कोई बारह साल हो चुके। गाँववालों ने उस मन्दिर में गोपाल की मूर्ति के पास जुही की भी एक छोटी सी प्रतिमा बना दी है। मन्दिर के चारों ओर एक फुलवारी लगाई गई है, जिसमें सिर्फ जुही के फूल खिलते हैं। पूजनोत्सव में इन्हीं फूलों को भगवान के चरणों में चढ़ाया जाता है। मन्दिर का बाहरी भाग जब गन्दा हो जाता है, तो उसकी रंगाई दुधियाही मिट्टी से होती है, हरे-पीले रंग से नहीं ! त्यौहारों-उत्सवों में गाँववाले उसी दुधियाही मिट्टी का तिलक लगाते हैं और नटवर गोपालजी को तो प्रतिदिन उसीका तिलक लगाया जाता है क्योंकि किसी दिन यह जुही का सिंगार था।

आज जुही नहीं, लेकिन दिल की दुनिया में तो हमेशा अमर रहेगी !

*** मननीय विचार ***

स्वतन्त्रता केवल अनुशासन की शृंखलाओं द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

—गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल

स्पेशल नं. १

(रजिस्टर्ड)

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल [स्पेशल नं. १] का महत्व और लाभ

विगत २० वर्षों से यह तेल अनेक महत्व पूर्ण वनस्पतियों (जड़ी बूटियों) से निर्मित किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु (गर्मी के दिन) वर्षा ऋतु (बरसात के दिन) हेमन्त ऋतु (ठंडी के दिन) में स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयोगी रहे, ऐसी शास्त्रीय विधि से तैयार किया जाता है। रामतीर्थ ब्राह्मी तेल में वनौषधीय मधुर सुगंध होने से उपयोग करने वाली महिलायें तथा पुरुष वर्ग हमेशा के लिये इसे अपना लेते हैं, और अन्य लोगों को महत्व बताकर व्यवहार में लाने के लिए सलाह देते हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल युवक तथा वृद्धों के लिए ही उपयोगी नहीं अपितु छोटे से छोटे बच्चे तक के लिए लाभ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

दायी है ऊपरोक्त रेखाचित्र में माता अपने बच्चों के लि
रामतीर्थ ब्राह्मी तेल की मालिश करके सौन्दर्य, स्मरण
वृद्धि तथा आंखों की दृष्टि अच्छी बनाए रखने के
प्रयत्नशील है।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल सिर के बालों के लिये ही
है, किन्तु शरीर मालिश के लिये भी लाभ दायक
आगे के रेखा चित्र में आप देख सकते हैं कि
अपने हाथों से तेल मालिश कर सारे शारीरिक अवयवों
नीरोग एवं सशक्त बना रहे हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल स्ना
१० मिनट पहले सारे शरीर तथा सिर की तेल मालिश
से २५ मिनिट तक अवश्य करें। ऊंचाई और आयु के हि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से शरीर का वजन कम होने से वजन बढ़ जायगा। अधिक वजन होने की हालत में आहार परिवर्तन के साथ २ रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का प्रयोग करने से आवश्यक परिमाण में रहेगा।

आप आगे के रेखाचित्र को सूक्ष्म दृष्टि से देखिये। हाथों को, पेट को तथा पीठ के ऊपर मालिश करने के सुलभ तरीके बताए गये हैं। अनेक महिलाओं तथा पुरुषों का विचार है कि अपने हाथों से तैल मालिश अच्छी प्रकार से नहीं कर सकते हैं। दूसरों से करानी पड़ेगी। यदि दूसरों से मालिश कराने की सुविधा होवे तो अवश्य करा सकते हैं। सुविधा न होने पर आलस्य, शंका, और शर्म को छोड़कर अपने हाथों से हर दिन मालिश करने की आदत डालें, किसी कारण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

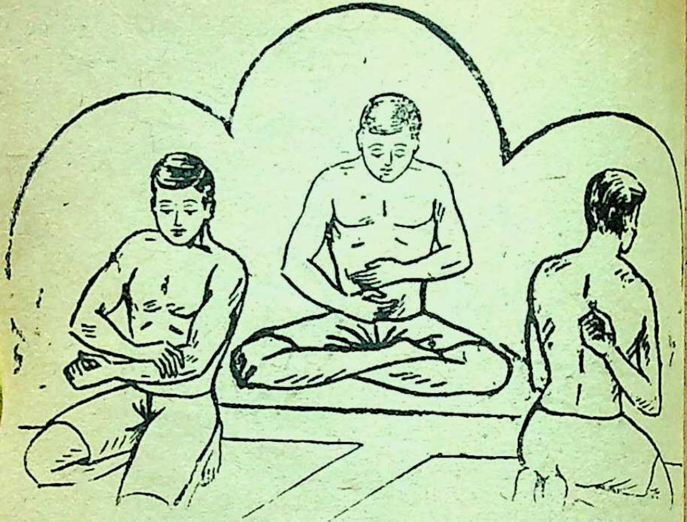

यदि हर रोज मालिश न हो सके तो सप्ताह में १ से ३ बार रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य मालिश करें या करावें।

विशेष सूचना और लाभ

आपने ऊपर छपे सर्व रेखा चित्रों को देखकर यह समझ लिया ही होगा कि रामतीर्थ ब्राह्मी तैल की मालिश से आबाल वृद्ध–बालक, माता, (महिला) तथा पुरुष वर्ग कितने आरोग्यमय सुडौल शरीर वाले तथा आकर्षक मुख मुद्रा वाले और कितनी सुन्दर केशभूषा वाले हैं। इतना ही नहीं हरेक अवयवों को हृष्ट-पुष्ट बनाने में सामर्थ्यवान बन गये हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के प्रयोग से गहरी नींद, स्मरण शक्ति की वृद्धि, बाल काले, घने तथा लम्बे बनाने में अनुकूल है तथा इससे बालों का झड़ना बन्द कर गंजा पन दूर करने में लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यायी है। कान में डालने से कान के सूक्ष्म अवयव नीरोग बने रहते हैं। ऐसे अनेकानेक महत्त्वपूर्ण लाभों की दृष्टि से ही वैद्यराज, डाक्टर, प्रख्यात विद्वान् वर्ग, राजनीतिज्ञ और अन्य प्रतिष्ठित वर्गों से रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के गुणों के विषय में स्वानुभव पूर्ण अनेक प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

छात्र वर्ग के लिये लाभदायक

ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी ऋषि-मुनि, साधु-सन्त, त्यागी-वैरागी उदासीन वृत्ति के लोगों को रामतीर्थ ब्राह्मी तैल से अनेक प्रकार के लाभ अवश्य ही प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों के कारण से छात्र-छात्राओं, (बेसिक स्कूल, मिडिल स्कूल, हायस्कूल तथा कालेज के) को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य लाभ प्राप्त होगा। जैसे, आंखों की दृष्टि सतेज रहेगी। मस्तिष्क शान्त रहेगा। स्मरण शक्ति बढ़ जायेगी। शरीर मालिश से शरीर में स्फूर्ति बढ़ेगी, स्नायु संस्थान तथा रस ग्रन्थियों में शक्ति का संचार होगा।

वैसे तो त्वचा की कान्ति, रक्त परिभ्रमण के साथ २ स्वस्थ रहना, चर्मरोग निवारण, शारीरिक जोड़ों में बल, समस्त शरीर में समशीतोष्णता आदि अनेक लाभ सबको प्राप्त होता है। यदि आपने अभी तक रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का उपयोग कर लाभ नहीं लिया हो तो आज ही अपने शहर अथवा गांव के दवा बेचने वाले अथवा जनरल मर्चेन्ट से खरीद करें। दो साइजों में प्राप्त है।

न मिलने पर निम्न पते पर लिखें।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

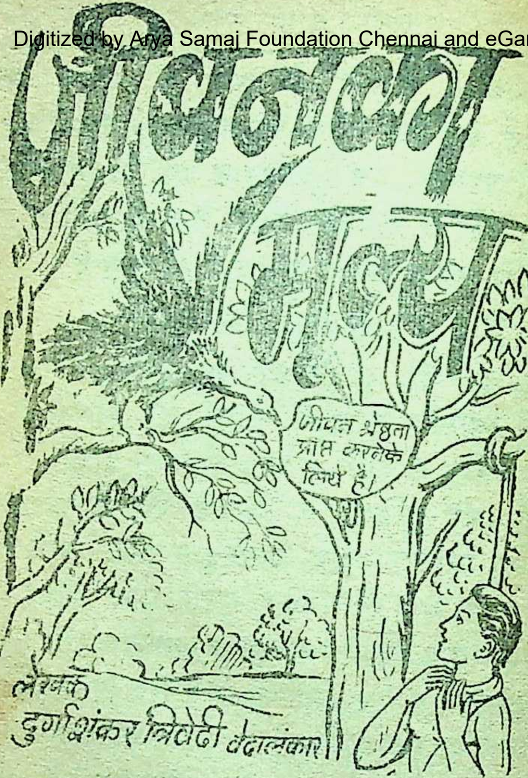

द्वापर युग की बात है। कश्यप नामक एक ब्रह्मचारी गुरुदेव के आश्रम से विद्याध्ययन करके कहीं जारहा था। यह बालक बड़ा ही तेजस्वी, भावुक और मेधावी था। वह राजपथपर द्रुतगति से बढ़ता जारहा था कि उसकी नजर सामने से अपनी ओर आते अनेक रथों पर पड़ी। वह सोचने लगा—'काश मैं भी धनी होता तो एक रथ रखता। सच है, गरीब होना दुर्भाग्य है, धनी जो चाहे कर सकता है' इतने में ही तेजी से आते हुए एक रथ से टकराकर वह राजपथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही गिर पड़ा। रथ रुका नहीं, वह कश्यप की बढ़ती हुई कराहों के साथ ही धीरे धीरे आंखों से ओझल होता गया। उसके भावुक हृदयपर इस घटना ने बड़ी चोट की। अपनी गरीबी से ग्लानि तो उसे थी ही, इस घटना से उसके मनमें धनवानों के प्रति एक बड़ी ही विचित्र कल्पना घर कर गई। वह अपने आपको हीन भावना से देखने लगा और इस प्रकार गरीब पूर्ण अपमानित जीवन से दुःखी होकर भावुकता वश वह सोचने लगा कि यदि मैं आत्महत्या करलूं तो धनवान् के घर जन्म लूंगा फिर मैं इस रथ वाले धनवान् से अपने अपमान का बदला लूंगा। यह विचार करके वह राज पथ छोड़कर तुरन्त ही सघनवन की ओर कदम बढ़ाने लगा।

* * * *

गहन वन में उसने अपने दुपट्टे से फन्दा बनाया और उसे अपने गले में डालकर आत्महत्या करने का उपक्रम करने लगा। इतने में ही उसे एक गीदड़ नजर आया, जो बार बार उसकी ओर देखकर हंस रहा था। आत्महत्या के मार्ग में इस प्रकार का अकारण विघ्न देखकर कश्यप की क्रोधाग्नि भड़क उठी। उसने गीदड़ को भला-बुरा कहते हुए पूछा—मूर्ख गीदड़! मुझे निहार कर हंसने का क्या कारण है?

गीदड़ मनुष्य के स्वर में बोला—'ऋषिकुमार, मूर्ख नहीं, शायद तुम हो। तभी तो अपने ज्ञान और विवेक को खोकर, क्षणिक भावुकता का आश्रय ले, सुर दुर्लभ मानव शरीर अपने ही हाथों समाप्त करने जा रहे हो और गरीबी को अभिशाप समझकर, धनवान् बनने की इच्छा से आत्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्या का जघन्य पाप करने पर तुले हुये हो, ऋषिकुमार तुम आत्महत्या करके आगामी जन्म में किसी धनवान् के ही जन्मोगे, इसका प्रमाण क्या है ?

गीदड़ फिर मनुष्य के स्वर में बोला—'ऋषिकुमार मूर्खता मत करो। जीवन श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिये है।

गीदड़ को मनुष्य की वाणी में बोलता देख कश्यप ने साश्चर्य उसकी बातें सुनी, जो स्वयं उसी से संबंधित थीं। वह विचार मग्न खड़ा होगया। उसे विचार करते देख गीदड़ पुनः बोला-ऋषिकुमार यह मानव शरीर तो वैसे ही सु दुर्लभ है, फिर ब्राह्मण पुत्र होना तो और भी सौभाग्य का विषय है। मुझे ही देखो, मैं कितना निस्सहाय हूँ, फिर भी आत्महत्या का विचार नहीं रखता।

कुछ देर रुक कर गीदड़ फिर बोला—'ब्राह्मण पुत्र! जरा मुझे तो देखो ? मेरे हाथ-पैर न तो तुम्हारे जैसे सुन्दर हैं, न मैं दो पैरों से चलकर ही कहीं जा सकता हूँ। यदि मेरी पीठ में कभी खुजली या अन्य कोई चर्म रोग हो जाये तो मुझे झाड़ी से या भूमि पर पीठ रगड़कर उसे शान्त करना पड़ता है। मुझ में न तो सोच-विचार करने की ही शक्ति है और न लोकोपयोगी कार्य करने की ही लेकिन फिर भी मेरी इच्छा इस जीवन को लोकोपयोगी कार्यों में लगाने की ही रहती है। ऋषिकुमार ! भावुकता के पर्दे को हटाकर विचार करो कि यह अमूल्य जीवन अखण्ड ब्रह्माण्ड का साम्राज्य देकर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिये मेरी प्रार्थना को हृदयंगम करके आत्महत्या के पाप पूर्ण विचार को यहीं त्याग दो, और अपने सुर दुर्लभ मानव शरीर का महत्त्व समझो। इसका उपयोग केवल जनहित के कार्यों और इसकी रक्षा में ही करो।

गीदड़ की बातों का कश्यप पर प्रभाव पड़ा। उसने अपनी विचार शक्ति का सहारा लिया और आत्महत्या का विचार त्याग कर दुपट्टे को पेड़ से खोल दिया। फिर उसने गीदड़ से पूछा–हे गीदड़ ! तुम मनुष्य की वाणी में कैसे बोल रहे हो ? निश्चय ही तुम कोई देव या महात्मा हो।

गीदड़ बोला ऋषिकुमार, 'इस प्रसंग को छोड़ो, मैं तो तुमसे एक ही निवेदन करता हूँ कि यह देव दुर्लभ मानव शरीर उत्तम कार्यों को सम्पन्न करने के लिये ही मिलता है। अतः तुम विद्यार्जन करके अपना लक्ष्य 'सर्व जन हिताय, बनाओ, ताकि जीवन भर आत्महत्या करने का–जीवन को निरर्थक समझने का विचार ही तुम्हारे मन में न आने पाये।'

* * * *

गीदड़ की जगह सुरराज इन्द्र को देखकर वह हर्ष से गद् गद् हो उठा। वह भावातिरेक में उनके चरणों में लोट गया। क्षण भरके लिये वह भावातिरेक में सब कुछ भूल गया। चेतना होने पर उसने पाया कि देवराज इन्द्र अन्तर्धान होगये हैं और वह निर्जन वन में अकेला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तु और उसका स्थान

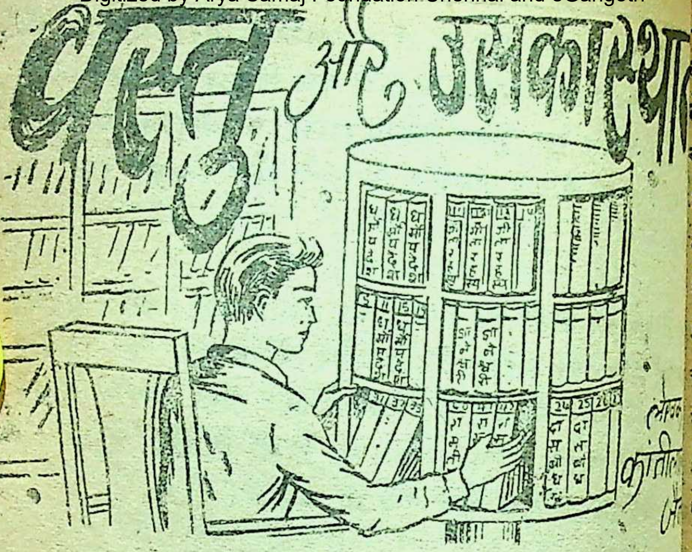

गृहस्थ-जीवन की मितव्ययता के संबंध में एक बात बड़े महत्व की है और मानव-जीवन के कार्यक्षेत्र में उसकी बड़ी आवश्यकता है। यह है "प्रत्येक वस्तु के लिये स्थान और उस स्थान में वह वस्तु।"

उपरोक्त वाक्य का पूर्वार्ध नियम से संबंध रखता है और उत्तरार्ध 'प्रबंध' से। कभी-कभी बिना प्रबंध के नियम देखा जाता है, जैसा कि अपने खुद के अनुभव से हमें जानना है कि हम नियमशील तो हैं पर प्रबंधकर्ता नहीं। हमारे पास पुस्तकें तथा समाचारपत्र तथा ऐसी ही अन्य वस्तुयें रखने के लिये बस्ते तथा मेज के खाने तो हैं जिनपर चिट लगी है तथा चिटपर यह भी लिखा है कि इस स्थान में अमुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तु रखी जाय, किन्तु आलस्यवश अथवा और किसी कारण से उन स्थानों में वह वस्तु रखने को भूल जाते हैं और वह कहीं अन्यत्र पड़ी पैरों की ठोकरें खाती फिरती है। कभी-कभी तो यहां तक देखने में आता है कि कोई ऐसे देवी या देवता अथवा आदर्श पुरुष का चित्र जिसे हम बड़ी आदर की नजर से देखते हैं स्थान की उक्त अवहेलना के कारण आते-जाते पैरों तले पड़ा मिला। यह भी देखा गया है कि किसी विषय का प्रबंध तो अत्युत्तम रूप से है, पर वहां नियम का अभाव है। नियम के बिना प्रबंध अथवा प्रबंध के बिना नियम ऐसा ही है जैसे बिना नमक के दाल। प्रत्येक वस्तु अपने स्थान में हो सकती और है भी; पर उसका प्रबंध क्षणिक और असनातन है।

किसी पुस्तकालय के प्रबंध करने में प्रबंध तो ठीक है, पर पद्धति, नियम या क्रम ठीक नहीं। पुस्तकालय के जिस खाने में अच्छी-अच्छी मौलिक पुस्तकें रखी हैं, उसी खाने में उन पुस्तकों के आसपास, उपन्यास, व्याकरण और इतिहास आदि की पुस्तकें भी रखी हैं। ऐसी हालत में किसी अपरिचित व्यक्ति को यदि इतिहासवाली पुस्तक की आवश्यकता हुई तो उसे सारा पुस्तकालय अथवा उसकी अनेक आलमारियां खोलनी पड़ेंगी। ऐसा न होगा कि प्रबंध और पद्धति की सुकरता से उसे अनायास मनचाही पुस्तक पुस्तकालय में शीघ्र मिल जाय! इसीलिये कहते हैं कि प्रबंध तो खूब और अधिक चतुराई से किया गया है, पर वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धति के अभाव से वह प्रबंध हमारी कठिनाई और बचाने में सहायक नहीं हो सकता।

जहां पद्धति और प्रबंध दोनों सुचारू रूप से समय और कठिनाई की बचत होती है। इन दोनों का ही समय और परिश्रम बचाना है।

हमारे एक साथी की प्रबंध-प्रियता इतनी बढ़ी कि पुस्तक पढ़ते वक्त यदि उन्हें स्मरण हो आता कि अमुक पुस्तक उसने नियत स्थान में न रख कहीं अन्य दी है तो प्राय पढ़ती हुई पुस्तक के आधे वाक्य को पुस्तकालय में जा उस पुस्तक को उसके नियत स्थान फिर वापस आकर वह आधा वाक्य पूर्ण करते थे कदाचित् प्रबंध-प्रियता की पराकाष्ठा है; पर उनका स्वभाव उन विद्यार्थियों के स्वभाव से अच्छा है जो कुर्सी या चबूतरे पर पुस्तक, पत्र और समाचारपत्रों इकट्ठे करके रख छोड़ते हैं, जिससे किसी पुस्तक, समाचारपत्र के ढूँढ़ने में आनन्द के स्थान में अनियम अकार्यता का जंगलीपन आ विराजता है।

यह विषय विद्यार्थियों के सम्बन्ध में बड़े महत्व का क्योंकि अभी से उनको यदि प्रबन्ध और पद्धति से करने का ढंग न ज्ञात हो जायगा तो उन्हें अपने जीवन अनेक अड़चनें उठानी पड़ेंगी। साथ ही-समय का बलि होता रहेगा। यह विषय लड़कियों के सम्बन्ध में भी महत्व का है जिन्हें आगे चलकर 'माता' होना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह-स्वामिनी की असावधानी से अनेक घरों में घर वस्तुयें अनियमित रूप से जहां-तहां मारी-मारी फिरती यही नहीं, मूल्यवान वस्तुयें भी कभी २ इसी दशाको हो जाती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि उन वस्तुओं के अप्रबन्धित रूप से इधर--उधर कई दिनोंतक पड़ी रहने के कारण उनके खराब हो जाने या खो जाने पर गृह--स्वामी को उनके बदले नयी--वस्तुयें बाजार से मोल लानी पड़ती हैं। यदि नष्ट--भ्रष्ट वस्तु किसीदूसरे की हुई तो उसे नई लाकर देने के साथ २ एक दो उलाहने भी सुनने को मिलते हैं। इसके सिवाय, घर की वस्तुयों के इधर--उधर पड़े रहने में और भी अनेक बातों की हानि होती है। पहली बात तो उनके प्रसार से घर के स्थान का व्यर्थ रुक जाना है, जिसे देखकर दूसरे नियम और प्रबन्धप्रिय लोग ऐसे स्थान और घर से घृणा करने लगते हैं; क्योंकि उससे स्वास्थ्य--सम्बन्धी बातों पर इन वस्तुओं के प्रसार का बड़ा खराब प्रभाव पड़ता है। दूसरे, आने--जाने, उठने--बैठने आदि से घरू कामों में बड़ी असुविधा उपस्थित होती है। तीसरे, बहुतसा स्थान इन वस्तुओं से व्यर्थ घिर जाता है। चौथे, इच्छित वस्तु के प्राप्त करने में घर--भर की राख छाननी पड़ती है। इतनेपर भी, वह वस्तु कभी २ प्राप्त नहीं होती।

निम्नलिखित उदाहरण द्वारा पद्धति और प्रबंध अच्छी तरह समझ में आ जायगा:—

हमारा अभिप्राय सरकारी विभाग के किसी बड़े--बाबू के दफ्तर से है। बड़े बाबूके दफ्तर में आप चले जाइये और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे कहिये, अमुक विषय के अमुक सन् और
तथा तारीख के कागज हमें दीजिये। बाबू साहब
उठकर सीधे उस आलमारी की ओर चले जायेंगे जि
कागजों की फाइलें रखी हैं। आलमारी से एक फाइल
दो मिनट के भीतर वे सब कागज आपके सम्मुख
जिन्हें आपने उनसे मांगा था। बस, हमारा अभिप्राय
गया। हम चाहते हैं कि बड़े बाबू की नाईं प्रत्येक
पद्धति और प्रबन्ध दोनों सम्मिलित रहें। किन्तु,
कि जिस प्रकार उत्तम भोजन शरीर का रक्षक
अपरिमित परिमाण में वही शरीर को अजीर्ण आ
द्वारा नष्ट कर देता है, उसी प्रकार कोई भी कार्य
को पहुँचने पर विपरीत फल उत्पन्न करता है।

सारांश यह कि पद्धति और प्रबन्ध प्रत्येक
धरने--उठाने तथा अन्यान्य कार्यों के करने में निय
से ही रहें, पराकाष्ठा को पहुँचने न पावें। एक
का मत है कि इनकी बहुलता अथवा पराकाष्ठा
योग्यता को घटा देने में प्रवृत्त होती है जिससे कोई
हुआ कार्य अथवा किसी भी विषय का प्रधानांश पद्ध
प्रबंध की अधिकता से निष्फल होकर रिक्त हो जाता
इसके अतिक्रमण से विज्ञान व। ढकोसला मात्र रह
तथा योग्यता का सार भाग निकालकर फेंक दिया
तथापि सदाचार और आध्यात्मिक दैनिक जीवन में
परमावश्यक बात है कि हम प्रबन्ध और पद्धति के
मंजूर करें तथा जिस वस्तु के लिये जो स्थान
उस स्थान में उस वस्तु को रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी की साहित्य परंपरा

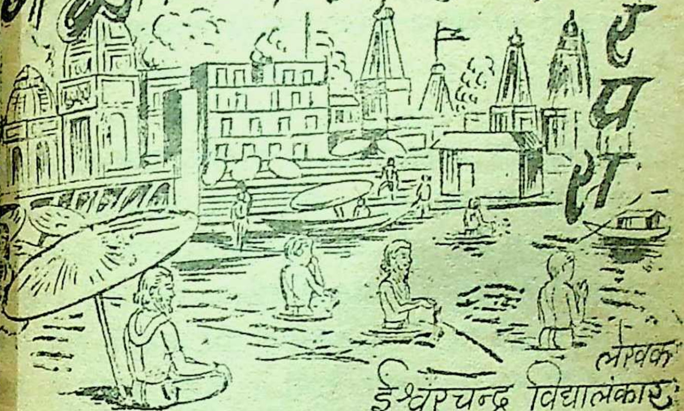

लेखक
ईश्वरचन्द्र विद्यालंकार

काशी की साहित्य परम्परा इन तीनों शब्द अपनी कुछ शेष ध्वनि और अर्थ की ओर प्रेरित कर रहे हैं। यों तो ानपरक विशेषताएं मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार को कुछ न छ प्रभावित करती ही रहती हैं पर साहित्य के क्षेत्र में शेषकर ऐसे साहित्य के क्षेत्र में, जो दिनोंदिन व्यापकता र शक्ति संचय कर रहा हो, उसके निर्माताओं के सम्मुख ानीयता का मोह नहीं रहता। वह देश काल से ऊपर ठकर साहित्य रचना और विधान में जुटे रहते हैं। ऐसी वस्था में उन्हें किसी एक स्थान के नाम से जोड़े रखना स साहित्य के प्रति अन्याय होगा जिसने इन रचयिताओं को मरता दी और जो स्वयं इनकी साधना से निखरा और वित्र हुआ। फिर भी, काल-प्रवाह की अनन्तता में सुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये प्रत्येक जड़ चेतन को नाम और स्थान दे मान लिया गया है अतः इसी दृष्टि से आज यहां साहित्यकारों का स्मरण करेंगे जिनकी साधना काशी हुई।

साहित्य और शास्त्र, धर्म और संस्कृति, ज्ञान और शासन और साधना प्रायः सभी क्षेत्रों के पथिकृतों तो काशी जन्म देती रही अन्यथा उनको आकृष्ट करती उत्तर भारत के विशाल भूभाग में राज्य बदलते रहे, नियां पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व हटती रहीं इतिहास का लम्बा रास्ता कभी न कभी काशी से गुजरा। इतिहास का आकाश जब तिमिराच्छन्न भी हुआ भी काशी एक ज्योतिष्कपिंड की तरह प्रकाशित हो यही कारण है कि काशी शब्द के उच्चारण मात्र भारतीय साहित्य और संस्कृति का वह विशाल रूप उसकी वह अविच्छिन्न परम्परा जो वेदों और उपनि प्रारम्भ होती हुई आज भी हमारे जीवन को अनुप्राणि रही है एक साथ ही सामने आने के लिये आतुर हो है। हम आज यहां केवल उसी साहित्यिक परम्प चर्चा करेंगे जो काशी के साधकों के कारण आगे बढ़ी जिसमें उसकी छाप स्पष्टतः दिखाई देती है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का विवेचन करने मुख्य बातों पर दृष्टि जमती है। उस समय के कवि सम्मुख दो प्रकार के प्रेरणा केन्द्र थे। एक राज्याश्रय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्म-संस्कृति आश्रय। राज्याश्रय की परम्परा देश में फैली जधानियों में पल रही थी और राजधानियों के उठने-गिरने या लुप्त होने के साथ विकसित होती या संकुचित होती । दूसरी परम्परा थी भक्ति आन्दोलन की। वेदांत, बौद्ध त, जैन मत, गोरख सम्प्रदाय तथा इन्हीं से विकसित ना विचारों का प्रभाव तत्कालीन समाज पर पड़ रहा था। तिहासिक आवश्यकताओं ने इन धर्मतंत्रों को अधिकाधिक कोन्मुखी होने को बाध्य किया था। इसी लोकोन्मुखी वृत्ति के मूल में एक ओर अवतारवाद की तथा दूसरी ओर निर्गुण मतावलम्बियों की सहज भाव प्रेरणाएं थीं।

काशी ने भक्ति की लोकोन्मुखी भावना का नेतृत्व किया। संस्कृत गहिरो कूप है, भाखा बहती नीर' कहनेवाले कबीर था 'सियनि सुहावनि टाट पटोरे' कहने वाले तुलसीदास सी नव विकसित भक्ति चेतना के प्रतीक थे। 'भगती द्राविड़ ऊपजी लाये रामानन्द' में कबीर का स्पष्ट संकेत उस अवतारवादी भक्ति आन्दोलन से है जिसकी जड़ें रामानुज के विशिष्टाद्वैत में है पर जिसे अपनी अभिव्यंजना के लिये न केवल रामानन्द का सहारा लेना पड़ा है बल्कि लम्बी दूरी पार करके दक्षिण से उत्तर काशी तक आना पड़ा है। काशी अब तक साधना पीठ बन चुकी थी, बिना वहाँ सिद्धि पाये सफल की आशा ही व्यर्थ थी।

इस परम्परा को कबीर तथा तुलसी ऐसे महान् कवि दार्शनिक मिले। एक ने माया के रहस्यावरण के उस ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिपे सत्य पुरुष की ओर संकेत किया दूसरे ने उसे ... की गोद में उतार कर 'दशरथ अजिर' का बिहारी बना... एक ने दुनिया की दुष्कृतियों से कभी समझौता नहीं... दूसरे ने विश्व की रावण संस्कृति के विरुद्ध स... सद्‌भावना का युद्ध लड़ा। दोनों ने जिस संस्कृति का... किया उसी पर बाद की जातीय संस्कृति के उन्नत... स्थापित किये गये। आज भी तुलसीघाट पर रा... स्वप्न उतरते हैं और कबीरमठ में निर्गुण का अनह... होता है। समन्वय की यह परम्परा भक्त कवि रैदास में... चरम सिद्धि प्राप्त करती है। 'प्रभुजी तुम चन्दन हम पा... इसी सिद्धि की स्वीकृति है। धन्ना और मीराबाई ऐसे... ने भी रैदास के स्मरण में मस्तक झुकाये हैं।

एक बार अब्दुल रहीम खानखाना इस प्रदेश के ... थे, उन्होंने काशी में गंगा के तटपर विभोर होकर लि...

अच्युत चरन तरंगिनी शिव सिर मालतिमाल।
विधि न बनायो सुरसरी कीजै इन्दव भाल।

जैसे रहीम को वैसे ही तुलसी को इस काशी... सुरसरि ने प्रेरणा का स्रोत दिया था। उन्होंने लिखा—

मुक्ति जन्म-महि जानि ज्ञान खानि अघ हानिकर।
जहां बस संभुभवानि सो काशी सेइय कसन।

कबीर को भी 'काशी का जुलाहा' कहने में ग... अनुभव होता था और रैदास तो 'पास काशी पसु ढोर... थे ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीतिकाल में पुनः दरबारों की कविता का प्राधान्य होनेपर एक बार काशी का कवि मण्डल पीछे पड़ गया पर मुगल राजवंश के पतन तथा काशी राज्य के विकास के साथ-साथ कवियों की नयी परम्परा प्रकाश में आयी यह परम्परा उत्तर रीतिकाल में इतनी महत्वपूर्ण थी कि श्री ग्रियर्सन महोदय को 'काशी के कवि' नामक एक नये विभाग की अवतारणा करनी पड़ी। बुन्देलखण्ड, व्रज, बैसवाड़ा तथा काशी इन्हीं चार मण्डलों में तत्कालीन हिन्दी कविता विकसित हो रही थी, शिवसिंह 'सरोज' ने भी इस सत्य को स्वीकार किया है। इस समय के कवियों में श्री हरिनाथ, मनियार सिंह, रघुनाथ बन्दीजन मणिदेव। महाभारत के अनुवादक-सेवक हनुमान बेनी, रामसहाय दास। चौबेपुर, लाल आदि प्रमुख थे। ये सभी किसी न किसी प्रकार काशी राज्य से सम्बद्ध थे। इनमें से सेवक, रामसहाय दास तथा रघुनाथ बन्दीजन की रचनायें विशिष्ट प्रभाव वाली हैं।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के प्रसिद्ध होने के पहिले काशी में काव्य रसिकों की इस परम्परा ने एक मनोरम वातावरण बना रखा था। बाबा दीनदयाल गिरि, श्री गोपालचन्द्रजी तथा श्री सरदार कवि उस काव्यमण्डल के प्राण थे। काष्ठजिह्व स्वामी की रचनाओं का प्रभाव बढ़ रहा था। श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के आगमन से काशी का साहित्याकाश नयी प्रभा से जगमग हो उठा। भारतेन्दु तथा तत्कालीन विचारकों के माध्यम से देश में नवीन चेतना का प्रचार भी हुआ। अंग्रेजी शासन की स्थापना के बाद शहरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जागनेवाली नयी गोष्ठियों ने सामाजिक चेतना का विका करने का ऐतिहासिक कार्य किया। भारतेन्दु मण्डल का की उसी चेतना का प्रतीक था जिसने गोस्वामी श्री तुलसी दासजी के बाद एक बार पुन: उत्तर भारत की सांस्कृति सामाजिक चेतना का नेतृत्व किया। एक ओर उन्हों सामाजिक सुधारों में डट कर हिस्सा लिया और इसके लि नाटकों को माध्यम बनाया। 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' के माध्य से उन्होंने इस सर्वोत्कृष्ट वर्ग का प्रकाशन किया और हिं के सेवकों का एक विशाल वर्ग प्रस्तुत कर दिया। क्या नाट क्या कविता, क्या निबन्ध क्या व्यंग हास्य, क्या विवेचन सभी क्षेत्रों में उन्होंने नयी तरह से लिखा और लोगों लिखने के लिये प्रेरित किया। एक ओर सरदार लछिरा देवीसहाय, अम्बिका दत्त व्यास, नारायण, सुमेर हरि रसी तथा द्विज कवि के साथ वे प्राचीन कविता का निर्माण कर थे दूसरी ओर श्री राधाकृष्ण दास, रामकृष्ण वर्मा, कार्ति प्रसाद खत्री, सुधाकर द्विवेदी, प्रताप नारायण आदि को न रचनाओं की प्रेरणा देते थे। इन्हीं चरण चिन्हों पर चल हुये श्री किशोरी लाल गोस्वामी, देवकीनन्दन खत्री, गोपा राम गहमरी आये। हिन्दी में उपन्यास साहित्य का प्रार भी काशी ने किया। बाबू रामकृष्ण वर्मा का 'आदर्श हिन् गोस्वामी के १०० के लगभग उपन्यास खत्री का 'चन्द्रकान्ता' गहमरी का जासूसी साहित्य इन्हीं रास्तों से चलकर प्रेमचन्द जैसे लेखकों का प्रादुर्भाव हुआ।

नाटकों का प्रारम्भ भी काशी से ही हुआ। सर्वश्री गोपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्र, भारतेन्दु, राधाकृष्ण दास, के चरण चिन्हों पर विकास करते हुये हम जयशंकर प्रसाद तक आये।

हिन्दी पत्रकारिता भी काशी की ऋणी है। श्री भारतेन्दु, राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' के बनारस अखबार से चलकर हम बाबूराव विष्णु पराड़कर तथा 'आज' तक पहुँचे।

श्री रत्नाकर ने भारतेन्दु के पश्चात् ब्रजभाषा कविता में नये प्रयोग किये और उसे काव्य रसिकों के गले का शृंगार बनाया। उनके 'उद्धव शतक' में देव, मतिराम, पद्माकर तथा द्विजदेव की परम्परा ने नया जन्म लिया।

खड़ी बोली में हिन्दी कविता हो सकती है इसका विश्वास भारतेन्दु दिला गये थे। हरिऔध ने इस दिशा में साहस के साथ प्रयोग किये। उनका 'प्रिय प्रवास' संस्कृत वृत्तों में लिखा हुआ हिन्दी का प्रथम काव्य है।

द्विवेदी काल में आलोचना का व्यवहारिक रूप तो देखने को मिला था किन्तु सैद्धान्तिक आलोचना की स्थापना आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल ने ही की थी। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखकर एक ओर जहां उन्होंने हिन्दी का पहला व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक इतिहास प्रस्तुत किया वहीं तुलसी, जायसी, सूर की विस्तृत भूमिकाएँ लिखकर आलोचना के नये मान स्थापित किये। उनके इस कार्य को काशी में ही श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने आगे बढ़ाया।

हिन्दी को सम्पूर्ण देश की प्रतिनिधि भाषा बनाने का आन्दोलन काशी से ही चला। स्वयं भारतेन्दु ने इस दशा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत किया था —

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति की मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय की सूल॥

जहां महामना मालवीयजी ने इसे आन्दोलन का दिया वहीं डा० श्यामसुन्दर दास ने इसके निर्माण का उठाया। वे स्वयं में एक संस्था थे। नागरी प्रचारिणी की स्थापना से उन्होंने इस दिशा में ऐतिहासिक कार्य कि

छायावाद के प्रारम्भ होने के पहले काशी में साहित्ि का वैसा ही जमघट था जैसा भारतेन्दु के विकास के यहां था। रत्नाकर, लाला भगवान दीन, लक्ष्मण नार गर्दे, गोविन्द शास्त्री डुगवेकर, डा० भगवान दास, राम गौड़ आदि प्रथम श्रेणी के विचारक रचना कार्य में त थे।

प्रसादजी के प्रादुर्भाव के साथ हिन्दी में जिस छाया का प्रारम्भ हुआ उसका नेतृत्व भी काशी ने ही कि तुलसी भारतेन्दु की परम्परा में प्रसाद ने काशी की प्रति के युग निर्माणकारी तत्वों की स्थापना नये सिरे से उनकी कामायनी इस शती की सबसे बड़ी रचना है, इ दो मत नहीं हो सकते। उनके साथ ही रचनाकारों का नया मण्डल उदित हुआ जिसमें रामकृष्ण दास, विनोद श व्यास प्रमुख हैं।

प्रसाद के समकक्ष ही श्री प्रेमचन्द भी उपन्यास में गौ की ऊंचाई तक पहुँचे। आज यह निर्विवाद रूप से सर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य है कि गोदान ऐसी रचना अगले कई शतकों में होनी सम्भव नहीं।

सन् १९३९-४० तक काशी के इस नये विकास के प्रतीक साहित्यकार एक-एक कर अस्त हो गये। तब ऐसा लगा कि निकट भविष्य में काशी अपने गौरव की रक्षा करने में समर्थ नहीं होगी। किन्तु आज भी हिन्दी साहित्य के विविध अंगों की पूर्ति में सहायक होने वाली जैसी रचनाएँ काशी क्षेत्र से हो रही हैं उनको देखते हुये हताश होने का कोई कारण नहीं दीखता वरन् ऐसा जान पड़ता है कि काशी अपने पूर्व गौरव की रक्षा यथापूर्व करती रहेगी।

शीशे के नल
शीशे की चद्दरे
शीशे की पट्टियां तार आदि

१" से १२" गोलाई के मुंहके सब तरह व साइज के सख्त शीशेके नल तथा चद्दरें बनाने वाले।

—: भारतमें सर्वप्रथम निर्माता :—

अशोक मेटल इंडस्ट्रीज

६ शिवडी क्रोस रोड, बम्बई-१५
फोन : ६३९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आणविक मानव किस ओर

लेखिका
प्रतिभाकुमारी गुप्त

यह सही है कि विज्ञान ने नाना प्रकार के आवि[ष्कार] किये और कर रहा है। वह अपने नाना चमत्कारों के [द्वारा] बारी--बारी से मानव को चकित कर रहा है। आज म[नुष्य] विज्ञान के माध्यम से चन्द्रलोक में जाने की भी तैयारी [कर] रहा है। साथ ही उसने कई ऐसे यंत्र बनाये हैं जिनसे निखि[ल] विश्व एक ही बार में भस्मसात् हो सकता है। वह कुछ [ही] क्षण में पूरे विश्व की यात्रा कर ले सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही यह भी सच है कि भले ही हम विज्ञान के आविष्कारों के द्वारा सभ्य कहलाते हैं पर हम सभ्य हुये नहीं। हमारा तो दिनों--दिन चारित्रिक पतन हो रहा है। हम पतन के गर्त्त में बड़े धड़ल्ले से प्रवेश कर रहे हैं। सच पूछिये तो चरित्र की विशुद्धता ही वास्तविक सभ्यता है, और जब वही नहीं तो हम सभ्य कैसे हुये? विज्ञान के साथ साथ यदि मनुष्य अपने चरित्र की भी उन्नति करता तो वास्तव में वह सभ्य बनता। आज मनुष्य सिर्फ नाम और आकार से मनुष्य है, उसके कर्म तो पशु तुल्य हो गये हैं। आज सिर्फ उसे रोटी की चिन्ता है और यही चिन्ता तो पशुओं को भी रहती है। वे भी पेट भरना चाहते हैं और मानव भी पेट भरना चाहता है। दोनों ही क्षुधा की तृप्ति में संलग्न हैं। लेकिन पशुओं को विवेक नहीं होता और मानव को विवेक होता है। इसलिये मानव अपनी मानवता तो खो ही चुका, वह पशु से भी निम्न हो गया है।

आज मानव अपने मन से काम करता है। वह भोग-विलास के लिये जीता है। वह अपने पूर्वजों की बातों को नहीं मानता। हमारे वेद और उपनिषदों की बातों पर आज का मानव विश्वास नहीं करता लेकिन विज्ञान इन वेद और उपनिषदों की बातों की छान-बीन कर इसे सत्य ही पाता है। उदाहरण के लिये "गंगा का पानी चाहे कितना ही दिन रखिये वह खराब नहीं होगा" यह बात कही जाती थी तो तार्किक लोग मानते नहीं थे। जब वैज्ञानिकों ने इसकी जाँच की तो इसे सत्य पाया। इस तरह सभी तथ्यों की जाँच करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कई युग लग जायेंगे।

आज मनुष्य पैसा के लिये जीता है। पैसा ही आज उस का सर्वस्व है। वह अपनी अपेक्षा पैसे की ज्यादा कद्र करता है। वह पैसे के लिये ही मरता है और पैसे के लिये ही जीता है। पैसे के लिये एक मानव दूसरे मानव का गला काटने में कोई संकोच नहीं करता। आज समाज में जो एक-दो मनुष्य अच्छे हैं उनका आदर समाज नहीं करता। आज सच बोलनेवाले-ईमानदारी से काम करनेवाले की पूछ नहीं होती। आप दफ्तरों में ही जाइये, वहाँ जाकर देखिये, बिना रिश्वत

के कोई काम नहीं होता। आधी रिश्वत दफ्तर के क्लर्क लेते हैं और आधी अपने प्रधान अफसर को देते हैं। जो रिश्वत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देते उनका काम बनने के बजाय बिगड़ जाता है। वह क्लर्क भी जो रिश्वत नहीं लेता, उसे साहब पसन्द नहीं करते। अच्छी तरह काम करने पर भी उसकी तरक्की नहीं होती।

मुकदमे में ही देखिये, वहाँ जो वकील को अधिक रुपये दे सकता है, वह यदि खूनी भी हो तो बेदाग निकल जा सकता है और निरपराध को फाँसी हो जाती है।

योजनाओं में ही देखिए। किसी काम के लिये ५००० रुपया दिया जाय तो सिर्फ १००० उसमें खर्च होता है और बाकी ४००० अफसरों एवं कर्मचारियों की जेब में जाता है कहने का अर्थ है कि जिस प्रकार बकरी किसी दूसरे के खेत में घुसकर फसल खा लेती है उसी प्रकार मानव भी एक दूसरे का कौर छीनने में कोई कसर उठा नहीं रखता। इसीलिये तो किसी कवि ने कहा है—

मानव ने पाई देश-काल पर जय निश्चय।
मानव के पास नहीं मानव का आज हृदय॥

मतलब यह कि आज जीवन का मूल्य खतम हो चुका है। मानव पुरुषार्थ के लिये नहीं बल्कि उपभोग के लिये ही जीता है। मनुष्य को मनुष्य का विश्वास नहीं रह गया है। निर्जीव सिक्का ही विश्वसनीय हो गया है। मनुष्य का हिलना-मिलना लोकाचार मात्र रह गया है। सन्देह और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविश्वास के इस कृत्रिम वातावरण में स्नेह और सह- युक्त समाज कैसे बन सकता है ?

विज्ञान के द्वारा मनुष्य का यांत्रिक विकास हुआ हार्दिक नहीं। उसमें क्रिया है, चेतना नहीं। असन-वस व्यसन से लेकर जीवन के सभी कार्य यंत्रवत् हो गये मनुष्य का न तो अपने ही जीवन से कोई जीवित सम्बन्ध न दूसरों के जीवन से। उसमें स्नेह नहीं, सहयोग न सत्य, प्रेम और न्याय का समन्वय नहीं है।

विज्ञान के द्वारा व्यक्ति उन्नत नहीं हो सका। वह में ही क्षुद्र हो गया है। उसे ठीक अर्थ में स्वार्थी भी कहा जा सकता, क्योंकि जो यंत्रों की तरह जीवन्मृत है में न तो आत्मचेतना ही हो सकती है और न लोक चेत उससे न तो स्वार्थ ही सध सकता न परमार्थ ही। सच तो है कि प्रत्येक मनुष्य जिन्दगी के नाम पर आत्महत्या कर है। स्वयं मिट रहा है और जीवन-संघर्ष के नाम पर को मिटा रहा है। यह कैसी विडम्बना है ?

यह सब करने पर भी तो मानव सन्तुष्ट नहीं है। कैसे सन्तुष्ट हो सकता है ? वह क्या चाहता है ? यह भी नहीं जानता। इसलिये इस स्थिति को बदलना आवश्य है। मानव का उद्धार तभी हो सकता है, जब उसका परिवर्तित हो जाय। एक आदमी दूसरे आदमी को पहचा सके। एक आदमी दूसरे आदमी में विश्वास कर सके और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अपना विश्वास दे सके। किसी कवि ने सच ही कहा है--

खोजना चाहते हो, जो इन्सान में भगवान तुम,
आदमी को ही, आदमी की नजर से देखो।

उसी कवि ने फिर कहा है—

एक दिन में ही अमृत सारा जहर बन जाये,
एक दिन में ही स्वर्ग उजड़ा यह घर बन जाये।
देवता बनने-बनाने की कोशिशें जो छोड़,
सिर्फ इन्सान इन्सान अगर बन जाये॥

इस प्रकार मानव को मानवता के गुणों से विभूषित होना परमावश्यक है। मनुष्य उदरम्भरि पशु नहीं है, भावुक और प्रज्ञावान प्राणी है। भाव और प्रज्ञा से पशु भी देवकोटि में आ आता है। इसलिये मनुष्य को अपनी प्रज्ञा से काम लेना चाहिये, उसका सदुपयोग करना चाहिये, तभी वह सुखी हो सकता है।

* मननीय विचार *

स्वतन्त्रता कितनी मोहक कल्पना है? व्यक्ति सर्वस्व की बाजी लगाकर भी इसे साकार करने के लिए आतुर हो उठता है।

—अनाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गुजराती कहानी)

प्रोफेसर साहब

मूल लेखक
श्री रामचंद्र ठाकुर

अनुवादक - नामवर

अपने पूर्व-निश्चय के अनुसार बी. ए. पास करते
कुमुदिनी ने जो सबसे पहली चीज सोची, वह थी उस
अपनी शादी उसके अपने ही कालेज के अविवाहित प्रो
साहब के साथ।

प्रोफेसर साहब हिन्दू थे। तत्व-ज्ञान उनका मुख्य वि
था। वेदों एवं पुराणों पर भी उनका अध्ययन बहुत
था। गीता कंठस्थ होने के साथ-साथ बाइबिल और कु
भी उन्हें कंठस्थ थे। ऐसे विद्वान प्रोफेसर की छत्र-छाया
कुमुदिनी और विद्यार्थिनियों में सबसे आगे थी।

प्रोफेसर साहब वैसे रूप रंग में कोई अच्छे नहीं
जवानी के उतार के कारण उनका शारीरिक सौन्दर्य भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। ट्युशन उन्हें उनके एकान्त-प्रिय स्वभाव के नाते नहीं मिलते थे। कालेज में दो घंटों के बाद, तीन चार घंटे वे नित्य कुछ अच्छे विद्यार्थियों के साथ पुस्तकीय-चर्चा में बिताते और फिर दिन के शेष समय को वे अपने नन्हें से बागीचे में कुछ पुस्तकें पढ़कर बिता देते थे। किन्तु एक वस्तु जो उनके व्यक्तित्व को इतने पर भी उठा देती थी, वह थी उनके चेहरे की गहरी गंभीरता, जो कि लोगों को अद्भुत विद्वता से आतंकित कर देती थी स्वभाव से वे बहुत ही मितभाषी थे। अपने मनोरंजन के लिये वे माह में एक दो बार ही घर से सिनेमा देखने जाया करते थे। किन्तु इतने पर भी लड़कों से अधिक लड़कियाँ उनकी ओर काफी आकर्षित होती थीं। किसी भी साहित्यिक-गोष्ठी, वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं नाट्य-प्रतियोगिता में अध्यक्ष एवं निर्णायक के रूप में लोक-प्रिय प्रोफेसर मुकुट बिहारी साहब का नाम अवश्य सर्वसम्मत्ति से ले लिया जाता था। प्रोफेसर साहब विद्यार्थियों एवं विद्यार्थिनियों में समान रूप से घुले मिले थे। सभी की बातें वे बड़ी सहानुभूति के साथ ध्यान पूर्वक सुनते थे और स्वयं जब जो भी कुछ कहते, उनके—एक एक शब्द से अथाह गंभीर अध्ययन की गहराई दिखाई देती। उनके इसी मीठे व्यवहार के कारण लोग उनके इशारे पर नाचते फिरते थे।

कुमुदिनी गुजराती-साहित्य-मण्डल की मंत्रिणी थी, जिसके कारण वह काफी लोकप्रिय हो गई थी। उसका अनुपम सौन्दर्य भी और कालेजों के लिये एक दिलचस्प चर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विषय था। सौन्दर्य और ज्ञान से गर्वित कितनी लड़कियाँ उससे ईर्ष्या करती फिरतीं थीं। कितने ही प्र बुद्धि के विद्यार्थी-गण भी उसके ऊपर लट्टू बने फिरते थे।

आखिर बी. ए. की परीक्षा में हुआ भी वही जिस लोगों को आशा थी। इस साल बी. ए. की परीक्षा कुमुदिनी प्रथम श्रेणी में सफल घोषित की गई। उस कुमुदिनी मारे उछाह के जैसे समा ही नहीं रही थी। दिन कुमुदिनी के धनी पिता ने भी प्रोफेसर मुकुट बि को अपने घर पर बुलाकर खूब सम्मान किया। क्यों उन्हीं की विशेष कृपा से ही कुमुदिनी को यह खुशी दे को मिली थी। सम्मान का समारोह समाप्त हो जाने कुमुदिनी प्रोफेसर साहब को अपने अभ्यास-कक्ष में ले और उन्हें कुर्सी पर बैठा दिया और फिर......बहुत दिनों संजोयी हुई तमन्ना को कुमुदिनी ने सकुचाते सकुचाते शर्म के साथ अपनी आँखों को जमीन में गड़ाकर कह दिया।

—

उस दिन कुमुदिनी ने प्रोफेसर साहब से बड़ी लज्जा भावावेश में क्या कहा! यह बात ठीक उसके तीसरे दिन सारे शहर में फैल गई कि गंभीर, ब्रह्मचारी, एकांत-प्रि एवं विद्वान प्रोफेसर साहब के साथ कुमुदिनी का वि हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था में प्रोफेसर साहब कुमुदिनी से बीस साल बड़े थे। इस बात को लेकर कालेजों में कितनी कानाफूसी की गई, किन्तु इतने पर भी प्रोफेसर साहब के प्रति लोगों की ईर्ष्या ही जागी।

प्रेम क्या है? वह कब और किस तरह जागता है? यह पूछना व्यर्थ है। कुमुदिनी भी गंभीर स्वभाव की स्त्री थी। उसके प्रत्येक कार्य से गंभीरता फूटती रहती थी। उसके इसी स्वभाव के कारण ही लोग यह न जान सके कि वह कब और कैसे प्रोफेसर साहब से आकर्षित हो बैठी। चाहे जो भी हो पर इतना तो सत्य है कि विवाहोपरान्त कुमुदिनी के आनंद का पार न रहा। उसके पिता आरंभ में अवश्य उसके इस विवाह से नाराज थे, किन्तु बाद में चलकर ईश्वर की इच्छा को बलवान मानकर उन्होंने भी अपने दिल से इस नाराजगी को निकाल दिया। कुमुदिनी भी एक आदर्श हिन्दू गृहिणी होने के नाते प्रोफेसर साहब के अनुकूल बनने का प्रयत्न करने लगी।

"क्या सोच रहे हैं? चाय ठण्डी हुई जाती है।" हमेशा की तरह कुमुदिनी ने अपने पतिदेव प्रोफेसर साहब श्री मुकुट बिहारीजी की गंभीर विचार-तंद्रा को भंग करते हुये कहा। एकारक प्रोफेसर साहब विचारों की तंद्रा से जाग पड़े और मुस्कराते हुये बोले "ओह! मुझे कल्पना भी नहीं थी।" "किसकी कल्पना" कुमुदिनी ने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा। किन्तु प्रोफेसर साहब पहले की तरह ही बोले चले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा रहे थे, कितने सुन्दर और स्वतंत्र विचार हैं। शैली
कितनी अच्छी है !" और फिर वे खिड़की की ओर
लगे। "मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है कि
किससे और क्या कह रहे हैं ?" कुमुदिनी ने तथ्य को
के लिये अपने धीरज-रूपी बाँध को तोड़ते हुये।
"ओह !" प्रोफेसर साहब ने अपनी पत्नी की ओर देखा।
अपने होठों पर एक दार्शनिक मुस्कान बिखेरते हुये
लोक से धरती पर आकर बोले "ओह ! तुम्हें कहना तो
ही गया। जादूराम के बारे में सोच रहा हूँ। "जादूराम
कौन ?" कुमुदिनी ने आश्चर्य से पूछा। "मेरा एक वि
है, जो इस साल जूनियर बी. ए. का विद्यार्थी है। बहु
प्रतिभाशाली छात्र है। जिस दिन तुम अपने पिता के
गई थी, उसी दिन मैंने दत्तू को भेजकर उसे अपने
पर बुलाया था। तुम होती तो देखती कि हाँ, यह भी
विद्यार्थी है ! कितना मिष्टभाषी एवं संकोची है !
लगता है तो लगता है होठों से फूल झड़ रहे हैं।"
एक वर्ष तक तुमने उसकी चर्चा क्यों नहीं की ?" कुमु
ने साश्चर्य पूछा। पिछली छः माही परीक्षा में वह बै
नहीं, संगीत का बड़ा शौकीन है। जब वह अपने हा
सितार लेता है, तब तो तत्वज्ञान की सारी पुस्तकें एक
हट जाती हैं।' इस प्रकार से प्रोफेसर साहब जादूराम
प्रशंसा किये जा रहे थे। जिसे कुमुदिनी बड़े ध्यान से सुन
थी। अन्त में प्रोफेसर साहब ने कहा कि 'खैर। कल
ही मैंने उसे अपने यहाँ पर बुलवाया है। तुम भी मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की परीक्षा कल कर लेना।'

और फिर इसके बाद कुमुदिनी सोचने लगी कि आखिर जादूराम कितना सौभाग्यशाली, प्रतिभा संपन्न एवं आदर्श विद्यार्थी होगा जिससे कि उसका प्रोफेसर भी पूर्ण संतुष्ट है। कठिन परिश्रम के उपरांत भी वह स्वयं प्रोफेसर साहब को अपने विद्यार्थी जीवन में सिर्फ आधा ही संतुष्ट कर पाई थी। फिर यह जादूराम कैसा होगा जिसने उस आधे को भी पूरा कर दिया! कुमुदिनी यह सब सोच ही रही थी कि एकाएक किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। कुमुदिनी दीवान खाने में से चौंक उठी। उसने आगे यह सुना कि बाहर वाले कमरे से प्रोफेसर साहब कह रहे थे 'ओ! हल्लो। आओ आओ अंदर आ जाओ जादू। यह अपने साथ क्या लेते आए? फिर आदेशानुसार बड़े संकोच के साथ जादूराम ने सितार के साथ कमरे में प्रवेश किया। प्रोफेसर साहब जैसे गद्‌गद् हो उठे, और उसे अपने पास के सोफे पर बैठने का आदेश दिया। इधर कुमुदिनी को शाम की बात भी याद आ गई। फिर भी उसने अपनी दासी रमा से कहा कि 'जरा देखो कौन आया है?' और फिर रमा दासी ने लौटकर उत्तर दिया कि माँ जी! आदमी के कपड़ों में कोई फैशनेबुल बाई लगती है।' कुमुदिनी को थोड़ा आश्चर्य भी हुआ कि आखिर यह कौन? और फिर जब उसने कमरे से झाँक कर देखा तो हँसने लगी। इसी बीच एकाएक प्रोफेसर साहब की आवाज आई 'कुमुदिनी' और फिर कुमुदिनी ने रमा के हाथ में चाय की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपेली सौंपकर बाहर वाले कमरे में प्रवेश किया। देखा कि, उसके सामने उसी की उमर का एक मध्य सौम्य पुरुष जिसके बाल लंबे लंबे तथा घुंघराले थे, साफ कटी हुई थीं, शेरवानी और पाजामा पहने सोफे बैठा हुआ था। 'कल तुम जिसे देखने के लिए बड़ी लाल हो रही थी यह वही जादू है' प्रोफेसर साहब ने मुस्करा हुए परिचय दिया।

परस्पर अभिवादन के बाद कुमुदिनी को ऐसा लगा कोई उसे अपनी ओर खींच रहा हो। वह इस आन्तरिक पुथल से मन ही मन परेशान हो उठी। उसे ऐसा लग था जैसे जादू ने सचमुच उसके ऊपर जादू कर दिया आतिथ्य के बहाने से वह मुस्कराती हुई अंदर चली भीतर जाकर उसने महसूस किया कि उसका दिल बड़े के साथ धड़क रहा है। उसके सारे शरीर में जैसे कोई आग लग रही थी। नाश्ते को अजीब उतावली के साथ पर भी उसे लगा कि जैसे तश्तरी में किसी वस्तु की रह गई हो। आखिर क्या कमी रह गई है वह? इसके वह स्वयं परेशान हो गई। उसके हाथ काँपने लगे। मन स्थिति विचित्र सी हो गई।

नाश्ते के बाद जादू ने गाना प्रारम्भ किया, तब तो एक अजीब दिलकश समाँ बाँध गया। कुमुदिनी एक जादू को देख रही थी। प्रोफेसर साहब आँखें मूंदकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहरी का आनंद ले रहे थे। गीत समाप्त होने पर प्रोफेसर साहब एवं जादू के बीच कुछ विनोदी वार्तालाप हुए जिसके अंतर्गत कुमुदिनी बड़ी चतुराई के साथ अपनी कनखियों से जादू को बार बार देखती रही। बहुत संयम के बाद भी उसकी आँखें रहरह कर बीच बीच में अनुकूल अवसर पाते ही जादू की आँखों से लड़ ही जाती थीं। कुमुदिनी ने अंत में यह निश्चय कर लिया कि सुन्दरता, संगीत एवं प्रतिभा के साथ साथ जादू में कुछ विचित्र सा आकर्षण है।

बी. ए. की परीक्षा में जादू सर्वप्रथम आया। विश्व विद्यालय में आज तक किसी भी विद्यार्थी ने इतने अधिक अंकों से सफलता नहीं प्राप्त की। इस दिन प्रोफेसर साहब को पहली बार अपने जीवन से संतोष हुआ।

इन दिनों जादू प्रोफेसर साहब से इतना घुल मिल गया उनके घर का ही एक सदस्य बन गया। किसी दिन यदि जादू प्रोफेसर साहब को अपनी सूरत न दिखा पाता तो प्रोफेसर साहब के वात्सल्य की व्याकुलता इतनी बढ़ जाती कि वे अनायास ही जादू के घर पर पहुँच जाते। जादू का संगीत उनके ऊपर भी जादू कर गया था। जादू के आने से प्रोफेसर साहब को एक दूसरी भी सुविधा यह हो गई कि अपनी पत्नी कुमुदिनी को--जिसे कि वे अपनी आदत के अनुसार कभी भी बाहर साथ घुमा नहीं पाते थे, वह काम अब जादू करने लगा। वैसे भी वह अपनी पत्नी को साथ घुमाना पसंद नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे। जादू ने उस कार्य को अपने सिर पर ले लिया

इस तरह से थोड़े ही दिनों में जादू को कुमुदिनी के हर कार्य की निगरानी रखनी पड़ती थी। फलस्वरूप और कुमुदिनी की मैत्री दिनों दिन गाढ़ी होती गई। इधर प्रोफेसर साहब भी अपनी बहुत सी जिम्मेदारि छुट्टी पा गये। सच यह था कि जादू के ऊपर प्रोफेसर का जितना वात्सल्य था, उतना विश्वास भी था।

संध्या की वेला थी। इसी समय प्रोफेसर साहब रोज़ तरह--सागर तट से घर की ओर लौट रहे थे। प्रवेश किया तो दीवान खाने में उन्हें कोई न मि रमा दासी शायद किसी काम से बाहर गई हुई थी। प्रकार के सांसारिक चिन्तनों में व्यक्त प्रोफेसर साहब ने ही घर के दूसरे खण्ड में कदम रक्खा त्यों ही वे जैसे से गए। वे एकाएक पीछे की ओर घूम गए। उनका शरीर क्रोध से काँपने लगा। हृदय पर किसी आकस्मि आघात से जैसे वे बौखला से उठे, दीवान खाने की दीवा सटकर वे खड़े हो गए।

भीतर वाले कमरे में जादू और कुमुदिनी दोनों खड़े कुमुदिनी जादू की छाती पर अपना सिर टिकाए खड़ी प्रेम के आवेश में भरकर जादू अपने हाथ से कुमुदिनी की को सहलाए जा रहा था। पास की खिड़की से सांध्य का मद्धिम सुनहला प्रकाश इन दोनों की जवानी पर पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इधर प्रोफेसर साहब का खून जैसे सूखता जा रहा था। उनका दिमाग जैसे ठप होता जा रहा था। मुट्ठी बाँधकर उन्होंने फिर कमरे में देखा। कमरे में जादू और कुमुदिनी पूर्ण निःशब्द खड़े थे। सहसा उनके मन में आया कि वे चिल्लाएं। किन्तु न जाने फिर क्या सोचकर रह गए। उन्होंने धीरे से घर से बाहर ही निकल जाना उचित समझा। उनके हृदय में तुमुल युद्ध छिड़ा हुआ था।

रात को प्रोफेसर साहब बहुत देर से आए, अपनी जिन्दगी में इतनी देरी से वे पहली ही बार घर आए थे।

'कहाँ गए थे आज आपने इतनी देर की? पति की प्रतीक्षा में पागल होकर कुमुदिनी ने आते ही प्रश्न किया। किन्तु प्रोफेसर साहब ने इसका कोई उत्तर ही नहीं दिया। जैसे कि उन्होंने कुछ सुना ही नहीं। पलभर के लिये एकटक कुमुदिनी को देखने लगे। दृष्टि के इस रंग से कुमुदिनी को आज उन्होंने पहली बार देखा। कुमुदिनी का हृदय किसी अज्ञात शंका से धड़कने लगा। इसी बीच प्रोफेसर साहब के चेहरे पर पूर्ववत् गंभीर मुस्कान तैर गई, जिसे देखकर कुमुदिनी की जान में जान आ गई। फिर बोले "समुद्र के किनारे बैठा हुआ था।" आगे कुमुदिनी ने भी कुछ नहीं पूछा, और तुरंत रसोई घर में चली गई।

दूसरे दिन पूरे दिन भर जादू नहीं आया। तीसरे दिन भी वही बात हुई। इस प्रकार से एक सप्ताह तक जादू नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई पड़ा। इधर धीरे २ प्रोफेसर साहब ने अपना और भी बंद कर दिया। वे जब भी कुछ बोलते तो लगता जैसे कोई भारी बात छिपा रहे हैं।

एक रात को प्रोफेसर साहब ने बहुत ही बेचैन कुमुदिनी से पूछा कि "इधर कई दिनों से जादू क्यों नहीं रहा है?" जिसके उत्तर में कुमुदिनी ने अपने आप को सम्हालते हुये कहा कि "मैंने ही उसे यहाँ आने से मना दिया है।" "वह क्यों?" प्रोफेसर साहब ने पूछा। "यहाँ आना मुझे अच्छा नहीं लगता।" कुमुदिनी ने प्रोफेसर साहब ने इस बार कुमुदिनी को घूरकर देखा, उसके हाथों को अपने हाथों में लेते हुये धीमी आवाज़ कहा—"कुमुद! तू उसे चाहती है?" सहसा कुमुदिनी शरीर में जैसे बिजली कौंध गई। उसने अपने पास बैठे अपने पति के चेहरे की ओर देखा, जिस पर तिरस्कार क्रोध किसी भी प्रकार का कोई कटाक्ष नहीं था। कुमुद का दिल जैसे हिल गया। लगता था जैसे किसीने जबान खींच ली हो। उसकी आँखों में आँसू छलछला उसने अपने दोनों हाथों से अपने मुँह को ढाँप लिया पति की गोद में जा गिरी। पति का काँपता हुआ हाथ पीठ पर फिरने लगा। दूर के टावर की घड़ी इस समय बजा रही थी। रात की उस निर्जनता में सन्न से एक आई और चली गई। प्रोफेसर साहब का दिल बार बार कह रहा था कि "तेरा कोई दोष नहीं है कुमुद।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर एक दिन प्रोफेसर साहब ने जादू को बुलवाकर पूछ ही लिया "जादू ! किसी भी तरह से तुम्हें घबड़ाने की तनिक भी जरूरत नहीं है। तू सच सच ईमानदारी के साथ सिर्फ इतना बता दे कि तू कुमुदिनी के सौन्दर्य को चाहता है, या उसकी विद्वता को।" "मुझे कुछ भी नहीं मालूम।" जादू ने अपनी दोनों आँखों को जमीन में गाड़ते हुये कहा। "परन्तु तू इसे चाहता तो है न ?" इस प्रश्न को प्रोफेसर साहब ने तीन बार दुहराया। जिसके उत्तर में जादूने मात्र अपने स्वीकृति-सूचक सिर को हिला दिया। "जादू ! मेरे सामने देख !" प्रोफेसर साहब के इतना कहने पर बड़ी मेहनत के साथ जादू ने अपने सिर को ऊपर उठाया। प्रोफेसर साहब खाट पर से धीरे से उठ खड़े हुये और उसी तरह जादू ने भी उनका अनुकरण किया। हमेशा की तरह हँसते हुये प्रोफेसर साहब ने जादू के कंधे पर हाथ रखते हुये कहा—"जादू ! कल ही मैं कुमुदिनी को तलाक देता हूँ। किन्तु तू मुझे इस बात का वचन दें कि तू कुमुदिनी से विवाह अवश्य करेगा।"

जादू काँपता हुआ प्रोफेसर साहब को देख रहा था। उसका खून जैसे जम रहा था। पलभर के लिये वह जैसे अपनी सुध बुध खो बैठा। प्रोफेसर साहब ने अब की बार जादू के कंधे को दबाते हुये बड़ी गंभीरता के साथ धीरे से कहा "देखना जादू ! शादी के बाद इसकी देखभाल खूब करना। यदि तू इसे छोड़ देगा तो यह कहीं की न रहेगी। हमेशा के लिये यह बेचारी समाज से उठ जायेगी।" जादू ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना सुनकर कुछ कहना चाहा कि उसके पहले ही प्रोफे साहब कमरे से बाहर चले गये।

दूसरे दिन सारे शहर में यह बात बिजली की फैल गई कि प्रोफेसर साहब ने कुमुदिनी को तलाक दे दि किन्तु इससे भी अधिक चौंका देने वाली बात शहरवासियों लिये तब हुई, जब इसके एक सप्ताह बाद ही जादू के कुमुदिनी का विवाह रामकृष्ण-वाड़ी में सम्पन्न हुआ।

आज प्रोफेसर साहब अपने प्यारे उद्यान में हमेशा तरह अकेले बैठे हुये थे। कुमुदिनी के बिना उनका घर किसी उजाड़ खण्डहर की तरह लग रहा था। कि फिर भी वे बिल्कुल अकेले नहीं थे। उनके पास उनकी प्रिय पुस्तकें बिखरी हुई थीं। जिसमें से एक पुस्तक पड़ी थी। उनकी निगाह इस समय श्री ई. एच. ब्रेडली सिर्फ एक पंक्ति पर अँटकी हुई थी—"रिवर फ्लोज टू दी अँण्ड दी सेल्फ लूजेज इट सेल्फ इन लव" प्रोफेसर सा ने अपनी निगाह को ऊपर उठाते हुये मन ही मन कहा- "नदी सागर को ओर बहती है, और इसे ऐसा करना चाहिये, वर्ना मैदान में सूखकर समाप्त हो जाने की पू संभावना है। कुमुद दरअसल जादू के लिये ही बनाई थी। और......पुस्तकें मेरे लिये........।

* मननीय विचार *

जो लोग आजादी के आराम को ज्यादा पसंद करते स्वतन्त्रता के सुख का मूल्य अधिक मानते हैं, वे आराम पाते हैं और आनाड़ी ही रह सकते हैं।

—दादा धर्माधिकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या तुलसीदास नारी निंदक थे?

लेखक :
श्री रामचन्द्र छांगाणी, विशारद

मानव जीवन बड़ा ही विचित्र है। क्षण-क्षण में उसकी बुद्धि में मतान्तर होते ही रहते हैं और ये मतान्मर ही उसकी बुद्धि में जाल फैलाकर नाना प्रकार से उसे विचलित कर देते हैं।

परमादरणीय गोस्वामीजी महाराज के बारे में भी कुछ विद्वानों की धारणा बन गई है, कि वे 'नारी-निंदक' थे। उन्होंने नारी जाति पर लांछन लगाकर उसे अपमानिन किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। यही एक कुविचार का भूत अभीतक मानव-जा... सिर पर सवार हो कर उन्हें विचलित कर रहा है।

प्रथम तो हमें गोस्वामीजी की निन्दा के विषय... 'काल-निर्णय' करना अनुचित न होगा क्योंकि युग की... ही कवि और साहित्यकार के विचारों को पोषकता और... प्रदान करती है।

जब गोस्वामीजी का आविर्भाव हुआ उस समय... पावनभूमि भारत पर महमूद गजनवी आदि अनेक मुस... राजाओं ने भारत की पावनता को नष्ट करने के हेतु... बढ़ाये थे। धर्म की पताका जीर्ण होकर चिथड़ों का... ले चुकी थी आपसी वैमनस्य ने श्रद्धा से पूजी जाने... भगवान् की मूर्तियों को क्षत-विक्षत कर भारतीय... की आत्मा को गहरी ठेस पहुँचाई थी। क्या नर क्या... सभी धर्म प्रतिष्ठा से विचलित हो उठे थे। अनाचारों... घोर--युग ने कलुषित--विचारों को जन्म दिया और धर्म... शांतिमय विचारों की होली मचा दी ऐसे ही समय....

एक लोकमंगलकारी भावनाओं का असाधारण मानव ह... धर्म की पताका लेकर पापाचार के पुञ्ज को नष्ट करने के... आगे बढ़ा वे थे गोस्वामीजी।

उनकी अलौकिक प्रतिभा ने देश की पावनता को... रखने की ठानी। उन्होंने उस युग को 'राम--मय' बना दि... ऐसे ही समय 'श्री रामचरित मानस' की रचना से धर्म-... दाओं का पालन होने लगा। भारतीयता के धर्म, आचा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार, जाति, श्रद्धा, प्रतिष्ठा पर जो कलंक की कालिख लगी थी, एक महान आत्मा ने उसे धोकर मंगलमय बना दिया।

आज उसी आत्मा पर विद्वान् लोग नारी-निन्दा का दोष मढ़ रहे हैं। यदि हमें कोई विषय खटकता हो तो, उसपर एकदम लांछन न लगाकर तनिक उसकी विशद विवेचना कर, उसमें पाई जाने वाली कमजोरी का सूक्ष्मतम दृष्टि से अवलोकन कर लेना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए मानस में जो अच्छाइयां हम पाते हैं, उनसे उसमें दिखाई देने वाली बुराइयां लुप्त सी हो जाती हैं।

जब हम उस विषय को लेकर उसकी गहराई में उतरेंगे, तो हमें यही प्रतीत होगा कि जो मनुष्य लोक मंगलकारी भावना को लेकर मानव-जाति का उद्धार कर उन्हें लौकिक और पारलौकिक सुधार करने को पृथ्वी पर आया है। वह नारी निन्दा कैसे कर सकता है ? और हम जो भ्रम के भूत की बातों में जकड़ गये हैं, यह कहाँतक सार्थक है ?

जहाँ जहाँ हम नारी-निन्दा के स्वरूप को पाते हैं। वह गोस्वामीजी की आत्मा की कसक है, जिसे वे देख रहे थे। उनका हृदय नारी जाति के पतन को देखने में असमर्थ था। जिस भारतीय नारी का गौरव रघुवंश में ऐसे वर्णित है—

'दया, करुणा, क्षमा, उदारता, ये भाव भारतीय नारी के जीवन भूषण हैं। सहिष्णुता की वह मूर्ति शरीर की अपेक्षा हृदय से कहीं अधिक कोमल है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना पवित्र आदर्श है हमारी भारतीय नारी का। विचारों का पोषक मनस्वी नारी जाति में चेतना संचार और उसमें सजगता का भाव भरने को आगे बढ़ा। वही देवी-रूप नारी अपने उत्तम रूप को पुनः पासके मनुष्य लौकिक-सुधार के लिए आगे आता है, वह निन्दा करेगा, ऐसा कदापि नहीं हो सकता।

अब हमें तुलसीदास की उन पंक्तियों की ओर चाहिए जिनमें नारी निन्दा का आरोपण सिद्ध करते हैं।

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।
महावृष्टि चलि फुटि किआँरी।
जिमि सुतंत्र भये बिगरति नारी॥
नारि सुभाउ सत्य कबि कहहीं
अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥
साहस अनृत चपलता माया।
भय, अविवेक, असोच, अदाया॥

उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर गोस्वामीजी नारी-निन्दा के दोषी हैं, ऐसा मत है। जो लोग भारतीय नारी को उक्त मानस और तुलसी के प्रति घृणित-भावनाओं को जन्म देने का प्रयत्न करते हैं, उन्हें इन बातों पर ही ध्यान न देकर केवल नारी के उच्च आदर्श को स्थिर रखने की ओर ही ध्यान देना चाहिए। कोई भी चरित्र उस नारी का भूषण है जो उसके उच्च विचारों की देन है। हमारे महापुरुषों का मत तो यह है कि हजार-दिनों का यश केवल एक दिन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्र पर निर्भर रहता है। जिन गोस्वामीजी पर नारी निन्दा का दोषारोपण किया गया है, उन्होंने नारी की महानता सती अनुसुया, शबरी, कौशल्या और सुमित्रा सी धर्माचारी नारियों में दिखाई है। अतएव उन्हें हर समय उनसे शिक्षा लेनी चाहिए।

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी

कहने वाले पुरुष के मर्म को समझ लेना नितान्त आवश्यक है प्रभु समुद्र से विनय पूर्वक मार्ग माँग रहे हैं। उनके कार्य में बाधा आ रही है। परन्तु समुद्र ने धृष्टतापूर्वक हठ ठाना। समुद्र ने भगवान् के आत्म-स्वरूप का ज्ञान नहीं किया। शबरी को यह आत्म स्वरूप दृश्य हो चुका था-उसने स्वयं भगवान् से कहा-

अधम ते अधम अधम अति नारी।
तिन्ह महँ मैं मति मन्द अघारी॥

परन्तु भगवान् ने नारी जाति में तनिक भी भेदभाव न रखते हुए कहा—

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानहुँ एक भगति कर नाता॥

प्रभु ने नारी के आदर्श में अमृत की वर्षा करदी। शबरी को भगवान् ने आत्म स्वरूप दिया। कितना महान आदर्श है नारी का। श्रीराम को हम मानस में हास्य-मुद्रा में अधिक पाते हैं। उग्र रूप तो सागर की हठवादिता पर किया। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र हास्य मुद्रा में देखने वाले राम को क्रोध में नहीं सका और समुद्र ने उन्हें मार्ग दे दिया—

ढोल गवाँर शूद्र पशु नारी—

कहने वाला समुद्र भगवान् के ब्रह्म रूप को निहार नम्र बन गया—

प्रभु प्रताप मैं जान सुखाई।

जिस प्रकार समुद्र नम्र बन गया, उसी प्रकार अन्य भी नम्र बन जायें तो ताड़ना का प्रश्न ही नहीं रहेगा। तो केवल तुलनात्मक दृष्टि है कवि की। फिर वाणी ने जैसी बुद्धि दी उसने वही सोचा। यह एक सूक्ति का रूप हो सकता है। ताड़ना का प्रश्न बाद में है।

जिमि सुतंत्र भये बिगरहिं नारी।

उपरोक्त उदाहरण में जो नारी निन्दा का दोष गोस्वामी के एक एक शब्द में गूढ़ रहस्य भरा है। अनाचार के ताप में नारी जाति को दग्ध होते देख के रूप वाली नारी को वे पाप और आत्याचार की में दहकते नहीं देख सके—

महावृष्टि चलि फूटी किआरी।
जिमि सुतंत्र भये बिगरहि नारी॥

इन शब्दों द्वारा उन्होंने नारी के देवी स्वरूप को उन्हें सजग कर दिया। यदि वे नारी जाति को मत नहीं देते तो कदापि उनका यश अक्षुण्ण न रहता।

तीसरी दोषमय पंक्ति का अवलोकन इस प्रकार है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारि सुभाउ सत्य कवि कहहीं।
अवगुण आठ सदा उर रहहीं॥

मर्म की पाराकाष्ठा पर पहुँचने पर हम इन पंक्तियों में भी नारी निन्दा नहीं पाते। मंदोदरी ने रावण को सत्पथ पर लाने का प्रयत्न किया कि वे भगवान् से हठ छोड़ दे। परन्तु प्रभु पद के निकट आश्रय पाने का इच्छुक रावण—

तो न जाइ बयर हठि करऊँ।
प्रभु सर प्राण तजे भव तरऊँ॥

मन्दोदरी को टालने का कोई मार्ग न देख नारी की अवहेलना न करता तो शायद नारी मन्दोदरी से रावण पिण्ड न छुड़ा पाता। ... उसे समझाने का एक मात्र उपाय रावण ने वही जा... था कह भी दिया। अतएव उसमें नारी निंदा का आभास हल्का सा और रावण के पराक्रम और गर्व का आभास अधिक है।

अतएव नारी ...ति समस्त बातों पर विचार कर कोई भी अनुचित ... न करें। मानस में नारी निंदा के भावों को समझें कि वे ... आशय को लेकर लिखे गये हैं।

भारतीय नारी मानस से अनुसुइया, सुमित्रा, कौशल्या, भक्तिमति शबरी से योग्य शिक्षा ग्रहण करें। भारतीय नारी के गौरव को यदि वे मानस में ढूंढ़ेंगी तो उन्हें मिलेगा संतोष ही। और उनमें ये तरंगें कभी न उठ सकेंगी। मानस पर श्रद्धा रखकर ... पूर्वक विचार करेंगी तो शायद सदाचारों में उठने वाला विप्लव हमेशा के लिए शान्त हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा ऋतु में छाते की खेती

लेखक
एस. एस. कालोई

वर्षा ऋतु में आपने जर्जर, सड़ी हुई लकड़ियों या बाग-बगीचों में जहां गन्दगी काफी रहती है—छाते की शक्ल का एक मुलायम पौधा देखा होगा। यद्यपि ये गले सड़े पदार्थों पर उत्पन्न होते हैं फिर भी अधिकतर इतने रंग-बिरंगे और सुडौल होते हैं कि मनुष्य को सुगमता से आकर्षित कर लेते हैं। सभी छत्र विचित्र-विचित्र रूप से उत्पन्न होते हैं और प्रायः उसी प्रकार लोप भी हो जाते हैं। इसलिये युगों से पादप-जगत की ये विचित्रताएँ साधारण मनुष्य के लिये बड़ी आश्चर्यजनक रही हैं और यही कारण है कि हमें पौराणिक कहानियों और कथाओं में इनका निर्देश मिलता है। लोग इन्हें अनेक नामों से पुकारते आये हैं जैसे कुकुरमुत्ता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती-फूल, खुम्भी, छत्र आदि। अंगरेजी भाषा में "मशरूम" कहते हैं।

छत्र प्रायः मृतोपजीवी है। अधिकतर ये सड़ी लकड़ियों, पत्रों आदि पर ही जीवन निर्वाह करते हैं।

छत्र सम्भवतः इतिहास पूर्व काल से ही खाये जाते भक्षणीय और विषैले छत्र का बेबीलोनिया, यूनान और निवासियों को पूर्णतः पता था और इनके अतिरिक्त अनेक निर्देश हमें प्रतिष्ठित लेखों में मिलते हैं। प्राचीन लेखों में इनका उल्लेख और स्मारकों में है। प्राचीन काल में रोम के राजाओं का एक विशेष छत्र था जिसे वह बड़ी रुचि से खाते थे। इसका वै नाम "एमैनिटा जारिया" है और आजकल रोम निवासी "बोलिटस" और फ्रांसीसी "औरोगे" कहते हैं। यह जाता है कि उस समय बड़े-बड़े राजा महाराजा इनको मूल्य पात्रों में स्वयं पकाते थे और इन पात्रों को बोली कहते थे। यहां तक कि रोम निवासी इसके पीछे जाते थे। इनके महाराजा डिबेरियस ने एसीलियस के एक ऐसे वार्तालाप को, जिसमें नौलिटो आदि छत्र सबसे उच्च स्थान दिया था, लिखने के लिये करीब दो पौंड पारितोष दिया। आजकल का साधारण छत्र "सैलि कैम्पेस्ट्रिस" भी रोमन निवासी खाते थे। १६७० ई० फ्रांसीसियों की "छत्रों के लिये अत्यधिक लालसा" फ्रांसीसी रोग समझा जाता था। फ्रांस में १८७६ के पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण छत्र, "सेलिओटा कैम्पेस्ट्रिस", ही बाजारों में बिकता था। अब तो वहां अनेक प्रकार के छत्र खाये जाते हैं। 'सैप' और 'औरोगे' नाम के छत्र, जिनके वैज्ञानिक नाम क्रमशः "बोलिरस पडूलिस" और "एमैनिटा जारिया" हैं, सुखाये और परीक्षण भी किये जाते हैं। इन्हीं से फ्रांस को करीब २५०,००० फ्रैंक की प्राप्ति होती है। फरांस का शायद ही जंगल के निकट का कोई नगर हो जो आजकल वन्य छत्रों का केन्द्र न हो। इन वन्य छत्रों के अतिरिक्त पेरिस में छत्र उगाने का एक बड़ा भारी उद्योग है। पेरिस के घेरे के समय जब तरकारियों का अभाव था छत्रों ने ही फरांसीसियों की सहायता की। जर्मनी में भी युद्ध के समय खाद्य की कमी अन्य खाद्य पदार्थों को छत्रों के द्वारा आपूर्ण या प्रतिस्थापन कर पूर्ण की गई। लोगों का कहना है कि म्यूनिक, वन्य छत्रों का संसार भर से सबसे बड़ा बाजार है। जापान को लोग छत्रों की भूमि कहते थे। वहां की नम जलवायु और बड़े २ जंगल छत्रों की उत्पत्ति के लिये अनुकूल परिस्थिति हैं। कहा जाता है कि वहां छत्रों की उत्पत्ति ५००० टन से भी अधिक है। अन्य छत्रों के अतिरिक्त 'चैन्ट्रीले' नामक छत्र भी जापान में पाये जाते हैं। यही छत्र ब्रिटेन में भी बड़ी रुचि से खाया जाता है। जापानी इसे 'बिबा-टेक' कहते हैं। १७५५ में बहारा ने अपनी पुस्तक में लिखा था कि यदि यह छत्र मृत मनुष्य के शुष्क मुख में रख दिया जाय तो वह फिर से जीवित हो जावेगा। पर यह कहां तक सत्य है यह कहना कठिन है। भारतवर्ष में अधिकांश लोग छत्रों का सेवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पसन्द नहीं करते। इसका मुख्य कारण उनका सड़ी चीजों, घोड़े की लीद आदि पर पैदा होना है। अधिकतर यहां की अनार्य जातियां इनको बड़ी रुचि से खाती हैं। यहां 'साधारण' छत्र बहुतायत से पाया जाता है। और अफगानिस्तान में ये वर्षा के पश्चात् चरों में विशेष पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य वर्ग के छत्र भी खाये जाते हैं पर इनके संबध में साहित्य के अभाव के कारण कुछ लिखना सम्भव नहीं है। तिब्बत में 'ओगलाड़' 'भूंगल टिकामों' नामक बड़े छत्र अधिक पाये जाते हैं जिन्हें वैज्ञानिक 'कौर्टीनेरियस एमोडेन्सिस' कहते हैं। के निवासियोंका यह मुँह लगा खाद्य पदार्थ है।

कुछ लोग अधिकांश गुच्छी को भी छत्रों में सम्मिलित कर लेते हैं। पर यह उनकी वैज्ञानिक अज्ञानता है। वैज्ञानिक रूप से गुच्छो और छत्र दोनों भिन्न-२ वर्ग के हैं।

छत्रों के पौषिक गुण पर बहुत पहले से ही विचार किया जा रहा है। अनेक रासायनिक परीक्षणों द्वारा यह प्रमाणित हो गया है कि इनमें आध्यतः ८० से ९० प्रतिशत जल, ५ प्रतिशत 'नाइट्रोजन', ८ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, १ प्रतिशत स्नेह या (फैट) और १॥ प्रतिशत खनिज पदार्थ होते हैं। इस प्रकार रासायनिक रूप से उपयोगिता में अभिनव छत्र अधिकतर तरकारियों के समान होते हैं। भारतवर्ष के भक्षणीय छत्रों के रासायनिक विश्लेषण द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि हमारे छत्रों में प्रोटीन और स्नेह (फैट) की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन और अमरीका के छत्रों से अधिक होती है। छत्रों में विटामिन भी पर्याप्त मात्रा में रहते हैं। विटामिन 'ए', 'बी' तथा 'सी' तो अधिकतर नहीं मिलते पर विटामिन 'डी' पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहती है। इस विटामिन की छत्रों में उपस्थिति बड़े महत्व की है। क्योंकि अन्य शाकाहारी खाद्य पदार्थों में यह विटामिन यदि उपस्थित भी होती है तो केवल न्यून मात्रा में ही।

जहां कुछ छत्र भक्षणीय होते हैं वहां कुछ अत्यन्त विषैले भी होते हैं। अंग्रेजी में 'मशरूम' शब्द साधारणतः सभी प्रकार के छत्रों के लिये प्रयोग होता है पर कुछ लोग अखाद्य छत्रों को 'टोडस्टूल' कहते हैं। बिना पहचाने छत्रों को खाने से विषैले छत्रों को भी खाने की सम्भावना रहती है। यद्यपि बहुत पहले से ही लोगों ने खाद्य छत्रों को अखाद्य छत्रों से पृथक् करने की रीतियां बताई थीं पर वे सब ही अविश्वसनीय हैं वास्तव में छत्रों को पहचान करने की केवल एक ही सच्ची रीति है, वह है भिन्न प्रकार के छत्रों को उसी प्रकार निश्चित रूप से पहचानना जैसे हम गाजर, मूली, चुकन्दर आदि को पहचानते हैं और जब तक पूर्णतः निश्चित न हो जाये किसी भी प्रकार के छत्र को खाद्य-छत्रों की गिनती में लाएं। उचित तो यही होगा कि उन खाद्य छत्रों को जो विषैले छत्रों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हों उन्हें छोड़ ही दिया जाय क्योंकि साधारण मनुष्य बिना विशारदों की मदद के उनको भिन्नित नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप से सभी ऐसे छत्रों को जो रंग बदलने और सड़े
हों त्याग देना चाहिये क्योंकि ऐसी अवस्था में मांस
मछलियों की तरह इनमें भी विष पैदा होने लगता है।

भक्षणीय छत्र को उसके विशिष्ट लक्षणों द्वारा पह
के पश्चात् कृषिकरण भी किया जाता है। यद्यपि छ
कई जातियां भक्षणीय होती हैं पर प्रायः साधारण छ
ही अधिकतर कृषिकरण किया जाता है और अब
अधिक कृष्य किया जा रहा है कि अनेक देशों के लो
इससे निर्वाह होता है। इनकी कृषि कला फरांस में, पे
समीप, प्रथम बार १७०७ के लगभग उत्पन्न हुई। केवल
ठंडा बन्द स्थान या किसी बेकार मकान का खाली क
जिसमें थोड़ी वायु और मंद प्रकाश जा सके, ही छ
कर्षण के लिये उचित होता है। ऐसे स्थान पर छत्रों की श
प्रायः घोड़े की लीद और गाय के गोबर को ही मिश्रि
बनाई जाती है। इस शय्या के ऊपर भक्षणीय छत्र के जा
बो दिया जाता है। छत्रों का इस प्रकार कृषिकरण करने
प्रथम तो विषैले छत्रों से धोखा होने की सम्भावना
रहती और द्वितीय यह कि इनकी खेती प्रकृति के ऊपर
निर्भर नहीं रहती पर उनका उत्पन्न होना निश्चय रहता
आजकल केवल यूरोप और अमरीका में ही इनको बड़े
पर कृषिकरण किया जाता है। अमरीका में छत्र उद्यो
वृद्धि १९०५ से हुई। जापान में 'शिटाकि' को २००० व
बलूत और चेस्टनट के कुंदे के सुराखों में कृष्य किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दुर्भाग्यवश भारतवर्ष में छत्रों का नियमित रूप से कर्षण नहीं होता।

छत्रों से भिन्न प्रकार के सुस्वादु खाने तैयार किये जा सकते हैं और भिन्न पुस्तकों में इनके लिये भिन्न नुसखे दिये गये हैं। जिनमें से कुछ यह है:— उबले हुये भेड़ के मांस के के साथ छत्र, छत्रों से भरे हुये टमाटर, टोस्ट के साथ तले हुये छत्र, छत्रों का आचार आदि।

क्या ही अच्छा हो यदि भारतवर्ष में भी छत्रों के कृषि-करण करने का उचित प्रबन्ध किया जाय और यहां के सामान्य निवासियों में इनके प्रति जो घृणा की भावना भर गई है उसे दूर किया जाय जिससे ये रोचक पौधे भी यहां के निवासियों के भोजन का एक अंग बन सकें। जहां हम अनाज और तरकारियों को अधिक से अधिक मात्रा में उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहे हैं वहां हमारे लिये अन्य खाद्य पदार्थों को छत्रों जैसे उपयोगी पौधों से आपूर्ण या प्रतिस्थापन करना उचित ही है।

मद्रास, केरल, मैसूर, तथा आंध्र प्रदेश में हिग्गन बूथमस के रेल्वे बुक स्टालों पर रामतीर्थ मासिक मिलता है। तथा ए. एच. व्हीलर के रेल्वे बुक स्टालों पर रामतीर्थ मासिक मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खट खट खट.......

'कौन ? रमेश ?'

'हां, मैं ही हूं, मां।'

मां ने लड़खड़ाते हुए उठ कर दरवाजा खोला। रमेश कमरे में प्रवेश किया।

'तेरा मुंह उतरा हुआ क्या है, बेटा ? नौकरी मिली ?'

रमेश निरुत्तर रह गया। मां निराश हो गई। इतने में रमेश का छोटा भाई महेश आ गया।

'भैया, मेरे लिए खाने को कुछ नहीं लाए।'

'नहीं भाई, क्या करूं, नौकरी ही नहीं मिली।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेश रो पड़ा।

'भैया, मुझे भूख लगी है।'

'सुबह मैंने तुझे जो चने लाकर दिए थे, वे खा लिए तूने?'

'हां।'

मां को जोर की खांसी उठी। रमेश ने मां को सम्हाला।

'मां, दवा पी ली?'

'दवा खत्म हो गई; बेटा।

रमेश दुःख में डूब गया। मां की दवा लाने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे, छोटे से मुन्ने महेश का पेट भरने को भी कुछ नहीं था और वह खुद भी दो दिन से भूखा था।

बी. ए. पास करने के बाद रमेश ने नौकरी की खोज की। उसने कई प्राइवेट दफ्तरों में नौकरी तलाश की किन्तु उसे नौकरी कहीं न मिली। जहां जगह थी, वहां अनुभव मांगा गया या सिफारिश बिना बात नहीं बनी। रमेश के पास दोनों का ही अभाव था। इम्पलायमेन्ट एक्स्चेन्ज के द्वारा भी वह कई दफ्तरों में गया किन्तु दुर्भाग्य तो जैसे उसका हमराही हो गया था, हर जगह निराशा ही मिली। फिर भी रमेश कोशिश करता रहा।

घर की हालत धीरे-धीरे बिगड़ती गई, क्योंकि एक मात्र कमाने वाला बेकार था। स्कूल की फीस-व पढ़ाई के के अन्य खर्चे के अभाव में महेश का स्कूल जाना भी बन्द हो गया था। इधर मां कई दिन से बीमार थी। हाथ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी-सी जमा पूंजी उसकी बीमारी में चुक गई। अब मालिक भी रोजाना तकाजा करने लगा था, मकान का महीने का किराया चढ़ गया था। घर का मोटा-मोटा भी बिक चुका था। कर्ज बढ़ जाने पर अब इन लोगों के उधार के भी दरवाजे बन्द हो गए।

'रमेश...'

'अभी नौकरी नहीं मिली, माधवजी। नौकरी मिलते मैं आपका सारा रुपया अदा कर दूंगा।'

'तुम रोज यही कहते हो। मैं कहां तक सब्र करूं। बहाना अब और नहीं चलेगा।'

रमेश पहले से ही काफी परेशान था, मकान मालिक की हृदयहीनता पर उसे क्रोध आ गया।

'जब नौकरी मिली ही नहीं तो मैं आपको किराया कहां से दूं? चोरी करूं, डाका डालूं?'

'मैं और इन्तजार नहीं करूंगा। अब तुम्हें जैसे भी मेरे किराए का इन्तजाम करना ही होगा।

'आंखें मत दिखाओ, माधवजी।'

'अरे वाह, एक तो कई महीने से किराया दबाए बैठे हो मुझपर ही रौब झाड़ते हो। कान खोल कर सुनलो, अगर दिन के भीतर-भीतर मेरा किराया अदा न किया, तो सख्त कार्यवाही करनी पड़ेगी।

मां की फिर खांसी उठी। उधर महेश भी भूख से बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। रमेश बुरी तरह परेशान हो गया। मां की दवा फौरन लाना आवश्यक था। भूखके कारण वह खुद भी बेहाल हो रहा था। कुछ न कुछ किए बिना काम नहीं चलेगा। उसने उठते हुए कहा, 'मां, मैं अभी कहीं से पैसे लाकर दवा लाता हूं।

'इसकी कोई जरूरत नहीं है, रमेश। तुम मेरे लिए इतने परेशान क्यों होते हो बेटा ? मुझे यूं ही मर जाने दो।'

'नहीं मां, कुछ न खुछ करना ही पड़ेगा। 'मकान मालिक का किराया भी तो चुकाना है।'

'लेकिन तुझे पैसा देगा कौन ?'

'मैं कोशिश करूंगा।'

रमेश घर से निकल गया।

उस ने कई व्यक्तियों के आगे उधार के लिए हाथ फैलाया किन्तु उसे निराशा ही मिली। जो व्यक्ति उधार देने के लिए तैयार हुए उन्होंने बदले में कोई कीमती चीज मांगी किन्तु रमेश के पास कुछ भी नहीं था।

अन्त में निराश होकर रमेश भारी हृदय लिए घर की ओर चल दिया।

मां की दवा के लिए पैसे, महेश और उसकी भूख, मकान मालिक का किराया, यह सभी आवश्यकताएं एक साथ रमेश के मस्तिष्क में घूमने लगीं। चलते-चलते उसके कदम एक की हवेली के नीचे पहुंच कर रुक गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि का समय था। बारह बज चुके थे। सेठ की ... अंधेरे में डूबी हुई थी। केवल नीचे वाली एक बत्ती ... थी। दरवाजे के बाहर पहरेदार हाथ में लट्ठ थामे बैठा ...

रमेश को भीतर प्रवेश करने का कोई रास्ता दिखा... दिया। अन्त में वह गली में जाकर नाले के सहारे ... ऊपर चढ़ गया। उसने छज्जे पर पर रख कर एक खिड़की से भीतर झांका। भीतर लाइट जली हुई थी। वह धी... कमरे में कूद गया। कमरे में सेठ अपनी पत्नी के साथ ... हुआ था। रमेश धीरे-धीरे खोज करने लगा। उसकी ... दीवार पर टंगे हुए सेठ के कोट पर पड़ी। वह उसी ओर ... गया। सहसा सेठ ने करवट बदली। रमेश सेठ को ... हुआ समझकर घबरा गया और भागने की कोशिश में मेज ... टकरा गया। मेज पर रखा गुलदस्ता नीचे आ गिरा। उसकी आवाज से सेठ उठ बैठा। उसने रमेश को पकड़ ... और 'चोर-चोर' का शोर मचा दिया। रमेश सेठ को ध... देकर दरवाजे से बाहर भागा।

सेठ के चिल्लाने की आवाज से हवेली के व पास प... के लोग धड़ाधड़ बाहर निकल आए रमेश ने अपने आ... बचाने का असफल प्रयास किया।

वह जैसे ही बाहर निकल कर भागा कि चौकीदार ... उसके पैरों पर लट्ठ का भारी प्रहार किया। वह लड़खड़ा ... गिर गया। किन्तु उसने उसी क्षण उठ कर भागना चाह... चौकीदार व अन्य व्यक्तियों ने उसे पकड़ लिया और कुछ ...

देर बाद उ...
बेरहमी से...

'क्या ...

यह प...
स्वामीजी ...
क्या देवत...
थे। यही ...

'सेठज...
चोर।' ए...
लात जमा...
उसके शरी...
मी व्यक्ति ...
करण शब्द...
रहे हो?'

'आप ...
की है...'

सेठ ...
जल्दी से ...

'ठहरो...
करने की ...
गरीब को...
हवाले क...

रामती...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर बाद उसे रस्सी से जकड़ कर बैठा दिया। फिर सभी बड़ी बेरहमी से रमेश को मारने लगे।

'क्या बात हो गई, भाई। किसके यहां चोरी हो गई ?'

यह पास ही के एक मन्दिर के पुजारी जिसे लोग स्वामीजी कहा करते थे, की आवाज थी। स्वामीजी इन्सान क्या देवता तुल्य थे। वे स्वभाव से बड़े दयालु और सहृदय थे। यही कारण था कि लोग उनका बहुत आदर करते थे।

'सेठजी के यहां चोरी हो गई, स्वामीजी। यह रहा चोर।' एक व्यक्ति ने इतना कह कर रमेश के जोर से एक लात जमा दी। पिटते-पिटते रमेश बेहोश हो गया था। उसके शरीर से जगह-जगह से खून बह रहा था। इस पर भी व्यक्ति उसे बेरहमी से मार रहे थे। स्वामीजी ने बड़े करुण शब्दों में कहा, 'अरे, इस बेचारे को इस कदर क्यों मार रहे हो ?'

'आप इसे बेचारा कहते हैं, स्वामीजी। इसने चोरी की है...'

सेठ ने कहा, और अपने नौकर को आदेश दिया, दवू ! जल्दी से पुलिस को फोन करदे।'

'ठहरो, 'स्वामीजी ने आगे बढ़ कर कहा, पुलिस को फोन करने की कोई जरूरत नहीं है। एक तो तुम लोगों ने इस गरीब को इतनी बेहरमी से मारा है, दूसरे अब इसे पुलिस के हवाले करके इसकी और दुर्गती करवाना चाहते हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह चोर है।'

'इसने क्या चुराया है तुम्हारा ?'

'लोगों ने रमेश की जेबों की तलाशी ली और "इसकी जेबों में तो कुछ भी नहीं है।'

'वह तो मैंने जाग कर शोर मचा दिया था, स्वामी 'सेठ ने कहा, 'नहीं तो यह जरूर चोरी कर लेता।' स्वामीजी ने रमेश को पहचान कर आश्चर्य के साथ 'अरे यह तो रमेश है। इसे तो मैं जानता हूं। यह तो शरीफ है...। लेकिन इसने कुछ चुराया तो नहीं। फिर तुम लोगों ने इसे इतना मारा।'

स्वामीजी रमेश पर झुक गए। रमेश की ऐसी हा देख कर उनका करुण हृदय रो उठा,

सेठ ने कहा, इसने भले ही कुछ न चुराया हो, स्वामी लेकिन यह आया तो चोरी करने के उद्देश्य से ही था। चोर है!

स्वामीजी एकदम खड़े होगये और कहने लगे—

'कोई भी आदमी जन्म से ही चोर, डाकू, गुण्डा, बदम नहीं होता, सेठजी। उसको सब काम सिखाए जाते हैं औ सिखाने वाला है, हमारा समाज। मनुष्य सामाजिक प्राणी है वह जो कुछ करता है, समाज से प्रेरणा लेकर या समाज द्वा मजबूर किये जाने पर करता है। मनुष्य बुरा काम करे, दोष किसी हद तक समाज का भी है, जो मनुष्य को उस ओ धकेलता है। सेठजी, यह आपके यहां चोरी करने आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है –इस बेचारे के ऊपर भी कोई मजबूरी आई हो।'

'यह जवान हट्टा-कट्टा आदमी है, स्वामीजी क्या यह कमा नहीं सकता ?

'क्यों नहीं कमा सकता है, सेठजी। इसे कहां नौकरी ही नहीं मिली होगी।'

'नौकरी नहीं मिली तो यह व्यापार कर सकता था।'

'व्यापार के लिए पूंजी की जरूरत होती है, सेठजी। और गरीबों के पास पूंजी कहां ?'

'कुछ भी हो, स्वामीजी। यह समाज द्रोही है। आप एक अपराधी का पक्ष लेलर स्वयं भी जुर्म कर रहे हैं। कानून की दृष्टि में आप दोनों ही अपराधी हैं।'

'खामोश हम दोनों अपराधी नहीं, अपराधी हमारा समाज है। आप पैसे से अमीर हैं, सेठजी लेकिन दिल से नहीं। आज अगर यह आदमी आप ही की तरह अमीर होता तो इसका उतना ही आदर होता, जितना आपका। जरा इस गरीब की सूरत की ओर तो देखिए और बताइये, क्या यह अपराधी मालूम पड़ता है ?...बेचारा शरीफ लेकिन दुःखी मालूम पड़ता है। परिस्थितियां ने ही उसे चोरी करने को बाध्य किया होगा।'

'फिर भी यह अपराधी है, स्वामीजी, 'भीड़ में से ही किसी ने कहा, अगर आज इसे माफ कर दिया, तो इसे अपराध करने को बढ़ावा मिलेगा और यह फिर चोरी करेगा।'

कई व्यक्तियों ने उस व्यक्ति का समर्थन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामीजी ने ऊंचे स्वर में कहा, खामोश रहो मत कि तुम भी महल और हवेलियों वाले नहीं हो। तुम भी आदमी की तरह ही गरीब हो तुम्हारे ऊपर भी कभी परिस्थितियां आ सकती हैं, जो तुम्हें चोरी के लिए तो किसी की हत्या के लिए भी बाध्य कर सकती हैं। तुम मनुष्य कहलाते हो !....आश्चर्य है कि गरीब को भी एक के प्रति जरा भी हमदर्दी नहीं है। मालूम होता है कि लोगों ने कभी दुःख के दिन नहीं देखे। अगर तुम लोगों भी इसके जैसी ही बीतती तो तुम इस कदर बढ़-बढ़ कर बोलते।

स्वामीजी इसी प्रकार देर तक बोलते रहे। उनकी का लोगों पर भारी प्रभाव पड़ा। अन्त में स्वामीजी ने के बन्धन खोल डाले और उसे अपनी भुजाओं में उठा लि एक व्यक्ति ने पूछा, 'स्वामीजी। आप इसे कहां ले जा रहे

'अपने घर। इसकी मरहम-पट्टी करनी है।

'लाइये, मैं इसे आपके यहां पहुंचा दूं।'

'नहीं तुम्हें कष्ट नहीं देना चाहता।'

स्वामीजी रमेश को अपने घर ले गए। उन्होंने उसे चारपाई पर लिटा दिया और उसकी मरहम-पट्टी की। ही देर बाद रमेश को होश आ गया। होश आते ही बोला, 'कहां हूं मैं, कहां हूं मैं ?'

'घबराओ नहीं भाई, तुम मेरे घर में हो। मैं इस म का पुजारी हूं। लोगों ने तुम्हें मार-मार कर घायल कर दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मैं तुम्हें यहां उठा लाया था।'

रमेश तुरन्त उठ बैठा, 'मेरी मां सख्त बीमार है, स्वामीजी मुझे जल्दी से घर पहुंचना है।'

स्वामीजी ने रमेश को रोक लिया। स्वामीजी के पूछने पर रमेश ने चोरी करने आने का कारण और अपने घरकी स्थिति के विषय में सभी कुछ बता दिया। यह सब सुनते ही स्वामीजी का हृदय पिघल गया। उन्होंने रमेश को आश्वासन देते हुए कहा, 'घबराओ नहीं बेटा। तुम्हें अभी आराम की सख्त जरूरत है। तुम यहीं लेट कर आराम करो। अपने घर की जरा भी चिन्ता मत करो।'

स्वामीजी ने तुरन्त अपने एक आदमी को बुला कर खाने-पीने का सामान और रुपये आदि देकर रमेश के घर भेज दिया और यह आदेश दिया कि वह रमेश के घर लौटने तक वहीं रहे और मां व महेश को जरा भी तकलीफ न होने दे। वह मकान-मालिक का सारा किराया भी अदा करदे।

रमेश स्वामीजी के यहां दस दिन तक रहा। आज वह अपने घर जाने योग्य हो गया था। अब तक स्वामीजी ने तन, मन, धन से सेवा की थी। जब रमेश जाने लगा, तो स्वामीजी ने और रुपये दिए। रमेश ने इसका कारण पूछा, तो स्वामीजी ने कहा, 'इन रुपयों से कोई व्यापार कर लेना, तुम्हें मदद की जरूरत है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमेश ने निराशा के साथ कहा, 'स्वामीजी। अब तक आपका हमारे ऊपर काफी कर्जा चढ़ गया है।...'

'मैंने तुम्हारी जो मदद की है, और अब जो रुपये दे रहा हूं, यह सब इसलिए नहीं कि एक दिन मैं तुमसे यह वापस मांगूंगा। नहीं बेटा, मैंने तो जन्म ही दूसरों की भलाई के लिया है। तुम जाओ। भगवान् तुम्हें सदा सुखी रखे।'

रमेश की आंखों में कृतज्ञता के आंसू भर आए। उसने रुंधे गले से कहा, स्वामीजी। आप मनुष्य नहीं, देवता है।' और वह स्वामीजी के पैरों पर झुक गया।

अपने घर पर ही सबसे नये मौडल की कार पर;
एक सप्ताह में मोटर चलाना सीखें, ४३ वर्ष में
२४००० से अधिक प्रशिक्षित हुए,
सदा याद रखें

जंजीरा मोटर स्कूल

(भेंडी बजार बम्बई ३ शाखायें फोन : ७३२१५

७, क्वीस रोड चर्नी रोड रेल्वेस्टेशन के सामने फोन : २७४१५

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई ३.

ब्रोडवे सिनेमाके पास दादर मध्यरेल्वे बम्बई १४

महिलायें निपुण महिलाओं द्वारा
शिक्षित की जाती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम मार्ग

संत कबीर

लेखक- रामकृष्ण सिंह

प्रेम स्वभावतः ही विशुद्धतम है। वह आत्मा की तल्लीनता और परमात्मा का स्वरूप है। प्रेम न तो इन्द्रियों का आकर्षण या विषय सुख लिप्त है न वह मनका स्वार्थजन्य भौतिक ऐश्वर्य के प्रति लोलुपता ही है यह सब वासना का रूप है, जिसे आज का अभागा विश्व भ्रमवश प्रेम समझने में प्रवीण हो चुका है। प्रेम आत्म-जन्य है, अतः अलौकिक और अमर है। वासना इंद्रिय-जन्य होने से भौतिक एवं नश्वर है। प्रेम भौतिक नहीं, वरन् ईश्वरीय धर्म है जो अमरत्व का लाभ लिये हुए है। संत कबीरदासजी की प्रगाढ़ अनुभूतिवश प्रगट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हुई यह अभिव्यक्ति देखिये:—

"प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिला न कोय।
प्रेमी को प्रेमी मिले, तो सब विष अमृत होय॥"

ईश्वर सर्वव्यापक है और विशुद्ध प्रेमवश वे प्रगट हो जाते हैं:—

"हरिव्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहि मैं जाना।
"श्रीरामचरित मानस"

भगवान् को तो केवल प्रेम ही प्यारा है। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि:—"रामहि केवल प्रेम पियारा।"

प्रसिद्ध साधक संत कबीरदास ने तो प्रेम के बिना ईश्वर को प्राप्त करना कठिन ही नहीं, बिल्कुल असम्भव ही बता दिया है:—

"योगी जंगम सवेरा, संन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम पहुँचे नहीं, दुर्लभ सद्गुरु देश॥"

प्रेम से ईश्वर की प्राप्ति निश्चित है। इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि श्रीरामचरित मानस में लिखा है:—

"जेहि कर जेहिपर सत्य सनेहू।
सो ताहि मिलै न कछु सन्देहू॥"

प्रेम का मार्ग अत्यन्त ही सरल एवं शुद्ध है। उस पर चलने के लिये सयानापन आदि का कोई काम नहीं है। हृदय में सच्चाई होनी चाहिये और अहंकार नहीं होना चाहिये। श्री घनानन्दजी कहते हैं—

"अति सूधो सनेह को मारग है,
जहँ नैकु सयानप काम नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहँ साँच चले तजि आपन पै,
झिझकै कपटी जो निसांक नहीं॥"

प्रेम मार्गी के लिये बाह्य साधनों की भी कोई आवश्यकता नहीं, सिर्फ मन सदैव भगवान् की ओर लगाये रखें। संत कबीरदासजी कहते हैं कि—

"माला जपूँ न कर जपूँ, मुख से कहूँ न राम।
मन मेरा सुमिरन करे, कर पाया विश्राम॥"

गोस्वामी तुलसीदासजी का भी यही मत है—

"कर तें कर्म करा विधि नाना,।
मन राखेहूँ जहाँ कृपा निधाना॥"

लेकिन मन को परमात्मा के सुमिरन में लगाये रखना तभी सम्भव होता है जब साधक साधना द्वारा अपने समस्त कलुष तथा वासनाओं को दूर करने में समर्थ होता है और अपने अहं को भी भुला देता है। तब आत्मा को अपने सहज रूप परमात्मा का ज्ञान होने लगता है यह निज ज्ञान ही प्रेम को जागृत कर देता है। सचमुच परमात्मा से वही प्रेम कर सकता है जिसे विशुद्ध ज्ञान प्राप्त हो जाय और जो सचमुच उससे प्रेम करता है। वही वास्तव में उसका ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जब प्रेम जागृत होता है तो "प्रेम जगावै विरह को" के अनुसार साधक विरहाग्नि में अहर्निश जलने लगता है। ऐसे विरही को न खाने में स्वाद न सोने में ही आनन्द मिलता है। स्वयं कबीरदासजी ऐसे ही विरह से विदग्ध होकर कहते हैं—

"सुखिया सब संसार है, खावे औ सोवै।
दुखिया दास कबीर है जागे औ रोवै॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह विरहाग्नि तब तक जलाती है जब तक कि ईश्वर प्रेम के अलावा साधक के हृदय से समस्त कामनाओं का अंत नहीं हो जाता है। फिर बीच की बाधा हटी कि सब दुःख दूर हो जाते हैं। सूफी साधक अलशिबली का कथन है कि प्रेम हृदय में अग्नि के समान है जो परमात्मा की इच्छा के सिवा अन्य सभी वस्तुओं को जलाकर भस्मीभूत कर देता है।

प्रसिद्ध सूफी साधिका रबिया ने पूछे जाने पर प्रेम के सम्बन्ध में यही उत्तर दिया था कि—परमात्मा के प्रेम ने मेरे हृदय में शैतान से घृणा के लिये जगह ही नहीं छोड़ी है।

विरहाग्नि में जब प्रेम परिपक्व होकर विशुद्ध बन जाता है तो परमात्मा स्वयं दौड़े आते हैं और प्रेम सुधा छिड़ककर विरहाग्नि का अंत कर देते हैं और प्रेमी को जलने से बचा लेते हैं। संत कबीरदासजी कहते हैं कि:—

"विरहिन जलती देखि के, सांई आवे धाय।
प्रेम बुन्द को छिड़कि के जलती लेय बचाय॥"

इस प्रकार साधक प्रेम-मार्ग से परम प्रियतम परमात्मा का सानिध्य लाभ करते हैं। परमेश्वर से साक्षात्कार होते ही जीव अपने स्वस्वरूप में अवस्थित हो जाता है। श्रीराम चरित मानस में स्वयं भगवान श्री रामचन्द्रजी का ऐसा ही कथन है:—

"मम दर्शन फल परम अनूपा।
जीव पाय निज सहज स्वरूपा॥"

पातञ्जल योग दर्शन से भी ऐसा ही प्रगट होता है—

तदा द्रष्टुः स्वरूपावस्थानम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौगिक और प्राकृतिक चिकित्सा

स्वानुभव

सूर्यस्नान

कटिस्नान

आहार

मत्स्येंद्रासन

मैं मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर चुका हूँ। विद्यार्थी जीवन में तहसील की पंचायती लाइब्रेरी से 'रामतीर्थ' मासिक पढ़ने के लिये ले आता था। निर्धन होने से मैट्रिक से आगे पढ़ नहीं सका और आजकल मैट्रिक तक की शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता, अतः अधिक ऊँची तनख्वाह की नौकरी नहीं मिलती। इन्हीं विचारों ने मुझे चिन्ता और उलझन में डाल रखा था। शरीर कृश हो गया और गरीबी तथा हीनता की भावना मनमें घर बनाने लगी। लज्जा-संकोच के कारण जन समाज में घूमना-फिरना भी कठिन हो गया था। सदा गरीबी की भावना मेरे ऊपर छाई रहती थी और मनमें सोचता रहता था कि इस अवस्था में तो सारा जीवन ही निकम्मा-निरर्थक बन जायेगा। उन्नति-पथ में अवरोधों-बाधाओं का सामना करना निस्सन्देह एक जटिल समस्या है। मेरे आसपास सदैव यह भावना चक्कर लगाती रहती थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मेरा शरीर परिवार तथा समाज के लिये भार रूप है

प्रातः काल १० बजे

एक दिन खिन्न मानस होकर एकान्त में बैठा 'राम... मासिक पढ़ रहा था। एक लेख में प्रसंग वश पढ़ने में ... कि "जीवन में ऐसे अवसर प्रायः उपस्थित होते रहते ... जब मानव जीवन को उन्नति-उत्थान की ओर आगे बढ़ाते ... सफलता प्राप्त कर सकता है। निराशा या चिन्तामें ... व्याकुल रहने की कोई जरूरत नहीं। जीवन को न... आशाओं से परिपूर्ण बनाये रखना ही सफलता प्राप्ति का उ... साधन है। आशा, उत्साह औ निर्भयता का चिन्तन मन ... बलवान् बनायेगा। और इस प्रकार निश्चिन्त निर्भीक ... स्वतः उन्नति की ओर अग्रसर होने के लिये निरन्तर प्रे... करता रहेगा। अन्तः प्रेरित विचारों का प्रभाव मानव पर पू... तया प्रकट होता है। जैसे विचार होंगे, तदनुसार मानव ... विचार-भाव संस्कारों के रूप में बद्धमूल होते रहते हैं। ... कारण है कि हमारे यहां हताश हतोत्साहमूलक विचारों ... अशुभ और हानिकर मानकर उनकी उपेक्षा की जाती है ... आशा और मंगलमय विचार ही मानव-जीवन के उज्वल... को सजग बना कर कर्तव्यों की ओर उन्मुख करते हैं ... कठिन-से कठिन स्थिति उत्पन्न हो जाने पर भी विचलित ... होने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं। आवश्यकता है मात्र प्र... इच्छा शक्तिपूर्वक प्रयासों में लगे रहने की। एक निश्चि... अवधि के बाद निस्सन्देह अभीष्ट सिद्धि होती है। ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजग रहो और प्राप्त सुअवसर का सदुपयोग कर समुचित लाभ उठा लेने के लिये प्रयत्नशील रहो, निस्सन्देह स्वेच्छा-पूर्वक जीवन की स्थिति स्थापित होगी। निर्धनता की दशा स्थायी नहीं है। धनोपार्जन कर के भी यदि उसका सदुपयोग नहीं होगा तो उसके उपार्जन का महत्त्व ही क्या है? वह कभी पासमें नहीं रहेगी। अपनी शक्तियों का स्मरण रखो और तदनुसार पुरुषार्थ--साधन में संलग्न रहो, भाग्य का गुलाम बनना उचित नहीं।'

उसी दिन ११ बजे

उपयुक्त अवतरण को पढ़ने के बाद मैं मन को आशावादी विचारों से भरने लगा और वहां से चल पड़ा। जब मुझे पैसे का अभाव आ घेरता है, तब एक दूध के व्यापारी के पास जाकर बैठ जाता हूं। कुछ देर बाद दयाभाव से प्रेरित होकर वे मुझे १ रुपया दे देते हैं। एक दिन रुपया देते समय कहने लगे कि मेरे पास एक भैंस है। उसके एक पांव में पीड़ा होने से वह खड़ी नहीं हो सकती है। उसका दूध भी निकाला नहीं जा सकता। सबेरे-शाम १६ सेर दूध देती है। बच्चा होने के बाद आठ महीनेतक दूध देती रहती है। यदि कोई चिकित्सक इसके पैर का उपचार कर सकता हो, तो उसकी खोज करना। मैंने तुरन्त बताया कि यहां से १० मील की दूरी पर गांव में एक किसान रहता है, वह आप की भैंस के पैर को ठीक कर देगा। भैंस के मालिक ने भैंस को उस किसान के पास ले जाने की अनुमति दे दी। किसान ने १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिनतक भैंस की चिकित्सा की और भैंस का पैर बिलकुल अच्छा हो गया और वह पहले की तरह चलने-फिरने लगी। भैंस को उसके मालिक के पास लाकर खड़ा कर दिया। भैंस को देख कर मालिक ने सन्तोष प्रकट किया और तुरन्त मुझ को कहा 'भैया, मेरे पास भगवान् की कृपासे बहुत-सी भैंसें हैं। मुझे भरोसा नहीं था कि इस का पांव इस प्रकार पूर्ण रूप से चंगा हो जायेगा। इस भैंस को अब तुम्हीं ले जाओ मैं तुम्हें दे रहा हूं।"

आठ महीने के बाद

मैं भैंस को घर लाया। आठ महीने तक उसका दूध बेचा १४ सौ रुपये कमाये। मेरा भाग्य परिवर्तित हुआ और मैं भैंस को पुनः ले जाकर उसके पुराने मालिक के हाथ सौंप दिया और दूध देने वाली एक अन्य भैंस ६ सौ रुपये मूल्य में उन्हीं से खरीद लाया। यह क्रम लगभग ३-४ वर्ष से चल रहा है। अब तो मैं स्वयं भी ४ भैंसों का मालिक बन गया हूं और खान-पान तथा धन से सुखी हूं। इसका प्रथम निमित्त 'रामतीर्थ' मासिक बना। आसन और प्राणायाम का अभ्यास मैं प्रतिदिन करता हूं। 'रामतीर्थ' मासिक प्रति असीम प्रेम बढ़ गया है। क्योंकि इसी की प्रेरणा से मेरे जीवन में आशा और श्रद्धा का उदय हुआ। मैंने जीवन के प्रति वास्तववादी दृष्टि कोण अपनाया, फलतः आज मेरा जीवन समग्र रूप से बदल गया है और तन-मन-धन से सुखी ही नहीं हूं, अपितु परम आत्म सन्तोष का भी अनुभव कर रहा हूं। सब तरह से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभावग्रस्त जीवन से निकल कर सुखमय जीवन में प्रवेश करने का यह यथार्थ प्रयोग सामान्य नहीं है, इसका महत्त्व अत्यधिक है। दृढ़ विश्वास पूर्वक आशावादी भावना के अभिमत फल का अनुभव मैंने प्रत्यक्ष रूपसे कर लिया है।

अस्तु, यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि पूर्व-स्थितिमें मैं निराशा और तज्जन्य दुःख से जकड़ कर किंकर्तव्यविमूढ़ बन गया था। परन्तु अब तो सौभाग्यवश मुझे अन्य लोगों को मार्गदर्शन कराने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मैं सब के, सामने अपना यही आग्रह प्रकट करता हूं कि योगाभ्यास के द्वारा मन को एकाग्र कर के प्रातःसायं कम--से--कम १०--२० मिनट तक आशावादी विचारों में निमग्न बनो। (जो लोग दृढ़ विश्वासपूर्वक साधना--निरत हुए हैं, उन सब ने लाभ उठाया है।

—जीवनलाल च. अग्निहोत्री मैसूर

---

* मननीय विचार *

एक स्वतन्त्र देश में संतापों की कल्पना में भी अधिक क्रन्दन रहता है, किन्तु एक स्वेच्छाचारी शासन में संतापों का बाहुल्य रहते हुए भी क्रन्दन अत्यल्प होता है।

—कारनट

* * * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य में समस्यापूर्ति

लेखक - श्री सुब्राय अडिग

संस्कृत साहित्य एक महासागर है जिसमें डुबकी लगाने वाले गोताखोरको कभी निराश नहीं होना पड़ता। वह कुछ न कुछ रत्न पाकर ही ऊपर आ जाता है। संस्कृत आजकल 'मृतभाषा' बन गयी है। परन्तु पुराने जमाने में जब उसे राजाश्रय मिलता था, वह पूर्ण रूप से विकसित हुई थी। समय समय पर महाकवियोंने संस्कृत साहित्यवृक्ष को अपने काव्यजल से सींचा था। आज राजाश्रय न मिलने के कारण उसकी श्रीवृद्धि तो नहीं होती—फिर भी उस फूले फले वृक्ष की झलक तो दिखाई देती है। आजकल संस्कृत का अध्ययन लुप्त प्राय सा बन गया है। देशभर में उँगली पर गिनने लायक संस्कृत शालाएँ हैं जहाँ पर संस्कृत का अध्ययन तो होता है—पर साहित्य की आत्मा तक पहुँचकर कविहृदय को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने का काम नहीं होता। केवल भाषा का ज्ञान ही पर्याप्त समझा जाता है।

उस जमाने में जब संस्कृत को राजाश्रय मिलता था, संस्कृत सर्वांगीण प्रगति कर चुकी थी। साहित्य का कोई अंग अछूता नहीं रह गया था। कवियों को आज की तरह पेटकी आग में झुलसना नहीं पड़ता था। उदार राजा लोग उन्हें संतृत कर देते थे। सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में नौ कवि थे जो नवरत्न कहलाते थे और कृष्णदेवराय के आस्थान में अष्टदिग्गज थे। इस तरह कवियों से ही राज-दरबार की शोभा बढ़ती थी।

लेकिन उस समय कवियों की कड़ी परख भी होती थी। आजकल की तरह सब कोई कवि नहीं बन सकते थे। हर एक काव्य परीक्षकों की कसौटी पर खरा उतरकर ही प्रसिद्धि पा सकता था। शास्त्रचर्चा में आस्थान के विद्वानों को हराकर ही कोई राजसम्मान पा सकता था। सिर्फ दिखावे का कोई पूछताछ नहीं थी।

इसका यह मतलब नहीं कि दरबार का वातावरण हमेशा गंभीर चर्चाओं में ही लगा रहता। कभी कभी मनोविनोद का भी काफी मसाला मिल जाता। मनोविनोदों में हास परिहास की बातों के अलावा समस्यापूर्ति भी प्रमुख पात्र लेती थी। क्योंकि उससे स्वस्थ मनोरंजन के साथ साथ तीक्ष्ण प्रतिभा की झलक भी दिखाई पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप जानते ही हैं कि हर एक श्लोक के चार पाद होते हैं। कोई कवि भरे दरबार में अंतिम पाद कह देता। बाकी तीनों पादोंको रचकर श्लोकपूर्ति करना ही समस्यापूर्ति कहलाता है। यहाँ शिष्ट हास्य दिखाई देगा, विशिष्ट प्रतिभा का दर्शन होगा, कविहृदय का परिचय मिलेगा, साथ ही साथ विशाल अनुभव चमक उठेगा। यहाँ मैं ऐसी दो चार समस्याओं का उल्लेख करूँगा:—

राजा भोजने दरबार में समस्याके तौर पर यह श्लोकपाद दिया—'ठंठंठ ठंठं ठठ ठंठ ठंठः'।

आप ही सोचिये, यह कितना निराला और निरर्थक अंश है! इस भाग में कुछ अर्थ होता तो बाकी भागों की रचना सुलभ हो जाती। पर यहाँ तो 'ठ' अक्षर के सिवा कुछ नहीं। सुननेवाले दंग रह गये। बड़ी देरतक 'ठं ठं' की कर्णकठोर ध्वनि उनके मस्तिष्क में प्रतिध्वनित होती रही। पर समस्यापूर्ति? वह तो उसके बस की बात नहीं।

आखिर अचानक प्रतिभावान कवि कालिदास उठकर गाने लगाः—

'राजाभिषेके मद विह्वलाया।
हस्ताच्च्युतो हेमघटो युवत्यः॥
सोपानमासाद्य करोति शब्दं।
ठंठंठ ठंठं ठठ ठंठ ठंठः॥'

राजाभिषेक के समय कोई मदविह्वला युवती अभिषेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल लाने के लिये सुवर्णघट लेकर ससंभ्रम सीढ़ियाँ उतर रही थी। उस जल्दबाजी में उसके हाथ से सुवर्णघट नीचे गिर पड़ा और वह 'ठं ठं ठ ठं.......' की आवाज के साथ नीचे लुढ़कने लगा।

इस तरह समस्या हल हो गयी। देखिये, कवि की सूझ कितनी दूर की थी!

दूसरा उदाहरण देखियेः—

'पाथोधिर्जलधिः पयोधिरुदधिर्वारांनिधिर्वारिधिः'

यह भी एक समस्या है जिसकी पूर्ति करना सभासदों के जिम्मे था। यहाँ तो पिछली समस्या की तरह सिर्फ एक अक्षर का चमत्कार नहीं, बल्कि एक शब्द दिया गया है। 'समुद्र' अर्थवाले शब्दको छः बार कहा गया है। इस तरह, समुद्र समुद्र....रटते रहने से कहीं श्लोकपूर्ति हो सकती है? फिर भी एक प्रतिभावान कविने उसको यों सुलझा ही दियाः—

'श्रुत्वा सागरबंधनं दशशिराः सर्वैर्मुखैरेकदा ।
तूर्णं पृच्छति वार्तिकान् सचकितो भित्या परं संभ्रमात॥
बद्धः सत्यमपांनिधिर्जलनिधिः कीलालधिस्तोयधिः।
पाथोधिर्जलधिः पयोधिरुदधिर्वारांनिधिर्वारिधिः ॥'

रामने समुद्र पर पुल बांध दिया—यह समाचार सुनते ही दशकंठ रावण चकित होकर अपने दसों मुँह खोलकर एक साथ पूछता है कि क्या यह खबर ठीक है? सचमुच समुन्दर बांधा गया?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्रबंधन तो एक अनहोनी बात है। मामूली बात भी हम कभी २ दुबारा कहते हैं। ताज्जुब की बात हो, बार बार पूछते हैं। यहाँ रामद्वारा किया हुआ समुद्रबं एकदम अनिरीक्षित और अभूतपूर्व था। दस मुखवाले रा ने अपने दसों मुखों से सच्ची वार्ता जानने की कोशिश तो क्या आश्चर्य ?

यहाँ कविने छः समुद्रों के साथ और भी चार समु मिलाकर रावण से उनका संबंध जोड़ने की जो कल्पना थी, वह बड़ी अद्भुत बन गयी है।

सिर्फ शब्दों का चमत्कार ही नहीं—अर्थ की दृष्टि से विरोध दिखाकर सुननेवालों को भ्रम में डालना भी समस्याओं में साधारण है। ऐसे दो एक उदाहरण देखिये:-

'रमा मुदा शंकरमालिलिंग'—अर्थात् विष्णुपत्नीने आ खुशी खुशी ईश्वर का आलिंगन किया!

यह आकस्मिक घटना नहीं, बल्कि रमाने जानबूझकर ऐसा काम किया है! समझमें नहीं आता कि यह किस पुरा में है! बड़े २ पुराणवेत्ताओं ने दिमाग लड़ाया। सं घटनाओं को याद किया; पर कहीं भी ईश्वर के साथ रमा आलिंगन नहीं हो पाया था। लेकिन किसी कवि की बुद्धि शंकर शब्द पर आकर टिक गयी और उसने तुरंत पूरा श्लोक रच डाला:—

'श्रुत्वा प्रदग्धं तनयं सशोका पुनर्निशम्यात्तशरीर भावम्।
पश्यत्सु देवेषु च धावमाना रमा मुदा शंकरमालिलिंगम्॥'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बेटे के भस्मीभूत होने और फिर जी उठने की खबर सुनकर दुःखिनी रमा भागती आयी और देवों के देखते देखते खुशी खुशी शंकर अर्थात् श्रेष्ठ चंदन का आलिंगन किया। इससे उसकी जलन कुछ शांत हुई।

कविने देखा कि पुराण विरुद्ध घटना का तो समर्थन कहीं न मिलेगा। इसलिये या तो रमा शब्द का दूसरा अर्थ लगाना होगा या शंकर का। तब उसे शंकर का दूसरा अर्थ याद आया और उसी के आधार पर श्लोक की रचना हुई। यहाँ श्लेष के बिना समस्या हल नहीं हो सकती।

एक और मनोरंजक समस्या पर विचार करें:—

'सिंदूर बिंदुर्विधवा ललाटे...।'

इसका मतलब है कि विधवा के माथे पर सिंदूर लगा है। याद रखें, यह आजकल की बात नहीं। बहुत पुरानी बात है, जब विधवाएँ सिंदूर लगाने की बात तो दूर—उसकी कल्पना तक नहीं कर सकती थीं। आजकल की तरह ऐश-आराम की जिंदगी बसर करने की छूट नहीं थी। उस वक्त ऐसे अशास्त्रीय विचारको कोई प्रोत्साहन देता तो उसे कड़ी सजा दी जाती थी। देशनिकाला भी होता था।

तब यह समस्या देनेवाले महाशय की बुद्धि को क्या कहें? वह भरे दरबार में घोषणा कर रहा है कि विधवा के माथे पर सिंदूर की बिंदिया जरूर है। उसी समय उस गलती को सुधारते हुये एक कवि गा उठता है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रे पुत्र! सत्संगमवाप्नुहि त्वमसत्प्रसंगं त्वरया विहाय।
धन्योऽपि निंदां लभते कुसंगात् सिंदूरबिंदुर्विधवाललाटे॥'

पिता बेटे को उपदेश देता है कि बेटा; तुम बुरों का साथ छोड़कर भले लोगों का साथ दो। जैसे सिंदूर मांगलिक द्रव्य होने पर भी विधवा के माथे पर लगा हो तो उसकी निंदा ही की जाती है, वैसे ही सज्जन भी दुर्जन का सहवास करने से निंदा का भाजन बन जाता है। उपदेश भरे इस श्लोक में वह विरोधांश डूब गया है और भाव शुद्ध तथा सरस बन गया है।

एक और उदाहरण देखिये:—

'राहुर्दिवा ग्रसति पर्व विना किलेंदुम्' अर्थात् पर्वकाल के बिना भी दिन के समय ही राहु चंद्रमा को निगल रहा है। साफ मतलब यह है कि इस भरी दोपहरी में 'चंद्रग्रहण' राहुद्वारा हो रहा है।

कहीं यह बात भी संभव हो सकती है? कृत्रिम उपग्रह की बात हम नहीं कह सकते, पर पुराने जमाने में ऐसा कभी नहीं हो पाया था। फिर भी असंभव को संभव बनानेवाली कविवाणी यहाँ भी अजेय सिद्ध हुई। उसने यों गाया:—

'कांचित् दिनार्धसमये रविरश्मितप्तां,
नीलांशुकांचलविलीन मुखेंदुबिंबाम्।
तां तादृशीं समनुवीक्ष्य कविर्जगाद,
राहुर्दिवा ग्रसति पर्वविना किलेंदुम्॥'

दुपहर के समय किसी चंद्रमुखी स्त्रीने धूपसे व्याकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर अपने मुख को काली साड़ी के आंचल से ढँक लिया था। उसकी ओर देखकर कवि की कल्पना जाग उठती है और वह कहता है कि बिना पर्व की इस दुपहरी में भी राहु चंद्रमा को निगल रहा है। अर्थात् यहाँ मुखचंद्र को अंचल रूपी राहु ढक लेता है।

अब मैं आखिरी उदाहरण पेश करके यह लेख समाप्त करूँगा:—

'पुरः पत्युः कामात् श्वशुरमियमालिंगति सती'

मतलब है, अपने पति के सामने ही यह पतिव्रता स्त्री स्वेच्छासे ही ससुर का आलिंगन कर रही है!

कोई औरत अपने पति के सामने ही ससुर का आलिंगन करे, फिर भी वह पतिव्रता बनी रहे—यह सचमुच सिर चकरानेवाली बात है। पर यहाँ तो समस्या देनेवाला वही वाक्य बार बार दुहरा रहा है। कानोंको कोई धोखा नहीं हुआ, पर दिमाग में कुछ नहीं आता। सबके सब परेशान हैं। किस पुराण में हल मिल सकता है? रामायण, महाभारत, और भागवत—किसी में भी ऐसी अविवेक भरी बात नहीं मिलेगी। फिर.........?

फिर क्या? किसी कविको इस अविवेक में भी विवेक की चमक दिखाई देती है और वह खुशी खुशी पूरे श्लोक को रच डालता है:—

'कदाचित् पांचाली विपिन भुवि भीमेन बहुशः।
कृशांगि श्रांतासि क्षणमिह निषीदेति गदिता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शनैः शीतच्छायं वटविटपिनं प्राप्य मुदिता।
पुरः पत्युः कामात् श्वशुरमियमालिंगति सती ॥'

वनवास की बात है। पांचों पांडव जंगल में चलते चलते थक गये थे। पर द्रौपदी की हालत उनसे भी बदतर हो रही थी। तब करुणाभिभूत होकर भीमने उससे कहा—'प्यारी, तुम तो बड़ी कृशांगी हो और कड़ी धूप में चलकर काफी थक गयी हो। अतः थोड़ी देर विश्राम करो।' पति की स्नेहसिक्त वाणी सुनकर द्रौपदी खुश हुई और एक सायेदार बरगद के नीचे जा बैठी। ठंडी हवा चल रही थी और द्रौपदी अपने पति भीमसेन के सामने ही अपने ससुर वायु का आलिंगन करने लगी अर्थात् हवा का सेवन करने लगी।

यहाँ कवि कल्पना पराकाष्ठा तक पहुँच गयी है। यहाँ मैंने इन समस्याओं का सिर्फ परिचय देने का प्रयत्न किया है। ऐसी ही दिलचस्प समस्याएँ संस्कृत साहित्य में अनगिनत मिलेंगी। उन सबका उल्लेख करना बहुत मुश्किल है। आशा है, पाठकगण इनसे प्रेरणा पाकर और भी समस्याएँ ढूंढ निकालेंगे और उनसे सच्चा मनोरंजन पायेंगे।

हां, कुछ लोगों का कहना है—'ये समस्यायें भरे दरबार में हल करने के लिये न तो दी जाती थीं, न सुलझाई भी जाती थीं। कवि लोग पहले ही पूरा श्लोक रचकर अंतिम पाद में समस्या देने लायक बात लिख देते थे।' कुछ भी हो हम इस वाद विवाद में न पड़कर समस्यापूर्ति से होनेवाले लाभों की तरफ नजर डालें तो शुद्ध मनोरंजन तथा अनूठी कवि-कल्पना की प्रशंसा किये बिना नहीं रहेंगे। इस प्रशंसा में ही कवि और कविता दोनों की सार्थकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे मानवता के अश्रुबिन्दु, वैभव के पश्चाताप हो तुम।
रे महाप्रलय की विषम ज्वाल, उर में धारे अनुताप हो तुम॥
तुम उपदेशक हो; पुरा प्रकृति के प्रबल नियम के।
तुम अति का कर गतिरोध, सिखाते हो महत्व संयम के॥
तुम कह करते इन्सान सजय, निर्माण हेतु कर ज्ञानार्जन।
जो हुई भूल बौद्धिक अति से, भावांजलि देकर सम्मार्जन॥
यदि हो न सके तुम सफल आज, साधना ध्वंस हो जायेगी।
सदियों से संचित मानवता, क्षणभर में ही मिट जायेगी॥
फिर हो न सकेंगे सम्मेलन, बस एक महान मिलन होगा।
धरती औ' अम्बर गूँजेंगे, पाताल में इक कम्पन होगा॥
सागर मर्यादा छोड़, धरा को डस जायेगा।
दिक्पाल भूल दिशाज्ञान, ब्रह्म को अण्ड समेत निगल जायेगा॥
फिर कौन करेगा शक्ति गान, गाड़ेगा कौन विजय स्तम्भ।
जय अजय न विग्रह दुरभि संधि, कैसे सृष्टि का समारम्भ॥
तुम हो प्रतीक गौतम गांधी, ईसा मसीह संदेशों के।
बन सफल युद्ध भय दूर करो, मानव हो मुक्त अंदेशों से॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के अभिमत

(१) 'पाठकों के अभिमत' स्तम्भ को 'रामतीर्थ' मासिक
पढ़ता रहता हूं। मेरे एक मित्र ने कहा कि मेरी तीव्र इच्छा
है कि मैं 'रामतीर्थ' मासिक के ग्राहक–पाठक-परिवार का
आजीवन सदस्य बन जाऊं। दान पेटी धन राशि की अत्या-
वश्यकता है : इतना सुन्दर और जीवन को सुधार की ओर
ले जाने वाला यह मासिक पत्र मुझे पढ़ने को मिलता है
एतदर्थ मैं अपने जीवन को धन्य मानता हूं। मैंने मित्र से
कहा—'रामतीर्थ' मासिक का ग्राहक--विस्तार बहुत बड़ा
होगा। सच कहा जाये तो केवल मानसिक शुभेच्छा से
'रामतीर्थ' मासिक का प्रचार-प्रसार होने से लक्ष-लाख
स्त्री-पुरुष अभिमत सफलता प्राप्त करेंगे। ऐसे परहिताकांक्षी
पत्र को तुरन्त ही तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करने की
अत्यावश्यकता है।

ईश्वरचन्द्र म. गुप्त,
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) दयामय जगन्नियन्ता परमपिता जगदुद्धारक भगवान् कण-कण में निराकार एवं साकार रूप में विराजमान हैं—यह भरोसा मुझे पूर्णतया हो गया है। अगस्त, १९६० से मैं 'रामतीर्थ' मासिक पढ़ रहा हूं। इस कालान्तर में अनेक बार सांसारिक कष्टों में आ पड़ा हूं। जाल में फँसी हुई मछली की दशापर फंस चुका हूं। फिर भी प्रतिमास 'रामतीर्थ' मासिक पढ़ता हूं और उसमें प्रकाशित मानसिक एकाग्रता, मनो-निरोध, उमेश-वाणी और अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएं पढ़कर सूक्ष्म और गूढ़ तत्त्व के सम्बन्ध में चिन्तन-मनन और निदि-ध्यासन के लिये आधा से एक घंटे तक बैठता हूं। कुछ ही दिनोंमें मेरे कष्ट किसी निमित्त से दूर हो जाते हैं। मेरे ही समान अन्य बहुतेरे स्त्री-पुरुष सांसारिक कष्टों से पीड़ित होंगे। अतः उन्हीं को लक्ष्य कर के मैंने यह सब लिखा है, जिससे वे भी रामतीर्थ मासिक का आधार लेकर दुःखों से त्राण पा सकें। 'रामतीर्थ' मासिक के संचालक तथा लेखकों को शतसः धन्यवाद पूर्वक मेरा दण्डवत्-नमस्कार है।

आपका कृपाभिलाषी
मन्मथनाथ सुन्दरनाथ आर्य,
काठमाण्डू (नेपाल)

(३) उच्च शिक्षा प्राप्त करके हम अंग्रेजी भाषा के रंग में रँगे हुए हैं। स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्र भाषा हिन्दी पढ़ने के लिये मेरी इच्छा जाग्रत होकर प्रबल हो उठी। ३ वर्ष के हिन्दी के अध्ययन के बाद हिन्दी-साहित्य की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन विशेष रूपसे प्रवृत्त हुआ। इस अवसर पर एक वर्ष लिये मैं लन्दन गया। वहां एक दफ्तर में 'रामतीर्थ' देखने को मिला। मुख पृष्ठ के आसन को देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। विदेश में योगाभ्यास के प्रति बड़ा आदर भाव है। दफ्तर के मैनेजर से मैंने पूछा कि आप अंगरेज हैं, हिन्दी भाषा के 'रामतीर्थ मासिक से भला आप क्या लाभ उठा सकेंगे ? मैनेजर ने बताया कि हम १९ मेम्बर एक सत्संग का संचालन करते हैं उस सत्संग के सिलसिले में योगाभ्यास का एक वर्ग भी चलाया जाता है। उसमें योगदर्शन ग्रन्थ तथा 'रामतीर्थ' मासिक पत्र को द्विभाषियों से पढ़ाकर उसी के आधार पर योग, वेदान्त और गीता के सत्संग से हम सब का जीवन बहुत सुधर गया है। हम शाकाहारी बने और निर्व्यसनी भी बन गये। अब हम सब सुखी बनते जा रहे हैं। 'रामतीर्थ' मासिक से हर समय हमारे टेबल की शोभा बढ़ती रहती है। हमारा मुख्य उद्देश्य यही है कि जिस तरह अभी आपने पूछा, उसी तरह अन्य लोग भी आकर मुझे जब इस सम्बन्ध में पूछते हैं, तब मैं उन्हें अपना उद्देश्य समझाकर और अपने सत्संग का सदस्य बना कर सुखमय जीवन की ओर प्रवृत्त होने का अभ्यास कराते हैं। इसके प्रभाव से अनेक लोगों का जीवन उच्च और प्रतिभा शाली बन गया है। यह सुनकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हो उठा और तभीसे मैंने भी नियमित रूप से 'रामतीर्थ' मासिक को पढ़कर अपने जीवन को सुधार लिया है।

जयदेव टी घोष,
२४ परगना (पश्चिम-बंगाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी काम नियत समय पर करिये

ले. अगरचन्द नाहटा

विश्व में सबसे मूल्यवान यदि कोई वस्तु है तो वह है 'समय'। अन्य सभी वस्तुएँ खोकर के भी हम पुनः प्राप्त कर सकते हैं पर गया हुआ समय वापस नहीं आता। मनुष्य आदि प्राणियों की आयु बहुत ही सीमित है और उसके समाप्त होते देर नहीं लगती। संकट या दुःख का समय बहुत लंबा लगता है और भोग विलास या सुख का समय न मालूम किस तेजी से चला जाता है कि हमें उसका भान नहीं रहता। पर वास्तव में समय की न मन्द गति है न तेज गति है। हमें अपनी मनोवृत्ति के अनुसार उसका अनुभव होता है। अन्यथा हम देखते हैं कि दिन और रात के २४ घंटे के ६० मिनट सुखी और दुःखी व्यक्ति के लिये कम या अधिक परिमाण वाले नहीं होते। दोनों के लिये एक ही समय लागू है, सुखी व्यक्ति का दिन-रात २३ घण्टे का नहीं होता और न दुःखी का २५ घण्टे का होता है। इसलिये जो हमें सीमित आयु मिलती है उसका अधिक से अधिक सदुपयोग करके जीवन को सफल बनाना हमारा कर्तव्य होना चाहिये। पर खेद है हमें समय के इस मूल्य एवं महत्व का कुछ भी ध्यान नहीं है। अतः बहुतसा समय हम व्यर्थ बर्बाद कर देते हैं। जब महा पुरुष हमें चेताते हैं या मृत्यु आ घेरती है तब हमें बड़ा पछतावा होता है। पर 'फिर पछताये क्या होता है जब चिड़िया चुग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई खेत।' तब तो हमारे लिये यही उचित है कि 'बीति ता विसार दे आगे की सुधि लेय।'

समय की बर्बादी का सब से प्रधान कारण तो यही कि हम उसके मूल्य या महत्व का ठीक से अनुभव नहीं पाते। अन्यथा जब मृत्यु सिरहाने खड़ी है और न मालूम आयुष्य कब खत्म हो जाय यह जानते हुए भी हम गाफिल कैसे रह सकते हैं? दूसरा कारण है हमारे जीवन की अव्यवस्था। इसके कारण भी हमारा बहुतसा समय व्यर्थ चला जाता है और साथ ही दूसरों के समय की भी बहुत बर्बादी हो जाती है। उदाहरणार्थ–हमारे भोजन का कोई नियत समय न हो तो हमें स्वयं परेशानी होती है, यदि रसोई बनने से पहले हम भोजन करना चाहें तो नहीं कर पाते और भोजन बनाने के बाद यदि समय पर नहीं खाते तो वह ठंडा और स्वाद रहित हो जाता है। रसोई करने वाले और अन्य घर के लोग भी प्रतीक्षा करते रहते हैं। इस तरह एक के पीछे सभी घर वाले व्यक्तियों का कुछ न कुछ समय व्यर्थ चला जाता है। रसोई बनाने वाला भोजन करने वालों के समय की पाबन्दी न देखकर ढिलाई से काम करता है। वह इधर-उधर की बातों एवं अन्य प्रवृतियों में लग जाता है, उसे समय पर और जल्दी काम करने की चिन्ता नहीं रहती। यदि भोजन करने वाले सभी समय पर आकर भोजन कर लें तो उसे समय पर भोजन तैयार करने की चिंता रहेगी और थोड़े समय में सब काम निपट जाने से उसे अन्य कामों के लिये भी समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल जायगा।

इसी तरह हमारे घर पर मिलने का यदि कोई नियत समय नहीं है तो बेचारे मिलने आने वालों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। वे बहुत देर तक प्रतीक्षा करके अपने काम का समय खोते हैं और निराश होकर लौटते हैं बहुत से विशिष्ट आदमियों का जीवन मैंने इतना व्यस्त देखा है कि उनके पास एक आता है और दूसरा जाता है। या कई व्यक्ति बिना मतलब ही घंटे दो घंटे बैठे गप्पें मारने लगते हैं। इससे न वे समय पर खा सकते हैं और न समय पर सो ही सकते हैं और न कोई अन्य काम समय पर कर सकते हैं। यदि वे मिलने आने वालों के लिये एक समय निश्चित कर दें तो जो भी मिलना चाहेंगे, वे सब उसी समय पर आ जायेंगे और नियत समय के बाद आप वहाँ से उठ जाने वाले हैं यह जान कर वे जरूरी और काम की बातें थोड़े शब्दों में कह देंगे। इससे आप के समय में कोई बाधा नहीं आयेगी। प्रत्येक काम के लिये एक समय निश्चित कर लेने पर सभी काम व्यवस्थित रूपमें और समय पर पूरे हो सकेंगे। बैंको में आप देखते हैं कि रुपयों के लेन देन का समय ४ घंटे का होता है अतः सभी लेन देन करने वाले अपने अन्य कामों को आगे पीछे कर के भी उस समय वहाँ पहुँच जाते हैं इससे उनका काम भी हो जाता है और बैंक वालों को भी अपना हिसाब जमा खर्च कर रोकड़ और खाता तैयार करने का समय मिल जाता है। इधर आप पुराने ढंग से काम करने वाले व्यापारी की दुकान देखिये सुबह से आधी रात तक काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने पर भी वह अपना काम पूरा नहीं कर पाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी कितने कामों में व्यस्त रहते थे, सब काम नियत समय पर करने के कारण उन्हें सभी के लिये समय मिल जाता था।

इस तरह के एक नहीं अनेक उदाहरण हैं, जिनसे हमें यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि हमें अपने प्रत्येक कार्य का टाइम टेबल बना लेना चाहिये। जहाँ तक संभव हो सभी काम इस टाइम टेबल के नियत समय पर करने का अभ्यास डालना चाहिये। इससे हमें जो कुछ करना चाहते हैं उसके लिये समय निकाल पायेंगे। अपने और दूसरों के समय की बर्बादी को रोक कर उसे अच्छे कामों के लिये बचा सकेंगे। प्रकृति भी आपको नियत समय पर काम करने का संदेश देती है। सूर्य, चंद्र का उदय, ऋतुओं का परिवर्तन सभी नियत समय पर अपने आप हो रहे हैं।

पाश्चात्य लोगों और हम लोगों के जीवन की तुलना करें तो यह स्पष्ट विदित हो जायगा कि हमारी अपेक्षा वे समय का मूल्य अधिक जानते हैं इसलिये सभी काम नियत समय पर करते हैं। फलतः उन्हें खेल-कूद ऐश-आराम के लिये हमारे से अधिक समय मिल जाता है।

हमारे से वे काम कम करते हों यह भी बात नहीं है। अन्तर केवल यही है कि हम समय के उपयोग की कला नहीं जानते और वे जानते हैं। हमारे में से बहुत से व्यक्ति यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकायत करते हैं कि क्या बतायें अमुक काम करना था पर समय नहीं मिलता। पर ध्यान से देखा जाय तो उनमें मनोबल की कमी है या समय के उपयोग की कला वे नहीं जानते। हम प्रत्येक क्षण कार्य रत रहें। नियत समय पर सभी काम करने का अभ्यास डालें। बचे हुए समय को व्यर्थ न खोवें पर उसे परोपकार सेवा व आत्मोत्थान में लगायें। साधना के लियें भी नियत समय रखिये। सभी कामों को समय पर करते रहने से आप साधन, भजन, सत्संग के लिये भी समय निकाल सकेंगे।

भगवान् महावीर ने तो अपने शिष्य गणधर गौतम को सम्बोधित करते हुये बड़ी ही मार्मिक बात कही है कि समय मात्र का भी प्रमाद न करो अर्थात् समय को व्यर्थ न खोओ न पापाचरण में ही बितावो। प्रतिपल का पूर्ण जागरुकता और विवेक के साथ सदुपयोग करो। अपना जीवन दूसरों की सेवा में लगा दें, दूसरों का समय व्यर्थ न खोवें समय की महानता को पहचान कर समय को उपयोग में लायें।

* मननीय विचार *

मुस्कुराहट से केवल होंठों का फड़क उठना ही हंसी की अन्तिम सीमा है।

—बालकृष्ण भट्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू मुस्लिम कवियों और सन्तों की होली

ले. एस. एस. कनोई

शीत के प्राणहारी स्पर्श से सम्पूर्ण प्रकृति मृतवत थी। वसन्तागमन से उसमें नया जीवन, नयी आकांक्षा और नवीन भावमेष का उदय हो गया। इसलिए विश्व साहित्य के सभी साधक, कवि और चित्र-शिल्पी अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अपने-अपने ढंग से वसन्त श्री के पुण्य चरणों में भेंट करते हैं। जहां साधारण जन इस अवसर पर उछल-कूद कर, झांझ, ढोल, मृदंग बजा कर अपने दिलों की उमंग प्रकट करता है, वहां साधक और कवि अपनी साधना और कल्पना के सहारे इस प्रकार कहता है—

'वसन्तागमन से सर्वत्र ही आनन्द का साम्राज्य छाया हुआ है। हिम तुषार विगलित वस्तुओं में पुनः नवजीवन का संचार हो आया है। वन-उपवन प्रफुल्लित दिखाई देते हैं। कलिकाएं खिल पड़ी हैं। पुष्प-समूह ईषत् उन्मेष से अपने हृदय के पिंजरस्थ भावों को व्यक्त कर रहे हैं। विहंगों का स्वर्ग-सुलभ संगीत नदियों में प्रतिध्वनित होता हुआ शून्य के विस्तृत गर्भ में विलीन हो रहा है। खेतों की हरियाली देखते ही बनती है। मृग शावकों की टोलियां उछल-कूद कर रही हैं। प्रेमी-प्रेमिकाएं एक-दूसरे के गले लग रहे हैं। वृद्ध-दम्पति भी सूर्य की नवीन किरणों में नये जीवन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूति कर रहे हैं। प्रत्येक गली, प्रत्येक कूचे से कोयल की मनोहर आवाज बराबर कह रही है—'वसन्त आ गया—मधुर वसन्त आ गया।'

इस वसन्तोत्सव का रूप विभिन्न देशों में विभिन्न रूप में प्रचलित है। प्राचीन मिश्र इस अवसर पर आइसिस प्रभृति देवताओं की पूजा प्रचलित थी, जिसका प्रभाव ग्रीस पर भी पड़ा। ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व ग्रीसी चित्रों में आइसिस देवता की आड़ में इस वसन्तोत्सव की ही सार्थकता दिखाई देती है। रोम में यही उत्सव वैकानेलिया और सेटुलनेलिया के नाम से विख्यात था। भारतवर्ष के समान ही इस उत्सव के अवसर पर वहां विविध नृत्य-गीत, सुरापान और उच्छृंखल व्यभिचार-लीला की सीमा नहीं रहती थी। इसलिये ईसा के दो सौ वर्ष पूर्व वहां कानून के द्वारा इस उत्सव को रोकने की चेष्टा की गई।

भूमध्यसागर-तीरवासी केलटिक और उत्तरी युरोप के ट्युटानिक लोगों में भी इस उत्सव का अपना मौलिक रूप था। किन्तु बाद में ग्रीस और रोम की सभ्यता-विस्तारने इसे वहां फीका कर दिया। जर्मनी के सेण्ट ट्रेण्डर मठ का महन्त १२३३ में इस उत्सव को रोकने के लिये बड़ा आकुल हो उठा था। अनेक देशों में इस अवसर पर अग्नि ज्वलित करने की प्रथा थी जो ठीक यहां के होलिकादहन की भांति होती थी।

भारत में तो अभी भी होली के अवसर पर कहीं-कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्लील गीतादि का बहुत ही प्रचलन है। उत्तर-पश्चि
गुजरात और मारवाड़ में इस उत्सव का उच्छृंखल रूप उ
प्रदेश, बिहार और बंगाल से भी बढ़कर है। फिर भी वृ
की प्राचीन उच्छृंखलता के सामने वह कुछ भी नहीं है।

यूरोप के ईसाई धर्म प्रचार से उत्सव की अश्लीलता और उच्छृंखलता दूर होकर शान्ति एवं धार्मिक रूप में परिवर्ति हो गई है। हमारे यहां भी वसन्तोत्सव के साथ-साथ की गम्भीर भावना सन्निहित है। इसीलिये इस वसन्तोत्सव अवसर पर यदि प्राकृत जन का मन उच्छृंखलता से भर आ है, तो सन्त और सुकविजनों का चित्त सौन्दर्य एवं भक्ति विह्वल हो जाता है। काव्य-प्रेमिक कवियों और नृत्य-प्रेमि कलाविदों—दोनोंने अपने दीर्घकालव्यापी तपस्या के द्वा इस वसन्तोत्सव को होली अथवा फाग के रूप में भारती साहित्य में अमर कर दिया है। नीचे इस लेख में कुछ भारती कलाविदों की वैसी ही भावनाओं का संकलन किया जाता है।

'जगविजय' नामक एक संस्कृत नाटक के लेखक ने पुस्त के प्रारम्भ में ही सूत्रधार की अवतारणा वसन्त के रूप में की है। उन्होंने सर्वप्रथम मतवाली कोयलों की कूक-ह नन्दी का मंगल पाठ किया:—

'जगविजय रूपे पठति सूत्रधारे मधौ,
अति प्रमद कोकिला कलकलच्छालान्मंगलम।
कथं जवनिकां हरन मृगदृशां मनोरंजस्ततः
प्रविशति स्वयं 'कुसुम शायको नायकः।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अन्य श्लोक में कवि कालिदास ने वसन्त शोभा को प्रेमिका के रूप में दिखलाया है:—

'उपहितं शिशिरा पमाश्रया मुकुल जालशोभित किंशुकै
प्रणयिनीव नखचातमण्डनं, प्रमदया मदयापितलज्जया ।

ब्रज भाषा के कवि देव ने वसन्त को काम-सम्राट का बालक स्वीकार किया है और जब किसी राजा का बालक स्वीकार कर लिया तो उसका लालन-पालन भी नृप-शिशु की तरह ही होगा। देखिये कविने कितना सुन्दर रूपक तैयार किया है:—

'अर डम पालन बिछौना नवपल्लव के,
सुमन झिंझूला सोहै, तन छबि भारी है
पवन झुलावे, केकी कीर बतरावै 'देव',
कोकिल हलावै, हलसावे करतारी है।
पूरित पराग सों उतारा करे राई-लोन,
कंज-कली नायिका लतान सिर सारी
मदन-महीपूज को बालक वसन्त ताहि,
प्रात ही जगावत गुलाब चटकारी दै।

'बालक वसन्त' का यह सुन्दर रूप भारतीय साहित्य में ही नहीं प्रत्युत विश्व-साहित्य में विरल है। हां, कविवर ब्रिजदेवा ने 'बालक वसन्त' के स्वागत की एक दूसरे ही ढंग की कल्पना की है, जो उपर्युक्त कवित्त के बाद सर्वथा उपयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मालूम पड़ती हैं, देखिये:—

"भ्रम भूले मलिंदन देखि निते,
तनि भूलि रहैं किमि भामिनियां।
'द्विज देवजू' डोले लतान चितै,
हिय धीर धरे किमि कामिनियां।
हरि हाय, विदेश मों जाय बसे,
तजि ऐसे समय गज-गामिनियां।
मन बौरे न क्यों सजनी? अब तो,
बन बौरी निवासिनी आमनियां।"

प्रकृति की छवि दिखलाने में द्विजदेवजी हिन्दी-साहित्य में अपना सानी नहीं रखते। पद्माकर उधर अलग ही फाग की तैयारी में लगे हैं उन्हें गोकुल की गोपियों की खेली होली कुछ लिखने के लिये व्याकुल कर रही है। लिखते हैं—

'गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेली फाग,
रात भरि प्रात समैं ऐसी छबि झलकें।
दे हैं भरि आलस कपोल रस रोरी भरे,
नींद भरे नयन कछुक झरों झलकें।
लाली भरे अधर, बहाती भरे मुखवर,
कवि 'पद्माकर' विलोकें कौन सलकें।
भाल भरे लाल और सुहाग भरे सब अंग,
पीक भरी पलकें, अबीर भरी अलकें।

सचमुच पद्माकरजी की नायिका का यह चित्र बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षक है। उन्होंने तो मानो सर्वसाधारण के सामने उसकी नंगी तस्वीर ही रख दी है। इस पर से नजर उठाने की इच्छा तो नहीं होती, पर नजदीक ही सूरदासजी की भावनाओं का रस है। देखिये वसन्तागमन का, फाग का वहां कैसा रंग है:-

व्रज में हरि होरी मचाई ॥
इत तें आई सुघर राधिका, उत तें कुंवर कन्हाई।
हिलमिल फाग परस्पर खेलें शोभा वरनि न जाई।
नन्द घर बाजत बधाई ॥
बाजत झाल मृदंग बांसुरी बीन ढफ सहनाई।
उड़त अबीर गुलाल कुमकुमा रह्यो सकल व्रज छाई।
मानो मघवा झरि लाई ॥

अब कविवर सेनापतिजी की भावनाओं का सेनागार भी देखिये :—

केतक अशोक नव चम्पक बकुल कुल
कौन धौं वियोगिन को ऐसी विकरालु है।
सेनापति संसारे की सूरत की सुरति की,
सुरति कराय करि डारतु बेहालु है।
दक्षिन-पवन एती बाहुकी दवन गड़,
सूनो है भवन परदेश प्यारे लालु है।
लाल हैं प्रबाले फूले देखत विशाल जग,
फूले और साल पे रसाल उर सालु है।

यह तो हुई रीति-प्रिय कवियों की बात। अब सन्तों के वसन्त-भाव का भी रसास्वादन लेना चाहिए। भक्तकवि श्री गदाधरजी को वसन्त देख कर अपने प्रियतम कुंजबिहारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण की याद ही आती है। वे बसन्त की सारी शोभा, उपकरण अपने इष्ट के तन पर झलकते देख रहे हैं :-

'देखो प्यारी, कुंजबिहारी, मूरति-मान बसन्त।
मोरी तरुनी तरनीजातन में, मनसिज रस बरसा
असन अधर नव पल्लव शोभा, विहंसत कुसुम विका
फूले विमल कमल से लोचन सूचत मन उल्लास।
देखत गोपीजन वन राई, मदन मुदित उन्माद।
सहज सुवास स्वास मलयानिल लागत परम सुहायो
श्री राधा माधवी गदाधर प्रभु परसत सकुचायो।

कवि ने बसन्त-श्री को माधव के रूप में ही ध्यान कि है। साथ ही उन्होंने आस-पास की बनमाला की कल्पना गोपियों से कर डाली है, मानों ये सब गोपियां बसन्त- माधव की शोभा को अतृप्तकाम होकर निहार रही हैं।

बसन्तोत्सव पर हिन्दू कवियों और सन्तों के अला भारत के मुसलमान कवियों ने भी अपने दृष्टिकोण से बहु कुछ लिखा है। मध्य भारत के बीरजाया सम्प्रदाय के प्रव मुहम्मद शाहदुल्ला और उनके अनुवर्ग शिष्यगण विश्व-प्रकृ के संग अपने को युक्त कर इस बसन्तोत्सव के अवसर आनन्दातिरेक ही झूम उठे थे। इन लोगों को किसी मजहब के प्रति न तो आसक्ति थी और न ही घृणा थी। होली जैसे उत्सव को राष्ट्र का एक मुख्य उत्सव मान अपने हृदय की शुद्ध आध्यात्मिक भावनाओं को प्रकट कर हुए गाते थे :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अगर है शौक मिलने का तो हरदम लौ लगाता जा।
जला कर खुदनुमाई को भसम सर पर लगाता जा।
न मर भूखा, न कर रोजा मसजिद, न कर सिज्दा,
वजूका तोड़ दे कूचा, शराबे शौक पीता जा।
न हो मुल्ला, न हो ब्राह्मण, दुई को छोड़ कर पूजा।
हुक्म है शाह कलन्दर का अनलहक तू कहाता जा।
कहे मन्सुर मस्ताना, मैंने हक दिल में पहिचाना,
रही मस्तों का मयखाना, उसी के बीच आता जा।

मोजउद्दीन नामक एक दूसरे मुसलमान कवि अपने हृदय की वेदना को इस प्रकार व्यक्त करते हैं:—

'फागुन आयो, झांझ डफ बाजे, भीड़ भई अति भारी,
मोहिवो आस तुम्हारे दिलनली भूलि गई सुधि सारी।
मोहे गुलाल लाल बिनु, तोरे भई है रैन अंधियारी,
अंसुवन की अब रंग बन्यो है नैन बने पिचकारी।
वृन्दावन की कुंज गली में ढूंढ़त हारी।
देहो दरस मोहि अपनी मौज से ये हो कृष्णमुरारी।
पिया हो आस तिहारी।'

इस प्रेमोत्सव में सम्मिलित होने के लिए अपनी भाव-नाओं को भी प्रेममय-संगीतमय बनाना पड़ता है। किन्तु जिसने प्रकृति-प्रेम की व्याकुलता में अपनी बुद्धि और अपने आपको रमा दिया है वह भला होली खेलने के लिए तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो ? एक और मुसलमान कवि काजिम फरमाते हैं:—

'फाग खेलनि कैसे जाऊं सखिरी
हरि हाथन पिचकारि रहति है।
सबकी चुनरिया कुसुम रंग बोरी,
मोरी चुनरिया गुलनारी रहति है।
कोई सखि गावति, कोई बजावति,
हमको तो सुरत तिहारी रहति है।
कहत है 'काजिम' अपनी सखिन सों
सैंया की सूरति मतवारी रहति है।'

प्रेम में सुधबुध भूल कर कोई होली न खेल सके तो इसमें दुख भी क्या ? और चिन्ता भी कैसी ? यदि सचमुच कवि काजिम की भांति प्रत्येक प्राणी अपने को प्रेम के हाथ में सौंप दे तो उससे बढ़ कर सौभाग्यशाली इस धरती पर कौन होगा ?

मुसलमान कवियों की इस प्रकार की होली सम्बन्धी कविता पढ़ कर हमारे कितने हिन्दू पाठक आश्चर्यचकित हो उठेंगे। परन्तु आश्चर्य करने की कोई बात यहां नहीं होनी चाहिए। जो साधक है, जिसने अपनी तन्मयता को अपने प्रभु के चरणों में अर्पित कर दिया है, उसे संसार के होली जैसे प्रत्येक पर्व में, चाहे वह हिन्दू का हो या और किसी का, वह आत्मविभोर होकर अपनी वाणी को, अपनी भावना को प्रकृत रूप से प्रकट करेगा ही। उसे संसार, समाज या जाति जो कुछ भी कहे, पर वह उस पर ध्यान नहीं देता। धन्य हैं वे मुसलमान कवि जिन्होंने एक गैर भाषा होते हुए भी हिन्दी की सेवा की है और कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

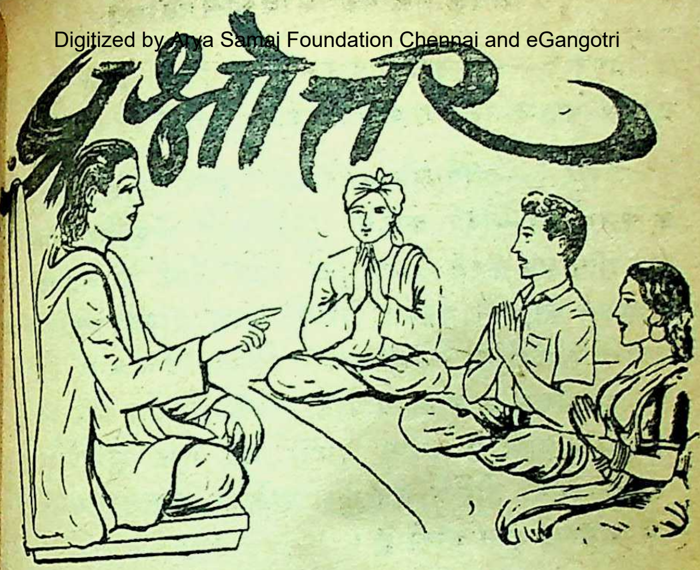

[यह स्तंभ पाठकों के शारीरिक व आध्यात्मिक प्रश्नों के समाधान हेतु रखा गया है यदि आप किसी समस्या का समाधान चाहते हों तो प्रश्न लिख कर भेजें—सम्पादक]

विरेन्द्रसिंह टी, जाडेजा–शीआ–कच्छ–मांडवी

पत्र १ प्रश्न संख्या १

मैं सुबह शीर्षासन करता हूँ लेकिन नाक बंद हो जाता है जिससे १५–२० सेकन्ड से ज्यादा आसनाभ्यास नहीं कर सकता। कृपया शीर्षासन के समय नाक बन्द न होवे ऐसा उपाये बतावें।

प्रश्न २—आसन करने के बाद दूध, पानी आदि कब पीना चाहिये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न ३—सात्विक आहार-विहार किसे कहते हैं ? कौनसे आहार-विहार का समावेश होता है।

उत्तर १—शीर्षासन करते समय नाक के छिद्र बन्द होने के कारणों में—(१) कफसे, (२) छिद्र संकुचित होने से, (३) शीर्षासन करते समय मुख और नाक के अवयवों का संकोचन करने से, (४) शरीर का वजन आवश्यकतासे अधिक होनेसे फेफड़ों का स्वाभाविक संकोचन-विकास न होने से, (५) शीर्षासन करते समय पीठ, कमर, मेरुदंड और पैर सम रेखामें न रहने से अर्थात शरीर का भार सुव्यवस्थित न रहकर किसी ओर अधिक झुक जाने से श्वास-प्रश्वास लेने में कठिनाई हुआ करती है।

प्रथमतः ऊपरोक्त कारणोंमेंसे कौनसा कारण है इस बात का पता लगा कर उसको दूर करने का प्रयत्न करें। नेती धौति कर्म तथा कपालभाति करने के बाद शीर्षासन करने से कफ छिद्रों का संकोचन-विकास समुचित रीति से होगा। शरीर में चर्बी अधिक होवे तो अन्य आसन करें।

उत्तर २—आसन करने के बाद २० मिनिट आराम के पश्चात दूध पानी आदि के अलावा भोजन भी कर सकते हैं।

उत्तर ३—आहार उसे कहते हैं जिसे हमारी कर्म और ज्ञानेन्द्रियां ग्रहण करती हैं तथा विहार उसे कहते हैं जो कर्म और ज्ञानेन्द्रियां बाहर फेंकती हैं। यह तो आहार-विहार की सामान्य बात है। अब जो जिस प्रकार का आहार विहार अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन को समुचित गति देने के लिये चाहता है उसी प्रकार का सात्विक राजसिक, तामसिक आहार विहार ग्रहण करे।

सात्विक आहार--चावल, गेहूँ, वन धान्य, शाक-भाजी, फल, दूध, दही, छाछ, घी आदि को सुरुचि पूर्ण ढंग से शान्तता पूर्वक ग्रहण करना है।

सात्विक विहार में—सन्मित्र, सत्संग, भगवान् का भजन सच्छास्त्रों का पठन-पाठन, जप-तप, परोपकार वृत्ति, सहनशीलता, माता-पिता गुरुजनों की तन-मन-धनसे सेवा करना आदि आता है।

लीलाधर जोशी, वाजपुर (नैनीताल)

पत्र संख्या २ प्रश्न १

कृपया मुझे कुछ ऐसा सरल नुखशा बताने की कृपा फरमावें, कि जिससे मेरा कब्ज दूर हो, सुबह खुल कर शौच हो जाया करे। शुद्ध शौच न होने से मन खिन्न व हाथ पांव में हड़कन, पेट भारी, मिजाज चिड़चिड़ा, सुस्ती आदि रहती है कब्ज बहुत ही पुराना है।

प्रश्न २—मेरी अवस्था ४५ साल की है, क्या मुझे आसन व प्राणायाम करने चाहिएँ कि नहीं, कौन से आसन व प्राणायाम ठीक रहेंगे।

कुछ डाक्टर इस उम्र में आसन न करने की सलाह देते हैं, कृपया आप शंका समाधान करने की कृपा करें।

उत्तर १—मलावरोध दूर करने के लिये प्रयत्नशील होना जरूरी है। जिस प्रकार स्थिर जल दुर्गन्धमय बन जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बहता हुआ एवं सूर्य किरणों से युक्त जल मधुर शुद्ध रहता है। वैसे ही मानव शरीर की दशा समझ चाहिये। मानव शरीर के लिये केवल हलन चलन ही आवश्यक नहीं अपितु उसके साथ उचित आहार का प्रबन्ध होना आवश्यक है। शरीर के आरोग्य के लिये केवल घर, दूकान अथवा दफ्तर के कार्य से होने वाला श्रम ही काफी नहीं। समस्त रोगों का घर या मूल पेट ही है। पेट की सफाई प्रातः सायं व्यवस्थित रखना आवश्यक है।

मलावरोध दूर करने के उपाय

(१) प्रातःकाल दंत धावन के बाद १४ औंस जल (ताँबे अथवा मिट्टी के बरतन का) पीलें। भोजन के आधे घंटे बाद से एक एक घंटे के बाद इतना ही जल पीते रहें। इससे यदि मलावरोध सामान्य होगा तो ठीक हो जायगा। (२) प्रातःकाल दातौन के बाद १४ औंस जलमें शहद एक छोटा चम्मच भर कर डाल कर पीलें। इससे मल निरोध होगा। (३) प्रातःकाल दंत धावन के बाद १४ औंस जल सेवन के बाद उत्थान पादासन पांच बार, पवन मुक्तासन २ मिनट करें। इससे पुरानी कब्जियत भी मिटेगी। (४) १४ औंस जल पीकर १ मिनट उड्डीयान क्रिया करें।

आसनाभ्यास

प्रातःकाल स्नान के बाद नौली कर्म १ मिनट, अर्ध मत्स्येन्द्रासन २ मिनट. नौकासन नं. १,२,३ मिलाकर कुल २ मिनट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शलभासन १ मिनट, ताड़ासन १ मिनट, त्रिकोणासन २ मिनट करें।

आहार

प्रातःकाल एक कप गरम दूध में १ छोटा चम्मच शुद्ध घी मिलाकर सेवन करें। भोजन के समय सब्जी, दाल, रोटी, चावल में शुद्ध घी मिलाकर खायें। घी में चिकनाहट होनेसे बड़ी आंत में सख्त बनकर मल जमने नहीं पाता। शाक-भाजी में हरी पत्ती वाली सब्जियों का अधिक सेवन करें। भोजन के बाद पेड़ का पका पपीता लेना लाभकारी होगा, गेहूँ का आटा चोकर समेत लें। भोजन के समय पानी की प्यास लगने पर ४ औंस जल पीलें। भोजन के बाद मौसम्बी, संतरा, सेव, अनार, चीकु, अंजीर, केला मिलाकर सेवन करें। यदि एक साथ सब मिलाकर खाने में असुविधा हो तो एक एक दिन एक या दो फल को खा लिया करें। भोजन के साथ सलाद (मूली, गाजर, भिंडी, अलकोल, पत्ता गोभी, चुकन्दर से बनाया) अवश्य खाना चाहिये।

ऊपरोक्त अनेक उपायोंको एक साथ व्यवहार में न लावें। २० दिन तक यदि एक उपाय से लाभ न हुआ तब दूसरे, तीसरे, चौथे का क्रमशः उपयोग में लावें। वैसे ऊपरोक्त सभी उपाय श्री रामतीर्थ योगाश्रम में आने वाले रोगियों पर परीक्षित हैं। श्रद्धा के साथ व्यवहार में लाकर हजारों रोगी (महिलाएँ और पुरुष) ठीक हुए हैं।

उत्तर २—आसन प्राणायाम के अधिकारी ८ वर्ष से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०० वर्ष की आयु वाले स्त्री पुरुष हैं। आपकी आयु तो केवल ४५ वर्ष की है। आप अपनी शंका कुशंकाओं को ताक पर रखकर आसन-प्राणायाम करिये। आपकी शक्ति के अनुसार आसन प्राणायाम का आधार है। उमेश योगदर्शन ग्रंथ (प्रथमखंड) में अल्प श्रम साध्य, सामान्य श्रम साध्य और विशेष श्रम साध्य ऐसे तीन प्रकार के आसनों का सचित्र वर्णन है। प्रथमतः अल्प श्रम साध्य आसनों से प्रारम्भ कर आगे बढ़ें। यदि आप किसी प्रकार की शंका किये विना आसन करेंगे तो ३२ दिनमें ही आप के शरीर में नई शक्ति का संचार होगा। आपका मुख कमल के समान विकसित होकर प्रसन्नता से खिल उठेगा। कंधे बलवान बनेंगे। छाती विकासोन्मुख होगी। मेरु दण्ड में लचीला पन आयेगा। मस्तिष्क शांत और मेधावान बनेगा। अल्पश्रम साध्य आसनों में प्रथमतः उत्थान पादासन ३ मिनट, भुजंगासन २ मिनट, अर्ध मत्स्येन्द्रासन ४ मिनट, वज्रासन तथा पवनमुक्तासन ३-३ मिनट करने योग्य हैं।

डॉक्टर और योगाभ्यास

योग विद्या के जन्मदाता, प्रणेता, शोधक, बोधक, और ज्ञान चक्षु धारण करने वाले शिव भगवान् हैं। षड दर्शनों में प्रथम योग पश्चात वेदान्त आता है। जो व्यक्ति योगाभ्यास रत हैं वे सदा त्रिवेणी संगम में स्नान करके जन्म मृत्यु से परे हो जाते हैं। शरीर निरोग के साथ सौन्दर्यवान, मन शान्ति के साथ परम पवित्र तथा आत्म दर्शन में तदाकार होने लगेगा। जिस किसी को भी इसका एक बार रसास्वादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल गया है वह आजन्म इससे विमुख नहीं होता। पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति के डॉक्टर योगाभ्यास के गुणों से अनभिज्ञ हैं अतः उनकी इस विषय में सलाह नहीं लेनी चाहिए। योगाभ्यास दवा की लाइन नहीं इसमें दवा की आदत छूट जाती है। जिस समय भारत में आज केसे डॉक्टर नहीं थे उस समय प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद तथा योगाभ्यास से लोग रोग मुक्त रहा करते थे। आज भी थोड़े बहुत लोग योगाभ्यास के प्रति श्रद्धा रखकर उसका महत्व समझते हैं। अतः आप भी निस्संकोच होकर 'शुभस्य शीघ्रम्' की कहावतानुसार यथाशीघ्र योगाभ्यास चालू करलें।

श्री नानकराम कोटवानी, कटनी म. प्र.

पत्र संख्या २ प्रश्न १.

स्वप्नदोष की उत्पत्ति के कारण व उनके निवारणार्थ औषधिक व प्राकृतिक उपचार बतलाइये।

उत्तर १—स्वप्नदोष होने के अनेक कारणों में विभत्स कहानियों का पठन, कुकर्मी इष्ट मित्रों की संगत करना, तामसिक आहार-विहार (मांस, मच्छली अधिक मिर्च, इमली, नमक, तली हुई वस्तुएं, गांजा, भांग, दारु, ताड़ी, सिगरेट, बीड़ी, तपकीर, सूखा तम्बाकू, पान में तम्बाकू खाना, सिनेमा देखना, भड़कीले कपड़े पहनना, रातको अधिक भोजन करना, गरम जल से स्नान करना, व्यायाम न करना या परिश्रम रहित जीवन व्यतीत करना, महिलाओं को देखकर कामवासना की भावना करना, रात को देरी से सोना, अनिद्रा, मंदाग्नि कब्जियत, चिंता, क्रोधी स्वभाव,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक शक्तिसे अधिक श्रम करना, अनियमित भो
करना, पूरी कचौड़ी· सेल पूरी आदि का भोजन से स्वप्न
(वीर्य का पतन) होता है। यह बीमारी युवावस्था के प्रा
से ही शुरू हो जाती है और इसके अन्त की अवधि शरीरा
के साथ ही समझनी चाहिये।

प्रारम्भ में इस ओर ध्यान न देकर १८-२० वर्ष में शा
और मन की बुरी दशासे शरीर में अनेक रोग उत्पन्न हो
पर इलाज के लिए दौड़ धूप शुरू होती है। केवल दवा-दारू
यह रोग नहीं मिट पाता, इसके लिए तो योगिक या प्राकृति
चिकित्सा की शरण आना ही पड़ता है तब जाके इस बीमारी
से मुक्ति पाकर तन मन से सुखमय जीवन व्यतीत कि
जा सकता है। बहुत से लोग और डॉक्टर इस रोग से छु
कारा पाने के लिए विवाह की सलाह देते हैं और इस सला
से रोगी और भी दयनीय दशा को प्राप्त हो जाता है। ज
तक वीर्य शुद्धि के साथ मस्तिष्क में ओजस के साथ उस
स्तम्भन होकर अंग प्रत्यंग तथा मस्तिष्क में ओजस के द्वा
परिवर्तन न हो जाय तब तक शादी-विवाह नहीं करना चाहिए।

उपचार—सर्व प्रथम उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में लाक
अपने रहन-सहन, आचार-विचार को सुधारना आवश्य
है। अच्छे मित्रोंसे मित्रता करना-सत्संग करना। च
कुलिथ आदि द्विदल धान्य का सेवन करें। ज्वार, गेहूं
चावल, जौ, रागी शाक-भाजी, सलाद, फल, घी, दूध,
मक्खन, छाछ, दही आदि का सेवन प्रकृति-ऋतु तथा पाचन
शक्ति अनुसार ग्रहण करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक ठंडोके दिनों को छोड़कर ठंडेजलसे स्नान करें, प्रातः सायं दो बार मल विसर्जन करें। दिन में ४ से ६ गिलास जल पीयें।

तैल मालिश

प्रातः काल मल विसर्जन के बाद दंत धावन कर प्रकृति के अनुकूल, सरसों, तिल, ब्राह्मीतेल आदि से २० से ३० मिनट तक अपने सारे शरीर और सिरपर मालिश अपने हाथोंसे करें। तदुपरान्त २१ बैठक २१ दंड लगावें। पश्चात स्नानकर अपना वस्त्र स्वयं धोडालें। इसके बाद नित्य-संध्या वंदनसे निवृत्त होकर अपने बड़ों को दंडवत साष्टांग प्रणाम कर शुभाशीर्वाद प्राप्त कर योगाभ्यास करें।

योगाभ्यास

शीर्षासन १० से २० मिनट, शवासन ५ मिनट, उत्थान पादासन २ मिनट, भुजंगासन २ मिनट, शलभासन २ मिनट, अर्धमत्स्येन्द्रासन ४ मिनट, उड्डियान १ मिनट, मत्स्यासन २ मिनट, वज्रासन २ मिनट, सुप्त वज्रासन १ मिनट, वीर्य स्तंभनासन १ मिनट, चक्रासन १ मिनट, शवासन ५ मिनट प्रातः काल स्नान के बाद करें।

आहार

भोजन में मिर्च मसाला कम लें। चावल, दाल, रोटी शाक-भाजी, छाछ, घी का व्यवहार करें। तेल, तली हुई वस्तुएँ, अचार, पापड़ वर्ज्य हैं। भोजन के बाद अपनी रुचि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मीठे फल का सेवन करें। प्रातःकाल आसनाभ्यास के मिनट बाद गौके दूधमें १० दाने मुनक्का लें। भोजन के सलाद लें। रसायन चूर्ण मक्खन के साथ प्रातःकाल २१ तक सेवन करें।

रवींद्र कुमार राय–मद्रास

पत्र संख्या ४–प्रश्न १.

मैं उत्तर प्रदेश का निवासी हूं परन्तु प्रारम्भ से ही बंगा (कलकत्ता) में रहा हूं। मेरी उम्र २४ वर्ष की है। एक दि की बात है मैं बनारस में गंगा स्नान कर लुंगी पहने हुए रहा था कि अचानक मेरी एक दाहिनी गोली बढ़कर ब हो गयी कुछ मुझे पीड़ा भी हुई परन्तु मैंने ध्यान नहीं दिया कलकत्ते में आकर हमने करीब बीस इंजेकशन लिये कु फायदा हुआ। इसके बाद दवा मैंने छोड़ दी। यह बा सन् १९६० की है। बीमारी होने के एक महिने बाद मैं इन्जेकशन लिये थे। शिर्फ दाहिनी गोली बढ़ी है। स्वास्थ्य भी मेरा एक प्रकार से ठीक ही है। लम्बाई ५, " है वज १६० पौण्ड है। मैट्रिक तक पढ़ा हूं।

प्रश्न २—दूसरी बीमारी है कान बहने की। जहां तक मेरा ख्याल है मेरी उम्र ५ या ६ वर्ष की रही होगी तभी से मेरा कान बह रहा है। पहले दाहिना कान बहता था अब दोनों कान बहते हैं। एक बात और बता देना चाहता हूं कि मेरे पिताजी के भी कान बहते हैं। मैंने कलकत्ते में मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी से कई वर्षों तक दवा ली पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ फायदा न हुआ। इसके बाद बैद्यनाथ आयुर्वेद की कानपी कई शीशियां खरीद कर डाली पर फायदा कुछ न हुआ। इसके बाद हमने डाबर की दवाई की उससे सिर्फ यही फायदा हुआ कि जब तक मैं दवाई का प्रयोग करता रहा, कान में मवाद नहीं आती रही पर ज्योंही उसे छोड़ता त्योंही मवाद आनी शुरू हो जाती है। मैं बहुत ही परेशान हूँ। डाक्टरों से राय लेता हूँ तो वे आपरेशन के लिये कहते हैं परन्तु मुझे आपरेशन से बहुत डर लगता है। भोजन में दोनों समय सिर्फ रोटी ही खाता हूँ। चावल मैं कभी नहीं खाता। क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि आप मेरे इस पत्र का उत्तर देंगे।

उत्तर १—वैद्य और डाक्टर लोगोंने दवा देते समय किस कारण से अण्डकोष वृद्धि हुई है, का कारण बताया होगा। वह कारण बताया होता तो अच्छा होता। एक प्रकार की रासायनिक रस अथवा वायु के प्रकोप से अण्डकोष वृद्धि एक ओर अथवा दोनों ओर की होना संभव रहता है।

योगाभ्यास

पद्मासन में बैठकर उड्डियान १ मिनट करें। १ मिनट के बाद नौली कर्म १ मिनट करें। उड्डियान और नौलि कर्म से नाभी के नीचे का भाग तथा अण्ड कोष का भाग संकुचित होगा। बलवान बनेगा, अधिक चर्बी तथा वायु का प्रकोप कम होगा। एक पाद पवनमुक्तासन २ मिनट, द्विपाद पवन मुक्तासन १ मिनट, विपरीत करणी २ से ४ मिनट। विपरीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करणी करते समय विशेष ध्यान रखते हुए अण्डकोष स्वाधिष्ठान के भाग को अच्छी तरह से संकुचित करते विपरीत करणी आसन से अधिक लाभ होगा। सर्वां २ मिनट, सुप्त वज्रासन १ से ३ मिनट ८ बार करें। अण्ड रोग निवारण के लिये सुप्त वज्रासन भी लाभदायक पश्चिमोत्तानासन १ मिनट, विस्तृतपाद वक्ष भू नमन १ मिनट करें। इस आसन को सिद्ध करने में लगभग २ लग सकते हैं परन्तु इसके अभ्यास से अण्डकोष तथा स्वा ष्ठान स्थान की नस नाड़ियों में अच्छी तरह तनाव तथा बढ़ जाता है। गोमुखासन २ मिनट करें।

उत्तर २—कान के दर्द को दूर करने के लिए कर्ण नासन २ से ४ मिनट करें क्योंकि इस आसन का कान स्थूल और सूक्ष्म अवयवों के साथ घनिष्ठ संबंध है। रोग निवारक होने से ही इसका यह नाम पड़ा है। यथा तथा गुण वाले इस आसन से लाभ अवश्य होगा किन्तु के पुराने होने तथा वंश परम्परागत होने से कुछ देर सकते हैं। अर्थात् ४ से ८ मास तक ठीक होने में लग जायें १ से १॥ मास तक विश्वास पूर्ण लाभ नजर आयेगा। आसनाभ्यास से सप्त धातुएं शुद्ध होंगी तथा कान के मजबूत बनेंगे जिससे रस निकलना बंद होजायगा। साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कब्जियत नहीं रहने पावे २० दिन तक अर्धमत्स्येन्द्रासन २ से ४ मिनट तक ह २० दिनके बाद पूर्ण मत्स्येन्द्रासन २ से ४ मिनट करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्धमत्स्येन्द्रासन का अभ्यास न करें। कर्ण रोग निवारणार्थ यह आसन अच्छा काम करता है। इस आसनसे पेट, पसलियां, गला, छाती, कान के समस्त अवयव पैर हाथों के हरेक अवयव में सुयोग्य रूपसे तनाव, विकास और दबाव आ जाता है। फलतः शरीर के प्रत्येक अवयव के साथ कान के पर्दे पर विशेष प्रभाव पड़ता है। कमजोर कान के अवयव सशक्त के साथ नीरोग बन जायेंगे। इसके अलावा पूर्ण पद्मासन १ से ३ मिनट करें। पहला, दूसरा और तीसरा प्रकार मिल कर १ से २ मिनट करें। थोड़ी देर श्वास बाहर निकालकर करें और थोड़ी देर श्वास फेफड़ों में भर कर आसनाभ्यास करें। उपरोक्त सभी आसन कान के अवयवों को सशक्त बनाने के लिए श्रेष्ठ हैं। ६ मास से अधिक तक आसनाभ्यास करना होगा।

अन्य उपयुक्त उपचार

१ मोटे लाल मिर्चा के बीज निकाल कर उसमें नारियल का तेल भर कर आग पर गरम करें। बादमें यह तेल ठंडा होने के बाद प्रातःकाल स्नान के पहले डालें दोनों हाथ की तर्जनी अंगुलियों को कान के अग्रभाग पर रखकर अन्दर के भाग को २० से ४० बार हिलाइये। ऐसा करने से कानों के अन्दर के सूक्ष्म अवयव, रक्त वाहिनी नाड़ियों; क्रिया तंतुओंमें हलन चलन होकर व्यायाम से सशक्तता आयेगी। लगातार ३ मास तक उपरोक्त तथा निम्न उपचार करने से कर्ण रोग सदैव के लिए दूर हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार का आयोजन

प्रातःकाल एक संतरा तथा एक मौसम्बी का रस प्रा करें। उसके ३० मिनट बाद गाय का ८ औंस दूध लें, दोप भोजन के समय चावल, सब्जी, गेहूँ की रोटी, तुवर दाल, टमाटर, मूली, प्याज (कांदा), अलकोल, भिंडी लें चाहिए। भोजन के बाद १००-१५० कदम पैदल चल चाहिए। दोपहर के बाद ८ औंस दूध, रात के भोजन में गेहूँ की रोटी और सब्जी हो। दिन भर ५-७ गिलास पीना चाहिए। सोते समय सिर पर ठंडा तेल मालिश क १० दिन में एक बार उपवास करें। इसमें एक दिन प्रातःका सूर्योदय के समय शुद्ध हवा में १ से २ मील पैदल टहल जाना चाहिए।

मानसिक उपचार

बीमारी अच्छी हो रही है। पहले से अच्छा हूँ। लाभ अव होगा। कान के अवयव सशक्त बनकर काम कर रहे हैं। से निकलने वाला रस कम होता जा रहा है। ऐसा विच बार बार करते रहना चाहिए। शरीर का वजन ऊँचाई आधार से यदि अधिक हो तो कम करें। कम होवे तो बढ़ावें आसन, प्राणायाम, शुभ विचार आहार और मन के विचा से रोग मुक्त हो सकते हैं।

श्री राम स्वरूप खरे दत्तिया

पत्र ५ प्रश्न १

अहिंसा और सत्य समस्त धर्मों का सार है। गीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्कृष्ट धर्म ग्रंथ है, फिर भी उसमें अर्जुन के अहिंसा की ओर प्रवृत्त होने पर भगवान् ने उनको हिंसा करने की आज्ञा दी थी। ऐसा क्यों? यह उलझन मेरे समक्ष बहुत काल से है। अनेक विद्वानों के विचारों से समाधान नहीं हुआ। महात्मा गाँधी ने भी ४० वर्ष तक अपने जीवन में गीता को व्यवहारिक रूप देकर भी इस विषय को इतना कह कर छोड़ दिया कि युद्ध उस काल की सर्वमान्य प्रथा होने के कारण गीताकार ने भौतिक युद्ध को माध्यम बताया था। इससे मुझे शान्ति प्राप्त नहीं हुई। मनन करते हुए मैं हताश हो रहा हूँ। केवल इतना निर्धारित कर के रह जाता हूँ कि एक स्थितप्रज्ञ द्वारा किया हुआ कोई भी कर्म हिंसा के अन्तर्गत नहीं आता। किन्तु अपना यह सिद्धान्त किसी के सम्मुख रखूँगा तो उसे समाधान न होगा। दूसरे यह भी विचार मानता हूँ कि जिस प्रकार अधिकारी द्वारा आततायी को दिया गया दंड हिंसा नहीं है उसी प्रकार गीता के भौतिक युद्ध की बात है।

महाभारत में अमानुषी या अतिमानुषी पात्रों के चरित्र चित्रण को ध्यान में रख कर उसे ऐतिहासिक ग्रंथ मानने से भी कुछ विद्वान् सहमत नहीं। मैं तो महाभारत को एक ऐतिहासिक ग्रंथ मानता हूँ। सभी घटनायें सत्य हैं।

आपसे मुझे आशा ही नहीं प्रत्युत पूर्ण विश्वास है कि आप मेरी शंका का समाधान करके अनुग्रहीत करेंगे।

उत्तर १—आपका प्रश्न अत्यंत महत्व पूर्ण, हेतु पूर्ण और गहरे विचारान्दोलन से सविशेष पूर्ण है, हिंसा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अहिंसा इन दोनों शब्दों के अर्थ प्रकाश और अंधकार, दिन और रात, जीवन और मृत्यु के साथ समन्वय करने योग्य, प्रत्यक्ष और अनुमान इन दोनों के साथ परीक्षा करके अन्तिम निर्णय करना होगा।

हिंसा की व्याख्या

संक्षिप्त व्याख्याः- मन, वचन, कर्म से हानि पहुंचाना, प्राण हानि करना, दुःख देना, निर्दय बन जाना, एवम् तमोगुण प्रधान अपना जीवन बना देना।

अहिंसा की व्याख्या

संक्षिप्त व्याख्या मन, बचन, कर्म से दूसरों को दुःख नहीं देना। दूसरे का सुख उसे अपना सुख समझकर कष्टको स्वयं सहन करते हुये हुये दूसरों का दुःख दूर करने का प्रयास करना, प्राण हानि, धन हानि, मान हानि और अन्य किसी प्रकार की हानिसे दूसरों का संरक्षण करना, यह अहिंसा का लक्षण है। शुद्ध सत्वगुण-संपन्न रहना और रजोगुण का सहारा लेना।

ऐतिहासिक आधार पर विचार विमर्श

हमें महाभारत युद्ध का आधार ऐतिहासिक आधार से प्राप्त होता है। उसके पहले की घटना का आधार प्राप्त नहीं होनेसे शास्त्र, व्याख्यान अथवा दूसरे आधार से उल्लेख नहीं कर पाते, किसी न किसी आधार से हमें ज्ञात होता है, कि श्रीकृष्ण भगवान् अहिंसा का आधार होते हुये भी अर्जुन को कभी उपासना, तथा ज्ञान के उपदेश देकर अन्त में आठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद्यों को मृत्यु के मुख में धकेल कर विजय प्राप्त करवाया। एक साथ एक व्यक्ति (श्री कृष्ण भगवान्) अहिंसा के उपदेश सिद्धांत तथा धर्म को सर्वोपरी स्थान देते हुये प्रत्यक्ष मुख से समझाते हुये अर्जुन को हिंसा में क्यों धकेल दिया ? यह एक विचारणीय, महत्वनीय, और उलझा हुआ प्रसंग है।

सामान्य और विशेष हिंसा

अप शब्दों से, सत्ता के आधार से, गृह प्रवेशकर जबरन जांच करना, उच्च पदवीधरों ने निम्न पदवीधरोंको मानसिक कष्ट पहुंचाना, जानवर और अन्य साधनों का अपहरण करके दूसरे को दुःखदेना यह सामान्य हिंसा है। विशेष हिंसाकी व्याख्या में समूहगत अथवा व्यक्तिगत मार पीट करके प्राण हानि पहुंचाना, अग्नि, जल, वाहन आदि से प्राण हानि अथवा अवयवोंको हानि पहुंचाना।

अहिंसा

धर्म शास्त्र, संत, साधु, योगी, ऋषि, मुनि और त्यागी, वैरागी, उदासीन पंथोंके कथनानुसार प्राणीमात्रको मन से, वाचा से अथवा कर्म से दुःख नहीं देना यह अहिंसा है।

अहिंसा के विषय में गहन विचार

उपरोक्त निर्दिष्ठ भगवत् स्वरूप महात्मा गणों के शरीर जब बाल्यावस्था में थे हिंसा अहिंसा का ज्ञान नहीं था। खेल कूद के समय घर में पाले हुये कुत्ते, बिल्ली पोपट, गौ आदि प्राणियों को मारपीट किये होंगे। अन्य बालकों के साथ झगड़े किये होंगे, तमोगुणी आहार लिये होंगे। कुमारावस्थामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चूहे को, चींटी, कीड़े, खटमल आदि अनेक जीवों को सदनमें पहुंचाया होगा। कर्म का (हिंसाका) फल अवश्य होना चाहिये। किन्तु बाल्यावस्था में हिंसा, अहिंसा ज्ञान नहीं होनेसे हिंसा नहीं कही जा सकती। ज्ञान पश्चात् हिंसाका त्याग करना पड़ता है! अहिंसा का व्रत धारण करना पड़ता है, फल, सब्जी, कंदमूल, अनाज आदि सामान्य जनावरोंमें तीव्र वृतिका अंतःकरण होने से, मारे जाते समय असह्य वेदना होनेसे, तथा उसका मांस तमोगुण प्रधान होनेसे, मांस भक्षण करना महापाप होनेसे, मानव के लिये वर्ज्य है। शाकाहार करने से पाप नहीं होता, जमीन पर चलते समय श्वासोच्छ्वासके समय, जल सेवन के समय चावल, गेहूँ, सब्जि आदिको साफ करते समय सूक्ष्म जीव जंतुओं का नाश होना संभव है। प्रतिक्षण शरीर में नया रक्त उत्पन्न होता है। जीर्ण रक्त का परिवर्तन होता है। रक्त सूक्ष्म जीवों से बना हुआ है। रक्त में सफेद और लाल ऐसे दो प्रकार के सूक्ष्म जीव हैं। पुराने रक्त का परिवर्तन याने जीवों का नाश होता है। बालोंमें, बगल में, कपड़ोंमें, गुप्त स्थानोंमें अनेक प्रकारके जीव जन्तु अलग अलग प्रकार का स्वरूप रंग नाम धारण करके अस्तित्वमें रहते हैं। वे शरीर से दूर करने के प्रयास के समय मृत्यु मुखमें चले जाते हैं। यह हिंसा होते हुये भी नरक प्राप्त होगा ऐसा नहीं माना जाता। युवावस्थासे वृद्धावस्था तथा अति वृद्धावस्था तक वीर्य का रक्षण परिणपूर्ण रूपसे नहीं करपाते। वीर्य में जीवाणुओं की संख्या अधिक है। शारीरिक सम्बन्ध नहीं होते हुये भी, दृश्य,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार, पठन, बिचार, पित्त दोष, चिन्ता ऐसे अनेक कारणों से वीर्यपात हो जाता है। गृहस्थाश्रम में पर्याप्त रूपसे सन्तानोत्पति के शिवाय ब्रह्मचर्य का खंडन करके वीर्य नाश करना हिंसा है। ऐसे अनेक कारणों से जन्मसे मृत्युतक सम्पूर्ण रीतिसे अहिंसा का पालन करने में असमर्थ है, पराधीन है। सम्पूर्ण रीतिसे अहिंसा का पालन नहीं कर सकते। जहांतक हो सके वहांतक व्यक्तिगत रूपसे अहिंसा का पालन करने में प्रयत्नशील बन सकते हैं और अहिंसा का पालन करने के लिये समाज को उपदेश दे सकते हैं, हिंसासे हिंसा बढ़ती है। दुख, आपत्ति, रोग, वेदना, हाहाकार, असह्य पीड़ा, धन हानि, मान हानि, भय, चिन्ता, मृत्यु, आदि भयंकर यातनायें तथा नरक प्राप्त होता है। इसलिये हिंसा का त्याग करना चाहिये, उपरोक्त कथनानुसार सामान्य हिंसा किसी से सम्पूर्ण तया मिट नहीं सकती हैं। विशेष हिंसा से अवश्य बचना चाहिये, और दूसरों को बचाना चाहिये, केवल हिंसासेही जीवन निर्वाह करने वाले मछली, अमुक प्रकारके पक्षी तथा मांसाहारी जानवर कैसे भी हों, जन्म मृत्यु से मुक्त होकर सत्चित् आनन्द स्वरूप में लीन रहकर हिंसा से बचे, अहिंसा का पालन करे।

अहिंसा परमो धर्मः

॥ वर्तमान युग के सभ्य मानव की प्रकृतिके लक्षण और हेतु॥

हिंसा और अहिंसा, । स्वभाव, लक्षण, कर्म तथा फल का प्रत्यक्ष रूपमें अनुभव लेनेसे । सभ्य समाज में प्रतीत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिगुणात्मक प्रकृतिजन्य, समस्त जगत की गति विधियों से पता लगता है, कि मानव की प्रगाढ़ शक्ति कौनसी दिशा में जा रही है, और कहां जाकर रुकेगी, डिग्रीधारी, (उपाधिवाले) धनवान, सत्तावान, विज्ञानी वर्गसमाज विशेष के हित के कारण अहिंसात्मक पद्धति से सतत प्रयास कर रहे हैं। किन्तु इसका परिणाम प्रत्यक्ष रूपमें हिंसा के रूपमें परिवर्तन हो रहा है। ऊपरसे दंभ बताते हैं। कर्तव्य में अहिंसा के पुजारी भंडार बता रहे हैं। परन्तु सारे विश्वमें तथ अशांति, झगड़े एवं हिंसा का तांडव हो रहा है,। इसका निवारण अवश्य होना चाहिये।

मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान, सिनेमा, जुआ इत्यादि और अन्य अनेक अकथनीय निन्द्य कर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा है। उसका प्रभाव उच्च कोटि के लोग-(समाज को नियन्त्रण में रखने वाले) उनपर पड़ा। डिग्री, सत्ता, धन आदि का प्रभाव मनपर गहरा पड़ता है, सत्ता नशे के समान है। दूर द्रष्टि, भविष्य की लंबी नजर ध्यानमें रखकर समाज की सुधारणा करने वाले बहुत ही अल्प संख्यामें प्राप्त होंगे। उच्च कोटि के लोगोंका प्रभाव सामान्य जनता पर पड़ता है। मांस, मदिरा, सिनेमा बीड़ी आदि व्यसनों के प्रचार प्रसार से सर्व साधारण जनताका जीवन पवित्र नहीं हो सकेगा। आहार, आचार, बिचार, संगतिसे मानव की उन्नति अथवा अवनति का आधार है। सामान्य जन जीवन में नैतिकता, धार्मिकता, सज्जनता, सहिष्णुता, लाने के लिये वर्तमान काल के आचार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार तथा कर्म का जड़ से परिवर्तन होगा, तब अहिंसा का महत्व समझमें आयेगा।

समाज उद्धारक आध्यात्मिक विद्या के पुजारी केवल भारत में ही नहीं किन्तु, सब पृथ्वी के भिन्न भिन्न धर्म के धर्मगुरू हैं। वे हिंसा से दूर रहकर अहिंसा के प्रति प्रयत्नशील हैं, परन्तु संसार में अनाचार बढ़ जाने से धर्मगुरुओं का प्रभाव समाज के ऊपर कम पड़ता है।

मेरा अनुभव

मेरे विचार केवल श्री रामतीर्थ योगाश्रम में सीमित रूपसे नहीं। किन्तु अन्य स्थानोंमें जाकर धार्मिक प्रवचन किया हूँ। दो वर्ष पूर्व बम्बई के एक प्रतिष्ठित व्याख्यान खण्डमें नैतिक तथा धार्मिक विषय में मेरा व्याख्यान हो रहा था प्रतिष्ठित तथा सर्व साधारण लोग कई हजारों की संख्यामें उपस्थित थे। प्रसंगोपात मांसाहार और शाकाहारके विषय में गुण तत्वों की तुलनात्मक दृष्टिसे समझाते समय अनेक लोग सभा खण्ड छोड़कर जाने लगे। शाकाहारके बारेमें महत्वनीय और व्यसनोंसे धनहानि, मानहानि, रोगोंकी पीड़ा, परिवार को हानि, आदि विषय में व्याख्यान हो रहा था। क्योंकि आत्म, अनात्म, ईश्वर चेतन और भगवान् के ज्ञान के विषय में जीवन में उतारने के लिये मन पवित्र एवम् एकाग्र होना चाहिये। मन शरीर में रहता है, शरीर शुद्ध होनेसे मनकी शुद्धि होती है। मन शुद्ध होकर आत्मदर्शन के अनुकूल होता है श्रोता वर्ग में आधी संख्या कम होगई थी। मेरा एक ही ध्येय था कि यदि श्रोता वर्गमेंसे अपवाद रूपमें एकही व्यक्ति व्याख्यान सुनकरके व्यसन मुक्त हो जायेगा। जीवन सुख-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपमें परिवर्तन होगा। सदा के लिये अध्यात्म मार्ग के पथि बनकर मोक्षगामी हो जायेगा। तभी मेरा व्याख्यान सफ हुआ समझा जायेगा। और हुआ भी ऐसा ही। व्याख्यान पश्चात् अनेक लोग मेरे निकट आकर कहने लगे कि स्वामी अनेक धार्मिक स्थानोंमें अनेक बरसोंसे हमलोग आत्मज्ञ संपादन करने के लिये जाते हैं। वहां पर योग, वेदान्त, भक्ति गीता, उपनिषद, योग वासिष्ठ आदि ग्रंथोंके धार्मिक श्लोकों के अर्थ और सामाजिक, धार्मिक दृष्टांत समझाकर व्याख्या पूरा कर देते हैं। फल स्वरूप हमें हमारे जीवन में कहां कौ किस कारण, किस रूपसे गलती होती है। यह समझमें न आने से अज्ञान, अंधकार में पड़े हुये हैं। आपने अधिक संख्या की उपस्थिति की परवा नहीं करके निर्भय एवम् परम धर्म को समझाया, जिससे हमको पूर्ण रूपसे विश्वास हुआ कि भविष्य का जीवन किस प्रकार सुधारें। आपने कहा कि मांसाहारी लोग, योग, वेदान्त, और भक्ति मार्ग के अधिकारी नहीं रह सकते। हिंसामय जीवन से अहिंसाके पुजारी कदापि नहीं बन सकते। आज से हमलोग आपके सामने प्रतिज्ञा लेते हैं, कि किसी प्रकारके व्यसनाधीन नहीं रहेंगे शाकाहारी रहेंगे। और आपके समान निर्भय रहकर दूसरों को शाकाहारी एवम् वासना मुक्त बनाने के सतत प्रयास करेंगे जिससे हिंसा का स्थान अहिंसा प्राप्त करने में समर्थ बने।

इस प्रकार से कहने का भाव यह है कि भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो तथाकथित हिंसा की ओर प्रवृत्त किया वह वस्तु स्थिति को समझाकर ही। कौरव वर्ग आततायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान पाण्डव पक्ष पर आघात करते आये थे। उनके इस दुष्कृत्य का घड़ा भर चुका था और उनका अन्त अवश्यंभावी हो गया था, इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने विराट् स्वरूप के दर्शन अर्जुन को कराकर यह बता दिया था कि समस्त विश्व ही उनके मुख में प्रवेश कर रहा है। फिर कौन किस को मारेगा ? यह प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। अतः भगवान् ने अर्जुन को निमित्त मात्र के लिए-दिखावे के लिए-पहले से ही मरों को मारने के लिए-तथा कथित हिंसा की ओर प्रवृत्त किया। इस प्रकार की सात्विकी हिंसा से कोई दोष अर्जुन को न लग पाया।

रामतीर्थ

श्री रामतीर्थ योगाश्रम की पत्रिक

ऑर्डर फॉर्म

श्री व्यवस्थापक 'रामतीर्थ योगाश्रम' दादर बम्बई १४.

प्रिय महाशय,

मैं 'रामतीर्थ' का वार्षिक सदस्यता शुल्क ५)रु. मनी-ऑर्डर/पोस्टल ऑर्डरसे भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया निम्नांकित पते पर दि०———से प्रति भेजने का कष्ट करें:-

नाम...

पूरा पता...

....

....

तिथि..................

भवदीय/भवदीया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगीराज
श्री उमेशचन्द्रजी

(गतांक से आगे)

अति आरति पूछौं सुरराया,
रघुपति कथा कहौ करिदाया;
प्रथम सो कारण कहौ विचारी,
निर्गुण ब्रह्म सगुणः वपुधारी।

हे सुरेश्वर! मैं अत्यन्त आर्त भावसे अपनी जिज्ञा प्रकट कर रही हूँ—पूछ रही हूँ; कृपा करके भगवान् रघुप की कथा कहिये। (यहां पार्वतीजी आर्त-जिज्ञासु भक्त भूमिका पर हैं) पहले तो अत्यन्त विचारपूर्वक यह कार बताइये कि निर्गुण ब्रह्मने सगुण-मानव शरीर क्यों धार किया?

पुनि प्रभु कहौ राम अवतारा,
बालचरित पुनि कहौ उदारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहौ यथा जानकी बिवाही,
राज तजा सो दूषण काही ।

हे प्रभो ! इसके बाद भगवान् राम के अवतार का विवरण बताइये और फिर यह भी बताइये कि रामने अपने उदार बाल चरित्र से स्वजन-परिजनों का कैसा अनुरंजन किया। तदुपरान्त जानकी के साथ रामका विवाह जिस तरह हुआ वह सब विस्तारपूर्वक कहने की कृपा कीजिये और यह भी भलीभांति समझाइये कि भगवान् रामने राज्यका परित्याग कर दिया था, वह किस दोष-किस विघ्न के कारण हुआ ?

वन बसि कीने चरित अपारा,
कहौ नाथ किमि रावण मारा;
राज बैठि कीन्ही बहु लीला,
सकल कहौ शंकर शुभ शीला ।

वनवास के समय में भगवान् रामने जो अपरिमित दिव्य चरित्र किये—जो असंभव कार्य कर दिखाये, हे नाथ ! वह सब कहिये और यह भी कहिये कि रावण जैसे महापराक्रमी को कैसे मारा ? तदुपरान्त राज सिंहासनपर बैठकर-राजत्व प्राप्त करने के बाद जिन अनेक प्रकार की लीलाओं से-अपने दैवी कार्यों से जो महान् कार्य किये, हे शुभशील शंकर ! उन सबका विस्तारपूर्वक वर्णन कीजियें ।

बहुरि कहौ करुणायतन, कीन जो अचरज राम,
प्रजासहित रघुवंशमणि, किमि गवने निज धाम ।

हे करुणानिधान ! फिर भगवान् रामने जो आश्चर्यजनक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कार्य किया, उसका विवरण बताइये। वह यह, कि रघुवंश-मणि राम अपनी प्रजा के सहित कैसे अपने धाम को गये!

पुनि प्रभु कहौ सो तत्त्व बखानी,
जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी;
भगति ज्ञान विज्ञान विरागा,
सो सब बरणहु सहित विभागा।

हे प्रभो! फिर उस तत्त्व का निरूपण कीजिये, जिस परम विज्ञान में ज्ञानी मुनिवर निरन्तर निमग्न रहते हैं। इसके अतिरिक्त भक्तितत्त्व, ज्ञान-विज्ञान और विराग तथा मुक्ति-तत्त्व का भी पृथक् पृथक् निरूपण कीजिये।

औरौ राम-रहस्य अनेका,
कहौ नाथ अति विमल विवेका;
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई,
सोऊ कृपालु राखेउ जनि गोई।

राम के संबंध में जो और भी अनेक प्रकार की रहस्यमय बातें हैं उनके जो निगूढ़तम कार्य हैं, हे नाथ! उनके उस विमल विवेकपूर्ण विधान का वर्णन करें। इसके अतिरिक्त हे प्रभो! मैंने जो बात न पूछी हो—जो पूछने से रह गयी हों, हे प्रभो! उसको आप भी छिपा कर न रखें। इन सब गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन कीजिये।

तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना,
आन जीव पामर का जाना;
प्रश्न उमा के सहज सुहाये,
छलविहीन सुनि शिव मन भाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों के कथनानुसार आप त्रिभुवन-तीनों लोकों के गुरु हैं, अतः आप को छोड़कर अन्य पामर जीवयोनिधारी भला इस सम्बन्ध में क्या जान सकते हैं ? भगवती उमा के ये स्वाभाविक, सुन्दर और निष्कपट प्रश्न सुनकर शिवजी परम प्रसन्न हुये। उन्हें यह प्रश्न रुचिकर प्रतीत हुये।

हरहिय रामचरित सब आये,
प्रेम पुलक लोचन जल छाये,
श्रीरघुनाथ-रूप उर आवा,
परमानन्द मगन मनछावा।

भगवान् शिवके हृदय में रामके समग्र चरित्र जगमगा उठे। वे प्रेम से पुलकायमान हो उठे और नेत्रों में आनन्द के जलबिन्दु उभर आये। उनके अन्तरमें श्रीरघुनाथजी का दिव्य रूप प्रतिष्ठित हो गया और मन परमानन्द में निमग्न हो गया।

मगन ध्यान रस, दण्ड युग, पुनि मन बाहर कीन,
रघुपति चरित महेश तब, हर्षित बरणै लीन।

भगवान् महेश्वर कुछ क्षणों के लिये दिव्य ध्यान-रस में निमग्न हो गये--डूब गये। और फिर भगवान् रामके पावन चरित्र--उनकी मनोहर लीलाओं का वर्णन प्रारम्भ किया।

झूठौ सत्य जाहि बिनु जाने,
जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेहि जाने जग जाय हेराई,
जागे यथा सपन-भ्रम जाई।

जिसको--भगवान् को बिना जाने झूठ भी सत्य होता है—यह मायावी जगत् वास्तविक जान पड़ता है, बिना पहिचाने-अज्ञानावस्था में दूर पड़ी हुई रस्सी जान पड़ती। जिसको जान लेनेपर यह जगत् की माया अन्त हो जाता है, अर्थात् मानव जगत् को इस प्रकार मानने लगता, जैसे वह जाग उठा हो और उसका स्वप्न मिट गया हो।

वंदौं बालरूप सोइ रामू,
सब विधि सुलभ जप जिसु नामू।
मंगलभवन, अमंगल हारी,
द्रवौ सो दशरथ अजिरविहारी।

उन्हीं बालरूप रामकी मैं वन्दना करता हूँ, जिनके नाम जप करने से साधक को सभी सिद्धियां सुलभ हो जाती वही मंगलभवन--कल्याणरूप और अमंगल का हरण करने दशरथ-अजिरविहारी—दशरथ के आंगन में खेलने बालक्रीड़ा करनेवाले राम हमारे प्रति द्रवीभूत हों--हम कृपा करें।

करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी,
हरषि सुधा-सम गिरा उचारी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्य-धन्य गिरिराज कुमारी,
तुम समान नहिं कोउ उपकारी।

भगवान् रामको भगवान् शिवने प्रणाम किया और प्रसन्न होकर अमृतमयी वाणी बोले—हे गिरिराज कुमारी! तुम धन्य हो, धन्य हो, तुम्हारे समान कोई इस प्रकार की परोपकार की भावना रखनेवाला नहीं है।

पूछेउ रघुपति-कथा-प्रसंगा,
सकल लोक जगपावनि गंगा,
तुम रघुबीर चरण अनुरागी,
पूछेउ प्रश्न जगत-हित लागी।

तुमने भगवान् रामका वह कथा-प्रसंग पूछा है, जो समस्त लोकों और इस जगत् को पावन करनेवाला गंगाका दिव्य स्रोत है। राम के चरणों में तुम्हारा सच्चा अनुराग है—सच्ची भक्ति है। तुमने तो जगत् का कल्याण करने की भावना से यह प्रश्न पूछा है।

रामकृपाते पारवति, सपनेहु तव मन माहिं,
शोक मोह सन्देह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं।

रामकी कृपासे हे पार्वती! तुम्हारे मन में शोक, मोह,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देह भ्रम आदि के विकार कभी उत्पन्न हो नहीं सके, ऐसी मेरी धारणा है।

तदपि असंका कीन्हेउ सोई,
कहत-सुनत सब कर हित होई,
जिन हरि-कथा सुनी नहिं काना,
श्रवण-रंध्र अहि-भवन समाना।

तथापि तुमने जो शंका-जो सन्देह व्यक्त किया है, उसका समाधान करते हुये और उसको कहते-सुनते हुये सबका ही कल्याण होगा। जिन्होंने भगवान् की कथा—उनकी गुणगाथा नहीं सुनी, उनके श्रवण-रन्ध्र—कानोंके छिद्र अहिभवन (सांपकी बांबी) के समान हैं।

नयनन सन्त-दरस नहिं देखा,
लोचन मोरपंख कर लेखा,
ते शिर कटु तूंबरि सम तूला,
जे न नवत हरि-गुरु-पद-मूला।

जिन्होंने नेत्रों से सन्तों का दर्शन नहीं किया, उनके नेत्र मोरपंख के समान निरुपयोगी हैं तथा वे शिर कड़वी तूंबी (लौकी) के समान महत्वहीन हैं, जो भगवान् और गुरु के चरणों पर प्रणत नहीं होते—झुकते नहीं। —क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम समाचार

[श्री रामतीर्थ योगाश्रम के व्याख्यान खड में हर शनिवार सायंकाल ७ बजे और हर रविवार प्रातःकाल १० बजे व्याख्यान होता है। उसके सारांश रूप में आश्रम समाचार स्तम से प्रकट किया जाता है। सप्ताह में एकबार आश्रम के संचालक योगीराज श्री० उमेशचन्द्रजी का व्याख्यान होता है और एक बार अन्य आगन्तुक उच्चकोटि के योगी, ऋषि, महात्मा, साधु संत एवं प्रखर विद्वानों का व्याख्यान होता है। बहुधा सप्ताह में एक बार शारीरिक आरोग्य और एक बार आत्मदर्शन के बारे में योग, वेदान्त, भक्ति आदि के बारेमें सार्वजनिक सत्संग होने से सर्व धर्म के अनुयायी वर्ग इस सत्संग का लाभ उठा सकते हैं।

—व्यवस्थापक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-योग और जीवन.
स्थान-जीवन विकास केन्द्र घाटकोपर (बम्बई)
वक्ता-योगीराज श्री उमेशचन्द्रजी.

[जीवन विकास केन्द्र के अध्यक्ष महोदय श्री व. द. माहुलेकर के मकर संक्रांतिके उत्सव में प्रवचन करने के लिये योगिराज श्री उमेशचन्द्रजी, प्रेम पूर्वक आमंत्रण का स्वीकार करके उपस्थित हुये थे। और 'योग और जीवन' के विषयमें महत्वनीय प्रवचन किये थे, प्रवचनमें प्रतिष्ठित नागरिक श्रोतागण अधिक संख्या में उपस्थित थे पाठकों के लिये प्रवचन का सारांश-निम्नांकित है। — व्यवस्थापक जी. वि. के.]

उपस्थित सज्जनो और सन्नारियो, जिस संस्था की ओर से प्रवचन करने के लिये मुझे आमंत्रण दिया गया उस संस्था का नाम जीवन विकास केन्द्र है। मनुष्य मात्रका उद्देश जीवन विकास की ओर बढ़ रहा है, किन्तु जीवन विकास के मार्ग भिन्न भिन्न अपना रहे हैं, कई मार्गोंसे जीवन विकास का अवरोध हो रहा है, कई मार्गोंसे साधारण रूपसे विकास हो रहा है। और कई मार्गोंसे विकास पर्याप्त रूपमें हो रहा है। इन अनेक मार्गोंमें योगमार्ग यह एक सरल एवम् महत्वपूर्ण हैं, कर्मयोग, तंत्रयोग, मंत्रयोग, तपयोग, भक्तियोग, राजयोग, अष्टांगयोग ऐसे अनेक प्रकार के योग हैं। मैं आज आपके समक्ष पतंजलि मुनि कृत पातंजल योगदर्शन में बताये हुये समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद तथा कैवल्यपादमें से केवल साधनपाद के विषय में समझाऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधनपाद (क्रिया योग)

साधन पादमें योगके आठ अंग बताये गये हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इन अष्टांग योगमें जीवन विकास के लिये यथेच्छ रूपसे लाभ प्राप्त होता है। अष्टांगयोग में पारंगत होनेपर अन्य प्रकार के योगमार्ग अथवा मतमतांतर के अनुसार, शास्त्रोंके कथनानुसार लाभ उठाने की अभिलाषा नहीं रहती है।

सज्जनो—जैसे त्रिवेणी संगम में (गंगा, यमुना, सरस्वती) स्नान करने से अनेक जन्मों के पापों से मानव मुक्त हो जाता है, और पुण्यका उदय होता है ऐसी मान्यता है। किन्तु अष्टांग योग को सक्रिय रूपमें जीवन में उतारने से त्रिविध ताप दूर होते हैं, शरीर कांचन के समान शुद्ध, आरोग्यसम्पन्न तथा मन पवित्र एकान्त बनकर प्रशांत अवस्था में पहुँच जाता है, और सत्‌चित्‌आनंद-स्वरूप का लाभ (मोक्ष) प्राप्त होता है।

कर्म उपासना और ज्ञान

अष्टांग योगको तीन कांडोंमें विभाजित किया गया हैं। यम, नियम, आसन, और प्राणायाम कर्मकाण्ड है। अमुक प्रकार के प्राणायाम तथा प्रत्याहार, उपासना काण्ड हैं। धारणा ध्यान एवम् समाधि (संयम) ज्ञान काण्ड है।

सज्जनो—यमके पांच प्रकार हैं, अहिंसा, सत्य, अस्तेय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(चोरी नहीं करना) ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (संग्रह का वि... किये बिना परोपकार, दान, धर्म करना)

नियम के पांच प्रकारः—शौच, ब्राह्यशौच, जलसे ... आंतर शौचके दो प्रकार हैं। पहला प्रकार—काम, क्रो... लोभ, मोह, मद, मत्सर को अन्तःकरणसे त्याग करना। दू... प्रकार-नेतिकर्म, धौतिकर्म, नौलीकर्म, बस्तिकर्म, कपाल भा... तथा त्राटक कर्म करके शरीर के आंतर भागको शुद्ध कर... संतोष, तप (सहनशीलता, निर्भयता, साहसिकता धैर्य... दृढ़निश्चय, जप एकादशी के दिन निराहार रहकर ... पालन करना)।

स्वाध्याय—सतशास्त्र, गुरु, योगी, ऋषि-मुनि, महात्मा... साधुसंत विद्वज्जनों के उपदेश तथा जीवनी का पठन पाठ...

ईश्वर प्रणिधान—(अनासक्तयोग) निरभिमान बन... जीवन के प्रयत्न का फल ईश्वर को सौंप देना।

आत्मस्वरूप

सज्जनो एवम् सन्नारियों—इस अष्टांग योगकी किंचि... मात्रासे जीवन के विकास का प्रारंभ है। जीवन के आनन्द... के आरंभ की प्रथमावस्था-जिन्होंने यम नियम सक्रियरूप से... किये होंगे उन्हें अवश्य पूछ लीजिये गा।

अष्टांग योगका तीसरा अंग आसन

कुल चौरासी लक्ष आसन हैं, उनमेंसे ८४ आसन मुख्य हैं... उनमेंसे ३२ आसन, ३२ आसनोंमें से १६ आसन, १६ आसन...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से ४ आसन, और ४ में से १ सिद्धासन मुख्य है। पद्मासन, स्वस्तिकासन और सिद्धासन यह आसन देवपूजा, धारणा, ध्यान, समाधि-अवस्था में बैठने के लिये अनुकूल हैं। पूर्ण पद्मासन, मत्स्यासन, जानुशिरासन, पश्चिमोत्तासन, शीर्षासन, शवासन, विपरीत करणी, हलासन, कर्णपीडनासन, ऊर्ध्वहस्तासन, शलभासन, अर्ध मत्स्येन्द्रासन, पूर्ण मत्स्येन्द्रासन, वक्रासन, सुप्त वक्रासन, सुप्त धनुरासन, वीर्य स्तंभनासन, ताड़ासन, गोरक्षासन, लोलासन इत्यादि आसनों के अभ्यास से रोग निवारण होते हैं। निरोगी काया तथा देह बलवान बना रहता है।

प्राणायाम

प्राणायाम कुल ११ हैं। जैसे—अनुलोम, विलोम, सूर्य भेदन, चन्द्रभेदन, शीतली, शीतकारी, भ्रामरी, मूर्च्छा, भस्त्रिका नं. १ और नं. २, प्लाविनी, इनमें से कई प्राणायाम के अभ्यास से रोग निवारण होते हैं और कई प्रकार के प्राणायाम से मनकी बाह्य जगतमें घूमनेकी वृत्तिका निरोध होकर आंतर मुख बन जाता है। भ्रामरी, मूर्छा, भस्त्रिका आदि प्राणायाम से मन निरोधकर आंतरिक शांतिमें मग्न रहता है। भूख-प्यास कम करने के लिये शीतली, शीतकारी प्राणायाम का अभ्यास करना पड़ता है। योग विद्याकी महान शक्ति यह है कि सत् चित् आनन्द स्वरूप आप स्वयम् हो। अपने स्वरूप का अनुभव लेने के लिये बाहर खोज करने की जरूरत नहीं। शरीररूपी मन्दिर में योगाभ्यास द्वारा खोज करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आद्य शंकराचार्य सदाचार स्तोत्रमें लिखते हैं—

> देशो देवालय प्रोक्तो, देवी देवो निरञ्जनः
> अर्चितः सर्वभावेन, स्वानुभूत्या विराजते ॥

अर्थात्—नव दरवाजे (दो चक्षु, २ श्रोत्र, घ्राणेन्द्रिय, शिश्नेन्द्रिय, मुख और गुदाद्वार) से सुसज्जित ४ शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, कारण तथा महाकारण) से आभूषित। ५ कोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय) से रक्षित मानवदेह मंदिर में देही रूपी निरंजन-निराकार भगवान् का वास स्थान है। उनका साक्षात्कार करने के लिये अनेक प्रकार से सतत प्रयत्न करना होगा। वह परमात्मा का स्थान मानव शरीर के अन्दर होते हुये भी उनका दर्शन प्राप्त न करके बाहरी जगत में भटकने से कोई लाभ नहीं होगा। प्राणायाम से मनकी स्थिरता होती है। बाहरी जगत से दूर रहने का प्रयास करता है। उपासनाकाण्ड का यह प्रथम स्वरूप है।

प्रत्याहार

इन्द्रिय निग्रह का नाम प्रत्याहार है। एकान्तमें प्रवेश करते ही एकादशइन्द्रियों के हलन चलन में परिवर्तन हो जाता है। प्रत्याहार के अभ्यास के समय में मन द्वारा इन्द्रियों को समझाना पड़ता है। मन इन्द्रियों को कहता है, हे इन्द्रियो तुम इस नश्वर संसार में घूमकर आहिस्ते आहिस्ते काम करते जाओ, जहां अत्यावश्यक है वहां अल्प काल के लिये जा करके अंतरमुख हो जाओ, बाहर भटकने से दुःख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रित सुख मिलेगा, वह केवल सुखका आधार मात्र है, मृगजलवत है, परिणाम में उपाधिमय है। सनातन काल से किसी ने भी सदाकाल परमानंद सुख की खोज (बाहर से) नहीं प्राप्त की है। इस सुख के लिये इन्द्रियों को स्वाधीन में रखना होगा। हे इन्द्रियो आन्तर्मुख होकर मेरे में लीन हो जाओ। मैं तुमको ऐसा अभयदान देता हूं कि आन्तर खोजमें लिये आनंददायी खजाना मिलेगा उस खजाने का आश्रय लेकर मस्त दशामें रहोगे।

प्रत्याहार के अभ्यास काल में मानसिक के साथ शारीरिक क्रिया करनी पड़ती है। नाभि (सूर्य चक्र) के चार अंगुल नीचे स्वाधिष्ठान चक्र में कुंडलिनी शक्ति विद्यमान हैं। महामुद्रा, महाबंद मुद्रा, महावेद मुद्रा, परिचालन युक्त परिधान मुद्रा, विपरीत करणी मुद्रा, ताड़न मुद्रा, शक्ति चालन मुद्रा के अभ्यास द्वारा स्वाधिष्ठान चक्र में कर्माशय को साढ़ेतीन अंगुल वेष्टितकर सोई हुई कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत कर शनैः शनैः ब्रह्मरंध्र (सहस्रदल पद्म) में ले जानी पड़ती है। इस अभ्यास को कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करनेका अभ्यास कहा जाता है।

मानव शरीर में गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि अनेक देवों का वासस्थान है, कुंडलिनी जाग्रत अवस्था में अनेक देवोंका दर्शन, वंदन, पुजन, मंत्र, जप आदि करके प्राण को अनेक चक्रोंमें भेदन करके ब्रह्मरंध्र में ले जाना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणायाम मुद्रा तथा प्रत्याहार के लाभ

अंतः करण की स्थिरता प्राणायाम से आरंभ होती मुद्राएँ तथा प्रत्याहार में आंतर जगत की महान गूढ़ शक्ति परिचय होने लगता है। प्राणायाम, मुद्राएँ, कुंडलिनी के उत्थान के समय आठ प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती जैसे-अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकम्य, इशित्व, वशि और यत्रकामा वसायित्व, अष्ट सिद्धि प्राप्त करने के पश्चा उसका कैसा उपयोग करना यह साधक की मनो भावना ऊपर आधारित है, जैसे कोई मानव धनाढ्य होने पर धन सदुपयोग अथवा दुरुपयोग कर सकता है, योग मार्ग का सच्चा अधिकारी आठों सिद्धियों का उपयोग सत्य मार्ग के लिये करेगा। सिद्धि प्राप्त होनी अनिवार्य नहीं है, और होने किसी प्रकार के संदेह बिना लोक कल्याणार्थ उपयोग करना सर्वोत्तम है।

धारणा, ध्यान, समाधि (संयम)

देश बन्ध चित्तस्य धारणा (योगदर्शन ३।१) चित्त को किसी एक स्थानमें स्थिर करने का नाम धारणा है, गुरु, मूर्ति, पुष्प अथवा किसी भी सात्विक वस्तु के ऊपर (जहां पवित्र प्रेम हो) चित्त को स्थिर कर देना, यह धारणा के बाह्य स्वरूप है आधार से स्थिर कर देना पड़ता है पश्चात् चित्त को आंतर मुख द्वारा हृदय, भ्रकुटी, सहस्रदल पद्ममें स्थिर कर देना यह धारणा है। धारणा द्वारा अंतःकरण का सूक्ष्म मल दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा-मल रहित (आयना) शीशे के समान शुद्ध होगा। ब्रह्माकार वृत्ति का अनुभव होगा।

तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् । (योग दर्शन ३।२) धारणा से अभ्यास बढ़ाते बढ़ाते ध्येय वस्तु में चित्त की एकता का नाम ध्यान है। तैल धारावत् चित्त की वृत्तियों को ध्येय में निरोध करना यह ध्यान है, अविच्छिन्न रूपसे चित्त की वृत्ति को तदाकार बना देना ध्यान है, लिखने में, जितना सुलभ मालूम पड़ता है, उतना सुलभ अनुभव लेने में नहीं है, निरन्तर प्रेम पूर्वक सतत अभ्यास करना होगा, ध्यानावस्थामें जो सुख प्राप्त होता है उसे वर्णन करना कठिन प्रतीत होता है। शुद्ध अद्वैत तत्व के समीप मन-चित्त जाता है, तब अपने स्वरूप को भूल जाता है। उस समय ध्यानमें आनंद आयेगा। संभव है, धारणा, ध्यान अवस्थामें तंद्रावस्था आ जाये, किन्तु सतत अभ्यास से ध्यान का अनुभव सुचारू रूपसे प्राप्त होगा।

यह अष्टांग योग में ८ वाँ अंग है, तदेवार्थ निर्भास स्वरूप शून्यमिव समाधि-(योगदर्शन ३।३) ध्यान की पराकाष्ठा, ध्यान की अंतिम अवधि, ध्यान के अंतिम फल की समाधि है। सविकल्प, निर्विकल्प, संप्रज्ञात और असंप्रज्ञात समाधि ऐसी अनेक प्रकार की समाधि हैं। समाधि का नाम सुनते ही संसारी माया में लपटे हुये, फसे हुये, मोह में बंधे हुये अज्ञानी मानव को असावधानसा प्रतीत होता है, किन्तु मुमुक्षु वर्ग के उत्तम अधिकारियों को अत्यंत प्रसन्नता होती है। समाधि के अभ्यास काल में जो सुख प्राप्त होता है, उस सुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वर्णन करने में मन असमर्थ रहता है, मन, वाणी, परे समाधिका अनुभव है, अंतःकरण को आत्मा बना समाधि है, अपने स्वरूपमें स्थिर हो जाना यह नि समाधि है, ध्यान की पराकाष्ठा स्थिति समाधि है, का अभ्यास कर पारंगत होने वाले चौरासी लक्ष यो मुक्त हो जाते हैं।

परमानंद स्वरूप में अपना बाकी का जीवन व्यतीत भलेही वह संसार में हो, व्यवहार में हो, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी किसी आश्रम में हो वह मु पवित्र आत्मा है। परम पूज्य है। वन्दनीय है। प्रशंसनी शरण लेने योग्य है। अष्टांग योग में धारणा, ध्यान निर्विकल्प समाधि ज्ञान काण्ड होने से आत्मदर्शन प्र परम तत्व को जान लेता है। समाधि का नाम लेतेही पुरुष के शरीर में अत्यानंद की भावना से रोमांच हो है। परम धन्य जीवन समझता है। जन्म सार्थक मान लेता समाधि के अनुभव का वर्णन अवर्णनीय होने का मुख्य वहाँ द्वैत नहीं है। द्रष्टा, ध्यान और ध्येय यह त्रिपुटी है। ध्यान ध्येय में समावेश होता है, और ध्येय समाविष्ट होता है। अन्त में केवल द्रष्टाही अवशेष कौन किसका अनुभव बतावें, वर्णन करें, और प्रशंसा माया बंधन, देह बंधन से मुक्त होतेही अंतिम स्थिति होगी।

समाधि अवस्था का अभ्यास बतानेवाले योगी, औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ब्रह्मनिष्ठ हों तो सोने में सुगंध के समान शिष्यगणों के लिये परम हितकारी गिने जायेंगे। क्योंकि स्वयं अनुभव के प्रत्यक्ष रूप में शिष्य को बताते समय शास्त्रका ज्ञान, शरीर रचना का ज्ञान, संसार का ज्ञान, माया का ज्ञान, प्रकृति का ज्ञान होना जरूरी है जैसे शक्कर के मीठेपन का वर्णन करते समय शक्कर (चीनी) का रूप, रंग, आकार, स्वभाव आदि को समझा करके अंत में शक्कर का असल स्वरूप, गुण, स्वाद को समझाना पड़ता है। समझाते समय श्रोतावर्ग को भान होता है कि व्याख्याता शक्कर का स्वयं स्वाद ले रहे हैं और हमें स्वाद चखा रहे हैं। ऐसा भान, ध्यान और अनुभव मन द्वारा, एवम् इन्द्रियों द्वारा अनुभव होना चाहिये जैसे इमली का, निंबू का वर्णन करते ही जिह्वामें रस स्राव होता है। अष्टांग योग के विषय में विशाल रूपमें जितना समझावे उतना कम है। हरि ॐ तत्सत्।

रामतीर्थ के वार्षिक ग्राहकों को भेंट

रामतीर्थ १९६४ का कैलेण्डर

सुख, सामर्थ्य और समृद्धिदाता भगवान् शंकरजी के सुन्दर आकर्षक १९ × २९ इंच के चित्र वाला १९६४ का कैलेण्डर रामतीर्थ मासिक के स्थानीय वार्षिक ग्राहक अपने ग्राहक संख्या बताकर रामतीर्थ कार्यालय से मुफ्त ले जावें।

बम्बई से बाहर के रामतीर्थ के वार्षिक ग्राहक यदि उपरोक्त कैलेण्डर को चाहते हों तो वे पैकिंग और रजिस्ट्री खर्च के बतौर ९५ न. पै. मनिआर्डर या डाक टिकिट भेजकर मंगा सकते हैं।

—व्यवस्थापक

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामतीर्थ योगाश्रम नियम

१–इस योगाश्रम में प्रविष्ट होने के बाद साधक को सिगरेट, शराब आदि व्यसनों से दूर रहना होगा। यदि किसी दुर्व्यसन अथवा दुश्चरित्रता की बात संचालक मालूम होगी तो उसे किसी अग्रिम सूचना के बिना आश्रम से हटा दिया जायेगा।

२–ली हुई फीस किसी भी दशामें वापस न होगी।

३–टूवाल, नोटबुक, नेति, धौति, ब्रह्मदातून आदि आश्रम साधन की वस्तुयें उपयोग में लाने के बाद साफ कर निश्चित स्थान में रखनी होंगी।

४–सामान्य आरोग्य के साधारण अभ्यास में साधक पारंगत समझे जायेंगे, तभी उन्हें योग के अन्तरंग अभ्यास की शिक्षा दी जायेगी इस सम्बन्ध में संचालक को पूर्ण संतोष होना आवश्यक होगा।

५–योगाश्रम के संचालक उचित और सात्विक दान स्वीकार कर सकते हैं और उसमेंसे एकत्रित सम्पत्ति संचालक की इच्छानुसार योगविद्या के प्रचारार्थ खर्च की जायेगी।

६–कमसे कम आठ वर्ष और इससे ऊपर की अवस्था के ही योगाश्रम में प्रवेश पा सकेंगे।

७–आश्रम में प्रवेश पाने की फीस ५रु. है। रोगियों को रोग के आधार पर अधिक फीस देनी होगी। नीरोगियों के लिये १ महीनेकी फीस १० रुपये और ३ मास के २७रु. है।

८–नवीन प्रवेश पहली या १५ को ही किया जाता है। बीच में प्रवेश करनेवालों की फीस पहली या १५ तारीख से प्रारम्भ मानी जायेगी। साधकको फीस अग्रिम देनी होगी। समय प्रातःकाल ७॥ से ९॥ और सायंकाल ६ से ७॥ है। इन दो में से किसी भी समय को अपने अनुकूल बना सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

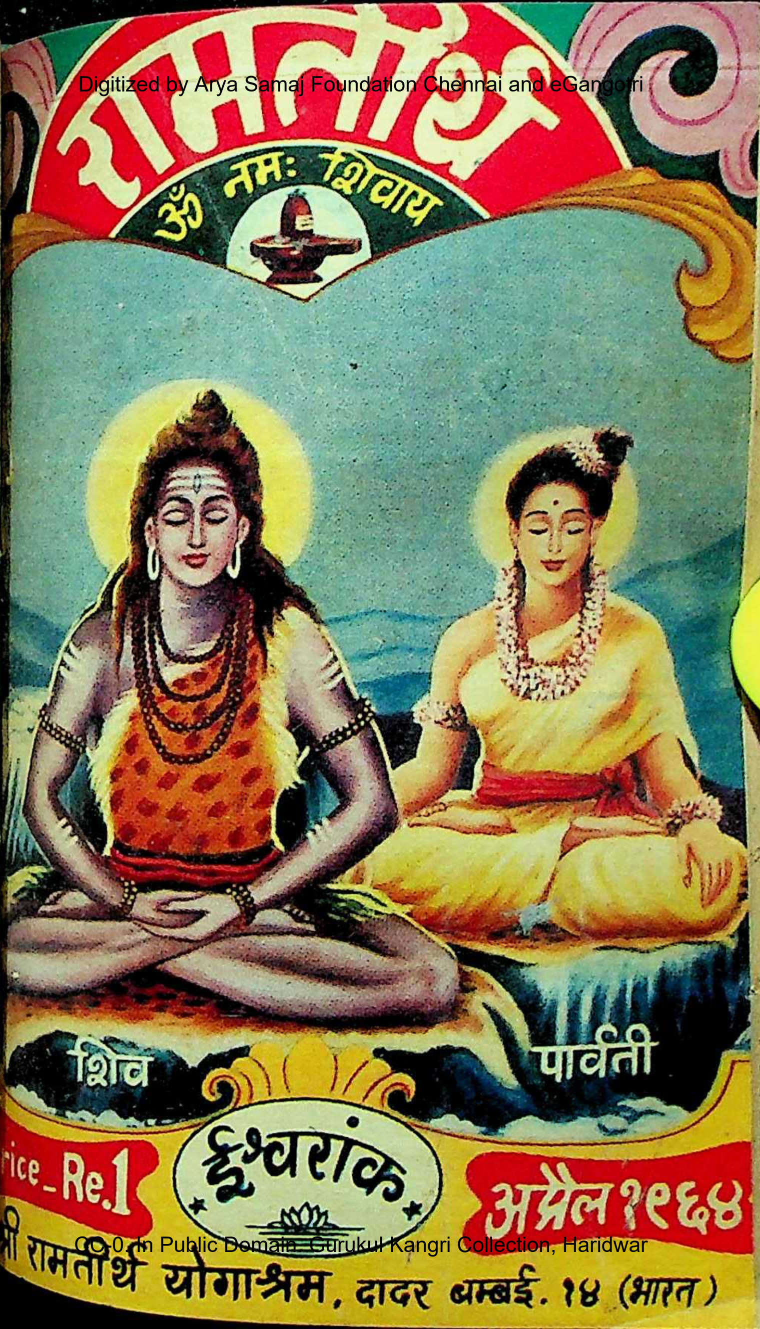

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

(बम्बई १४) के

महत्वपूर्ण निर्माण तथा प्रकाशन

(घर-घर में उपयोगी)

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल

(स्पेशल नं. १)

बाल, मस्तिष्क तथा शरीर की मालिश के लिये सभी प्रकृतिके के लिये सभी ऋतुओंमें अनुकूल है। सर्वत्र प्राप्य है।

उमेश योगदर्शन

(प्रथम खण्ड)

(लेखकः—योगिराज श्री. उमेशचन्द्रजी)

अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, मराठी भाषाओंमें मिलता है। यह के मलशोधन कर्म, आसन, प्राकृतिक चिकित्सासे रोगनिवारण मानसोपचारका ज्ञान करानेवाला परमोत्तम ग्रन्थ है। ग्लेज आर्ट पर विभिन्न आसनों तथा षट्कर्मों के १०८ चित्र हैं। पृष्ठ-संख्या के अन्तर्गत योगाभ्यासका विस्तृत बोध कराया गया है। मूल्य डाकव्यय २ रु.

योगासन चित्रपटः—योगासन चित्रपट अनेक रंगोंसे किया गया है। यह चित्रपट अनेकों आसनों से परिचित कराता है आधारपर अपने घरपर ही आसनों का अभ्यास करके सदैव नीरोग सशक्त रह सकते हैं।

मूल्यः—डाकव्यय सहित ३ रु.

रुपया भेजनेका पताः—श्रीरामतीर्थ योगाश्रम, पो. दादर (बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पाठकों से निवेदन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महान् हर्ष का विषय है कि इस भौतिकवादी भोग विलासपूर्ण जमाने में असंख्य नर नारी जीवन का मूल्य समझने हेतु रामतीर्थ मासिक की रचनाओं का सहारा लेकर जीवन सुधारने का प्रयास कर रहे हैं। रामतीर्थ का वृहत् पाठक समुदाय होने के अन्यान्य कारण यह हैं कि इसमें ऐसे लेख होते हैं जिनका सम्बन्ध रोगों से मुक्ति पाने हेतु आहार, आसनों का अभ्यास, नेति, धौति, नौली, त्राटक, बस्ती, कपालभाति आदि छः प्रकार के मलशोधन कर्म का आधार। दूसरे-इसमें मननीय विचार, प्राणायाम, प्राकृतिक चिकित्सा विषयक लेख, उच्चस्तरीय कहानी-कविताएँ आदि के सहारे मन पवित्र बनता है। तीसरे—इसमें स्वामी रामतीर्थ जी का धर्मोपदेश वेदान्त—उपनिषद्, गीता, रामायण, योगविद्या आदि महान् विषयों के लेख रहने से उनके अध्ययन द्वारा आत्म कल्याण की ओर प्रस्थान।

नम्र निवेदन

दिन बदिन की बढ़ती मंहगाई के इस जमाने में भी हम रामतीर्थ मासिक को केवल ५) रु. वार्षिक शुल्क में डाकव्यय सहित दे रहे हैं। हर मासमें २०० पृष्ठों से अधिक पठनीय सामग्री प्रस्तुत की जाती है। इन्हीं तथ्यों को ध्यानमें रखकर देश विदेश के परोपकारी नर-नारी हार्दिक सद्भावनाके साथ प्रशंसात्मक रूपमें वार्षिक ग्राहक बना रहे हैं।

अन्तमें पाठक वृन्द से नम्र निवेदन करते हैं कि रामतीर्थ मासिक की प्रगति के लिये वार्षिक ग्राहक बनें या अपने शहर के समाचार पत्र विक्रेताओं से खरीद कर अपने जीवन को सुधारवादी मोड़ दें। हमें आशा और विश्वास है कि है कि हमारे पाठक जीवनोद्धार में तत्पर रामतीर्थ को घर घर में प्रवेश हेतु प्रचार एवं प्रसार करने में सहायक बनेंगे।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव जाति के उत्थान का प्रतीक
हिन्दी जगत् का सर्वोत्तम मासिक

सम्पादक—
योगीराज
उमेशचन्द्रजी

रामतीर्थ

वर्ष–५–अंक १
अप्रैल १९६४

इस अंक का मूल्य
१०० न. पै.
वार्षिक शुल्क ५ रु.
डाकव्यय सहित

टेलीफोन
सम्पादक
व्यवस्थापक 628[illegible]
विज्ञापन
तार–प्राणायाम[illegible]

लेख	लेखक	पृष्ठ
वैदिक प्रार्थना	संकलित	८
उमेशवाणी		९
दिङ्गावलोकन	सम्पादकीय	११
कन्नड साहित्यमें श्रीरामकथा	नारायण जोगित्ताय	१७
फैशन, अभद्रता और दुःख	प्रेमकुमारी	३१
समाज नैया खेवनहार अध्यापक	बालकृष्णदास शर्मा शशि	४१
भारतीय संस्कृतिका पाश्चात्यानुकरण	दुर्गाशंकर त्रिवेदी	४५
सतयुग प्रमाण (कविता)	भीष्मसिंह	५१
ममता रो उठी (कहानी)	हरमन चौहान	७०
ईश्वर और उसकी शक्ति	भास्करानन्द शास्त्री	८१
सरोवर तटका बगुला (कहानी)	कृष्णमुनि 'प्रभाकर'	९१
गायत्री तत्व रहस्य	के. टी. विश्वनाथ	१०१
मा का हृदय (कहानी)	एम. आर. गुप्त	१०३
नटराज शिव	[illegible]	११७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख	लेखक	पृष्ठ
शिव तत्व	मोहनलाल बी. बालद	१३०
आशुतोष भगवान् शिव	ब्रजवल्लभ विशारद	१३७
शिवजी का सच्चा स्वरूप	शिवनारायण सक्सेना	१४९
देश विदेशके प्राचीन शिवमंदिर	श्यामसुन्दर लाल	१६४
शिव तत्व का विवेचन	श्याममनोहर व्यास	१७३
बिल्व पत्र	नन्दकिशोर शर्मा	१८४
मंत्र शास्त्र	डॉ. गोपाल प्रसाद वंशी	१९३
शिवके विभिन्न स्वरूप	रामचन्द्र छांगाणी 'विशारद'	२१२

मुख पृष्ठ का परिचय

जगत् कल्याणकारी शिव और उनकी शक्ति पार्वती का मनोहारी चित्र दर्शित है। विशेष विवरण के लिए सम्पादकीय पढ़ें।

क्षमा याचना

भगवान् शिव जी विषयक लेखों को अधिक स्थान मिल जाने से हमेशा के स्तम्भ जैसे प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचारादि को स्थान नहीं मिल सका। इस प्रकार वर्तमान अंकमें इन स्थायी स्तम्भों से वंचित महानुभावों से क्षमा याचना के साथ नम्र निवेदन है कि भविष्यमें उनकी रुचि का अवश्य खयाल रखा जायगा। साथ ही कुछ शिवांक के लेख आगामी अंकमें दे दिये जावेंगे।

—सम्पादक

सम्पादक श्री योगीराज उमेशचन्द्रजी ने निराला मुद्रक १४० आर्थर रोड बम्बई ११ में मुद्रित कर, श्रीरामतीर्थ योगाश्रम के लिये विन्सेन्ट स्क्वेर स्ट्रीट २ दादर बम्बई नं. १४ से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगों से मुक्ति पाने के लिए इसे अवश्य पढ़िये

योगिक—प्राकृतिक चिकित्सा डाक व्यवस्था विभाग

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ उठाकर शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्त बनिए।

शारीरिक एवं मानसिक रोग निवारणार्थ रोगी योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा के आधार से अपने रोग निदान के डाक द्वारा लिखित सलाह निम्न नियमानुसार ले सकते हैं।

१–व्यक्तिगत रूपसे निदान पूछने के लिये प्रथमवार ५) रु. फीस होगी, दूसरी बार ३) रु. और फिर हर बार के लिए दो रुपये फीस होगी।

२–रोगी को इसके अन्तमें छपी बातों का उत्तर स्पष्ट रूप से अलग कागज पर लिखकर भेजना होगा।

३–रोगी को फीस मनिआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर से ऊपरोक्त पते पर स्पष्ट निर्देश के साथ भेजने होगी।

४–रोगी को उत्तर हिन्दी, अंग्रजी, गुजराती, मराठी में से जिस भाषा में चाहिए उसके लिए लिखना चाहिए।

५–प्रश्नावली रजिस्ट्रीसे भेजनी चाहिए और उत्तर भी रजिस्ट्री से ही भेजा जायगा सामान्य डाक से भेजी गई प्रश्नावली खो जाने की जवाबदारी भेजने वाले की होगी। विदेश से प्रश्नावली भेजने वालों को डाकव्यय के लिए अतिरिक्त धन भेजना होगा।

६–योगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा विभाग की सलाह और सूचनानुसार रोगी को पथ्य पालन करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७-फीस देकर इलाज करानेवाले रोगी को निदान की शुरूवात से विवरण रखना होगा और मांगने पर उसे दे देना होगा।

८-रोगी को योगिक उपचार, और प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती मराठी में छपे उमेश योगदर्शन ग्रंथ को अपनी इच्छित भाषा में रु. १७-५० मनि आर्डर द्वारा भेजकर ऊपरोक्त पते से मंगाना पड़ेगा।

रोगी को सलाह पूछने के लिए निम्न बातों को स्पष्ट करके भेजना चाहिए।

रोगी का नाम व पता, उमर, वजन, ऊंचाई। मल बद्धता रहती है? अपचन है नींद गाढ़ी आती है? शरीर में अशक्ति है? रात को स्वप्न आता है? रात को कितने घंटे सोते हो? दिन को कितना समय सोतें हो? वीर्य दोष है? शरीर में कोई चर्म रोग है? कफ विकार है? पित्त विकार है? वात विकार है? कोई मानसिक चिन्ता है? शरीर में जड़ता है? स्मरण शक्ति कैसी है? मांसाहारी या शाकाहारी? विवाहित अथवा अविवाहित? हाथ पैर के तलुवे गरम या ठंडे रहते हैं? पेशाब का रंग कौनसा है? केवल बौद्धिक परिश्रम है अथवा शारीरिक? प्रातः भ्रमण, तैरना, और कोई व्यायाम चालू है? स्नान ठंडे या गरम जल से करते हो? दारू, गांजा, तम्बाकू, सिगरेट बीड़ी, तपकीर, चाय आदि का व्यसन है? पहले कौनसा रोग हुआ है? शिरदर्द कबसे है? वर्तमान रोग का विवरण? वर्तमान में कौनसी दवा चालू है। कभी प्राकृतिक अथवा योगिक चिकित्सा करवाई है? कब?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों से

'रामतीर्थ' मासिक में स्वीकार करने योग्य मुख्य विषय

शारीरिक रोग निवारण, सशक्त एवम् सदानिरोगी मानसिक रोग दूर करके मन की शांति, एवम् आत्म साक्षात्कार करने योग्य, उपरोक्त ... प्राप्त करा देने योग्यअष्टांग योग, (यम, नियम आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधी, राजयोग, भक्ति योग, लय योग, मंत्र ... शिवस्वरोदय, वेद उपनिषद, गीता ,रामायण, महाभारत, महात्माओं के जीवन चरित्र एवम् उपदेश, प्राकृतिक चिकित्सा, (आकाश, वायु, तेज, जल तथा पृथ्वी द्वारा इलाज) महिलाओं के जीवन सुधार के ... बालकों के संस्कार सुधारने के लिये, अनुरूप लेख, कहानी, धारावाहिक उपन्यास, गीत, कविता, निबंध, प्रवास वर्णन, नाटक, धर्मकथादि रचनायें स्वीकारकी जाती हैं कागजकी एक ओर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखी हुई रचनायें भेजनी चाहिये, अश्लील विषयोंकी रचनायें स्वीकार नहीं की जायेंगी।

विशेषः—अन्यत्र प्रकाशित रचनायें रामतीर्थ मासिक के लिये न भेजें। केवल स्वीकृत रचनाओं की सूचना एक मास बाद दी जाती है, अस्वीकृत रचना को वापस मंगाने वाले लेखकों को पोस्टल टिकिट साथ में अवश्य भेजना चाहिए, स्वीकृत रचनायें समयानुकूल छपेंगी, लेखकों को चाहिये कि वे इस विषय में वारंवार पत्र लिखने का कष्ट न लें, रचना प्रकाशित होने के बाद, रचना जिसमें छपी होगी वह मासिक अंक और आश्रम की ओर से निर्धारित किया गया पुरष्कार भेजा जायेगा, रचना में लिया गया कोई द्रष्टांत हो तो वह किस ग्रन्थ के आधार से लिया गया है यह अवश्य लिखें। अन्य पत्र पत्रिकाओंमें रामतीर्थ मासिककी रचना अन्य भाषाओं में अनुवादित करने की इच्छावालोंको रामतीर्थ मासिकके संपादकसे लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।

रचना भेजनेका पताः निराला मुद्रक १४०, आर्थर रोड बम्बई ११.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री दिग्विजय सीमेन्ट कं. लि.

श्री निवास हाऊस, वाडबी रोड बम्बई १.

की ओर से

शुभ कामना

— 卐 —

कारखाने—

[१] सिक्का (जामनगर) गुजरात,
शिवड़ी बम्बई

[२] एसबेस्टोस प्रॉडक्स
साबरमती अहमदाबाद

टेलीफोन २६८२४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्रकर्णेभिः श्रणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरंगस्तुष्ठुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितंयदायुः ॥

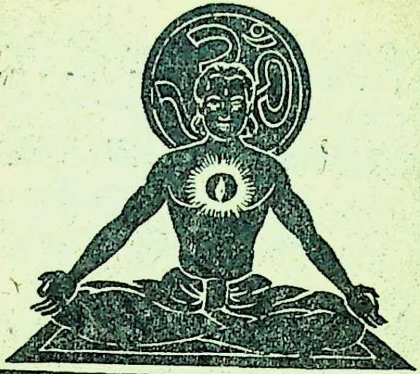

सम्पादक — **रामतीर्थ** योगीराज श्री उमेशचन्द्रजी

वर्ष ५] अप्रैल १९६४ [संख्या १

वैदिक-प्रार्थना

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः
पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभि।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः
पृच्छामि वाचः परमं व्योम ॥

ऋ. वे. आ. सू. १-१६४-

भावार्थ—इस जगत् की सबसे अंतिम पराकाष्ठा क्या है ? यह बात मैं आपसे पूछता हूँ। 'इस लोक का मूल केन्द्र जहाँ पर हो, वह स्थान कहां है' यह मैं आपसे पूछता हूँ। वीर्यवान् अश्व का वीर्य कहाँ है ? यह मैं आपसे पूछता हूँ और यह भी पूछता हूँ कि 'वाणी का परम श्रेष्ठ आकाश कहाँ पर है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत वाणी

(२४०) प्राणायाम के अभ्यास से मन को आत्मवशी बनाया जा सकता है। वाणी के संयमार्थ मौन सफल उपाय है और सत्संग तथा सात्विक आहार इन्द्रिय-निग्रह में सहायक होते हैं।

(२४१) वे महानुभाव परम वंदनीय हैं, जो स्वयं के दोषों को देखते हैं, जो किसी के अहित की इच्छा मन में भी नहीं देते, जिनका आचरण पवित्र है, जो गरीबों को सहायता पहुँचाते हैं तथा जो भगवान् के जप-स्मरण तथा भजन-कीर्तन में सदैव मग्न रहते हैं।

(२४२) मानव-जीवन का प्रमुख लक्ष्य भगवत्साक्षात्कार है, परन्तु कामिनी और कांचन इस लक्ष्यमार्ग पर अवस्थित ऐसे आकर्षक केन्द्र हैं, जो मानव को बलवत् आकर्षित कर वहां रमने के लिये विवश कर देते हैं और मनुष्य अपना वास्तविक लक्ष्य-विन्दु भूल जाता है। मनुष्य को यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान रहने की आवश्यकता है और इन सब से छुड़ाकर अपने परम लक्ष्य—ईश्वर की ओर आगे रहना चाहिये।

(२४३) ईश्वरीय पथपर प्रवृत्त होनेके लिये अपरिग्रह, अहिंसा, आत्मविचार, अनिंदा आदि व्रतों पालन अत्यावश्यक है। जो लोग ऐसा करते हैं, वे मुक्ति के अनुयायी हैं और वे मुक्तानंद की अनुभूति कर सकते हैं।

(२४४) यह संसार सुखमय तभी बन सकता है, सत्य, दया, दान, तप आदि धार्मिक भावनाओं से ओत-होकर संसार के नित्य-नैमित्तिक कर्तव्यों का पालन किया जाये। इसके विरुद्ध आचार-व्यवहार अपनाने से यही संसार दुःखमय बन जायेगा और शान्ति-सुख के दर्शन न होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[सम्पादकीय] विहंगावलोकन

'रामतीर्थ' मासिक भगवत् कृपया अब पाचवें वर्ष में नये उत्साह, नयी आशाओं को लेकर पदार्पण कर रहा है। भारत भर में हिन्दी में अनेक पत्र पत्रिकाओं में कहानियाँ, सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, प्राकृतिक चिकित्सा, यौगिक चिकित्सा, साहित्यिक, व्यंग्य विनोद आदि पहलुओंको एकांगी रूपसे महत्व दिया जाता है। इस प्रकार सब पत्र-पत्रिकाएँ अपने स्थान पर विशिष्ट महत्व रखती हैं। इसके अलावा आज बहुतसी पत्रिकाएँ कुछ महत्वपूर्ण विषयों को न देकर केवल समय व्यतीत करने के लिए मनोरंजन को ही मुख्य विषय के रूपमें अपनाती हैं। जिससे उनमें मानव जीवन को उच्च संस्कारों से युक्त करने तथा उसे सार्थकता देने की सामर्थ्य नहीं रह पाती।

रामतीर्थ मासिक की विशेषता

रामतीर्थ मासिक में योग, वेदान्त-उपनिषद्, गीता, रामायण, प्राकृतिक चिकित्सा, कहानियाँ, प्रश्नोत्तर आदि अनेकानेक महत्व पूर्ण स्तंभ होने से रामतीर्थ ने बुद्धिमान्, आत्मोन्नति के इच्छुक पाठक वर्ग में महत्व का स्थान प्राप्त कर लिया है।

त्रिवेणी संगम

गंगा, यमुना, सरस्वती के त्रिवेणी संगम में श्रद्धा भक्ति के साथ स्नान करने से जैसे केवल पाप नाश ही नहीं होते अपितु पुण्योदय भी होता है, वैसे ही रामतीर्थ मासिक के पठन पाठन से शरीर आरोग्य, मन की एकाग्रता, तथा आत्म दर्शन का मार्ग प्रशस्त होता है। प्राकृतिक चिकित्सा, छः प्रकार के मलशोधन कर्म तथा आसन द्वारा शरीरारोग्य, आसन, प्राणायाम, मुद्रा तथा प्रत्याहार द्वारा मन पवित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है तथा धारणा, ध्यान, समाधि द्वारा आ... (सत्, चित्, आनन्द) होता है।

रामतीर्थ मासिक का योगदान

रामतीर्थ मासिक अपने पाठकों के जीवन से ...स्कार दूर करने, व्यसनों से मुक्ति दिलाने, काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सर रूपी षड् बैरियों को अन्तःकरण ... करने में योग दान देता है।

पाठकों का सहृदयता पूर्ण सहयोग

रामतीर्थ मासिक की ग्राहक संख्या बढ़ाने में ... पाठकों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। इसके मुख्य कारण हैं : एक पाठकों का रामतीर्थ योगाश्रम के प्रति प्रेम होने से उसकी उन्नति हेतु तन, मन, धन, से ... योग दान, दूसरे रामतीर्थ मासिक के पठन-पाठन से ... वाली स्वतः की उन्नति से प्रभावित होकर अपने ... एवं आप्त जनों के कल्याणार्थ उनको ग्राहक बनाना।

विदेशों में पाठक

रामतीर्थ मासिक के पाठक केवल भारत में ही ... अपितु विश्व के ऐसे बड़े-बड़े देशों में जैसे अमे... जर्मनी, इटली, जापान, इंग्लैण्ड, स्वीजरलैण्ड, ... इण्डोनेशिया, रूस आदि में, जहां पर भारतीय रहते हैं ... इसे मंगाते हैं या हिन्दी भाषा में रुचि रखने वाले वि... योग-वेदान्त, प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को समझ... लिए रामतीर्थ मंगाते हैं।

जगत् के इस भाग में अथवा उस भाग में छोटे ... पैमाने पर भूतकाल में युद्ध हुए आज भी चालू हैं ... स्थिति से छुटकारा पाने के लिये वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ ... अन्यान्य लोग अपनी समझ के अनुसार मार्ग अपनाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अभी तक इन विनाशकारी युद्धों से मुक्ति नहीं मिल पायी। अतः अब संसार के समझदार व्यक्तियों की धारणा है कि भोगविलास के ऊपर नियंत्रण, तामसिक आहार तथा अश्लील साहित्य का त्याग कर योगाभ्यास व वेदान्त को जीवन में उतार देने से जगत् में शांति स्थापित हो सकेगी। रामतीर्थ मासिक में अनेक प्रसंगों में इस तथ्य का उल्लेख किया गया है। इसी कारण विदेशों में रहने वाले भारतीय तथा विदेशी लोगों के मन-मानस में रामतीर्थ मासिक के पठन, मनन एवं जीवन में सक्रिय रूप से उतारने हेतु लालसा जाग रही है। विगत ३० वर्षों से श्री रामतीर्थ योगाश्रम में विदेशी लोग आकर प्रत्यक्ष योगाभ्यास, प्राकृतिक चिकित्सा तथा वेदान्त अभ्यास में पारंगत होते रहे हैं। वे ही लोग फिर विदेशों में योग वेदान्ताश्रम चला रहे हैं, वे रामतीर्थ मंगाते हैं और अधिक ग्राहक संख्या बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

एजेन्ट और रामतीर्थ मासिक

अखिल भारत में अनेक न्यूज पेपर एजेन्टों की ओर से रामतीर्थ मासिक के प्रसार में प्रशंशनीय सहयोग मिला है। दक्षिण भारत के हिग्गिन बूथस्स तथा शेष भारत में ए. एच व्हीलर के रेलवे बुक स्टालों की गिनती विशेष उल्लेखनीय है।

शिवांक और जनजीवन

रामतीर्थ का पांचवें वर्ष का प्रवेशांक शिवांक के रूप में पाठकों के हाथों में पहुंच रहा है। पहले ही देश-विदेश से इस विषयमें पत्र प्राप्त हो चुके हैं जिसका कारण शिवजी के उपासकों की अधिक संख्या है। सत्यं, शिवं, सुन्दरम् इस वाक्य के भावार्थ के अनुरूप भगवान् शिवजी सत्यस्वरूप, कल्याण स्वरूप एवं सौन्दर्य स्वरूप हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् शिवजी में अष्ट सिद्धियां निहित हैं। योग वि के आदि प्रणेता भगवान् शिव ही हैं। जहां शिवजी का स्मरण, जप, तप, मंत्रोच्चार, पारायण, आराधना, उपासना कथा-प्रसंग, ध्यान एवं पुरश्चरण होता है वहां का वातावरण परम पवित्र होकर सर्व प्रकार की बाधाओं से मुक्त होकर सदा के लिये मंगलमय, आनन्दमय, शान्ति सुखमय जाता है। 'ॐ नमः शिवाय' यह मंत्र प्रातःकाल स्नान के बाद सूर्योदय के पहले १०८ बार, मध्याह्न में ५१ बार संध्याकाल में सूर्यास्त के बाद ५१ बार और शयन से पूर्व १०८ बार मुख से बोलकर अथवा मन में जप करने से पवित्र एवं धन की अभिवृद्धि होती है। किसी कार्य में निकलने के समय कम से कम ५ बार उपरोक्त मंत्र का जाप कर लेनेसे विघ्न दूर भाग जायगा। ऐश्वर्य सिद्धि के लिये शास्त्रोक्त नियमानुसार दीर्घकाल तक संपूर्णतया श्रद्धा सम्पन्न बनकर १ से ३ वर्ष तक उपरोक्त मंत्र का अधिक देरी तक जाप करें। विधि में परिवर्तन और श्रद्धामें अन्तराय पड़ जाने से लाभ में देरी लगेगी। योग विद्या तो शिवजी की परम प्रिय विद्या है।

शिवालय और पहाड़ोंका महत्व

अधिकांश शिवालय एकन्त शान्त पर्वत शिखरों पर अवस्थित हैं। इसका एकमेव कारण भगवान् शिवजी की एकान्त प्रियता है। भारत के अलावा नेपाल, भूटान, लंका आदि देशों में शिवालय हैं। भारत के प्रसिद्ध शिवालय केदारनाथ, रामेश्वर, काशी विश्वनाथ, त्र्यम्बकनाथ, अमर-नाथ, महाकालेश्वर, ओंकारनाथ, महाबलेश्वर सोमनाथ मुख्य एवं प्रसिद्ध हैं। शिवजी कल्याण स्वरूप होने से उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कार्य भी विश्व के प्राणिमात्र का कल्याण करना ही है। दुःख रोग-शोक निवृत्ति के लिए असंख्य नर-नारी भगवान् शिव की आराधना कर लाभ उठाते हैं।

हिन्दू धर्म और शिवजी

आज हिन्दू धर्म अपनी विशालता और सहृदयता के कारण अनेक रूपान्तरों को समाहित किये हुए है जिनमें से मुख्य आर्यसमाज, ब्रह्म समाज, जैन, बौद्ध; प्रार्थना समाज आस्तिक समाज (थियोसोफिकल सोसायटी) आदि मौजूद है। इतना होते हुए भी सनातन हिन्दू धर्म की विशालता में कमी आने के बदले बढ़ती ही हुई ही है। इसके अनेक कारणों में वेद, गीता, रामायण, महाभारत, योग, भक्ति के साथ तीर्थस्थान तथा परमेश्वर की आराधना।

योग और शिवजी

योगविद्या और शिवजी का घनिष्ठ संबंध है। योग विद्या के आदि प्रणेता शंकर भगवान् ही हैं। मानव जाति के त्रिविध ताप को दूर करने का मूलाधार रूप महान् शक्ति का स्रोत योगविद्या है। शिवजी को योगेश्वर कहा जाता है। श्रीकृष्णचन्द्रजी भी महान् योगी थे। महाभारत ग्रंथ में अनेक स्थानों पर योग विद्या के विषय में कहा गया है। उसी के अन्तर्गत गीता के १८ अध्याय तो योग विद्या के पूरक ही हैं। योग की प्रशंसा करते हुये यहां तक कहा गया है कि योग बिना मानव जीवन निरर्थक है।

भारत की योगिक परम्परा में भगवान् कृष्ण के अलावा भगवान् राम भी योगी थे। योगवाशिष्ठ में महर्षि वशिष्ठ तथा रामचन्द्रजी के संवाद में योग विषयक महत्त्वपूर्ण मार्ग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन हुआ है। अष्टांग योग की साधना जब व्यक्ति हो जाती है तब उसे निरतिशय सुख की प्राप्ति हो उसके बाद जानने समझने को कुछ रह नहीं जाता।

पतंजलि ऋषि अपने योग दर्शन द्वारा योगवि मानव जीवन का अन्तिम ध्येय, आत्मदर्शन, सत चित स्वरूप का अनुभव, शारीरिक आरोग्यता, मानसिक श जन्म-मरण के बंधन से छुटकारा पाने के अनेक सुल बताये हैं। धन्य हैं शिवजी के उपासक महर्षि पतंजलि ऋषि, गोरक्षनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ आदि। ऋद्धि-सि भंडार शिवजी के उपासक सदा के लिये तन, मन, ध आत्मज्ञान से सुख सम्पन्न हो जाते हैं। अधर्मियों (नास्तिकों के) शिवजी तमोगुणी बन जाते हैं। गुणी उद्धार हेतु सात्त्विकी बन जाते हैं।

प्रिय सुज्ञ पाठक वृन्द! आपके शरीरान्तर्गत शिव भ विराजमान् हैं। उन्हें योग साधना द्वारा पहचानिये। विद्या को जीवन में उतारने के लिये प्रयत्नशील अल्प काल में ही योग विद्या का चमत्कार देखने को होगा। सब ओर आपकी उन्नति होती जायेगी। मानसिक चिन्ताओं से मुक्त बनोगे। आप दुःखी हो तो बनोगे। सुखी हो तो सदा सुखी रहोगे। आपत्ति वि घेरे से मुक्त हो जाओगे। तेजोमय, शान्तिमय, सुसंपन्न जीवन बन जायेगा। योगविद्या से अपना दूसरों का उद्धार करिये। संकोच, आलस्य, शंका, भय को तिलांजलि देकर योगविद्या का आश्रय ग्रहण जिससे शिव-पार्वती प्रसन्न होकर आपका कल्याण करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

S. D. NEROY AND CO

Leading Block maker to the leading Advertising Agencies, Pharmaceutical

PRESSES AND ARTISTS

534, Sandhurst Bridge,
Bombay-7

75047.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

H. BABOO

COMMERCIAL ARTIST
&
SIGN WRITER SPECIALIST

Jayandra Mahal, Vincent Road.,
Dadar T. T.
BOMBAY-14.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments

from

N. DATTA NAIK & CO

Timber Merchants, Tile Suppliers

and

Commission Agents

MANGALORE, 1.

[South Canara]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R. Manharlal & Co

Manufacturers' Representatives

Contact for all your requirements in amber & white

GLASS BOTTLES VIALS AND AMPOULES

EXECLLENT QUALITY, COMPETETIVE RATES & PROMPT DELIVERY

R. MANHARLAL AND CO

95–97 Bhandari Street,
2nd floor,
Chakla, BOMBAY–2

Phone: 321643 **Gram—"ASHKKILA"**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

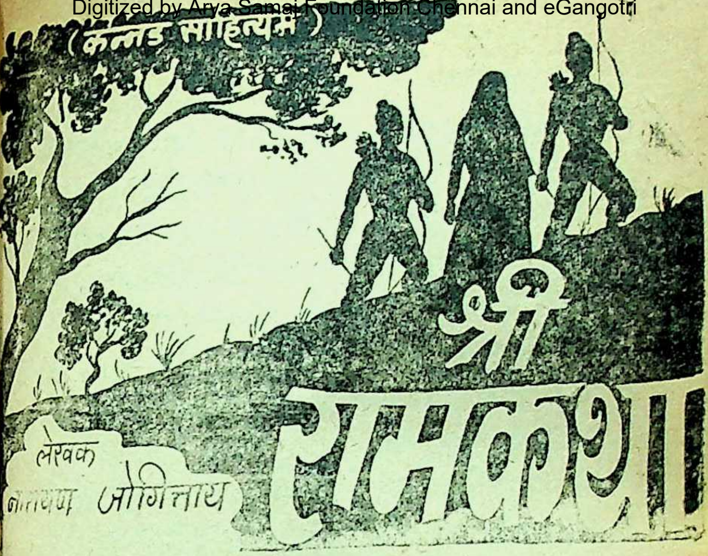

दक्षिण की द्राविड़ भाषायें कितनी पुरानी हैं इस बात का अबतक कोई प्रमाण नहीं मिला है। पर हाँ, इतिहास-वेत्ताओं ने अपने अनुसन्धानों द्वारा यह बताने का यत्न किया है कि द्राविड़ भाषा-भाषी ही भारत के मूल निवासियों में प्रधान थे और आर्यों से भी उनकी संस्कृति ऊँची थी, जो आगे चलकर आर्य संस्कृति में घुलमिलकर एक हो गयी। यद्यपि आधुनिककाल में भी द्राविड़ भाषाओंका अलग अस्तित्व दिखाई पड़ता है तो भी संस्कृत भाषा और साहित्यका इतना प्रभाव पड़ा है कि कभी कभी यह कहना कठिन हो जाता है कि ये भाषायें संस्कृत से भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त, तामिल को छोड़कर बाकी तीनों भाषाओं की वर्णमालाओं पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनागरी वर्णमाला का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ...विश्वविद्यालयके इतिहास विभागके प्रोफेसर स्वर्गीय ...कृष्ण ने यह सिद्ध करके दिखाया है कि कन्नड़ और ...की वर्णमालायें भी उसी प्राचीन ब्राह्मी लिपि से निः... जिससे संस्कृत वर्णमाला का विकास हुआ है। इसके अति... इन भाषाओं में प्राचीन से प्राचीन जितना साहित्य ...लब्ध हुआ है उसका कोई अंग भी ऐसा नहीं है जो सं... से ओतप्रोत न हो। संस्कृत में राम और कृष्ण को ... जितना साहित्य रचा गया है, उतना शायद ही और ...चरित्र को लेकर न रचा गया है। इस दिशामें भी द्र... भाषाओं के साहित्यों पर संस्कृत की अमिट छाप दिख... देती है।

ईसवी सन् ७५० से सन् ११५० तक का काल ... साहित्य का आदिकाल माना जाता है। इस आदिकाल... अन्त में कन्नड़ के 'कविरत्नत्रय' का उदय हुआ जिनकी ... रचनाओं के कारण कन्नड़ का यह काल 'स्वर्णयुग' ... जाता है। ये कवि रत्न थे पम्प, रन्न और पोन्न। ये ... जैन थे और उस समय कर्नाटक में जैन मत का विशेष प्र... हो चला था। यही कारण है इस अवधिमें कन्नड़ में जि... भी कवि हुए उनमें अधिकांश जैन थे। ये कवि राजा... आश्रय में रहते थे और उनका कन्नड़ में साहित्य रचने ... प्रधान उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना ही रहता था। ... जैन कवि कन्नड़ और प्राकृत के विद्वान थे, इसलिए उन...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा कन्नड़ में संस्कृत की काव्य पद्धति का खूब प्रचार हुआ। यद्यपि जैन कवियों ने वैदिक साहित्य को उसके मूल रूपमें कन्नड़ भाषा भाषियों को प्रदान नहीं किया तो भी उनकी सेवा कुछ कम महत्व की नहीं है। क्योंकि इन्हीं जैन कवियों द्वारा कन्नड़ की जनता को श्रीराम, और श्रीकृष्ण जैसे अमर चरित्र का अमृत पान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज कन्नड़ में राम कथा पर जो कुछ साहित्य मिलता है उसे प्रधानतया दो भागों में विभाजित किया जाता है। प्रथम भाग में वे सभी ग्रन्थ आते हैं जिनकी रचना जैनों ने की है और दूसरे भाग में वे सभी वैदिक अथवा पौराणिक काव्य हैं, जिनको वैष्णवों व अन्य समुदाय के कवियों ने लिखा है। जैन कवियों में पोन्न कवि का 'भुवनैक्य रामचन्द्रचरित पुराण' अथवा 'पम्परामायण' और देवचन्द्र का 'राम कथावतार' और कुमुदेन्दु मुनि की 'कुमुदेन्दु रामायण' मुख्य हैं। दूसरे भाग के अन्तर्गत 'तोरवे रामायण' (कुमार वाल्मीकि की), नन्दलिके नारायण की तीन कृतियाँ:-'अद्भुत रामायण' 'रामपदाभिषेक' और 'श्रीरामाश्वमेध' तथा आधुनिक महाकवि श्री. के. वि. पुट्टप्पा की 'रामायण दर्शन' उल्लेखनीय हैं।

जैन रामायण:-कन्नड़ में पहले राम कथा पर काव्य रचने का श्रेय महाकवि पोन्न को मिलना चाहिये जो दसवीं शताब्दि के रत्नत्रय कवियों में एक थे। वे कन्नड़ तथा संस्कृत के पण्डित थे। कहा जाता है कि राष्ट्रकूट राजा कृष्ण ने पोन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को 'उभय कवि चक्रवर्ती' नामक उपाधि देकर सम्मानित किया था। पोन्न की रचनायें ४ मानी जाती हैं। ये-'शान्ति पुराण' भुवनैक्य रामाभ्युदय' 'जिनाकबर माले' तथा 'गत प्रत्यागत'। इनमें से गतप्रत्यागत और भुवनैक्य-रामाभ्युदय अबतक अप्राप्त हैं। पोन्न के परवर्ती कवि केशिराज के 'शब्द मणि दर्पण' नामक व्याकरण ग्रन्थ में 'भुवनैक्य-रामाभ्युदय' के पदों के उद्धरण मिलते हैं। सुनते हैं कि राजा कृष्ण की 'भुवनैक राम' नामक एक उपाधि थी और पोन्न ने अपने आश्रय दाता की प्रशंसा में 'भुवनैक्य-रामाभ्युदय' की रचना की थी जिसमें राजा कृष्ण की तुलना रामचन्द्रजी से की गयी थी। इस प्रकार विद्वानोंने इस काव्य के बारेमें यह अनुमान लगाया है कि यह ग्रन्थ पोन्न का एक उच्चकोटि का काव्य है जिसमें १४ अश्वास हैं। अगर यह काव्य मिल गया तो कन्नड़ साहित्य के इतिहास पर अवश्य ही नया प्रकाश पड़ेगा।

जैन संप्रदाय की दूसरी रामायण है 'रामचन्द्रचरित पुराण' जिसके प्रणेता नागचन्द्र थे। नागचन्द्र का काल सन् ११०० के आस पास माना जाता है। दसवीं शताब्दी के महाकवि पम्प ने 'पम्पभारत' नाम से महाभारत-कथा की पहले-पहल कन्नड़ में रचना करके पौराणिक कथा वस्तुओं को जैन संप्रदाय के साँचे में ढालने की जो परिपाटी चलाई उसीका नागचन्द्र ने अनुकरण कर प्रथमतः कन्नड़ में पूरी रामायण का प्रणयन किया। पम्प के पदचिह्न पर चलने के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागचन्द्र 'अभिनव पम्प' के अभिधान से आभूषित हुए और उनकी रचना भी पम्प रामायण के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह रामायण जैसे उसके शीर्षक से ही स्पष्ट है, वाल्मीकि रामायण के आधार पर नहीं बनी है। इसकी कथा वस्तु प्रधान तया प्राकृत के कवि विमल सूरि के 'पउपरिचय' (पद्मपरिचय) से की गयी है। इसके अतिरिक्त इसमें रविशेषण की संस्कृत महारामायण तथा विष्णु भट्ट की प्राकृत रामायण से भी कतिपय बातों का समावेश किया गया है। काव्य के नायक रामचन्द्र ही हैं, किन्तु वाल्मीकि के दुष्टमर्दन, वीरपुंगव रामचन्द्र नहीं हैं। नागचन्द्र के राम अहिंसा के परम पुजारी हैं। इसलिए हिंसा के जितने कार्य होते हैं--वे सब लक्ष्मण के हाथों होते हैं। रावण की हत्या भी पाप कार्य है, अतः लक्ष्मण को इसके लिए नरक भोगना पड़ता है और पूरा प्रायश्चित भोगने के उपरान्त ही वे मुक्ति के योग्य बनते हैं। लक्ष्मण कई युद्धों में विजयी होते हैं सब से विचित्र बात यह है कि राम सर्वत्र ही अक्षत्रिय की भान्ति दिखाई पड़ते हैं और साहस के सब कार्य लक्ष्मण करते हैं। मगर कथा नायक रामचन्द्र ही बने रहते हैं। सीता को वाल्मीकि की तरह सती साध्वी तथा पातिव्रत्य की प्रति मूर्ति की तरह चित्रित किया गया है जो सचमुच ही सुन्दर है। उस समय मन्दोदरी अपने उन्नतपद पर से गिर जाती है जबकि सीता से वह रावण के प्रेम को स्वीकार की प्रार्थना करती है। नागचन्द्र की कला रावण के पात्र की रचना में विशेष रूप से निखर उठी है। रावण वीर है, दयालु है, त्यागी है, और तपस्वी भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मानवीय दुर्बलता के कारण वे सीता पर मोहित होते हैं और उन्हें पाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं। जब उन्हें अपनी गलती मालूम होती है, तब वे अपने पाप के लिए पश्चात्ताप करते हैं और पश्चात्ताप की अग्निमें तप कर उज्वल बन जाते हैं। रामायण के चरित्र की खूबी का पूरा परिचय पाने के लिए नीचे दो एक घटनाओं का उल्लेख करना वांछनीय है।

जब रावण दिग्विजय के लिये निकलते हैं तब दुर्लंघ्यपुर के राजा नलकूबर के साथ युद्ध छिड़ता है। इसी बीच में एक घटना घटती है। नलकूबर की पत्नी उपरम्भा ने रावण के रूप और बल-पराक्रम की कीर्ति पहले ही सुनी थी। अब वह रावण को अपने ही राज्य में पाती है तब प्रेम से विह्वल हो जाती है और एक दूती के द्वारा रावण के पास अपना प्रेम सन्देश भेजती है। रावण दूती से यह समाचार पाकर बड़ी असमंजसता में पड़ जाते हैं। परस्त्री को अपनाने के लिये उनका मन नहीं मानता। जब वे दूती को समझाकर वापिस भेजने में असमर्थ हो जाते हैं तब वे अपने भाई विभीषण से इस सम्बन्ध में परामर्श करते हैं। विभीषण इस विपत्ति से पार होने के लिये एक बड़ा ही सरल उपाय बताते हैं। वे कहते हैं कि तुम उपरम्भा को एकान्त में अपने पास बुलाओ और कहो कि तुमसे मैं तुम्हारे महल में मिलूंगा। लेकिन इसके पहले मुझे एक ऐसा उपाय बताओ जिससे मैं इस युद्ध में विजयी बन सकूं। रावण अपने भाई की सलाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार उपरम्भा को एकान्त में बुलाकर बातें करते हैं। रम्भा रावण को 'सालविद्या' नामक विद्या सिखाती है। विद्या के बलपर रावण नलकूबर को युद्ध में हराकर के अनुसार उपरम्भा से महल में भेंट करते हैं। उस य वे उपरम्भा को यों समझाते हैं "तुम मधुकान्ता और ध्वज की कुलीन पुत्री हो। तुम्हें शील तथा अपने कुल व का ध्यान रखना चाहिये। इसके अतिरिक्त तुमने मुझे विद्या सिखाकर गुरु का स्थान प्राप्त किया है। तुम ने पति से मिलकर सुखसे रहो।" यह कहकर रावण ने जीते हुये राज्य को नलकूबर को लौटा देते हैं।

दूसरी घटना उस समय की है जबकि रावण रामसे युद्ध ने के लिये अपने महल से कूच करते हैं। अन्तिम प्रयत्न सीतादेवी को मनाने के उद्देश्य से रावण उनके पास जाते सीता आँचल पसारकर रावण से रामचन्द्र के प्राणों की भ माँगती हैं और मूर्छित होकर गिर पड़ती है। उस समय ण का सोया हुआ विवेक जाग उठता है। वे बड़े पश्चाताप साथ कह उठते हैं—"अहा! ऐसा प्रेम और कहाँ मिल ता है? ऐसे प्रेमी दम्पत्ति को मैंने धिक्कार दिया है। स्त्रीपर मोहित होकर मैंने अपनी वंश की मर्यादा मिट्टी में ला दी है।...तो क्या मैं सीता को रामके हाथों में सौंप दूँ? नहीं यह असंभव है। अपनी ही जगत् हँसाई करना म्भव है।...तो क्या राम और लक्ष्मण से युद्ध करके, उन्हें कर सीता को प्राप्त करूँ! हाँ, यही ठीक है। ऐसी हालत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में युद्ध अनिवार्य है ।" नागचन्द्रने रावण के पात्र में अन्तर्द्वंद्व का मार्मिक चित्र खींचा है वह पाठक के मन में रावण के प्रति सच्ची सहानुभूति, श्रद्धा व आदर के भाव जगाये बिना नहीं रहता है । नागचन्द्र का रावण सचमुच महापुरुष है ।

इस रामायण में सर्वत्र ही जैन धर्म का वातावरण दिखाई पड़ता है । तुलसी की तरह नागचन्द्र के राम और लक्ष्मण विष्णु और आदि शेष के अवतार नहीं हैं । वे दोनों कारण पुरुष हैं । अपनी तपःशक्ति एवं आत्मबल से नियति पर अधिकार प्राप्त करते हैं । सुग्रीव, हनुमान आदि वानर नहीं हैं, मानव ही हैं । वाल्मीकि के राक्षस यहाँ 'विद्याधर' हैं जो आसमान में उड़ने की विद्या जानते हैं । रावण के दस सिर भी नहीं हैं । वह तो माता का प्रेम से रखा गया नाम है । इस नाम की कथा यों है—"रावण जब छोटा बच्चा था तब उसके शिरका प्रतिबिंब किसी समय शीशेके छोटे छोटे टुकड़ों से बने दर्पण में दिखाई दिया । यह देखकर माँ ने उस दिन से रावण को कभी कभी "दशसिर" के नामसे पुकारना शुरू किया ।

भाषा-माधुर्य और शैली की दृष्टि से यह एक उच्चकोटि की कलाकृति है । नागचन्द्र की भाषा संस्कृत गर्भित, प्रसाद व माधुर्य गुणयुक्त है । कोमलकान्त पदावली की छटा सर्वत्र ही छायी हुई है । अलंकार योजनामें कहीं भी अस्वाभाविकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आने पायी है। अर्थांतरन्यास नागचन्द्र का प्रिय अलंकार है जिसकी चमत्कृति देखते ही बनती है।

तीसरी कृति है "कुमुदेन्दु रामायण" जो १३ वीं शताब्दीके उत्तरार्ध में कुमुदेन्दु मुनि नामक कवि से लिखी गयी है। इस रामायण में भी विमलसूरि की कथा का अनुकरण किया गया है। इसपर पम्परामायण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अबतक यह ग्रन्थ पूरा प्राप्त नहीं है। जितना भी प्राप्त हुआ है, उसके आधार पर यही कहा जा सकता है कि केशवदास की श्री रामचन्द्रिका की तरह इसमें छन्दों की विविधता, शब्द चमत्कार, रसनिरूपण आदिपर विशेष ध्यान रखा गया है और कथावस्तु तथा पात्र-रचनापर कवि का ध्यान कम गया है। कहते हैं, कवि को "कविराज शिखमणि" नामक पदवी भी प्राप्त हुई थी।

कन्नड़ साहित्य के इतिहास में उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त यह उल्लेख मिलता है कि देवप्प, देवचन्द्र, चन्द्रसागरवर्णि तथा शिशुमायण नामक जैन कवियों ने क्रमश: रामविजय-चरित, रामकथावतार तथा जिनरामायण, अंजना चरित नामक रचनायें की हैं। देवचन्द्र का 'रामकथावतार' एक चम्पू काव्य है जिसमें नागचन्द्र का अनुकरण किया गया है।

पौराणिक रामायण:— चौदहवीं और सोलवीं शताब्दी के मध्यकाल में कन्नड़ साहित्य अपने वैभव के शिखरपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच गया था। इसी युग में कुमार व्यास नामक कवि ने महाभारत की रचना की। कुमार व्यास का भारत कन्नड़ भाषा भाषियों के लिये ऐसा ही प्रिय है जैसाकि हिन्दी भाषा भाषियों के लिये "रामचरित मानस"। कुमार व्यास व नार्णप्प के करीब एक सौ साल के उपरान्त कुमार वाल्मीकि ने वाल्मीकि रामायण का कन्नड़ में अनुवाद किया। उसका नाम है तोखे रामायण। कुमार वाल्मीकि का जन्म सोलापुर के पास तोखे नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने अपने गाँव के देवता की स्मृति में अपने काव्य का नाम "तोखे रामायण" रखा। वे स्मार्त ब्राह्मण थे। और तोखे नरसिंह के परम भक्त। लगभग ५००० "भामिनि षट्पदियों" में रचा हुआ यह काव्य कन्नड़ की सर्वप्रथम रामकथा है जिसमें पूरी वाल्मीकि रामायण अंकित है। यद्यपि कुमार वाल्मीकि ने वाल्मीकि का रामायण भाषान्तर किया है, तो भी सर्वत्र कुछ परिवर्तन करके अपनी कवि प्रतिभा का भी परिचय दिया है। तुलसी की तरह कुमार वाल्मीकि रामको विष्णुका अवतार मानते हैं। काव्य के आरम्भ में इस बात का उल्लेख किया गया है कि शिवजी रामकी कथा पार्वती को सुनाते हैं। मंथरा कैकयी की निरी दासी नहीं है, वह माया का अवतार है। नागचन्द्र की तरह रावण के पात्र को ऊपर उठाकर उसे महादानी बना दिया है। युद्ध में जाने के पहले रावण अपनी सारी संपत्ति गरीबों को बाँट देते हैं, जेल के सभी बंदियों को रिहा कर देते हैं और इस बात का आदेश देते हैं कि अगर मैं युद्ध में मारा गया तो विभीषण को गद्दीपर बिठाया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध के समय जब रावण को अपनी हार की शंका होती है, तब इस बात के लिये पश्चात्ताप करते हैं कि मैंने अपने भाई विभीषण के हितवचन पर ध्यान न दिया। जैसा मालूम होता है कि कुमार वाल्मीकि को युद्ध के वर्णन करने में विशेष आनन्द मिलता है। यही कारण है कि काव्य का आधा भाग युद्ध वर्णन में ही खर्च हुआ है। कुमार वाल्मीकि स्वयं बड़े भक्त थे, इसलिये सारी रामायण में भक्ति का बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। दशरथ के प्रताप का वर्णन बहुत ही मार्मिक बना है। कथा सुनाने की कला में तो कुमार वाल्मीकि सिद्धहस्त हैं। उनकी भाषा अत्यन्त सरल व सरस है।

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कन्नड़ में एक अत्यन्त लोकप्रिय कवि का आविर्भाव हुआ जिनका नाम था लक्ष्मीश। उन्होंने बड़ी प्रांजल भाषा में "जैमिनी भारत" का प्रणयन किया जो कुमार व्यास के भारत की तरह कर्णाटक के हरेक घर में पढ़ा और गाया जाता है। भाषा सौष्ठव, उक्ति-वैचित्र्य, मार्मिक घटना योजना तथा चरित्रचित्रण की दृष्टि से यह काव्य कन्नड़ की एक बेजोड़ कृति है। इस काव्य में उपकथा के रूप में उत्तर रामायण की कतिपय घटनाओं का हृदयहारी वर्णन किया गया है। वन में परित्यक्ता गर्भिणी सीता के विलाप का वर्णन करने में लक्ष्मीश ने अपने असाधारण रचना कौशल का परिचय दिया है, जो अन्यत्र शायद ही देखने को मिले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त १८ वीं शताब्दी में हेळवणकट्टे गिरि-म्माने रामकथा का एक अंश लेकर "सीताकल्याण" नामक खण्डकाव्य रचा है।

कन्नड़ साहित्य का आधुनिक युग १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू होता है। इस सन्धिकाल के कवि थे मुद्दण अथवा नण्दषिके लक्ष्मी नारणप्प जो अपनी अल्पायुमें (३१ उम्र में) कन्नड़ भाषा की जैसी सेवा की है वैसी बहुत कम लोगोंने की है। अन्यान्य कृतियों के साथ मुद्दणने रामकथा पर ३ ग्रन्थरत्न रचे, जिनके नाम हैं—'अद्भुतरामायण', 'रामपदाभिषेक', और श्री रामाश्वमेध'। रामपदाभिषेक पद्यग्रन्थ है और बाकी दोनों गद्यग्रन्थ हैं। अद्भुत रामायण शाक्त रामायण की नकल ही कही जाती है। कविने शाक्त रामायण की कथा के नीरस भाग को छोड़कर संक्षेप में कहानी सुनाई है। छोटे छोटे कथानकों का ऐसा सुन्दर व रोचक वर्णन किया गया है कि पढ़ते समय हमारा मन आधुनिक कहानियों की तरह रमने लगता है। इसकी गद्य शैली में पुरानी कन्नड़ का रसास्वादन मिलता है और दूसरी तरफ अभिनव—गद्य-शैली के सौन्दर्य का दर्शन होता है।

'रामपदाभिषेक' मुद्दण का दूसरा ग्रन्थ है। जो 'वार्धक षट्पदि' में लिखा गया है। रामके वनवास से लौटने के बाद श्रीराम पदाभिषेक सम्पन्न होता है, यही इसकी कथावस्तु है। भरत अनन्य श्रद्धा व भक्ति के साथ किस तरह रामकी प्रतीक्षा में तड़पते रहते हैं और कौशल्या माता १४ साल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरहव्यथा सहकर अपने प्यारे पुत्र से मिलने के लिये किस तरह विह्वल होती है, इसका अत्यन्त रोचक चित्र उपस्थित किया गया है। भाषाभिव्यञ्जना; पदयोजना और अलंकार निरूपण में सर्वत्र मुद्दणने उत्तम कौशल दिखाया है। इसकी और एक विशेषता यह है कि लंका से विमान में लौटते समय मार्ग में पूर्व परिचित जितनी जगहें मिलती हैं, रामचन्द्रजी उनकी सीता को याद दिलाते जाते हैं। मुद्दण की यह कल्पना बड़ी ही सुन्दर है।

"रामाश्वमेध" एक गद्य काव्य है और मुद्दणकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। पद्मपुराण रामाश्वमेध की कथा से इसकी कथा-वस्तु ली गई है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सारी कहानी कवि और उसकी प्रियतमा मनोरमा के बीच में संभाषण के रूप में सुनाई जाती है जिसमें आधुनिक उपन्यास पढ़ने का आनन्द मिलता है। इस संभाषण में कथा की धारा आरम्भिक वर्षाकाल की नदी की तरह इठलाती, बलखाती हुई पूरी मस्ती के साथ बहती रहती है जिसपर नवदम्पति के परस्पर आकर्षण भरे नूतन अनुराग चुभते व्यंग्य, मधुर हास्य विनोद की रंगीली दीप्तछवि ऐसी पड़ती है कि पाठक अपने ही नशे में चूर बाहरी जगत को भूल ही जाते हैं। साहित्य के रसास्वादनमें, रसिकता में, वाग्विदग्धता में, मुद्दण और मनोरमा एक दूसरे से बढ़े चढ़े हैं। संभाषण का आरंभ बड़े ही मनोहर ढंगसे होता है मुद्दण ने रामायण की कथा सुनाने के लिए संभाषण द्वारा गद्य की यह योजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व नूतन शैली चलाई, वह आधुनिक कन्नड़ के विकास के लिए एक नयी दिशा का निर्देशक है।

चरित्र चित्रण में, घटनाओं का सजीव चित्र खींचने में पुरानी कन्नड़ को आधुनिकता के सांचे में ढालने की क्षमता में साहित्य में मधुर हास्य का समावेश करने में मुद्दण्ण की बराबरी करने वाले कवि कन्नड़ में इने गिने ही मिलेंगे।

कन्नड़ के आधुनिक युगमें रामकथा पर साहित्य निर्माण करने वाले लोग बहुत कम पाये जाते हैं। मद्रास विश्वविद्यालयके कन्नड़ विभाग के प्राध्यापक श्री देवशिखामणि अलसिंगाचार्य ने वाल्मीकि रामायण का पूरा अनुवाद गद्य में किया है जो आठ भागों में प्रकाशित हुआ है। मुद्दण्ण तिम्मप्पय का नवनीत रामायण, श्री शिवशंकर शास्त्रीजी का रामायण संग्रह (गद्य में), क. शिवदास की अध्यात्म रामायण आदि उल्लेखनीय हैं। आधुनिक महाकवि श्री कुवेंपु (के. वी. पुट्टप्प) ने अतुकान्त छन्द में 'श्रीरामायण दर्शनम्' के नाम से सारी राम कथा का प्रणयन किया है। आठ सौ पृष्ठों का यह महाकाव्य जो दो भागों में प्रकाशित हुआ है आधुनिक कन्नड़ का एक मात्र महाकाव्य है। यह आधुनिक काल में श्रीराम कथा की जो कमी है उसकी पूर्ति करता है। इसकी कथा वस्तु प्रधानतया वाल्मीकि रामायण से ली गयी है लेकिन कवि ने लकीर का फकीर हो पुरानी कथा को ज्यों का त्यों नहीं अपनाया है, निर्भीकता के साथ आधुनिक विचाराधारा का समावेश करके सोने में सुगन्ध मिला दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

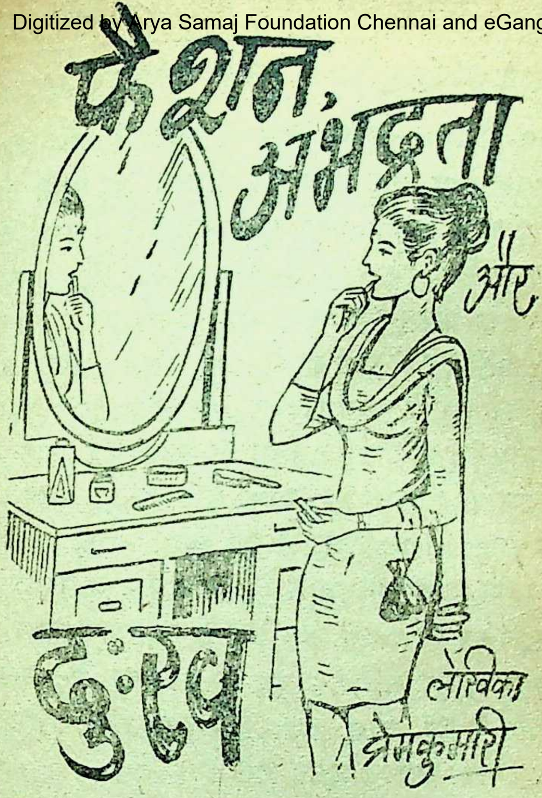

आज का संसार सर्वत्र दुःखोंसे आक्रान्त है। इस दुःख का कारण क्या है आप विचार कीजिए तो आप स्वयं निश्चय करेंगे कि अनेक कारणोंमें एक फैशन-दिखावट भी है, फैशन व दिखावटी वातावरणका उदय आजके सिनेमा संसार से होता है। कोई भी नई पोशाक देखी कि उसे बनाकर पहना यही प्रवृत्ति आज फैशन को प्रोत्साहन देती है। फैशन को प्रोत्साहन देकर आधुनिक समाज दुःखी है इसका दोष केवल नारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नहीं है अपितु पुरुष भी इस के चुंगुल से मुक्त नहीं है

पुरुष फैशनः—पुरुष वर्ग में भी दिखावटीपन आता है कि यदि उन्हें खाने को भोजन न मिले किन्तु अच्छी पोशाख व शो नहीं छोड़ सकते हैं। घरमें बालक भूखसे तड़पते हैं किंतु वे सिनेमा देखते हैं, होटल करते हैं और सूटबूट पहनकर मटरगस्ती करते हैं इससे मित्रोंमें, परिवार में एक ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होता है जिससे परिवार के अन्य सदस्य भी देखादेखी वही रास्ता अपना लेते हैं, फलस्वरूप रोटी के लाले पड़ जाते हैं और शरीर रोगोंसे आक्रांत हो जाते हैं। आज युवक वर्ग की प्रवृत्ति इतनी नीच हो गई है कि बिना सोचे समझे केवल अंधानुकरण करते चले जाते हैं। तंग पेन्ट व चमकिली बुशर्ट पहनकर स्वयं को इतना कस देते हैं कि उनके हड्डियोंके भाग इतने स्पष्ट नजर आते हैं। यह सब क्या है—उनका लक्ष्य यही होता है कि लोग हमारी तरफ देखें। दिखावट के नामपर अपना सर्वस्व लुटा देते हैं।

नारी फैशनः—नारी भी अपने फैशन परस्ती के कारण स्वयं ही अपनी समस्याओंको जन्म देती है। आये दिन नित नया फैशन, नया नमूना, नई पोशाख नया वस्त्र खरीदकर इस नीच वृत्ति को प्रोत्साहित करती हैं। नारी वर्ग तंग व पतले वस्त्र पहनकर अपने अंग प्रत्यंगोंको स्पष्ट करके विकास में बाधा उत्पन्न करता है। तंग व कसे हुए वस्त्र पहननेसे रक्त संचालन में रुकावट होती है। शरीर की वृद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बाधा उत्पन्न होती है। फलस्वरूप रोगों के कारण उनका जीवन कष्टमय हो जाता है।

आज तंग कमीज व छोटे पायचे वाली सलवार का फैशन निकल पड़ा है जो देखने पर ऐसा मालूम होता है कि एक निर्जीव प्रतिमा को बोरी में डालकर कस दिया गया हो। इससे स्वास्थ्य हानि तो होती ही है अपितु अनुकरण करके अन्य बहने माताएं भी उसी ड्रेस को बनाकर पहननेका प्रयत्न करने के बाद नारी न तो जल्दी जल्दी चल सकती है और न आराम से बैठ सकती है। इसी ड्रेस के कारण एक लड़की पिछले दिनों दिल्ली की सड़क पार करते समय बस के नीचे आकर मर गई थी। इसी प्रकार कोई वस्तु यदि उठाना हो तो वे झुक नहीं सकती हैं क्योंकि वस्त्र इतने खिचे तने होते हैं कि जरा भी झुकनेपर उनके फटने का डर रहता है। इसी प्रकार से चमकिली साड़ी, पतली साड़ी एवं स्लीवलेस ब्लाउज जो कि न होनेके बराबर हैं पहनकर विचरण करती हुई नारी अपने को शिक्षित व सभ्य समझती है।

बहुतसी लड़कियां व युवतियां इस प्रकार के वस्त्र इसलिये पहनती हैं कि पुरुष व युवक उनको देखें—यह बात अनुभव की है। सहेलियां स्वयं आपस में एक दूसरे से यही कहती पाई जाती हैं कि "आज मुझे अमुक युवकने बारबार देखा।" "मुझे आज सब लोग देख रहे थे।" "आज मेरे पीछे दो लड़के कॉलेज से सीधे घरतक देखते आए।" यह सब आधुनिक वृत्ति है लड़कियोंकी—जो स्वयं अभद्रता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोत्साहन देती है। जब इस प्रकार दूसरों को आकर्षित क… की प्रवृत्ति के कारण वे फैशन करती हैं तो क्यों न पुरुष… उसका फायदा उठावे। हर चीज में आकर्षण दिखाती… बाल सवारने के भी कई ढंग अपनाती हैं अपनी चाल में… अनोखापन, बनावटीपन लाकर लोगों का ध्यान आक… करती हैं। यहांतक अपने हावभाव व इशारों से लोगों… अपनी ओर आकर्षित करती हैं। यह प्रवृत्ति जब नारी… में है तो पुरुष वर्ग भी अपनी सूझबूझ से उसका पूरा फा… उठाने का प्रयत्न करता है।

क्या करें?

यह सब देखते हुये भी किसी की हिम्मत नहीं होती… कि अपने घरमें माँ बहनों को समझाएं। दूसरों की माँ बह… की ओर दृष्टि डालकर उनसे अभद्रता करते समय युवक भू… जाते हैं कि उसकी अपनी बहन माँ भी इसी प्रकार समाज… रहती है। इसलिये यह समय समझनेका है हर नारी… अपना उत्तरदायित्व समझना है एवं पुरुष को अपना कर्तव्य… जानना है। क्षणिक दिखावट से, बनावट से मन की प्रवृत्ति… तो खराब होती ही हैं अपितु स्वास्थ्यहानि भी होती है। घ… ही प्रतिदिन के झगड़े भी इसी कारण होते हैं।

वस्त्रों का उद्देश्य है तन रक्षा व स्वास्थ्य रक्षा। शरीर… ढकने के लिये वस्त्रों की जरूरत होती है। एवं जलवायु के… प्रभाव से बचने के लिये व स्वास्थ्य को बनाए रखने के… लिये वस्त्र आवश्यक हैं। इसलिये बिना कारण को आ…

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी मनोवृत्ति के दास न बनिये। वस्त्र साधारण होना चाहिये। जहां दो रुपये गज के कपड़े से काम चल सकता है वहां आठ रुपये गज का कपड़ा लेकर पहनना बेकार है क्योंकि इससे व्यर्थ व्यय होता है तथा इस भावना को प्रोत्साहन मिलता है लोग भी देखकर वही करते हैं घरमें, माँ बहनें, भाई, बच्चे आदि भी अच्छी महंगी पोशाख पहनने के आदी हो जाते हैं जिससे दैनिक आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पाती हैं तथा पेट भरने को भोजन नहीं मिल पाता है। इस फैशन दिखावट के कारण युवक युवतियां अपने को भूखा भी रखते हैं।

दूसरे वस्त्र शरीर के स्वास्थ्य का ख्याल रखकर बनाये जायें शरीर के अंगों पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ना चाहिये। इसलिये वस्त्र ढीले व मुक्त हों।

आज नारी समाज अपने वस्त्रों पर आकर्षक नमूने काढ़ता है, या बनवाता है इससे वे अपने धन का व्यय करती ही हैं किन्तु उससे कोई लाभ नहीं दीखता है। क्या बिना कशीदा के, नमूने के वस्त्र बेकार हैं? इन नमूनों के फूल पत्तियों की बनावट में अपना आवश्यक समय खो देती हैं और फिर चिल्लाती हैं कि "सारा दिन आराम तक नहीं कर सकी।" इस कशीदाकारी पर जो समय लगता है उसे बचाकर घर की सफाई में, बच्चों के विकास में एवं अन्य आवश्यक कार्यों में लगाना श्रेयस्कर है। क्योंकि अक्सर यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने में आता है कि जिस घर में कशीदाकारी व ... काढ़ने का काम नारी करती है उस घरकी सफाई व स्वच्छ... देखनेपर ऐसा लगता है कि वहां आदमी नहीं रहते... सामान अस्त व्यस्त सा पड़ा रहता है और गंदगी फैली रह... है। अतः उत्तम तो यही होगा कि इस अपव्यय व समय ... बचत करके परिवार व राष्ट्र के काममें सहयोग देकर ... जाति अपना उत्थान कर सकती है। इस प्रकार से ... सौंदर्य साधनों का उपयोग भी बंद किया जा सकता है। ... पाउडर लिपस्टिक का उपयोग करने से शरीर की ... में पहले कोमलता आती है बादमें उसके अन्दर ... मार्ग से वह विषैले पदार्थ गमन करते हैं तब चमड़ी ... हो जाती है तथा उससे चर्म रोग उत्पन्न होता है। इस... अनुभव उन स्त्रियोंसे पूछकर पता चल सकता है जो लगा... कई वर्षोंसे इनका उपयोग करती हैं।

यह सब साधन दिखावट व क्षणिक सौंदर्य प्रदान कर... वाले ही नहीं अपितु यहां तक भी देखा गया है कि प्राकृति... सौंदर्य व शरीर की बनावट में परिवर्तन हो जाता है बड़े ... का विषय है कि पुरुष वर्ग भी क्रीम, पाउडर का दास ... गया है पर यह सब नारी का दोष है।

यदि नारी वर्ग इन साधनोंका प्रयोग बंद करदे ... निश्चय ही इससे परिवार का धन व समय की बचत हो... एवं मन पवित्र हो जावेगा तथा दुःख भी कम होंगे। क्यों...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलासिता के इन साधनों का अनुकरण छोटी छोटी लड़कियां करती हैं तथा उसे प्रोत्साहन मिलता है और भविष्य में उनका स्वास्थ्य तो खराब होता ही है साथ ही समाज की नजरें उनकी ऊपरी बनावट पर गिरती हैं और अभद्रता का व्यवहार किया जाता है।

पुरुषवर्ग को भी चाहिये कि वस्त्रों की आकर्षण प्रियता, चटक मटक को कम कर पारदर्शक व आधुनिक रेशमी वस्त्र शरीर के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होते हैं। साधारण वस्त्रों को पहनकर अपने धन की बचत कर अन्य आवश्यक कामों में लगाना सीखिये। आज क्या कारण है कि हमारी आर्थिक दशा ठीक नहीं, देश में महंगाई बढ़ गई है इसका कारण यही फैशन व फिजूल खर्च है। सादगी को हमने त्यागकर आकर्षण के नामपर अपने व अपने राष्ट्र का धन एवं समय व्यर्थ व्यय कर रहे हैं।

नर व नारी दोनों का उत्तरदायित्व एक है यदि दोनों ही निजानन्द को प्राप्त करना चाहते हैं तो सहयोग व सामूहिक रूप से आधुनिक वातावरण के स्वरूप को परिवर्तित करें। हर बहन अपने परिवार व संबंधियों में सादगी-यथार्थता का प्रचार करे किंतु पहले स्वयं आदर्श बने। हर भाई स्वयं आदर्श बनकर अपने मित्रों व परिवारों में सुन्दर व यथार्थ जीवन का संदेश दें। आपस में प्रेम व सहयोग से कार्य करें। निज देश हित का ध्यान रखते हुए अपने अपने परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें। मन को निर्मल करें।

खानपान में फैशन

जी हाँ खानपानमें भी आज फैशन होता है। प्रकृति से दूर जाकर आज समाज में ऐसे पदार्थोंका साम्राज्य है जिसकी कल्पना करना निरर्थक है। आज एक ओर तो भूख से तड़पते लोग हैं दूसरी ओर दिन में चार से १० बारतक चाय पान करने वाले। क्या यही समानता स्वतंत्रता है। रोज दिन खानेमें हम लोग एक ही वस्तु के अलग अलग ढंग से स्वादिष्टता के नामपर अनेक व्यंजन बनाकर खाते हैं केवल मात्र जिह्वा स्वाद के लिये। इन सबपर नारी समाज का समय तो व्यतीत होता ही है साथ ही जो हम बनाकर खाते हैं वह अपच का कारण हो जाता है।

आजकल की चायपार्टी व भोजन के निमंत्रण को यदि रोग का निमंत्रण कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं है। हम भूनकर, पीसकर, मिलाकर, मिर्चमसाले, तथा रंगबिरंगे अनोखे पदार्थ बनाते हैं जिनमें पौष्टिकता लेशमात्र भी नहीं रह जाती हैं इसे हम खाकर स्वास्थ्य प्राप्त करना चाहते हैं।

खानपान की वास्तविकता को हम फैशन मानकर छुपाते हैं। दिखावट करते हैं जब किसी को प्रेम से खाने के लिये बुलाया जाता है तो उसके लिये स्पेशल भोजन व पदार्थ बनाए जाते हैं और साज बाज से खिलाया जाता है। इस प्रवृत्ति के शिकार गरीब भी हैं। वे अपनी परिस्थिति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि कुछ कर नहीं सकते किंतु समाज के डरसे वे भी कर्ज लेकर या अपने पेट का हिस्सा बचाकर स्वयं को भूखा रखकर, अपनी बच्चों की भूख को दबाकर चाय पार्टी में फैशन करते हैं यह सब क्या है ? दिखावट कोरीजचिंग। यथार्थता पर कोरे आदर्श का पर्दा जो हवा के झोकोंसे उड़ जाता है। इस प्रकार आज हम अपनी परिस्थिति के बाहर भोजन करते है।

खानपान के लिये हम लोग आकर्षक बर्तन, टी-सेट, लेमन सेट तथा न जाने क्या क्या खरीदते हैं केवल इसलिये कि कहीं समाज को नजरों में न गिर जाएं। यही समझ हमारे लिये दुःख का कारण हो जाती है।

फलस्वरूप जिनके पास यह सब बर्तन नहीं होते हैं वे लोग भी अपने बच्चोंका पेट काटकर खरीदते हैं क्योंकि पड़ोसी से माँगकर वे कबतक काम चलाएं ?

तो फिर क्या करें ?

सोचिए, यथार्थता को देखिए। पर्दा हटाइए। झूठे मोहको त्यागिए। चकाचौंध का चश्मा उतारकर देखिए और आगे बढ़िए। सुख यदि प्राप्त करना है तो सत्य व वास्तविकता को प्रोत्साहन दीजिए। यदि आप प्रेम से किसी को खाने पीने के लिए बुलाते हैं तो उसमें दिखावटीपन को हटाकर जो आप प्रतिदिन ग्रहण करते हैं वही उसे भी दीजिए। स्पष्टवादितासे बिना आग्रह किये खानपान को प्रोत्साहन दीजिए तथा निःसंकोच होकर ग्रहण कीजिए। फिर देखिए आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कितना आनंद व प्रेम का वातावरण हो जायगा। इसीप्रकार बर्तनों के संबंध में भी यथार्थता को लीजिए जो बर्तन आपके दैनिक व्यवहार में आते हैं तथा जो उपलब्ध हैं उन्हींका उपयोग करें।

विवश होकर समाज के डरसे अपव्यय न करें और अपनी वास्तविकता को छुपाने हेतु पड़ोसियोंसे बर्तन व टी सेट माँगकर काम चलाएँ, विशेष उत्सवोंपर ... चलाया जा सकता है।

आदरसत्कार एवं प्रेम की पहचान करें तथा स्पष्ट ... करें। व्यंग वाणी को त्याग कर आए हुए मित्र व मेहमानसे पहले ही पूछ-लीजिए कि क्या उसे रुचिकर है? तब खान पान का प्रबंध कीजिए रुचिकेविरुद्ध व्यंजन बनाने पर ... व्यर्थ हो जाते हैं। अति आग्रह करना भी ठीक नहीं है क्योंकि इससे दो हानियाँ हैं।

१–आग्रह की भावना को प्रोत्साहन मिलता है तथा संकोच वृत्ति का निर्माण होता है। प्रेम की कमी हो जाती है।

२–यदि आग्रह से ग्रहण नहीं किया तो यह समझते हैं कि खानपान अच्छा नहीं या प्रेम नहीं है। और यदि ग्रहण कर लिया तो स्वयं के स्वास्थ्य को खतरा हो जाता है।

अतः हर नारी पुरुष का यह कर्तव्य हो जाता है कि हर चीज का फैशन व दिखावट को भुलाकर उससे दूर रहना है तो अपने परिवार में पहले इस सादगी व प्रेम का प्रचार करें फिर समाज में प्रदर्शन करें। निश्चय ही तब सुख व शांति आत्मीयता का वातावरण निर्माण हो जायगा एवं मानव समाज की सर्वांगीण उन्नति भी होगी। इसीमें कल्याण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(समाजकी नैयाका खेवन हार)

अध्यापक

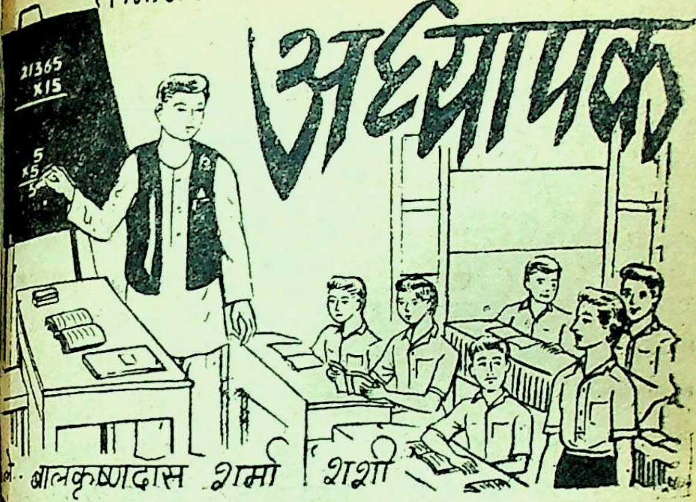

— बालकृष्णदास शर्मा 'शशी'

अध्यापक कितना प्रिय शब्द है ? यह ही देश को बनाने वाला अथवा बिगाड़ने वाला है। यदि किसी देश, किसी कौम की उन्नति देखना चाहते हो तो उस देश के अध्यापकों को, कर्णधारों को उन्नत करना आवश्यक है। उनमें आदर्श गुण भरने होंगे क्योंकि अध्यापक ही देश के नवयुवकों को, देश के नोनिहालों को, देश के आधार स्तम्भों को बनाने वाले होते हैं। जिस प्रकार किसी भवन की मजबूती उसकी नीव पर आधारित है ठीक उसी प्रकार देश का मजबूत होना उसके नवयुवकों में असाधारण गुणों का होना आवश्यक है। बच्चे ही भावी समाज के निर्माता होते हैं। किसी कविने क्या खूब कहा है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चाइल्ड इज द फादर ऑफ ए मॅन."

इन बच्चों का निर्माता अध्यापक है। यदि इंजन अच्छी अवस्था में है तो वह गाड़ी को लक्ष्यतक ले ही जाता है। यदि इंजन रूपी अध्यापक ही उत्तम न हुआ तो देश का कल्याण कैसे सम्भव है ? भारत में ही नहीं अपितु संसार में जितने भी महापुरुष, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, कलाकार दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इन सब को महान बनाने वाला अध्यापक ही तो होता है। 'शिवाजी' में देशभक्ति पैदा करनेवाली जहां उनकी माता जीजाबाई थी, वहां उनके अध्यापक कोंडदेव का भी गहरा हाथ था। अर्जुन की ख्याति का कारण भी तो उनका शिक्षक ही तो था। समाज का निर्माता अध्यापक ही तो होता है। यदि हम प्राचीनकाल की ओर दृष्टिपात करें तो हमें विदित होगा कि हमारे ऋषि मुनियों ने देश को ऊँचा उठाने में अथक परिश्रम किया था। उस काल के बालक आश्रमों में ही तो शिक्षा ग्रहण करते थे। उनमें स्वार्थ तो नाममात्र को भी नहीं था, वैसे ही निस्वार्थ गुरुओं की तो आज आवश्यकता है।

परन्तु आज कितने शिक्षक हैं जो इस कसौटी पर खरे उतरते हैं, कितने हैं ऐसे जो देश के कल्याणार्थ बच्चों को जी जान से पढ़ाते हैं, उनमें उत्तम गुण पैदा करने का प्रयत्न करते हैं। इसके साथ २ यदि आज के बच्चों को परखा जाये तो पूर्व के बच्चों की अपेक्षा उनमें कहीं अधिक मात्रा में उच्छृंखलता, अकर्मण्यता, अनुशासन हीनता मिलेगी। ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों है? इसका कारण हमारे अध्यापकों की अयोग्यता, देशभक्ति का अभाव या यूँ कह सकते हैं कि उनमें लगन का अभाव है। परन्तु केवल हम अध्यापकों को ही दोषी नहीं ठहरा सकते अपितु इसमें समाज का भी दोष है। आज के वातावरण का दोष है, स्वार्थ का दोष है। कहां तो पहिले अध्यापकों में आत्मिक बल एवं सन्तोष होता था कहां आज स्वार्थ का बोलबाला है। इस बात की पुष्टि हमें प्राचीन ग्रंथों से हो सकती है। गुरुद्रोण इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। परन्तु आज अध्यापकों में स्वार्थपरता, असन्तोष खटकता है। इस का कारण आज की सामाजिक परिस्थितियां हैं तथा हमारी शिक्षा प्रणाली का भी दोष है। हमारे देश में एक बच्चा दसवीं की परीक्षा पास करता है तो वह अध्यापक, मास्टर बनने के लिये दौड़ता है। इसके लिये तो यह प्रसिद्ध हो गया है कि यदि और किसी महकमे में स्थान न मिले तो अध्यापक का स्थान खाली है। इसे तो गऊशाला का महकमा कहते हैं। दूसरे देशों अमेरिका, इंगलैण्ड आदि देशों में प्राईमरी कक्षाओं के अध्यापक-शिक्षक बी. ए.,एम. ए. से कम शिक्षित नहीं होते। उनको वेतन भी सन्तोषजनक प्राप्त होता है। इसी कारण तो उन ही देशों के बड़े बड़े वैज्ञानिक, आविष्कारक, दार्शनिक निकलते हैं। हमारे देश में भी आदर्श अध्यापकों की कमी नहीं है परन्तु जिन अध्यापकों को नून, तेल, हल्दी की ही चिन्ता आठों याम लगी रहती है वे बच्चों के संवारने की ओर अधिक ध्यान कैसे दे सकते हैं? यदि हमारे देश के कर्णधार, शासक चाहते हैं कि देश उठे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें अध्यापकों की दशा को सुधारना ही होगा। उन्हें अ
वेतन देना होगा। उनमें उत्तम गुण उत्पन्न करने होंगे।
रेलकर्मचारी के लिये राशन, क्वार्टर आदि की व्यव
होती है परन्तु बेचारे अध्यापक की कोई बात ही नहीं पूछ
उसके लिये क्वार्टर नहीं बनाये जाते। जब किसी अध्या
का तबादला हो जाता है तो सब से प्रथम जो कठिनाई उसे
सामने उपस्थित होती है, वह है रहने का स्थान। ग्रा
में तो खैर उसका निर्वाह किसी न किसी प्रकार हो ही जा
है परन्तु शहरों में तो उसे कष्ट सहन करना ही पड़ता है।

यदि अध्यापक वर्ग समाज में अपना स्थान निश्चि
कराना चाहता है, अपना प्राचीन गौरव वापिस ला
चाहता है, तो उन्हें परिश्रम करना ही होगा, अपने अन्द
उत्तम गुण, देशभक्ति, कर्मयोग एवं लगन उत्पन्न करनी
होगी। उन्हें बच्चों में आदर्श गुण पैदा करने की शपथ ग्रहण
करनी होगी। तभी वे वास्तविक अर्थों में समाज की नैया
के खेवनहार बन सकते हैं। तभी वे रामराज्य स्थापित करने
की ओर एक पग बढ़ा सकते हैं। तभी वे देश का कल्याण
कर सकते हैं। अध्यापकों को निरत गुण पैदा करने का
प्रयत्न करना चाहिये।

शिक्षण कार्य का आधार तीन स्तम्भों पर है। शिक्षक,
शिष्य और शिक्षा। प्राचीन अध्यापक के लिये केवल अपने
विषय का पंडित होना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षक के लिये शिष्य के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी भी रखना आवश्यक था, परन्तु अब बीसवीं शताब्दी में शिक्षक के लिये शिक्षण जैसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व को सम्भालने से पूर्व अपने आपको ज्ञानवान बनाना भी आवश्यक है। अर्थात् अपने अन्दर योग्यता पैदा करना। अध्यापक का व्यवसाय पूर्ववत् पवित्र ही है किन्तु अब इसका उत्तरदायित्व कई गुणा बढ़ गया है। अब शिक्षक का केवल अपने विषय में ही योग्य होना पर्याप्त नहीं अपितु उसके प्रयत्नों को वे मार्ग दिखाने चाहियें जिनके द्वारा वह ऐसा वातावरण निर्माण कर सके जिससे एक छात्र निर्विघ्न रूप से मनुष्य बन सके। निस्सन्देह यह कार्य बड़ा कठिन है। परन्तु इस वैज्ञानिक युग में असम्भव शब्द समाप्त हो चुका है। डाल्टन योजना, मौन्टिसरी पद्धति, प्राजैक्ट पद्धति, बेसिक शिक्षा प्रणाली तथा अन्य कई ऐसी ही शिक्षा पद्धतियां ऐसा वातावरण पैदा करने का लक्ष्य रखती हैं।

इस वातावरण में अध्यापक का स्थान महत्वपूर्ण है। अध्यापक बच्चों का जहां शिक्षक है वहां उनका मार्गदर्शक मित्र भी है। प्राचीन समय में जिस प्रकार अध्यापक बच्चों को लाठी के जोर से पढ़ाता था परन्तु अब बीसवीं शताब्दी में अध्यापक को इस आदत को छोड़ना होगा बेसिक शिक्षा में महात्मा गान्धी कह गये हैं कि बच्चों की शिक्षा बच्चों की रुचि का ध्यान रखकर दो। तथा शिक्षा बच्चों के जीवन सम्बन्धी हो। अध्यापक को अपने सम्मुख चारित्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श भी रखने होगें। छात्रों में उन आदर्शों के प्रति श्र... प्रेरणा उत्पन्न करने के लिये स्वयम् अध्यापक को ... आदर्शों को अपने जीवन में स्थान देना होगा तभी तो ... वास्तविक अर्थों में अध्यापक कहलाने का भागी बनेगा। ... स्थान पर स्मिथ महाशयने लिखा है कि "जैसी प्रेरणा ... दूसरों को कराना चाहता है उसे पहले स्वयं वैसा ... दिखाना चाहिये और यदि कोई किसी न किसी ... व्यवहार में मार्ग प्रदर्शन करना चाहता है तो उसे चाहि... कि पहले वह अपने आपको उसमें आदर्श रूप से प्रस्तु... करे।" महात्मा गान्धी का उदाहरण हमारे सामने है। उन्हों... अपने अन्दर गुण पैदा किये, भारतीयों के सम्मुख आदर्श रखा तभी तो चालीस करोड़ भारतीय उनके पीछे लग गये। उनके आदर्शों पर चलना हम गर्व समझते हैं। एक स्थान पर अर्जुन ने कृष्ण से पूछा कि आप तो भगवान् हैं आपको काम करने की क्या आवश्यकता है उस समय कृष्णने कितना सुन्दर उत्तर दिया था उन्होंने कहा था "कि यदि मैं काम करना छोड़ दूं तो कोई भी काम नहीं करेगा। बड़े जो कार्य करते हैं छोटे उनके पीछे स्वतः ही चल पड़ते हैं। इस कारण मैं काम करता हूँ।" इसी कारण अध्यापक को भी कर्मशील होना चाहिये। संसार में कर्मयोग की ही महानता है। छात्रों में उत्साह का मन्त्र फूंकने के लिये अध्यापक का उत्साह पूर्ण होना चाहिये।

अध्यापक को अपने कार्य के महत्व का अनुभव होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। घर तथा विद्यालय दो ही ऐसे स्थान हैं जहां जाति की स्थापना होती है। परन्तु भारत जैसे देश में जहां अधिकांश माताएं अनपढ़ होती हैं वहां अध्यापक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है। और यह सत्य ही है कि अध्यापक का अपनी जाति के उत्थान में महत्वपूर्ण हाथ होता है। बच्चे संस्कारों से ही तो बनते हैं। अध्यापक बच्चों पर जैसे संस्कार डाल देगा बच्चे वैसे ही बन जायेंगे। बच्चों को बनाना या बिगाड़ना अध्यापक के हाथ में है। इसी कारण अध्यापक को अपने कार्य में और दक्ष होना चाहिये। एक स्थान पर श्रीमती मौन्टिसरी ने लिखा है कि "मैं छात्रों को इस आशा से देखती हूँ कि ये हमें व्यर्थ जड़बुद्धि से, दुःखों से, वैयक्तिक सामाजिक अशांत्ति से मुक्त करायेंगे।" एक प्रौढ़ व्यक्ति केवल परिस्थितियों को सुधार सकता है किन्तु एक बालक जीवमात्र का कल्याण कर सकता है।

अन्त में अध्यापक अपने आपको पहचाने। चिकित्सक पहले अपनी चिकित्सा करे। अपना आत्मपरीक्षण करे। प्रत्येक अध्यापक को अपने अचेत मन से अवश्य परिचित होना चाहिये। क्योंकि यही तो वह स्थान है जहां दानव मन्त्रणा करते हैं। वही व्यक्ति जो शिक्षित है और आन्तरिक रूप से स्वतन्त्र है दूसरों को यथोचित शिक्षा दे सकता है।

यदि प्रत्येक अध्यापक ऊपर लिखे गुणों के महत्व को समझ ले, उनको अपने हृदय में उतार ले तो शिक्षा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्यों की पूर्ति सम्भव है। फिर भला देश का कल्याण न होगा ? फिर भला देश प्राचीन गौरव को क्यों न प्राप्त सकेगा ? परन्तु ऐसे विचारों को ग्रहण करने तथा करने में अध्यापक को परिश्रम करना होगा। अपने संयम करना होगा तभी वह अपने मनोवांछित मनोरथ फलीभूत हो सकता है।

इसीलिये तो कहा है कि "समाज की नैया का खेवनहार अध्यापक है।"

शीशे के नल

शीशे की चद्दरे

शीशे की पट्टियां तार आदि

१" से १२" गोलाई के मुंहके सब तरह व साइज के सब शीशेके नल तथा चद्दरें बनाने वाले।

—: भारतमें सर्वप्रथम निर्माता :—

अशोक मेटल इंडस्ट्रीज

६ शिवडी क्रोस रोड, बम्बई–१५

फोन : ६३९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक उपलब्धियों से मानव क्षणिक सुखानुभूति तो प्राप्त कर लेता है, पर वह मन समझाने मात्र की प्रक्रिया होती है। वह मानसिक शांति किसी भी अंश में प्राप्त नहीं कर पाता है। इस सिद्धान्त को हमारे मेधावी पूर्वजों ने पूर्णरूपेण समझ लिया था, और यही कारण था कि उन्होंने भारतीय संस्कृति के माध्यम से विश्व को एक नई चेतना, एक नई दिशा और एक नया दृष्टिकोण दिया था, जिस पर आचरण करते रहकर ही भारतीय समाज को 'जगद्‌गुरु' पद प्राप्त हुआ था। तभी तो महर्षि मनु ने उद्‌घोषित किया था:—

'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवाः ॥'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृथ्वी के समस्त मनुष्य भारत के ऋषियों से 'चरि[illegible] की शिक्षा प्राप्त करें।)

महर्षि मनु की इसी घोषणा से प्रभावित होकर [illegible] आदि युग से हजारों की संख्या में भारत आते रहे [illegible] अपनी ज्ञानपिपासा बुझाते रहे। यह परम्परा आज [illegible] भारतीय संस्कृति पर भांति भांति की चोटें होरही हैं, [illegible] भी चल रही है। भौतिक-वैज्ञानिक युग से ऊबकर [illegible] सारा विश्व भारत का मुंह ताक रहा है। पर आज हम [illegible] भौतिक विज्ञान के बहाव में अंधानुकरणी प्रवृत्तियों के [illegible] होकर के बहे जा रहे हैं, और अपनी धरोहर आध्या[illegible] विज्ञान की हम स्वयं उपेक्षा कर रहे हैं। आज पग-पग [illegible] हम पश्चिम का मुंह ताक रहे हैं! हम यह भूल गये हैं [illegible] आध्यात्म विज्ञान के जिन सिद्धान्तों को पाकर विश्व [illegible] होगया था, हम उनकी ही उपेक्षा कर रहे हैं! हम पाश्चात्[illegible] भौतिक विज्ञान की धधकती ज्वाला में, जिसमें कि सा[illegible] शांति, आत्मीयता नष्ट होरही है, हम क्यों सम्मिलित हो[illegible] हैं, यह हमें भी मालूम नहीं है! आज भी भारत की ओर [illegible] विद्वान मुंह लगाये बैठे हैं, पर वे खेदपूवक कह उठते हैं [illegible] अब भारत, भारत नहीं रहा!

आइये, यूनेस्को के एक अधिकारी, जो कई सप्ताह [illegible] शस्य श्यामला भूमि पर घूमे, पर जो उनकी यहां देख[illegible] की भावना थी, वह पूरी न हो पाई, और वे खिन्न मन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह उठे, उनकी ही जबानी आप भी सुनिये–'मैं असली भारत देखने आया था, पर खेद है कि आज मैं भारत को नहीं देख पाया! मुझे बड़े बड़े कारखाने दिखाए गये, कॉलेज दिखाये गये, पर इन्हें देखना तो भारत को देखना नहीं हुआ! ऐसी चीजें हमारे यहां अधिक अच्छी और बड़ी मात्रा में उपलब्ध हो सकती हैं। मैं बहुत से शिक्षितों और अर्द्धशिक्षितों से भी मिला। वे भी मुझे अपने रेफरीजिरेटर, रेडियो और बर्तन धोने की मशीन बताने लगे। इन सब चीजों को देखकर भारत की महानता की छाप मेरे मन पर नहीं पड़ी! मैं ताजमहल और अजन्ता जैसे प्राचीन स्थानों को देखने का उत्सुक नहीं था! मैं तो जीवन के अन्दर, चलते फिरते लोगों के अन्दर भारत देखना चाहता था, परन्तु खेद है कि नहीं देख सका।'

हमारे नेत्र खोलने के लिए यूनेस्को के उक्त उत्सुक अधिकारी महोदय के ये शब्द पर्याप्त हैं। कितना उत्तम हो कि भारतीय नरनारी गण सही अर्थों में भारतीय संस्कृति पर आचरण करने का प्रयत्न करें। ताकि आगे कोई पाश्चात्य या अन्य विदेशी विद्वान इस प्रकार से सच्चे भारत के दर्शन न कर पाने का खेद न प्रकट कर सकें।

वैज्ञानिक युग की देनों से ऊबकर आज कई पाश्यात्य विद्वान् भारत की ओर ताक रहे हैं। अनेक भारतीय संकृति का अध्ययन–मनन करके उस पर व्यावहारिक अनुकरण कर रहे हैं। यह परम्परा काफी पुराने समय से चली आरही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसाई धर्म के प्रवर्तक श्री ईसामसीह भारत आए थे और उन्होंने यहां १२ वर्ष तक विश्व विख्यात तक्षशिला विश्व विद्यालय में विद्यार्जन किया था। यही कारण है कि उनके विचारों में बौद्ध सिद्धांतों की छाप स्पष्टतया झलकती है। इस्लाम धर्म के संस्थापक श्री हजरत मुहम्मद का भी भारत में आना बताया जाता है। जर्मन विद्वान प्रो. मैक्स मूलर ने तो वैदिक ज्ञान और वैदिक धर्म से प्रभावित होकर उसके अध्ययन, मनन, अनुवाद, चिन्तन, प्रकाशन, उपचार आदि कार्यों में ही अपने जीवन को लगा दिया। इसी प्रकार यूरोप के प्रसिद्ध दार्शनिक शोपनहार, स्वीडन के प्रोफेसर पालड्यूसन, प्रोफेसर जी आर्क आदि विद्वानों ने उपनिषदों का अध्ययन किया और उसे विश्व का श्रेष्ठतम ज्ञान घोषित किया है। यह परम्परा भारतीय संस्कृति के प्रति विश्वविद्या की एक झलक बताने में समर्थ है।

यङ्ग इण्डिया (Young India) में सर दीन बन्धु एण्ड्र्यूज ने अपने एक लेख में भारतीय आश्रम प्रणाली के आधार पर ही संचालित आश्रम का वर्णन किया है। यह आश्रम जर्मनी के मार्विंग में स्थापित हुआ था। सर एण्ड्र्यूज उस आश्रम के विषय में लिखते हैं:—

'इस विद्यापीठ में वेदों की उच्च शिक्षा दी जाती है। वेदों के अध्ययन का यहां के अध्यापकों पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि उनने अपने आचार भी तद्वत बना लिये हैं, इस विद्यापीठ के प्रधानाध्यापक श्री ओटो हैं, जिन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आश्रम को भारत के ऋषि आश्रम का एक नमूना बना लिया है। श्री ओटो साहब बाल ब्रह्मचारी हैं, उन्होंने विवाह नहीं किया है, और अपना सारा समय एवं जीवन वेदों के अध्ययन और अध्यापन में ही व्यतीत किया है।

अध्यापक श्री ओटो ने कई बार भारत की यात्रा की है। जब वह भारत की यशो गाथा का वर्णन करते हैं, तो उनके चेहरे पर अद्भुद आनन्द झलकता है। मैंने अनुभव किया है कि उन्होंने वेद, उपनिषद् और पुराणों का अध्ययन किया है, और हिन्दू धर्म की बारीकियों को समझा है। वह संस्कृत का इतना ज्ञान रखते हैं कि वह उनकी मातृभाषा की तरह ही लगती है, और वे संस्कृत में बोल भी सकते हैं।'

भारत की आदर्श तम शिक्षा प्रणाली से प्रभावित होकर ही श्री ओटो ने यह विद्यापीठ चलाया था।

पेरिस के लूईफिलञ्च ने भारत के प्रति मातृ भावना एवं पुत्रवत् आत्मीयता प्रदर्शित करते हुए अपनी श्रद्धांजलि इन शब्दों में प्रकट की है:–'ऐ भारत माता! हम तुम्हारे पुत्र हैं। तुम हमारी सहायता करो। हम जानते हैं कि हमारी सभ्यता के विकास के पूर्व ही तुम ज्ञान का केन्द्र रह चुकी हो। हमारा मार्ग दुर्गम और कटंकाकीर्ण है। हम तुम्हारे वास्तविक वैदिक पुत्र हैं, और तुमसे प्रशस्त पथ के निर्देशन की प्रतीक्षा में हैं। तुमसे शिक्षा और प्रेरणा ग्रहण करके हम संसार के नैतिक नवनिर्माण में अच्छा योग दान दे सकते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि टालस्टाय, खलील जिब्रान, प्रिंस-कोपाटकिन डाक्टर बारान्तिकोव आदि के साहित्य में भारतीय संस्कृति की छाप स्पष्ट रूप से झलकती है। सिस्टर निवेदता, दीन बन्धु एड्र्यूज, श्री माताजी (अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी) तो भारतीय संस्कृति के स्तम्भ ही से बन गए हैं।

श्री महात्मा गांधी से एक आस्ट्रेलियन दम्पति का पत्र व्यवहार था, वे उनसे प्रभावित थे, और भौतिक विज्ञान से ऊबे हुए थे। उनके पत्रों में से एक पत्र में उन्होंने लिखा था 'पश्चिम के विज्ञान से जो शांति और संतोष मुझे नहीं मिल सका, भारत से मिला है। मैं आपके विचारों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न करूंगा।'

उनकी पत्नी ने भी एक पत्र में लिखा है:-'यहां पर भारत के प्रति कुछ अजीब धारणा है। वह समझते हैं कि भारत चमत्कारों का केन्द्र है। पाश्चात्य विज्ञानमें नास्तिकता ओतप्रोत है। पश्चिम की कला में भी मैंने नास्तिकता की बू अनुभव की है। धर्म की स्थापना तो यहां है, पर उसका पालन कोई बिरला ही करता है। हम सादगी का अनुकरण करते हैं, अपने सभी काम स्वयं करते हैं, और पक्षियों में भी अपना स्वरूप देखते हुए उन्हें दान डालते हैं वह भी हमारे समाज को अखरता है हमारे दया के सिद्धांत पर वह लोग हंसते हैं। शराब का व्यसन तो यहां पर घर घर है। यहां के लोग विषयों के गुलाम हैं। परमात्मा की महान अनुकम्पा से हम श्रीमद् भगवद् गीता का नित्य पाठ करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे हैं। हमारी राय में गीता जैसा शांति प्रदान करने वाला ग्रन्थ अन्य नहीं हो सकता है। भारत से जो कुछ मुझे मिला है, उसका बदला तो वहां जन्म लेकर ही चुकाया जा सकता है।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक संस्कृति के आदर्शों से आज भी काफी लोग प्रभावित हैं। उसके साथ ही काफी विद्वानों और वैज्ञानिकों ने इसकी विभिन्न प्रक्रियाओं पर प्रयोग, परीक्षण और तथ्य संकलन भी किये हैं। फ्रांस के प्रोफेसर टिलवर्ट, डा. कर्नल किंग, डा. टाटलिट, सर होपकिन आदि ने यज्ञों पर विभिन्न शोध किये और उसे जन हितकारी प्रक्रिया घोषित की है।

इसी प्रकार गौ महिमा को भी पाश्चात्य जगत् में काफी महत्व दिया गया है, और यह महत्व केवल कागजी कार्यवाही न रह करके उसे व्यावहारिक रूप दिया गया है। श्री ड्रेव्हर, डा. हौडर्स हैरीमेन, वाल्टर ए. डामर आदि ने इस विषय पर काफी महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं। देखिए, सर विलियम वेडवर्न की सम्मति कितनी महत्वपूर्ण है:–'मैं इसकी कल्पना कर सकता हूँ कि किसी भी राष्ट्र के बिना गौ हो भी सकती है, किन्तु मैं स्वप्न में भी यह अनुमान नहीं कर सकता कि कोई राष्ट्र विना गौ के रह भी सकता है।'

ठीक इसी प्रकार की अन्य महानुभावों की दिव्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावनाएं भी हैं। जो कि भारतीय संस्कृति की स्पष्ट उद्घोषित करती हैं लेकिन जहां विदेशी हमारी संस्कृति प्रति रुचि बता रहे हैं, वहां हम स्वयं ही उसकी उपेक्षा रहे हैं।

देखिए, धरती का आधुनिक स्वर्ग कहा जाने वाला अमेरिका का निवासी भौतिक विज्ञान से कितना उदासीन है, एक सही प्रसंग के रूप में देखिए–'अमेरिका के एक सुशिक्षित दम्पत्ति गंगोत्री के पवित्र तीर्थ स्थल पर महात्मा श्री आनन्द स्वामी सरस्वती जी महाराज से मिले। महात्मा जी ने उनसे पूछा 'कि धनधान्य ऐश्वर्यों और वैज्ञानिक युग का रंगीनियों को छोड़कर आप इस निर्जन स्थानपर क्यों भटक रहे हे ? जो भौतिक सुख आपको अमेरिका में मिल सकता है वह यहां कहां है ?'

उस अमेरिकन दम्पत्ति ने स्वामीजी के इस प्रश्न का जो उत्तर दिया है, वह हम सबके लिए शालीनता पूर्वक विचार करने योग्य है। उन्होंने कहा–'स्वामीजी ! अमेरिका शारीरिक सुखों का स्वर्ग है। वहां किसी प्रकार के भौतिक सुख की कमी नहीं है, परंतु उन भौतिक सुखों का उपयोग करते हुए हमें मानसिक शांति प्राप्त नहीं हुई, सुना था कि भारत के अरण्यों में निवास करने वाले ऋषि मुनियों के चरणों में बैठ कर कुछ आध्यात्मिक ज्ञान की बूंदें चखने को प्राप्त हो सकती हैं। उसी की खोज में अमेरिका से यहां आये हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर कुछ उदाहरणों द्वारा यह बतलाया गया है कि पाश्चात्य जगत आर्य संस्कृति एवं वैदिक सिद्धान्तों का व्यावहारिक अनुकरण कर रहा है, अनुकरण करके गौरवानुभूति अनुभव कर रहा है। लेकिन हम उसे अपने ही पैरों ठुकरा रहे हैं। पाश्चात्य जगत् के एक विद्वान् ने वैदिक संस्कृति को ही आगामी विश्वधर्म की रीढ़ बतलाते हुए Indian world. (इण्डियन-वर्ल्ड) पत्रिका में एक लेख में लिखा है कि-'संसार का आगामी धर्म वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल ही होगा। अब विचारों की मान्यता तर्क और बुद्धि के आधार पर ही सम्भव है। धार्मिक सिद्धान्तों की स्थिरता तभी तक रह सकती है। जब उसको पुष्ट करने वाला तत्व ज्ञान भी उपस्थित हो भूत में धार्मिक मान्यतायें कैसी भी रही हों, भविष्य में तो वह बुद्धि और तर्क के सहारे ही जीवित रह सकेंगी। अंध विश्वास का स्थान जब बुद्धि ले लेगी तब धर्म का प्रश्न हल हो जायगा। आने वाले धर्म में सदाचार का मूल्यांकन अधिक होगा और वह अधिक तर हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों के अनुकूल होगा।

सचमुच ही आध्यात्मिक ज्ञान की सुरसरित् से प्यासी धरती की कभी प्यास बुझी थी, जनजन उसे पाकर हर्षित हुआ था, करोड़ों अशान्त आत्माओं को उसने मार्गदर्शन किया था, आज उसके दर्शन ही दुर्लभ होगये हैं। अतः हमें पुनः अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रयत्न करना है, ताकि वह महर्षि मनु की 'चरित्र' की शिक्षा वाली उद्घोषणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम पुनः सारे जगत् को सुना सकें और उसे सही रूप ... करके भारतको पुनः 'जगद् गुरु' के पद पर प्रति... करा सकें।

उठो, मनु की संतानो! मोह की कुंभकर्णी नि... त्यागो। देखो, ऋषि-ऋण तुम्हें रह २ कर फिर से पुका... है। चलो उठो, सांस्कृतिक संरक्षण, धर्मसंरक्षण, ... वैदिक सिद्धान्तों के संरक्षण के लिए हम अपने कदम ब...

सफेद मल...
बी-टेक्स
गजकर्ण, खाज, खरुज, नायटा, इसब,
तोंडावरील मुरूम, हातापायांवर पडणारे
चीरे आणि जनावरांच्या जखमेवर जालीम ...
बी-टेक्स मुंबई नं. ३.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतयुग प्रमाण

ले.— भीष्म सिंह

प्रारंभिक प्रसंग दिग्दर्शनः—

महाभारत ग्रन्थ के शान्तिपर्व में अध्याय उनसठवाँ
लोकन करने से यह विदित होता है कि इस अध्याय में
जा और राज्य की उत्पत्ति की कथा वर्णन है। आधुनिक
त की परिवर्तनरूप स्थिति अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष
कालना कोई असंगत नहीं प्रतीत होता है कि अब सत्ययुग
बीज बोया जा चुका है तथा यह काल सत्ययुग का
र्गदर्शन काल ही है—इसका प्रमाण उपर्युक्त अध्याय के
र्न से एवं आधुनिक स्थिति के तुलनात्मक अध्ययन से
ष्ट हो जायेगा। उक्त अध्याय का संक्षिप्त वृत्त इस प्रकार से
संगत है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक दिन, जब पाण्डव एवं यादव कुरुक्षेत्र में भी
को घेर कर बैठे कुशल वार्ता कर रहे थे, तब युधि
यथाविधि भीष्म का पूजनकर और हाथ जोड़कर प्रश्न
कि—"हे भगवन्! आप मुझे बतलावें कि, राजा शब्द
उत्पत्ति कैसे हुई और इस शब्द का प्रचार जगत में
हुआ? राजा और अन्य लोगों के हाथों, हथेलियों,
बुद्धि और अन्य इन्द्रियों में समानता होनेपर भी राजा
व्यक्तिविशेष क्यों कर बड़े बड़े विद्वान और वीर पुरुषों
हुकूमत करता है?......क्या कारण है......कि उस
व्यक्ति की प्रसन्नता से सब लोग प्रसन्न होते हैं और
विकलता से सब लोग क्यों विकल हो जाते हैं? मैं
का उत्तर यथार्थ रीति से सुनना चाहता हूँ। हे राजन्!
व्यक्तिविशेष को देववत् मान सब लोग प्रणाम करते
इसका कारण सामान्य नहीं हो सकता।'

भीष्मजीने कहा—हे पुरुष व्याघ्र! पूर्वकाल (संधिकाल)
यह वह काल है जबकि संसार में युग का निर्माण ही न
हुआ होता है बारह हजार वर्षोंकी चार युगोंकी एक चौक
कहलाती है। चार हजार वर्षोंका सतयुग, तीन हजार व
का त्रेता, दो हजार वर्षों का द्वापर, एक हजार वर्ष
कलयुग—यह कुल मिलाकर दस हजार वर्ष होते हैं। सतयुग
के पूर्व का संधिकाल जो कि ८०० वर्षों का होता है जिसे
भीष्म पितामहजीने पूर्वकाल यह संज्ञा दी है वह
संधिकाल है इसके आगे सतयुग शुरू होता है दोनों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संधिकाल ६०० वर्षों का होता है। त्रेता से द्वापर के बीच का संधिकाल ४०० वर्ष का होता है। द्वापर से कलियुग के बीच का संधिकाल २०० वर्षों का होता है। इस संधिकाल सहित चारों युगों की काल गणना को विद्वानोंने चौकड़ी यह संज्ञा दी है) में सतयुग में जैसे राज्य का संगठन हुआ था, वह तुम सावधान होकर सुनो। पूर्वकाल में सत्ययुग में कोई राज्य न था और न कोई राजा ही था। उस जमाने में न तो किसी प्रकारका दंड था और न दंड देनेवाला ही कोई जन था। धर्म बंधन में बंधे हुये प्रजाजन आपस में एक दूसरे की रक्षा किया करते थे इस प्रकार बहुतसा समय बीत गया, लोगों को बड़ा श्रम हुआ। तब वे प्रमादी हो गये। मोहग्रस्त होने से उनका ज्ञान नष्ट हो गया और ज्ञान नष्ट होते ही उनका धर्म नष्ट हो गया। इससे वे सबके सब लोभ में फस गये। लालच में फंसकर वे अप्राप्य पदार्थोंकी चाहना करने लगे। हे राजन्! तब वे काम के अधीन हो गये। कामवशावर्ती होते ही वे रागसे आक्रान्त हुये। गमनागमन, वाच्यावाच्य, भक्ष्याभक्ष्य दोषादोष के विचार से वे सब शून्य हो गये। इससे मृत्युलोक में बडा उपद्रव मचा और वैदिक धर्म लुप्त होने लगा। यज्ञ याग बंद हो गये। वेद ज्ञान के लुप्त होते ही यज्ञयागादि क्रियाएँ बंद हो गईं। यज्ञादि क्रियाओं के बंद होते ही देवताओं में भय का संचार हुआ तब सब देव एकत्र हो ब्रह्माजी की शरण में गये”.........

पाठकगण! उक्त वृत्तांतको सप्रमाण दृष्टिगत रखते हुये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्ययुग प्रमाण" का यथार्थ वर्णन जो प्रस्तुत है उसे निज बुद्धिद्वारा ग्रहणकर ज्ञान वृद्धि एवं सुख व शांति प्राप्त करें—

"सतयुग प्रमाण"

जनतंत्र का होना इस युगमें आमद सतयुग दिखलाता
अध्याय उनसठवां शांतिपर्व महाभारत यह बतलाता
कृतयुग में राज्य तथा राजा कोई भी कहीं नहीं था
रहता न दंड देनेवाला और दंड भी कहीं नहीं था
निजधर्म के बंधन में रहकर आपस में लोग रहा करते
अपनी व परायी रक्षा में अतिशय दुःख रोज सहा करते
इस तरह स्वतंत्र रहते रहते जब अधिक समय हो जाता है
तब स्वाभाविक ही जनता के मन में प्रमाद बढ़ जाता है
फिर मोह ग्रस्त होते ही जन का ज्ञान नष्ट हो जाता है
तब ज्ञान के जाते ही जनता का धर्म भ्रष्ट हो जाता है
फिर धर्म पतित होते ही जनमें लोभ अधिक हो जाता है
यों लोभ के बढ़ते ही जनता में लालच अति हो जाता है
तब अप्राप्य पदार्थों की इच्छा जन लालच के वश करते
फिर लालच में फंस करके सब अपना मन माना करते
तब मन चाहा करते करते जन कामासक्त हो जाते हैं
फिर होकरके कामवशवर्त्ती सब आक्रान्त राग हो जाते हैं
तब गमनागमन और वाचावाच्य विचार हीन हो जाते हैं
फिर भक्ष्याभक्ष्य और दोषादोष विवेक शून्य हो जाते हैं
तब होते ही विचार रहित जनता जग बड़ा उपद्रव मचता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर होना अनहोना होकर अनहोना जचता है ॥
उस समय में वैदिक धर्म कर्म सारे ही लुप्त हो जाते हैं।
तब होनेसे वेद का ज्ञान लोप यज्ञादि बंद हो जाते हैं ॥
फिर होते ही समाप्त यज्ञयागादिक भयभीत देव हो जाते हैं।
तब दुखी देख एकत्र हो सब श्री ब्रह्माजी पर जाते हैं ॥
प्रत्यक्ष है चन्द्रतक जाने की इच्छा यूरोप के लोगोंकी।
मंगला तारे की खोज स्पष्ट करती है इच्छा भोगों की ॥
इत्यादिक बातें देख देख आखिर यह कहना पड़ता है।
"भीषम" उगने पर पंख चेंटा मरने को ऊपर उड़ता है ॥
इनके अतिरिक्त और भी है व्यवहारिक प्रमाण कुछ सतयुगके।
ज्यादा से ज्यादा दिखते हैं लक्षण समाप्ति के कलियुग के ॥

—परिवर्तन—

तब करते थे जो 'रामराम' अब 'जयहिन्द' उन्हीं का नारा है।
तब परतंत्र देश जो था अपना अब वह स्वतंत्र अरु न्यारा है ॥
तब आधा नाम जन लेते थे अब संग में 'जी' और लगाते हैं।
तब गायन में अति गुरुता थी अब बातें सी बतलाते हैं ॥
तब चतुर्भुजी परमेश्वर था अब विश्वरूप प्रभु सादर है।
तब कन-फूंका गुरु आदर था अब उनका खुला निरादर है ॥
तब प्रतिमा पूजन होता था अब आदर जनता जनार्दन है।
तब स्नान देहका होता था अब मन अरु बुद्धि का मार्जन है ॥
तब माला जप भजन कहाता था अब हरि भजन पेटका धंधा है।
तब मन ही अंधा होता था अब ब्रह्म जीव जग अंधा है ॥
तब कथन श्रवण में श्रद्धा थी अब बिन देखे विश्वास नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब प्रेत चुड़ैल और सैय्यद थे अब उनका उतना त्रास नहीं
तब ब्राह्मण शिक्षण करते थे अब वे ही दूषण करते
तब क्षत्रिय रक्षण करते थे अब वे ही भक्षण करते हैं
तब वैश्य जो पोषण करते थे अब वे ही शोषण करते हैं
तब शूद्र जो सेवन करते थे अब वे ही शासन करते हैं
तब विद्या दान जो देते थे अब वे ही रिश्वत लेते हैं
तब घूस पुलिस अरु कोर्ट में थी अब हरएक लेते देते हैं
तब ब्रह्मचर्यव्रत रखते थे अब कॉलिज संयम करते हैं
तब वर्जिशकुश्ती कसरत थी अब सायकल रेसेस करते हैं
तब भूखी दुनिया रहती थी अब ठकी ठकाई फिरती है
तब रोग से जनता मरती थी अब भोगोंसे न अफरती है
तब शहरों में ही तपेदिक थी अब गांवों में भी टी. बी. है
तब क्वांरे बहुत एक रहते थे अब कोई एक बिन बीवी है।
तब नरसे नारी डरती थी अब नारी से नर डरता है
तब पिता पुत्र का भर्ता था अब पुत्र पिता का भर्ता है
तब विद्यार्थी ही पिटते थे अब शिक्षक भी पीट जाते हैं
तब तापमें लंघन होते थे अब इन्जेक्शन लग जाते हैं
तब ऋतुमें ऋतुफल होता था अब हरदम हर फल होता है
तब अकाल ज्यादा होते थे अब बहुधा संवत होता है
तब घी से सब्जी बनती थी अब भाजी से घी बनता है
तब नारी बच्चा जनती थी अब सारी दुनियां 'जनता' है।
तब बैल से खेती होती थी अब ट्रैक्टर से हो जाती है
तब गड़सोंसे कुट्टी होती थी अब मशीन से हो जाती है
तब नाटक नौटंकी सर्कस थे अब सबका बाप सिनेमा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब पाचक चूरन चटनी थे अब बस्तिकर्म इनेमा है ॥
तब झूठा कोई एक होता था अब सच्चा कोई एक दिखता है ।
तब नाज था रुपये का मन भर अब सवासेर का बिकता है ॥
तब एक बार जो खाते थे अब कई बार वह खाते हैं ।
तब बार बार जो खाते थे अब वह अबार से खाते हैं ॥
तब घी चुपड़ी जो खाते थे अब सूखी को वोह ललाते हैं ।
तब पेट न जो भर पाते थे अब भरभर पेट वोह खाते हैं ॥
तब ऊंट घोड़े बैलगाड़ी थी अब मोटर सायकल फिटफिट हैं ।
तब अकसर पैदल चलते थे अब ऐसा करना खिटखिट है ॥
तब फोड़े पकाये जाते थे अब ऑपरेशन हो जाता है ।
तब निज की जननी माता थी अब सारा 'भारत-माता' है ॥
तब रुपये के चौसठ पैसे थे और चांदिका रुपया चलता था ।
अब रुपये के सौ पैसे हैं अरु सिक्का वह जो नहीं चलता था ॥
तब राजे राज्य चलाते थे अब रैय्यत रुआब दिखाते हैं ।
तब पुरुष ही पौरुष करते थे अब नर अरु नारी कमाते हैं ॥
तब बिजनिसमें भी 'सर्विस' थी अब सर्विसमें ही 'बिजनिस' है ।
तब कहकर नहीं पलटते थे अब ऐसा करना टेकटिक्स है ॥
तब दूध और घी खाते थे अब चाय डालडा पाते हैं ।
तब मेहनत करके खाते थे अब युक्ति से द्रव्य कमाते हैं ॥
तब पृथ्वी ही पर चलते थे अब आस्मान में उड़ते हैं ।
तब जो नीचे बैठा करते थे अब वह ऊपर बैठ अकड़ते हैं ॥
तब द्वेष अछूतसे होता था अब राग छूत में होता है ।
तब विवाह जाति में होता था अब अन्तर्जाति भी होता है ॥
तब साफे टोपी लगते थे अब सिर खोले ही रहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब लोक लाज का भय अति था अब आजादी से रहते।
तब योग्यता पर ही फैशन था अब फैशन पर ही योग्यता।
तब पुल रहित रेल स्टेशन था अब पुल सहित यहां स्टेशन।
तब 'प' कहकर सभी बुलाते थे अब 'श्रीमान्' बिन बात नहीं
तब बात बात में लड़ते थे अब होते वह उत्पात नहीं
तब तीर्थों में अति श्रद्धा थी अब उनमें वह विश्वास नहीं
तब पंडे संडे ठगते थे अब उनका है वह त्रास नहीं
तब तेंतिस कोटि देवता थे और बिन देखा परमेश्वर था
अब देवीजन प्रत्यक्ष देव अरु विश्वरूप विश्वेश्वर है
तब सद्गुरु कोई एक होता था अब अखिल विश्व गुरु दिखता
तब पुराण जो कहलाते थे अब उनका भी शुरू दिखता है
तब जो देह धर्म कहलाते थे अब वह ही ईश्वर भक्ति है
तब जो माया मोह कहाते थे अब वह ही आनन्द भक्ति है
तब अतिथि जीमते थे पहले अब पहले निज पेट की पूजा है
तब थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अब अछूत और सखुआ है
तब जाति पांति का भेद भी था अब तो समता का जमाना है
तब त्रेता द्वापर कलियुग था अब सतयुग का अफसाना है
तब अदब बड़े का होता था अब छोटा बड़ा समाना है
तब मूर्ख जिसे सब कहते थे अब जगमें वही सयाना है
तब ब्राह्मण हरिभक्त कहाते थे अब शूद्र जाति सब हरिजन है
तब सज्जन कोई एक होता था अब श्रीमान हरएक जन है
तब रामायण गीता महाभारत अतिरिक्त वेद के क्षेपक थे
पर छानबीन करनेवाला अब जैसा युग नहीं बेशक था
तब नर ही साधु बनते थे अब नारियां भी सधुआनी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब होती थी फौजदारी जितनी अब नहीं उतनी दीवानी है ॥
तब महिला सादी रहती थी अब उनकी अद्भुत वर्दी है ।
तब न्याय अन्यायका निर्णय था अब बिलकुल अंधेर गर्दी है ॥
तब जो जपतप यज्ञ कहाते थे अब वह सब दंभ कहाते हैं ।
तब जो दान पुण्य कहलाते थे अब वह पाखंड कहाते हैं ।
तब जो नवधा भक्ति कहाती थी अब वह सब गोरख धंधा है ।
तब जो वैराग्य कहाता था अब वह माया का फंदा है ॥
तब बल और वीर्य था लोगोंमें अब केवल बौद्धिक शक्ति है ।
तब कुछ श्रम अरु कुछ युक्ति थी अब चलती केवल उक्ति है ॥
तब जो राज्य व राजे थे पहले अब उनका नाम निशान नहीं ।
तब अपराध क्षमा नहीं होते थे अब दंडका रहा विधान नहीं ॥
तब धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष यह साधन चार थे तरने के ।
अब सायकल, सिनेमा, डालडा, चाय यह साधन हैं मरनेके ॥
तब जो विद्या बुद्धि द्विजों में थी अब शूद्रजाति में ज्यादा है ।
तब तनपर वस्त्र न जिनके थे अब फैशन उनमें ज्यादा है ॥
तब जो हीन कर्म शूद्रों में थे अब वह द्विजों में ज्यादा हैं ।
तब उत्थान था जिस द्विज जाति का अब पतन उसीका है ॥
तब पुत्र पिता की अर्थी लेकर गंगा को सब जाते थे ।
तब अब की तरहे औरोंके हाथ वह कभी नहीं भिजवाते थे ॥
तब ठाकुर जाति एकही थी अब सभी जातियां ठाकुर हैं ।
तब जो ठाकुर गिने न जाते थे अब वह भदौरिया ठाकुर हैं ॥
तब चातुर्वर्ण्य व्यवस्था थी, अब कुल अरु जाति व्यवस्था है ।
तब वैदिक कर्मकांड प्रिय थे अब मत पंथों में आस्था है ॥
तब सीमित सन्तानें होती थीं अब उनका रहा शुमार नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब आखेट सदा जो करते थे अब उनका वह अधिकार है
तब सस्ताई नहीं इतनी थी जितनी ज्यादा मँहगाई
तब शनाशाई नहीं इतनी थी अब जितनी ज्यादा रुसवाई
तब 'कवि सम्मेलन' होता था अब 'पंजाब सिंधू सम्मेलन'
तब पेट्रोल था ढाई रुपये का अब साढ़ेतीन का गैलन
तब मिश्रण होता संबधमें था अब मिश्रण हरएक चीजमें
तब मिश्रण नहीं घी अरु दूधमें था अब मिश्रण गोबर में
तब टैक्स बहुत कम लगते थे अब उनका है बाजार गर्म
तब भाई बन्दी चलती थी अब कोई किसीका है न सगा
तब अनपढ़ जनता ज्यादा थी अब पढ़े हुओं का पार नहीं
तब मॅट्रिक बी. ए अति कम थे अब उनका रहा शुमार नहीं
तब आदर मूछ और दाढ़िका था अब मुछ मुड़ियोंका जमाना है
तब टट्टी अरु संडास ही थे अब तो फ्लशका पाखाना है
तब जिनको बुरा बताते थे अब उनके ही अनुयायी हैं
तब कोचोंपर जो बैठते थे अब उनके नहीं चारपायी है
तब पुरोहित विवाह कराते थे अब "कोर्ट मैरिज" होती है
तब अपील की सुनवाई थी अब वह खारिज हो जाती है
तब भोली भाली जनता थी अब तो अति ही मक्कारी है
तब साहूकारी धंधे थे अब होती चोर बाजारी है
तब साहू ही व्याज चलाते थे अब साधु भी सूद कमाते हैं
तब साहू नालिशें करते थे अब कुरकी साधु कराते हैं
तब वस्त्र सिलाने पड़ते थे अब 'रेडिमेड' जमाना है
सब सिले सिलाये मिलते हैं मर्दाना और जनाना है
तब राष्ट्रयुद्ध का भय अति था अब पाठ शांतिका ज्यादा है
तब मशीन गनें अरु तोपें थी अब अणुबम का जमाना है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब युद्ध थे होते वर्षों तक अब पलका नहीं ठिकाना है ।।
तब राजपूत ही सैनिक थे अब विविध जातिके सैनिक हैं ।
तब दो चार ही दैनिक होते थे अब भांति भांतिके दैनिक हैं ।।
तब बांध-नगर-सड़कें कम थीं अब वोह काफी तादाद में है ।
तब विद्या, विद्युत, अति कम थे अब रेगिस्तान बगदादमें है ।।
तब आयुर्वैदिक चिकित्सा थी, अब एलोपैथिक ज्यादा है ।
तब यूनानी होम्योपैथी थी अब प्राकृतिक चिकित्सा ज्यादा है ।।
तब सुग्रीव एक था त्रेता में अब कली मित्रवर्ग सुग्रीव हैं सब ।
वह वायदा सिय खोज ही भूला था यह पिछली बातें भूले हैं सब ।।
तब आदर्श चाणक्य जो कहते थे अब वह चार्चिल बन बैठे हैं ।
तब थे प्रतीक जो मानव के अब वह दानव बन बैठे हैं ।।
तब रोटी चूल्हों पर होती थी अब होती है तंदूरोंपर ।
तब नजर थी मिलके मालिकोंपर अब है मिलके मजदूरों पर ।।
तब मिल मालिक कहलाते थे अब मिलमजदूर उन्हें भी होना है ।
तब जिस भावमें सोना बिकता था अब उसी भाव उसे होना है ।।
है राशि जो मिलके मालिकोंकी है वह ही मिल मजदूरों की ।
अनुभव है बारह वर्ष बाद फिरती है दिशा भी घूरों की ।।
तब जो बंगलों में रहनेवालों अरु बंगलों की निंदा करते थे ।
अब उनमें वह ही रहते हैं तब जो उनकी निंदा करते थे ।।
यह शंकरता- कर्म कुकर्मों की दिखती है युग परिवर्तन से ।
सुख होता है समदर्शन से दुख होता है समवर्तन से ।।
तब यह न दिखाई देता था अब जो हो करके रहना है ।
कलियुग समाप्त हो जाना है और निश्चय सतयुग रहना है ।।
जब जैसा था तब तैसा था कब कैसा हो अब ऐसा है ।
"भीषम" जिसका यह विश्वरूप वह तो जैसे का तैसा है ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सामाजिक कहानी)

ममता और उर्मी

लेखक
हरमन चौहान

—(कहनी)—

मंजुषा के हाथों में मेंहदी रचायी जा रही है। उसके हाथ आज श्वेत कमल से भी अधिक कमनीय सुन्दर लग रहे हैं। उसके सुन्दर गुलाब से चेहरे पर कुछ उदासी छायी लगती है। उसकी सखियां अठखेलियां करती उसे चिढ़ाने में तल्लीन हैं। घर में औरतें गीत गा रही हैं, बाहर बैण्ड-बाजों का शोरगुल है। चारों ओर लोग इधर-उधर आ जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। घर के द्वार पर शहनाई की ध्वनि, किन्तु उसके हृदय में ?? आज उसका विवाह है, विवाह की घड़ी में कौन ऐसा हतभागी होगा जिसे खुशी न हो? हां! सच-मुच, मंजुषा हतभागिनी लड़की थी। आज उसे जितनी खुशी होनी चाहिये थी, उससे दुगनी वह दुःख में डूबी हुई थी। काश! बेचारी को आज माँ जीवित होती!

उसे अच्छी तरह याद है—उसके एक बड़ा भाई था, उससे बड़ा प्रेम रखता था उसके माता-पिता भी उससे अगाध प्रेम रखते थे। घर में शान्ति थी, सुख था, धन-दौलत सभी कुछ था। घर में कमी थी तो बस एक बात की कि पिता का क्रोध बड़ा तीव्र था। छोटी सी गलती वे सहन नहीं कर सकते थे। प्रायः इसी कारण घर में अशान्ति हो उठती थी कभी कभी। धीमे धीमे पिता का स्वभाव और भी बिगड़ता गया। आये दिन कुछ न कुछ बात से घर में क्रोध छा जाता था। मां उसकी बहुत भली थी, जो कुछ भी उस पर अत्याचार होते, वह चुपचाप सह लेती थी। मंजुषा के लिये तो वह देवी थी।

उसका भाई १५ वर्ष की उम्र में मिलेट्री में भरती हो गया था। जब से वह भरती हुआ तब से कुछ इने-गिने पत्र ही (५६ अ. पी. ओ द्वारा) आते थे। अन्तिम पत्र में उसने अपना लैस नायक बनने का जिक्र किया था बेचारी मंजुषा ने तब से कितने ही पत्र अपने भाई को दे दिये किन्तु एक का भी उत्तर न आया। अभी हाल में जब चीनियों का आक्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण हुआ तब वह उपूसी में नेफा बौर्डर की सबसे आ... चौकी पर था। मंजुषा रात दिन देवी-देवताओं को ... रही अपने भैया के लिये। लड़ाई रुकी और उन्हीं दि... कोलम्बो प्रस्ताव चल रहे थे। उसे खबर मिली उसका ... राजेन्द्र ला पता है। उसे रात को नींद नहीं आती, दिन ... बेचैन रहती थी।

उसे अच्छी तरह याद है—जब वह छोटी थी, तब ... पिता घर में झगड़ा बहुत करते थे। उसके भैया को ... मारते थे। माता से जब देखा नहीं जाता तो वह बीच ... टोकती। पर उसके निर्दयी पिता उसकी माता को भी ... लग जाते। घर में वह किसी की बात नहीं मानते थे। उ... पिता ने उसे तो कभी कुछ नहीं कहा फिर भी उनके ल... से वह घृणा किया करती थी। वैसे वह उन्हें आदर दे... थी। उसकी उम्र आठ साल की थी तब एक दिन उसके भा... को खूब पीटा और उसी दिन उसका भाई घर छोड़ मि... में भरती हो गया। उसकी मां ने पुत्र के लिये हाय-तोबा ... तो उसे भी खूब पीटा गया। उस समय उसे किसी काम ... बाजार भेज दिया था। जब लौटी तो पड़ोसिन से उसे ... पता लग गया। पिता घर को ताला देकर कहीं चला ग... था। मां अन्दर गई, वह हकबका उठी। उसकी मां के मुं... में से खून गिर रहा था। जमीन पर औंधी पड़ी प्यास के मा... तड़प रही थी। शिर से भी खून बह रहा था मंजुषा ची... उठी। उसने अपनी मां की बहुत सेवा की, उसे वह जिला...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती थी। उस रात उसके पिता घर न लौटे। उसे उनकी भी चिन्ता थी। कहीं वे भी आत्मघात न कर बैठें? पता नहीं किसने उसके पिता की पुलिस में शिकायत कर दी। उन्हें पकड़ लिया गया मंजुषा को ज्ञात हुआ तो वह बहुत रोयी वह आखिर उसका पिता था। पिता के लिये कौन बुरा चाहता है? इधर सातवें दिन उसकी मां की मृत्यु हो गई। वह हतभागिनी थी तभी तो ऐसा हुआ था। वह अब अकेली रह गई। अब कौन उसका सहारा? वह कितनी दुःखी थी? उसके पिता पर अपनी स्त्री के खून करने का अभियोग लगा दिया गया। सरकारी वकील ने आखिर उसे १३ महिने बाद उम्र कैद की सजा दिला ही दी। अब तो मंजुषा अनाथ हो गई।

लेकिन उसका भाई? घर से वह भागा था, उसी दिन से वह छुट्टी भी न पा सका था। भाई को घर का हाल कुछ ज्ञात न था। वह भी अब इस चीनी-युद्ध में ला पता बना हुआ था।

उसकी एक विधवा चाची थी, जिसके कोई सन्तान न थी। वह शहर से दूर एक गांव में रहती थी। उसे जब पता लगा तो वह मंजुषा को अपने गांव ले गई। पीछे मकान को ताला लगा दिया गया।

* * * *

आज वह पूर्ण यौवना बन चुकी है। बहुत वर्षों बाद पुनः शहर में अपने पिता के मकान पर लौटी है। चाची ने भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके ब्याह का मुहूर्त यहीं का निकलवाया है। आज मे को पुरानी स्मृतियें खायी जा रही हैं। कभी इस घ आज की भांति चहल-पहल थी। कभी इसी तरह थी गीत गाती थीं। काश ! आज उसका भाई-पिता व मां होते बाहर शहनाइयां गूंज रही हैं। उसकी सखियें उससे खेलियां कर रही हैं किन्तु वह उन सब से छुप कर मन मन रो रही है। उसकी पुरानी स्मृतियोंका चिह्न बस यही मकान था। उसके अश्रु आंखों से बाहर छलकने आतुर हो रहे थे।

आज वह अपनी चाची द्वारा नीलाम कर दी गई है उसे पूरे ५०००) रु. में बेचा गया है। चाची ने उसे निदर्यता से पाला और आज उसका पशु की भांति कर बेच दिया। सच ! यह समाज ऐसी कुरीतियों को तोड़ नहीं चाहता ? समाज एक ढकोसला है, ऐसे समाज को आ लगा देनी चाहिये। उसने अपनी जिन्दगी में कितने दुख देखे थे ? बेचारी फिर भी मौन थी कि आज उसका नहीं था। पिता अब बूढ़ा हो चुका होगा। भाई का पता था, अभी पता नहीं चला था। उसका जी कर रहा था कि आज या तो वह दूर कहीं दूर भाग जाये या आत्मघात ले ताकि यह समाज उसे फिर कभी तंग न करे। हमेशा के लिये उसके तूफान थम जाये। वह अब तूफान उड़ना चाहती थी। अब उसे जीने से कोई लाभ न था।

लो ! उसके मेंहदी रचा दी गयी है। उसे अब पूर्णत दुल्हन सी सजा दी गयी है। मंडप सज कर तैयार है। उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी सखियां हाथ पकड़ कर मंडप की ओर ले जा रही हैं। उसकी आंखों से अश्रु टप-टप झरने लग गये हैं। वह यह ब्याह नहीं करना चाहती थी। बारात बाहर आ चुकी है, दुल्हा वो देखो मंडप में आ रहा है। अब फेरे फिरने को हैं।

तभी द्वार पर एक बूढ़ा दस्तक देता है। सब उसकी ओर देखते हैं तो वह कहता है–'शादी रोक दो! यह शादी कभी नहीं हो सकती। बेचना पाप है। मैं अपनी आंखों से इस तरह जुल्म नहीं देख सकता। रोक दो वर्ना पुलिस आने वाली है।' और बारात में हुल्लड़ मच गया। इसी बीच हुल्लड़ में मंजुषा घर से चुपचाप उस मंडप से निकल पड़ती है। वह भागती-भागती गंगा की पावन बहती धारा में बहना चाहती है तभी उसका भाई गंगा के उस पार आ पहुंचता है। वह जैसे ही गंगा की धारा में कूदती है, उसका भाई कूद कर उसे बचा लेता है। इतने में पीछे उसका पिता भी भागता भागता वहां आ पहुंचता है। इधर भाई चीनियों के चंगुल से तीसरी बार छोड़े गये सैनिकों में था, उसे छुट्टी मिल गई थी, इस कारण वह घर आ रहा था, उधर उसके पिता को जेलर की जान बचाने के कारण व सद्व्यवहार से उम्र-कैद माफ हो चुकी थी। संयोग था इसी कारण पुत्र-पुत्री व पिता एक ही स्थान पर मिले।

लेकिन मंजुषा अब जीना नहीं चाहती थी, वह समाज की दृष्टि में कलंकनी बन चुकी थी। वह एक बिकी हुई नारी थी, उसे भागना नहीं चाहिये था, बहुत बड़ा पाप किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने । इसी कारण वह गंगा की बहती धारा में कूद देखते देखते वह भंवर में जा पड़ी । भाई कूदा लेकिन भी असफल ही रहा । पीछे वह बूढ़ा भी कूद पड़ा । तीनों शव बहते-बहते प्रयाग के त्रिवेणी संगम में उनका भी हुआ । उस दिन गगा-मैया भी उनकी ममता पर रो प्रभु ने भी उनकी मृत्यु एक ही स्थान, एक ही घड़ी में थी । यह है एक परिवार की लघुकथा जो अपने आप हो गई ।

अपने घर पर ही सबसे नये मौडल की कार पर
एक सप्ताह में मोटर चलाना सीखें, ४३ वर्ष में
२५००० से अधिक प्रशिक्षित हुए,
सदा याद रखें

जंजीरा मोटर स्कूल

(भेंडी बजार बम्बई ३ शाखायें फोन : ७३

७, क्वीस रोड चर्नी रोड रेलवेस्टेशन के सामने फोन : २७४१५

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई ३.

ब्रोडवे सिनेमा के दादर मध्य रेलवे बम्बई १४

महिलायें निपुण महिलाओं द्वारा
शिक्षित की जाती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

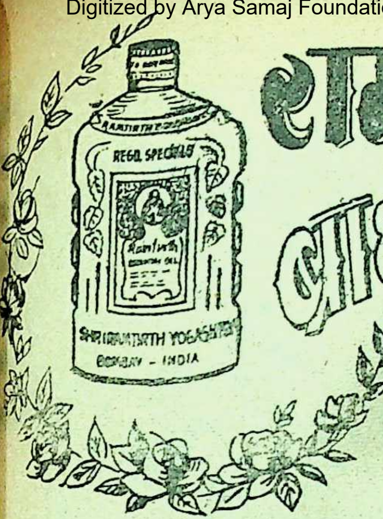

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल

स्पेशल नं. १

(रजिस्टर्ड)

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल [स्पेशल नं. १] का महत्व और लाभ

विगत २० वर्षों से यह तेल अनेक महत्व पूर्ण वनस्पतियों (जड़ी बूटियों) से निर्मित किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु (गर्मी के दिन) वर्षा ऋतु (बरसात के दिन) हेमन्त ऋतु (ठंडी के दिन) में स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयोगी रहे, ऐसी शास्त्रीय विधि से तैयार किया जाता है। रामतीर्थ ब्राह्मी तेल में वनौषधीय मधुर सुगंध होने से उपयोग करने वाली महिलायें तथा पुरुष वर्ग हमेशा के लिये इसे अपना लेते हैं, और अन्य लोगों को महत्व बताकर व्यवहार में लाने के लिए सलाह देते हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल युवक तथा वृद्धों के लिए ही उपयोगी नहीं अपितु छोटे से छोटे बच्चे तक के लिए लाभ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायी है ऊपरोक्त रेखाचित्र में माता अपने बच्चो के सिर रामतीर्थ ब्राह्मी तेल की मालिश करके सौन्दर्य, स्मरण वृद्धि तथा आंखों की दृष्टि अच्छी बनाए रखने के प्रयत्नशील है ।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल सिर के बालों के लिये ही है, किन्तु शरीर मालिश के लिये भी लाभ दायक आगे के रेखा चित्र में आप देख सकते हैं कि अपने हाथों से तैल मालिश कर सारे शारीरिक अवयवों नीरोग एवं सशक्त बना रहे हैं । प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान १० मिनट पहले सारे शरीर तथा सिर की तैल मालिश से २५ मिनिट तक अवश्य करें । ऊंचाई और आयु के हि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से शरीर का वजन कम होने से वजन बढ़ जायगा। अधिक वजन होने की हालत में आहार परिवर्तन के साथ २ रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का प्रयोग करने से आवश्यक परिमाण में रहेगा।

आप आगे के रेखाचित्र को सूक्ष्म दृष्टि से देखिये। हाथों को, पेट को तथा पीठ के ऊपर मालिश करने के सुलभ तरीके बताए गये हैं। अनेक महिलाओं तथा पुरुषों का विचार है कि अपने हाथों से तैल मालिश अच्छी प्रकार से नहीं कर सकते हैं। दूसरों से करानी पड़ेगी। यदि दूसरों से मालिश कराने की सुविधा होवे तो अवश्य करा सकते हैं। सुविधा न होने पर आलस्य, शंका, और शर्म को छोड़कर अपने हाथों से हर दिन मालिश करने की आदत डालें, किसी कारण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

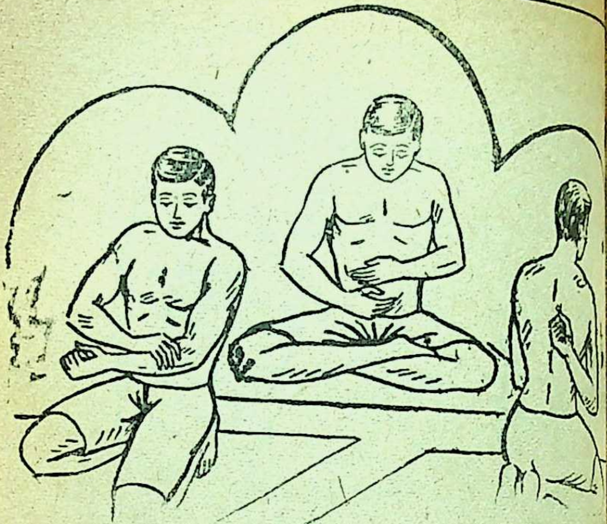

यदि हर रोज मालिश न हो सके तो सप्ताह में १ से २
रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य मालिश करें या करावें।

विशेष सूचना और लाभ

आपने ऊपर छपे सर्व रेखा चित्रों को देखकर यह स
लिया ही होगा कि रामतीर्थ ब्राह्मी तेल की मालिश से आप
वृद्ध-बालक, माता, (महिला) तथा पुरुष वर्ग कितने आरो
मय सुडौल शरीर वाले तथा आकर्षक मुख मुद्रा वाले
कितनी सुन्दर केशभूषा वाले हैं। इतना ही नहीं हा
अवयवों को हृष्ट-पुष्ट बनाने में सामर्थ्यवान बन गये हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के प्रयोग से गहरी नींद, स्मरण श
की वृद्धि, बाल काले, घने तथा लम्बे बनाने में अनुकूल है त
इससे बालों का झड़ना बन्द कर गंजा पन दूर करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायी है। कान में डालने से कान के सूक्ष्म अवयव नीरोग बने रहते हैं। ऐसे अनेकानेक महत्त्वपूर्ण लाभों की दृष्टि से ही वैद्यराज, डाक्टर, प्रख्यात विद्वान् वर्ग, राजनीतिज्ञ और अन्य प्रतिष्ठित वर्गों से रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के गुणों के विषय में स्वानुभव पूर्ण अनेक प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

छात्र वर्ग के लिये लाभदायक

ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी ऋषि--मुनि, साधु--सन्त, त्यागी--वैरागी उदासीन वृत्ति के लोगों को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अनेक प्रकार के लाभ अवश्य ही प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों के कारण से छात्र-छात्राओं, (सिक स्कूल, मिडिल स्कूल, हायस्कूल तथा कालेज के) को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य लाभ प्राप्त होगा। जैसे, आंखों की दृष्टि सतेज रहेगी। मस्तिष्क शान्त रहेगा। स्मरण शक्ति बढ़ जायेगी। शरीर मालिश से शरीर में स्फूर्ति बढ़ेगी, स्नायु संस्थान तथा रस ग्रन्थियों में शक्ति का संचार होगा।

वैसे तो त्वचा की कान्ति, रक्त परिभ्रमण के साथ २ स्वस्थ रहना, चर्मरोग निवारण, शारीरिक जोड़ों में बल, समस्त शरीर में समशीतोष्णता आदि अनेक लाभ सबको प्राप्त होता है। यदि आपने अभी तक रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का उपयोग कर लाभ नहीं लिया हो तो आज ही अपने शहर अथवा गांव के दवा बेचने वाले अथवा जनरल मर्चेन्ट से खरीद करें। दो साइजों में प्राप्त है।

न मिलने पर निम्न पते पर लिखें।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर और उसकी शक्ति

ले. भास्करानन्द शास्त्री
सिद्धान्तवाचस्पति, प्रभाकर

ईश्वर का अपना मुख्य निजी नाम 'ओ३म्' है जिस अर्थ है सबका रक्षा करनेवाला। और उस ईश्वर के जित भी नाम हैं वह गौणिक अर्थात् उसके गुणों के आधार पर हैं जैसे सबका अग्रणी नेता होने से उसका नाम अग्नि है पालनकर्ता होने से सबका पिता है, कल्याणकारी होने शिव है, सब में व्यापक होने से विष्णु है, ऐश्वर्यवान् हो से इन्द्र है, दुष्टों को रुलानेवाला होने से रुद्र है, वही ईश्व ईश होकर सर्वत्र बसा हुआ है, वही 'भूः' प्राणों का भी प्रा है, 'भुवः' दुःख का नाश करनेवाला है, 'स्वः' आनन्द स्वरू है, 'महः' सबसे महान है, दिव्य गुणों से युक्त होने से व 'देवी' है, विद्या का भण्डार होने से 'सरस्वती' है, सब प्रकाशक और प्रकाशों का भी प्रकाश होने से 'सूर्य' है सबको आह्लाद देनेवाला शांतिप्रदाता होने से 'चन्द्रमा' है इसी प्रकार उस ईश्वर के अनन्त नाम हैं। यजुर्वेद चालीसवें अध्याय में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन नि प्रकार से है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधा-
च्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ यजुर्वेद ४० । ८

वह ईश्वर सर्वत्र व्यापक, जगदुत्पादक, शरीर रहित, शारीरिक विकार रहित, नाड़ी और नस के भी बन्धन से रहित पवित्र, पाप से रहित, सूक्ष्मदर्शी, मननशील, सर्वोपरि-वर्तमान, स्वयं सिद्ध, अनादि, प्रजा (जीव) के लिये ठीक ठीक कर्मफल का विधान करता है। वही ईश्वर अपने वेदोक्त ज्ञान का जीवों को उपदेश करता है:—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥
यजुर्वेद ४० । २

हे मनुष्यो ! तुम निष्काम रूप से कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो। इस प्रकार तुम कर्म लिप्त नहीं होगे। इससे भिन्न पूर्ण आयु उपलब्ध करने का और कोई मार्ग नहीं है।

जब मनुष्य उस ब्रह्माण्डपति ईश्वर को जानकर उसके स्वरूप को समझकर यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा उसका साक्षात्कार कर उसका ही आश्रय ग्रहण कर लेता है तब उस मनुष्य के अन्दर इतनी अपार शक्ति, महान आत्मबल आजाता है और इतने ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है जिसका वर्णन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिन है। यहां इस बात से सम्बन्धित एक दृष्टान्त... उचित ही होगा यथा:—

एक ब्राह्मण देवता थे घर धन धान्य से पूर्ण सम्पन्न उनकी एक सीधी साध्वी पतिपरायणा स्त्री और ... की छोटी बच्ची थी। इनको किन्हीं विशेष प्रयोजन ... से बहुत दूर विदेश में जाने को हो गया। अपने घर का प्रबन्ध कर, अपने एक मित्र जो उसी नगर के एक बहुत सम्पत्तिशाली सेठ थे उनके पास गये और सेठजी से ... कि हे सेठजी! आप मेरे लड़कपन के साथी और मित्र मैं प्रयोजनवश यहां से कई वर्षों के लिये बाहर विदेश में ... रहा हूँ, मेरे पास यह सौ (१००) अशर्फी (सोने के सिक्के) हैं आप इनको अमानत (धरोहर) के तौरपर अपने पास ... लें, विदेश से लौटने पर जब मुझे आवश्यकता होगी ... समय आप से लूँगा। सेठजी भी उन सौ अशर्फियों को ... हुये ब्राह्मण देवता से बोले 'ब्राह्मण देवता! आप कुछ चिन्ता न करें, यह आपका ही घर है जब कभी भी आप... आवश्यकता होगी आपकी यह चीज आपको मिल जायेगी।'

ब्राह्मण देवता अपनी सौ अशर्फियों को सेठजी के ... अमानत रखकर, घर का भी सब सुप्रबन्धकर निश्चिन्त हो बाहर विदेश में चले गये। बाहर विदेश में रहकर कार्य करते हुये आहिस्ते आहिस्ते इनको चौदह वर्ष लग गये। चौदह वर्षों के पश्चात् अपने घर पुन: वापिस आये। पहले ब्राह्मण देवता खूब धन कमाते रहे लेकिन बादमें कुछ ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण बने जिनसे उनका सब कमाया हुआ धन नष्ट हो गया और खाली हाथ घर लौटे। घरकी भी निजी सम्पत्ति चौदह वर्षों में बहुत कुछ समाप्त हो गई थी। इनकी लड़की भी सोलह वर्ष की शादी करने योग्य हो गई।

ब्राह्मण देवता विचार किये कि चलें अपने मित्र सेठजी के पास से सौ अशर्फी जो अमानत के तौर पर रखे हैं ले आयें। यह सोचकर सेठजी के पास पहुँचे और सेठजी से बोले "सेठजी! आजसे चौदह वर्ष पूर्व जो मैंने आपके पास सौ अशर्फी रख छोड़ी थीं उसको अब इस समय मुझे देने का कष्ट करें। मुझको बड़ी ही आवश्यकता पड़ गई है। मेरी लड़की बड़ी हो गई है उसका विवाह करना है।"

सेठजी—(मनही मनमें सोचते हैं) इस ब्राह्मणने कुछ लिखा पढ़ी करके अशर्फियां तो दी नहीं हैं, न कोई गवाह ही है अगर मैं कह दूं कि आपने अशर्फियां कहां दी हैं, तो यह मेरा क्या कर सकेगा ? 'सेठजी लोभ में आकर प्रकट रूप में कहते हैं' ब्राह्मण देवता! आप भूल तो नहीं कर रहे हैं। आपने मुझे सौ अशर्फी (सोने के सिक्के) कहाँ, कब दिये ? किसी और को दिये होंगे। मुझको तो आपने कभी भी नहीं दिये।'

ब्राह्मण देवता—(आश्चर्य में पड़कर गिड़गिड़ाते हुये से) सेठजी ऐसा न कहें, मैं आज से चौदह वर्ष पूर्व आपको सौ अशर्फी अमानत के रूपमें रखने के लिये दे गया था सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दें। मैं बहुत ही कष्ट में आ गया हूँ देखिये मेरी लड़की बड़ी हो गई है उसकी शादी करनी है।

सेठजी—रोश और क्रोध में कड़कते हुये शब्दों से बोले ब्राह्मण देवता! आपकी बुद्धि में विकृति तो नहीं आ गई है आप जैसा दरिद्री ब्राह्मण भी कभी सौ अशर्फी भी रखने के लिये किसी को दे सकता है? जाओ, यहाँ से चले जाओ आपने मुझे कुछ भी नहीं दिया है। ऐसे ही झूठ बोलते यहां आ गये। अगर कोई प्रमाण है तो बताओ। कोई गवाह है तो ले आओ।

ब्राह्मण देवता—(घबड़ाकर मनही मन) यह मेरे परम मित्र सेठजी तो सफेद झूठ बोल रहे हैं, क्या करूँ कहाँ जाऊँ? प्रकट रूप में पुनः सेठजी से प्रार्थना करते हैं सेठजी! कृपा करें, मैंने तो आपके विश्वास पर ही दिया था, ईश्वर से कुछ भय खाओ। अगर न दोगे तो मेरा बहुत ही बुरा हाल होगा।

सेठजी—'नौकर को आवाज देते हैं, ऐ सेवक! इस ब्राह्मण देवता को यहाँ मेरे पास से दूर करो। झूठ मूठ की बकवास करने और मेरा सिर खाने यहाँ आ गये हैं।

नौकर ब्राह्मण देवता को सेठजी के पास से अलग करता है और कहता है—ऐ ब्राह्मण देवता! यहाँ से जाइये सेठजी आपपर नाराज हो रहे हैं।

ब्राह्मण देवता निराश और दुखी होकर सेठजी के पास से चले। एक बाग में पहुँचे एक छायादार बड़े के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृक्ष के नीचे बैठ गये। सोचते हैं, क्या करूं? कहाँ जाऊँ? कौन मेरा रक्षक है? इस कष्ट से कौन बचा सकता है? हे ईश्वर तुही सब का रक्षक, सब के जीवन का आधार, कष्टों से उबारने वाला और दयालु है मेरे इस कष्ट को दूर करो। उस महान दुःख में ईश्वर प्रार्थना करते हुये ब्राह्मण देवता का हृदय रो उठता है, आखों से अश्रुओं की धारा प्रवाहित हो उठी। यकायक इन के अन्दर एक विचार उत्पन्न होता है कि 'यहाँ के राजा के पास चलें, सब बातें उनसे कहें अगर बात बन गई तो अच्छा है, नहीं तो जो होना था वह होई गया है।'

ब्राह्मण देवता उस अपने नगर के अधिपति-राजा के पास पहुँचते हैं। यह राजा ब्राह्मण देवता को अच्छी प्रकार से जानता था। राजा की अवस्था ६० वर्ष के लगभग थी वह बड़े ही धर्मात्मा, दूरदर्शी, अनुभवी और न्याय करने में दक्ष थे। मनुष्य को एक बार देख कर ही पहचान लेते थे कि यह कैसा आदमी है?

ब्राह्मण देवताने अपना सारा कष्ट और सारी बातें राजा जी से कह डालीं और अन्त में निवेदन किया हे राजन्! आप बड़े ही धर्मात्मा, ईश्वर भक्त, न्यायप्रिय और दूरदर्शी हैं मेरे इस वर्तमान दुःख को अवश्य दूर करें। राजा महोदय भी ब्राह्मण देवता की सारी बातें ध्यान पूर्वक सुनकर बोले 'आज तो आप मेरे पास से अपने घर जाओ शान्त चित्त से ईश्वर का चिन्तन करो, कल मैं शाम को ४ बजे नगर निरी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षण के लिये निकलूँगा, मैं हाथी पर सवार रहूँगा, जब मेरा हाथी राजमार्ग से चलता हुआ उस सेठ की दुकान के सामने पहुँचे उस समय आप वहाँ पास में उपस्थित रहना जब मैं आप को देखकर इशारे से बुलाऊँगा तो शीघ्र ही पास आ जाना, इस बात का ध्यान रखना, अच्छा जाओ,' यह कह कर राजाने अपने पास से ब्राह्मण देवता को बिदा किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल नगर में डुगडुगी पिट गई कि 'आज राजाजी की सवारी निकलेगी शामको चार बजे नगर निरीक्षण करेंगे।' सारा नगर सजाया जाने लगा, खूब पानी का छिड़काव हुआ, उस दिन नगर की शोभा देखने योग्य ही थी। शामको ठीक ४ बजे राजाजी की सवारी बड़े धूम धाम से निकली, महाराजा अपने हाथी पर सवार हुये बाजे गाजे के साथ राजपथ से होते हुये उसी सेठ की दूकान के सामने पहुँचे। सेठजी और उसके सब नौकर चाकर भी वहाँ दूकान के सामने राजाजी के अभिवादन करने के लिये खड़े थे, सेठजी के मकान के बिलकुल पास ही एक वृक्ष के नीचे कुछ ऊँचाई पर ब्राह्मण देवता भी खड़े थे। राजाजी की दृष्टि ब्राह्मण देवता पर जा टिकी, राजाजी ने इशारे के साथ ब्राह्मण देवता को अपने पास बुलाया, वह शीघ्र ही राजाजी का हाथी के समीप आ गये। राजाजी ने अपने महावत से कहा हाथी को बैठाओ। महावतने हाथी को बैठा दिया। राजाजी बड़े ही स्नेह से प्रेम प्रकट करते हुये ब्राह्मण देवता के हाथ पकड़कर अपने पास बगल में ही हाथी के होदे में बैठा लिये। और महावत से बोले हाथी को खड़ा करो और शीघ्र ही ले चलो राजभवन को। राजा महोदय सम्पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर का निरीक्षण करते हुये १ घण्टे के पश्चात् अपने राज-भवन पर पहुँच गये राजा महोदय और ब्राह्मण देवता दोनों हाथी से उतर गये। राजाजीने ब्राह्मण देवता से कहा अच्छा अब घर जाओ कल शामको पुनः ४ बजे मेरे पास आइयेगा। वहां से वह अपने घर चले गये।

'दूसरे दिन प्रातः आठ बजे का समय'

कलकी सायंकाल की घटना से सेठजी बहुत घबड़ाकर सोचने लगे। ब्राह्मण देवता का सम्बन्ध राजाजी से घनिष्ट है, अगर इन्होंने १०० अशर्फियों की बात राजा महोदय से कहदी तो मैं कहीं का न रहूँगा। वह मुझको और मेरे दुकान को तोपों से उड़वाकर खत्म कर सकते हैं। मैंने बहुत ही बुरा किया जो जानबूझकर ब्राह्मण की अशर्फियों को हजम करने के लिये झूठ बोल बैठा।

'प्रकट रूप से नौकर से बोले'

सेवक! जाओ शीघ्र जाओ ब्राह्मण देवता को बड़े ही अनुनय विनय के साथ आदरपूर्वक मेरे पास ले आओ।

सेवक ब्राह्मण देवताको लेने उनके घर पर गया। इधर सेठजीने अपनी बैठक को अच्छी प्रकार से सजाकर ब्राह्मण देवता को एक उत्तम आसन पर बैठाने और फलफूलों से स्वागत करने का समुचित प्रबन्ध किया। जिस समय ब्राह्मण देवता उस सेवक के साथ सेठजी के पास आये, सेठजीने उठकर दोनों हाथ जोड़कर नम्रता पूर्वक प्रणाम किया, और उस उत्तम आसन पर उन्हें बैठाकर फल, फूलों से स्वागत करते हुये एक रेशमी कपड़े में सौ अशर्फियों को बांधकर उनको पेश कीं। और पुनः हाथ जोड़कर प्रार्थना करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुये बोले, हे ब्राह्मण देवता ! मुझसे बड़ी गलती हुई है बहुत बड़ा अपराध किया है उसे आप क्षमा करें। वेि मुनीम आपकी सौ अशर्फियों को बही खाते में लिख भूल गया, इसी कारण आपको बड़ा कष्ट हुआ है, अ मेरे अपराध को क्षमा करें और अपने इस अमानत की अशर्फियों को स्वीकार करें। इस बातको नगराधिपति से आप न कहियेगा यही मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है।

इस दृष्टान्त से हमें एक शिक्षा मिलती है कि न धिपति राजा एक छोटे से भूभाग का मालिक था उसके १ घण्टा हाथी पर बैठने के कारण ही ब्राह्मण देवता का धन जिसको सेठने हजमकर लिया था वापिस मिल लोगों में ब्राह्मण देवता की कीर्ति बढ़ी, लोग इनका मान लगे। अब आप सब पाठकगण इस पर विचार कीजिये ऐसे असंख्य राजाओं का भी महाराजा और सम्पूर्ण ब्र का स्वामी, सब सम्राटों का भी महान सम्राट है जो शक्ति और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का मालिक है ऐसे उस ईश्व पास जो प्रातः और सायं नित्य प्रति एक अथवा दो भक्ति भाव से युक्त होकर श्रद्धा के साथ बैठता है सानिध्य प्राप्त करता है उस व्यक्ति में कितनी महान आ सकती है, वह कितना ऐश्वर्य और धन प्राप्त कर स है, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। अतः ईश्वर और उसकी महान शक्ति को जानकर उसको ही करने का हमें इस जीवन में पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये हमारा यह मनुष्य जीवन सार्थक हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी गजानन्द की ख्याति चम्पापुर में बसते ही इस तरह फैल गई, जैसे मन्दिर के हलुवे की भीनी-भीनी महक मन्दिर की चारदिवारी को लांघ कर बाहर फैल जाती है। गजाधर से स्वामी गजानन्दजी महाराज बने अभी उन्हें कठिनता से साल-भर ही हुआ होगा, परन्तु लगते ऐसे थे कि जैसे जन्म से ही संसार-त्यागी ज्ञानी महात्मा हों। लोग टूटे पड़ते थे उनके दर्शनों के लिये। न जाने उनमें क्या आकर्षण-शक्ति थी कि स्त्रियां खिंची ही चली आती थीं, उनका तांता टूटना ही न चाहता था।

अपढ़-लोगों की यही रीति है। उनकी चाल भेड़ों की तरह होती है। एक जिधर चली, बिना सोचे-समझे सारी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की–सारी उसी का अनुकरण करने लग जाती हैं।

गजानन्द अपनी इस बढ़ती हुई प्रसिद्धि के कारण खुश थे। वह अपने को बड़ा भाग्यवान–प्राणी समझते क्योंकि बिना एक अक्षर का ज्ञान होते हुये भी वह वैराग्य के आडम्बर से लोगों को उल्लू बनाने में सफल रहे थे। स्वामी बनने से पहले तो जीविका की समस्या उन्हें बड़ा झकझोरा था। लेकिन, धन्य हैं वह गुरुदेव, जिन्होंने यह सरल और सीधा मार्ग दिखाकर उनकी जटिल-समस्या का समाधान कर दिया था। उन्हें पहले की तरह रोटी- की अब कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी। अब तो भी स्वामीजी के चरण चूमने में अपने को धन्य मानती थीं उनकी रोज की कमाई बढ़ते–बढ़ते अब दस--दस के नोटों को पार कर जाती थी। इसलिये स्वाभाविक ही उनकी तृष्णा भी बढ़ती जा रही थी। पर ऊपर से वह बिल्कुल निर्लिप्त थे। इसी निर्लिप्तता ने तो उनकी बढ़ोतरी की। लोग उन्हें पूजने लगे हैं, उनके वैराग्य के आगे झुके रहे हैं।!

* * * *

'स्वामीजी!' नमस्कार करने के बाद सत्तर वर्ष की वृद्धा अपना सिर ऊपर उठाते हुये समस्या से बोझिल वाणी में बोली।

स्वामी गजानन्द ने नेत्र मूंद लिये, जैसे कुछ सुना ही न हो। वृद्धा ने हलके-स्वर में एक-दो बार फिर पुकारा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं जाकर उनके स्वर फूटे, 'कहो, क्या कहना चाहती हो?'

'स्वामीजी! अपनी कुछ थोड़ी-सी थाती रखना चाहती हूँ।' वृद्धा ने विनय के स्वर में कहा।

'माई! साधु-महात्मा किसी की थातियां नहीं रखते। हम निर्लिप्त वैरागी हैं। हमें माया-मोह से क्या मतलब? धन बड़ी बुरी चीज है। जाओ, किसी सेठ-साहूकार के पास जाकर रखो। वहां तुम्हारी वस्तु सुरक्षित भी रहेगी।' यह कहकर गजानन्द पुनः ध्यानमग्न हो गये, जैसे इससे उन्हें कोई सरोकार ही न हो। उनकी पलकों के पट बन्द हो गये। पर, स्थिरता उनमें न थी। बीच-बीच में वह प्रतिक्रिया देखने के लिये झपक कर फड़फड़ा जाते थे, जैसे तीव्र-आंधी के वेग से भिड़े हुये किवाड़ परस्पर टकराने लगते हैं।

वृद्धा हताश नहीं हुई। स्वामीजी की इन बातों का उस पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने फिर प्रार्थना की, 'महाराज! दिल में बड़े दिनों से तीर्थयात्रा की साध बनी हुई है। गली-मुहल्ले की कुछ स्त्रियां जा रही हैं, सोचा कि मैं भी हो आऊँ। अब इस शरीर का क्या भरोसा, कब चला जाये। जल्दी ही वापस आ जाऊँगी।.......क्या करूँ, यह सम्पत्ति यदि पीछे छोड़ जाऊँ तो चोर-डाकुओं का डर है। और यदि साथ में ले जाऊँ तो इसकी रक्षा मुझ-बूढ़ी से नहीं हो सकेगी। आप इसे अमानत समझकर कुछ दिनों के लिये कृपापूर्वक अपने पास रख लीजिये। आपके पास यह सुरक्षित भी रहेगी। दूसरों पर मुझे विश्वास नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'माई ! कैसी भोली बातें करती हो। हम तुम्हारी कहां सम्भालते फिरेंगे। माया-मोह की अनित्यता को ही तो साधु मोक्ष-मार्ग की ओर प्रवृत्त होता है। संन्या जीवन में धन का क्या महत्त्व ! और फिर हमारी इस सी कुटिया में तुम्हारी अमानत कहां सुरक्षित रह सके बड़ी वैराग्यता से गजानन्द ने समझाया। अबतक वृद्धा उन पर अगाध-विश्वास जम चुका था। ऐसे सत्पात्र-कोई-कोई देखने में आते हैं ! वह उनके चरणों में रख कर फिर गिड़गिड़ाई, तब कहीं जाकर स्वामीजी दया आई और अनमने होकर उन्होंने वृद्धा से कहा, संन्यासी-लोग पैसे को हाथ नहीं लगाते। इससे धर्म होने का भय बना रहता है। कुटिया के उस कोने में धन गाड़ दो। जब आओगी, तो निकाल लेना। किसी को मत कहना, नहीं तो सारे ही हमारे पास थातियां के लिये दौड़ पड़ेंगे। इससे हमारी साधना में बाधा पड़े तुम्हें पाप लगेगा।' वाक्य को उन्होंने इस ढंग से पूर्ण कि जैसे वह लोकैषणा से घबराते हों और केवल तीर्थयात्रा नाम सुनकर पिघल गये हों।

वृद्धा ने तत्काल स्वामीजी के आदेश का पालन कि उसने अपनी सम्पत्ति कुटिया के एक कोने में गाड़ दी प्रणाम करके निश्चिन्त होकर चली गई। स्वामीजी यह कानी आंख से देखते रहे।

* * * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्टि का क्रम इसी प्रकार चलता रहा। बड़े दिन बीत गये।

द्वार पर किसी के आने की खड़खड़ाहट सुनकर गजानंद सचेत हो गये और ध्यानस्थ बैठ गये, जैसे स्थित्यानन्द में निमग्न हो गये हों। लाठी के सहारे एक वृद्धा ने कुटिया में प्रवेश किया और प्रणाम कर वह स्वामीजी के चरणों में बैठ गई।

'स्वामीजी! मैं तीर्थाटन से लौट आई हूँ। अपनी अमानत लेना चाहती हूँ।'

पर स्वामीजी की तन्द्रा भंग न हुई। वृद्धा ने अपने शब्द पुनः दुहराये। गजानन्द ने नेत्रों को खोलने की आवश्यकता न समझते हुये ही कहा, 'जहां तुमने अपनी वस्तु रक्खी थी, निकाल लो। मुझसे क्या पूछती हो। साधना में विघ्न डालने से पाप लगता है।'

वृद्धा सहम गई। उसे अपनी त्रुटिपर क्षोभ हुआ। चुपचाप अपनी धरोहर निकालने में वह लग गई। लेकिन काफी गढ्ढा खोदने पर भी उसे अंदर कुछ नजर न आया। वह घबराई, चकराई। गढ्ढा और गहरा खोदा। पर अन्दर कुछ होता तो, मिलता। उसने स्वामीजी से डरते-झिझकते पूछा तो वह बिगड़ उठे, 'हमने तुम्हें पहले ही बोला था, तुम नहीं मानीं। दिन में पचासों लोग यहां आते-जाते हैं। किसी का क्या पता? जहां रखा था, वहीं देखो। हम क्या करें?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुढ़िया ने हताश हो एक बार फिर गड्ढा टटोला, उसे अन्दर कुछ न मिला। निराश हो कमरे को कोठरी वापस लौट गई।

वृद्धा के जाने के बाद गजानन्द उठे और उन्होंने के बाहर एक-दो बार झांककर इधर-उधर देखा, फिर से किवाड़ लगा लिये। वृद्धा के रुपये उन्होंने कुटि दूसरे कोने में गाड़ दिये थे। जहां पास में उनके रुपये भी रखे रहते थे। उन्होंने उधर का गड्ढा खोदा, गिने और फूले हुये मन से उन्हें अपने रुपयों में मिला लि बाद में जगह वैसी की-वैसी कर दी।

* * * *

अपने रुपयों के चले जाने के गम से वृद्धा दुखिया लगी। थोड़े-बहुत जो रुपये उसने पहले खर्च के लि निकाल रखे थे, वह भी अब समाप्त होते जा रहे थे। चि से उसकी देह पानी में मिसरी की तरह गलती गई। अड़ो पड़ोस के हितैषी लोग बुढ़िया को दुःखका कारण पूछने लें लेकिन उसने किसी से कुछ नहीं कहा।

गली के कोने में ओमा नाम की एक चालाक स्त्री र थी। बुढ़िया का उसके घर में आना-जाना था। दोनों परस्पर प्रेम भी बड़ा घना था। तीर्थयात्रा से लौट कर वृद्धा कई दिनों तक उसके घर नहीं गई, तो ओमा को चि लगी। वह एक दिन वृद्धा के पास जा पहुँची। वृद्धा विचारों में डूबा देख उसे कुछ संदेह हुआ। उसने उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता का कारण पूछा। वृद्धा ओमा से कुछ न छिपा सकी। उसने अपने मनकी गांठ खोल दी। सब कुछ प्रकट कर दिया। सुन कर ओमा को बड़ा दुःख हुआ वह बड़ी देर तक कुछ सोचती रही। चलते समय उसने वृद्धा को आश्वासन दिया, 'बहन! तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारी धरोहर उस लोभी साधु से निकलवा कर ही छोड़ूंगी। तुम शाम को उधर आ जाना।'

* * * *

'महाराज! अपने पति के साथ आज मुझे कहीं बाहर जाना पड़ रहा है। मार्ग में बड़े बीहड़ व विकट बन पड़ेंगे। मेरे पास बहुत कीमती गहने हैं। उनकी रक्षा मार्ग में नहीं हो सकेगी, क्योंकि उधर चोर डाकुओं का बड़ा भय है। मैं उन्हें आपके पास रखने के लिये आई हूँ। आप से अधिक और कोई भी सुरक्षित स्थान नहीं। अनुग्रह करके इन्हें धरोहर के रूप में रख लें।' यह कहते हुये ओमा ने बड़े भक्ति-भाव से स्वामी गजानन्द के चरणों के पास अपने बहुमूल्य-आभूषणों की पोटली खोलकर रख दी। ढेर-सारे आभूषण झलक उठे। स्वामीजी की आंखें चुंधिया गईं। लालची-दृष्टि ने तनिक भी विलम्ब करना उचित न समझा। जितनी भी जल्दी हो सके वह उन्हें अपने स्वाधीन करना चाहते थे। बड़े ध्यान से वह उन्हें परखने लगे। उपदेश देना तो भूल ही गये।

ओमा ने छुपी नजरों से गजानन्द के भावों को ताड़ा। वह दत्तचित होकर आभूषणों को घूर रहे थे, जैसे अभी उन्हें निगल जायेंगे। काम बनता देख ओमा भी प्रसन्न हो उठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजानन्द ने तुरन्त अपनी त्रुटि को सुधार लिया। उन्होंने अपनी दृष्टि उधर से फेर ली, यह दिखाने के लिये कि संन्यासी की दृष्टि में इनका कोई महत्त्व नहीं। पर, वह इस मोटे-शिकार को खोना भी नहीं चाहते थे। उन्होंने सोचा कि कहीं अधिक वैराग्य-भाव दिखाया तो यह वापस ही न लौट जाये। तब तो बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा। संयत-वाणी में उन्होंने आदेश दिया, 'उधर उस कोने में अपने आभूषण गाड़ दो। जब वापस आओगी, निकाल ले जाना। यहां किसी प्रकार का भय नहीं।'

अभी स्वामी जी अपना वाक्य पूर्ण भी नहीं कर पाये थे कि वृद्धा ने कुटिया में प्रवेश किया। इस समय उसका आना गजानन्द को बड़ा अखरा। उन्होंने नाक-भौं सिकोड़ते हुए वृद्धा की ओर प्रश्न-वाचक दृष्टि से देखा। लेकिन वृद्धा तनिक भी विचलित न हुई, उसने आते ही झगड़ने के स्वर में अपनी धरोहर की मांग की। अब तो बेचारे स्वामीजी [illegible] चकराये। वह कुपित हो उठे। घूरकर उन्होंने वृद्धा को निहारा। बने-बनाये कार्य में विघ्न डालने वाली इस मनहूस शक्ल को जैसे वह खा ही जायेंगे। पर बाद में न जाने उनके चेहरे की रेखाएं अचानक कैसे बदल गईं। उन्होंने सोचा कि यदि इस बुढ़िया का धन मैं इस समय नहीं देता तो इतने कीमती आभूषण हाथ से निकल जायेंगे। अविश्वास के कारण यह स्त्री अपने आभूषण मेरे यहां नहीं रखेगी। वृद्धा का धन है ही कितना? थोड़े के पीछे इतने सारे माल को हाथ से निकलने नहीं देना चाहिये। उनका मस्तिष्क तेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से चलने लगा। इस स्थिति में उन्होंने वृद्धा का धन वापस दे देना ही उचित समझा। बड़े तटस्थ-भाव से स्पष्टीकरण करते हुये उन्होंने वृद्धा को कहा, 'माई! उधर उस कोने में तुम्हारी अमानत पड़ी है। निकाल लो। रखो उस कोने में थी, ढूंढ़ती इस कोने में हो। कैसी भोली हो। महात्माओं के पास से कोई चीज नहीं गुमती।'

ओमा ने अब तक आभूषणों की पोटली बांध ली थी। अपनी युक्ति की सफलता के कारण वह खुश थी।

वृद्धा ने स्वामीजी के आदेश का गति से पालन किया। उसके वृद्ध हाथों को लालसा ने जैसे बल दे दिया हो। स्वामीजी द्वारा बताई जगह खोदकर उसने एक बड़ी-सी पोटली निकाली। यह स्वामीजी के जीवन की सारी कमाई थी। वृद्धा ने अनुभव किया कि यह पोटली तो उसकी नहीं है। उसने स्वामीजी की ओर निहारा। वह बड़े ध्यान से ओमा के हाथों में पकड़ी आभूषणों की पोटली में दृष्टि गड़ाये बैठे थे। वृद्धा ने उनसे कुछ नहीं कहा और पोटली लेकर दरवाजे से निकल गई।

ओमा निश्चल खड़ी रही। उसने अपने चेहरे का कोई भाव नहीं बदलने दिया। वृद्धा के जाने पर उसने एक बार स्वामी गजानन्द की ओर देखा, फिर जिस कोने से वृद्धा अपना धन निकाल कर ले गई थी, उसी ओर वह बढ़ी। स्वामीजी अपलक उसे देख रहे थे। गड्ढे के पास पहुँच कर वह गजानन्द की ओर पीठ करके बैठ गई और बड़ी कुशलता से पोटली को अपने कपड़ों में छिपा लिया। स्वामीजी को दिखाने के लिये उसने गड्ढे में हाथ डाला, जैसे पोटली खन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुच उसमें रख रही हो। फिर उसने गड्ढा भर दिया, जमीन समतल कर दी।

स्त्री को उठकर वापस आता देख गजानन्द प्रसन्न हो उनके नेत्र मुद गये, जैसे सरोवर के किनारे बैठा किनारे की मछलियों को देखकर विरक्तता से नेत्र मूंद है। ओमा गजानन्द की इस प्रवीणता को देखकर मुस्कराई। नमस्कार करके वह चुपचाप निकल गई।

* * * *

स्त्री के जाने पर स्वामी गजानन्द ने जब गड्ढा खोदा उन्होंने सिर पीट लिया। आभूषणों के लालच में आकर अपनी अब तक की कमाई से भी हाथ धो बैठे थे। अपनी थाती के साथ उनकी भी सारी सम्पत्ति ले गई, ले गई। उस चालाक स्त्री ने भी धोखा दिया। एक आभू भी उसने नहीं रखा। वह वैसे ही चमका दे गई। लोगों जो धोखे में खाली गड्ढा खुदवाते थे, आज स्वयं उन्हें गड्ढा खुदवा कर ठेंगा दिखाया गया था।

* * * *

असत्पुरुष कषाय-वस्त्रों को धारण करके सरल- को तो लूटते ही हैं, साथ ही वे सत्पुरुषों एवं महान् महात्माओं के सत्पथ में विघ्न उपस्थित करते हैं। ऐसे व्यक्ति हमारे बीच समुपस्थित हैं, जो गजानन्द की इस चोले में स्वयं दुष्कृत्य करके समस्त धर्मज्ञ-महात्माओं को अपकीर्ति का पात्र बनाते हैं और स्वयं बच निकलते लोगों को योग्यायोग्य का विचार करके समाज से व्यक्तियों का बहिष्कार करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री तत्व रहस्य

लेखक
के. टी. विश्वनाथ
बी ए. सा. रत्न साहित्यालंकार

'न गायत्री परो मंत्रो' के अनुसार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि गायत्री सब मंत्रों में श्रेष्ठ है। गायत्री का स्थान मंत्रशास्त्र में सर्वोच्च है। इसी कारण उपनयन संस्कार के समय गायत्री मंत्र का ही उपदेश दिया जाता है। इसी मंत्र के उपदेश हो जाने पर ही ब्राह्मण वेदाध्ययन का अधिकारी होता है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि गायत्री सर्व फल प्रदायिनी, सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। गायत्री का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जप यों तो समस्त भारतभूमि में असंख्य लोग क… लेकिन उन्हें मंत्र सिद्धि प्राप्त नहीं होती। यदि … विषय में गम्भीर अध्ययन किया जाय तो ज्ञात हो… प्रत्येक मंत्र किसी न किसी महर्षि द्वारा … है। मंत्रशास्त्र के ग्रन्थों में मंत्रों को शाप युक्त तो … गया है लेकिन शापमुक्त होने का उपाय नहीं बतलाया … है। मंत्रों का कीलित होना स्वाभाविक ही है। दुर्गा… शती के पाठ के पहले 'कीलक,' का पाठ इसी उद्देश्य से … जाता है कि मंत्र शापमुक्त हो जाय। मंत्र 'कीलित' … हुये ? उन्हें शाप किसने दिया ? जिन मंत्रों की शक्ति से … संसार का विनाश हो सकता है,—नई सृष्टि का सृजन … सकता है ऐसे महामंत्रों को शाप कैसे मिला ?-दिया … किसने दिया ?-वास्तव में विचारणीय विषय है। कुछ … आज के दिन मंत्रों का जप करते हैं-किताबों को देख… और जब उन्हें मंत्र सिद्धि प्राप्त नहीं होती तो वे शास्त्र को … झूठा बतलाने लगते हैं। अब 'गायत्री' जैसे महामंत्र को … किसने दिया ? गायत्री मंत्र को शापमुक्त सुनकर … कुछ लोगों को आश्चर्य हो लेकिन आश्चर्य का … स्थान नहीं है-गायत्री अनुष्ठान प्रकाशन के निम्नलि… श्लोक से गायत्री का शाप मुक्त होना स्पष्ट है:—

> शाप युक्ता तु गायत्री, सफला न कदाचन।
> शाप मुक्ता तु गायत्री, भुक्ति मुक्ति फलप्रदा॥

अतः गायत्री शापयुक्त अवश्य है। गायत्री अन्य मंत्रों …

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपेक्ष…

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ ही नहीं बल्कि अति प्राचीन भी है सर्वप्रथम इस मंत्र को गौतम जी ने सिद्ध किया। ऐसा कहा जाता है कि वेदों को भी स्वर्ग से गौतम जी ने ही अवतरित किया। माता के अनुग्रह को प्राप्त करने हेतु उन्हें कठिन तपस्या करनी पड़ी। जब गौतम जी को 'माता' का साक्षात्कार हुआ तो वे प्रसन्न तो हुये ही साथ ही उन्हें क्रोध भी आया। उन्हें क्रोध देवी की परीक्षा पर आया अब गौतम ऋषि से महर्षि बन गये, केवल गायत्री के अनुग्रह से। लेकिन क्रोध मनुष्य का शत्रु है-उन्होंने क्रोध में आकर गायत्री मंत्र को ही शाप दे दिया कि वह अन्य किसी साधक को भी सिद्ध न हो। जैसे ही उनका क्रोध शान्त हुआ उन्हें पिछली बातें याद आयीं। उन्हें काफी पाश्चाताप हुआ। अब कर भी क्या सकते थे ? उन्होंने गायत्री के शाप विमोचन के लिये साधन भी बतलाया। उन्होंने एक मंत्र को स्वयं जन्म दिया और कहा कि गायत्री जप के पहले इस मंत्र का जप करके अंजलि में जल लेकर तीन बार अर्घ्य देना चाहिये।

गायत्री के अखण्ड उपासक ब्रह्मर्षि वसिष्ठ थे। गायत्री मंत्र पर उनका पूर्ण अधिकार था। उन्होंने भी गायत्री का साक्षात्कार घोर तपस्या से ही किया। वसिष्ठ जी ने भी गौतम जी की तरह गायत्री मंत्र को शाप दिया था। जिसके विमोचन के लिये भी मंत्र है। गायत्री के अनुग्रह से ही वसिष्ठ जी को ब्रह्मदण्ड प्राप्त हुआ था। उस दण्ड की शक्ति महान एवं अजेय थी।

एक बार राजा विश्वामित्र, अपने दल बल समेत वन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शिकार को निकले। शिकार करते करते शाम हो गई और उनके लिये राजधानी लौटना असंभव हो गया। पड़ाव डालने की सोच ही रहे थे कि एक सैनिक ने मर्यादा का पालन करते हुये कहा–'महाराज यहाँ से थोड़ी दूर पर महर्षि वशिष्ट का आश्रम है आज्ञा होतो वहीं चलकर विश्राम किया जाय।' सैनिक की बात सुनकर महाराज विश्वामित्र को हँसी आई–'क्या इतने आदमियों के लिये उनके आश्रम में स्थान है।' सैनिक ने कहा–'महाराज वे महर्षि हैं उनके लिये कोई भी कार्य असंम्भव नहीं है–आप एक बार चलकर स्वयं देखें तो सब कुछ मालूम हो जायगा।' महाराज कुछ सोचकर वशिष्ठ जी के आश्रम की ओर चल पड़े

महर्षि वशिष्ट के पास एक गाय 'कामधेनु' थी। यह उन्हें तपः प्रभाव से प्राप्त हुई थी। इस गायसे सब कुछ मांगने पर मिलता था। अर्थात् यह गाय याचक को सर्वस्व दे सकती थी। राजा विश्वामित्र को इस बात का पता नहीं था। विश्वामित्र को आश्रम में देखकर वशिष्ठ जी ने राजा का सम्मान किया। कामधेनु की कृपा से महाराज विश्वामित्र और उनके परिजनों को राजकीय स्वादिष्ट भोजन मिला और सभी के विश्राम करने के लिये पर्णशालायें भी अपने आप निर्मित हो गईं। दूसरे ही दिन उन्हें कामधेनु का चमत्कार मालूम पड़ गया। राजा विश्वामित्र वशिष्ठ जी से आखिर कामधेनु मांग ही बैठे।

उन्हें कामधेनु को देखकर ऐसा लगा कि इतने बड़े देश के राजा होते हुये भी उनके पास कुछ नहीं है। राजा की

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा सुनकर वशिष्ठ जी विनम्रता से बोले-'ये कामधेनु आश्रम की है। यह मेरी तपस्या का पुरस्कार है। यह मेरे आश्रम को छोड़कर अन्यत्र नहीं जायगी। विश्वामित्र तो क्रोधी स्वभाव के थे ही। क्रोध में दुर्वासा के बाद इन्हीं का नाम आता है। महर्षि की बातें सुनकर उनसे युद्ध करने के लिये उतारु हो गये। महर्षि ने कहा-मुझसे युद्ध मत करो नष्ट हो जाओगे।' अब विश्वामित्र ने अपने धनुष-बाणों, को संभाला वशिष्ठ जी ब्रह्मदण्ड को हाथ में लेकर ध्यानमग्न हो गये। राजा ने एक-एक करके सभी अस्त्रों का प्रयोग वशिष्ठ जी पर किया लेकिन सभी निष्फल गये। 'ब्रह्मदण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्रास्त्र भक्षकः'-(गायत्री कवच) ब्रह्मदण्ड से सभी अस्त्र शक्तिहीन हो गये। इस घटना के बाद विश्वामित्र राजधानी नहीं लौटे। वे वन की ओर तपस्या के लिये यह कहते हुये निकल पड़े-'क्षत्रिय तेजो बल धिक्-धिक्-ब्रह्म बलं महत्-महत्'-इस तरह गायत्री मंत्र की शक्ति का जितना भी वर्णन किया जाय थोड़ा है। जन्म से क्षत्रिय होकर भी विश्वामित्र 'गायत्री' के अलौकिक साधक थे और अन्त में ब्रह्मर्षि कहलाकर ही रहे ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने भी गायत्री को शाप दिया है। इन्हीं कारणों से गायत्री अनुष्ठान प्रकाशन में लिखा है कि जब तक गायत्री शाप युक्त है तब तक सिद्धि नहीं दे सकती। शाप मुक्त होने पर वह इहलोक में सुख और परलोक में मुक्ति प्रदान करती है।

शाप विमोचन के लिये जो मंत्र है वह वर्तमान समय में प्राप्त नहीं है। कुछ विद्वानों के पास इस का रहस्य अवश्य है लेकिन वे महानुभाव इसे प्रकाश में लाना ही नहीं चाहते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं भी इस रहस्य से काफी समय तक अनभिज्ञ था।

कुछ वर्ष पूर्व ही मुझे इस रहस्य का ज्ञान इसके साथ ही गायत्री मंत्र के सिद्ध न होने के कारण है। केवल मंत्र जप से ही सिद्धि प्राप्त नहीं 'गायत्री कवच पाठ' भी करना चाहिये। मूलमंत्र द्वारा मित रूप से मार्जन, तर्पण, हवन इत्यादि भी करना चा इस प्रकार यदि इन गूढ़ रहस्यों को बिना जाने ही का अनुष्ठान करें तो भी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। का गूढ़ रहस्य ग्रन्थों में नहीं होता-वह तो योग्य गुरु होता है। लेकिन आजकल विद्वान गुरु भी रहस्यों को बतलाते। उनके पास अगर कोई जाता है तो-'न च विश्वासाय'—कहते हुये टाल देते हैं। अर्थात् रहस्यों जानने के लिये विद्वान् गुरु की तलाश करनी चाहिये- सेवा करनी चाहिये और साथ ही परीक्षाओं में भी होना चाहिये। इन सब के बाद यदि भाग्य में रहा गुरुजी के अन्तर में प्रेरणा हुई तो कुछ रहस्यों का खुलता है। भारतवर्ष में परम्परानुसार छिपाने की चली आ रही है। रहस्यों को वे रहस्य ही रखना चाहते किसी भी विषय के गूढ़ एवं सूक्ष्म तत्वों को समाज के सम्मु रखना उनके लिये दुष्कर है। इसीलिये आज हमारे देश बहुत सी विद्यायें लुप्त हो गई हैं। लेकिन समय परिवर्तनशी हैं धीरे-धीरे विद्वान अपने कर्तव्यों को समझने लगे रहस्य की बातें प्रकाश में आरही हैं। इसमें कोई सन्देह है कि इस कार्य में 'रामतीर्थ' का सहयोग महान् प्रशंसनीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ का हृदय

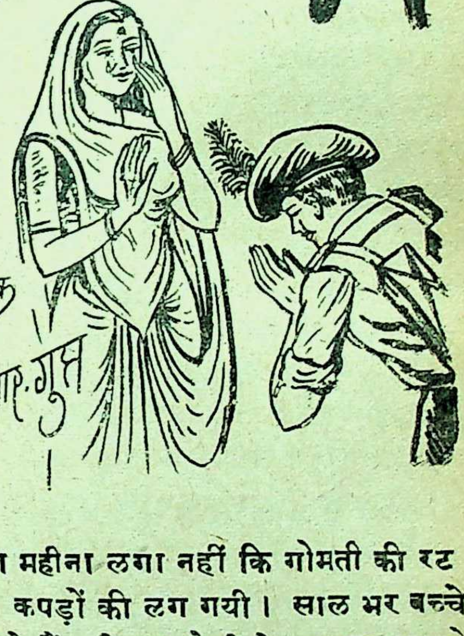

लेखक
एम. आर. गुप्त

फाल्गुन का महीना लगा नहीं कि गोमती की रट बच्चों के लिये, नये कपड़ों की लग गयी। साल भर बच्चे पुराने कपड़े पहन सकते हैं, किन्तु होली के अवसर पर तो उनके पास नये कपड़े होने ही चाहियें। नये कपड़ों के लिये हरप्रसाद को चाहे कर्ज भले लेना पड़े लेकिन गोमती अपने बच्चों को त्यौहार के दिन फटे कपड़ों में तो देख नहीं सकती। जबकि मुहल्ले के तमाम लड़के नये और रंग-बिरंगे कपड़े पहने हों, और उसके बच्चे उन्हें देख-देखकर अपने भाग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रोयें । गोमती अपनी साड़ी के लिये कभी जिद न करती। उसका यही कहना होता "मैं तो पुराने और फटे कपड़ों में भी गुजर कर सकती हूँ, लेकिन त्यौहार के दिन इन बच्चों को तो नहीं रुला सकती।" हरप्रसाद को, कोई न कोई जुगाड़ करके बच्चों के लिये कपड़े बनवाने ही पड़ते। और जब बच्चों के लिये नये कपड़े बने और वह भी होली के अवसर पर तो गोमती के लिये साड़ी का लाया जाना आवश्यक हो जाता। बच्चे नये कपड़े पहनें, स्त्री नई साड़ी पहने और स्वयं उनका जुगाड़ करनेवाला पुराने या फटे कपड़े पहने यह भला कैसे हो सकता था? गोमती उस समय तक साड़ी अपने तन पर नहीं रखती जबतक कि हरप्रसाद अपने लिये एक कुर्ते और धोती का प्रबन्ध न कर लेते। इस प्रकार बच्चों के बहाने गोमती और हरप्रसाद भी होली में नये हो जाते।

नये कपड़ों के साथ घर में कुछ पकवान और मिठाइयां भी तो होली के अवसर पर होनी चाहियें। साल भर बच्चे नमक-रोटी खाकर रह सकते हैं, लेकिन गोमती यह कैसे देख सकती कि उसके बच्चे होली के त्यौहार पर भी वही नमक-रोटी खायें या सूखी रोटियां चबायें। हरप्रसाद अगर कुछ नाकानी करते तो गोमती झट कह देती मैं भी तुम्हारे साथ मजदूरी के लिये चलूंगी। इसमें, क्या तुम्हारी नाक कटी जाती है? क्या औरतें मजदूरी नहीं करतीं? हरप्रसाद लाजवाब हो जाते और उन्हें कपड़ों के साथ बच्चों के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकवान तथा मिठाई का भी जुगाड़ करना ही पड़ता। हरप्रसाद अधिक मजदूरी करता, अधिक मेहनत करता लेकि उसने कभी औरत को हंसिया और खुर्पी नहीं पकड़ाई। हरप्रसाद गरीब भले था लेकिन उसकी रगों में अपने पुरखों का खून अब भी गरम था। उसके खानदान में तो कभी किसी औरत ने खेतों पर जाकर काम ही नहीं किया था फिर भला वह ही अपनी औरत को मजदूरी करने के लिये क्यों बाहर भेजता। अगर वह मजदूरी करता था तो यह मजबूरी थी क्योंकि जमीदार ने किसी न किसी बहाने से उसके सब खेत छीन लिये थे। महाजन का उस पर कर्ज हो गया था। परिवार का पेट तो पालना ही था। ऐसी हालत में वह मजदूरी न करता तो क्या करता? किन्तु हरप्रसाद ने भी कभी अच्छे दिन देखे थे। उसके भी कभी सुख के दिन थे। उसके खेतों में भी नौकर काम करते थे किन्तु यह मजबूरी ही तो थी जो जमीदार, महाजन तथा दैवी प्रकोपों के कारण उसे अब दूसरों की मजदूरी करनी पड़ती थी। पर गोमती को वह यही उत्तर देता "मेरे जीते जी तुम मजदूरी नहीं कर सकती। ऐसा दिन आने के पहले भगवान मेरी आंखें....। हरप्रसाद वाक्य भी पूरा नहीं कर पाता और गोमती बीच में ही बोल पड़ती "बस रहने भी दो। मेहनत-मजदूरी करके पेट भरना पाप नहीं है। चोरी करके पेट भरने को मैंने भी पाप सुना है, लेकिन मजदूरी करके पेट भरने को किसी को पाप कहते मैंने नहीं सुना।" हरप्रसाद इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे पाता। तर्क के लिये कोई तर्क वह प्रस्तुत न कर पाता। अपने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्कहीन पाकर वह गोमती की तरफ कुछ इस दृष्टि से देख
कि जिनमें तर्क के अतिरिक्त सब कुछ होता। फिर गो
कोई तर्क नहीं करती।

हरप्रसाद ने जीवन भर अपनी प्रतिज्ञा को निभाया, औ
औरत से उसने मजदूरी नहीं कराई। लेकिन उसके मरने
बाद गरीबी से लाचार होकर गोमती को हसिया तथा खु
ही नहीं पकड़नी पड़ी बल्कि उसे चक्की भी पीसनी पड़
और दूसरों के घर के जूठे बरतन भी साफ करने पड़े। गीता
व गिरधारी को वह पढ़ाना चाहते हुये भी आगे न पढ़ा
सकी। गिरधारी बड़ा होकर मां के काम में हाथ बटाने लगा
लेकिन भाग्य को न बंटा सका। गरीबी ने घर में आकर इस
तरह अड्डा जमाया कि उसने सरकने का नाम ही नहीं लिया।
दिन, महीने और वर्ष तेजी से जरूर सरकते गये। पेट भरने
की चिन्ता के साथ अब गोमती को गीता के हाथ पीले करने
की चिन्ता भी सताने लगी। लड़का भी जवान हो चुका था
उसके लिये वह एक अच्छी बहू भी लाना चाहती थी।
लेकिन उससे तो लक्ष्मी कुछ ऐसी कुढ़ी थी कि फिरकर घर
में आना ही नहीं चाहती है। गोमती ने हर दीवाली पर
लक्ष्मी का पूजन किया। सारे घर में दीप जलाये और सूप
पीट-पीट कर छछूंदर को भगाना चाहा, किन्तु वह न
आई। पूजा, अर्चना और शगुन कुछ काम न आये।
परिस्थितियों ने यहांतक विवश किया कि उसे अपने बेटे को
लाम पर भेजना पड़ा। उसने सोचा गिरधारी लाम पर जाकर
पैसा कमा कर भेजेगा तो वह उस पैसे को बचाकर पुत्री के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ पीले कर देगी और पुत्र के लिये कोई लड़की तलाश कर लेगी और उस समय शायद रूठी लक्ष्मी भी घर वापस आ जाय। इस प्रकार परिस्थितियों से विवश होकर उसे पुत्र का वियोग भी सहन करना पड़ा।

लाम पर पहुँच कर गिरधारी ने पहला वेतन मां को भेजते हुये लिखा "मां ! अब तू मजदूरी करना छोड़ दे। मैं तुझे इतना रुपया जरूर भेजता रहूँगा जिससे तुम दोनों की गुजर होती रहे। मेरी तू चिन्ता न कर। मैं बड़ी अच्छी तरह हूँ। भगवान ने चाहा तो फिर हम लोग अच्छे दिन देखेंगे। बस तेरा आशीर्वाद चाहिये।.......तेरा गिरधारी।

गिरधारी की मां के हाथ पर जब पहली बार डाकिये ने पचास रुपये के नोट रख दिये तब गोमती को ऐसा मालूम हुआ कि उसका गिरधारी सचमुच का गिरधारी है, जिसने दुःखों के पहाड़ को उठा लिया है। उन नोटों को पाकर वह निहाल हो गई। उसने न जाने कितने कल्पना के महल बना डाले। अब वह मजदूरी करना जरूर छोड़ देगी। वह इन्हीं रुपयों में से हर माह कुछ न कुछ बचाती रहेगी और फिर वह अपने गिरधारी के लिये किसी राधा का पाणिग्रहण करेगी तो गीता के लिये एक चांद सा दामाद खोजेगी।

गिरधारी ने फौज में अच्छी तरक्की की। वह जल्दी ही हवालदार हो गया। अब वह प्रति माह एक सौ रुपये का नोट मां को भेजने लगा। मां ने धीरे-धीरे दोनों की शादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये रुपया जोड़ लिया और महाजन के पास से १० बीघा भूमि पुनः प्राप्त कर ली जिसमें खेती कराने घर में एक गाय भी आ गयी। गोमती ने घर में पुनः दर्शन कर अपने भाग्य को सराहा और भगवान् को धन्य दिया। दिन सुख से अवश्य बीतने लगे किन्तु कुछ के साथ। चिन्ता थी पुत्री के हाथ पीले करने की और एक सुन्दर सी बहू लाने की। भगवान् ने उसकी यह भी शीघ्र ही दूर कर दी। लड़की के लिये एक अच्छा दामाद मिल गया तो लड़के के लिये एक अच्छी सी बहू मिल गयी, क्योंकि गोमती की गिनती अब गांव के खाने वाले आदमियों में होने लगी थी। लोग कहते "जब का लड़का फौज में नौकरी कर रहा है तो उसे कमी बात की। अब उसके घर में क्या नहीं है? जिसके पास में गाय हो, और घर की खेती हो वह गरीब क्यों! के पास जब लोगों ने चार पैसे देखे तो उसकी लड़की के लिये और अपनी लड़की देने के लिये भी तैयार हो चारों तरफ से रिश्ते आने लगे। गोमती ने दामावत के एक कमाऊ लड़के का चुनाव किया। गिरधारी को छुट्टी घर बुलाया और फिर गीता का धूम-धाम से विवाह दिया गया। गीता जब ससुराल चली गयी और गिरधारी वापस नौकरी पर चला गया तो वह घर सूना-सूना सा आने लगा। उसने बहुत कोशिश की थी कि लगे हाथ गिरधारी की भी शादी कर डाले, किन्तु इसके लिये उसे दिन और रुकना पड़ता जो उसके बस की बात नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुट्टी बढ़ाने की अभी कोशिश में ही था कि फौज के अफसर का तार आया "फौरन चले आओ, छुट्टियां कैंसिल। मां की उमंगों पर पानी पड़ गया। बहू आते-आते रुक गयी।

गोमती गिरधारी के पत्र की बड़ी अधीरता से प्रतीक्षा करने लगी। रोज ही डाकिये से पूछती "मेरे गिरधारी की कोई चिट्ठी है ?" डाकिया जवाब देता "मां! गिरधारी का जब पत्र आवेगा तो मैं उसे सबसे पहले तुम्हारे पास पहुँचाऊँगा। मैं आपके बेटे का पत्र भला अपने पास क्यों रोक लूँगा ? डाकिया के इस उत्तर से गोमती को शान्त हो जाना पड़ता किन्तु केवल ऊपर ही ऊपर, क्योंकि इस उत्तर से उसके हृदय को शान्ति नहीं मिलती थी। उसे कभी-कभी डाकिये पर रोष भी आ जाता कि वह सबकी तो चिठ्ठियां लाता है, लेकिन उसके बेटे की चिट्ठी क्यों नहीं लाता है। किन्तु यह रोष अव्यक्त ही रहता।

एक दिन फिर ऐसा आया कि डाकिया सचमुच ही गिरधारी की चिठ्ठी ले आया। उसने दूर ही से गोमती को पुकारा "मां जी यह लीजिये अपने बेटे की चिठ्ठी।" गोमती ने चिठ्ठी लेकर पहले उसे अपने हृदय से लगाया और फिर उसे सावधानी से खोलकर पढ़ा "मेरी पूजनीय माताजी तू मेरे लिये जरूर बेचैन हो रही होगी। मैं तुझे शीघ्र पत्र नहीं डाल सका, उसका कारण यह था कि मुझे यहां पहुँचने पर फौरन ही नेफा लड़ाई पर भेज दिया गया। इस समय चीनियों के साथ हमारी भयंकर लड़ाई हो रही है। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमपर बहुत जोरों का हमला बोल दिया है और वह भी अचानक। लेकिन फिर भी हम उनके दांत खट्टे कर रहे हैं। हमें अपनी जीत की पूरी आशा है। मां तू चिन्ता न कर मैं तेरे आशीर्वाद से समर-भूमि से विजयी होकर ही लौटूंगा। थोड़े दिन के लिये तू बहू का मोह भी भूल जा। तेरे खर्चे के लिये मैं रुपये भेज रहा हूं। मेरे पत्रों के पहुँचने में देरी हो सकती है क्योंकि इस समय तो आराम हराम हो गया है।

एक बात तुझे और लिख दूँ। देख मां! यदि मुझे कुछ हो भी जाय तब भी तुझे दुःख नहीं करना चाहिये और यह इसलिये कि तेरे पुत्र ने अपने कर्तव्य का पालन किया है और उसने उस मां के चरणों में अपना शीष चढ़ा दिया है जो तेरी भी मां है—तेरी ही नहीं वह तो हर भारतवासी की मां है। परन्तु ऐसा कुछ होनेवाला नहीं है। मेरा ऐसा मन कहता है कि मैं शीघ्र ही तेरे दर्शन करूँगा। तू थोड़ा धीरज धर मेरी मां। मेरी अच्छी मां।

तेरे चरणों का सेवक
गिरधारी।

गोमती ने इस पत्र को बार–बार पढ़ा। उसके हृदय में तूफान उठने लगा। उसकी आंखों से बरसा होने लगी। उसके सामने अंधेरा छा गया। अपने बेटे की कुशलता के लिये मन्दिरों की खाक छानने लगी। पंडित और ज्योतिषियों की मिन्नतें करने लगी। देवताओं की उपासना और प्रार्थना में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने दिन बिताने लगी। इधर जब गिरधारी की कुशलता का पत्र आना बन्द हो गया तो उसकी चिन्ता और अधिक बढ़ गयी। चार महीने में गोमती ४० वर्ष के स्थान पर ६० वर्ष की बुढ़िया बन गयी। घर की सारी चहल-पहल जाती रही और चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा गया। इस अंधेरे ने उसके चांद को छिपा लिया। उसकी आशाओं पर पर्दा ढक दिया। अनेक प्रकार की कुभावनाएँ तथा शंकाएँ उसके सरल हृदय में आकर मंथन करने लगीं। पुत्र के आश्वासन उसे आश्वस्त न कर सके।

गांव में चारों तरफ लिपाई, पुताई तथा घरों की सफाई हो रही थी। माता-पिता अपने बच्चों के लिये नये-नये कपड़े बनवा रहे थे। पूड़ी-पकवान तथा मिठाइयों के प्रबन्ध होने लगे थे। होली के स्वागत के लिये जैसे सभी व्यस्त और व्यग्र हों किन्तु गोमती किसके लिये अब साज सजाये और होली मनाये। उसका तो किसी काम में जी ही नहीं लगता था। उसे अपने तन की भी खबर नहीं थी। उसके लिये होली वरदान बन कर नहीं बल्कि अभिशाप बनकर आ रही थी। गांव के सारे घरों में जब हर्षोल्लास छाया हुआ था, उस समय गोमती मां के घर उदासी छाई थी। होली के ठीक एक दिन पहले डाकिया आकर एक लिफाफा गोमती को पकड़ा गया। गोमती ने उसे बड़े डरते-डरते कांपते हाथों से खोला। लड़ाई की खबरें सुनकर गोमती का मन बड़ा आशंकित हो उठा था। और दिन पत्र आते वह उसे दौड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेती और खुशी से खोलती किन्तु आज उसे ऐसा लग रहा था कि वह लिफाफा नहीं बल्कि वह कोई दुःखों की गठरी खोल रही हो। पढ़ने के पूर्व आंसुओं ने उस पत्र को भिगो दिया। अभी दो ही पंक्तियां पढ़ी थीं कि गोमती की आंखों में, चमक और ओठों पर प्रफुल्लता नृत्य करने लगी। उसने पत्र को पहले अपने हृदय से लगाया फिर उसका चुम्बन लिया। कल उसका बेटा ठीक होली के दिन रामू अपनी बहिन को भी साथ लेकर आ रहा है। यह समाचार पढ़कर वह खुशी से नाचने लगी। घर की सारी उदासी और मुर्दनी पलभर में दूर हो गई। गोमती भूल चुकी थी। होली उसके लिये अभिशाप बनकर नहीं बल्कि वरदान बनकर आ रही थी। दूसरे दिन बहिन भाई का जब आगमन हुआ तो गोमती ने गिरधारी को प्रेम विह्वल होकर अपने अंक में ऐसे भर लिया जैसे कि वह अनेक वर्षों के पश्चात लौटा हो। उसकी सारी ममता उमड़ कर उसकी आंखों में आ गयी वह अपनी जबान से केवल इतना ही कह सकी "मेरा बेटा।"

आगे बोलने के लिये उसकी जुबान गूंगी हो गयी लेकिन उसकी आंखों से टप-टप कर गिरनेवाले आंसुओं को जुबान मिल गयी। उसका हर आंसू एक दर्द बन गया, एक कहानी बन गया। अब गोमती आंसुओं की भाषामें बोल रही थी और गिरधारी उस भाषा को बड़ी अच्छी तरह समझ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नटराज शिव

ले० ओ३म् प्रकाश शर्मा

वन्दे सुराणां च सुरेशं नीललोहितम् ।
योगीश्वरं बीजं योगिनां च गुरोर्गुरुम् ॥
हिमचन्दनकुन्देन्दुमदाम्भोज संनिभम् ।
ब्रह्मज्योति स्वरूपं च भक्तानुग्रह विग्रहम् ॥
जगद्गुरो नमस्तुभ्यभ् शिवाय शिवदाय च ।
योगीन्द्राणां च योगीन्द्र गुरुणां गुरवे नमः ॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदाबसन्तंहृदयारविंदं भवंभवानी सहितं नमामि ॥

भारतवर्ष के उत्तर में स्थित हिमालय नाम नगाधिराज सदा ही देवताओं और सिद्ध मुनियों का क्रीड़ास्थल रहा है। इसी के अङ्क में विराजमान धवल हिमराशि से शोभित कैलास पर्वत पर ही आदि देव महेश भवानी सहित सदा ही रमण करते हैं। सदा ही जिनकी जटाओं में संसारानन्द-दायिनी गंगा कल-कल छल-छल कर बह रही है। जिनके कपाल पर श्री निशिनाथ शोभित हैं, ऐसे चन्द्र चूड़ भगवान् शिव सदा ही विश्व कल्याण में निरत हैं। श्री भगवान चन्द्र शेखर भक्तों से सदा बन्दित हैं। यों तो प्रायः भारतवासी सभी देवी-देवताओं की वन्दना करते हैं, परन्तु सभी के हृदय में भगवान् शंकर के प्रति विशिष्ट श्रद्धा और प्रेम है। श्री शूलपाणि भगवान् शिव सदा ही त्रिशूल धारण किये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तों की रक्षा करते हैं। समस्त ब्रह्माण्ड उनके उपर कृतकृत्य है। हमारे सदाशिव सभी देवों से बड़े विचि... उनके गुणों का गान करने में शारदा भी कुन्द बुद्धि है। उनके गुणों की महिमा उनके नाम वैषमता से ही होती है। नाम शिव अर्थात् कल्याणकारी और वेष ... दिगम्बर कपाली और भुजङ्गाभूषण धारी। फिर भी ... ने उनके मस्तक में अपना वास चाहा, गंगा ने भी ... जटाओं को ही अपना क्रीड़ास्थल बनाया। अखिल ... जिनकी कीर्ति का गुणगान कर रहा है। सारा भारत ... से लेकर दक्षिण तक शिव लिङ्गों से आच्छादित है। ग्राम में साँझ सबेरे शिवालयों में घंटा ध्वनि सुनाई ... है, जिसे सुनकर मन मयूर नाच उठता है, शमशान ... भक्तभयहारी भगवान् शिव की एक झलक आँखों में ... उठती है, हृदय मंदिर में सुन्दर चित्र अंकित हो जाता ... ऐसा क्यों? इसका कारण क्या है? इस बात को क्या ... सोचा? अब हम आज उनके क्रीड़ा कलापों पर विहंगम ... से सिंहावलोकन करेंगे। ताकि इस बात की जानकारी ... जासके कि उनमें क्या ऐसी विशेषतायें थीं जिनके ... उनके लिये सभी देवताओं से अधिक महत्वपूर्ण स्थान ...

संक्षेप में क्रमशः उनकी कुछ चारित्रिक विशेषताओं ... विचार विमर्ष करेंगे।

१–मर्यादा पुरुषोत्तम शिव

सर्व प्रथम हम यह विचार करेंगे कि भगवान् शिव ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय में मर्यादा के लिये कितना स्थान था ? इस बात की सत्यता के लिये हम एक प्रसंग का विवेचन करते हैं, जिससे उपरोक्त कथन की यथार्थता प्रकट हो जायगी।

'श्री भगवान् शिव कुछ काल अगस्तमुनि के आश्रम में वास कर पुनः हृदय में श्री भगवान् रामचन्द्रजी के स्वरूप का चिन्तन करते हुये सती जी के साथ आनन्द मग्न कैलास पर्वत के लिये जा रहे हैं। मार्ग में सीतान्वेषण तत्परौ, पथिगतौ श्री राम लक्ष्मण को देखकर भाव विभोर हो, अश्रुमोचन करते हुये प्रणाम करने लगे। यह देखकर सतीजी को बड़ा विस्मय हुआ और कहने लगीं 'हे प्राण वल्लभ जगदीश आपने संसारी मानवों की भाँति स्त्री वियोग से व्यथित राजपुत्रों को सच्चिदानन्द कहकर प्रणाम किया।' इस पर भगवान् शिवने सती को अच्छी तरह समझाया परन्तु सती जी की शंका दूर नहीं हुई। तब भगवान शिव बोले कि हे सती जी आपको प्रतीति नहीं होती तो जाकर परीक्षा ले आवो। तब सती परीक्षा के हेतु भगवान् राम के पास आई और सीता जी का वेष धारण कर सन्मुख हो निकलीं। कपट वेष सती को देखकर श्री रामचन्द्रजी ने पिता सहित नाम लेकर प्रणाम किया और पूछा हे सती जी आप वृष केतु को छोड़कर अकेली वन में क्यों घूम रही हो यह सुन सती जी जब लौटने लगीं तो श्री राम ने अपना प्रभाव दिखाया और सती जी चारों ओर अनेकों ब्रह्मा, विष्णु, महेश देखने लगीं। सती जी बड़ी दुःखी हुई और सोच विचार करती हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् शिव के समीप आई और झूठ बोलकर कह दिया मैंने काई परीक्षा नहीं ली आपकी भाँति ही प्रणाम करके चली आई हूँ। 'जब शंकर भगवान् ने समाधि में ध्यान करके देखा—

सती कीन्ह सीता कर वेषा।
शिव उर भयेऊ विषाद विशेषा॥
जो अब करुऊं सती सन प्रीती।
मिटइ भगति पथ होय अनीती॥

भगवान् शिव सीता को माता रूप में देखते थे। अब केवल माता का एक बार रूप मात्र धारण करने से ही—

एहितन सतिहि भेटि मोहि नाहीं।
शिव संकल्प कीन्हमन मांही॥

इस प्रसंग का स्मरण होते ही रोमांच होता है। धन्य श्री भगवान् शिव, आपके बिना ऐसी कठोर मर्यादा की रक्षा भी कौन कर सकता है?

अस पन तुम्ह बिन करइ को आना।
राम भगत समरथ भगवाना॥

अब हम सभी अपने हृदय में विचार कर सोच सकते हैं। भगवान शिव मर्यादा को कितना महत्त्व देते थे। विश्व में ऐसा सर्वोत्कृष्ट बेजोड़ आदर्श अन्यत्र दुर्लभ है। भगवान् शिव का यह मर्यादा प्रेम युग युगान्तरों तक हमारे लिये मार्ग प्रदर्शन करता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२–योगी शिव

अखिल विश्व के कर्णधार श्री भगवान् शंकर ही तन्त्र मन्त्र और योगशास्त्र के प्रवर्तक हैं। भगवान् शिव ने ही साबर तन्त्र, शिव–स्वरोदय, शिव–संहिता आदि का सृजन कर संसार का महान् उपकार किया। भगवान् शिव ही महान् योगी रूप से हमारे समक्ष प्रस्तुत हुये। उन्होंने विश्व के लिये आदर्श उपस्थित कर दिया कि योग–मार्ग का अवलम्ब कर प्रचण्ड कामदेव पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। भगवान् शंकर समाधि लगाये हुये हैं और देवराज इन्द्र उनके मन में क्षोभ उत्पन्न करने के लिये कामदेव को उद्यत कर रहा है। परन्तु योगी–शिव की महिमा जिसे विचार कर कामदेव भी कहता है—

"सुरन्ह कही निज विपति सब, सुन मन कीन्ह विचार।
संभु विरोध न कुशल मोहि, विहस कहेऊ असमार ॥"

परन्तु फिर भी मित्रकी कार्य साधना के लिये कामदेव साहस करके तैयार हो जाता है, और भगवान् शिव के समीप आया। परन्तु—रुद्रहि देख मदन भय माना।
दुराधरष दुर्गम भगवाना ॥

जिस कामदेव ने समस्त चराचर को वशीभूत कर रक्खा है, वही योग समाधि तल्लीन शिव को देखकर धीरज त्याग रहा है, और

सकल कला करि कोटिविधि हारेऊ सेन समेत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली न अचल समाधि शिव, कोपेऊ हृदय निकेत
छोड़े विषम विषिख उर लागे। छूट समाधि संभु तब

जागते ही भगवान् योगिराज शिवने क्रोध कर तृतीय खोला और योगाग्नि में भस्म कर दिया"। अब विचार जा सकता है कि भगवान् शिव ने केवल योग के बल कामदेव को भस्मी भूत कर दिया था। इस प्रकार शिव ने स्वयं योग का अनुसरण किया और विश्व के भी सुमार्ग प्रतिपादित किया।

३–आशुतोष–शिव

योग मार्ग का अवलम्बन कर भगवान् शिव ने कठिन क्रोध का ही वरण किया हो, ऐसी बात नहीं। भगवान् शिव ही विश्व में आशुतोष कहलाये। हमारे ही विश्व में विचित्रता के निधान हैं। शिव को छोड़कर विरोधी गुणों का निवास एक स्थान पर अन्यत्र भगवान् शिव के पास ही इस विचित्र वैषम्यता का सामञ्जस्य मिलेगा। कहाँ तो काम को भस्म करने कराल प्रलयंकारी क्रोध कहाँ आशुतोष शिव देखिये–काम भस्म हो चुका है, ऋषि मुनि प्रसन्न हैं और देवता दुखी रहे हैं।

इधर जब रति अपने पति का मरण सुनती है, तो विलाप करती हुई भगवान् शिव के समीप आई। क्षण मात्र के अनु विनय करने पर ही—"प्रभु आशुतोष कृपाल शिव अ निरख बोले सही"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब ते रति तव नाथ कर, होइहि नाम नाम अनंग।
बिन वपु व्यापहि सबहि, पुनि सुनि निज मिलन प्रसंग॥
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा। होइहि हरण महा महिभारा।
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा। वचन अन्यथा होइ न मोरा॥
और देखिये आशुतोष शिवकी दयालुता—

"कपिल भगवान् के कोप से सगर पुत्र भस्मीभूत हो गये। तब से उनके मोक्ष हेतु रघुवंशी राजा गंगाजी को पृथ्वी पर लाने के लिये तपस्या करने लगे। कितने वर्षों तक अनेकों राजा तपस्या करते करते अपनी जीवन-लीला समाप्त कर गये। परन्तु भगवती देवी गंगा प्रसन्न नहीं हुई। अन्ततोगत्वा राजा भगीरथ की कठोर तपस्या के उपरान्त भगवती गंगा प्रसन्न हुई और आकाश-वाणी हुई। "हे राजन् मैं तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करने के लिये तैयार हूँ, परन्तु मेरे उतरने के लिये कोई स्थान देखें। क्योंकि समस्त भूमंडल में मेरे वेग को रोकने की क्षमता नहीं है।" गगन-गिरि सुन राजा असमंजसमें पड़ गये। इतने वर्षोंमें देवी गंगा प्रसन्न हुई, परन्तु अब किसका आश्रय लिया जाय। अन्त में राजा को भगवान् आशुतोष शिवका स्मरण हुआ। राजा खुशी से नाच उठा और भगवान् शिव की तपस्या करने बैठ गया। कृपाल शिव ने सम्वत् मध्य ही प्रसन्न होकर राजा का मनोरथ पूर्ण किया।" अब हम जान सकते हैं, कि यदि भगवान् शिव का कोप त्रैलोक्य मे प्रसिद्ध है, तो भगवान् शिव ही विश्व में आशु-तोष प्रसिद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४–परोपकारी–शिव

शिव भगवान् के समान विश्व में कोई परोपकारी नहीं। उन्होंने दूसरों के उपकार को ही अपना लक्ष्य समझा। परोपकार हेतु अपने प्राणों को भी उन्होंने संकट में डाल दिया तथा अपने व्रत को भी भंग कर दिया। देखिये–विश्व में कैसी भीषण परिस्थिति उत्पन्न हुई। देव और दानव दोनों ही समुद्र मंथन में तल्लीन हैं। मंथन करते–करते अन्त में कराल ज्वाला की लपटों से युक्त विषम–विष प्रकट हुआ जिसके तेज को देव दानव सहन न कर सके। क्षण भर में कोलाहल मच गया, सारे देव दानव मृतक तुल्य हो उसकी ज्वाला से झुलस धराशायी होने लगे। सारे विश्व के प्राण कंठगत हो गये। ऐसी परिस्थिति भगवान शिव के अतिरिक्त कौन आश्रय दाता हो सकता है? देवताओं ने करुण स्वर से शंकर भगवान को पुकारा। विश्व कल्याणरत शिव से ऐसी स्थिति में कैसा रहा जा सकता? क्षणमात्र में प्रकट हो कराल कालकूट गरल का पान कर गये। दयालु शंकर ने कराल कालकूट का पानकर सकल विश्व का त्राण किया।

भगवान् शंकर की परोपकारिता और भी देखिये।

'ताड़क असुर के महान् अत्याचार से जब सारे देव दुःखी हो ब्रह्मा जी के पास पहुँचे तो—

'सब सन कहा बुझाई विधि, दनुज निधन तब होय।
संभुसुक्र संभूत सुत एहि, जीतइ रण सोय।'

यह सुन जब सारे देव भगवान् आरतहर शंकर के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचे तो उनके दुःख दूर करने के लिये हिमालय कुमारी पार्वती के साथ पाणिग्रहण कर देवताओं का दुःख दूर किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि भगवान् शिव कितने परोपकारी थे?

५—पण्डित-शिव

भगवान् शिव हमारे सामने केवल मर्यादा रक्षक, योगी, दयालु और परोपकारी रूपों से ही अवतरित नहीं हुये अपितु साहित्य एवं पाण्डित्य क्षेत्र में उनका कार्य अतीव उच्चकोटि का एवं वन्दनीय है। आज हमारे समक्ष देव-वाणी संस्कृत का विशाल व्याकरण उन्हीं की देन है। देखिये कितने विचित्र ढंग से व्याकरण शास्त्र का उपदेश किया—'प्राचीन काल में ऋषि मुनि अपनी भाषा सम्बन्धी शंकाओं का निवारण समाधि मग्न हो कर लेते थे। परन्तु उनके सामने एक समस्या आई, कब तक इस प्रकार कार्य चलेगा और भविष्य में अपनी क्षमता न रहेगी तो विकट समस्या उत्पन्न होगी। इस प्रकार विचार कर सभी ऋषि मुनियों ने एकत्रित हो भगवान शंकर की तपस्या की। ऋषि मुनियों को तपस्या करते देख भगवान् शंकर ने उनकी इच्छा-पूर्ति हेतु प्रसन्न हो नृत्य किया और—

नृत्यावसाने नटराज राजो ननाद ढक्कां नव पंच वारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादि सिद्धान् एतद्विमर्शे शिव सूत्र जालम्॥

नृत्य के अन्त में मुनियों की कामना पूर्ण करने के लिये भगवान् शिव ने बड़ी मधुर ध्वनि से १४ बार अपने डमरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बजाया। तब मुनियों ने उस डमरू की आवाज को सुना और विचार विमर्ष कर माहेश्वर प्रदत्त 'अइ उण' आदि सूत्रों को समझा। इस प्रकार भगवान् शिव ने इस विशाल व्याकरण शास्त्र की आधार शिला का उपदेश से मुनियों की विकट समस्या का समाधान किया। अब हम विचार कर सकते हैं, उनकी विद्वता और उनके उपकार को। यदि दया-मयी ज्योति स्वरूप भगवान् शिव प्रदत्त १४ सूत्र न होते तो आज हम पुण्यतोया संस्कृत-सरिता के सुधोपमं सलिल का आस्वादन न कर पाते। हमारे पूर्वजों की अति उत्तम कीर्ति-माला से अवगत न हो पाते, वेदों को न समझ पाते, अध्यात्म क्षेत्र एवं योग आदि सभी क्षेत्रों में हमारी कृति शुष्क और नीरस ही दृष्टिगोचर होती।

६-भक्त-शिव

जगतवंद्य श्री शंकर भगवान् ने बाल रूप सच्चिदानन्द को अपना इष्ट देव माना। वे सदा उसी रूप का ध्यान कर उसके आनन्द रस का पान किया करते थे। अपने इष्ट-देव के प्रति उनकी अनुपम और अगाध भक्ति थी। जब श्री भगवान् कृष्ण ने गोकुल में अवतार लिया वहाँ भी श्री शिव अपने रूप को छिपाकर भगवान् के दर्शनार्थ मां यशोदा के द्वार पर भिखारी जा बने। और जब श्रीकृष्ण ने यमुना तीर पर रास क्रीड़ा की तो वहाँ भी गोपी जा बने।

और जब भगवान् रामचन्द्रजी ने भी अयोध्या में जन्म लिया तो वहाँ भी भगवान् शिव बाल रूप भगवान् के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शनों को लालायित हो उठे और काकभुशुण्ड और शिवजी दोनों अयोध्या में आये और भगवान् के दर्शन कर उन्मत्त हो गये और जिसका वर्णन पार्वती से स्वयं कर रहे हैं—

औरऊ एक कहेउ निज चोरी। सुन गिरजा अति मति तोरी।
काकभुसन्ड संग हम दोऊ। मनुज रूप जानइ नहिं कोऊ।
परमानन्द प्रेम सुख फूले। वीथिन्ह फिरह मगन मन भूले।

श्री शंकर भगवान् की अपने इष्ट देव के प्रति कितनी अद्भुत और अनुपम भक्ति थी, जिसमें भाव-विभोर हो भगवान् शिव अपने तन-मन की भी सुध भूल गये।

७-भक्त भयहारी-शिव

भगवान् शिव स्वयं तो भक्त थे ही परन्तु अपने भक्तों के रक्षक भी थे। उनको अपने भक्तों की रक्षा से प्रिय कोई कार्य ही नहीं। समय-समय पर भगवान् शिव ने अनेकों राक्षसों का संहार किया और देवों को दुःख से बचाया। जालन्धर असुर के अत्याचार से जब देव पीड़ित हुये तो भगवान् शिव ने ही उसको मारा। त्रिपुर राक्षस के आतंक से सारा संसार हा-हा कर उठा तब उस समय भक्त-भयहारी शिव ने ही विश्व का परित्राण किया। और देखिये भगवान् शिव की अहैतुकी कृपा। (१) "जब दक्ष के श्राप से पीड़ित हो चन्द्रमा शिवजी की शरण में आया तब दयालु शिव ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षय-रोगी चन्द्रमा को भी अपने ललाट में स्थान
अपनी पुत्रियों के कहने पर पुनः दक्ष जब चन्द्रमा
के लिये शिव के पास आया तब भक्त का त्याग
यह देखकर जब दक्ष शिव को श्राप देने के लिए
शिवने भगवान का स्मरण किया। जब भगवान विष्णु
चन्द्रमा को देनेके लिए कहा तो शिवजी बोले "हे प्र
अन्तर्यामी सर्वज्ञ हो, मैं अपने तप, तेज व सम्पूर्ण सिद्धि
त्याग कर सकता हूँ, पर अपने भक्त का त्याग करने में
हूँ। जो भय से शरणागत का त्यागकर देता है, उसे
भी त्याग देता है। (२) और जब परशुराम २१ बार
को क्षत्रियों रहित करने का प्रण कर श्री महादेवजी के
पहुंचा और प्रार्थना की। भगवान शिव ने उसे अपना
जानकर उसके लिये "त्रैलोक्य विजय" नामक कवच
सफल मनोरथ किया।" (३) और जब वाणासुर भग
कृष्ण से भी युद्ध करने को उद्यत हो गया और अन्त में भग
कृष्ण ने उसे मार दिया। तब दयालु शिव ने बाण को
भक्त जानकर उसे श्री कृष्ण चन्द्र के चरणों में डाल
और उसे जीवन दान दिलाया।" इस प्रकार भगवान
की अनन्त कथायें हैं। वे हमेशा भक्तों के रक्षक हैं।

इस अति संक्षिप्त विवेचन से हम अनुमान लगा सकते
कि भगवान शिव कितने अद्भुत अनेक रूपों से हमारे
आये। उनकी अनन्त कलायें हैं। यदि उनके गुण-गान
वर्णन सहस्र मुख भगवान् अनन्त देव भी करने बैठें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पा सकते, फिर मानव की क्षमता ही क्या ? मैंने जो यह दुस्साहस किया वह केवल अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिये। उन्होंने ही इस संसार का सृजन किया, वे ही इसके पालन तथा अन्त में वे ही इसका संहार करते हैं। श्री सच्चिदानंद शिव सत, रज, तम तीनों गुणों से प्रकट होते हैं। वे विश्व के महान उपकारी हैं। इसी लिये ही भगवान् शंकर इस घोर कलि-काल में भी सभी देवताओं में गौरवपूर्ण स्थान पाये हुये। जिनके प्रांगण में सर्प, मयूर, केहरि, वृषभ और हाथी सदा ही क्रीड़ा करते हैं उन शिवजी को शत-शत बार प्रणाम है। भगवान् शिव की कृपालुता के बारे में किसी कवि का एक अवतरण अवतरित कर अपनी लेखनी को निष्पन्न करता हूँ।

चार चावल के चढ़ाये ते चौदह भुवन देत
एक दीपक के चढ़ाये सात द्वीप देत हैं।
जल के चढ़ाये ते यम लोक छुड़ाय देत,
चंदन के चढ़ाये चक्रवर्ती कर देत है।
आक धतूरे के चढ़ाये सम्पत की वृद्धि करे,
बिल पत्र के चढ़ाये शिव पुत्र देत हैं।
हर-हर कहे हजूर ही बुलाय ले,
गाल के बजाये निहाल कर देत है।
हरि ॐ तत् सत् ॐ तत सत् हरि ॐ तत् सत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सत्य-शिव-सुंदरम् स्वरूप)

शिव तत्व

लेखक
श्री. मोहनलाल बी. वालद 'प्रकाशभिक्षु'

एक ही रुद्र है, जो कि इन सब लोकोंको अपनी शक्ति वश में रखता है, अतएव वह ईश्वर है, उसीकी सब उपासना करते हैं, वह सब लोकोंको उत्पन्नकर अन्तकालमें संहार करता है। वही सबके भीतर अन्तर्यामी रूप से स्थित है। ईश्वर जगत को बनाकर उसीमें अनुप्रविष्ठ होता है। इसी के भय से पवन चलता है, इसीके भय से सूर्य उदय होता है, अग्नि जिसका मस्तक है, चन्द्रमा-सूर्य दोनों नेत्र हैं, दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोत्र हैं, वेद वाणी है, विश्वव्यापी वायु प्राणरूपसे हृदय में है, पृथिवी पादरूप है–वह सब भूतों का अन्तरात्मा है। वह शरीर भूषणों से भूषित भी है, और सर्पशरीरों से वेष्टित भी। गजचर्म भी ओढ़े हुए हैं और सुन्दर-सुन्दर बहुमूल्य वस्त्रधारी भी हो सकता है। वह शरीर कपालपाणि भी है और चन्द्रमुकुट भी। जो विश्वमूर्ति ठहरा, उस शरीरका एक रूप से निश्चय कौन कर सकता है?

वे समस्त जगत्के आदि हैं, सुतरां उनके वंशका वृतान्त कौन जान सकता है? समस्त जगत् उनका स्वरूप है, इसीलिए वे विवस्त्र हैं, वे त्रिगुणात्मक शूल धारण करते हैं इसीलिए उन्हें शूली कहते हैं। भूत सर्वथा संसार में बद्ध नहीं है, बल्कि पूर्णत: मुक्त है, इसीलिए वे मुक्त भूतगणोंके अधिपति हैं। यह संसार की वे शक्ति भी हैं। यह संसार ही स्मशान क्षेत्र है, वे प्रार्थियों के प्रति कृपावशतः इस स्मशान में वास करते हैं। उनकी विभूति ही सबको प्रकृत्त विभूति-ऐश्वर्य प्रदान करती है, इसीलिए वे इस विभूतिको अपने शरीर पर धारण करते है। धर्म ही वृष है और उसपर आरूढ़ होनेके कारण वह 'वृषवाहन' कहलाते हैं। क्रोधादि दोष समूह ही सर्प हैं, जगन्मय महेश्वर इन सबको वशीभूत कर भूषण के रूप में धारण करते हैं। विविध कर्म कलाप ही जटा है, वह इन सबको धारण करते हैं। वेदमयी उनके तीन नेत्र हैं। त्रिगुणमय शरीर ही त्रिपुरपदवाच्य है, इसको भस्मसात् करने के कारण ही वह 'त्रिपुरघ्न' कहलाते हैं। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रमेय और अनाद्य हैं। वे चन्द्रके समान जगदा[illegible] सूर्यके समान अज्ञान तमोनाशक तथा अग्नि के [illegible] रागादि दोषों के दहनकर्ता हैं। जो सर्वेश्वर, स[illegible] भूतों में रहनेवाले, सब भूतोंके हितमें लगे रहनेवाले [illegible] सबके उपकार के लिए निराकार होते हुए भी साकार [illegible] यह साकाररूप मनुष्य की कल्पना नहीं है, भगवान् [illegible] शक्तिसे रूप धारण करते हैं। वे विश्वाद्य, वि[illegible] विश्वदेव, विश्वरूप, विश्वाधिक और विश्वान्तर्यामी [illegible] निर्विकार, शुद्ध, नित्य, परमात्मा, सर्वदा एक रूप, स[illegible] संसारोद्धारक, विश्वकी उत्पत्ति, स्थिति तथा लयके [illegible] एक और अनेक स्वरूपवाले, स्थूल, सूक्ष्म-उभयात्मक [illegible] त्मकस्वरूप एवं मुक्तिदाता, विश्वाधार, सूक्ष्म से [illegible] सूक्ष्म हैं।

सृष्टि के आदिकाल में जब केवल अन्धकार ही [illegible] था, न दिन था, न रात्रि थी, न कारण था, न कार्य [illegible] केवल एक निर्विकार शिव ही विद्यमान थे। वही [illegible] वही सबके जनक परमेश्वर का प्रार्थनीय स्वरूप है, [illegible] शास्त्रविद्या प्रवृत हुई हैं। वे निर्गुण, निरुपाधि, निरंजन, [illegible] अध्यक्ष हैं, वे रक्त, पीत, नील, श्वेतवर्ण नहीं हैं। वे [illegible] और वाणी की पहुँचके परे हैं। वही ब्रह्म पहले 'शिव' [illegible] से कहे गए हैं। एक अद्वितीय रुद्र अपने शक्ति [illegible] द्वारा सब लोकों के ईश्वर हैं। सर्वज्ञरुद्र देवताओं के [illegible] और पालक हैं, उन्होंने पहले ब्रह्माकी सृष्टि की थी। [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख, मस्तक और ग्रीवा असंख्य हैं। वे सब प्राणियों की हृदयगुहा में अवस्थित हैं। वे ही सर्वव्यापी भगवान् शिव हैं। वे आदि, मध्य और अंतहीन हैं, वे रूपहीन हैं। वे एक हैं। अद्वितीय, चिदानन्द, अद्भुत, देवेश, उमा सहचर, त्रिलोचन, नीलकण्ठ परमेश्वर हैं।—अर्थात् जो निराकार हैं, वही साकार हैं। वे साकार रूपवान् होकर भुवन मोहन हैं। इसी कारण वे अद्भुत हैं।

यह संपूर्ण भूतग्राम उस ईश्वरका एक पाद है। शेष तीन पाद तो उसके अमृतरूपमें प्रकाशमान हैं। वे सर्वव्यापी होते हुए भी सर्वत्र अदृश्य हैं। वे निगूढ़ परब्रह्म हैं, अपनी गुणमयी शक्ति की सहायता से ब्रह्मा, विष्णु और शिव—नाम धारणकर सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं। वे स्वयं प्रकाश आत्मा स्वरूप हैं। जिनकी प्रज्ञा बहिर्मुख नहीं है, अंतर्मुख नहीं हैं, और उभयमुख भी नहीं हैं, जो प्रज्ञानघन नहीं हैं, प्रज्ञ नहीं हैं, और अप्रज्ञ भी नहीं हैं, जो वर्णन से अतीत हैं, ज्ञान से अतीत, व्यवहार से अतीत, ग्रहण से अतीत, लक्षण से अतीत, चिन्तासे अतीत, निर्देश से अतीत, आत्मप्रत्ययमात्र-सिद्ध, प्रपंचातीत, शान्त, शिव, अद्वैत और तुरीयपदस्थित हैं, वे ही निरुपाधिक 'महेश्वर', 'स्वयंभू' और ईशान हैं। वे ईश्वरों के भी परम महेश्वर, देवताओं के भी परम देवता, पतियों के भी परमपति, परात्पर, परमपूज्य और भुवनेश हैं। जिनमें यह विश्व है, जिनसे यह विश्व है, जिनके द्वारा यह विश्व है, जो स्वयं यह विश्व हैं, जो इस विश्व के परे से भी परे हैं उन्हीं वरदाता पूज्य देव को जानने से जीव आत्यन्तिक शान्तिका अधिकारी हो जाता है।

—रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया प्रकृति है और महेश्वर प्रकृति–माया के अधिष्ठाता मायी हैं । माया के द्वारा उन्हीं के अवयवभूत जीवों से यह संसार परिव्याप्त हैं । सृष्टिके समय परमपुरुष अपने ही अंश से प्रकृति को निकालकर उसमें समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति करते है । इस प्रकार शिवका लिंग–योनिभाव और अर्द्धनारीश्वरभाव एक ही वस्तु है । सृष्टिके बीज को देनेवाले लिंगरूप श्री शिव जब अपनी प्रकृतिरूपा नारी (योनि) से आधार–आधेय की भांति संयुक्त होते हैं तभी सृष्टि की उत्पत्ति होती है, अन्यथा नहीं । लिंग परमानन्द का रूप है जिससे क्रमश: ज्योति और प्रणव की उत्पत्ति हुई । प्रणव में 'अ' कार ब्रह्मा हैं, 'उ' कार विष्णु हैं और 'म' कार शिव हैं ।

परात्पर ब्रह्म के वे सभी रूप नित्य शाश्वत परमानन्द स्वरूप हैं । उनके देह जन्म–मरण से रहित और स्वरूपभूत हैं, कदापि प्रकृतिजनित नहीं है । वे परमानन्द संदोह हैं, सर्वतो भावेन ज्ञानके स्वरूप हैं, वे सभी समस्त भगवद्गुणों से परिपूर्ण हैं एवं निर्दोष ब्रह्म हैं ।

उनके सब ओर नेत्र हैं, सब ओर मुख हैं, सब ओर भुजाएँ हैं, और सब ओर चरण हैं । स्वर्ग और पृथ्वी को उत्पन्न करने वाले वे ही एक महेश्वर हैं । वे ही सब देवताओंको उत्पन्न करने वाले हैं वे ही सब देवताओंमें सबसे पहले ब्रह्माजीको उत्पन्न करते हैं । वे ही सब से अधिक रुद्रदेव महान् ऋषि हैं । हमें उन महान् अमृतस्वरूप अविनाश पुरुष परमेश्वरको प्रेम से जानना चाहिये । इनकी अङ्गकान्ति सूर्य के समान है । ये प्रभु अज्ञानान्धकार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परे विराजमान हैं। इन परमात्मा से परे दूसरी कोई वस्तु नहीं है। इन से अत्यन्त सूक्ष्म और इन से अधिक महान् भी कुछ नहीं है। इन से यह समस्त जगत् परिपूर्ण है। ये भगवान् सब ओर मुख, सिर और कण्ठवाले हैं। सब प्राणियोंके हृदय-रूप गुफामें निवास करते हैं, अतएव भगवान् शिव सर्वगत ये संपूर्ण इन्द्रियोंके विषयोंको जानने वाले हैं, परंतु वास्तवमें सब इन्द्रियोंसे रहित हैं। ये सब के स्वामी, शासक शरणदाता और सुहृद् हैं। ये नेत्र के बिना भी देखते हैं और कान के बिना भी सुनते हैं। ये सबको जानते हैं किंतु इनको पूर्णरूपेण जाननेवाला कोई नहीं है। इन्हें परमपुरुष कहते हैं। ये अणुसे भी अत्यन्त अणु और महान से भी परममहान् हैं। ये अविनाशी महेश्वर इस हृदयकी गुफामें स्थित हैं। वे यज्ञ स्वरूप संकल्प रहित सर्वत्र विद्यमान जरा मृत्यु आदिसे रहित और पुराण-पुरुष परमेश्वर हैं।

छन्द, यज्ञ, ऋतु तथा भूत, वर्तमान और संपूर्ण विश्व यह मायावी रचता है और माया से ही उसमें प्रविष्ठ होकर रहता है। प्रकृत्तिको ही माया समझना चाहिये और महेश्वर ही वह मायावी है। वे ही परमेश्वर तीनों कालों से परे, निष्कल, सर्वज्ञ, त्रिगुणाधीश्वर एवं साक्षात् परात्पर ब्रह्म हैं। वे सबकी उत्पत्ति के कारण होकर भी स्वयं अजन्मा हैं। उसका न कोई स्वामी है, न कोई निश्चित चिह्न है, न उसपर किसीका शासन है। वह समस्त कारणों का कारण है एवं उनका भी अधीश्वर है। उसका न कोई जन्मदाता है, न जन्म के माया-फलादि हेतु हैं। वही सब भूतोंका अन्तरात्मा और धर्माध्यक्ष कहलाता है। सबका द्रष्टा, साक्षी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतन और निर्गुण है। वह नित्य, चेतनोंका चेतन है। एक है, कामना रहित है और बहुतोंकी कामना पूर्ण करने वाला ईश्वर है।

जिन्हें न पाकर मन सहित वाणी लौट आती है, जिनके आनन्दमय स्वरूप का अनुभव करने वाला पुरुष कभी किसी से नहीं डरता। जिसके पास न तो यह बिजली प्रकाश करती है, न सूर्य और चन्द्रमा ही अपनी प्रभा फैलाते हैं। उन्हींके प्रकाश से यह संपूर्ण जगत प्रकाशित होता है, जो अपनी अंशकला से ब्रह्मा, विष्णु और रुद्ररूप होकर विश्व का सृजन, पालन और संहार करते हैं। वे रूपरहित होते हुए भी विश्व के परम कारण हैं। अपनी एक लीला से त्रिविध रूप धारण करते हैं। विश्व की सृष्टि के समय ब्रह्मा रूप में प्रगट होते हैं, पालन के समय अपने प्रभामय विष्णु रूप में व्यक्त होते हैं और प्रलय के समय साक्षात् रुद्र का रूप ले लेते हैं।

वे त्रिगुणमयी माया को लाँघकर अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित रहते हैं। वे सत्यानन्द स्वरूप, अनन्त, बोधमय, निर्मल एवं पूर्ण ब्रह्म शिव हैं। वे ही गिरिराजकुमारी उमा के पति हैं, तत्वज्ञ हैं, मायाके आश्रय होकर भी उससे अत्यन्त दूर हैं।

मंगलमय शिव की जो व्यक्ति भक्ति करता है वह इस लोक में धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति कर सकता है और मृत्युके बाद सायुज्य मुक्ति पा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशुतोष भगवान शिव

लेखक
ब्रजवल्लभ विशारद

महिम्न: पारन्ते परम विदुषो यद्य सदशी ।
स्तुति र्ब्रह्मादीनामपितदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥
अथावाच्य: सर्वः स्वमति परिणामावधि गृणन् ।
ममाप्येषस्तोत्रे हर ! निरपवादः परिकरः ॥
शि. म. स्तोत्र १

गन्धर्व राज पुष्पदन्त भगवान् शिव जी के गुण-गान का आरंभ करने से पूर्व प्रार्थना करते हैं । हे शंभू ! यदि पूर्णरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आपकी महिमा का ज्ञान प्राप्त किये बिना उसका करना अनुचित समझा जाय तब तो सर्व गुण सम्पन्न ब्रह्मा भी उसका गान नहीं कर सकेंगे, उनकी वाणी भी जायगी। क्योंकि आपके अनन्त तप का वे स्वयं भी ज्ञान नहीं रखते। जब ब्रह्मा जी को भी उसका ज्ञान नहीं तब अन्य जीवों का तो कहना ही क्या? इस प्रकार से कोई भी आप की स्तुति न कर पावेगा और यदि अपनी २ बुद्धि के अनुसार आपकी महिमा को जिसने जितना समझा है, उतने तक वर्णन कर देना किसी प्रकार दोष युक्त न समझा जाय तो फिर मुझ जैसा तुच्छ व्यक्ति भी उसका गान क्यों न करे?

शिव तत्व कितना अगम्य है, पुष्पदन्ताचार्य के उपरोक्त श्लोक से इस बात का आभास मिलता है। किन्तु आकाश अनन्त है और उसकी अनन्तता का पता लगा सकना असंभव है तो क्या इसी कारण से पक्षी आकाश में उड़ना बन्द कर दें? यह एक विचारणीय प्रश्न है। इसका एक मात्र उत्तर यही हो सकता है कि तितली, चिड़िया, कौआ, हंस, गिद्ध जिसकी जितनी सामर्थ्य है उतनी ऊँचाई तक उड़ कर आकाश का ज्ञान प्राप्त करते रहें। शिव महिमा के संबंध में भी यही बात कही जा सकती है कि उपासकों में से जिसकी जितनी बुद्धि है वह इसके संबंध में उतना ही ज्ञान प्राप्त करे और उतने ही का एक दूसरे के समक्ष वर्णन कर परस्पर ज्ञान वृद्धि में सहायक हों और इस प्रकार उस अनन्त शिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्व के संबंध में अपने ज्ञान की वृद्धि करते रहें। केवल इसी सिद्धान्त को आधार मान कर मेरे जैसे तुच्छ प्राणी ने भी इस संबंध में कुछ लिखने का साहस किया है।

भगवान् शिव वेद कालीन देवता हैं। वेद, उपनिषदादि आर्ष ग्रंथों में ऐसी अनेकों ऋचायें और मंत्र उपलब्ध हैं जो केवल शिव अथवा रुद्र को लक्ष्य कर के कहे गये हैं। समस्त पुराण, तन्त्र, स्तोत्र आदि श्री शिवजीकी लीला-कथाओं से भरे पड़े हैं। किसी समय भारत में शिवतत्व का कितना अधिक प्रचार रहा होगा इसका प्रमाण यह है कि आज भी बड़े से बड़े तीर्थ-स्थान से लेकर छोटे से छोटे ग्राम तक में अनेक शिव-मन्दिर स्थापित हैं। जिनकी संख्या लाखों है और उनके उपासकों की करोड़ों। कोई छोटा जलाशय ऐसा नहीं जिस के किनारे मन्दिर न सही एक छोटे से गज भर वर्गाकार चबूतरे पर शिव-लिंग के दर्शन होते हों। उपासक उस गज भर के चबूतरे पर स्थापित शिव-लिंग पर समीपस्थ जलाशय का जल चढ़ा कर अपने आप को उतना ही कृत कृत्य मानते हैं जितना कोई भक्त रामेश्वर पर गंगा जल चढ़ाकर अपने आप को धन्य मानता है। उन उपासकों की दृष्टि में उस नगण्य स्थान में स्थापित शिव लिंग का महत्व रामेश्वर में स्थापित शिव लिंग से किसी भी प्रकार कम नहीं है।

शिव ही नहीं, ब्रह्मा और विष्णु भी वेद देवता हैं—

"स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रस्स शिवस्सोऽक्षरास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमः स्वराट् । स इन्द्रस्स कालाग्निस्स चन्द्रमाः।
कैवल्य उपनिषद्।

वह सब जगत् का बनाने वाला होने से 'ब्रह्मा,' सर्व व्यापक होने से 'विष्णु,' दुष्टों को दण्ड दे कर रुलाने वाला होने से 'रुद्र', मंगल मय और सब का कल्याण कर्त्ता होने से 'शिव'............कहा जाता है।

वैदिक धर्म जगत की रचना, धारण पोषण एवं संहार आदि कार्य एक ही शक्ति के किये हुये मानता है। उक्त विभिन्न कार्यों के कर्त्ता को सार्थक नाम देने के लिये ब्रह्मा, विष्णु, नामों से उस एक ही आदि शक्ति का अर्थ लिया जाता है। 'एकं सद्विप्रा बहुधावदन्ति' के अनुसार स्पष्ट है कि वह आदि शक्ति एक ही है, किन्तु लोग उसे भिन्न २ नामों से पुकारते हैं।

वैदिक काल में भिन्न २ कार्य कारी शक्तियों के कार्य के अनुसार उनके भिन्न २ नाम निश्चित किये गये। मध्य काल में उन कार्यों और नामों के अनुरूप उनके भिन्न २ स्वरूप का चिन्तन किया गया। विष्णु लक्ष्मी पति, धन एवं ऐश्वर्य के अधिष्ठाता हैं। अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्र, बहुमूल्य आभूषण तथा तदनुसार ही उनके भोज्य पदार्थ नियत किये गये और अनेक दिव्य सुख सुविधाओं से पूर्ण वैकुण्ठ उनका निवास स्थान माना गया। इस प्रकार विष्णु भगवान् पूर्ण ऐश्वर्य सम्पन्न हैं। दूसरी ओर शिव श्मशान के निवासी, दिगम्बर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभूति का लेपन करने वाले, सर्प एवं नर मुण्ड की माला धारण करने वाले बाघम्बरधारी कुछ भयधारी रूप वाले है। जो उनके कार्य के अनुरूप ही है। उनका भोजन भी अर्क, धतूर, भंग आदि साधारण एवं सर्व प्राप्य वस्तुयें हैं। इस प्रकार शिवजी पूर्ण त्याग—मूर्ति योगी हैं।

इस प्रकार दोनों देवताओं में एक भोगी एवं दूसरा पूर्ण योगी है। उपासक भगवान शंकर को अति शीघ्र साधारण उपासना से ही प्रसन्न कर लेते हैं। कारण वे तो सदा मंगल मय हैं योगी होने से उनका हृदय स्वभावतः दयार्द्र है। वे शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं और अदेय से अदेय पदार्थ या शक्ति का भी दान कर देते हैं। वे वरदान देते समय पात्र अपात्र का भी ध्यान नहीं रखते। वे तो केवल भक्त की भक्ति को देखते हैं। कई बार शिवजी से वरदान प्राप्त अपात्रों ने स्वयं उन पर ही शक्ति परीक्षण कर उन्हें कुछ परेशानी में डाल दिया। रावण ने कैलास को उठाने का प्रदर्शन कर भक्त भय-हारी को भक्त मुक्त कर दिया। वाणासुर के नगर की रक्षा का भार लेकर श्री शिवजी को अपनी स्वाभाविक शान्ति से कुछ समय के लिये वंचित होना पड़ा, किन्तु फिर भी उनके स्वभाव में अथवा उनके विरद में कोई अन्तर नहीं आया। वे आज भी भक्तों को सर्वस्व दान करते रहते हैं। इसी लिये तो वे "भोलेनाथ" कहलाते हैं। उधर भगवान् विष्णु उपासक की कठिन से कठिन परीक्षा लेकर, पात्र और अपात्र का विचार करके सिद्धि प्रदान करते हैं। अतः उनकी उपा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सना अत्यन्त कठिन है। शास्त्रों में इस संबंध की एक प्रसिद्ध है—जो बड़ी प्रेरक है।

राजा परीक्षित् ने भगवान् चरित का श्रवण करते श्री शुक देवजी से इसी प्रश्न को किया था। परीक्षित् ने था:—

"मुनिवर, भगवान शंकर ने समस्त भोगों का परि कर रक्खा है। परन्तु देखने में यह आता है कि देव, नर जो भी उनकी उपासना करते हैं, वे धनी और ऐश्वर्य संपन्न हो जाते हैं। और भगवान् विष्णु जो स्वयं लक्ष्मी हैं, जो सब प्रकार के भोग ऐश्वर्य से संपन्न हैं, उनके उपा प्रायः धन और ऐश्वर्य से हीन हो जाते हैं। भगवान् तथा विष्णु त्याग और भोग की दृष्टि से एक दूसरे से विप स्वभाव वाले हैं और फल देने में दोनों अपने स्वभाव विपरीत फल देनेवाले हैं। मुझे इस संबंध में बड़ा भ्रम रहा है कि त्यागी की उपासना से भोग और लक्ष्मी पति उपासना से त्याग की प्राप्ति क्यों कर होती है?"

श्री शुकदेवजी बोले—"राजन्, आपके दादा महा युधिष्ठिर ने यही प्रश्न भीष्म पितामह से किया था। भी पितामह ने उसका यह उत्तर दिया था।"

> अशक्तोहं गुणान् वक्तुं महादेवस्य धीमतः।
> यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते॥
> महा. अनु० १४-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भगवान् महादेव समस्त जगत् और समस्त प्राणी मात्र में निवास करते हुये भी किसी को दिखाई नहीं देते, उनकी महिमा का वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ।

संयोग से भगवान् कृष्ण भी उस समय वहीं उपस्थित थे। अतः उनकी ओर संकेत करते हुये पितामह ने युधिष्ठिर से कहा—"राजन् ! केवल भगवान कृष्ण ही उनके संबंध में बता सकते हैं। क्योंकि ये सर्वेश्वर विष्णु के अवतार हैं।"

पितामह भीष्म एवं युधिष्ठिर की जिज्ञासा को देखकर भगवान् कृष्णने कहना आरंभ किया।

राजन् ! जो मेरा भक्त होकर मेरी शरण आता है, उस पर सबसे पहली कृपा मैं यही करता हूँ उसके धन और ऐश्वर्य का नाश कर देता हूँ। उसका ऐश्वर्य नष्ट हो जाने पर उसके मित्र, बन्धु, पुत्र, स्त्री आदि परिवार के सदस्य जो उससे केवल धन के लिये प्रेम करते थे, सब उसे त्यागकर अलग हो जाते हैं। सब उसका अपमान करने लगते हैं। स्वजनों के अपमान से अत्यन्त दुःखी होकर पुनः उनका प्रेम प्राप्त करने के निमित्त जब वह फिर धन-प्राप्ति के लिये यत्न आरंभ करता है तब मैं उसके उन सब प्रयत्नों को असफल बना देता हूँ। इस प्रकार वह धन-जन से हीन हो बारंबार असफलता और निराशा के आक्रमण से उत्पन्न दीन एवं आर्त हो मेरे अनन्य प्रेमी भक्तों की शरण जाता है और उनके उपदेशों से कुछ शान्ति प्राप्त करता है। इस प्रकार मैं अपने उपासक को इस संसार के मुख्य बन्धन स्वरूप धन-जन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोह से मुक्त करता हूँ। यही नहीं और भी कठिन परीक्षा लेकर मैं उसके मन को अपनी ओर आकर्षित करता हूँ। इस प्रकार मेरी उपासना करते २ मैं उसे आत्म ज्ञान प्रदान करता हूं। इसी कारण मेरी उपासना कठिन है। और इसी कारण से लोग मुझे छोड़कर दूसरे रूप अन्यान्य देवताओं की उपासना करने लगते हैं।

> ततस्ते आशुतोषेभ्यो लब्ध राज्यश्रि योद्धता।
> मत्ता: प्रमत्ताः वरदान विस्मरन्त्यव जानते॥
> श्रीमद्भागवत १०/८

दूसरे देवता आशुतोष हैं वे शीघ्र दयार्द्र हो भक्त बिना परीक्षा लिये उनको साम्राज्य और लक्ष्मी दे देते उसे पाकर वे उच्छृंखल. प्रमादी एवं उन्मत्त हो जाते हैं अपने वर-दाता देवता को भी भूल जाते हैं। यही नहीं कभी उनका तिरस्कार भी कर बैठते हैं।

> शाप प्रसाद योरीशा ब्रह्मा विष्णु शिशिवादयः।
> सद्यः शाप प्रसादोऽङ्ग शिवो ब्रह्मान च च्युतः॥
> श्री भागवत १०-८८

ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों शाप और वरदान में समर्थ हैं। इनमें ब्रह्मा और शिव शीघ्र ही प्रसन्न या होकर वरदान और शाप दे देते हैं और कभी २ अपात्र वरदान देकर स्वयं विपत्ति मोल लेते हैं। किन्तु भगवान् विष्णु ऐसा नहीं करते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी अवसर पर भगवान् कृष्ण ने एक कथा सुनाई—

शकुनि-पुत्र वृकासुर ने वर-प्राप्ति की इच्छा से तपस्या करने का विचार किया। वह अत्यन्त दुष्ट बुद्धि था। नारदजी के उपदेश से उसने आशुतोष भगवान् शिव की आराधना आरंभ की। उसने केदार क्षेत्र में जाकर निर्जल और निराहार रहकर छः दिन तक यज्ञ किया, किन्तु भगवान् शिव के दर्शन न हुये। सातवें दिन उसने स्नान किया और अपने सिर को तलवार से काट कर यज्ञ-कुण्ड में आहुति देने का निश्चय किया। जैसे संसार में दुःख वश कोई आत्महत्या करने जाता है, उसे हम लोग बचा लेते है। उसी प्रकार भगवान् शिव यज्ञ-कुण्ड से प्रकट हुये और उनने सिर काटने को उद्यत वृकासुर के दोनों हाथों को पकड़ लिया और गला काटने से रोक दिया। साथ ही अत्यन्त प्रिय वाणी से बोले—"प्रिय वृकासुर, अब बस करो, बहुत हो चुका। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। बोलो क्या चाहते हो? अपना मुंह माँगा वरदान मांग लो। मैं तो केवल जल चढ़ाने मात्र से सन्तुष्ट हो जाता हूँ फिर तुम अपने शरीर को क्यों कष्ट दे रहे हो?"

भगवान् शिव के दर्शन एवं अंग स्पर्श से वृकासुर की निराहार जनित क्लान्ति नष्ट हो गई। अन्त में उस पापी ने सब जगत् को भयभीत कर देनेवाला यह वर मांगा—"यस्य यस्य करं शीर्ष्णि धास्य स म्रियतामिति।" (मैं जिसके सिर पर हाथ रक्खूं वह मर जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् शिव वृकासुर की प्रार्थना सुनकर पहले झिझके फिर हंसकर कह दिया—"तथास्तु" इस प्रकार देकर उनने मानो सर्प को अमृत पिला दिया।

जड़ बुद्धि वृकासुर इस शक्ति को पा तत्काल ही उसकी सत्यता के परीक्षण के लिये उतावला हो उठा और आस पास किसी प्राणी को न देखकर स्वयं शिवजी के सिर पर हाथ रखने की चेष्टा करने लगा। उसे ऐसा करते देख भगवान् शिव भयभीत हो डरते कांपते भागने लगे। वृकासुर उनका पीछा करने लगा। वे पृथ्वी, आकाश स्वर्ग से होते हुए वैकुण्ठ की ओर बढ़े जो भगवान् नारायण का निवास स्थान है। भक्त भयहारी नारायण ने देखा कि शंकरजी तो संकट में पड़े हुये हैं। उनने तत्काल अपनी योगमाया के बल से ब्रह्मचारी का वेष धारण किया और धीरे २ वृकासुर की ओर बढ़ने लगे।

उस समय भगवान् ने मूंज की मेखला, काला मृग चर्म, दण्ड एवं रुद्राक्ष की माला धारण कर रक्खी थी। उनके अंग प्रत्यंग से दिव्य कान्ति प्रस्फुटित हो रही थी। भगवान् ने झुककर वृकासुर को प्रणाम किया और बोले—"शकुनि नन्दन वृकासुरजी! आज तो आप बहुत थके हुये से जान पड़ते हैं। आपका सारा शरीर पसीने से तर हो रहा है। कुछ विश्राम कर लीजिये। देखिये, यह शरीर सब सुखों की खान है, इसे अधिक कष्ट नहीं देना चाहिये। आप इस समय क्या करना चाहते हैं? अगर मुझ से कह सकते हों तो कहिये, संभव है मैं आपका मार्ग-दर्शन कर सकूँ।"

भगवान् नारायण की एक २ बात से अमृत टपक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वृकासुर उसका उल्लघन न कर सका। वह रुका और तनिक विश्राम के बाद उसने अपनी तपस्या, वर प्राप्ति तथा भगवान् शंकर के पीछे दौड़ने का कारण कह सुनाया।

भगवान् ने कहा—"अच्छा, ऐसी बात है तब तो आप व्यर्थ ही ठगे गये। हम तो उसकी बात पर विश्वास नहीं करते। वह तो दक्ष प्रजापति के शाप से पिशाच भाव को प्राप्त हो गया है। आजकल वही प्रेतों और पिशाचों का राजा है। यज्ञ भाग छिन जाने से उसकी बुद्धि और सिद्धि सब नष्ट हो गई है। दानवराज! आप जैसे बुद्धिमान् भी ऐसी अनर्गल बातों पर विश्वास कर लेते हैं, यह कैसे आश्चर्य की बात है? आप हमारी बात की सत्यता की जाँच करना चाहे तो शीघ्र अपने सिरपर हाथ रखकर परीक्षा कर लीजिये। और जब उसकी बात असत्य निकले तो उस असत्यवादी शंकर को मार डालिये, जिससे भविष्य में वह असत्य भाषण न कर सके। आप तो सर्व समर्थ हैं, आपके समक्ष वह तो एक तुच्छ पिशाच मात्र है। राम! राम!! उस पापी ने व्यर्थ ही आपके सुकुमार शरीर को कष्ट दिया।"

भगवान् नारायण की अमृत सदृश मीठी वाणी को सुन कर वृकासुर की बुद्धि जाती रही। उसने शीघ्र ही अपने सिर पर हाथ रख लिया। बस उसी क्षण उसका सिर फट गया और वह वहीं धरती पर गिर पड़ा, मानो उस पर बिजली गिर पड़ी हो।

उपरोक्त विशेषताओं के कारण ही भगवान् शिव भारतीय जन जीवन में इतने ओत प्रोत हो गये हैं कि यदि गणना की जाय तो भारत में आज जितने शिवालय और शिवलिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपलब्ध हैं, उतने किसी अन्य देवता के प्रतीक नहीं। के भारत ही नहीं, पौर्वात्य एवं पाश्चात्य देशों में जहां ज भारतीय सभ्यता का प्रसार हुआ वहां आज भी शिवजी प्रतीक उपलब्ध हैं। उनके द्वार उपासकों के लिये दिन रा खुले रहते हैं। वैष्णव-मन्दिर की तरह कोई समय नि नहीं है। श्री शिव दीन और अनाथों के देवता हैं। उन रहन-सहन खान-पान आदि उनके दीन हीन उपासकों जै ही है। मानो वे अपना आदर्श उपस्थित कर भक्तों उपदेश कर रहे हैं—"मेरे प्यारे वत्स गण! क्या तुम लिये दुःखी हो कि रहने को मकान नहीं है। मेरी ओर देखो मैं श्मशान जैसे निर्जन स्थान में ही निवास करता हूँ। क्या तुम वस्त्र न मिलने से दुःखी हो? अरे, मुझे तो देखो और कभी इन साधारण कारणों से अपनी शान्ति भंग न होने दो। तुम मेरे भोज्य पदार्थों को देखो और सदा सन्तुष्ट रहो। मेरी उपासना के निमित्त भी तुम्हें विशेष आयोजन करने की आवश्यकता नहीं हैं।"

प्रीयेय तोयेन नृणां प्रपद्यता,
महोत्वयाऽऽत्मा भृशमर्द्यते वृथा॥
(श्री० भागवत १०।८८।२०)

"मैं तो केवल जल चढ़ाने मात्र से ही शरणागत भक्तों पर प्रसन्न हो जाया करता हूँ। फिर तुम व्यर्थ क्यों अपने आप को कष्ट देते हो?" सदा सन्तोष पूर्वक काल यापन करते हुये ईश आराधना में तत्पर रहो।

卐 इतिशम: 卐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवजी का सच्चा स्वरूप

लेखक
शिवनारायण सक्सेना

भगवान् शंकर की परम प्रिय पत्नी पार्वती जब एक दिन तन और मन से तपस्या में संलग्न थीं तो भगवान् की यह तीव्र इच्छा हुई कि पार्वती के प्रेम परीक्षा की जावे। उन्होंने स्वयं ब्रह्मचारी का स्वरूप धारण कर पार्वती से अपनी ही निन्दा की पर माता पार्वती तो सच्ची पतिव्रता थी वह अपने पति की निन्दा कैसे सुन सकती थीं। "शंकर इतने निर्धन हैं कि उन्हें वस्त्र पहनने तक को उपलब्ध नहीं होते,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका रूप ही बड़ा भयावना है।" इतना कहना था कि पार्वती ने उत्तर दिया। उस उत्तर को महाकवि कालिदास ने बड़े अच्छे शब्दों में कहा है :—

अकिंचनः सन् प्रभवः स सम्पदां
त्रिलोकनाथ: पितृ सद्मगोचरः।
स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते
न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः॥

अर्थात्:— शंकर परम निर्धन होने पर भी सभी संपदाओं के उद्गम स्थान हैं, सभी सम्पत्तियां वहीं से प्राप्त होती हैं। श्मशान में निवास करने पर भी उन्हें तीनों लोकों का नाथ माना जाता है। भयावना स्वरूप रखते हुये भी वे शिव कहे जाते हैं। वास्तविकता तो यह है पिनाकधारी भोलानाथ का असली रूप कोई जान ही नहीं पाया। उनके स्वभाव के तत्व को प्रयत्न करनेपर भी जानना कठिन है।

जब शिवजी के सम्बन्ध में माता पार्वती के ऐसे विचार हैं फिर मुझ जैसा छोटा व्यक्ति इनकी महिमा के बारे में न तो कुछ लिख ही सकता है और न बता ही सकता है, फिर भी साहस और प्रयत्न कर उनके बारे में कुछ लिख रहा हूं। अतः विद्वान् जन क्षमा करें, यही हार्दिक विनय है। परम तत्वज्ञानी भीष्म पितामह से धर्म के सम्बन्ध में महाराज युधिष्ठिर ज्ञान प्राप्त कर रहे थे उसी सिलसिले में भगवान शंकर के बारे में युधिष्ठिर ने जानने की जिज्ञासा प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की। तो उत्तर में यही कहना पड़ा कि जिसने मानव की देह धारण कर रखी है वह शिवजी की महिमा नहीं कह सकेगा। महाभारत में लिखा भी है:—

अशक्तोऽहं गुणान् वक्तुं महादेवस्य धीमतः।
यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते॥

अर्थात्:— उन महादेव के गुणों का बखान करना मेरे लिये सर्वथा कठिन ही है क्योंकि वे सबमें निवास करते हुये भी किसी को दिखाई नहीं देते।

वहीं पर योगिराज कृष्ण भी विद्यमान थे, उधर महाराज युधिष्ठिर को निराश करना भी उचित नहीं था अतः पितामह ने कृष्ण से भगवान् शंकर की महिमा का वर्णन उपस्थित सज्जनों के बीच करने को कहा पर कृष्ण भी उनके सब गुणों का वर्णन करने में असमर्थ रहे उन्होंने भी कुछ गुणों की चर्चा युधिष्ठिर की विशेष इच्छा पर की।

सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर हमें एक बात ज्ञात होती है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम, और कृष्ण सभी एक है, उनके नाम भिन्न भिन्न हैं। जिस प्रकार चंद्रमा, सूर्य या समुद्र के विभिन्न पर्यायवाची शब्द होते हैं। उसी प्रकारमें सब नाम एक ही शक्ति के माने जा सकते हैं। किसी चौराहे पर जाने के लिए पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशाओं से चलने वाले पथिक भी पहुँच जाते हैं, जब एक स्थान पर जाने के लिए शहरों और गांवों तक में विभिन्न गलियां और सड़कें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती हैं फिर आत्म साक्षात्कार, ईश्वर दर्शन या ... बड़ी मंजिल तक पहुँचने के लिए एक नहीं अनेक मार्ग ... उनमें से किसी एक मार्ग को चुनकर आसानी से पहुँचा सकता है। भारतीय संस्कृति की यदि सबसे बड़ी ... विशेषता है तो वह यही है कि इसमें हमें अनेकता के बीच एकता के दर्शन होते हैं। राम, कृष्ण, शंकर, हनुमान, गणेश, दुर्गा या अन्य किसी भी देवता को पूजनेवाला हो, किसी भी ढंग से आराधना की क्रिया को सम्पन्न करता हो। दैनिक पाठ गीता का करे, या रामायण का, या महाभारत का हिन्दू कहलाता है। यही तो धर्म की सबसे प्रमुख स्वतंत्रता भारत को दी गई है उसे अन्य धर्मों की तरह किसी एक महापुरुष या धर्म ग्रन्थ के पीछे बांधा नहीं गया वरन् यहां तो छूट दी गई है जिस रीति से भी चाहो अपने आराध्य देव की उपासना करो। यही कारण कि है भारतीय संस्कृति और सभ्यता सबसे पुरानी है।

सब की उपासना का लक्ष्य तो एक ही होता है। ईश्वर को सर्वशक्तिमान, दीनदयालु, सर्वव्यापक, अन्तर्यामी, प्रत्येक प्राणी की चिन्ता रखनेवाला और सर्वोपरि जानकर अपने गुरु तथा आचार्यों द्वारा बताये गये ढंग से की जाने वाली उपासना एक ईश्वर की उपासना होती है क्योंकि ईश्वर तो भावना के भूखे हैं। समन्वयवाद के इस सिद्धान्त से अपरिचित होने के कारण भले ही एक व्यक्ति दूसरे देवता की निन्दा करे, राम का उपासक कृष्ण की और हनुमान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपासक शंकर की निन्दा करता हुआ पाया जाता है निन्दा न करने वालों में से बहुत से ऐसे होते हैं जो अन्य शक्तियों के प्रति उदासीनता की वृत्ति तो अपना ही लेते हैं। एक पति में आस्था रखनेवाली पत्नी की जरा कल्पना कीजिए उसके इष्ट देव उसके पति ही तो हैं पति में ही तो उसका सारा ध्यान लगाये रखती है, और उनकी सेवा में ही अपने कर्तव्य की पूर्णता का अनुभव करती है पर पति की आज्ञा से सास ससुर, देवर, देवरानी, जेठ, जेठानी तथा अन्य बन्धु बान्धवों की भी सेवा करती है। पर ऐसी सेवा भाव रखने वाली पत्नी एक पति से ही सम्बन्ध रखते हुए भी सबकी प्यारी, दुलारी और लाड़ली बन जाती है। सेवा का यह गुण ही उसकी शोभा में वृद्धि कर देता है ठीक उसी प्रकार एक आराध्यदेव में ध्यान लगाते हुये अन्यों को भी पूर्ण रूप से सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिये। जब ब्रह्म एक है और उसके नाम विभिन्न प्रकार के हैं फिर द्वेष और निन्दा का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

विष्णुने या ब्रह्माने न तो किसी देव की कभी स्वयं निन्दा की, न निन्दा सुनी और न किसी भक्त जन को ऐसा करने के लिए कहा ही फिर क्यों हम व्यर्थ का वितण्डावाद समाज के सन्मुख रखकर उसे चोट पहुंचावें? दूसरे के उपास्यदेव का अपमान करना अपने ही देव का अपमान करना माना जावेगा। रामचरित मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम रामने स्पष्ट कह दिया है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरउ एक गुपुत मत सबहि कहौं कर जोरि।
संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि।

पद्म पुराण में भी भगवान् रामने शिवजी से कहा है कि आप मेरे हृदय में रहते हैं और मैं आपके हृदय में। उपासना की दृष्टि से हम दोनों एक ही हैं। आपकी उपासना मेरी उपासना और मेरी उपासना आपकी उपासना है। आपके भक्त मेरे भक्त और मेरे भक्त आपके भक्त हैं इतना होने पर भी यदि अन्तर मुझ में और आपमें कोई करता है तो उसका स्थान नरक ही माना जाना चाहिये। शिव पुराण में विष्णु और शिव दोनों की उपासना का एक ही फल बताया गया है। दोनों एक दूसरे के हृदय में वास तो करते ही हैं एक के दर्शन का फल भी दूसरे के दर्शन का फल है। दोनों को दोनों में भेदभाव की नीति न रखनेवाला ही प्रिय है। भगवान् विष्णु ने श्रीमद्भागवत में यहां तक कहा है:—

त्रयाणामेक भावानां यो न पश्यति वै भिदाम्।
सर्व भूतात्मनां ब्रह्मन् स शान्तिमधिगच्छति॥

अर्थात— "हम तीनों एक रूप हैं और समस्त भूतों की आत्मा हैं हमारे अन्दर जो भेद-भावना नहीं करता बिना शंका के वह शान्ति को प्राप्त होता है।"

भगवान् शिव के सच्चे स्वरूप को जानकर उनकी उपासना से सब कुछ प्राप्त होता है। सकाम और निष्काम दो प्रकार की साधना हैं। सकाम साधना को भी बुरा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ना चाहिये ये साधक उन व्यक्तियों से तो श्रेष्ठ हैं ही जो ईश्वरीय सत्तामें विश्वास नहीं करते। सकाम साधक भी यदि साधना में लगे रहें तो निष्काम साधक आगे चलकर बन ही जाते हैं पर शर्त यह है कि उनकी साधना निरन्तर चलती रहे। आज कल अनेक साधक मनोवांछित फल पाने हेतु विशेष प्रकारके जप तप करते रहते हैं जैसे ही उनकी इच्छा की पूर्ति हुई की ईश्वर का नाम जपना भी उनके लिये हराम हो जाता है। लोगों में ऐसी मान्यता है कि शिव जी अपनी उपासना से बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं और बहुत शीघ्र ही मन चाही वस्तु प्रदान कर देते हैं। इसीलिये सन्त तुलसी ने अवढर दानी की बात कही है। भइया! फल की प्राप्ति तो श्रद्धा, और विश्वास से होती है।

भगवान् शंकर से सम्बधित तत्व ज्ञान तो पूरी तरह से अनुकरणीय हैं यदि विश्व को शिवमय भी मान लिया जावे तो भी कोई अनुचित विचार नहीं है। क्योंकि उनकी इच्छानुसार ही जगत् की रचना होती है। वे प्रत्येक जीवधारी का ख्याल करने वाले हैं। जैसे जल में सुर्य और चन्द्र का प्रतिबिम्ब पड़ता है और ये ग्रह जल से दूर रहते हैं वैसे ही शिव सृष्टि के अन्दर रहते हुये भी वे सृष्टि में नहीं रहते अथवा इस बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है वे सृष्टि में रहते हैं उनमें सृष्टि नहीं रहती। सब स्थान पर शिव हैं भ्रम के कारण ही वे चहुँ ओर नाना स्वरूपों में दिखाई देते हैं दूध में जैसे घृत और काष्ठ में जैसे अग्नि छिपी रहती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे ही भगवान् सब जगह विद्यमान रहते हैं जो भ
है, जिसमें उपासना करने की लाग है या मन्थन क
सामर्थ्य है उसे ही शिव जी के दर्शन होते हैं। प्राची
में गुरुद्रुह नामक भील को तो अनजान में शिवरात्रि
कर लेने पर भगवान् शंकर के दर्शन होगये थे। शंक
कृपा से उस भील ने जो हिरन की हत्या करने पर भी
था, साफ छोड़ दिया और भगवान् के चरणों में गिर
करने लगा। दानी स्वभाव के शंकर प्रसन्न हो जाने प
में कोई कसर नहीं करते उन्होंने उस भील को गुह
देकर कहा 'प्रिय! तुम कोई चिन्ता न करो मेरे भ
प्रेम करने वाले श्री राम तुम्हारे घर अवश्य एक दिन
और तुमसे मित्रता करके सहयोग प्राप्त करेंगे इससे
बोल तुझे अब क्या चाहिये।' अनजान में व्रत करने
इस भील ने मोक्ष की प्राप्त की थी।

भगवान् की दयालुता की बात कहाँ तक कही जावे
बार धौम्य के बड़े भाई उपमन्यु को मामा के आश्रम में
दूध पीने को मिला तो उपमन्यु बड़े व्याकुल हैं। दूध की
अपनी माता से लगाने लगे निर्धन माता दूध की कहाँ
व्यवस्था करती सब प्रकार से समझाने की कोशिश भी
पर बाल हठ भला कैसे शान्त होने वाली थी, कुछ सं
बीजों को पीस पानी में मिला जब दूध के नाम से पीने
लिये देने लगी, उस अबोध बालक ने दूध के धोखे में
पेय पदार्थ को पी अवश्य लिया पर वह ताड़ गया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध नहीं है और फिर जोर जोर से रोने लगा। माता का हृदय कितना कोमल होता है वह भी बेचारी रोने लगी उसने यही कहा 'बेटा ! हम दरिद्री हैं, दुध की व्यवस्था करना हमारे बस की बात नहीं है। हमने आज से पूर्व कभी भी शिव जी की पूजा धन की लालसा से नहीं की और न पूर्व जन्म में शंकर के उद्देश्य से कुछ दिया ही है यदि दिया होता तो आज किसी न किसी प्रकार से अवश्य मिलता।' चतुर बेटा माता की सब बात चुप चाप सुनता रहा फिर वह बोला 'माँ! यदि ऐसा है तो मुझे माता पार्वती सहित भगवान् शंकर की उपासना करने की आज्ञा दे। मैं उनसे क्षीर सागर के लिये विशेष प्रार्थना करूंगा।' बेटे की उपासना सम्बन्धी तीव्र लालसा जानकर 'ॐनमः शिवाय' का मंत्र माता ने जपने के लिये बता दिया।

बड़े ही प्रेम और श्रद्धा से हिमालय पर्वत की चोटी पर शिव लिंग की स्थापना कर उपमन्यु ने माता के शुभाशीर्वाद से वायु पर अवलम्बित रहते हुये मंत्र जाप प्रारम्भ किया। उपमन्यु एकाग्र चित्त से शिव-साधना में लीन थे अनेक प्राणियों ने उन्हें परेशान भी किया पर उनकी तपस्या भंग न हुई। ऐसी साधना देखकर बाधक साधक और सेवक बन गये। आखिर भगवान् जो सदैव से भक्तों के वश में होते हैं, कब तक अपने भक्त की पुकार को सुनी अनसुनी कर सकते थे इन्द्र के रूप में ऐरावत हाथी पर सवार हो उपमन्यु की परीक्षा हेतु पहुँचे। फिर क्या था उपमन्यु की तपस्या भंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई सामने प्रभु को देखकर नेत्र प्रेम जल से छल-
और प्रणाम करते हुये यही कहा 'भगवान् आपके
से यह भूमि पवित्र होगई है।' इन्द्र का रूप धारी
पूर्ण रूपेण प्रसन्न हूँ मैं तो तुम्हारी इच्छाओं को पूरी
आया हूँ जिन वस्तुओं को तुम्हें आवश्यकता हो नि
माँग सकते हो।' उपमन्यु ने केवल शिव भक्ति ही
प्रकट की। भगवान् तो परीक्षा लेने आये ही थे उन्हों
की तमाम बुराइयाँ करना शुरू कर दीं उन बुराइयों को
भक्त सुन कैसे सकता वह उपमन्यु गरज कर शिव
इन्द्र रूप शिव को मारने के लिये तैयार होगये शि
अपमान सुन दूध भात तो वह भूल गया और शिव के
मान का मजा चखाने के लिये तैयार होगया।
परीक्षा के बाद अपने भक्त का कभी अहित भी तो
चाहते अतः शिव ने स्वरूप बदल कर उपमन्यु की
भी परवर्तित कर दी और हजारों क्षीर सागर, दधि
घृत सागर और अमृत के सागरों के दर्शन
भगवान् शंकर के भी पार्वती के साथ वृषभ
बैठे हुये उपमन्यु ने दर्शन कर अपने को भाग्यशाली
भगवान् शिव इतने प्रसन्न हुये कि उपमन्यु को अपना
स्वीकार कर लिया और विभिन्न प्रकार से शुभा
दिये। माता पार्वती ने भी उसे अपना पुत्र जानकर
पर अपना वरद हस्त रखा और गोद में बिठा लिया
बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की। महादेव जीने कृपा करते हुये
में बिदाई ली। साधना का फल कितना मीठा होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा से आपने जान ही लिया पर साधना भी सच्चे हृदय से आत्मा की पुकार होनी चाहिये। आत्मा की पुकार सदैव प्रभु सुनते हैं और वरदान देते हैं।

साधक के मन में श्रद्धा और भक्ति का होना अनिवार्य माना गया है इसके अभाव में जप, तप, साधन, ज्ञान, तथा योग की विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ भी व्यर्थ मानी जाती हैं, क्योंकि ऐसी कोई आराधना से शिव जी कभी भी किसी पर प्रसन्न नहीं होते। यदि व्यक्ति में श्रद्धा का अंकुर किसी न किसी रूप में विद्यमान हो फिर चाहे अन्य पूजन सामग्री न भी हो तब भी भगवान् उस पर अपनी कृपा का हाथ रख ही देते हैं। शंकर को वश में करने के लिये सर्व प्रथम श्रद्धा का निरूपण करना होगा फिर केवल कृपा ही नहीं होती वरन् दर्शन, आशीर्वाद और बात चीत करने का भी स्वर्ण अवसर प्राप्त हो सकेगा श्रद्धा को धर्म का मूल बताया गया है। मोक्ष के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार का श्रम व्यर्थ माना जाता है। धर्म के चार चरण प्रमुख रूप से माने गये हैं, वे हैं ज्ञान, क्रिया, आचरण और योग। चित्त की निर्मलता ही सब कार्यों की सफलता का कारण मानी जा सकती है। विषय भोग में लगे रहने वाले व्यक्तियों से कोई आशा करना बेकार है जो व्यक्ति संयम द्वारा विभिन्न इन्द्रियों पर नियंत्रण कर लेता है वही योग को प्राप्तकर सकता है। योग के द्वारा समस्त पिछले पापों का क्षय हो जाता है और निर्मल मन हो जाता है निर्मल मन साधना में खूब लगता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि साधना विशुद्ध सात्विक कर्म है जिससे शु
और बुद्धि की आवश्यकता पड़ती है। योग की सिद्धि
एक कार्य से नहीं हो जाती छोटे से छोटा कार्य हमारे
को बनाने और बिगाड़ने में बड़े से बड़ा महत्व रख
परोपकार, अपने स्वार्थ की अवहेलना करते हुये दू
सहायता करना, समस्त प्राणियों को अपने समान
किसी को दुःख न देना, सत्य भाषण करना, ईश्वर पर
तरह से भरोसा रखना, धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय
और सदैव ज्ञानी बनते हुये दूसरों को ज्ञानवान बनं
प्रेरणा देने वाले व्यक्तियों से ही यह आशा की जाती है
योग की सिद्धि में भी सफलता प्राप्त करने के अधि
होंगे।

ईश्वर की महती कृपा होनेपर ज्ञान रूपी अग्नि से
मय शरीर को दग्ध करके शुद्ध विचारों वाला बनाया
सकता है और तभी कर्म बन्धन से मुक्ति मिलती है
से फल प्राप्ति की भावना जब तक साथ नहीं छोड़ती
तक साधना भी अपूर्ण रहती है, और बन्धन भी अ
से अधिक रहते हैं, कर्म के लिये बिना फल की इच्छा
हुये प्रगति पथ पर बढ़े। कर्म का फल तो प्राप्त होगा ही
शंका करने का कोई प्रश्न ही नहीं अच्छे कर्म का फल श्रेष्ठ
बुरे का फल बुरा होता है। विचारकों ने भजन तीन प्र
का बताया है, तन, मन और वाणी के सहयोग से बाह्य
तो प्रारम्भिक स्थिति में ही करने योग्य होता है इसे अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग की 'कखग' स्थिति कहना चाहिये मुख्य साधना जो आन्तरिक अर्थात् मन से की जाती है वही सर्व श्रेष्ठ होती है। क्योंकि भजन, पूजन, उपासना ध्यान का आदि का मूल उद्देश्य आन्तरिक शुद्धि है, मन को सुधारना है। विभिन्न प्रकार की औषधियों का प्रयोग करने पर भी यदि रोग का उन्मूलन न हो सके तो सारा श्रम, धन और समय व्यर्थ ही माना जाता है वैसे ही कोरे कर्मकाण्ड में लगे रह कर यदि आध्यात्मिक प्रगति बिल्कुल भी नहीं हो पाती है तो वे दिन जीवन के बेकार चले गये ऐसा ही माना जाना चाहिये।

भगवान् शिव की पूजा करने वाले व्यक्तियों की इच्छाओं की पूर्ति शीघ्र ही हो जाती है। जो देवताओं का चिन्तन या आराधन करते हों उन्हें शिव जी के स्वरूप की आराधना भी अवश्य करनी चाहिये। ध्यान और चिन्तन दोनों एक ही वस्तु के दो पार्श्व माने जाते हैं बार बार चिन्तन करने से ध्यान मुद्रा में एकाग्रता आती है। श्रद्धा के साथ बिना किसी सांसारिक बिघ्न बाधा के जो एक क्षण को भी ध्यान किया जाता है वह भी फलकारी होता है। ज्ञान प्राप्ति के लिये भी ध्यान की आवश्यकता पड़ती है। और जिसने ज्ञान तथा ध्यान दोनों को पा लिया फिर संसार में अन्य कोई भी वस्तु पाने को शेष नहीं रह जाती। छोटे से दीपक से अन्धकार समाप्त हो जाता है, अग्नि की धधकती हुई ज्वाला गीली लकड़ियोंको भी स्वाहा कर देती हैं। थोड़ा सा ज्ञान भी अज्ञानता को दूर करने में काफी माना जाता है, थोड़े से योगाभ्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वारा पापों का अन्त होता है उसी प्रकार थोड़ी साधना करने वाले को फल प्राप्त होता है और प्रगति पर प्रशस्त होने के लिये ईश्वर की उपासना ही प्रमुख है जिस पर बैठ कर भवसागर पार किया जा सकता है पुराण में तो ध्यान करने का स्पष्ट आदेश हमें मिलता है

नास्ति ध्यानसमं तीर्थं नास्ति ध्यानसमं तपः।
नास्ति ध्यानरूपो यज्ञस्तस्माद्ध्यानं समाचरेत्॥

अर्थात्:— ध्यान के समान कोई तीर्थ नहीं है, ध्यान के समान कोई तप नहीं है और ध्यान के समान कोई यज्ञ नहीं है इसलिये ध्यान अवश्य करना चाहिये।

जैसे माता पिता को अपनी सन्तानों से प्रेम होता है, लोभी को अपनी सम्पत्ति प्रिय लगती है, कामी का प्रेम केवल नारी से ही होता है, राजा अपनी देश की जनता को विशेष सम्मान देती है वैसे ही भगवान् शंकर को उन भक्तों से विशेष प्रेम है जो सच्चे मन से उनकी साधनामें रत रहते हैं। ज्ञान योग की साधना में रत रहने पर विजय तो होगी ही। समस्त दुःख और पापों का अन्त करने के लिये शंकरजी की उपासना ही करनी चाहिये इससे ही शिव की पूर्णता प्राप्त होगी इसके बाद फिर परिव्राजकों की तरह समाज में घूमघूमकर जनता का सुधार करना, भटकों को ठीक रास्ते लगाना और सेवा भावना रखना कर्तव्य है।

आज विनाश की सामग्री तैयार करने में विश्व के अनेक देश रत हैं पर शायद वे भूल गये हैं कि शंकर के तीसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्र की तुलना में वैज्ञानिकों के अणुबम, परमाणु बम और मेगाटन बम आदि कोई सानी नहीं रखते फिर भी उन्हें गर्व है और उस गर्व में ही धन का, बुद्धि का और जन शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं। आज अनेक देशों में साम्राज्यवाद की लोलुप नीति की इच्छा की जा रही है जिसके परिणामस्वरूप एक देश दूसरे देश पर बिना किसी कारण आक्रमण कर रहा है। मानव दानव बनकर अपने साथियों को निगलने के लिए तैयार है। चीन जैसे दुष्ट देश ने शान्तिमय भारत पर आक्रमण किया उधर पाकिस्तान की बेहूदा नीति चल रही है। हे प्रभु! ऐसे समय में जरा तो कृपा कीजिए। उन्हें अपनी करनी का फल दीजिए। हिमालय पर्वत पर जो आपकी समाधि स्थल रहा है उस पर लोगों ने चोटें करके आपको और अपने देश को अपमानित करने का प्रयास किया है। हे महादेव! आपकी शक्तिका उपयोग करने का सर्वश्रेष्ठ समय यही तो है। लोग भाग्यवाद के नाम पर रो रहे हैं। धन का असमान वितरण आधी से अधिक जनसंख्या को नारकीय जीवन में रहने के लिए मजबूर कर रहा है। अतः प्रभु आपसे यही प्रार्थना है कि आपका शिव तत्व का वास्तविक स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति भली भांति जान जावे और एक भाई दूसरे को शत्रु के स्थान पर भाई समझता हुआ सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करे। एक दूसरे के हित का ध्यान रखते हुए नवीन आविष्कार हों। जब तक वैज्ञानिक अनुसन्धान की विषम ज्वाला शान्त नहीं होती तब तक मानव निर्भय होकर अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति में नहीं लग सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(देश विदेशके सुप्रसिद्ध एवं)

प्राचीन शिव मंदिर

ले. श्यामसुंदर ला...

महाशिवरात्रि भगवान् शंकर का पुण्य पर्व है। इस... शिव-भक्त जनता विशेष रूप से शिव मन्दिरों में ... भगवान् के दर्शन एवं पूजन करती है। इस अवसर पर ... निराहार व्रत रखते हैं, पूर्ण रात्रि जाग कर कीर्तन-... आदि करते हैं।

हिन्दू धर्म-ग्रन्थों में भगवान् शंकर की बड़ी महिमा ... गई है। उन्हें देवाधिदेव महादेव की उपमा से अलंकृत कि... गया है। ये वेदों के भी समाराध्य देव हैं। इनके जि... अनोखे काम हैं उतने ही इनके नाम भी हैं। कोई ... भगवान् शंकर, कोई शिव, कोई महेश, कोई बाबा विश्व... भोलेनाथ, कोई पशुपतिनाथ तो कोई महामृत्युञ्जय कह...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकारता है। पुण्य-सलिला भागीरथी की हीरक सी सोहती पुण्योज्ज्वल धारा इनके मस्तक से निकल कर अग्रसर होती है। शिवपुराण में एक स्थल पर उल्लेख किया गया है कि भगवान् शंकर मृत्युलोक में बसे प्राणियों के कल्याणार्थ स्थान-स्थान पर लिंगरूप में वास करते हैं। भारत और भारत के बाहर भी अनेक प्राचीन शिव मन्दिर हैं किन्तु कुछ ऐसे भी हैं जिनके बारेमें हमें ज्ञान नहीं हो पाया है। यहां कुछ प्रसिद्ध शिव मन्दिरों के बारे में संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है :—

श्री काशी विश्वनाथ का मन्दिर

आदिकाल से पतित-पावनी काशी भगवान् शंकर के त्रिशूल पर स्थित विश्व की प्राचीनतम नगरी है। काशी को बनारस या वाराणसी नामों से भी पुकारा जाता है। श्री काशी विश्वनाथ के मन्दिर का उल्लेख पुराणों में भी पाया जाता है। कई बार विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा इस मन्दिर को विनष्ट करने का प्रयास किया गया। औरंगजेब ने प्राचीन विश्वनाथ मन्दिर को ध्वस्त करके उसके स्थान पर एक विशाल मस्जिद बनवा दी जो आज भी उसी प्रकार खड़ी है। चीनी यात्री ह्वेन सांग ने लिखा है कि यह प्राचीन विश्वनाथ मन्दिर सौ फुट से भी अधिक ऊँचा था और उसमें शिवलिंग के अतिरिक्त शिवमूर्ति विग्रह भी प्रतिष्ठित था। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने इस मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया। मन्दिर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुम्बजों में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियां अंकित हैं [illegible] सोना भरा हुआ है। कहते हैं कि इस मन्दिर के पुन[illegible] के कुछ ही वर्षों बाद इन मूर्तियों में सोना भरने [illegible] लाहोर के राजा रणजीतसिंह ने साढ़े बाईस मन स्वर्ण [illegible] दिया था। इसमें कार्तिकेय और गणेश, मोरवाहिनी स[illegible] नन्दी आदि की मूर्तियां भी स्थापित हैं। अपनी स्था[illegible] कला के लिए यह मन्दिर देशभर में प्रसिद्ध है। विदे[illegible] यह गोल्डेन टेम्पुल के नाम से विख्यात है। इस समय [illegible] में इस अति प्राचीन मन्दिर के अतिरिक्त दो और मन्दि[illegible] का निर्माण भी किया गया है जिसमें काशी हिन्दू वि[illegible] विद्यालय के प्रांगण में बना बिड़ला का नया विश्व[illegible] मन्दिर तो इस नगरी का एक मुख्य आकर्षण केन्द्र बन [illegible] है। इसके निर्माण में कई लाख रुपये व्यय हो चुके हैं [illegible] अभी तक इसमें काम लगा ही हुआ है। काशी के उत्त[illegible] एक महामृत्युञ्जय का मन्दिर और रामनगर के पास [illegible] बड़े वेदव्यास का मन्दिर है जिसमें विशाल शिवलि[illegible] प्रतिष्ठित है। भक्तजनों का विश्वास है कि काशी के कंक[illegible] कंकड़ में भगवान् शंकर का वास है।

मथुरा के शिव मन्दिर

मथुरा वैष्णवों की प्रधान नगरी होते हुये भी शि[illegible] मन्दिरों से भरी पड़ी है। इस नगरी के चारों ओर भगवा[illegible] शंकर विराजमान हैं। पूर्व में श्री पिप्पलेश्वरनाथ, पश्चिम [illegible] श्री भूतेश्वरनाथ, उत्तर में श्री रगेश्वरनाथ और दक्षिण [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गोकर्णेश्वरनाथ के मन्दिर हैं। कालिन्दी के शृंगार घाट पर स्थित श्री पिप्पलेश्वरनाथ का मन्दिर श्री पिप्पलायन ऋषि द्वारा स्थापित किया गया है। पुराणों के कथनानुसार क्षेत्रपति श्री भूतेश्वरनाथ के दर्शन जो यात्री नहीं करते उनकी सम्पूर्ण यात्रा विफल हो जाती है। इस मन्दिर का निर्माण मधु दानव की पराजय के उपरान्त हुआ था। श्री रंगेश्वरनाथ का मन्दिर कंस टीले पर बना हुआ है। सबसे प्राचीन मन्दिर श्री गोकर्णेश्वरनाथ का है जिसका निर्माण किसी इन्डो-सीथियन राजा ने करवाया था। श्री गोकर्णेश्वरनाथ की विशालकाय मूर्ति के एक हाथ में खप्पर तथा दूसरे हाथ में पुष्प है। इनके सर पर भी बड़े-बड़े बाल दाढ़ी और मूंछ दर्शाई गई हैं।

उत्तराखण्ड का केदारनाथ मन्दिर

ऋषिकेश से लगभग १३० मील की दूरी पर स्थित श्री केदारनाथ के मन्दिर में अन्धकार रहने के कारण सदैव दीपक जलता रहता है। मथुरा के श्री भूतेश्वरनाथ की ही भांति श्री बद्रीनाथ के यात्रा करने वाले भी श्री केदारनाथ का दर्शन अवश्य ही करते हैं अन्यथा केदारनाथ खण्ड के लेखानुसार उनकी यात्रा से कोई पुण्य लाभ नहीं होता।

मैसूर के शिव मन्दिर

भारत के लगभग सभी शिव मन्दिरों में मैसूर के जैसे शिवालय अन्यत्र मिलने दुर्लभ हैं। हलेविद का श्री हायसले-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वर मन्दिर भारतीय निर्माण-कला का अनुपम नमूना है। इसकी दीवारों पर पौराणिक गाथाएं अंकित हैं। मन्दिर के चारों द्वारों पर श्री ताण्डवेश्वर की सुन्दर मूर्तियां हैं। शृंगेरी का ६०८ वर्ष पुराना विद्याशंकर का मन्दिर द्राविड़ स्थापत्य कला की एक अनूठी देन है।

श्री जटाशंकर महादेव का मन्दिर

बिजावर तथा छत्तरपुर की सीमा पर श्री जटाशंकर महादेव का मन्दिर है। कहते हैं कि इसके पास बने कुण्ड के गर्म जल का सेवन तथा स्नान करने से सभी प्रकार के पुराने रोग अच्छे हो जाते हैं।

काठमाण्डू का श्री पशुपतिनाथ का मन्दिर

हमारे पड़ोसी देश नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में श्री पशुपतिनाथ की स्वर्णनिर्मित पंचमुखी मूर्ति है। मूर्ति के चहुं ओर चांदी का जंगला लगा हुआ है जिसके पास अन्य मन्दिर के भट्ट-पुजारियों के अतिरिक्त किसी को भी जाने की आज्ञा नहीं है। इस मन्दिर में उन्हीं पुजारियों को रखा जाता है जो आजीवन नमक नहीं खाते। शिवरात्री के पर्व पर ही दर्शनार्थियों को मूर्ति के पास जाने की अनुमति मिलती है। इस अवसर पर भारत से भी बहुत बड़ी संख्या में भक्तजन काठमाण्डू जाते हैं और भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शन एवं पूजन कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं।

श्री जागेश्वर महादेव का मन्दिर

सागर जिले के बांदकपुर गांव में श्री जागेश्वर महादेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिर के सामने ही महादेवी पार्वती का मन्दिर है। श्री जागेश्वर महादेव में शिव जी का स्वयंभू लिंग स्थापित है। शिवरात्रि के अवसर पर यहां एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

श्री कालहस्तीश्वर का मन्दिर

आर्कट जिले में स्वर्णमुखी नदी के किनारे श्री कालहस्तीश्वर का भव्य मन्दिर है जिसमें भगवान् शंकर का चौकोर शिवलिंग प्रतिष्ठित है। कहते हैं कि यह लिंग एक विशेष वायु के झोके के रूप में विराजमान रहता है इसलिए इस शिवलिंग को वायु लिंग कहा जाता है।

उज्जैन का महाकालेश्वर मन्दिर

महाकालेश्वर का पंचमंजला विशाल मन्दिर उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे है। नीचे के भाग में श्री महाकालेश्वर की बहुत बड़ी मूर्ति है और ऊपर श्री ओंकारेश्वर की मूर्ति विराजमान है। कहते हैं कि इस मन्दिर का उद्धार ११ वीं शताब्दी में राजा भोज ने कराया था। मन्दिर के सामने नन्दी की विशाल प्रतिमा है। महाकालेश्वर की मूर्ति के पास ही गणेश-पार्वती तथा कार्तिकेय की मूर्तियां स्थापित हैं। महाकाल को प्रतिदिन प्रातः चिताभस्म लगाई जाती है और मन्दिर में अखण्ड दीपक प्रज्वलित रहता है।

श्री भीमशंकर महादेव का मन्दिर

काशीपुर नैनीताल के पास स्थित उज्जनक नामक स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में स्थित इस अति प्राचीन शिव मन्दिर का निर्माण प्राय: शिला लेखों द्वारा सन् ३०२ आंका गया है। मन्दिर में स्थापित मूर्ति बहुत बड़ी है।

शिवकांची का शिव मन्दिर

इस विशाल मन्दिर में भगवती पार्वती द्वारा प्रतिष्ठित एकाभ्रनाथ क्षिति लिंग विराजमान है। इस क्षिति लिंग को प्रतिदिन प्रातः चमेली के तेल से स्नान कराया जाता है।

श्री ताड़केश्वर महादेव का मन्दिर

ताड़ के वृक्ष में से शिवलिंग निकलने के कारण इसका नाम ताड़केश्वर महादेव पड़ा। इस मन्दिर की परिक्रमा के लिए एक गुफा में से निकलना पड़ता है। मन्दिर के सामने के प्रांगण में भक्तजन रात्रि व्यतीत करते हैं। कहा जाता है कि श्री ताड़केश्वर महादेव भक्तजनों को स्वप्न में दर्शन देते हैं जिससे उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। लोग मन्दिर के पास के वृक्ष में मौली आदि बांध कर मान्यताएं मानते हैं।

श्री विरेश्वर महादेव का मन्दिर

श्री विरेश्वर महादेव का मन्दिर विजयनगर महीकांठा की सीमा पर स्थित है। इस हजारों वर्ष पुराने मन्दिर के पास एक सरोवर और एक गूलर का वृक्ष है। कहते हैं कि गूलर के पेड़ की जड़ों से सरोवर को जल प्राप्त होता है। इस सरोवर की एक आश्चर्यजनक बात यह भी है कि जब लोग जोर से जय भोलेनाथ या विश्वेश्वर महादेव की जय बोलते हैं तो इसका पानी ऊपर की ओर उठता हुआ प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री वृहदेश्वर का मन्दिर

प्राचीन नगर तंजौर का सुप्रसिद्ध श्री वृहदेश्वर का मन्दिर–११ वीं शताब्दी की भारतीय निर्माण कला की अनुपम कलाकृति है। मन्दिर के बाहर नन्दीश्वर की लगभग १२ फीट ऊँची, ७ फीट चौड़ी तथा १८ फीट लम्बी विशाल प्रतिमा है जिसके दर्शन हेतु दूर-दूर से लोग हजारों की संख्या में आते हैं।

श्री सोमनाथ का मन्दिर

इतिहास प्रसिद्ध सागर की लहरों से पादप्रक्षालन कराने वाले भव्य सोमनाथ के मन्दिर के बारे में सभी को थोड़ी-बहुत जानकारी अवश्य ही होगी। स्कन्दपुराण, श्रीमद्भागवत, शिवपुराण तथा महाभारत आदि अनेक ग्रन्थों में इस मन्दिर की महिमा का विषद् वर्णन है। इतिहासकार बरूनी, याकूत, काजविनी, दिमिश्की, अबुलफिदा आदि प्रख्यात विद्वानोंने भी सोमनाथ का अपनी कृतियों में वृहद् वर्णन किया है।

काठियावाड़ प्रदेशान्तर्गत स्थित इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कुछ ही वर्ष हुये पूर्ण हुआ था। इस मन्दिर को कई बार आक्रमणकारियों ने विनष्ट करने का प्रयास किया। सन् १०२५ में सुल्तान यमीनुद्दौला महमूद इब्न सुबुक्तगीन ने सोमनाथ की मूर्ति को तोड़ा और मन्दिर की अनेक रत्नजड़ित स्वर्णप्रतिमाओं को लूटकर ले गया। सन् १२०४ में सुल्तान महमूद गजनवी ने इसे नष्ट-भ्रष्ट किया तथा अपार बहुमूल्य सामग्री लूटकर अपने साथ लेता गया। फिर सन् १२९७ में अलाउद्दीन खिलजी, सन् १३९५ में गुजरात के सुल्तान मुजफ्फरशाह तथा सन् १४१३ में अहमदशाह द्वारा यह ध्वंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया। कहते हैं कि इस मन्दिर में पहले गी... की ढलाईयुक्त सागौन के ५६ स्तम्भ थे। ये स्तम्भ ... नीलमणियों और रत्नों से जड़ित थे। मन्दिर के ... लगभग दो सौ मन वजन की एक विशाल स्वर्ण ... जञ्जीर लटकाई गई थी जिसके द्वारा विशाल घंटे ... ध्वनित किया जाता था। मन्दिर में तीर्थयात्रियों की सु... स्थाकार्य और मन्दिर की सेवा हेतु एक हजार ब्राह्मण ... भगवान् सोमनाथ की अर्चना करने के लिये पांच सौ ... देवदासियां नियुक्त थीं। लोहनिर्मित सोमनाथ की आधा... हीन प्रतिमा को देख कर लोग चकित हो जाते थे। ... चुम्बकीय आकर्षण के रहस्य का पता सुल्तान यमीनुद्दौ... महमूद इब्न सुबुक्तगीन को अपने एक सामन्त के ... द्वारा लगा था तभी तो वह इस अद्भुत प्रतिमा को गि... में सफल हो पाया था। यह प्रतिमा चुम्बकीय क्षेत्र ... शून्य में लटकी हुई थी। श्री काशी विश्वनाथ ... मन्दिर के पुनर्निर्माण की ही भांति इन्दौर की महारा... अहिल्याबाई ने संवत् १८३१ में श्री सोमनाथ के नाम से ... नये मन्दिर का निर्माण कराया जिसके गर्भगृह में भगवा... शंकर का ज्योतिर्लिंग स्थापित है।

मक्का–मदीना और लन्दन के शिव मन्दिर

इंगलैण्ड के लन्दन नगर में एक भव्य शिव मन्दिर है जिसकी पूजा के लिये वहां भारतीय हिन्दू पुजारी नियुक्त हैं। मुसलमानों के तीर्थ मक्का–मदीना के बीच मीना नाम... स्थान में भी तीन शिवलिंग विराजमान हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव तत्व का विवेचन

रुद्राणाम् शंकरश्चास्मि

लेखक
प्रो. श्याम मनोहर व्यास, एम. एस. सी

शिव कल्याणकारी देवता हैं । उनके विचित्र स्वरूप में, लीला में एवं साधनमें सर्वत्र लोक कल्याण भरा हुआ है। शिवतत्त्व को पूर्ण रूपसे समझना अति कठिन है । धर्म ग्रन्थों में लिखा है:—

यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।

वेद तक भी जिसके तत्व का निरूपण करने में चकित हैं, तो मुझ जैसा तुच्छ लेखक उस महान् शिवतत्त्व को कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ सकता है पर अन्तःकरण में बार बार शिवतत्व पर लिखने की आन्तरिक प्रेरणा उत्पन्न हो रही है, और आत्म प्रेरणा के स्रोत भी शिव ही हैं। अतः आज मैं शिव तत्व पर लिखन का दुस्साहस कर ही कर रहा। सर्वप्रथम शिवपुराण में शिवतत्त्व के बारे में देखिये:—

यतः सर्वं समुत्पन्नं येनैव पाल्यते हितत्।
यस्मिश्च लीयते सर्वं येन सर्वमिदं ततम्॥
तदेव शिवरूपं हि प्रोच्यते हि मुनीश्वराः।
सत्यं ज्ञानमनन्तं च चिदानन्द उदाहृतः॥
निर्गुणो निरूपाधिश्च निरञ्जनोऽव्ययस्तथा।
न रक्तो न च पीतश्च न श्वेता नील एवच॥
यतो वायो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
तदेव प्रथमं प्रोक्तं ब्रह्मैव शिव संज्ञितम्॥

(शिव-पुराण)

अर्थः— 'जिनसे इस विश्व की उत्पत्ति, पालन और संहार होता है, जो इस समस्त विश्व रूप में व्याप्त है, हे मुनिवरों वे वेद में शिवस्वरूप से कथित हैं। वही सत्य है, ज्ञान स्वरूप हैं, वही अनन्त हैं, असीम चिदानन्द हैं। वे निर्गुण, निरूपाधि, निरञ्जन और अव्यय है। वे रक्त, पीत, नील, श्वेतवर्ण नहीं हैं। वे तो मन और वाणी की पहुँच के परे हैं। वही ब्रह्म पहले 'शिव' नाम से कहे गये हैं।']

एक उपनिषद् में लिखा है:—

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता
पश्यत्यचक्षुःस श्रृणोत्यकर्णः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थः-['उनके हाथ नहीं, परन्तु वे ग्रहण करने में समर्थ हैं। चरण नहीं, किन्तु शीघ्रगामी हैं, चक्षु नहीं, परन्तु सर्व-द्रष्टा हैं। कर्ण नहीं तथापि वह श्रवण शक्ति युक्त हैं।']

कैवल्योपनिषद् में भी लिखा है:—

तमादिमध्यान्त विहिनमेकं
विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम्।
उमा सहायं परमेश्वरं प्रभुं
त्रिलोचनं नीलकण्ठं प्रशान्तम्॥

अर्थः-['वे आदि मध्य और अन्तहीन हैं, वे रूपहीन हैं, वे एक हैं-अद्वितीय हैं, चिन्दानन्द हैं, वे अद्भुत हैं, देवेश हैं, वे ही उमा सहचर त्रिलोचन नीलकण्ठ परमेश्वर हैं-अर्थात् जो निराकार हैं, वही साकार हैं।']

शिव डमरूवादक हैं। इससे 'अइउण' की ध्वनि निकलती है। यह ज्ञान, कला, साहित्य और विजय का प्रतीक है। शिव हर स्तर के व्यक्ति के आराध्य हैं।

ध्यानावस्था में वे एकाग्रता की साक्षात् मूर्ति हैं। वे परिश्रम के प्रतीक हैं। जड़ी बुटियों के वह आद्यदाता माने जाते हैं। इसीलिये वैद्य भी उनकी पूजा करते हैं। वैद्यनाथ धाम का शिवलिङ्ग इस बात का प्रमाण है। शिव विश्व बन्धुत्व व साहचर्य की भावना के प्रचारक हैं। इसीलिये वे सर्पों एवं भूत-प्रेतों तक को आश्रय देते हैं। वे शरणागतवत्सल हैं। इसीलिये उन्होंने चन्द्रमा को शरण दी! वे लोक कल्याण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी हैं इसीलिये उन्होंने विश्व हितार्थ समुद्र म
उत्पन्न हालाहल विष पिया। वे संयमी हैं इसीलिये
कामदेव को भस्म किया।

वे राष्ट्रीय एकता के प्रतीक देवता हैं।

शिवजी तन्त्रों के जन्मदाता थे। अनादि देव शिव
उनकी शक्ति के सम्मेलन से जो स्पन्दन उत्पन्न हुआ
सृष्टि की उत्पत्ति का कारण बना। इसी को शिव का
नृत्य करते हैं। आज वैज्ञानिक भी मानते हैं कि
विश्व कम्पनमय है। -णुओं का कम्पन ही गति है,
है। यह सारा विश्व दा शिव के नृत्य और नाद का
परिणाम है। जहाँ स्पन्दन (Motion) होता है वहाँ शब्द
होता है। इस प्रकार श्री शिव के डमरूके शब्द से (जो
और पुरुष के सम्मेलन के द्वारा नाद रूप में प्रकट हो
व्याकरण के मुख्य शब्द-सूत्र की एवं तन्त्रों की उत्पत्ति

शिवजी के त्रिशूल रखने का अभिप्राय है-त्रिताप
नाश करना अर्थात् त्रिताप से मुक्ति पाकर जागृत, स्व
सुषुप्ति-इन तीनों अवस्थाओं से भी परे तुरीया में पहुँच
ऐसा साधक ही यथार्थ त्रिशूलधारी हैं।

शिवजी को सृष्टि का संहारक मानते हैं। जिस
जीवन में जन्म और मृत्यु का बराबर महत्त्व है उसी
सृष्टि की उत्पत्ति व संहार का भी बराबर महत्त्व है।
शीर्ण सृष्टि एवं पापात्माओं का संहार कर उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन सृष्टि की रचना करना शिव जैसे कल्याणकारी देवता का काम है।

विष्णु व शिव में अन्ततः कोई भेद नहीं है।

गीता (१०-२३) में श्रीकृष्ण कहते हैं:—

रूद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरूः शिखरिणामहम्॥

अर्थः-['और मैं एकादश रूद्रों में शंकर हूँ और यक्ष तथा राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूं और मैं आठ वसुओं में अग्नि हूँ तथा शिखर वाले पर्वतों में सुमेरू पर्वत हूँ।']

एक पुराण में लिखा है:—

हरिहरयोः प्रकृतिरेका प्रत्ययभेदेन रूप भेदोऽयम्
एकस्यैव नटस्यानेकविधा :भूमिकाभेदात्॥

अर्थः-(हरि और हर में मूलत: भेद नहीं है। प्रत्यय में ही भेद होता है। नाटक में अभिनेता नाना रूप धारण करता है, परन्तु वस्तुत: वह जो है सो ही रहता है।')

शिव अनादि है। पर पुराणों में उनकी उत्पत्ति का भी वर्णन आया है—यथा—

तस्य ललाटात्यक्षः शूलपाणिः पुरुषेऽजायत।

(अर्थात् विष्णु के ललाट से शूल को हाथ में लिये हुये एक त्रिनेत्र पुरुष पैदा हुये।)

एतौ द्वौ पुरुष श्रेष्ठौ प्रसादक्रोधजौ मम।

(अर्थात् ये दो पुरुष श्रेष्ठ ब्रह्मा और रुद्र मेरे (विष्णु) के प्रसाद और क्रोध से पैदा हुये हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रादुरासीत्प्रभोरेकं कुमारो नीललोहितः।

(अर्थात् :ब्रह्मा की गोद में कुमार नील लोहित (शि) पैदा हुये।)

शिवजी के अनन्त नाम हैं और उनकी विभूतियाँ अपरिमित हैं। कोई उनको शिव, महादेव कहकर उपासना करता है तो कोई ब्रह्म, नारायण, पुरुष, कर्त्ता, कर्म, अर्हत्, बुद्ध आदि विभिन्न नामों से उनकी उपासना करते हैं।

'शिवमहिम्नस्तोत्र' में गन्धर्वराज पुष्पदन्त ने कहा है:-

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमत वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचिनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।

अर्थः— [स्मार्त, सांख्य, योग, पाशुपतमत, पाञ्चरात्र मत आदि 'यह श्रेष्ठ हैं', 'यह हितकर है' इत्यादि अपनी २ रुचि के अनुसार सीधे-टेढ़े अनेक मार्गों का अवलम्बन करनेवाले लोगों के एक आप ही गम्य हैं, जैसे कि नद, नदी, नाले, झरनों, स्रोतों के जलका एकमात्र आश्रय सागर है।']

एक कथा है।

एक बार देवगण महा कैलास को गये और उन्होंने शंकरजी से पूछा:—"आप कौन हैं?" शिवजी बोले—"मैं एक (प्रत्यग्रूप) हूँ। मैं सृष्टि के पूर्व में था, इस समय हूँ और भविष्य में भी रहूँगा—मैं तीनों कालों से अपरिच्छिन्न हूँ। मुझ सर्वेश्वर से अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वेताश्वतर उपनिषद् में रुद्र को महर्षि कहा है और उनकी महिमा के बारे में लिखा है:—

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च,
विश्वाधियोरुद्रो महर्षिः।
हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानं
स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु॥
(श्वे. ४-१२)

अर्थः—'जो देवताओं की उत्पत्ति करनेवाला है, ऐश्वर्य देनेवाला है, जगत् में सबसे श्रेष्ठ है उस महर्षि रुद्र ने पैदा हुये हिरण्यगर्भ को देखा, वह हमको अच्छी बुद्धि से युक्त करे।']

उसी उपनिषद् में आगे लिखा है:—

तदा तमस्तन्न दिवा न रात्रि-
र्न सन्न चासच्छिव एव केवलः।
तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं
प्रज्ञा च तस्मात् प्रसृता पुराणी॥
(श्वे. ४-१८)

अर्थः—[सृष्टि के आदि काल में जब केवल अन्धकार ही अन्धकार था, न दिन था, न रात्रि थी, न सत् था न असत् था, केवल एक शिव ही विद्यमान थे। वही अक्षर है, वही सबके जनक परमेश्वर का प्रार्थनीय स्वरूप है, उन्हीं से शास्त्रविद्या प्रवृत्त हुई है।']

शिव के बारे में उपनिषदों ने स्पष्ट लिखा है कि रुद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनादि हैं, अनन्त हैं, परम उपास्य हैं, आनन्दमय हैं, हैं, परात्पर हैं।

शिवजी श्मशानवासी हैं पर तो भी वे तीनों लोकों के नाथ हैं।

महाकवि कालिदास ने अपने एक ग्रन्थ में एक लिखा है:—

अकिञ्चनः सन् प्रभवः स सम्पदां
त्रिलोकनाथः पितृसद्मगोचरः।
स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते
न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः॥

अर्थः—[शिव परम दरिद्र होकर भी सब सम्पत्तियों के उद्गम स्थान हैं, सब सम्पत्तियां वहीं से प्रकट होती हैं, श्मशानवासी होकर भी तीनों लोकों के नाथ हैं, भयानक रूप में रहने पर भी उनका नाम शिव है। सत्य तो यह है कि पिनाकधारी महादेव का यथार्थ तत्त्व कोई जान ही नहीं पाता, वे क्या हैं और कैसे हैं—यह तत्त्व कोई नहीं जानता।]

श्वेताश्वतर उपनिषद् में शिवतत्त्व का विवेचन इस प्रकार है—

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थु-
र्य इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः।
प्रत्यङ्जनांस्तिष्ठति संचुकोचान्तकाले
संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः॥
(श्वेता. ३-२)

अर्थः—[एक ही रुद्र है, जो कि इन सब लोकों को अपनी शक्ति से वश में रखता है, अतएव वह ईश्वर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसीकी सब उपासना करते हैं, वह सब लोकोंको उत्पन्न कर अन्तकाल में संहार भी करता है, वही सबके भीतर अन्तर्यामी रूप से स्थित है।']

शिव व शक्ति में अभिन्नता है। यदि शक्ति न हो तो शक्तिमान् का अस्तित्व ही न हो इसी से 'इ' कार (शक्ति) हीन शिव को 'शव' कहा जाता है। शिव देवों के देव महादेव हैं। वे पूर्ण हैं। उनका रोम २ हजारों सूर्यों के प्रकाश की तरह चमकता है। पुण्यदायिनी गंगा का अवतरण शिव की जटाओं से हुआ है अर्थात् वह गंगा की शीतल धारा की तरह शान्त है। शान्ति के वे उद्गम केन्द्र हैं। शिव शब्द सच्चिदानन्दघन परमात्मा का वाचक है। यह उच्चारण सरल, मधुर एवं हृदयग्राही हैं। शिव शब्द का अर्थ है कि जिसको सब चाहते हों। सब शाश्वत आनन्द ही चाहते हैं। अतः शिव शब्द का अर्थ आनन्द से है। जहां आनन्द है वहीं शान्ति है, मंगल है, कल्याण है।

अतः शिव शब्द का गूढ़ार्थ कल्याण से है। इसीलिये शिव का अर्थ हुआ कल्याणकारी देवता। 'शं' आनन्द को कहते हैं और कर से करनेवाला समझा जाता है। अतएव जो आनन्द करता है वही शंकर है।

शंकर = शं + कर (अर्थात् आनन्द करनेवाला।

शिवजी को पशुपति भी कहते हैं। इसके बारे में शिवपुराण में इस प्रकार लिखा है:—

ब्रह्माद्याः स्थावरान्ताश्च देवदेवस्य शूलिनः।
पशवः परिकीर्त्यन्ते संसारवशवर्त्तिनः॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेषां पतित्वाद्देवेशः शिव पशुपतिः स्मृतः।
मलमायादिभिः पाशैः स बध्नाति पशून् पतिः।
स एव मोचकस्तेषां भक्तानां समुपासितः।
चतुर्विंशतितत्त्वानि मायाकर्मगुणास्तथा॥
विषया इति कथ्यन्ते पाशा जीवनिबन्धनाः।
सर्वात्मनामधिष्ठात्री सर्व क्षेत्रनिवासिनी।
मूर्तिः पशुपतिर्ज्ञेया पशुपाशनिकृन्तनी॥

अर्थः—(ब्रह्मा से लेकर स्थावर (वृक्ष पाषाणादि) पर्यन्त जितने भी संसार वशवर्त्ती जीव हैं, सभी देवाधिदेव महादेव के पशु कहे जाते हैं और उन सबके पति होने के कारण महादेव 'पशुपति' कहे जाते हैं। वही पशुपति ब्रह्मा आदि सब पशुओं को मल, मायादि अविद्या के पाश में जकड़ रखते हैं और फिर भक्तों द्वारा पूजे जाकर उन्हें उस पाश से मुक्त करते हैं। चौबीस तत्त्व और माया कृत कर्म के गुण विषय कहलाते हैं। ये विषय ही जीवको बन्धन में डालने वाले हैं, इसीलिये इन्हें पाश कहते हैं। महादेव सब जीवों के अधिष्ठाता और सर्व क्षेत्रों में वास करनेवाले तथा पशुपाश को काटनेवाले होने के कारण पशुपति नाम से प्रख्यात हैं।

वेदों में शिव को रुद्र नाम से पुकारा गया है। शिवतत्त्व का विवेचन तन्त्रालोक में आचार्य श्री अभिनवगुप्त ने इस प्रकार किया है:—

न खल्वेष शिवः शान्तोनाम कश्चिद् विभेदवान्।
सर्वेतराध्वव्यावृत्तो घटतुल्योऽस्ति कुत्रचित्॥
महाप्रकाशरूपा हि येयं संविद् विजृम्भते।
स शिवः शिवतैवास्य वैश्वरूप्यावभासिता॥ (तन्त्रालोक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ— ['जगत् से भिन्न घटवत् एक देश में स्थित वहीं भी शान्त शिव नहीं रहते। यही प्रकाशरूप सविता जो सब जगह सब रूपों से उछल रही है, वही शिव है। विश्वरूप से भासना ही उसकी शिवता है।']

कहीं २ अग्नि को भी रुद्र कहा है। यथा—

अग्निर्वै रुद्रः (शतपथ ब्रा. ५-३-१)

शिव की पूजा आदिकाल से होती आरही है। मोहन-जोदड़ो, हड़प्पा और लोथल क खुदाई इस बात का प्रमाण है कि आज से ६ हजार वर्षपूर्व भी शिव पूजा होती थी। वैदिक कालमें वैदिक ऋषि 'नमः शंकराय च, मयस्कराय च नमः शिवाय च, शिवतराय च' आदि के उद्घोष से वन्दना करते थे। भारत में ही नहीं विश्व में भी प्राचीन काल में शिव पूजा का प्रसार था। इस पर अधिक चर्चा करना इस लेख का उद्देश्य नहीं है। भारत के छोटे २ गांवों में भी शिव मन्दिर हैं। पर क्या लिख सकता हूँ। आज यह लेखनी भी शिव महिमा का गान कर पवित्र होगई है। शिवजी ज्ञान दाता हैं। मैंने उसी शिवतत्त्व पर जो दुरूह एवं दुर्ज्ञेय लिखने में कुछ त्रुटि हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

अब अखिल विश्व के अधिपति देवाधिदेव महेश को प्रणाम कर इस लेख को समाप्त करता हूँ।

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रयहेतवे।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक
श्री विद्यावाचस्पति नंदकिशोर शर्मा,
सूर्यचिकित्सा विशारद

प्रारम्भिक निवेदनः—बेल प्रसिद्ध फल है। भगवान् आशुतोष के पूजन में इसके पत्र उपयोग में आते हैं ऐसे समय में जब कि रामतीर्थ का पंचम वर्षीय ईश्वरांक प्रकाशित हो रहा है, आद्य शक्ति की प्रेरणा हुई कि भगवान् शंकर के गुणगान तो बड़े २ विद्वान् करेंगे तू भी अपनी क्षुद्र रचना "बेल" पर लिख, आज्ञानुसार टूटे फूटे शब्दों में निवेदन किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्व का विवरण:— बेल के बड़े २ वृक्ष होते हैं। इसके पत्र त्रिदल होते हैं क्वचित पत्र पंचदल, षट्दल, सप्तदल, एकादश दल भी मिल जाते हैं। पंचदलादि पत्र प्राप्त होनेपर उसे लोग पूजन में रखते हैं और शिव समान ही पूजते हैं। इसके पुष्प सफेद आते हैं और फल कबीट के समान कड़े छिलके वाले होते हैं। यह सर्व प्रसिद्ध विशेष प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण वनस्पति हिन्दुस्थान में प्रायः सर्वत्र पाई जाती है।

आयुर्वेद में बिल्व वृक्ष के फल, मूल, पत्र, फूल, छाल, और बीज आदि पर अनुसंधान किया गया है तथा इसके सर्वांग की उपयोगिता परिपूर्णतया सिद्ध की गई है। पाश्चात्य वैद्यक की दृष्टि अब कुछ वर्षों से इसके महत्व की ओर आकर्षित हुई है। तथा उसने अभी केवल इसके फलों को अपनी चिकित्सा प्रणाली या मेटेरिया मेडिका में आत्मसात किया है।

हम यहां इसके सर्वांग पर क्रमशः पूर्ण दृष्टि से विचार करेंगे।

बेल की छाया के गुण:— बेल की छाया ठंडी और आरोग्य वर्धक है।

बेल छाल का विशेष उपयोग:— पीला रंग तैयार करने के काम में बेल की छाल का उपयोग होता है।

बेल की लकड़ी:— यह चंदन के समान मानी जाती है इसे घिसकर मस्तक पर लगाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्व जड़ की छालः— दशमूल के काढ़े में एक औषधि है।

बिल्व पत्तेः— पत्तों को पीसकर आंख पर लगाने से रोग दूर होते हैं। माता के कारण आंख की ज्योति जाने पर बेल पत्र के स्वरस की १-१ बूँद आंखों में से नष्ट हुई ज्योति फिर से आ जाती है। सांघातिक और उन्माद रोगी को बेल पत्र में ढकने से आशातीत होता है।

मधुमेह में बिल्व पत्र २०० का स्वरस लगभग ४-५ नित्य प्रातः पीने से मूत्र में शर्करा आना २-३ दिन में हो जाता है। इन्सुलिन से भी श्रेष्ठ है।

फलः— प्रायः सर्व प्रकार के अन्यान्य फल परिपक्व पर ही अधिक गुणशाली होते हैं। किन्तु बेल का फल ही औषधि कर्म में विशेष प्रभावशाली होता है।

कच्चा कोमल बिल्व फलः— कषैला एवं कुछ प्रमाण स्निग्ध, अग्नि प्रदीपक, शूलनाशक आम को पचानेवाला है। कहा हैः—

बालं बिल्वफलं स्निग्धं गुरुरुच्यं च दीपनम्।
ग्राहकं पाचक तिक्तं लघु चोष्णं च तूवरम्॥
शूलाम वात ग्रहणी कफातिसार नाशनम्॥
निघंट रत्नाकर

इसके गूदे को निकाल छोटे २ टुकड़े कर धूप में सु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं यही बेलगिरी कहलाता है।

अतिसार में यह मल को गाढ़ा करता है। आमातिसार में आम का पचन कर आन्त्र शक्ति को बढ़ाता है। रक्तातिसार में यह दूषित रक्त को शुद्ध कर एवं आन्त्र के क्षोभ को कम कर उसकी संकोच शक्ति को बढ़ाता है। बड़ी आंत पर इसका उत्तम प्रभाव होने से यह संग्रहणी विकार में उत्तम लाभकारी है। परिपक्व बेल फल में कसैलापन चीकटपन कम हो जाने से उसका उपयोग विशेष लाभदायक नहीं होता। प्रत्युत उसका मगज पचने में दुर्जर होता है। यद्यपि यह ग्राही या मलावरोधक अवश्य है तथापि अपचन को बढ़ानेवाला होने से हितावह नहीं है इसके विशेष गुणधर्म हम आगे लिखेंगे।

अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार और प्रवाहिका पर बहुत से औषधि कल्पों में कोमल बेलफल गिरी का प्रयोग आया है तथा स्वतंत्र रूप से भी इसका प्रयोग है यथाः—

गुडेन खादयेद्बिल्वं रक्तातिसार नाशनम्।
आमशूल विबन्धघ्नं कुक्षिरोग विनाशनम्॥
—योग रत्नाकरे।

कुक्षि शूलाम शूलघ्नं विबन्धाध्मातिसारजित।
सेवितं सगुडं बिल्वं बिल्व तुल्य पयोधरे॥
—योग रत्नाकरे

अर्थात् कोमल बेलफल की गिरी को गुड़ के साथ सेवन करने से रक्तातिसार, आमशूल, मलावरोध, अतिसार आमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिसार एवं अन्य कुक्षिरोगों का नाश होता है शुद्ध पु
होना चाहिये। अतिसार और प्रवाहिका में विशेषतः
चिरस्थायी अवस्था में जबकि अन्य सब उपचार विफल
गये हों यह जादू के समान असर करता है। किन्तु रोगी
भोजन में थोड़ा परिवर्तन करके उसे बल्य एवं शीघ्र प
लघु आहार देते रहना आवश्यक है।

प्रयोगः— कहीं २ कच्ची या तरुण (अधपके) बेलगि
को बगैर सुखाये ही जल में उबाल कर शहद मिला
अतिसार या प्रवाहिका में सेवन कराते हैं। कभी २ कच्चे
बेल को आग में भूनकर खिलाने से अथवा भुने हुये बेल
गूदे में मिश्री और गुलाब अर्क मिला प्रातःकाल खाली पे
सेवन कराने से भी सब प्रकार के अतिसार में लाभ हो
देखा गया है।

अथवाः- कच्चे बेल की सुखाई हुई गिरी १ पाव ज
१० सेर एकत्र मिला पकावें। एक सेर जल शेष रहने प
छानकर उसमें लगभग आधसेर तक मिश्री मिला बोतल में
भर रक्खें। मात्रा १ या २ तोले। प्रत्येक मात्रा में भुनी सों
का चूर्ण ४ रत्ती और अफीम मूंग के बराबर मिलाकर सेवन
करावें। २-३ बार में ही लाभ होता है सर्व प्रकार के अति
सार दूर होते हैं।

(१) बालकों के अतिसार पर:-बेलगिरी को सौंफ के
अर्क में घिसकर देने से बालकों के लाल हरे दस्त बंद हो
जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) बालकों के आंव युक्त दस्त लगने पर बिल्व का सूखा गूदा जल में घिसकर दें।

(३) बेलगिरी १ रत्ती, ढाक का गोंद १ रत्ती और मिश्री २ रत्ती थोड़े जल में पीस मंदाग्नि में गाढ़ा करके चटाने से भी लाभ होता है।

(४) बेलगिरी, सोंठ, जायफल, नागकेशर और बड़ी इछायची समभाग लेकर महीन चूर्ण कर खशखश (पोस्त-दाना) के क्वाथ में खरल कर चने की बराबर गोलियां बना अवस्थानुसार आधी या एक गोली माता के दूध में घिसकर पिलावें।

(५) दांत निकलते समय बच्चों को जो दस्त होते हैं पेट में मरोड़ होती है उस हालत में बेलगिरी, सोंठ, मरोड़ फली, और आम की गुठली को पत्थर पर जल के साथ घिसकर एकत्र कर पिलाने से लाभ होता है।

(६) आमातिसार एवं तज्जन्य शूल पर:-बेलगिरी और पुराने आम की गुठली की मिंगी समभाग एकत्र पीस दो से ४ माशे तक की मात्रा में चावल के मांड के साथ या शीतल जल के साथ प्रातः सायं सेवन करावें—

(७) बेलगिरी और आम की गुठली १-१ तोला लेकर कूटकर ३२ तोले जल में पकावें। ८ तोले शेष रहने पर शहद और मिश्री मिला ६ माशे से २ तोले तक की मात्रा में यथा-वसर पिलावें इससे विशूचिका (हैजा) में भी लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तातिसार पर:—

(९) बेलगिरी चूर्ण और मुलेठी को चावल के में पीस शक्कर और शहद मिला सेवन करावें।

अथवा:-(९) कच्चे बेल को कंडे की आग पर रखें ऊपर का छिलका बिलकुल काला होजाय तब अन्दर का निकाल मात्रा १ से २ तोले तक दिन में ३ बार मिश्री कर खिलाने से विशेष लाभ होता है।

(१०) बेलगिरी २ तोला में, १६ तोला बकरी का और ६४ तोले जल के साथ यथा विधि पकावें दूध मात्र रहने पर छानकर उसमें मोचरस तथा इन्द्रजौ का चूर्ण माशे और मिश्री १ तोला मिला सेवन कराने से उत्तम होता है—

कहा है:—

बिल्वं छागपदः सिद्धं सिता मोचरसान्वितम्
कालिंग पूर्ण संयुक्तं रक्तातिसार नाशनम्॥

—चक्रदत्त।

(११) गुल्मवात आदि पर:-कोमल बेल का गूदा गुड़ मिलाकर नित्य खाने से शरीर में बढ़ा हुआ वात पेट ठंडी आदि दूर होती है।

(१२) सर्प दंश पर:-बेलकी जड़, कबांट की जड़, चौ की जड़ का रस निकाल मिलाकर पिलावें।

(१३) कृमि विकार पर-बिल्व पत्र का रस दें।

(१४) आम युक्त संग्रहणी पर-बेल का गूदा, और सौंठ इनका काढ़ा दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) धातु पुष्टि के लियेः-बिल्व छाल का रस, जीरा, गो दुग्ध में मिलाकर दें।

(१६) रक्तातिसार परः-बेल फल का चूर्ण गुड़ के साथ दे अथवा शर्बत बेल फल पिलावें। अथवा सूखे बेल फल की गिरी का चूर्ण, खारक, जायफल, गुड़ युक्त कर गोली बनाकर दें या बेल का मुरब्बा दें इससे रक्तातिसार, कुक्षि शूल, उदर शूल, आम शूल, आंतों में बंधे हुए सुद्दे दूर होजाते हैं।

(१७) मुंह आ जाने परः-बेल फल के काढ़े से कुल्ले करें।

(१८) विषम ज्वर परः-बेल पत्र का चूर्ण गुड़ युक्त करके गोली बनाकर दें।

(१९) वीर्य क्षरण परः-बेल पत्र को जल के साथ पीसकर छानकर जीरा, मिश्री युक्त करके दें।

(२०) सगर्भा के वमन परः-बेल की मज्जा ताना जल मिलाकर दें।

(२१) सगर्भा के अतिसार परः-कच्चा सूखा बेल, जायफल, मरोड़ फली, पानी में घिसकर दें।

(२२) सगर्भा के वमन और अतिसार पर-सोंठ, बेल का गूदा, इन का काढ़ा यव के आटे को युक्त करके दें।

(२३) दमाः-बेल की जड़ सोंठ, मिर्च, नाग फनी के पक्के फल, अडूसे के पत्ते इनका काढ़ा मधु युक्त करके दें

(२४) रुधिर फीका पड़ जाने से-कच्चे बेल का शर्बत दें।

(२५) फोड़ा या किसी प्रकार के शोथ के आरम्भ काल में हरारत, दर्द, और खून जमा होने की दशा में कच्चे बेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूर्ण शर्करा के साथ देकर उष्ण जल दो चार घूंट दें।

(२६) ज्वर रोगी को अत्यधिक प्यास लगने पर:– को अत्यधिक प्यास लगे ज्वर का वेग अधिक हो, से हानि पहुंची हो, जिह्वा पर छालें हों, तो बेल का चूर्ण शक्कर से दें।

(२७) लू लगना:–जब कि शरीर में अत्यंत दाह हो, ऐंठा जाता हो, नींद आती हो, खून का जमाव लगने लगा हो तो शर्बत बेल या बेल का चूर्ण शक्कर से दें।

(२८) दमा:–श्वास नली के प्रदाह के कारण होने वाले दमे के लिये बेल की जड़ का काढ़ा उपयोग करें। पिप्पली पोटकर मूल, बेल की गिरी, कायफल, काकड़ासिंगी का मिश्री और जल के योग से तैयार किया अवलेह चटावें।

(२९) रीढ़ के दर्द में–जब कि पीठ की रीढ़ में नीचे की ओर दर्द व भार सा जान पड़े, दस्त हों तो शर्बत का सेवन करें।

(३०) कीड़ों के कांटने पर–बिल्व रस का फाया लगावें।

(३१) दिमागी कम ताकत, चित्त का एकाग्र रहना कठिन हो, चित्त व्यग्र रहता हो, बात सोचने में कठिनता होती हो, तबियत गिरी रहती हो, नींद न आती हो, तो बेल का स्वरस मिश्री युक्त पिलावें।

(३२) बच्चों की कूकर खांसी में–जब खासने पर तार वाला श्लेश्मा निकलता हो, खांसते २ मुंह लाल हो, वमन हो जाता हो तो शर्बत बेल चटावें।

"इत्यलम्"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र शास्त्र

लेखक
डॉ. गोपालप्रसाद वंशी

आज-कल नई रोशनीवाले अंगरेजी पढ़े-लिखे भारतीयों का मान्त्रिक विषयों पर विश्वास नहीं है और वे उन्हें अपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। इधर आस्तिक और भावुक वर्ग उनपर विश्वास तो अवश्य, करता है, किन्तु वह तद्विषयक साधारण सिद्धान्तों को समझ लेने की परवाह नहीं करता। ऐसी अवस्था में इस वर्ग के लोगों को कभी किसी मायावी या धूर्त के जाल में फँस जाने का भी प्रसंग आ जाता है। उस समय मंत्र-तंत्र के विरोधियों को कुत्सित टीका-टिप्पणी करने को अनायास ही अवसर मिल जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि श्रद्धालु वर्ग को भी तंत्र-मंत्र पर अश्रद्धा करने की संभावना हो जाना स्वाभाविक ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र-शास्त्र का विषय गहन और जटिल है। उसे स
लेना साधारण बात नहीं। उसके सम्बन्ध में यहाँ तक कि
है कि—'एतद्गोप्यं महागोप्यं न देयं यस्य कस्यचित्।' त
इस विषय का जो विवेचन शास्त्र में किया गया है वह अ
सुन्दर, बुद्धि पुरस्सर और मननीय है। उसे प्रकट करने
में कोई आपत्ति नहीं। इसलिये शास्त्र-सम्मत विचार प्र
कर देना योग्य है।

भारतीय वाङ्मय में मंत्र-विद्या का आसन सब विद्याओं से ऊँचा माना गया है। वैदिक-साहित्य, जैन-साहित्य, और बौद्ध-साहित्य में इस विषय पर स्वतंत्र चर्चा की गई है। जैसे काव्य, कोश, अलंकार, व्याकरण, न्याय, और छन्द आदि विषयों के स्वतंत्र ग्रन्थ अलग अलग हैं, वैसे ही मंत्र-विद्या के सैकड़ों ही स्वतंत्र ग्रन्थ हैं। जैन-साहित्य में नमस्कार मन्त्रकल्प, प्रतिष्ठा-कल्प, चक्रेश्वरी-कल्प, ज्वालामालिनी कल्प, पद्मावती-कल्प, सूरिमंत्र-कल्प, वाग्वादिनी-कल्प, श्रीविद्या-कल्प, वर्द्धमान-विद्या-कल्प, रोगापहारिणी-कल्प आदि अनेक कल्प ग्रन्थ विद्यमान हैं। इसी प्रकार बौद्ध-साहित्य में तारा-कल्प, वसुधारा-कल्प, घण्टाकर्ण-कल्प आदि अनेक ग्रन्थ मौजूद हैं। वैदिक-साहित्य में तो इस शास्त्र का एक अलग भाण्डार ही है, उसमें कात्यायनी, निर्वाण, कुलार्णव आदि अनेक और अपरिमित तंत्र-ग्रन्थ मौजूद हैं। उपरिनिर्दिष्ट ग्रन्थों में कई एक छप भी गये हैं पर इस विषय के अधिकांश महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अभीतक अप्रकाशित पड़े हुये हैं और दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिदिन दुर्लभ होते जा रहे हैं। पर इन ... नों साहित्यों के मंत्र शास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थों की नामावली-मात्र से ही यह बात प्रकट हो जाती है कि किसी समय इस विषय की भारत में बड़ी उन्नति थी।

कल्प-ग्रन्थ–जिन ग्रन्थों में मंत्र विधान, यंत्र-विधान, मंत्र-यंत्रोद्धार, बलिदान, दीपदान, आवाहन, पूजन, विसर्जन और साधन आदि बातों का वर्णन किया गया हो वे ग्रन्थ कल्प-ग्रन्थ कहलाते हैं।

तंत्र-ग्रन्थ—जिनमें गुरु-शिष्य के संवाद रूप से तथा शिव-पार्वती के संवाद रूप से मंत्र, यंत्र, तंत्र और औषधि-वल्ली आदि द्रव्यों का वर्णन होता है वे तंत्र-ग्रन्थ हैं।

पटल-ग्रन्थ–किसी एक देवता को आराध्य मानकर उसी देवता से सम्बन्ध रखनेवाली मंत्र, यंत्र आदि की साधन-विधियाँ जिनमें लिखी हों तथा मान्त्रिक भूमिकाओं का वर्णन भी हो, अनेक काम्य कर्मों में निष्णात होने की बातें वर्णित हों, वे पटल-ग्रन्थ कहलाते हैं।

पद्धति-ग्रन्थ–जिन ग्रन्थों में अनेक देवी-देवों की साधना का प्रकार बताया गया हो उन्हें पद्धति-ग्रन्थ कहते हैं।

बीज-कोश–मंत्रों के पारिभाषिक शब्दों को समझने की तथा एक एक अक्षर तथा बीज की अनेक व्याख्यायें जिन ग्रन्थों में लिखी हों उन्हें मंत्र-कोश या बीज-कोश कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार कल्प, तंत्र, पटल, पद्धति और बीजग्रं प्रभृति ग्रन्थों में मंत्र-शास्त्र का साहित्य विभक्त है और इस यह क्रम वैदिक, जैन और बौद्ध तीनों प्रकार के साहित्य विद्यमान है।

मंत्र-साधन किस मार्ग-द्वारा करना चाहिये अर्थात् मं किस मार्ग-द्वारा सिद्ध हो सकता है, यह पहले जान ले चाहिये। इस सम्बन्ध में मंत्र-शास्त्र में तीन मार्गों का उल्ले है, जो दक्षिण, वाम और मिश्र कहलाते हैं। सात्त्विक देव की सात्त्विक उपासना, सात्त्विक मंत्र और सात्त्विक साध द्वारा करने का जो मार्ग है उसे दक्षिण या सात्त्विक मा कहते हैं। मदिरा, मांस, मीन, माख और महिला आदि पां वस्तुओं से युक्त भैरव-भैरवी आदि तामस-प्रकृति के दे देवताओं की साधना और उपासना जिस मार्ग-द्वारा हो वाममार्ग कहलाता है। इसी प्रकार जिस मार्ग में मीन, मां मदिरा आदि पदार्थों को प्रत्यक्ष रूपमें न ग्रहण कर उन प्रतिनिधियों से इष्ट की साधना करते है उसे मिश्र-मा कहते हैं। पर वास्तव में दक्षिण और वाम यही दो मार्ग हैं वाममार्ग प्रायः तंत्र-शास्त्र का विषय है। कल्प-ग्रन्थों में इस वर्णन नहीं है। वाममार्गी प्राय: भैरव और काली आदि दे देवताओं के उपासक होते हैं, नवनाथों को गुरु मानते गुरु चरण-पादुका, श्री चक्र तथा भैरवी-चक्र की पूजा करते हैं। परन्तु मंत्र-शास्त्र के विषय में इतना कहना आवश्यक है कि वाममार्ग का प्रभाव मिश्र मार्ग पर तो पड़ा ही है, वि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण-मार्ग पर भी उसका कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा है। इसीसे दक्षिण-मार्गवाले भी तामस प्रकृतिवाले देवताओं की आराधना करने लग गये। पुरुषाकृति की आत्म-शक्ति ही सच्ची शक्ति है, अतः आत्मवस्तु पर विश्वास रखकर, उसके प्रभाव को जानकर, मंत्र साधना करनेवाला दक्षिण-मार्ग का भी साधक शाक्त कहा जा सकता है। इसीलिये शाक्त कहलाने में वह संकोच नहीं करता। परन्तु वाम-मार्गी तथा कौल अपने को वाम मार्गी या कौल कहलाने में भय करते हैं। दक्षिण-मार्ग सात्त्विक होने से प्रकट मार्ग है और वाममार्ग असात्त्विक होने से गुप्त मार्ग है। 'गोपनीयं ! गोपनीयं !! गोपनीयं प्रयत्नतः' की शिक्षा वे प्रथम से ही देते हैं। तंत्र ग्रन्थों में यह भी लिखा है कि 'सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न च शैवा न च वैष्णवाः।' अतएव यह बात प्रमाण सिद्ध है कि तंत्र-शास्त्र प्रायः वाम-मार्ग को ही पुष्ट करनेवाले ग्रन्थ हैं। जो हो, वाम मार्ग का बल अधिक बढ़ जाने से ही सात्त्विक मंत्रों और सात्त्विक देवताओं का भारतीयों-द्वारा सिद्ध होना दुःसाध्य हो गया, जिससे कितनों का स्वयं मंत्र-शास्त्र से विश्वास उठ गया।

मंत्र-शास्त्र में केरल, काश्मीर और गौड़ नामक तीन सम्प्रदाय प्रचलित हैं। वैदिक धर्मावलम्बी मान्त्रिकों में प्रायः केरल-संप्रदाय है, बौद्धों में गौड़ और जैनियों में काश्मीर संप्रदाय हैं। काश्मीर-संप्रदाय सरस्वती प्रभृति सात्विक देवताओं के उपासक और दक्षिण-मार्गी होते हैं। गौड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संप्रदायवाले तारा तथा काली आदि तामस प्रकृति के देवों के उपासक और वाममार्गी होते हैं। केरल-संप्रदाय मिश्रमार्गी संप्रदाय है। इसमें प्रकट रूप से दक्षिण और गुप्त रीति से वाम-मार्ग का अवलम्बन किया जाता है। इस संप्रदाय के साधक महालक्ष्मी प्रभृति रजस प्रकृति के देवताओं के उपासक होते हैं। संप्रदाय के सम्बन्ध में लिखा है—

संसार सार भूतत्वात् प्रकाशानन्ददानतः।
यशः सौभाग्यकरणात् सम्प्रदाय इतीरितः॥

—कुलार्णव

गुरु हीनात् क्रमस्त्यागात् सम्प्रदाय वियोगतः।
दारिद्र्यं प्रथमं भूयान्नाच कार्या विचारणा॥

—शक्ति-सङ्गम

ये दोनों श्लोक अत्यन्त विचारणीय हैं। किसी सम्प्रदाय की दीक्षा लिये बिना मन्त्र-सिद्ध नहीं होता। इसलिये सम्प्रदाय का अवलम्बन लेना साधक के लिये परमावश्यक है।

वेदागम, बौद्धागम और जैनागम इस प्रकार मन्त्र-शास्त्र के भीतर तीन आगम हैं। जैनागम दक्षिण मार्गावलम्बी और काश्मीर-सम्प्रदाय प्रधान है, बौद्धागम वाममार्गावलम्बी और गौड़-सम्प्रदाय प्रधान है तथा वेदागम मिश्रमार्गावलम्बी और केरल-सम्प्रदाय प्रधान है। वैदिक मतावलम्बी मान्त्रिक वर्ग वेदागम को शैवागम भी कहते हैं। इसका कारण यह बतलाते हैं कि मन्त्र-शास्त्र की उत्पत्ति शिवजी से हुई है, इसीलिये तन्त्र शास्त्रों में शिव-पार्वती के संवाद रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्र-यन्त्र-तन्त्रों का वर्णन किया गया है।

मन्त्रशास्त्र के सम्प्रदायों को चक्र-पूजा भी मान्य है। जैनों के काश्मीर-सम्प्रदाय में 'सिद्धचक्र' (नवपद मण्डल-चक्र) की सात्त्विक पूजा का वर्णन है। केरल सम्प्रदाय में 'श्री चक्र' की पूजा की विधि है और गौड़-सम्प्रदाय में 'भैरवी-चक्र' की पूजा का उल्लेख है। भैरवी-चक्र का पूजन करनेवालों का यह सिद्धान्त है 'प्राप्ते भैरवी चक्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः।' चक्र-पूजा की कल्पना ब्रह्माण्ड पूजा या विश्व पूजा, विश्व-प्रेम और विश्व-सेवा-धर्म का सूचक है।

मन्त्र-दीक्षा-गुरु के समीप यथा विधि मन्त्रोपदेश लेने को दीक्षा कहते हैं। जिस सम्प्रदाय की विधि के अनुसार मन्त्र-दीक्षा ली हो, उसी के प्रकार से साधना करने से मन्त्र सिद्ध होता है, अर्थात् मन्त्र-दीक्षा शिष्य की योग्यता को सूचित करती है।

मन्त्र पीठिका—मन्त्र-शास्त्र में चार पीठिकाओं का वर्णन है। बिना पीठिका के मन्त्र नहीं सिद्ध हो सकता। श्मशान-पीठ, शव पीठ, अरण्य-पीठ और श्यामा पीठ आदि चार पीठें हैं।

श्मशान-पीठ उसे कहते हैं जिसमें प्रतिदिन रात्रि में श्मशान-भूमि में जाकर यथा शक्ति विधि से मन्त्र का जप किया जाता है। जितने दिन का प्रयोग होता है, उतने दिन तक मन्त्र का साधन यथाविधि किया जाता है। जैन-ग्रन्थों में लिखा है कि श्री कृष्ण वासुदेव के लघु भ्राता गज सुकु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल मुनीश्वर इसी पीठिका में परमेष्ठ महामन्त्र का साधन करते हुये आत्म-ज्ञान को प्राप्त कर सिद्धि और मुक्ति को पहुँचे थे। इसे प्रथम पीठिका भी कहते हैं।

किसी मृतक कलेवर के ऊपर बैठकर या उसके भीतर घुसकर मन्त्रानुष्ठान करना शव-पीठिका है। यह पीठिका वाम मार्गियों की प्रधान पीठिका है। कर्ण-पिशाचिनी, अच्छिष्ठ गणपति, कर्णेश्वरी, अच्छिष्ठ चाण्डालिनी आदि देवताओं की साधना तथा अघोर पन्थवालों की साधनायें इसी पीठिका के द्वारा होती हैं।

अरण्य पीठिका—मनुष्य-जाति का जहाँ सञ्चार न हो, सिंह, श्वापद, सर्प आदि हिंस्र पशु-प्राणियों की जहाँ विशेषता हो ऐसे निर्जन वन-स्थान में किसी वृक्ष या शून्य मन्दिर आदि का आश्रय लेकर मन्त्र साधन करना और निर्भयतापूर्वक मन को एकाग्र रख कर तल्लीन हो जाना अरण्यपीठिका है। निर्वाण-मन्त्र की विधि में लिखा है कि 'निर्वाण मन्त्र यदि साधको जपेत् अरण्यभूमौ शिव सन्निधौ स्थितो,' अर्थात् अरण्य में जाकर शिव-मन्दिर में निर्वाण-मंत्र का जप करने से शीघ्र सिद्धि होती हैं इतिहास से पता चलता है कि प्रथम के निग्रन्थों में आत्म सिद्धि करने के लिये निर्जन वन में ही रहने की प्रथा थी वे नगर, ग्राम आदि में या उनके समीप नहीं रहते थे, सदा एकान्त वनमें ही रहकर आत्मध्यान किया करते थे। तब उनको अनेक सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। जब से त्यागी वर्ग त्याग कर नगर, ग्राम आदि का आश्रय लेकर रहने लगा तभी से ये सिद्धियाँ नष्ट हो गईं और माया-मोह में फँस कर मारे मारे फिरने लगे, अर्थात् त्यागी जीवन के लिए एकान्तवास ही श्रेष्ठ है।

श्याम पीठिका-यह कठिन से कठिन तर है। बिरला ही कोई महापुरुष इस पीठिका से उत्तीर्ण हो सकता है। एकान्त स्थान में षोडशवर्षा, नवयौवना, सुन्दर स्त्री को वस्त्र-रहित कर, सम्मुख बैठा कर साधक, मन्त्र साधन में तत्पर हो और मन को यत्किञ्चित् भी चलायमान न होने दे और ब्रह्मचर्य में स्थिर रहकर मन्त्र का साधन करे। इसे श्यामपीठिका कहते हैं। जैन-ग्रन्थों में लिखा है कि द्वैपायन पुत्र मुनीश्वर शुकदेव, स्थूलीभद्राचार्य और हेमचन्द्राचार्य ने इसी पीठिका का अवलम्बन किया था और मन्त्र-साधना कर विजेता हुए थे।

यहाँ तक मन्त्र-शास्त्र की बहिरङ्ग आलोचना हुई, अर्थात् मन्त्र के साधन में क्या क्या बाहरी बातें होती हैं, यह हम संक्षेप में बता चुके। अब हम यहाँ उसकी अन्तरङ्ग आलोचना करते हैं।

मन्त्र किसे कहते हैं, मन्त्र क्या वस्तु है, इससे क्या लाभ है, किस प्रकार लाभ हो सकता है, ऐसा होने का क्या कारण है, ऐसे प्रश्नों का होना स्वाभाविक है-इन प्रश्नों के समाधान के लिए मन्त्र-शब्द की परिभाषा जान लेना आव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यक है। यह विषय व्यवहारिक नहीं है, इसका सम्बन्ध मानस-शास्त्रसे है। मन की एकाग्रता पर इसकी नींव है। इन्द्रियों के विषयों की ओर से लक्ष्य हटा कर मन को एकाग्र कर मन्त्र-साधन करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन की चंचलता जितनी जल्दी हटेगी, उतनी ही जल्दी मन्त्र सिद्ध होगा। मन्त्र-शब्द का शब्दार्थ भी महर्षियों ने यही किया है कि 'मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्र-प्रकीर्तितः (शा. क. ६१६) अर्थात् 'म' कार से मनन और 'त्र' कार से रक्षण, यानी जिन विचारों से हमारे कार्य सिद्ध हों वह मंत्र है। मंत्र विद्या योग का उच्च कोटि का विषय है। यह मन की बे-तार की तारबर्की है। हिप्नोटिज्म, मेसमिरेजम आदि इस विद्या के सम्मुख तुच्छ हैं। मन से वर्णोच्चारों का घर्षण होने से एक दिव्य ज्योति प्रकट होती है उन्हीं वर्णों के समुदाय का नाम मन्त्र है। इस विषय का ज्ञाता सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है। इसलिए शास्त्रकारों ने मन्त्र-शब्द का अर्थ 'विचार' किया है। राजनीति-शास्त्र में इसी से लिखा गया है कि जिन विचारों को गुप्त रखकर राज्य तन्त्र चलाया जाता है वे मन्त्र हैं। इसी लिए राज्यतन्त्र के प्रधान संचालक को 'महा मन्त्री' और उसके साथ काम करने वालों के समूह को 'मन्त्रि-मण्डल' कहते हैं। प्रसिद्ध विद्वान् हेमचन्द्राचार्य ने लिखा है—

'तन्मन्त्राद्यषडक्षीणं यत्तृतीयाद्यगोचरं
रहस्यालोचनं मन्त्रो रहश्छन्नमुपह्वरम्॥
(शा. क. ६१६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्र साधक के योग्यतानुसार ही सिद्ध होता है। इसलिए मान्त्रिक कहा करते हैं कि 'जपात्सिद्धिः जपात्सिद्धिः' जपते ही चले जाओ! अवश्य सिद्धि होगी! मन्त्र का रहस्य बतलाने के लिए एक मनोरंजक दृष्टान्त यहाँ देते हैं।

प्रसिद्ध मीमांसक माधवाचार्य गृहस्थाश्रम में दरिद्र थे, किन्तु थे बड़े भारी विद्वान् थे। उन्होंने विचार किया कि गायत्री का पुरश्चरण कर लक्ष्मी प्राप्त करनी चाहिए। इस विचार ही से उन्होंने गायत्री का पुरश्चरण प्रारम्भ कर दिया। एक पुरश्चरण पूरा हो गया, पर लक्ष्मी नहीं मिली! दूसरा पुरश्चरण करने लगे। इस बार भी लक्ष्मी नहीं मिली। हताश न होकर उन्होंने २४ पुरश्चरण किये, तो भी दरिद्र ही रहे। अन्त में स्त्री-पुत्रों और घर-द्वार को छोड़कर देशान्तर में जा कर उन्होंने संन्यास ले लिया! उसी रात्रि को लक्ष्मी माधव के पास आकर कहने लगी-माँग? माधव ने कहा—तू कौन है? लक्ष्मी ने कहा-तू वर्षों से मेरी याद कर रहा है। अब मैं आई हूँ, मैं लक्ष्मी हूँ। माधव ने कहा—अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। जहाँ से आई हो वहीं चली जाओ! लक्ष्मी ने कहा—मेरा दर्शन निष्फल नहीं जाता। अतः कुछ माँग ले माधव ने कहा- इतने दिन कहाँ रही? क्यों नहीं आई? लक्ष्मी ने कहा- तुम्हारे पूर्व-कर्म बड़े मलिन थे, जिससे तुम्हारा मन पुरश्चरण पर पुरश्चरण करने पर भी नहीं शुद्ध हुआ था। परन्तु संन्यास लेने से वह पवित्र हो गया है, अतएव मैं आ गई। अब तुम्हारा मन्त्र-सिद्ध हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दृष्टान्त का सार यह है कि मन की शुद्धि पर मन्त्र-शास्त्र की नीव है। जबतक माधव को द्रव्य की लालसा थी तबतक बुद्धि पर पर्दा गिरा रहा। पर लालसारूपी पर्दे के हटते ही मन्त्र-सिद्ध हो गया। इसलिए कहा है कि यदि किसी काम को करना हो तो वासना रहित होकर कार्य में तल्लीन हो जाना चाहिए। तब कार्य शीघ्रतर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र साधते हुए साधनीय कार्य की ओर लक्ष्य देने से मन्त्र में तल्लीनता नहीं हो सकती और बिना एकाग्रता के मन्त्र नहीं सिद्ध होता। यही मन्त्र-शास्त्र का रहस्य है। और वासना रहित होकर एकाग्रता-तल्लीनता प्राप्त कर लेना सहज बात नहीं है! यह बड़ा ही जटिल प्रश्न है।

अब मन्त्र-साधन की बात लीजिए। अष्ट गन्ध, सुरभी द्रव्य आदि की स्याही बनाकर भोज पत्र, कागज या सुवर्ण, रजत, ताम्र आदि धातुपत्र पर षट्दल, अष्टदल, शतदल, सहस्रदल तथा त्रिकोण, चतुष्कोण या वर्तुल रेखाओं के भीतर अक्षर या अंकों को लिखना और उसका यथा विधि पूजन आदि कर साधन करना मन्त्र-साधना कहलाती है। सिद्धचक्र-मन्त्र, विजय-मन्त्र आदि हजारों यन्त्र है। किसी किसी स्थल पर मन्त्र-यन्त्र दोनों साथ साथ करने पड़ते हैं और किसी किसी स्थल पर ऐसा नहीं भी है। किन्तु यह मन्त्र-विद्या भी मन्त्र-शास्त्र का ही एक अंग है। वर्णों या अंकों को एकाग्रता पूर्वक लिखना ही इस साधना की मुख्य क्रिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषधि-द्रव्यों के द्वारा कार्य सिद्ध करना तन्त्र-साधना है। कितने तन्त्रों में औषधि-द्रव्यों के मिश्रण के साथ मन्त्र-यन्त्र का भी उपयोग होता है। जड़ और चेतन-शक्ति के संयोग-द्वारा कार्य-साधन करना ही तन्त्र-साधना का विषय है। और मन्त्र, यन्त्र तथा तंत्र का एक दूसरे के साथ प्रायः सर्वत्र उपयोग होता है। अतः तन्त्र-साधन भी मन्त्र शास्त्र का अंग है।

मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र से क्या काम लिये जाते हैं ? इसके लिये काम्य कर्मों के प्रयोगों का मान्त्रिकों ने वर्गीकरण किया है। वह 'वर्गीकरण' इस प्रकार किया है—

स्तम्भनं मोहमुच्चाटं, वश्याकर्षण जृम्भणम्।
विद्वेषणं मारणं च, शान्तिकं पौष्टिकं तथा॥
विद्या प्रवाद पूर्वस्य, तृतीय प्राभृतादयम्।
उद्धृतकर्म घाताय, श्री वैर स्वामिसूरिभिः।
(मन्त्रद्वात्रिंशिका)

अर्थात-स्तंभन, मोहन, उच्चाटन, वश्याकर्षण, जृंभण, विद्वेषण, मारण, शान्तिक और पौष्टिक इस प्रकार नौ प्रकार से मन्त्र के प्रयोग हैं। यह श्री वैर स्वामि सूरजी ने कर्मों के घात करने के लिए विद्य प्रवाद पूर्व के तृतीय प्राभृत से उद्धृत किया है। किसी किसी के मत से यह सान्तानिक दसवा प्रयाग भी माना जाता है।

जिस मन्त्र, यन्त्र और तंत्र के करने से चोर, डाकू, सर्प,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्रापद और पर चक्र (शत्रु सेना) के आक्रमण का भय मिट कर वह जहाँ का तहाँ अटक जाय, स्थगित रह जाय, उसे स्तम्भन प्रयोग करते हैं। जिस प्रयोग के करने से साधक किसी को भी अपने वशीभूत कर ले उसे मोहन-प्रयोग कहते हैं। राज-मोहन, सभा-मोहन और स्त्री-पुरुष-मोहन आदि मोहन-प्रयोग के तीन प्रकार हैं। इन तीनों की साधनायें भी पृथक् पृथक् हैं। जिस प्रयोग के करने से विद्वेषी रोगाक्रान्त हो जाता है। उसका मन अस्थिर, उल्लास रहित निरुत्साह हो जाता है, वह स्थान और पद भ्रष्ट हो जाता है उस प्रयोग को उच्चाटन-प्रयोग कहते हैं। जिस प्रयोग के करने से इच्छित पदार्थ साधक के पास स्वयं चला आये, यदि चेतन प्राणी हो तो इसका विपरीत मन भी अनुकूल होकर साधक की शरण में आ जाय, उन्हें वश्याकर्षण प्रयोग कहते हैं।

जिस प्रयोग के करने से शत्रु आदि साधक से डरने लग जायँ—भयभीत हो जायँ, दब जायँ, काँपने लग जायँ, वही जम्भण-प्रयोग है। जिस प्रयोग-बल से देश, कुटुम्ब, जाति या समाज में परस्पर विद्वेष-फूट-कलह होने लगे उसे विद्वेषण कहते हैं। आततायी, अन्यायियों को आत्म शक्ति पूर्वक मन्त्र-प्रयोग द्वारा साधक प्राणदण्ड दे सके, उस प्रयोग का नाम मारण-प्रयोग है।

जिस प्रयोग के करने से महामारी, राजभय, परचक्र आदि रोग और विप्लवों की शान्ति हो जाय उसे शान्तिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग कहते हैं। वैद्यक-शास्त्रों ने भी लिखा है कि 'सिद्धस्तु मान्त्रिकः' अर्थात् बिना औषध के मन्त्र-प्रयोग कर के रोगों को हटा ने वाले जो वैद्य हैं वे चारों प्रकार के वैद्यों में श्रेष्ठ और सिद्ध वैद्य कहलाते हैं।

जिस प्रयोग के करने से ऐश्वर्य बढ़े, सुख-प्राप्ति हो, देव दर्शन हो, शुभाशुभ भविष्य प्रतीत हो, सब कामनायें सिद्ध हों, उसे पौष्टिक प्रयोग कहते हैं।

किसी किसी के मत से १० वाँ सान्तानिक प्रयोग भी माना गया है। जिस प्रयोग के करने से वन्ध्या को भी पुत्र का लाभ हो जाय, वंश की वृद्धि हो, उसे सान्तानिक प्रयोग कहते हैं। मृतवत्सा-रोग आदि का उपाय इसी प्रयोग में है।

इस वर्गीकरण में १० प्रयोग बताये गये हैं, किन्तु कितने ही तान्त्रिक-सम्प्रदायवाले केवल छः प्रयोग ही मानते हैं और उपर्युक्त दसों प्रयोगों को छः प्रयोगों में ही अन्तर्भाव कर लेते हैं।

असल बात यह है कि पहले भारत में इस विद्या का अधिक प्रचार था। परन्तु जब से इस देश में मानसिक दुर्बलता बढ़ने लगी, यह विद्या भी कम होती गई।

मन्त्र-विद्या जैसी उपयोगी विद्या का पूर्ण ज्ञाता आज दृष्टिगत क्यों नहीं होता? भारतीय सम्प्रदायों में जितने सम्प्रदाय हैं उन सब में धर्मगुरु-द्वारा मंत्र-दीक्षा लेने का प्रचार अभीतक मौजूद है। तथापि उन धर्मगुरुओं में और उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दिये हुए मंत्रों में 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं, का सामर्थ्य क्यों नहीं है ? बात यह है कि मंत्र दाता गुरु और मंत्र दीक्षा लेने वाला शिष्य कैसे होने चाहिएं, साधना किस प्रकार करनी चाहिये, आदि बातों को समझ लेने से उपर्युक्त प्रश्न का समाधान स्वयं हो जाता है।

मन्त्रदाता गुरु और दीक्षा लेनेवाला शिष्य कैसा हो, इस सम्बन्ध में मन्त्र-शास्त्र यह कहता है—

पूर्वमात्महितं ज्ञात्वा सूरिणः गुणः शूरिणः।
शिष्यस्याऽपि हितं चिन्त्यं दातुकामे न काञ्चनम्।
(भद्रगुप्ताचार्य)

अर्थात् गुरु अपने हित का विचार कर, शिष्य के हित को भी जानकर निस्पृह भाव से मन्त्र दान करे, किन्तु काञ्चन आदि के लोभ से न करे।

मन्त्राधिकारी के लिये लिखा है—

दक्षो जितेन्द्रियो धीमान् कोपानल जलोपमः।
सत्यवादी विलोभश्च मायामद विवर्जितः॥
मान त्यागी दयायुक्तः परनारी सहोदरः।
जितेन्द्र गुरु भक्तश्च मन्त्रग्राही भवेन्नरः॥
(भद्रगुप्ताचार्य)

अर्थात् चतुर, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, शान्त, अक्रोधी, सत्यवादी, निर्लोभी, कपट, अहंकार और अभिमान-रहित, दयायुक्त, परस्त्री त्यागी, जितेन्द्र और गुरु का भक्त हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही मन्त्र लेने योग्य शिष्य हो सकता है। इसी प्रकार और भी कतिपय महत्त्वपूर्ण बातें हैं जिनकी अपेक्षा से आज मन्त्र-शास्त्र की अवनति हो रही है।

तन्त्र-ग्रन्थों के कर्त्ता मान्त्रिकों ने शिव जी से इस शास्त्र की उत्पत्ति बतलाई है। पर कल्प-ग्रन्थों के कर्त्ता मान्त्रिकोंने 'पूर्वधरों' से इसका विकास हुआ माना और इस विद्या का अधिकारी त्यागी वर्ग को ही कहा है। वेदों के मंत्र-विभाग के जो मंत्र संहिताबद्ध हैं उनके संबंध में अनेक मत हैं। कितने ही उन्हें ब्रह्मा के मुह से निकले कहते हैं तो कितने ही अनादि मानते हैं, कितने ही ऋषि प्रणीत कहते हैं तो कितने ही आविद्यात्मक मानते हैं। चाहे जो हो, पर मन्त्र शास्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत हैं। तथापि यह निर्विवाद सिद्ध है कि भारत की उन्नति के पूर्ण विकास के समय पर यह विद्या प्रचलित थी, फिर बाद को विद्याधर आदि कुलों में भी पहुँची। अन्त में इसके अनेक रूपान्तर हुए और आज तो यह भिन्न भिन्न दशा में यत्किंचित् अब शेष रह गई है।

आज मान्त्रिक कहलानेवाले मन्त्राधिष्ठायक देवता के दास बनकर पूजा-स्तुति-भक्ति करते हैं और देवता को प्रसन्न करना चाहते हैं। पर त्यागीवर्ग ऐसा नहीं करता था। त्यागी मन्त्राक्षरों को जपते थे अवश्य; परन्तु मन्त्राक्षरों के सभी वर्णों कोलो- मविलोम-सन्निपात कर वे मन्त्ररूप स्वयं हो जाते थे और तब उनकी तपश्चर्या और एकाग्रता से, आत्मिक स्वरूप प्रकट हो जाने से, मन्त्राधिष्ठापक देवता स्वयं आकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी सेवा-भक्ति करने लग जाता था और उनके आधीन बना रहता था। जिस कार्य के लिये उनकी इच्छा देखता था वह कार्य उनके बिना कहे ही देवता स्वयं करने लग जाता था। इसमें यह अपना सौभाग्य समझता था कि आज मैं एक महात्माकी सेवाकर कृतकृत्य हुआ। यह बात बड़ी उच्चकोटि की है। ऐसे महात्मा के लिये लिखा भी है कि— 'देवाऽपि तं नमस्यन्ति यस्यधर्मः सहायकः' इसी प्रकार तन्त्रों में भी लिखा है—'दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः। ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्मात् ब्राह्मण देवताः।' इसका मतलब भी यही है कि मन्त्र के अधीन मन्त्राधिष्ठायक देवता हैं और वे मन्त्र ब्रह्मज्ञानी (आत्मज्ञानी) महापुरुषों के अधीन हैं, इसलिये आत्मज्ञानी महापुरुष स्वयमेव साक्षात् देव-स्वरूप हैं। उसको दूसरे देवता की उपासना करने का कोई प्रयोजन ही नहीं रहता। कितने ही ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हुये लोग उपर्युक्त श्लोक का आशय बिना समझे ही यहाँ तक कह देते हैं कि हम ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हुये सब ब्राह्मण देवता हैं। किन्तु ऐसे कह देने से वे देवता नहीं हो सकते और उपर्युक्त श्लोक में जो ब्राह्मण शब्द आया है वह जाति-विशेष नहीं है, गुण-विशेष है। इसलिये यहाँ ब्राह्मण-शब्द की आत्मविद् अर्थ करने से ही अर्थ की संगति लगती है। इसलिये मंत्र वही सिद्ध कर सकता है जो अध्यात्म-विद्या का ज्ञाता होता है। काश्मीर-सम्प्रदाय के मान्त्रिक सरस्वती के उपासक होते हैं। 'मुखे प्रसरणं यस्याः सा सरस्वती', यह सरस्वती शब्द की व्युत्पत्ति है। अर्हन्मुखपद्म में वास करनेवाली यानी भगवद् वाणी का नाम ही सरस्वती है। यह सात्त्विक उपासना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सिद्धि और मुक्ति की दाता है। राजस और तामस उपासना करने से लौकिक कार्य हो भी जाय तो भी परलोक सिद्धि नहीं होती। इसलिये ऐसी उपासनायें हेय हैं। परन्तु कलिकाल की महिमा अगम और अपार है। भारतीय सम्प्रदायों के आचार्यों ने भी मोह में फँसकर ऐसी उपासना करनी प्रारम्भ कर दी हैं। सर्व सङ्ग-परित्यागी संन्यासियों के आचार्य और जगद्‌गुरु कहलानेवाले भी माया-देवी की पूजा करने लग गये हैं। भारतीय जनता में मन्त्र-शास्त्र का सच्चा स्वरूप जाननेवाले घट गये हैं और ऐहिक कामनाओं के अभिलाषी वर्गकी वृद्धि हो गई है। मान्त्रिक स्वयं मन्त्रस्वरूप बन कर देवताओं को अपना आज्ञाकारी बनाना भूल गये हैं और खुद आज्ञाकारी बन बैठे हैं।

WITH BEST WISHES FROM:-

A. G. Arts

CINE COMMERCIAL

&

SIGN BOARDS

Specialists--Exhibition Stall Construction & Decoration

CINE AND COMMERCIAL ARTISTS

1/24 Meeran Sahib Street

Mount Road,

MADRAS 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्री रामचरित मानसमें)

शिव के विभिन्न स्वरूप

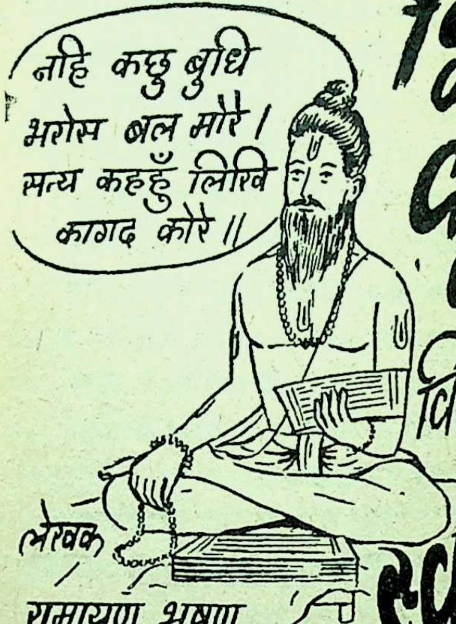

लेखक

रामायण भूषण,
रामचंद्र छांगाणी विशारद

हमारे सन्तों और ऋषियों–महात्माओं की अनमोल थाती उनके द्वारा प्रदत्त धर्म-ग्रन्थ हैं। इनके अध्ययन, मनन और चिन्तन से हम बहुत बड़े ऋण से तो मुक्त होते हैं, किन्तु अपना यह लोक और परलोक भी सुधारते हैं। इन ग्रंथों के रचियिताओं ने प्रारम्भ में अवश्य ही अपने आराध्य देवों की वन्दना कर लेखनी से होने वाली गलतियों के लिये क्षमा-याचना की है। सम्भवतः समस्त भव-मुक्ति का भी सार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम देवताओं के सिवाय और कोई नहीं होगा। यह भी हो सकता है, कि तैंतीस करोड़ देवताओं की वन्दना असंभव है और लेखनी की भूलसे भगवान् 'आशुतोष' का नाम वन्दना रूप में न आ सके, किन्तु रचनाकार कभी इससे भयभीत नहीं होता और 'दानी' से क्षमा माँगकर अपनी पिछली समग्र भूल को धो डालते हैं। क्योंकि भगवान् शंकर को 'आशुतोष' की संज्ञा इसीलिये मिली है। वे शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं और फिर हैं भी अवढर दानी जैसा कि गोस्वामीजी ने लिखा है—रावरो बावरो नाह भवानी।

अनेक धर्म-ग्रंथों ने भगवान् शिव के शिवत्व का खूब वर्णन किया है। किन्तु गोस्वामीजी द्वारा 'रामचरित मानस' में शिव के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया है। इस वर्णन में भगवान् शिव के चरित्र का सम्मिश्रित दर्शन कराकर गोस्वामीजी ने अपनी बुद्धि और लेखनी का ठोस परिचय दिया है। गोस्वामीजी ने इतने बड़े महान् ग्रंथ की रचना कर अपने को आत्मप्रशंसा के जाल से मुक्त रखा। क्योंकि तुलसीदास की भावना में लोक-कल्याण का बीजारोपण था और अपनी प्रशंसा में कुछ छंद आदि लिखकर वे अपनी आत्मा को लांछन नहीं लगाना चाहते थे क्योंकि उन्होंने स्पष्ट लिखा है—

नहिं कछु बुधि, भरोस बल मोरे। सत्य कहहुँ लिखि कागद कोरे॥

इस प्रकार गोस्वामीजी ने अपना स्पष्ट मत देकर वे भविष्य के प्रति निश्चित हो गये। किन्तु अंततः इतना बड़ा उत्तरदायित्व सम्भाले कौन ? तुलसीदास की दृष्टि में भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकर से अधिक धर्मात्मा कौन होगा ? इसलिये तुलसीदास भगवान् शंकर को ही यह सम्मान और भार सौंपकर स्वयं अलिप्त हो गये। श्री मानस में ग्रंथ लेखन के पूर्व ही, मूलकथा को समक्ष आने के पूर्व ही लिखते है—

रामचरित मानस मुनिभावन। बिरचेउ संभुसुहावन पावन।

और

संभु कीन्ह यह चरित सुहावा।

अर्थात्—यह रामचरित मानस तो श्री शंकरजी के द्वारा रचित है जो मुनियों को भी प्रिय है। इससे बड़ा प्रमाण, साक्षी या गवाह और क्या हो सकता था ? इस प्रकार हम देखते हैं कि गोस्वामीजी अपनी गठरी भगवान् शिव को सौंपकर स्वयं निमित्त मात्र रह जाते हैं। वैसे गोस्वामीजी इस भार के लिये संपूर्ण रामचरित में कई स्थानों पर कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं— सोई महेस मोहि पर अनुकूला।

करहिं कृपा मुद मंगल-मूला॥

अपनी लेखनी की सफलता और असफलता का भार भगवान् शिव पर छोड़ गोस्वामीजी स्वयं मुक्त हो गये। इस तरह हम श्री रामचरित मानस के प्रणेता ही भगवान् शिव को मानकर चलें तो भी श्री गोस्वामीजी के शब्दों में हम असत्य या दोषी नहीं होंगे। क्योंकि 'मानस' की आदर्श रचना में गोस्वामीजी ने भगवान् को ही प्रणेता मान लिया है।

'रामचरित मानस' में भगवान् रामका आदर्श चरित्र तुलसीदास ने बड़ी तन्मयता और आद्योपान्त भक्ति-ज्ञान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैराग्य की भावना से ओतप्रोत होकर लिखा है। किन्तु तुलसीदास के राम का चरित्र आदर्श की उस चरम सीमापर पहुँचा हुआ है जिसे पढ़कर मनमें एक गर्वानुभूति होती है। भगवान् राम का चरित्र भी अनेक गुणों का आगार है। इसलिये संपूर्ण रामचरित मानस में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, आदर, भ्रातृ, मातृ, पितृ प्रेम गुरुमहिमा, युद्ध और राजनीति आदि का हम अपूर्व समन्वय देखते हैं। इन समन्वय के सिद्धान्तों में भगवान् राम का चरित ओत प्रोत है और इनके चरित्र से कुछ अछूता नहीं है। इन समस्त गुणों के बाहर भी हम श्रीराम के चरित्र को भगवान् शिव से प्रभावित देखते हैं। रामकी आदर्शवादिता शिव से परे नहीं है। राम के हृदय में भगवान् शंकर के प्रति श्रद्धा और भक्ति की अनमोल सार्थकता दिखाई देती है। रामका समस्त आदर्श शिवत्व से पूर्ण है और शिव का शिवत्व राम से पूर्ण।

रामचरित मानस में इसके ठोस प्रमाण गोस्वामीजीने अनेक स्थलपर दिये हैं। वैसे प्रभु रामका शील सर्वश्रेष्ठ है किन्तु भगवान् शंकर का प्रिय होने पर ही भगवान् रामको प्रिय होगा—

सिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहिं सपनेहुँ न भावा॥

—भगवान् कहते हैं कि—भगवान् शिव का द्रोही अगर मेरा दास (सेवक-या प्रिय) बनना चाहे तो ऐसा पुरुष मुझे स्वप्न में प्रिय नहीं होगा, प्रत्यक्ष की तो बात ही दूर है। यह भगवान् राम ने स्वप्न की कोरी कल्पना करनेवाले मूढ़-मति और शिव-द्रोही के बारे में कही है किन्तु ऐसे कई सक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाण राम ने रामचरित मानस में कहे हैं -जैसे कि-

शंकर विमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥

अर्थात्— शंकर का जो द्रोही है वह तो हमें स्वप्न में भी प्रिय नहीं है किन्तु जो भगवान् शंकर के विमुख (विरोध) है और फिर भी हमारी भक्ति की चाह, कामना करता है वह नरक का अधिकारी है और अत्यन्त मूर्ख बुद्धि है। क्योंकि प्रभु श्रीराम भी शिवतत्व के श्रद्धालु हैं और उनका यह निर्णय एकांगी या व्यक्तिगत न होकर स्वयं के लिये भी लागू समझते हैं। इसलिये कि कल को भगवान् राम के आदर्श को देखते हुये—अगर वे स्वयं 'शिव' के प्रति श्रद्धापूर्ण न हो तो प्रभु के आदर्श को मत मिलेगा कैसे? इसलिये रामके भक्त को शिव-मय होना इसलिये आवश्यक है कि—

कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरे। अस परतिती तजहु जनि भोरे॥

और — सिव समान मोहि प्रिय नहि दूजा।

भगवान् राम कहतेहैं मुझे शिव के समान कोई और प्रिय है ही नहीं यह सोचकर, और विश्वास कर अपने मन का भोलापन त्याग दो। इस प्रकार हम देखते हैं कि भगवान् राम को आशुतोष शिव बहुत प्रिय हैं। भगवान् अपने भक्तों को शिव-भक्ति के लिये प्रेरित कर उन्हें चेतावनी दे देते हैं। किन्तु मनुष्य शरीर समग्र भूलों का पुतला है। उसके द्वारा पगपगपर भूलें होती हैं और ऐसी स्थिति में प्रभु उसे पर ज्ञान देकर चेतना देते हैं, जागृत करते हैं। परन्तु जिन ऋषियों और मुनियों ने तप-बल से इन्द्रियों को जीत लिया है, जिन्होंने संसार की असारता के प्रमाण लिये के बड़े बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रंथों की रचना की है वे भी कहीं भूल न कर बैठें इसलिये भगवान् उन मुनियों को भी चेतावनी देकर कहते हैं—

जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भगति हमारी॥

—वैसे मुनिगण ईश्वर की कृपा के पात्र हैं, किन्तु प्रभु राम की भक्ति का सुफल प्राप्त करने के लिये उनको भी शिव की कृपा का पात्र पहले होना पड़ेगा।

अभी तक तो भगवान् राम ने शिवजी के प्रति अपनी भक्ति के चाहनेवालों से शिव की भक्ति को सुलभ करने को कहा किन्तु भगवान् शिव भी राम की भक्ति के ही अनुसरण करने वाले हैं। शिव-तत्त्व में भी रामके प्रति भक्ति-प्रेम और श्रद्धा का अमूल्य साधन ही राम की भक्ति है। पार्वतीजी के हृदय में भगवान् राम के चरित्र को सुनने की उत्कट अभिलाषा देख भगवान् शिव ने कहा—

"सुनहु राम अवतार चरित परम सुन्दर अनघ"

प्रथम तो शिवजी ने भगवान् के चरित्र को श्रेष्ठ और समस्त पापों को हरण करनेवाला बताया और इस तरह शिव ने गिरिजा के आकर्षण की वृद्धि की।

शिवजी कहते हैं—

सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाये।
विपुल बिसद निगमागम गाये॥

इस प्रकार वर्णन कर भगवान् शिव गिरिजा की जिज्ञासा बढ़ाते हैं। क्योंकि राम के चरित्र की कथा तो अत्यन्त विशाल है। सती के प्रसंग में भी गोस्वामीजी ने एक बड़ी चातुरी का उदाहरण प्रस्तुत किया है। सती जब भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम की परीक्षा लेने गई तब सारा भेद ईशकृपा से भगवान् शिव से अज्ञात न रह सका। सती मर्म छिपाये पर भी—

तब संकर प्रभु पद सिर नावा।
सुमिरत राम हृदय असआवा॥

यह तो भगवान् राम का ही प्रभाव था कि शिव अपने हृदय में सती की समस्त परीक्षा का मोह जान गये। राम-चरित मानस में भगवान् शिव का बहुत बड़ा स्वरूप है। भगवान् राम के समस्त स्वरूप का दर्शन शिवजी को अपनी आत्मा में हो जाता है। समस्त स्थितियों में भी—भगवान् शिव को केवल राम के नाम का आधार ही प्रमुख था—

जपहिं सदा रघुनायक नामा।
जहँ तहँ सुनहिं रामगुण ग्रामा॥

राम के गुणानुवाद में ही शिवजी प्रेम-रस में अवगाहन करने लग जाते थे जैसा कि गोस्वामी जी ने भगवान् राम का वह स्वरूप जब श्री जानकीजी से उनका ग्रन्थि-बंधन होता है। उस समय का सुहावना और मन लुभावना दृश्य गोस्वामीजी ने कवितावली में किया है—

दुलह श्रीराम बने, दुलहिन सिय-सुन्दर मन माहीं।

परन्तु उपरोक्त पद में तो श्री सीताजी ही रामकी रूप माधुरी में डूब गईं। किन्तु भगवान् शिवजी कब श्रीराम के इस रूप-दर्शन से वंचित रहते—

संकर राम रूप अनुरागे। नयन पंचदस अति प्रिय लागे॥

भगवान् श्री राम के रूप-दर्शन को देख शिवजी प्रेम-विभोर हो गये। इस प्रकार रामचरित मानस में हम शिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राम का उभय पक्षों में एक दूसरे के पूरक माने है। श्रीराम, शिव तत्व में और शिव राम के आदर्श के अनुसरण कर्ता। इसमें गोस्वामीजी की काव्य कला और प्रसंगों की प्रस्तुतीकरण की चातुरी है। और फिर राम और शिव दोनों रामचरित मानस के प्रणेता या चरित्र लीला करने वाले हैं।

अब हम रामचरित मानस के उन विविध प्रसंगों पर दृष्टिपात करें जहाँ गोस्वामीजी ने शिवजी के स्वरूप का हमें कराया है। सम्पूर्ण रामचरित मानस में अयोध्याकांड एसा कांड है जो मनको द्रवित कर देनेवाला है। वैसे तो समस्त कांडों में तुलसीदास का काव्य-सौन्दर्य बहुत निखरा हुआ है किन्तु अयोध्याकांड की रचना के समय गोस्वामीजी की लेखनी से जो घटनायें और प्रसंग निसृत हुये उनमें जीवन का सारा मर्म और कवि हृदय की विशेषता प्रकट होती है।

श्री भरतजी का पिता का गोलोकवास हो जाने पर अवध में आगमन होता है। संपूर्ण अवध को उन्होंने शोक में डूबा देखा। इसके पूर्व अपने ननिहालमें अशुभ स्वप्न देखकर भरतजी का हृदय अनेक शंकाओं में उलझ गया। उनकी भ्रान्ति में अभिवृद्धि होने लगी ऐसे समय भयभीत स्थितियों से मानसिक शान्ति कैसे मिले। भरतजी को आशुतोष शंकर की शरण लेनी पड़ी--

बिप्र जेवाँइ देहि बहु दाना।
सिव अभिसेक करहिं बिधि नाना॥
मागहिं हृदय महेस मनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय भरतजी के हृदय में जो विशादातिरेक बढ़ रहा था उसमें न्यूनता और शान्ति का अनंत मार्ग भगवान् शंकर के अतिरिक्त कोई था ही नहीं। परन्तु भरतजी के हृदय की आकुलता में अभीतक तीव्रता ही बनी रहती है और समस्त दुखों के हर्त्ता भगवान् शंकर को वे मनाते हैं। इस प्रकार भरतजी अपना शंकाकुल और भारी हृदय लेकर श्री अवध पधारते हैं। वहां की समस्त स्थिति, नगर में शो... नर-नारी देख वे विचलित हो जाते हैं। किन्तु शिवारा... का सम्बल ही भरतजी के लिए सबकुछ है। कैकेयी के लिए तो भले यह सुखद हो किन्तु भरतजी के लिए तो यह सब कुछ त्याज्य और दुःख के परिवार में वृद्धि करने वाला है। और उनके समस्त पश्चातापका वे कितना करुण वर्णन करते हैं-भगवान् शिव को अपना सर्वस्व और मुक्तिदाता समझकर भी भरतजी कहते हैं—पितु सुरपुर बन रघुबर केतु।

मैं केवल सब अनरथ हेतु।

भरतजी अपने को ही दोषी ठहराते हैं। उनकी ग्लानि में अनवरत रूपेण वृद्धि होती जाती है। फिर भी उनका मन शान्त नहीं होता अन्ततः वे समस्त आध्यात्मिकता की कसौटी पर अपने को उतार देते हैं। इस समय भरत जीके मानसिक कष्ट का वे कितना करुण रूप कहते हैं।

जे परिहर हरि हर चरन भजति भूतगन घोर।
तेहि गइ गति मोहि देउ बिधि जौ जननी मत मोर।

यहाँ भरतजी के द्वारा पुनः भगवान् शिव का नाम साक्षी के रूप में देखते हैं। हरि (विष्णु) और हर (शिव) के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामों का आधार मानकर भरतजी अपने निर्मल हृदय का प्रमाण देते हैं। वह इसलिए कि पूर्व-अनिष्ट की सम्भावना से भगवान् शिव परिचित थे ही किन्तु अगर अब भगवान् शिव के प्रति जो श्रद्धा नहीं रखते, और ऐसे लोगों की जो गति होगी वही गति भरतजी विधाता से माँगते हैं। इससे अधिक करुणा युक्त वचन भरतजी कब कह पाते? इसके अन्त भी भरतजी ने मन को समस्त गति का अधिकारी माना है अगर— तिन्ह कैं गति मोहि शंकर देउ।

जननी औ महुजानौ भेउ॥

इस प्रकार भगवान् शिव को हम रामचरितमानस के प्रणेता, श्रीराम के आराध्यदेव, भरतजी के हृदय की मानसिक अशान्ति को शमन करने वाले आशुतोष आदि विविध रूपों में देखते हैं।

भगवान् शंकरजी रामचरितमानस में हमारे समक्ष विविध रूपों में आते हैं। वैसे गोस्वामीजी ने भी भगवान राम के समस्त आदर्शों का वर्णन बड़ी कुशलता से किया है और भगवान् श्रीराम भी शिव के अनन्य-श्रद्धावान और प्रियपात्र हैं भगवान् राम तो अपनी निश्चय धारणा और विचार से दृढ़तापूर्वक कहते हैं—

संकर प्रियमम द्रोही, सिव द्रोही ममदास।
तेनर करहिं कलप भरि, घोर नरक मँहु बास॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि।
भगति मोरि तेहि संकर देहहि॥

प्रभु श्रीराम की अनन्य श्रद्धा के देव भगवान् शिव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप हम गोस्वामीजी की भाषा में पूर्णतया देखते हैं। ये समस्त स्वरूप सात्विकताके धरातल पर पर अवस्थित हैं। किन्तु भगवान् शिव तो सत्य निष्ठा और भक्ति से शीघ्र प्रसन्न होते हैं इसीलिए तो रावण जैसे ने भी—

उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती।
बिधि, हरि हरपुजेहु बहु भाँती॥
संकरू जगत बंद्य जगदीसा।
सुर नर मुनि सब नावत सीसा॥

भगवान् शिव के विभिन्न स्वरूप श्रीरामचरित-मानस में वर्णित हैं। उनमें से कुछ स्वरूप प्रस्तुत किए हैं। वैसे भगवान् शंकर जी आशुतोष हैं। उनकी कृपा तो भोले और भावुकों पर शीघ्र हो जाती है। इसलिए अगर वे इस पक्ष में कोई असम्भव जैसी बात नहीं है। क्योंकि अगर शिव के विभिन्न स्वरूपों का गोस्वामीजी द्वारा कि वे तुलसीदास के मानस के प्रणेता हैं तो इसमें न होता शायद श्रीराम का आदर्श और उनकी लीलाएँ भी अधूरी सी लगती। क्योंकि भगवान शिव का तत्व ही राम के आदर्श की शोभा बढ़ाने वाला है। शिवजीका चरित्र अपार है इसमें गोता लगाने के लिए हृदय में निर्मलता, आस्था, सत्यनिष्ठा और अपना सर्वस्व त्याग आवश्यक है। भगवान शिव की आराधना तो गोस्वामीजी ने अपने मानसमें कई स्थानों पर की है। इस प्रकार शिव के स्वरूप को जानने के लिए शिव-तत्वों में लीन होना अवश्यक है तब तक यह सबकुछ दुर्लभ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

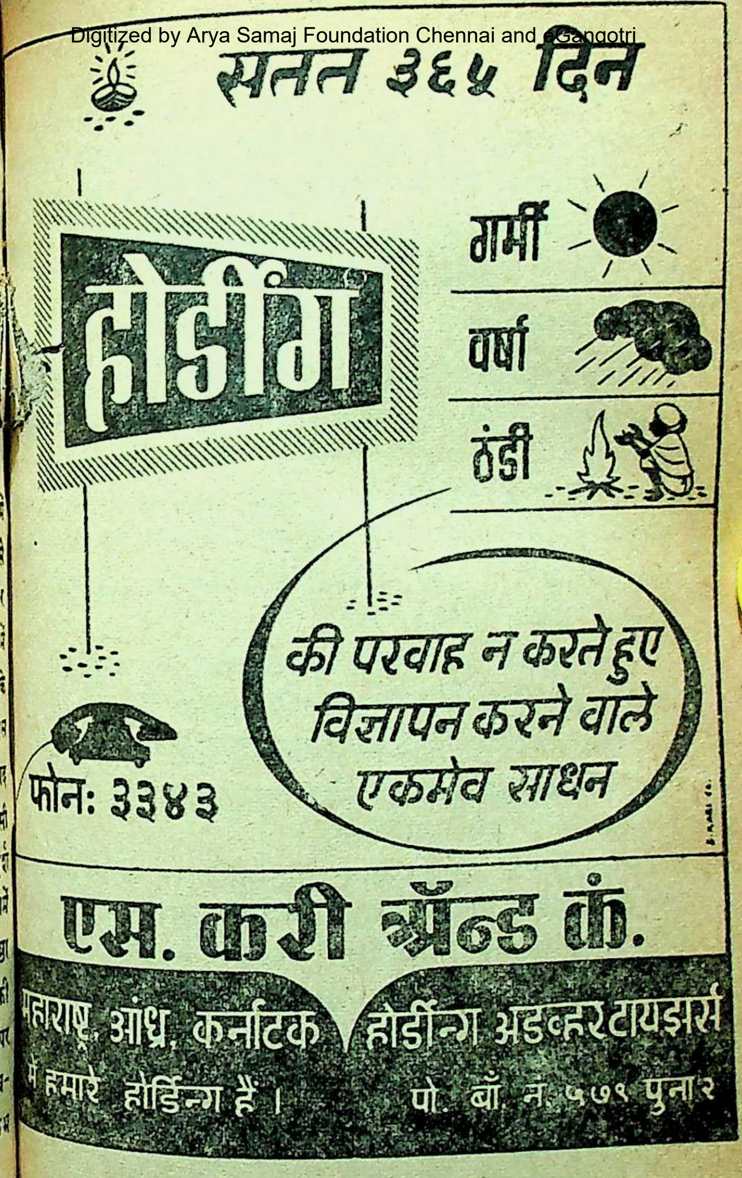

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१–इस योगाश्रम में प्रविष्ट होने के बाद साधक को बीड़ी, सिगरेट, शराब आदि व्यसनों से दूर रहना होगा। यदि ऐसी किसी दुर्व्यसन अथवा दुश्चरित्रता की बात संचालक को मालूम होगी तो उसे किसी अग्रिम सूचना के बिना आश्रम से हटा दिया जायेगा।

२–ली हुई फीस किसी भी दशामें वापस न दी...

३–टूवाल, नोटबुक, नेति, धौति, ब्रह्मदातून आदि अन्य साधन की वस्तुयें उपयोग में लाने के बाद साफ कर नि... स्थान में रखनी होंगी।

४–सामान्य आरोग्य के साधारण अभ्यास में साधक ... पारंगत समझे जायेंगे, तभी उन्हें योग के अन्तरंग अभ्यास की शिक्षा दी जायेगी इस सम्बन्ध में संचालक को पूर्ण संतोष होना आवश्यक होगा।

५–योगाश्रम के संचालक उचित और सात्विक दान स्वीकार कर सकते हैं और उसमेंसे एकत्रित सम्पत्ति संचालक की इच्छानुसार योगविद्या के प्रचारार्थ खर्च की जायेगी।

६–कमसे कम आठ वर्ष और इससे ऊपर की अवस्था वाले ही योगाश्रम में प्रवेश पा सकेंगे।

७–आश्रम में प्रवेश पाने की फीस ५रु. है। रोगियों को रोग के आधार पर अधिक फीस देनी होगी। नीरोगियों के लिये १ महीनेकी फीस १० रुपये और ३ मास के २७रु. है।

८–नवीन प्रवेश पहली या १५ को ही किया जाता है। बीच में प्रवेश करनेवालों की फीस पहली या १५ तारीख से प्रारम्भ मानी जायेगी। साधकको फीस अग्रिम देनी होगी। ... समय प्रात:काल ७॥ से ९॥ और सायंकाल ६ से ७॥ है। इन दो में से किसी भी समय को अपने अनुकूल बना सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामतीर्थ योगाश्रम की प्रवृत्तियां

(महत्वपूर्ण सूचनाएं और आपकी उन्नति)

छः प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार और ... का अभ्यास तथा रोगियों के लिये जलोपचार, मालिश, मानसोपचार ... प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगोपचारकी व्यवस्था है।

पुरुषों के लिये समय:—प्रातःकाल ७ से ९॥
सायंकाल ६ से ७॥

महिलाओंके लिये समयः—मध्याह्न ४ से ५

महिलाओंका इलाज (अभ्यास) महिलाएं करती हैं। रविवार को ... १० बजे योग, वेदान्त, गीता तथा रोग निवारण के लिये प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा आदि पर रामतीर्थ योगाश्रम के संचालक अथवा अन्य प्रतिष्ठित विद्वान का व्याख्यान होता है। व्याख्यानमें आनेवाली आम जनता से किसी प्रकारकी फीस नहीं ली जाती है।

प्रति शनिवार को सायं ५॥ बजे और रविवार को प्रातः १० बजे व्याख्यान होता है।

शनिवार तथा रविवार को व्याख्यानों के साथ-साथ भजन, कीर्तन, ...मन्त्रपाठ, ध्यानाभ्यास तथा व्याख्यानों के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष प्रयोग भी बताये जाते हैं।

विशेष सूचना:— योगाभ्यास एवं रोग निवारणार्थ बाहर गांव से आनेवालों के लिये श्रीरामतीर्थ योगाश्रम में रहने तथा भोजन का प्रबंध नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

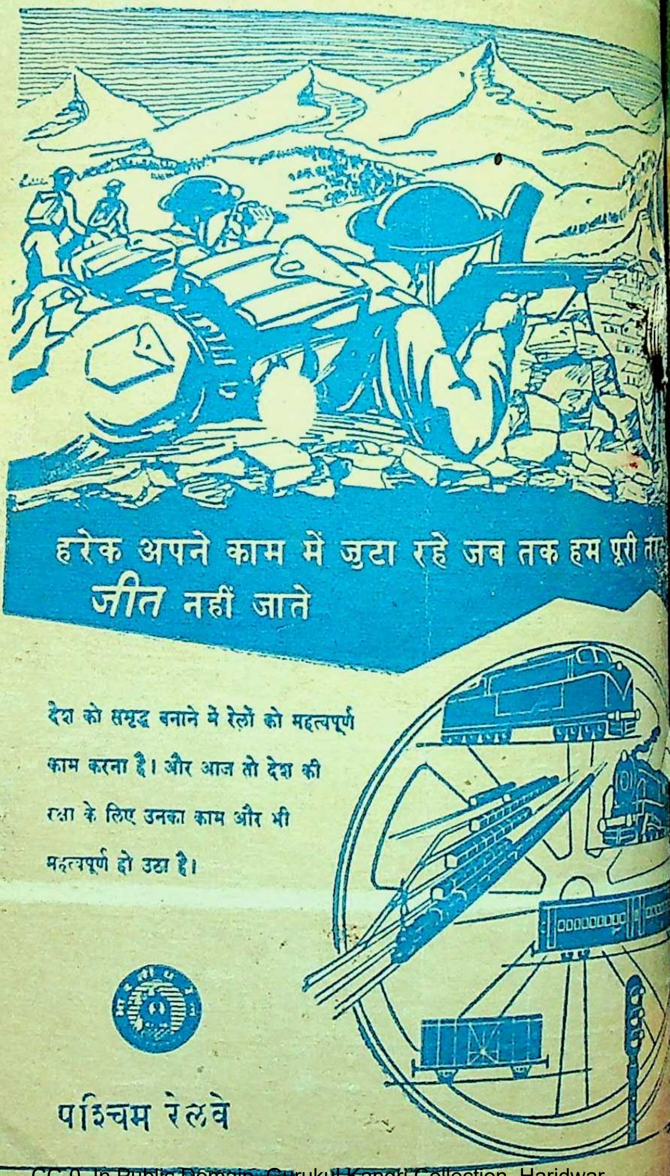

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ

हिन्दी मासि

50 PAISE

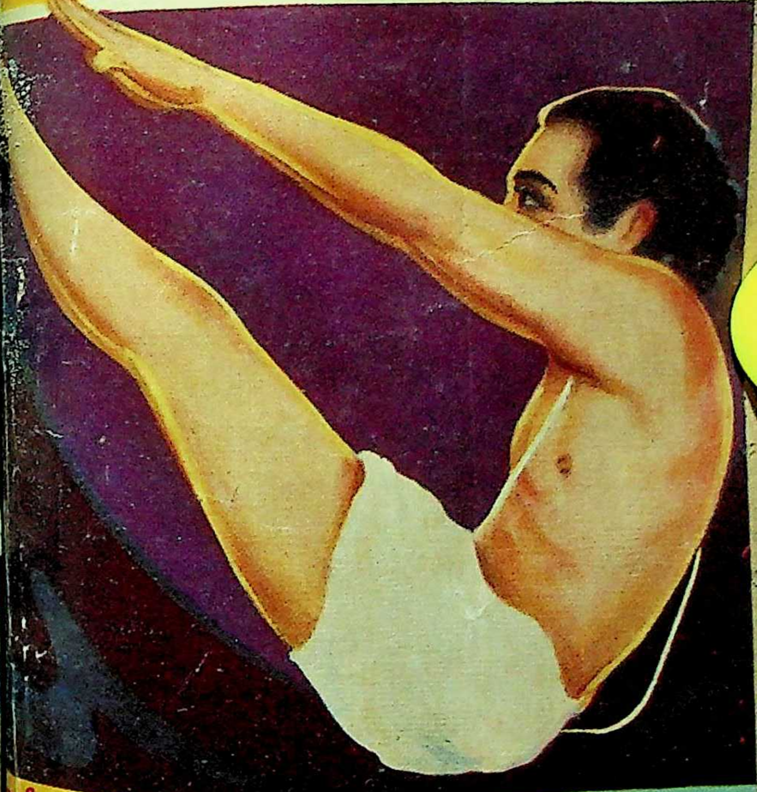

र्ध्व पाद हस्तासन

रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई.१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

(बम्बई १४) के

महत्वपूर्ण निर्माण तथा प्रकाशन

(घर-घर में उपयोगी)

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल

(स्पेशल नं, १)

बाल, मस्तिक तथा शरीर की मालिश के लिये सभी प्रकृति के लिये सभी ऋतुओंमें अनुकूल है। सर्वत्र प्राप्य है।

उमेश योगदर्शन

(प्रथम खण्ड)

(लेखकः—योगिराज श्री. उमेशचन्द्रजी)

अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, मराठी भाषाओंमें मिलता है। यह के मलशोधन कर्म, आसन, प्राकृतिक चिकित्सासे रोगनिवारण मानस पचारका ज्ञान करानेवाला परमोत्तम ग्रन्थ है। ग्लेज आर्ट पर विभिन्न आसनों तथा षट्कर्मों के १०८ चित्र हैं। पृष्ठ-संख्या के अन्तर्गत योगाभ्यासका विस्तृत बोध कराया गया है। मूल्य १५ डाकव्यय २ रु.

योगासन चित्रपटः—योगासन चित्रपट अनेक रं किया गया है। यह चित्रपट अनेकों आसनों से परिचित कराता है। आधारपर अपने घरपर ही आसनों का अभ्यास करके सदैव नीरोग सशक्त रह सकते हैं।

मूल्यः—डाकव्यय सहित ३ रु.

रुपया भेजनेका पताः—श्रीरामतीर्थ योगाश्रम, पो. दादर,(बम्बई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मानव जाति के उत्थान का प्रतीक
हिन्दी जगत् का सर्वोत्तम मासिक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ

सम्पादक—
योगीराज
उमेशचन्द्र जी

वर्ष—५—अंक २
मई १९६४

इस अंक का मूल्य
५० न. पै.
वार्षिक शुल्क ५ रु.
डाकव्यय सहित

टेलीफोन
सम्पादक
व्यवस्थापक } 62899
विज्ञापन
तार—प्राणायाम दादर

लेख	लेखक	पृष्ठ

लेख	लेखक	पृष्ठ
वैदिक प्रार्थना	संकलित	७
उमेशवाणी		८
उर्ध्वपाद हस्तासन	उमेश योगदर्शन ग्रंथ से	१०
हमारा कर्तव्य	सम्पादकीय	११
क्रोध	हरमन चौहान	१३
शिवोपासन रहस्य	लक्ष्मीकान्त मिश्र	१७
...वान् श्री शिवजी ही ईश्वर हैं	चंद्रिका प्रसाद पाठक	३१
...नाक्ष की आशा (कहानी)	श्री आनंद	४३
वैज्ञानिक जल चिकित्सा	डा. जे. पी वर्मा	६७
अष्टांग योग	ब्रह्मचारी श्रीकंठ चैतन्य	८३
अशान्ति के भंवर में	आर. एस. शास्त्री	९४
धर्मोपदेश	श्री स्वामी रामतीर्थ	९८
श्री रामचरित मानस	टीकाकार योगीराज उमेशचन्द्रजी	१०९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख	लेखक	पृष्ठ
पशु बलि	ब्रजवल्लभ विशारद	११९
अमर संगीत	रामसमझ शर्मा	१२५
प्रश्नोत्तर	सम्पादकीय कलम से	१३८
आश्रम समाचार	संवाददाता द्वारा	१४९
किस्मत का खेल (कहानी)	वीरेश्वर मुंडाजे	१६३
स्वानुभव	कार्तिकेय विश्वंभर दीक्षित	१७६
अबला सबला भी हैं (सत्य घटना)	महादेव बा. पालकर	१७९
पाठकों के अभिमत		१८८
भारतीय संस्कृति की परम्परा	चांदमल माहेश्वरी	१९३
आत्मतेज का प्रभाव	श्याम मनोहर व्यास	१९८

मुखपृष्ठ का परिचय

श्री रामतीर्थ योगाश्रम के संस्थापक संचालक महोदय की स्थिति उर्ध्वपाद-हस्तासन में दर्शनीय है।

विशेष सूचना

लेखकों से आग्रह है कि वे लेख भेजने से पूर्व 'लेखकों से' वाले पृष्ठ को पढ़ लें। फिर केवल अपनी रचना को निराला मुद्रक १४०, आर्थर रोड बम्बई ११ के पते पर भेजें। लेख भेजने के बाद यदि किसी प्रकार का पत्र व्यवहार करना आवश्यक समझें तो उत्तर के लिये जवाबी कार्ड भेजना आवश्यक है। अन्यथा कोई उत्तर न भेजा जायेगा।

सम्पादक श्री योगीराज उमेशचन्द्रजी ने निराला मुद्रक १४० आर्थर रोड बम्बई ११ में मुद्रित कर, श्रीरामतीर्थ योगाश्रम के लिये विन्सेन्ट स्क्वेर स्ट्रीट २ दादर बम्बई नं. १४ से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता जनार्दन का सद्भावनाहस्त

श्री रामतीर्थ योगाश्रम विगत ३० वर्षों से जनता जनार्दनके तन-मन विकासार्थ जिस जी तोड़ प्रयत्न में लगा है, उसी सेवा से प्रभावित होकर उसके सेवा पूर्ण हाथों को अधिक शक्तिशाली बनाने हेतु

अप्रैल मास में प्राप्त सद्भावना राशि

(१) श्रीनरेन्द्र मूलजी दुलेराय मूलजी (बम्बई) १५) रु.
(२) श्री. बसन्त गणेश मंडलिकी (बम्बई) १५) रु.
(३) श्री. आर्य नरेशचन्द्र (कल्याण) ११) रु.
(४) श्री. जतीन्द्र जीवनराम त्रिवेदी (ठाणा) ११) रु.
(५) श्री सूर्य नारायण वि. पाठक (नांदेड) ११) रु.
( ) श्री. गौरीशकर वा. उपाध्याय (कोटायम) ११) रु.
(७) श्रीमती वीरमती ज. प्रजापति (गुन्तूर) १५) रु.
(८) श्रीमती जगदम्बा श्रीरंग नायडू (दिल्ली) १५) रु.
(९) श्रीमती शालिनी द. गोडसे (भद्रावती) १५) रु.
(१०) श्रीमती सुन्दरी ताई चि. केलकर (वर्धा) ११) रु.
(११) कुमारी भानुमति न. दातार (हुबली) ११) रु.
(१२) कुमारी रुकमिणि य. सोमेश्वर (उल्हाळ) ११) रु.
(१३) कुमारी रूपमणि अ. चेट्टीयार (मद्रास) २५) रु.

सद्भावनाराशि निम्न पते पर भेजें:—
श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर, बम्बई १.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रोगों से मुक्ति पाने के लिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे अवश्य पढ़िये

योगिक-प्राकृतिक चिकित्सा डाक व्यवस्था विभाग

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ उठाकर शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्त बनिए।

शारीरिक एवं मानसिक रोग निवारणार्थ रोगी योगिक और प्राकृतिक चिकित्सा के आधार से अपने रोग निदान में डाक द्वारा लिखित सलाह निम्न नियमानुसार ले सकते हैं।

१-व्यक्तिगत रूपसे निदान पूछने के लिये प्रथमबार ५) रु. फीस होगी, दूसरी बार ३) रु. और फिर हर बार के लिए दो रुपये फीस होगी।

२-रोगी को इसके अन्तमें छपी बातों का उत्तर स्पष्ट रूप से अलग कागज पर लिखकर भेजना होगा।

३-रोगी को फीस मनिआर्डर अथवा पोस्टल आर्डर से ऊपरोक्त पते पर स्पष्ट निर्देश के साथ भेजने होगी।

४-रोगी को उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी में से जिस भाषा में चाहिए उसके लिए लिखना चाहिए।

५-प्रश्नावली रजिस्ट्रीसे भेजनी चाहिए और उत्तर भी रजिस्ट्री से ही भेजा जायगा सामान्य डाक से भेजी गई प्रश्नावली खो जाने की जवाबदारी भेजने वाले की होगी। विदेश से प्रश्नावली भेजने वालों को डाकव्यय के लिए अतिरिक्त धन भेजना होगा।

६-योगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा विभाग की सलाह और सूचनानुसार रोगी को पथ्य पालन करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७–फीस देकर इलाज कराने वाले रोगी को निदान की शुरुवात से विवरण रखना होगा और मांगने पर उसे दे देना होगा।

८–रोगी को योगिक उपचार, और प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती मराठी में छपे उमेश योगदर्शन ग्रंथ को अपनी इच्छित भाषा में रु. १७–५० मनि आर्डर द्वारा भेजकर उपरोक्त पते से मंगाना पड़ेगा।

रोगी को सलाह पूछने के लिए निम्न बातों को स्पष्ट करके भेजना चाहिए।

रोगी का नाम व पता, उमर, वजन, ऊंचाई। मल बद्धता रहती है? अपचन है नींद गाढ़ी आती है? शरीर में अशक्ति है? रात को स्वप्न आता है? रात को कितने घंटे सोते हो? दिन को कितना समय सोतें हो? वीर्य दोष है? शरीर में कोई चर्म रोग है? कफ विकार है? पित्त विकार है? वात विकार है? कोई मानसिक चिन्ता है? शरीर में जड़ता है? स्मरण शक्ति कैसी है? मांसाहारी या शाकाहारी? विवाहित अथवा अविवाहित? हाथ पैर के तलुवे गरम या ठंड़े रहते हैं? पेशाब का रंग कौनसा है? केवल बौद्धिक परिश्रम है अथवा शारीरिक? प्रातः भ्रमण, तैरना, और कोई व्यायाम चालू है? स्नान ठंडे या गरम जल से करते हो? दारू, गांजा, तम्बाकू, सिगरेट बीड़ी, तपकीर, चाय आदि का व्यसन है? पहले कौनसा रोग हुआ है? शिरदर्द कबसे है? वर्तमान रोग का विवरण? वर्तमान में कौनसी दवा चालू है। कभी प्राकृतिक अथवा योगिक चिकित्सा करवाई है? कब?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेखकों से

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रामतीर्थ' मासिक में स्वीकार करने योग्य मुख्य विषय-

शारीरिक रोग निवारण, सशक्त एवम् सदानिरोगी मानसिक रोग [illegible] करके मन की शांति, एवम् आत्म साक्षात्कार करने योग्य, उपरोक्त [illegible] प्राप्त करा देने योग्यअष्टांग योग, (यम, नियम आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधी, राजयोग, भक्ति योग, लय योग, मंत्रयोग, शिवस्वरोदय, वेद उपनिषद, गीता ,रामायण, महाभारत, महात्माओं का जीवन चरित्र एवम् उपदेश, प्राकृतिक चिकित्सा, (आकाश, वायु, तेज, जल तथा पृथ्वी द्वारा इलाज) महिलाओं के जीवन सुधार के लिये बालकों के संस्कार सुधारने के लिये, अनुरूप लेख, कहानी, धारावाहिक उपन्यास, गीत, कविता, निबंध, प्रवास वर्णन, नाटक, धर्मकथादि रचनायें स्वीकारकी जाती हैं कागजकी एक ओर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखी हुई रचनायें भेजनी चाहिये, अश्लील विषयोंकी रचनायें स्वीकार नहीं की जायेंगी।

विशेषः—अन्यत्र प्रकाशित रचनायें रामतीर्थ मासिक के लिये न भेजें केवल स्वीकृत रचनाओं की सूचना एक मास बाद दी जाती है, अस्वीकृत रचना को वापस मंगाने वाले लेखकों को पोस्टल टिकिट साथ में अवश्य भेजना चाहिए, स्वीकृत रचनायें समयानुकूल छपेंगी, लेखकों को चाहिये कि वे इस विषय में वारंवार पत्र लिखने का कष्ट न लें, रचना प्रकाशित होने के बाद, रचना जिसमें छपी होगी वह मासिक अंक, और आश्रम की ओर से निर्धारित किया गया पुरष्कार भेजा जायेगा, रचना में लिया गया कोई द्रष्टांत हो तो वह किस ग्रन्थ के आधार से लिया गया है यह अवश्य लिखें। अन्य पत्र पत्रिकाओंमें रामतीर्थ मासिककी रचना अन्य भाषाओं में अनुवादित की इच्छावालोंको रामतीर्थ मासिकके संपादकसे लिखित अनुमति लेना आवश्यक है

रचना भेजनेका पताः निराला मुद्रक १४०, आर्थर रोड बम्बई ११.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक — रामतीर्थ योगीराज श्री उमेशचन्द्रजी

वर्ष ५] मई १९६४ [संख्या २

वैदिक-प्रार्थना

इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ॥

ऋ. वे. आ. सू. १-१६४- ५

भावार्थ— जिस प्रकार गोलमंडलाकार वेदिका जहाँ से प्रारम्भ होता है वहीं अन्त होता है उसी प्रकार इस पृथ्वी का आदि और अन्त एक ही जगह है। परन्तु उसका श्रेष्ठ अन्त तो आत्मतत्व ही है जिससे सब लोक के साथ पृथ्वी का सृजन भी हुआ है इसीसे सर्व लोकादि का मूल आत्मतत्व ही है। वही अश्व है जो सबमें प्राण रूप से व्याप्त है। उसका अमृत रस ही सोम है उसीसे विश्व का पालन पोषण होता है। जैसे पुरुष से विश्व की सृष्टि होती है वैसे ही उस पुरुष से अक्षर ब्रह्म प्रकट है। वही परम व्योम-आकाश है, जिससे वाणी उत्पन्न हुई, है वही ब्रह्मा-प्रजापति के रूप में वाणी को प्रकट करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२४५) योग जीवन की महान् साधना है। यह मानव को कर्तव्यनिष्ठ और कार्य कुशल बनाता है, चित्तवृत्तियों के निरोध की क्षमता प्रदान करता है। इसके यम-नियमादि अंग मानव के सामाजिक और वैयक्तिक व्यवहार को सुरुचिकर बनाते हैं। योग सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन का सुचारु विधायक है।

(२४६) विश्वकी विचित्रता पर विचार किया जाय तो विस्मयाभिभूत हुए बिना नहीं रहा जायेगा। परमात्मा के इस लीला-निकेतन में अपनी बुद्धि काम नहीं कर सकती। अतः जगत् की ओर से मुह मोड़ कर परमात्मा की ओर अभिमुख बनो।

(२४७) एक दूसरे में परस्पर कलह होने का कारण क्या है? मानव का रुचि-वैचित्र्य और स्वभाव ही इसका मूल कारण हो सकता है। जिसके साथ नित्य कार्य-प्रसंग उपस्थित हो, उसके अनुकूलता साध कर बर्ताव किया जाये तो कटुता और घर्षण को अवकाश ही नहीं मिल सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूत्र जीवन के सभी व्यापारों में प्रवर्तित करना सुख-तिका साम्राज्य स्थापित करने के समान है।

(२४८) जगत् में जहां देखो, वहीं असमानता व्यापारित। शिक्षित अशिक्षित को दबाता है, धनवान् निर्धन को, बलवान् निर्बल को अपने हाथ का खिलौना बनाने के लिये कटिबद्ध रहता है। इस असमानता को दूर करने का मुख्य उपाय है ईश्वराभिमुखी ज्ञान। जबतक मनुष्य देहाभिमान से मुक्त होकर आत्मस्वरूप का अनुभव नहीं करता। तबतक सत्यज्ञान का प्रकाशबोध नहीं होता। यही सत्यज्ञान आत्म समानता का संस्थापक है।

(२४९) अन्य लोगों के गुणों पर विचार करते हुए अपने दोषों को निकाल बाहर फेंको। ऐसा करने से अन्य लोगों के गुण तुम्हारे मन में अवतीर्ण होकर विकसित होने लगेंगे। सफलता का यही रहस्य है।

(२५०) जिन भोगों के लिये तुम तड़प रहे हो, वे तो पशु-पक्षियों को भी सुलभ हैं। पशु-पक्षियों की योनिसे निरन्तर विकास और उन्नति करते हुए यह दुर्लभ मानव योनि उपलब्ध हुई, अतः इसे भोगों में रचे-पचे रह कर नष्ट कर देना क्या उचित होगा? नहीं, यह तो परमात्मा की प्राप्ति का हमें एक साधन-पथ प्राप्त हुआ है, अतः परमात्मा की उपलब्धि में-आत्मसाक्षात्कार में इसका सदुपयोग नहीं किया, तो समझना चाहिये कि व्यर्थ ही एक बहुमूल्य सुअवसर हाथ से निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्ध्वपाद--हस्तासन

(उमेश योगदर्शन ग्रंथ से)

जमीन पर चित लेट जायें। दोनों पैरों के जानु तक भाग भूमि से ऊपर उठायें और फिर हाथों को शिर के उठाते हुये पैरों के अंगुठों के पास हाथोंको ले जाकर करें। श्वासोच्छ्वास चालू रखें। शरीर के सर्वांग को हुआ रखें। हाथ-पैरों को स्थिर करें।

समय

१० दिन तक आध मिनट। १० से १५ दिन तक मिनट। तदनन्तर १ मिनट तक अभ्यास बढ़ायें।

लाभ

इस आसन के अभ्यास से उर्ध्वपाद-शिरासन के सभी तो मिलते ही हैं, साथ ही जिनके हृदय की नाड़ी की अनियमित रहती है; अर्थात् ११ से १४ वर्ष तक ७२ से बार प्रति मिनट नाड़ी की गति चलनी चाहिये। किन्तु नाड़ी की गति इस प्रकार उचित न रहकर अनियमित हो जाती यह अवस्था भी एक प्रकार की व्याधि ही है। यह व्याधि आसन से मिट जाती है। हृदय की धड़कन समुचित संतुलित गतिसे चलने लगती है। हृदय-रोग से पीड़ित लोग इस आसन का अभ्यास अवश्यमेव करें। निसन्देह होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

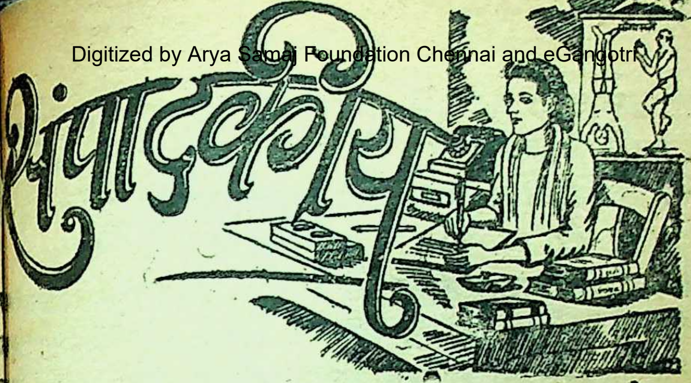

हमारा कर्तव्य

भारत में रहने वाले हम सब भारतवासी हैं। हम सब भारत माता के सुपुत्र होते हुये उसी की गोद में जन्मे, पले और बढ़ रहे हैं। हमारे तन मन में उसी मां का रक्त समाया हुआ है। उसके लिये यह अनिवार्य है कि भारत में रहते हुये हमें भारतीय जन-मानस का खयाल रखें। हमारा धर्म, कुल, जाति, संप्रदाय कुछ भी क्यों न हो? हमें भारतीय होने के नाते कठिनाईके समय एक दूसरे का सहयोग करना ही चाहिये।

भूतकाल के इतिहास का अवलोकन करने से पता चलता है कि भारत में दैवी और आसुरी सम्पदाओं में सदैव युद्ध होते रहे हैं, राम-रावण का युद्ध और कौरव पांडवों के युद्ध भी इसी श्रेणी के थे। इसके अलावा यहाँ के ऐश्वर्य को हड़प करने के लिये विदेशियोंने अनेक सदल बल से आक्रमण किये, किन्तु इन विदेशियों को स्थाई रूप से यहां सत्ता जमाये रखने को न मिल सकी। इसका कारण भारत की सांस्कृतिक विशेषता ही समझना चाहिये।

आज भारत की बागडोर भारतमाता के सपूत पंडित रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरलालजी नेहरू के हाथ में है। वे हर प्रकार से देश की प्रगति में सहायक बन रहे हैं। पंडितजी के विचार प्रबल शक्ति से भारत का राजकारण सुचारूरूप से चल रहा है। देश की रक्षा का कार्य विवेक और आत्मबल से युक्त श्री यशवन्तराव चह्वाण के हाथों में है। जो सुयोग्य रीति से अपनी जवाबदारी सम्हाले हुये हैं। देश के अन्यान्य नेता भी अपने २ राज्यों का कार्यभार उत्तम रीति से चला रहे हैं।

भारतमाता के ऊपर गीद्धों की दृष्टि लगी हुई है जो उसे नोचना चाहते हैं ऐसे समय में देश के गण्यमान्य नेताओं के हाथ मजबूत करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। भारत की दार्शनिक देन के पाये—योगशास्त्र, वेद, गीता, उपनिषद् आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रचार प्रसार हजारों वर्षों से विश्व के कोने २ में फैल गया है। आज संसार की आंखें भारत की ओर लगी हैं कि वह संसार को शान्ति प्रदान करे। पंचशील के मूर्त स्वरूप को पंडित जवाहरलालजी विश्व के सामने रखे हैं अभीतक कर्तव्य परायणता से उसका पालन करवा रहे हैं। हिन्दुस्तान के ऊपर कुदृष्टि रखनेवाले अन्य राष्ट्रों को हम अपनी एकता के द्वारा बता देना चाहिये कि हमारी ओर कुदृष्टि करते ही तुम्हारी आंखें निकाल दी जायेंगी।

एकता के जरिये ही हम सिद्ध कर सकते हैं कि पवित्र भूमि, पवित्र विचार, पवित्र कर्म, पवित्र विद्या के पुजारी तथा पवित्र धर्म के अधिकारियों को संसार की कोई शक्ति जीत नहीं सकती। परम पवित्र गंगानीर जो हिमालय से भारत को मिलता है वह भारत अजय रहेगा।

जयहिन्द, जय भारत, जय हिमालय
जय गंगा, भारत मां की जय हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोध

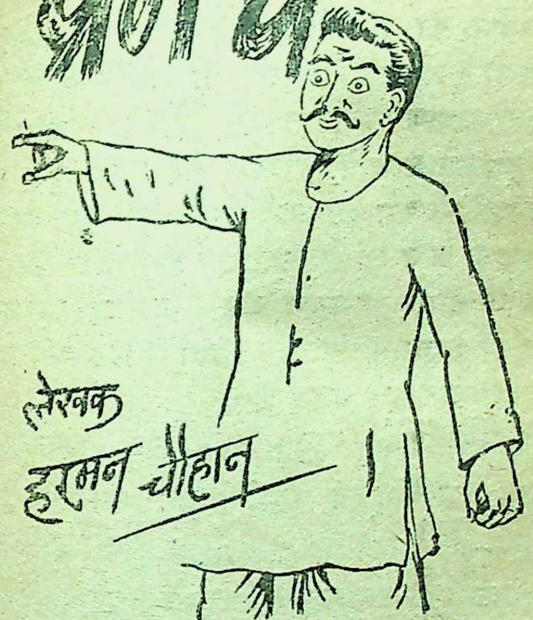

लेखक
हरमन चौहान

क्या आप घर में अथवा बाहर क्रोधित होते हैं ? किन्तु आपको क्या क्रोध का वास्तविक कारण ज्ञात है ? कि आखिर इसके आने का कारण क्या है ? यह क्यों, कैसे आता है ? और इस पर कैसे काबू पाया जा सकता है ? यदि आपको उपर्युक्त कारण ज्ञात नहीं तो आइये लगे हाथों जरा इस लेख को ध्यान पूर्वक पढ़ लीजिये, बस आपको कारण ज्ञात हो जायेगा। आपके समक्ष क्रोध की समस्या गंभीर है किन्तु क्रोध की जानकारी बड़ी महत्वपूर्ण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोध प्रत्येक प्राणी को आता है और यहां तक की पशु-पक्षियों में भी इसका अंश पाया जाता है। क्रोध से शायद विरला ही ऐसा हो जो इससे परिचित न हो। हां, हमारे ऋषि-मुनियों ने क्रोध को जीतने का प्रयास किया किन्तु वे भी किसी सीमा तक असफल ही रहे। यदि क्रोध का मूल कारण मनुष्य समझ जावें तो आज विश्व की युद्ध सम्बन्धि सभी समस्यायें समाप्त हो जायें। एक नये युग का पदार्पण होकर सदैव के लिये शांति स्थापित हो जावे। किन्तु आज इसी क्रोध के कारण तो मनुष्य नारकीय झगड़ों में उलझ कर एक दूसरे का शत्रु बन बैठा है। गीता में भगवान् कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं—

"शक्नोतीहैवयः सोढ़ं प्राक्शरीर विमोक्षणात्।
काम क्रोधोद्भवं वेगंसंयुक्तः ससुखीनरः॥"

अर्थात्—जो मनुष्य शरीर के नाश होने से पहिले काम और क्रोध से उत्पन्न हुये वेग को सहन करने में समर्थ है अर्थात् काम क्रोध को जिसने सदा के लिये जीत लिया है, वह मनुष्य इस लोक में योगी है और वही सुखी है। तो क्यों नहीं आज की सभ्य मानव जाति इस पर अमल करके अपने आप को अवनति से बचावे। क्रोध मनोवैज्ञानिक कारण है। आइये, हम मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस पर संक्षिप्त रूप में अध्ययन करें—

क्रोध है क्या?

क्रोध वास्तव में प्रेम का विपरीत रूप है। यह एक प्रकार की प्राणी की संवेगात्मक प्रतिक्रिया है जो प्रायः अपनी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्तरीक परिस्थितियों द्वारा व्यक्त होती है। क्रोध ना प्राणी की मूल प्रवृत्ति लड़ने का एक अंग है। क्रोध एक रीरिक एवं मानसिक प्रतिक्रिया है जो प्रायः प्राणि के विकार अचेतन व चेतन अनुभूतियों से विभिन्न रूप में व्यक्त होता है, हम इसी को क्रोध कहते हैं।

क्रोध की अवस्था:—

प्राणियों में सबसे अधिक क्रोध मनुष्य में ही पाया जाता । क्रोध की अवस्था में चेहरा तमतमाया हुआ, आंखें लाल पुतलियां बाहर की ओर तनी हुई, दांत कटकटाए हुए, टी चढ़ी हुई व सम्पूर्ण शरीर में एक अजीब प्रकार की जना का होना तथा शरीर तनकर कठिन होना पाया ता है। क्रोध की अवस्था में मानसिक सन्तुलन नहीं रहता शरीर व मस्तिष्क अनियंत्रण में रहते हैं, प्रायः क्रोध की भिव्यक्ति प्रोढ़ों से अधिक बालकों में देखी जाती है जो णिक ही होती है जबकि इसके विपरीत प्रोढ़ों तथा वृद्धों के ध की स्थिति भिन्न रूप में होती है जो अधिक समय तक द्यमान रहती है। क्रोध की अवस्था में व्यक्ति की स्मरण क्ति क्षीण हो जाती है और उसमें गाली, धमकी, तथा आक्रमण की अभिव्यक्ति रहती है। क्रोध में मनुष्य का व्यक्तित्व ः लुप्त हो जाता है, इसे यह ज्ञात नहीं रहता कि मैं हूं, कौन हूं व सामने वाला कौन है? ऐसे समय में प्रायः न की भी गति तीव्र हो जाती है, यही क्रोध की र अवस्था है।

क्रोध प्राणी का आंगिक रूप

प्रायः देखा जाता है कि क्रोध प्राणी को विभिन्न अव-
[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्थाओं में आता है किन्तु वह प्राणी का आंगिक रूप है। क्रोध का परिवर्तन जिस रूप में व्यक्त होता है वह इस प्र है—जैसे आपको अपने अफसर ने किसी कार्य हेतु दिया, आपको क्रोध आया किन्तु आप व्यक्त नहीं कर स यही प्राणी का आंगिक रूप है इस कारण वह दबा हुआ परिस्थिति-वश घृणा में परिवर्तित हो जाता है और अपने अफसर से घृणा करने लगेंगे। क्रोध सीखा नहीं है, यह तो लड़ने की मूल प्रवृत्ति का एक अंग है इस स्वतः ही जागृत होता है। बचपन में आपका क्रोध प्रकार व्यक्त होगा—जमीन पर लोटना, रोना, उछलना, पास की वस्तुओं को तोड़ फोड़ने का प्रयत्न आदि कपड़ों को फाड़ना, सांस को रोकना, बालों को नोचना, पैरों को पटकना या जोर जोर से चिल्लाना तथा अन्य पर आक्रमण की भावना रखना। यही क्रोध अवस्था में देना, धमकी देना व सामने वाले पर आक्रमण की भा रखना और वृद्धावस्था में केवल क्रोध के लक्षण-बड़ब चिढ़ना, छोटी २ बातों पर व अपशब्द का उपयोग होता है, परिवर्तित हो जाता है। क्रोध जन्म से लेकर तक पाया जाता है अतः हम कह सकते हैं कि क्रोध का आंगिक रूप है।

क्रोध के मूल कारण

व्यक्ति अथवा किसी प्राणी को क्रोध क्यों आता है? अधोलिखित मूल कारण हैं जिससे व्यक्ति को क्रोध आता है

(शेष पृष्ठ २०५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवोपासना रहस्य

लेखक
लक्ष्मीकान्त मिश्र, एम. ए

प्राचीन ऋषियों एवं मनीषियों ने तत्तत् देवताओं की शक्ति, उनके स्वरूप तथा उनके व्यक्तित्व को समझाने के लिये तत्तत् देवताओं के संकेत की सहायता ली है। भले ही आधुनिक लोगों की दृष्टि में हिन्दू-देवताओं का स्वरूप घृणित और विकृत है लेकिन प्रत्येक की भूमिका में कुछ न-कुछ रहस्य अवश्य है। रूप और लावण्य में अन्य हिन्दू-देवताओं की अपेक्षा आशुतोष शिवजी विचित्र हैं। उनके लोक-प्रसिद्ध वेश-भूषादि को देखने से उनका तो रूप और सौन्दर्य, आवासस्थान एवं भोजनादि सभी कुछ अद्भुत लगते हैं। स्थूल रूप में यद्यपि शिव का यह स्वरूप अकल्याणकारी दीख पड़ता है परन्तु सूक्ष्मरूप में तो वे 'सदाशिव' हैं। 'सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी' हैं। भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव का श्रीविग्रह सच्चिदानन्दस्वरूप है। वे सदा ध्यानरूपी धर्म में ही स्थित रहते हैं। वे स्वात्माराम हैं। एकमात्र अपने आत्मा में रमण या आनन्द का अनुभव करनेवाले हैं। भगवान् शिव की उपासना का रहस्य जानने के लिये उनके ध्यान-संबंधी श्लोक से बहुत सहायता मिलती है। लोकप्रसिद्ध श्लोक हैः—

कैलासपीठासनमध्यसंस्थं भक्तैः सनन्दादिभिरर्च्यमानम्।
भक्तार्तिदावानलहाप्रमेयं ध्यायेदुमालिंगतविश्वभूषणम्॥
ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥
(शि० पु० वि० २०।५१-५२)

"जो कैलास पर्वत पर एक सुन्दर सिंहासन के मध्यभाग में विराजमान हैं, जिनके वामभाग में भगवती उमा उनसे सटकर बैठी हुई है, सनक-सनन्दन आदि भक्तजन जिनकी पूजा कर रहे हैं तथा जो भक्तों के दुःखरूपी दावानल को नष्ट कर देनेवाले अप्रमेयशक्तिशाली ईश्वर हैं, उन विश्व-विभूषण भगवान् शिव का चिन्तन करना चाहिये। उनकी अङ्गकान्ति चाँदी के पर्वत की भाँति गौर है। वे अपने मस्तक पर मनोहर चन्द्रमा का मुकुट धारण करते हैं। रत्नों के आभूषण धारण करने से उनका श्रीअङ्ग और भी उद्भासित हो उठा है। उनके चार हाथों में क्रमशः परशु, मृगमुद्रा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र एवं अभयमुद्रा सुशोभित हैं। वे सदा प्रसन्न रहते हैं। कमल के आसन पर बैठे हैं और देवतालोग चारों ओर खड़े होकर उनकी स्तुति कर रहे हैं। उन्होंने वस्त्र की जगह व्याघ्र चर्म धारण कर रक्खा है। वे इस विश्व के आदि हैं, बीज (कारण) रूप हैं तथा सबका समस्त भय हर लेने वाले हैं। उनके पाँच मुख हैं और प्रत्येक मुखमण्डल में तीन-तीन नेत्र हैं।" भगवान् शिव का यह रूप कोरी कल्पना नहीं, एक रहस्य है।

सर्वप्रथम हम शिव-पार्वती की संश्लिष्ट मूर्त्ति को ही लें। यह शक्ति और शक्तिमान् के अभेद की परिचायिका है। एक दूसरे का पूरक है। दोनों के अविनाभाव-संबंध से ही सृष्टि की रचना होती है। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। शिवपुराण में कहा गया है—

"एवं परस्परापेक्षा शक्तिशक्तिमतोः स्थिता।
न शिवेन विना शक्तिर्न शक्त्या विन शिवः॥
(शिव० वाय० सं. उत्तर. ४)

'इस प्रकार शक्ति और शक्तिमान् दोनों को सदा एक दूसरे की अपेक्षा रहती है। न तो शिव (शक्तिमान) के बिना शक्ति रह सकती है और न शक्ति के बिना शिव ही रह सकते हैं।' शक्तिमान् न हों तो शक्ति कहाँ रहे और शक्ति न हो तो शक्तिमान् का अस्तित्व ही न हो। इसी से 'इ' कार (शक्ति) हीन शिव को 'शव' कहा जाता है। शक्तिमान् के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप की अभिव्यक्ति उनकी शक्ति से ही होती है। अतएव शक्ति का स्वरूप भी वही है, जो शक्तिमान् का है। शिवपुराण में ही भगवती पराशक्ति उमादेवी इन्द्रादि देवों से स्वयं कहती हैं—

परं ब्रह्म परं ज्योतिः प्रणवद्वन्द्वरूपिणी।
अहमेवास्मि सकलं मदन्यो नास्तिकश्चन॥

'मैं ही परम ब्रह्म, परम ज्योति, प्रणवस्वरूपिणी तथा युगलरूपधारिणी हूँ। मैं ही सब कुछ हूँ। मुझसे भिन्न कुछ भी पदार्थ नहीं है।' विश्व शिव-शक्ति की ही सारी लीला है। जितने पुरुष हैं सब शिव हैं और उनकी सहधर्मिणी जितनी स्त्रियां हैं, वे सब शक्तिरूपा हैं। इसी तत्त्व को दिखलाते हुये शिवपुराण में कहा गया है—"शक्ति और शक्तिमान् से प्रकट होने के कारण यह जगत् 'शाक्त' और 'शैव' कहा गया है।" जैसे माता-पिता के बिना पुत्र का जन्म नहीं होता उसी प्रकार भव और भवानी के बिना इस चराचर जगत् की उत्पत्ति नहीं होती। परमेश्वर शिव पुरुष हैं और परमेश्वर शिवा प्रकृति। भगवान् श्रीकृष्णने गीता में प्रकृति को 'महद्योनि' और अपने को 'बीजप्रद पिता' कहा है। जब महादेवजी अग्नि हैं तब उनकी अर्द्धांगिनी उमा स्वाहा। जब चन्द्रशेखर शिव वायु हैं तब पार्वती वायुप्रिया शिवा। शिव यक्ष हैं और पार्वती ऋद्धि। शिव चन्द्रमा हैं तो उमा रोहिणी। भगवान शिव अत्रि हैं तो उमा साक्षात अनसूया। अतः शिव कश्यप हैं तो महेश्वरी उमा देवमाता अदिति। अतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी स्त्री-पुरुष उन्हीं की विभूतियाँ हैं। कृष्णयजुर्वेदीय 'रुद्रहृदयोपनिषद्' में इसी सिद्धान्त को इन शब्दों में व्यक्त किया गया है:—

"रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै नमो नमः।
रुद्रो विष्णुरुमा लक्ष्मीस्तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्रः सोम उमा तारा तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्रो यज्ञ उमा वेदस्तस्मै ,, ,, , ।
रुद्रो वेद उमा शास्त्रं तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्रो पुष्प उमा गन्धस्तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्रो ब्रह्मा उमा वाणी तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्राः सूर्य उमा छाया ,, ,, ,, ,, ।
रुद्रो दिवा उमा रात्रिस्तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्रो वह्निरुमा स्वाहा तस्मै ,, ,, ,, ।
रुद्रो वृक्ष उमा वल्ली ,, ,, ,, ,, ।
रुद्रोऽर्थ अक्षरा सोमा ,, ,, ,, ,, ।

सती और शिव इस प्रकार वाणी और अर्थ की भाँति एक दूसरे से नित्य संयुक्त हैं। उन दोनों में वियोग होना असंभव है।

महादेव के पांच मुख पञ्चमहाभूतों (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) के सूचक हैं। बहुत से चिन्तक महादेव के पांच मुखों का संकेत मंत्रयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग और शरणागतियोग से क्रमशः मानते हैं। लिङ्गपुराण में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचमुख का रहस्य इस प्रकार है। रुद्र का पहला ईशान-मुख भोग्य प्रकृति-वर्ग के भोक्ता क्षेत्रज्ञरूप शक्ति का परिचायक है। दूसरा तत्पुरुष नामक पश्चिम मुख परमात्मा-गुण प्रकृति-शक्ति का सूचक है। तीसरा अघोर नामक दक्षिणमुख बुद्धिशक्ति का निदान है। चौथा वामदेव नामक उत्तर मुख सर्वत्र व्याप्त महादेव की सुन्दर मूर्ति अहंकार-शक्ति का द्योतक है। पांचवा सद्योजात नामक पूर्वमुख सब शरीर में विद्यमान नवशक्ति का सूचक है।

भगवान् शिव के दस हाथ दस दिशाओं के संकेत हैं दसों में अभय, टंक, शूल, वज्र, पाश, खड्ग, अंकुश, घंटा, नाद और अग्नि ये दस आयुध हैं। भगवान् शिव दस दिशाओं से आनेवाली विपत्तियों का नाश इन दस आयुधों से करते हैं।

त्रिनेत्र शिव की तीन शक्तियों का प्रतीक है--प्रतिष्ठाबल, आदान-बल तथा उत्क्रान्तिबल। बल की इन तीनों अवस्थाओं के अधिष्ठाता के भी तीन रूप हैं। प्रतिष्ठा--बल का अधिष्ठाता ब्रह्मा है, आदान का विष्णु एवं उत्क्रान्ति का रुद्र। त्रिनेत्र का दूसरा विचार चन्द्र, सूर्य और अग्नि रूप में किया जाता है। शंकर चन्द्र के समान जगदानन्ददायक, सूर्य के समान अज्ञान-तमोनाशक, तथा अग्नि के समान राग-दोषादि के दहनकर्ता हैं। इसी कारण त्रिनेत्र कहकर उनका वर्णन किया जाता है।

भस्म के बहुत से अर्थ किये गये हैं। शिवपुराण में इसे बल का प्रतीक माना गया है। रुद्राग्नि का जो सबसे उत्तम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर्य (बल) है वही भस्म कहा गया है। भस्म धारण करने वालों को वीर्यवान् माना गया है। पापों के भक्षण के कारण उसका नाम भस्म है। भूति (ऐश्वर्य) कारक होने से उसे 'भूति' या विभूति कहते हैं। विभूति रक्षा करनेवाली है अतः उसका एक नाम 'रक्षा' (राख) भी है। याज्ञवल्क्य ने भस्म को ज्योति का परिचायक माना है। कुछ विचारकों के अनुसार भस्म सब वस्तुओं के एकरूपता का प्रतिपादक है। यह मौलिक तत्त्व है। पदार्थ देखने में भिन्न-भिन्न रंग के हो सकते हैं परन्तु जलाने पर सबका एकरूप हो जाता है। भस्म को पुनः जलानेपर भस्म ही शेष रहेगा। इसे अग्नि नहीं उड़ा सकता। इसी मौलिक तत्त्व से सृष्टि की रचना होती है। रामचरित मानस में भस्म को पवित्रता का द्योतक माना गया है। अन्य ग्रंथों में भस्मलेपन का महत्त्व आँका गया है। परन्तु भक्तशिरोमणि तुलसीदास अपनी 'रामचरित मानस, में एक कदम और आगे बढ़ जाते हैं उनका तो जैसे यह दावा है कि भस्मलेपन को क्या कहा जाय, इसके सुमिरन से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है। यथा—'भव भूति अंग मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी।' इसके अतिरिक्त चिता का भस्म 'विध्वंस' का भी प्रतीक हो सकता है। संहारकारी शिव सृष्टि का संहारकर उसके अवशेष भस्म को अंग लेपन कर निश्चित हो जाते है। सर्वनाश का मूर्तिरूप चिताभस्म शिव का शृंगार हो जाता है। विश्व का विध्वंस कर भी शिव प्रसन्न ही रहते हैं। कोई चिन्ता और विषाद नहीं करते।

अर्द्धचन्द्र शिव की शिखा के मणि हैं। 'स्कन्दपुराण' का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथन है कि चन्द्रमा की सोलहवीं कला 'अमा' है, जो महादेव के सिर में स्थित होकर विश्व को प्रकाशित करती है। शिरस्थ चन्द्रकला शुद्धाशुद्ध-स्वरूपिणी है। दूसरा विचार यह है कि चाँद की उत्तरोत्तर बढ़नेवाली कला के प्रारंभ का रूप द्वितीया में पाया जाता है। यह मनुष्य को इस बात का निर्देश करता है कि जीवन की रूपरेखा ऐसी हो जिसमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही हो। तृतीयतः चन्द्र शीतलता का प्रतीक है। मनुष्य का मस्तिष्क ऐसा होना चाहिये जिससे रचनात्मक विचार ही उद्भूत हों जो कि अमृतमय तथा शीतल हों।

ब्रह्माण्ड में विष और अमृत दोनों हैं। किन्तु ईश्वर विष को छिपाकर रखते हैं और अमृत को प्रकट। अतएव शंकर की मूर्ति में विष गले के अन्दर है और अमृतमय चन्द्रमा सिर पर विराजमान है। भाव यह है कि इस ब्रह्माण्ड में किसी का परस्पर विरोध है ही नहीं—अमृत भी है, विष भी। अग्नि भी है, जल भी। इस तथ्य को अधिक स्पष्ट करते हुए महाकवि कालिदास ने बड़े सुन्दर ढंग से वर्णित किया है।

'विभूषणो द्भासि भुजङ्गभोगि वा
गजाजिनालम्बि दुकूल धारि वा।
कपालि वा स्यादथ वेन्दुशेखरं
न विश्वमूर्त्तेरवधार्यते वपुः॥ (कुमार संभव ५)

अर्थात् वह शरीर भूषणों से भूषित भी है और सर्प-शरीरों से वेष्टित भी। गजचर्म भी ओढ़े हुए हैं और सुन्दर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर कीमती वस्त्रधारी भी हो सकता है वह शरीर कपाल-पाणि भी है और चन्द्रमुकुट भी। जो विश्वमूर्ति ठहरा, उस शरीर का एक रूप से निश्चय कौन कर सकता है? शिक्षा इससे यही मिलती है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी पशु-प्रवृत्ति पर अंकुश डालना चाहिये। केवल दैवी-संपदा वाले गुणों को ही प्रकट करना चाहिये।

भगवान् शिव 'रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गम्' हैं अर्थात् उनकी मूर्ति श्वेत है। श्वेत-मूर्ति चेतन या ज्ञानरूप है। ज्ञान को प्रकाश भी कहा जाता है। इसलिये उसका रंग धवल (उजला) ही होना चाहिये। कहीं कहीं 'उज्वल' रूप आकृति-मता तथा निरूपता का भी परिचायक है। उजला रंग स्वाभाविक होता है, कृत्रिम नहीं। उजले पर कोई भी रंग चढ़ सकता है। श्वेत रंग पहले भी रहता है और पीछे भी। श्वेतरंग पर जब कोई अन्य रंग चढ़ता है तो उसकी धवलता मिट जाती है परन्तु यदि कोई धोबी उसे धोकर रंग उतार देता है तो वह फिर उजला हो जाता है। इससे स्पष्ट हुआ कि श्वेत नैसर्गिक रंग है। उसमें कृत्रिमता नहीं। ईश्वर का कर्पूरगौर रंग निरूपता का परिचायक है। ईश्वर का रूप कृत्रिम नहीं, बल्कि स्वाभाविक है। चराचर जगत् ईश्वर से ही उत्पन्न होते हैं और उसीमें विलीन होते हैं।

शास्त्रों के पारंगत मनस्वी विद्वान महादेवजी को प्रणव रूप कहते हैं। माण्डूक्योनिषद् में प्रणव की चार मात्रायें बतायी गयी हैं—अकार, उकार, मकार और नाद। अकार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋगवेद कहते हैं। उकार यजुर्वेद रूप कहा गया है। मकार सामवेद है और नाद अथर्ववेद की द्युति है। अकार सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा है। उकार पालनकर्त्ता श्रीहरि है। मकार संहारकर्त्ता रुद्र है। नाद निष्क्रिय शिव है। इस प्रकार प्रणव अपनी तीन मात्राओं के द्वारा ही तीन रूपों में इस संपूर्ण जगत का प्रतिपादन करते हैं।

कहाँ तक गिनायी जाय प्रभु की महिमा। उनकी महिमा अपरम्पार है। इसीलिये गन्धर्वराज पुष्पदन्त ने अपने प्रसिद्ध 'महिम्नःस्तोत्र' के आरंभ में ही दे दिया है—

'महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥

'यदि आपकी महिमा को पूर्वरूप से बिना जाने स्तुति करना अनुचित हो तो ब्रह्मादि की भी वाणी रुक जायगी। कोई भी स्तुति नहीं कर सकेगा, क्योंकि आपकी महिमा का अन्त कोई जान ही नहीं सकता। अनन्त का अन्त कैसे जाना जाय? तब अपनी बुद्धि के अनुसार जितने जितना समझ पाया है उतना कह देने का उसका अधिकार दूषित न ठहराया जाय, तो मुझ जैसा तुच्छ पुरुष भी स्तुति के लिये कमर क्यों न कसे? कुछ तो हम भी जानते ही हैं, जितना जानते हैं उतना क्यों न कहें?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् शिव की मूर्ति-पूजा के साथ ही पार्थिव-पूजा भी प्रचलित है। वह चिह्नमात्र है और चिह्न भी पुरुष की जननेन्द्रिय सा है। लिंगमात्र की पूजा का भी रहस्य है। इससे शिव और पार्वती दोनों की पूजा हो जाती है। लिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और ऊपर ॐ कार महादेव स्थित हैं। पीठिका महादेवी हैं और लिंग महादेव हैं। इस तरह एक ही साथ दोनों की पूजा हो जाती है। सूक्ष्म लिंग निष्कल होता है और स्थूल लिंग सकल। एकमात्र भगवान् शिव ही ब्रह्मरूप होने के कारण 'निष्कल' (निराकार) कहे गये हैं। रूपवान् होने के कारण उन्हें 'सकल' भी कहा गया है। इसलिये वे सकल और निष्कल दोनों हैं। शिव के निष्कल-निराकार होने के कारण ही उनकी पूजा का आधार भूत लिंग भी निराकार प्राप्त हुआ है। अर्थात् शिवलिंग शिव के निराकार स्वरूप का प्रतीक है। इसी तरह शिव साकार और सकल होने के कारण उसकी पूजा का आधारभूत विग्रह साकार प्राप्त होता है। सकल और निष्कल रूप होने से ही वे 'ब्रह्म' शब्द से कहे जानेवाले परमात्मा हैं। यही कारण है कि सब लोग लिंग और मूर्ति दोनों में ही सदा भगवान् शिव की पूजा करते हैं। शिव से भिन्न जो दूसरे दूसरे देवता है वे साक्षात् ब्रह्म नहीं हैं। इसलिये कहीं भी उनके लिये निराकार लिंग उपलब्ध नहीं होता।

परमपुरुषार्थ की कामना रखनेवालों को शिव भगवान् की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिये। भोलेनाथ बड़े भोले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। 'आशुतोष' उनका नाम ही है। बहुत शीघ्र प्रसन्न होते हैं। औढरदानी हैं। बड़े दानी हैं, कल्याणकारी हैं। जो पुरुष उन त्रिनेत्र, पंचमुख, व्याघ्राम्बरधारी सदाशिव परमात्मा को निर्गुण, निराकार एवं सगुण, निराकार समझकर उनकी सगुण, साकार दिव्यमूर्ति की उपासना करते हैं, उसी की उपासना सच्ची और पूर्ण है। कारण यह है कि एक श्री शिव की उपासना से सारे देवों की उपासना हो जाती है। श्री शिव या श्रीविष्णु या श्री ब्रह्मा में कोई भेद नहीं है। नाम-रूप का केवल भेद है। वस्तु-तत्त्व में कोई भेद नहीं। ये तीनों एक दूसरे से उत्पन्न हुए हैं, एक दूसरे को धारण करते हैं। कहीं ब्रह्मा की प्रशंसा की जाती है, कहीं विष्णु की और कहीं महादेव की जो संशयात्मा पुरुष यह विचार करते हैं कि अमुक बड़ा है और अमुक छोटा है वे मूर्ख हैं। स्वयं भगवान शिव श्री विष्णु से कहते हैं कि मेरे दर्शन का जो फल है वही आपके दर्शन का फल है। जो हम दोनों में भेद नहीं समझता, वही मुझे मान्य है। इसी प्रकार भगवान् विष्णु श्री मद्भागवत में दक्ष प्रजापति के प्रति कहते हैं कि हे विप्र! हम तीनों एक रूप हैं और समस्त भूतों की आत्मा हैं। श्री रामचरितमानस में भगवान् श्री राम ने कहा है—

संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरकमँह बास॥
औरउ एक गुपुत मत सबहि कहौं कर जोरि।
संकर भजन बिना नर भगति न पावई मोरि॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार श्रीकृष्ण श्री शिव से कहते हैं—

'त्वत्परो नास्ति मे प्रेयांस्त्वं मदीयात्मनः परः।
ये त्वां निन्दन्ति पापिष्ठा ज्ञानहीना विचेतसः॥
(ब्रह्मवैवर्त. प्र. ६।३१

मुझे आपसे बढ़कर कोई प्यारा नहीं है, आप मुझे अपनी आत्मा से भी अधिक प्रिय हैं। ऐसी अवस्था में जो मनुष्य दूसरे के इष्टदेव की निन्दा करता है, वह वास्तव में अपने ही इष्टदेव की निन्दा करता है। ऊपर के इन अवतरणों से यह सिद्ध होता है कि भगवान् श्री शिव, विष्णु, ब्रह्मा, राम, कृष्ण तत्वतः एक ही हैं।

पुराणों में शिव के अनेक चरित्र वर्णन किये गये हैं। उनकी कथाओं को पढ़ने से शिव–रहस्यका ज्ञान होता है और परमेश्वर शिव में भक्ति और अनुराग बढ़ता है। यदि शिवालयों की गणना की जाय तो इसकी संख्या कई लाख होगी। प्रत्येक गाँव में छोटा–बड़ा एक–न–एक शिवालय मिल ही जायगा। शिवलिंग का पूजन केवल भारत में ही नहीं, अन्य देशों में भी किसी न किसी न किसी रूप में प्रचलित है। मिस्र और यूनान दोनों देशों में क्रमशः प्रियेपस और हर्कुलस के नाम से लिंग की ही अर्चा होती थी। चीन में 'हुवेड्–हिफुह,' और मक्के में 'मक्केश्वर' के नाम से शिव-लिंग का ही पूजन होता था। प्लुतार्क के लेखों से पता चलता है कि उस समय मिश्र में प्रचलित लिंग-पूजा सारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम में प्रचलित थी। इनके अतिरिक्त अन्यान्य स्थानों में भी शिवलिंग पाये गये हैं। भारत वर्ष में द्वादश ज्योतिर्लिंग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिवपुराण में लिखा है कि यों तो शिव सर्वव्यापी हैं, किन्तु द्वादश ज्योतिर्लिंग में उनका विशेष अंश विद्यमान है।

जो कुछ भी हो, शिवोपासन-रहस्य बहुत ही गहन है। यथाशक्ति भगवान् शिव के रहस्य और प्रभाव को जानकर उनकी उपासना करना परम हितकर है।

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रयहेतवे।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥

सफेद मलम
बी-टेक्स
गजकर्ण, ख्वाज, खरुज, नायटा, इसब, तोंडावरील मुरूम, हातापायांवर पडणारे चीरे आणि जनावरांच्या जखमेवर जालीम
बी-टेक्स मुंबई नं. ३.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान श्री शिवजी ही ईश्वर हैं

लेखक
चंद्रिकाप्रसाद पाठक, शास्त्री
सा. रत्न, व्याकरणाचार्य,
सा. आचार्य

शिवजी के पर्यायवाची नामों में एक नाम ईश्वर भी है। अमरकोश नामक ग्रंथ जो संस्कृत साहित्य में अत्यन्त आदृत है शिवजी के नामों का इस प्रकार वर्णन करता है—

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः।
ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत्।
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः।
व्योमकेशो भवोभीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः।
अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः।

उक्त नामों के साथ ही साथ नामों की व्युत्पत्ति और अर्थ पर ध्यान देने से भगवान् भूतनाथजी की ईश्वरता और महत्ता का परिचय प्राप्त होता है। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराजने अपने सर्वमान्य ग्रन्थ श्री रामचरित मानस में वन्दना प्रसङ्ग में क्या लिखा है देखिये—

गुरु पितु मातु महेश भवानी।
प्रनवउँ दीनबन्धु दिन दानी॥
सेवक स्वामि सखा सिय पीके।
हित निरुपधि सब विधितुलसी के॥
कलि विलोकि जगहित गिरिजा।
साबर मन्त्र जाल जिन्ह सिरिजा॥
अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रकट प्रभाउ महेश प्रतापू॥
सो उमेश मोहिपर अनुकूला।
करिहिं कथा मुदमङ्गलमूला॥
सुमिरि शिवाशिव पाइ पसाऊ।
बरनउँ रामचरित चित चाऊ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिति मोरि शिव कृपा विभाती ।
शशि समाज मिलि मनहुँ सुराती ॥

उक्त ग्रंथरत्न में ही रामेश्वर स्थापना के प्रसंग में क्या लिखा है इसका दर्शन तो कीजिये—भगवान् श्री रामचन्द्रजी क्या करते हैं और क्या कहते हैं—

लिंग थापि विधिवत करि पूजा ।
शिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥
शिवद्रोही मम भगत कहावा ।
सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा ॥
शंकर विमुख भगति चहमोरी ।
सो नारकी मूढ मति थोरी ॥

दोहा— शंकरप्रिय मम द्रोही शिवद्रोही ममदास ।
ते नर करहिं कलपभरि घोर नरक महुँबास ॥

चौ० जे रामेश्वर दरशन करिहहिं ।
ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥
जो गङ्गाजल आनि चढाइहि ।
सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होई अकाम जो छल तजि सेइहि ।
भगति मोरि तेहि शंकर देइहि ॥
मम कृत सेतु जो दरशन करिही ।
सो विनु श्रम भवसागर तरिही ॥

रामचरित मानस में ही उत्तर काण्ड में श्री गरुड़जी से श्री काकभुशुण्डीजी महाराज अपने पूर्व जन्म के कथाप्रसंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अपने गुरुदेवजी के द्वारा निम्नांकित शिवस्तोत्र सम्पन्न होने की चर्चा करते हैं और इस रूप में शिवजी के सम्बन्ध में एक अच्छी जानकारी देते हैं उनके श्री गुरुदेवजी श्री शिवजी की स्तुति में क्या कहते हैं—

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिराज्ञानगोतीत मीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।
तुषाराद्रिसङ्काशगौरं गभीरं। मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा। लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा।
चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरंमुण्डमालं। प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भंपरेशं। अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशं।
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं॥
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददातापुरारी॥
चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥
न यावद् उमानाथ पदारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां॥
न तावत्सुखं शांतिसन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥
न जानामि योगं जपं नैवपूजां। नतोऽहं सदा सर्वदाशंभुतुभ्यं॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीशशंभो॥

श्लो॰ रुद्राष्टकमिदम्प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

उसी रामायण में लिखा है कि भगवान् शङ्करजी जगत् से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्द्य और जगत् के ईश्वर हैं। देवता, मनुष्य, मुनि सब उनके प्रति शिर नवाते हैं--

शंकर जगद्वन्द्य जगदीशा। सुरनर मुनि सब नावहिं शीशा॥

लंकाकाण्ड के आदि में जो वन्दना के श्लोक दिये गये हैं उनमें दूसरा श्लोक पढ़कर आनन्द प्राप्त कीजिये--

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम्॥
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शंकरम्॥

शंख और चन्द्रमा की सी कान्ति के अत्यन्त सुन्दर शरीरवाले, व्याघ्रचर्म के वस्त्र वाले, काल के समान भयानक सर्पों का भूषण धारण करनेवाले, गङ्गा और चन्द्रमा के प्रेमी, काशीपति, कलियुग के पापसमूह का नाश करनेवाले, कल्याण के कल्पवृक्ष, गुणों के निधान और कामदेव को भस्म करने वाले पार्वतीपति वन्दनीय श्री शंकरजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

और भी देखिये—

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम्।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे॥

जो सत्पुरुषों को अत्यन्त दुर्लभ कैवल्यमुक्ति तक दे डालते हैं और जो दुष्टों को दण्ड देने वाले हैं, वे कल्याणकारी श्री शम्भु मेरे कल्याण का विस्तार करें।

भगवान् श्रीरामजीने स्वयं कहा है कि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भगति हमारी॥

रामायण में ही यह भी लिखा है—

विनु छल विश्वनाथ पद नेहू। रामभगतकर लक्षण एहू॥

विनय पत्रिका में पढ़िये—

दानी कहुँ शंकर सम नाहीं।

दीन दयालु दिवोई भावै, याचक सदा सोहाहीं॥ १॥
मारिकै मार थप्यौ जगमें, जाकी प्रथम रेख भट माहीं।
ता ठाकुर को रीझि निवाजिबौ, कह्यौ क्यों परत मो पाहीं॥२॥
योग कोटि करि जो गति हरि सों, मुनि माँगत सकुचाहीं।
वेदविदित तेहि पद पुरारिपुर, कीट पतंग समाहीं॥ ३॥
ईश उदार उमापति परिहरि, अनतजे याचन जाहीं।
तुलसिदास ते मूढ माँगते, कबहुँ न पेट अघाहीं॥४॥

अर्थ—शंकर के समान दानी कहीं नहीं हैं। वे दीन-दयालु हैं, देना ही उनके मन भाता है, माँगनेवाले उन्हें सदा सुहाते हैं। वीरों में अग्रणी कामदेव को भस्म करके फिर बिनाही शरीर जगत् में उसे रहने दिया ऐसे प्रभु का प्रसन्न होकर कृपा करना मुझसे क्योंकर कहा जा सकता है? करोड़ों प्रकार से योग की साधना करके मुनिगण जिस परम गतिको भगवान् हरि से माँगते हुये सकुचाते हैं वही परम गति त्रिपुरारि शिवजी की पुरी काशी में कीट पतंग भी पा जाते हैं, यह वेदों से प्रकट है। ऐसे परम उदार भगवान् पार्वती पति को छोड़कर जो लोग दूसरी जगह माँगने जाते हैं उन मूर्ख माँगनेवालों का पेट भलीभाँति कभी नहीं भरता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कन्दपुराण में अमोघशिव कवच का जो उल्लेख मिलता है उसे पढ़कर भगवान् श्री शिवजी की सर्वेश्वरता का ज्ञान कीजिये—

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम् ।
सहस्रकर मत्युग्रं वन्दे देवमुमापतिम् ॥

ऋषभ उवाच—

अथापरं सर्व पुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम् ।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामिशैवं कवचं हितायते ॥
नमस्कृत्यमहादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिव मयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ १ ॥
शुचौदेशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ॥२॥
हृत्पुण्डरीकान्तरसंनिविष्टं
स्वतेजसा व्याप्तनमोऽवकाशम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं
ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम् ॥ ३ ॥
ध्यानावधूताखिल कर्मबन्ध-
श्चिरं चिदानन्द निमग्न चेताः ।
षडक्षरन्यासंसमाहितात्मा
शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम् ॥ ४ ॥
मां पातुदेवोऽखिलदेवतात्मा
संसारकूपे पतितं गंभीरे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं

धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ॥ ५ ॥

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति

ज्योतिर्मयानन्द घनश्चिदात्मा।

अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः

स ईश्वरः पातु भयादशेषात् ॥ ६ ॥

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं

पायत्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः ।

योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति

संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥ ७ ॥

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा

सर्वाणि यो नृत्यतिभूरिलीलः ।

स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्ने

र्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥ ८ ॥

प्रदीप्तविद्युत्कन कावभासो

विद्यावराभीतिकुठारपाणिः ।

चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः

प्राच्यां स्थितं रक्षतुमामजस्त्रम् ॥ ९ ॥

कुठारवेदांकुशपाशशूल—

कपालढक्काक्षगुणान् दधानः ।

चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः

पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥ १० ॥

कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो

वेदाक्षमालावरदाभयांकः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरु प्रभावः
सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥ ११ ॥
वराक्ष मालाभयटङ्कहस्तः
सरोजकिञ्जल्कसमान वर्णः ।
त्रिलोचनश्चारु चतुर्मुखो मां
पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥ १२ ॥
वेदाभयेष्टांकुशपाशटंक—
कपालढक्काक्षक शूलपाणिः ।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा—
मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥ १३ ॥
मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलि
र्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः ।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी
नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥ १४ ॥
पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीत कीर्तिः
कपोलमव्यात् सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो
जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥ १५ ॥
कण्ठं गिरिशोऽवतु नीलकण्ठः
पाणिद्वयंपातु पिनाक पाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु—
र्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥ १६ ॥
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा
मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेरम्बतातो मम पातुनाभिं
पायात्कटी धूर्जटिरीश्वरो मे ।। १७ ।।
ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो
जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात् ।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्
पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्य पादः ॥१८॥
महेश्वरः पातु दिनादियामे
मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः ।
त्रियम्बकः पातु तृतीय यामे
वृषध्वजः पातु दिनान्त्य यामे ॥१९॥
पायान्निशादौ शशिसेखरोमां
गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने
मृत्युञ्जयोरक्षतु सर्वकालम् ॥२०॥
अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करोमां
स्थाणुः सदा पातु बहिः स्थितं माम् ।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां
सदाशिवोरक्षतु मां समन्तात् ॥२१॥
तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः
पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः ।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं
मामव्ययः पातु शिवः शयानम् ॥२२॥
मार्गेषु मां रक्षतु नील कण्ठः
शैलादि दुर्गेषु पुरत्रयारिः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरण्य वासादिमहाप्रवासे
पायान्मृगव्याध उदार शक्तिः ॥२३॥
कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः
स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोश।
घोरारिसेनार्णव दुर्निवार—
महाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥२४॥
पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथ—
सहस्रलक्षायुतकोटि भीषणम्।
अक्षौहिणीनां शतमात तायिनां
छिन्द्यान्मृडो घोर कुठार धारया ॥२५॥
निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चि—
र्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्
संत्रासयत्वीश धनुः पिनाकम् ॥२६॥
दुःस्वप्न दुश्शकुन दुर्गति दौर्मनस्य—
दुर्भिक्ष दुर्व्यसन दुस्सहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्ति—
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥२७॥
इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्॥
यः सदाधारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायतेक्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्॥ २९ ॥
क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपिवा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति॥ ३०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वबाधाविघ्नशमनं सौमंगल्यविवर्धनम् ।
योधत्ते कवचं शैवं सदेवैरपिपूज्यते ॥ ३१ ॥
महापातकसंघातै मुच्यते चोपपातकैः ।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानु भावतः ॥ ३२ ॥
त्वमपि श्रद्धयावत्स शैवं कवचमुत्तमम् ।
धारयस्व मयादत्तं सद्यः श्रेयोह्यवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥

उक्त शिवकवच में शिवकी ईश्वरता एवम् सर्वसमर्थता का वर्णन आही चुका है। इतना ही नहीं श्रीमद्‌भागवत महा-पुराण में भी विषभय संत्रस्त देवों द्वारा की गयी स्तुति में भी इसका दर्शन मिलता है। श्री शिवपुराण में तो शिव महात्म्य का अटूट भण्डार ही भरा पड़ा है।

रुद्राष्टाध्यायी नामक सर्वमान्य ग्रंथ में जिसमें वेदों में प्रोक्त शिवमाहात्म्यबोधकमन्त्रों का संग्रह है शिव महिमा देखने ही योग्य है।

अनन्त कोटि शेष एवम् सरस्वती भी अनन्त कोटि कल्प काल पर्यन्त भी शिव महिमा कहने में असमर्थ हैं भला ऐसी परिस्थिति में मुझ सा अज्ञ व्यक्ति क्या कह सकता है?

सर्वशक्तिमान् भगवान् आशुतोष ईश्वर और सर्वलोक महेश्वर हैं। उनकी आराधना से अनन्तजीवों का उद्धार हो चुका है और हो रहा है और अनन्तकाल पर्यन्त उद्धार होता रहेगा।

रामतीर्थ पत्र के सञ्चालकों को ईश्वरांक निकालने के उपलक्ष में कोठिशः धन्यवाद देता हुआ इस लघुलेख को रामतीर्थ पत्रिका के माध्यम से जगत की सेवा में प्रस्तुत कर अपना जीवन धन्य मान रहा हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या सोच रहे हो श्रीकांत ?'

रामचन्द्रने पूछा। 'क्या सोचूँ राम ? वही एक बड़ी चिंता मुझे सता रही है। सोच रहा हूँ।'

'वह ऐसी कौन सी चिंता है ? मुझे क्यों बताया ही नहीं ?'

'मेरी बहन की शादी जो रुक गयी क्या तुम्हें मालूम नहीं ?'

'वह तो मालूम है। सुना है कि, लड़की की आंखों में कुछ दोष था, इससे ही शादी रुक गयी !......'

'हाँ राम ! पहले आंखों में कुछ दर्द होने लगा था। लेकिन अब वह पूर्ण अंधी बन गयी है ! उसकी चिंता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई अंत नहीं है। माँ एक तरफ बैठकर रोती है। मीना अब तो षोडशी हो गयी है। मालूम नहीं होता कि, भविष्य में क्या होगा ? और शादी कैसे होगी ? शादी की सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं। अच्छे वर भी मिले थे। लग्न भी निश्चित हो चुका था। पर हमारी हालत ऐसी हुई। इस समय पिताजी जीवित होते तो हमें कोई चिन्ता नहीं होती। अब हम अनाथ बन गये हैं। मीना को अब कौन वर मिलेगा। शादी कैसे होगी ? यह तो उस अभागिनी का प्रारब्ध-कर्म ही कहना चाहिए। बेचारी मीना घर के कामों में भी चतुर थी। खूब पढ़ती थी। मृदु भाषिणी थी। वह ऐसे गीत गाया करती थी। जिन्हें सुननेवाले दंग रह जाते थे। लेकिन अब सब व्यर्थ हो गया। क्या कहूँ राम ! अब वह घर के एक कोने में बैठकर रोती रहती है। हाय ! उसकी यह दशा मुझसे नहीं देखी जा सकती।' यह कहते हुए श्रीकान्त का कंठ गद्-गद् हो गया। और आंखों में आँसू आ गये।

अपने मित्र की बहन की यह दुर्दशा देखकर राम का हृदय पिघल गया, और आँखों में पानी भर आया। वह एक शब्द भी न बोल सका।

रजनी की नीलिम साड़ी में जड़े श्वेत मणियों के समान, शुभ्राकाश में तारे चमक रहे थे। मंद २ वायु धीरे धीरे चल रही थी, मानों किसी को ढूँढ़ रही हो। राम और श्रीकान्त दोनों शून्य की ओर देखते निःशब्द होकर बैठे हुए थे। देखते देखते राम की दृष्टि दुर्बल होगई, और आँखें बंद हो गयीं। वह सोच रहा था कि श्रीकान्त की व्यथा कैसे दूर करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठरा कचहरी' की घड़ी की आठ बजने की आवाज जब सुन पड़ी तब वे दोनों सचेत होगये। 'अब चलें यार' यह कहते राम खड़ा हो गया। श्रीकान्त भी आँसू पोंछकर उठ खड़ा हुआ। बाद वे दोनों धीरे धीरे चल पड़े।

* * * *

एक दिन बीत गया। अगले दिन श्रीकांत के नाम पर डाक से जो एक पत्र आया उसे देखकर श्रीकान्त को आश्चर्य हुआ। क्योंकि, उस पत्र के लिफाफे पर उसी गांव के डाक की मुद्रा थी। उसे देखकर श्रीकान्त उत्सुक हो उठा कि, यह पत्र किसने भेजा है? पत्र खोलकर देखा तो मालूम हो गया कि, वह पत्र राम का ही है। और, पत्र भी कन्नड़ में लिखा गया था। श्रीकान्त ने भरे दिल से पत्र को पढ़ लिया। पढ़ते पढ़ते न जाने उसके आँखों से क्यों आँसू टपक पड़े। 'राम...राम' कहते हुए श्रीकान्त ने उस पत्र को अपनी छाती से लगा लिया। पत्र का सारांश यों था।

.......'कल तुमने जो अपनी दर्द भरी कहानी सुनाई थी, उस पर मैंने खूब विचार किया। बहुत विचार विमर्श करने पर भी मुझे एक ही उपाय सूझा है। कल तुमने पूछा था कि, उस अभागिनी अंधी लड़की से कौन शादी कर लेगा? तुम्हारे प्रश्न का उत्तर अब मैं एक ही शब्द में दे सकता हूँ। वह उत्तर है 'मैं' इतना ही! मैं तुम्हारी बहन से शादी कर लूँगा, मैं एक दूसरी जाति का हूँ। पर ब्राह्मण हूँ। यह विचार तुम्हारी माँ और बहन से भी कह दो, और उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अभिप्राय भी समझ लो। यदि तुम लोगों को कबूल है तो मेरी परीक्षा पूर्ण होते ही मैं शादी के लिए तैयार होऊँगा। याद रखना, इस शादी के प्रति मुझे एक कौड़ी की भी आशा नहीं है। हो सके तो कल मेरे कमरे तक आना। तब बातें करेंगे।'

राम के इस पत्र से श्रीकान्त के मन को शांति मिली। फौरन उसने यह शुभ समाचार अपनी माँ को सुनाया। तब उसकी माँ ने राम की जाति के सम्बन्ध में कुछ चर्चा की। श्रीकान्त को यह बुरा लगा। उसने अपने अपनी माँ को खूब समझाया कि, एक कौड़ी भी लिए बिना, अंधी लड़की से शादी कर लेनेवाला रामचन्द्र, वह मनुष्य नहीं, देवता है! वह मानवता से देवत्व को जा पहुंचा है! अगर अब हम, मीना की शादी उसके साथ नहीं करेंगे तो, बादमें मीना की शादी होने की आशा नहीं हैं। राम को खाने पीने की कोई कमी नहीं है। और वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया तो, उसे अच्छी नौकरी भी मिल जाएगी। इस तरह बहुत कहने पर श्रीकान्त की माँ शादी के बारे में राजी हो गई। अब श्रीकान्त अपनी बहन मीनाक्षी के कमरे के पास चला तो वहाँ अंधी मीनाक्षी, अपने बाल संवारकर माथे पर कुंकुम का तिलक लगा लेने के लिए जो हाथ की अंगुली उठा रही थी, माँ और भाई की बातचीत सुनकर स्तब्ध रह गयी। उसके मुखपर आनन्द की झलक दिखाई दे रही थी। श्रीकान्त ने जब यह सब देख लिया तो वह भी स्तब्ध रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनाक्षीने अपने भाई को अपने कमरे में आता हुआ समझ-कर कुंकुम लगा लिया। तब उसके नयनों से आनन्दके अश्रु टपक पड़। इसके बाद उसके चंद्रमुख पर एक लघुमुस्कान खिल उठी, मानों फूल की कली खिल रही हो। यह सब चुपचाप देखते हुए श्रीकांत को इतना आनन्द हुआ कि, वह दौड़कर अपनी माँ के पास जा पहुँचा और बोला। 'माँ...माँ—, मीना ने अपनी अनुमती दे दी माँ !'

अगले दिन श्रीकांत राम से जा मिला। बाद वे दोनों लालबाग की ओर चल पड़े।

श्रीकांत सोच रहा था कि, किस तरह–बातचीत का श्रीग-णेश करें ? राम भी इसी सोच में पड़ा था। सोचते सोचते वे दोनों लालबाग के पेड़ों की छाया में जा बैठे। तब राम ने पहले मुँह खोला। उसने धीरे से 'श्रीकांत !' कहा। पर श्रीकान्त तब भी न बोला, बल्कि उसकी आँखों से आँसू निकले। आँसू भरे नयनों से श्रीकान्त ने राम की ओर देखा। पर एक शब्द भी न बोल सका। यह सब देखकर राम ने पूछा–'श्रीकान्त ! तुम क्यों इस तरह मौन रह गये हो ? मैंने जो पत्र लिखा था, क्या मुझसे कोई गलती तो नहीं हुई ?' अब श्रीकांत ने उस के दोनों हाथ पकड़कर कहा।—'तुम मनुष्य नहीं। देव हो ! तुम्हारा पत्र पढ़कर हमें जितना आनंद हुआ, उसे मैं शब्दों के सहारे नहीं बता सकता, तुम दोनों का सुख ही हमारा सर्वस्व है। लेकिन खूब सोच विचार कर लो।–बाद में तुम्हें पछताना पड़ेगा। ऐसा न हो, यही मैं कहना चाहता हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्रीकांत ! तो तुम अभीतक मेरे हृदय को नहीं समझ सके ?'

'राम...राम ! तुम बड़े हो ! दयालु हो ! तुम किसी अच्छी लड़की से शादी करके सुख से रहो।' यह कहते कहते श्रीकांत रो पड़ा।

'तुम पागल हो गये हो, श्रीकांत ! पत्नी अंधी होने से सुख में कोई बाधा तो नहीं आ सकती। लेकिन कुछ तकलीफ होगी। लेकिन वह कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि, जिसके लिए हमारा हृदय तड़प उठता है उसकी सेवा करना या उसके लिए कष्ट उठाना ये सब कर्तव्य सा भास होता है। तब लड़की अंधी होने से कोई तकलीफ नहीं हो सकती।'

'तुम विशाल हृदय हो ! इस कारण तुम्हें ऐसा भास होता है। लेकिन हमें....'

'मीनाक्षी ने क्या कहा ?'

'कुछ भी नहीं।'

'मगर यह कैसे ?

'जब मैं तुम्हारा पत्र पढ़कर माँ को समझा रहा था, तब मीना भी सुन रही थी। उसके मुँह पर लघुमुस्कान खेल रही थी।'

'अच्छा अब घर चलें ?' राम ने कहा।

सुन्दरी मीना अपने पिता की प्यारी लड़की थ। अपनी प्यारी बेटी की शादी के लिये उस पिता ने जो रकम जमा कर रख दी थी, अब काम आई। इसके बिना श्रीकान्त को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमा के (इन्सोरेन्स), अपने पिता जी के दो हजार रुपये भी मिले थे।

राम की परीक्षा समाप्त हो गई। बाद एक दिन शुभ मुहूर्त पर राम और मीना का विवाह समारम्भ घूमधाम से चला। शादी के लिए आये हुए अनेक लोग राम और अन्धी लड़की मीना, इन नवदम्पतियों को देखते दांतों तले ऊंगली दबा लेते थे।

विवाह के बाद कुछ दिनों तक राम श्रीकान्त के यहां ठहरा। परीक्षा का फलितांश भी प्रकाशित हो गया। राम पहली श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था। इसके बाद फौरन उस को एक स्कूल में अध्यापक का काम मिला। वह भी उसके अपने शहर बेंगलूर में। बाद क्या था? जब उसको काम मिल गया, तो उसने एक मकान ढूण्ढ़ निकाला, और अपनी गृहस्थी अलग कर ली। मीना भी अपने पति के नये मकान में आ गई। पर मीना को यह सब कल्पना मात्र हो गया था। क्यों कि, वह अपने पति को या अपने नये मकान को नहीं देख सकती थी।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन राम अपने कमरे में बैठ कर यों सोच रहा था कि, अपनी प्यारी मीना को देखते, आनन्द उठाने के लिये भगवान् ने मुझे आंखें दी हैं। लेकिन मीना तो इस भाग्य से वंचित रह गयी है। हाय! रे भगवान् क्या तुम्हें इतनी भी दया नहीं हैं? यदि तुम दयावान होते तो ऐसा क्यों होता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरी मीना भी सोच रही थी—'वे बहुत अच्छे मालूम पड़ते हैं। नहीं तो मुझ जैसी अंधी लड़की से वे क्यों शादी कर लेते ? उनको मुझसे क्या सुख मिला है ? उनको मैं कैसे सुख दूं ? और मैं क्या कर सकती हूं ? उनका दिल तो मेरे प्रति प्यार से भरा हुआ है। वे मेरे सर्वस्व हैं, स्वामी हैं। पर उनको मैं नहीं देख सकती ! हे भगवान ! दया करो।' आखिर एक बार अपने पति का मुख दर्शन पाने की, मीनाक्षी की दूर की आशा तीव्र हो उठी।

एक दिन राम को मीनाक्षी से बातचीत करने की इच्छा हुई तो वह मीना के कमरे में जा पहुंचा। यदि मीनाक्षी अपने पति को देख सकती तो अन्य नवविवाहिता वधुओं के समान वह भी लज्जा से झुक जाती। और उसका चन्द्रमुख लाल हो उठता। लेकिन मीना ने ऐसा नहीं किया। उसने किसी के अपने कमरे में आने की आहट सुनकर पूछा कि कौन है ? राम ने उत्तर दिया कि मैं हूं। जब मीनाक्षी—नयनविहीना होने पर भी लज्जा से सिकुड़ गई। और उठ कर चलने को तैयार हुई। पर बेचारी मीना वहां से न जा सकती थी। और न छिपकर बैठ भी सकती थी। विवाह होकर कुछ समय बीत जाने पर भी इन दम्पतियों में अब पहली बार सम्भाषण चलने वाला था। मीनाक्षी की यह लज्जा की लाट देख कर राम का कलेजा टूट गया। तब राम ने धीरे से मीना का हाथ पकड़ कर मधुर स्वर में कहा—"कहां जाओगी मीना ?" लज्जावती मीना का मुख लाल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर, उसके भाल पर पसीने की बून्दें चमकने लगीं। राम ने अब सोचा कि अगर मीनाक्षी को आंखें होतीं तो अब उसकी आंखों की कांती कैसी चमकती और उसका मुख कितना सुन्दर होता ? कह सोचकर उस का दिल दुःख से तड़प उठा, और उसके दिल में एक ऐसा तूफान उठा, जिसकी शांति कभी न हो सकेगी।

मीनाक्षी निःस्तब्ध होकर खड़ी थी। राम उसको देखता ही रहा। अंत में राम ने मीना का हाथ पकड़कर प्यार से 'मीना.......मीना' कहा। मीना मौन से अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करती रही तो, राम ने उसको प्यार से एक तरफ बिठाया। और फिर कहा, 'मीनाक्षी !...मीना...!'

अब मीना ने धीरे से जबाब दिया। 'क्यों जी !'। 'तुम यहां अकेली बैठी रहती हो ! तुम्हारे साथ बोलने वाला भी यहां कोई नहीं है। क्या तुम इस तरह बैठी २ ऊब नहीं जाती ?' उसने पूछा।

मीना ने एक दीर्घ श्वास छोड़ दिया।

'मीना !...अगर तुम चाहोगी तो मैं हर दिन यहां आकर बैठ जाऊंगा और तुम्हारे साथ बातचीत करते तुम्हारा मन बहलाया करूंगा।' उस ने कहा। अब भी मीनाने कोई उत्तर नहीं दिया। पर उसके अंग-अंग मुस्कुरा रहे थे। आखिर वह बोली—'जैसा चाहो वैसा करो।' अब रसिक राम का हृदय प्यार से भर आया। उसने मीना को अपने पास खींच लिया तो मीना का मुखकमल खिल उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन शाम का वक्त था। घर में मीना और राम के अलावा और कोई नहीं थे। मीना बैठी २ फूल माला बना रही थी। राम मीना के पास ही बिस्तर पर लेटा हुआ था। ता दोनों में सरसालाप प्रारम्भ हो गया। मीना ने पूछा- 'तुम अपने मन की पसंदगी से ही मुझको ब्याह कर लाये हो क्या ?'

'तुमने जो कहा वही सही। उसमें कोई संदेह नहीं है।' राम ने मुस्कुराते, कह दिया।

'श्रीकांत ने तुम्हें कह दिया होगा कि मैं पूर्ण अंधी हो गई हूं।'

'हां, पहले ही अंधी होने की तेरी कथा सुनाई थी।'

अब मीना को अपने पति के मुखभाव देखने की इच्छा हुई। उसने मुंह ऊपर उठाकर कहा—'तो तब भी तुमने क्यों कबूल किया ? अब देखो ! मुझ से तुम बहुत कष्ट उठा रहे हो। अंधी लड़की का हाथ पकड़ने का दौर्भाग्य तुम्हें बंधा था।' यह कहते मीना ने अपना सिर नीचा कर लिया।

'मीना ! तुम नहीं समझती कि, इसमें कितना सुख है !'

'मैं नहीं समझती कि, इसमें कौनसा सुख है ? मुझसे भी अधिक सुन्दरी और आंखों वाली लड़की तुम्हें मिल सकती थी ! पर तुमने....'

'चुप ! चुप रहो मीना ! ऐसा मत कहो ! क्या मैं भी फूल बांधू ?' कहता हुआ राम फूलों में हाथ फेरने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आखिर तुमने इस अंधो लड़की को जो बांध लिया न ?' 'लड़की अंधो हो गई तो क्या मीना ? क्या मैं उसके रूप रंग और अच्छे गुणों पर मुग्ध नहीं हो सकता ?'

'वाह, बहुत अच्छा कह दिया तुमने ! मेरे रूप और गुणों को आप पसंद करेंगे। नयन विहीना का क्या रूप और क्या रंग ?'

'पगली ! तुम्हारा रूप, और तुम्हारी मोहिनी जैसी छवि भला तुम्हें कैसे मालूम हो सकती ? तुम सदा आंखें मूदकर रहोगी तो, तुम्हें कौन पता लगायेगा कि तुम अन्धी लड़की हो !' अब मीना हंसती हुई बोली—'ठीक कहा तुमने ! अब मैं लगातार आंखें मून्द कर ही रह जाऊंगी।'

'मीना ! मैंने क्या कहा है अब ? तुम किसी वस्तु को देख नहीं सकती। तुम्हारी दृष्टि मंद हो गयी है। पर तुम्हारी आंखों की आकृति खराब नहीं हुई।'

अब मीना अपने निस्तेज नयनों से भावपूर्ण होकर अपने पति की ओर इस तरह देखने लगी, मानों वह अपने पति को देखने की अपनी सारी अभिलाषा को, उस भावपूर्ण दृष्टि के जरिये व्यक्त कर रही हो। इसके बाद मीना ने अपने तिरछे नयनों को घुमाया और प्यार से कहा—'मालूम नहीं होता कि तुम...तुम देखने को कैसे लगते हो ?' अब मीना रोने लगी।

'मैं देखने को कैसे कहूं ? मीना ! यह मैं तुम्हें कैसे बताऊं मीना ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुम्हारा मुंह, आंखें, नाक, मैं तुम्हारा सुन्दर और गंभीर रूप देखने को ललचाती हूं। तुमको देखने के लिये मेरा हृदय खिल उठा है। पर...क्या करूं नाथ? इन मेरे दुष्ट नयनों के कारण तुम्हारे रूप से मैं वंचित रह गई हूं।' यह कहते कहते मीना फूट २ कर रोने लगी। तब राम को ऐसा प्रतीत होने लगा कि, ये आँसू किसी एक चिन्ता की गुफा से अपनी पीड़ा हलकी करने के लिए बह रहे हैं। अब उस ने कांपते हुए स्वर में पूछा—'मीना...तुम क्यों रो रही हो?'

'हाय! मेरी पीड़ा को भला तुम क्या जानो?'

'पर इस तरह रोती क्या करोगी मीना?' 'फिर क्या करूँ? रोने के बिना मैं और क्या कर सकती हूं? हम दोनों एक जीव के समान हैं। पर मेरी इन आंखों ने हम दोनों के बीच में परदा डाल दिया है। नाथ! क्या कभी यह परदा हटेगा? और प्रकाश मिल सकेगा?'

'मीना....तुम निराश न बनो। मनुष्य-प्रयत्न को भगवान मदद करेगा। तुम्हारे दृष्टि दोष के लिए दवा दारू कर की कोशिश करूंगा। प्रयत्न से सफलता जरूर मिलेगी। मुझे आशा है कि, 'सत् प्रयत्न' करने से सफलता मिलेगी। मेरी अंतरात्मा से भी यह आवाज सुन पड़ती रहती है कि, 'प्रयत्न करो।' इसलिये, मीना! मेरे प्रयत्न से तुम एक न एक दिन मुझको देख सकोगी। आखिर तुम मुझको देखती देखती थक जाओगी। तुम जन्मतः अंधी नहीं हो। इसलिए मुझे आशा है कि, तुम्हारी दृष्टि ठीक हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मीना हर्षविभोर हो उठी। मीना की बनाई हुई फूलमाला को राम ने अपने हाथों से मीना के बालों में खोस दिया। तब हंसती हुई मीना अपने माथे में खोसी हुई फूल माला को, अपनी नाजुक अंगुलियों से स्पर्श करती प्यार की पुतली सी बन गई।

मीनाक्षी के दाम्पत्य जीवन में एक एक करके पूरे पांच साल बीत गये। अब मीना एक बच्चे की मां वन गई थी। वह बहुत सुन्दर था। उसका नाम भी 'चंद्रशेखर' रखा गया था। लेकिन मीना को अपने बच्चे की सुन्दरता और बाल-लीला देखकर आनन्द पाने का भाग्य नहीं था। वह अपने बच्चे को उठाकर बार २ छाती से लगाती, प्यार से उसका मुख चूम लेती। पर उसका मन शांत नहीं था। बच्चा पैदा होने के बाद मीनाक्षी की व्यथा और भी अधिक हो गई। बच्चे को पुचकारती सदा रोती हुई। मीना को देख कर राम का हृदय पिघल गया। उसने कहा—'मीना! मुझे आशा है कि तुम्हारी दृष्टि ठीक हो जाएगी। लेकिन तुम निराश होती जा रही हो।' तब बीच में बालक शेखर आ गया, और भावपूर्ण होकर बातचीत करते हुए अपने माता और पिता की ओर वह देखने लगा। राम ने उसे अपनी गोद में बिठा लिया।

मीना ने कहा—'तुम कह रहे हो, मुझे आशा है कि तुम्हारी दृष्टि ठीक हो जाएगी।' पर मेरे मन में निराशा ही पैदा होती जा रही है। तब मैं आंसू बहाने के बिना और क्या करूं?' अब मीना को वह उत्तर न दे सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब राम प्रयत्न में जुट गया। मीना के दृष्टिदोष के लिए इलाज होने लगा। कई नामी डाक्टरों की, आयुर्वेदीय वैद्यों की चिकित्सा भी चली। पर कोई भी प्रयोजन नहीं मिला। इसके बाद राम ने अखबारों में आनेवाले विज्ञापनों की दवाओं की ओर ध्यान दिया। सैकड़ों रुपये दवाओं के लिये खर्च हो गये। पर नतीजा यह हुआ कि, आखिर सिर पर हाथ रखकर बैठ जाना पड़ा। ऐसी हालत देखकर राम और मीना की भविष्य की आशा निराशा में बदल गई। अब मीना की दूर की आशा हवाई किले के समान हो गयी। ऐसी हालत में राम मीना और बच्चे के साथ तीर्थयात्रा करने निकला। और, एक मास तक तीर्थयात्रा करते, सुन्दर स्थानों को देखते वापिस लौट आया। लेकिन अब भी इन दम्पत्तियों का मन शांत न हुआ। मीना की दृष्टि ठीक होने की राम की अंतरात्मा की आशा नष्ट होती हुई देख कर वह आगे न सोच सका। और भी सोचता तो आत्मवंचना होती थी। पर राम अपनी इस आशा को आत्मवंचना रूपी रस्सी से बांधा करता था।

अब चारों तरफ जब निराशा ही दीख पड़ती रही, तो मीना का कोमल हृदय भी पत्थर सा बन गया। अब वह नहीं रोती। अधिक बोलती भी नहीं। वह अब भगवान् से यों प्रार्थना करने लगी, 'हे भगवान्! मुझ पर दया करो। मुझे केवल एक क्षण के लिये दृष्टि दान करो। मैं एक बार मेरे पतिदेव को और मेरे बच्चे को देख लूंगी तो फिर मुझे कोई अधिक आशा नहीं है। हे, देव! दयानिधे! एक क्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये इस अंधकार का नाश करो। बस, मैं अब नहीं रोती और नहीं चिल्लाती। मुझे एक बार पति के दर्शन का भाग्य भर दो भगवान्। फिर मैं अंधी ही पड़ी रहूंगी!' इस तरह विलाप करती हुई मीना भगवान् के सामने अपनी प्रार्थना करती रही।

गरमी के दिन थे। राम को छुट्टी मिली थी। राम खाट पर बैठा आराम ले रहा था। मीना अपने पति के पास नीचे लेटी हुई थी। पास ही बालक शेखर लेटा हुआ था। मीना को नींद लगने लगी थी। पर राम को नींद कहां! उसने मीना को उसकी दृष्टि ठीक होने के बारे में जो सांत्वना की बातें कहीं थीं, अब एक २ करके याद होतीं, राम के हृदय में चुभने लगीं। 'तुम मुझ को एक दिन तुम्हारी दृष्टि थक जाने तक देख सकती हो! राम ने जो ऐसा कहा था, अब वह झूठ होने वाला था। मीना ऐसी ही अंधी रह जायगी, आगे क्या होगा? आगे वह न सोच सका। उसका सिर घूमने लगा। और आंखों में अंधेरा छा गया। इसी वक्त बाहर से 'जै शंकर' कहता हुआ एक साधु दरवाजे के पास आ गया। तब 'जय शंकर' की आवाज से, मीना और राम चौंक पड़े। राम ने बाहर देखा तो, एक लंबी दाढ़ी वाला दीर्घकाय पुरुष द्वार पर खड़ा था। उसका मुख उज्वल था। और वह साधु कोई महात्मा सा मालूम पड़ता था। राम ने अन्दर से थोड़े चावल लाकर साधु को दे दिये। इतने में बालक शेखर साधु को देखकर हंसने लगा। तब साधु को उस मुग्ध बालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मुस्कान ने एक क्षण के लिये वहीं खड़ा कर दिया। साधु ने शेखर को प्यार से देखा। तभी भी राम चिन्तित सा होकर जो खड़ा ही था, उसको देखकर साधु ने पूछा कि, क्यों जी! आप किसी बड़ी चिन्ता में हैं, ऐसा मालूम पड़ता है। यह बालक कौन है जी? राम अब साधु के प्रश्न का फौरन उत्तर न दे सका। क्यों कि, साधु के इस प्रश्न से राम के मन में एक आशाकिरण पैदा हुई, साथ ही अनेक विचार तरंगें उसके मन में उमड़ पड़ी।

राम ने सोचा कि इन साधु-संतों की महिमा अगाध होती है। इस साधु से कहीं मेरी आशा पूर्ण हो सकेगी तो कौन जाने? 'डूबने वाले को तिनके का सहारा' इस कहावत के अनुसार, डूबनेवाले राम को वह साधु एक तिनके के समान भासित हुआ।

साधु ने फिर प्रश्न किया कि, वह औरत कौन है बाबू जी? आपको ऐसी कौन सी चिन्ता है, जो आप लोगों के वदनों पर कालिख सी लग गई है? अब राम ने साधु के प्रश्नों का उत्तर दिया। और अन्त में कहा कि, वह मेरी पत्नी है। और वह अन्धी है। साधु ने फिर पूछा—'क्या बाबू जी वह जन्म से ही अन्धी है?'

'नहीं उसको बारहवें वर्ष में दृष्टि मन्द पड़ गई। आखिर वह धीरे २ पूर्ण अन्धी बन गई। 'अब साधु का मुख खिल उठा, और उसने कहा—'अच्छा बाबू जी! आप चिंता मत करें! मैं एक ऐसी दवा देता हूं, जिससे आपकी पत्नी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्टि ठीक हो जायेगी।' राम ने कहा—'बाबाजी, अभी तक एक सौ से अधिक दवायें इस्तेमाल की गई हैं।'

'तो क्या हुआ ? 'अब सौ पर और एक दवा' ऐसा मान लीजिए।'

साधु का यह वाक्य सुनकर राम विस्मित हो उठा। क्योंकि, जो बात उसके अंतरात्मा में प्रतिध्वनित होती थी, वही बात वह साधु कह रहा था। अब राम ने साधु की सलाह मान ली। बादमें वह साधु 'अब तीन दिनों के बाद दवा लेकर आऊंगा।' यह कहते वहां से चल पड़ा।

वादे के मुताबिक तीसरे दिन वह साधु दवा के साथ राम के घर आया। और उस दवा को उसके के हाथ पर रखते उसके उपयोग का विधान भी साधु ने बताया। और अंत में कहा—'बाबूजी, एक मास तक इसी तरह दवा और चिकित्सा कीजिए। तब बहन जी की दृष्टि ठीक हो जाएगी। मैंने इस दवा को इसी तरह कितने ही लोगों को दिया है। उनको इससे फायदा भी मिला है। भगवान् करें! आपका कल्याण हो!'

राम ने कृतज्ञता से दवा ले ली, और पूछा कि, 'बाबाजी इसका दाम कितना होता है?'

'नहीं बाबू जी, मैं पैसे नहीं लूंगा। मेरे गुरुजी की आज्ञा है कि, 'पैसे मत लो।' मैं अब छः महीने के बाद यहां आऊंगा। तबतक आपका दुःख दूर हो जाएगा। तब आप जो चाहें, मुझे दीजिए। यह कहकर साधु वहां से बिदा हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनाक्षी और राम ने श्रद्धा से दवा का उपयोग किया। कुछ दिनों के भीतर उस दवा का सत्प्रभाव दीख पड़ा। मीनाक्षी की दूर की आशा अब सफल होने की घड़ी नजदीक आती दिखाई देने लगी। मानो मीना का कर्मफल समाप्त हुआ हो और पुण्यफल आरंभ होनेवाला हो।

पंद्रह दिन बीत गये तो मीना को अंधकार और प्रकाश का अनुभव होने लगा। अब मीना अपने पति और पुत्र को देखने के सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगी। धीरे २ मीना की दृष्टि साफ होने लगी। आखिर एक दिन वह दिन भी आ गया तो मीना फूले न समाई। अब उसकी आंखें तारों जैसे चमकने लगीं। मीना के जीवन में वह दिन महत्व का दिन था। अविस्मरणीय दिन था। यह सब उसके सौभाग्य का फल था।

अब मीना और राम के आनन्द का ठिकाना न रहा। आखिर राम की अन्तरात्मा की बात सच निकली, मीना की आंखें ठीक हो गयीं।

एक दिन मीना और राम सरसालाप करते आनन्द विभोर हो उठे थे। शेखर उछलता-कूदता खेल रहा था ऐसे वक्त वह महात्मा साधु वहां आ पहुंचा। साधु, दृष्टिदाता साधु का स्वागत करने को मीना बाहर जाने वाली थी, पर उसको राम ने रोका और एक सौ रुपये का नोट देते हुए कहा कि, यह सौ का नोट चावल में छिपा कर उस साधु को दे दो। मीना बाहर आई तो साधु ने उसकी आंखें देखीं, और उसके मुँह से आनंद के साथ 'जै शंकर' यह उद्गार आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। तब मीना ने भक्ति के साथ, चावल और नोट उस को दे दिया। पर उस ने सौ रुपये का नोट वापस लौटादिया। आखिर वह एक बरतन और कृष्णाजिन लेने को राजी हुआ। तब राम ने सन्तोष के साथ उन चीजों को देकर साधु को भेज दिया। 'जै शंकर' कहता हुआ वह वहां से चला गया। मीना, राम को एकटक से देखती ही रही तो राम ने पूछा— 'यह क्यों मीना ? इस तरह क्यों देख रही हो ?'

'क्या कहूं पतिदेव ? मेरी दृष्टि थक जाने तक, मुझे तृप्ति होने तक देखती हूं। तुम्हारे सुन्दर रूप को मेरी आंखों के जरिये मेरे हृदय के भीतर भर रही हूं। जबतक मेरा हृदय भर न जाय तबतक देखती ही रहूंगी।'

राम को अब हंसी आ गई! उसने कहा—'ऐसे देखकर क्या करोगी मीना ?'

'और क्या करूंगी ? मेरी आंखें थक जाने तक देखती रहकर अपने हृदय को तृप्त करूंगी।'

'केवल इस तरह देखने से तुम्हारा हृदय कैसे तृप्त होगा मीना! ऐसा नहीं हो सकता।'

'फिर कहो न ? अब कैसे मुझे तृप्ति होगी ? और किस तरह मैं थक जाऊंगी।'

रसिक रामने अब मीना को अपने पास कर लिया और उसके चंद्रमुख को दोनों हाथों से पकड़ कर, उसकी चमकती हुई आंखों को देखते हुये कहा—'देखो मीना! अब तुम्हारे मृदु मधुरों को......देने से तुम्हारे हृदय को तृप्ति मिलेगी।'

मीना, राम के आलिंगन में बंध गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल

स्पेशल नं. १

(रजिस्टर्ड)

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल [स्पेशल नं. १] का महत्व और लाभ

विगत २० वर्षों से यह तेल अनेक महत्व पूर्ण वनस्पतियों (जड़ी बूटियों) से निर्मित किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु (गर्मी के दिन) वर्षा ऋतु (बरसात के दिन) हेमन्त ऋतु (ठंडी के दिन) में स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयोगी रहे, ऐसी शास्त्रीय विधि से तैयार किया जाता है। रामतीर्थ ब्राह्मी तेल में वनौषधीय मधुर सुगंध होने से उपयोग करने वाली महिलायें तथा पुरुष वर्ग हमेशा के लिये इसे अपना लेते हैं, और अन्य लोगों को महत्व बताकर व्यवहार में लाने के लिए सलाह देते हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल युवक तथा वृद्धों के लिए ही उपयोगी नहीं अपितु छोटे से छोटे बच्चे तक के लिए लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायी है ऊपरोक्त रेखाचित्र में माता अपने बच्चो के सिर में रामतीर्थ ब्राह्मी तेल की मालिश करके सौन्दर्य, स्मरण शक्ति वृद्धि तथा आंखों की दृष्टि अच्छी बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल केवल सिर के बालों के लिये ही नहीं है, किन्तु शरीर मालिश के लिये भी लाभ दायक है। आगे के रेखा चित्र में आप देख सकते हैं कि लोग अपने हाथों से तेल मालिश कर सारे शारीरिक अवयवों को नीरोग एवं सशक्त बना रहे हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान के १० मिनट पहले सारे शरीर तथा सिर की तैल मालिश १० से २५ मिनिट तक अवश्य करें। ऊंचाई और आयु के हिसाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

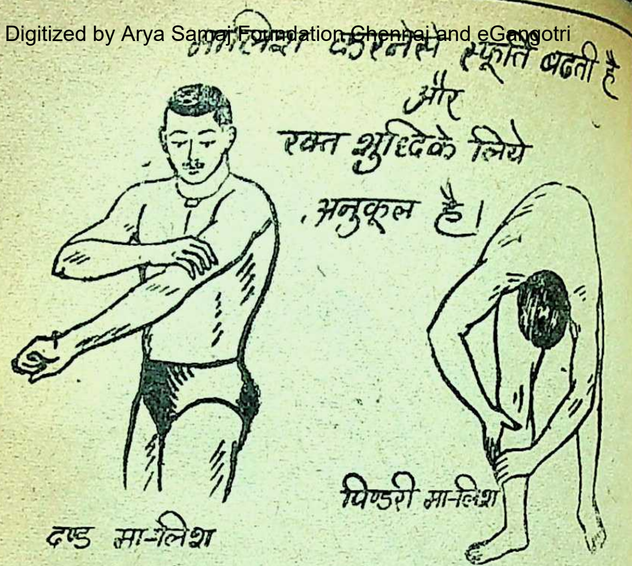

से शरीर का वजन कम होने से वजन बढ़ जायगा। अधि
वजन होने की हालत में आहार परिवर्तन के साथ २ रामती
ब्राह्मी तेल का प्रयोग करने से आवश्यक परिमाण में रहेगा।

आप आगे के रेखाचित्र को सूक्ष्म दृष्टि से देखिये। हाथों को, पेट को तथा पीठ के ऊपर मालिश करने के सुलभ तरीके बताए गये हैं। अनेक महिलाओं तथा पुरुषों का विचार है कि अपने हाथों से तैल मालिश अच्छी प्रकार से नहीं क सकते हैं। दूसरों से करानी पड़ेगी। यदि दूसरों से मालिश कराने की सुविधा होवे तो अवश्य करा सकते हैं। सुविधा न होने पर आलस्य, शंका, और शर्म को छोड़कर अपने हाथों से हर दिन मालिश करने की आदत डालें, किसी कारण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

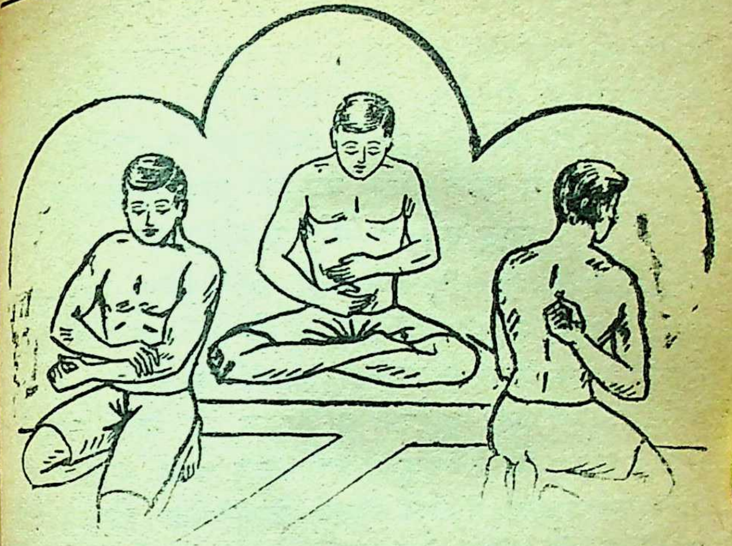

यदि हर रोज मालिश न हो सके तो सप्ताह में १ से ३ बार रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य मालिश करें या करावें।

विशेष सूचना और लाभ

आपने ऊपर छपे सर्व रेखा चित्रों को देखकर यह समझ लिया ही होगा कि रामतीर्थ ब्राह्मी तैल की मालिश से आबाल वृद्ध-बालक, माता, (महिला) तथा पुरुष वर्ग कितने आरोग्य-मय सुडौल शरीर वाले तथा आकर्षक मुख मुद्रा वाले और कितनी सुन्दर केशभूषा वाले हैं। इतना ही नहीं हरेक अवयवों को हृष्ट-पुष्ट बनाने में सामर्थ्यवान बन गये हैं।

रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के प्रयोग से गहरी नींद, स्मरण शक्ति की वृद्धि, बाल काले, घने तथा लम्बे बनाने में अनुकूल है तथा इससे बालों का झड़ना बन्द कर गंजा पन दूर करने में लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दायी है। कान में डालने से कान के सूक्ष्म अवयव नीरोग बने रहते हैं। ऐसे अनेकानेक महत्त्वपूर्ण लाभों की दृष्टि से ही वैद्यराज, डाक्टर, प्रख्यात विद्वान् वर्ग, राजनीतिज्ञ और अन्य प्रतिष्ठित वर्गों से रामतीर्थ ब्राह्मी तेल के गुणों के विषय में स्वानुभव पूर्ण अनेक प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

छात्र वर्ग के लिये लाभदायक

ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी ऋषि-मुनि, साधु-सन्त, त्यागी-वैरागी उदासीन वृत्ति के लोगों को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अनेक प्रकार के लाभ अवश्य ही प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों के कारण से छात्र-छात्राओं, (लिक स्कूल, मिडिल स्कूल, हायस्कूल तथा कालेज के) को रामतीर्थ ब्राह्मी तेल से अवश्य लाभ प्राप्त होगा। जैसे, आंखों की दृष्टि सतेज रहेगी। मस्तिष्क शान्त रहेगा। स्मरण शक्ति बढ़ जायेगी। शरीर मालिश से शरीर में स्फूर्ति बढ़ेगी, स्नायु संस्थान तथा रस ग्रन्थियों में शक्ति का संचार होगा।

वैसे तो त्वचा की कान्ति, रक्त परिभ्रमण के साथ २ स्वस्थ रहना, चर्मरोग निवारण, शारीरिक जोड़ों में बल, समस्त शरीर में समशीतोष्णता आदि अनेक लाभ सबको प्राप्त होता है। यदि आपने अभी तक रामतीर्थ ब्राह्मी तेल का उपयोग कर लाभ नहीं लिया हो तो आज ही अपने शहर अथवा गांव के दवा बेचने वाले अथवा जनरल मर्चेन्ट से खरीद करें। दो साइजों में प्राप्त है।

न मिलने पर निम्न पते पर लिखें।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम दादर बम्बई १४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(फरवरी अंकसे आगे)

जल चिकित्सा के आविष्कर्ता

सन् १८२६ ई. में विसेंज प्रिस्नीज ने ग्रेफन वर्ग में सर्व प्रथम जलचिकित्सालय खोला। इसीलिए उसे ही इस चिकित्सा प्रणाली की नींव डालने वाला कहा गया है। उसने स्वयं अपने ही शब्दों में निम्न प्रकार वर्णन किया है:—

सन् १८१९ ई. में दुर्भाग्यवश गाड़ी की दुर्घटना हो जाने से मेरी पसलियां टूट गईं। एलोपैथिक डाक्टरों ने जबाव दे दिया। मुझे जड़ी से तैयार की हुई गर्म पट्टी दी गई। परन्तु उससे दर्द इतना बढ़ गया कि मैं सहन न कर सका। मैंने निराश होकर पट्टी खोल दी। मुझे ध्यान आया कि एक बार उंगली कुचल जाने पर पानी की ठंडी पट्टी लगाने से ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गई थी। मैंने दुघटना से ग्रसित भाग पर पानी की ठंडी पट्टी बांध दी, जिससे दर्द कम हो गया और मुझे गहरी नींद आई। कुछ ही दिनों में मैं इतना ठीक हो गया कि खेत की देखरेख कर सकूं। उसके बाद साधारण बीमारियों एवं दुर्घटनाओं में मैंने स्वयं एवं दूसरों के लिये ठण्डे पानी का प्रयोग कर अच्छा परिणाम पाया। फिर तो पड़ोसी तथा दूसरे बीमार मेरे पास आने लगे। मेरी ख्याति बढ़ी। मुझे रोगियों का निरीक्षण चिकित्सा करने का अच्छा अनुभव हुआ। [प्लेटन]

प्रिस्नीज ने रोग के तमाम लक्षणों पर ठंडे पानी का प्रयोग किया। इसके अतिरिक्त पैर स्नान, शीर्ष पट्टी, गीली पट्टी, मालीश एवं ठण्डे पानी का डूस रोगों को दूर करने में लाभकारी पाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि लोगों ने प्रिस्नीज के सिद्धान्त को मान लिया कि ठण्डे पानी में रोगों को नष्ट करने की क्षमता है। उसके अनुसार शक्ति प्रदान करने, ताजगी लाने, शीतलता प्रदान करने एवं शांति दायक ही नहीं बल्कि शरीर के तमाम विजातीय द्रव्य को बाहर निकालने की शक्ति पानी में हैं। प्लेटन]

बुद्धिमता एवं चातुर्य पूर्ण प्रयोगों के द्वारा वह एक अच्छा प्राकृतिक चिकित्सक बन गया। उसकी प्रणाली प्रकृति के नियमों एवं व्यक्तिगत निरीक्षण के अनुभव पर आधारित थी, उसने स्वयं एवं अन्य रोगियों पर प्रयोग कर प्रकृति के कार्यों का निरीक्षण किया और प्रकृति में रोगों को दूर करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव किया। प्रिस्नीज में औषधोपचारक की बुद्धि थी। जब कि उसने किसी मेडिकल कालेज में परीक्षा नहीं प्राप्त की थी।

जैसा कि उसने स्वयं के घाव को जल प्रयोग द्वारा तेजी से ठीक किया। जिसे उसके सामयिक एलोपैथिक चिकित्सक असाध्य बता चुके थे। उसने इसी प्रयोग को जख्म, कटने टूटने-फटने, जलने आदि पर अपने साथ खेत में काम करने वालों पर किया और सफलता प्राप्त की। [प्लेटन]

इस प्रकार प्रतिदिन उसके खेतों में ही रोगियों की भीड़ बढ़ने लगी। जिससे एलोपैथी प्रमाण-पत्र प्राप्त चिकित्सक ईर्ष्या करने लगे और उन्होंने उसके विरुद्ध कोर्ट में मुकद्मा चलाया। उसे मजिस्ट्रेट के सामने खड़ा होना पड़ा। उसे अन्य एलोपैथिक चिकित्सकों के निरीक्षण में उसकी प्रणाली का निरीक्षण करने के लिए रखा गया। अन्त में उसके द्वेषी चिकित्सकों ने प्रमाणित किया कि उसकी प्रणाली हानि रहित एवं विरोध रहित है।

उसके बाद इस प्रणाली को औषधोपचार एवं लोगों ने वर्षों अध्ययन किया तथा व्यवहार में लाया। उन लोगों में मुण्डे ने अमेरिका में जलचिकित्सालय स्थापित किया। राउज़े ने जर्मनी में प्रिस्नीज प्रणाली का प्रचार किया। उसकी मृत्यु के बाद सिडलर ग्रेफनवर्ग में जल चिकित्सालय चलाते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिडलर ने हजारों रोगियों को निरोग किया। उसके द्वारा डयूकएडल्फ को स्वस्थ करने का समाचार अब भी लोगों के मस्तिष्क में ताजा बना हुआ है। स्वस्थ होने पर डयूक ने ग्रेफन वर्ग की सड़कों की एवं लकड़ी द्वारा निर्मित रास्तों की मरम्मत कराई। उसने मैकलेन बर्ग के डयूक जिसको कि डाक्टरों ने जबाब दे दिया था, पूर्ण स्वस्थ किया। इस खुशी में डयूक ने मैकलनवर्ग हाऊस, आफिसरों के लिए एवं सुन्दर मैकलन वर्ग 'स्केटलग्राउण्ड' का निर्माण कराया एवं सिडलर को कीमती चित्र तथा धन प्रदान किया। अन्त में उसने सरकार को सूचित किया कि प्रत्येक वर्ष चार चिकित्सक ग्रेफन वर्ग सिडलर के पास जलचिकित्सा का अध्ययन करने के लिये भेजे जायें। सन् १८८२ में यही कानून में परिवर्तित हुआ। सन् १८८८ में रोमानिया के प्रथम बादशाह किंग चार्ल्स ग्रेफनवर्ग जलचिकित्सालय के प्रथम इनडोर रोगी थे।

जान स्काथ भी प्रिस्नीज के सामयिक थे। सन् १८१७ में घोड़े ने लात मारी जिसके फलस्वरूप उनके दाहिने पैर के घुटने की कटोरी कुचल गई। इस भाग की चीर-फाड़ द्वारा चिकित्सा की गई परन्तु न ठीक हुआ। हड्डी सूज गई और सूजन पूरे जोड़ में फैल गयी जिससे स्काथ अपनी बोझी गाड़ीके साथ बिलकुल नहीं चल सकता था। एक दिन जब वह पैदल चलने के बदले गाड़ी पर बैठकर जा रहा था, उसे एक संत मिला। उसने स्काथ से कहा 'जब घोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोझ से दबा हो तो तुम्हारे जैसे युवक को सवारी करना शोभा नहीं देता। रुकाथ ने अपनी लाचारी प्रकट की। संत ने उसे राय दी कि तुम दिन में कयी बार घुटने पर ठंडे पानी का प्रयोग करो।

कई व्यवसाय एक साथ सम्हालने के कारण उसे कई बार यही बदलने का समय ही नहीं मिलता था। एक पट्टी जब बिलकुल सूख जाती तो दूसरी पट्टी लगाता। रात में मोटी पट्टी लगाकर ऊपर से ऊनी कपड़ा लपेट देता जिससे सूजन घटने लगा। दर्द भी कम हो गया। दस सप्ताह में घुटना इतना ठीक हो गया कि यह पता लगाना कठिन था कि किस पैर में घाव लगा था। यही घटना रुकाथ-चिकित्सा की नींव है। उसने कुछ समय तक गीली पट्टी का प्रयोग मार लगने, कुचलने आदि पर किया और पड़ोसियों तथा जानवरों की चिकित्सा की। उसने बाहरी प्रयोग द्वारा घावादि को ठीक किया परन्तु उसकी समझ में नहीं आया इन बाह्य प्रयोगों से अन्दर की अव्यवस्था कैसे ठीक हो जाती है, परन्तु उसे घुटने की सूजन ठीक होने पर उसे चिकित्सा का मूल स्रोत ही मिल गया। उसने यह प्रत्यक्ष देखा कि शीत से गर्मी भी मिलती है जो जानवरों एवं वनस्पतियों के लिए लाभकारी है।

इस प्रकार रुकाथ ने प्राकृतिक चिकित्सार्थ छोटी पट्टियों, बड़ी पट्टियों, स्थानीय पट्टी एवं संपूर्ण शरीर की गीली पट्टी एवं भोजन सुधार का सहारा लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६ वर्ष के चिकित्सा-काल में स्काथ ने कुछ आश्चर्यजनक रोग ठीक किये जिसे औषधोपचारक शल्य क्रिया का सहारा लेने पर भी ठीक न कर सके। उदाहरण स्वरूप भगंदर, शोथ, कंठमाला आदि को छः से बीस सप्ताह में ही स्काथ ने ठीक कर दिया।

कनाइप रोमन कैथोलिक मत का बवेरिया निवासी था। उसका जन्म सन् १८२४ में हुआ था। वह एक जुलाहे की सन्तान था। उसने स्वयं कहा है:—मेरा शरीर एवं मस्तिष्क बुरी तरह से घायल हो गया। मैं जीवन की आशा छोड़कर मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। एलोपैथिक चिकित्सकों द्वारा जबाब देने पर—जलोपचार द्वारा ही स्वस्थ एवं शक्तिशाली बन गया। मेरे मित्र मेरी चापलूसी करते हुए कहने लगे ५० वर्ष के होते हुए भी इतनी शक्ति है। मैंने कहा यह सब जलचिकित्सा का प्रभाव है मुझे जल चिकित्सा की मैत्री के लिए कौन दोषी बना सकता है ? (प्रोफेसर बिल्ज)

कनाइप के सिद्धान्तानुसार सभी रोगों का कारण रक्त में निहीत है चाहे वह रक्त अशुद्धि के कारण हों अथवा शरीर में संचित विजातीय द्रव्य के कारण हों। आंतों में संचित विजातीय द्रव्य जलोपचार द्वारा दूर किया जा सकता है। उसका कहना है कि शीतल जल के अल्प समय का प्रयोग गर्म जल के प्रयोग से अधिक प्रभावशाली है। परन्तु जब रोगी शीतल जल-सहन नहीं कर सकता हो तो उसके लिये साधारण ताप का जल काम में लाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि रोगी पतला है और पीला हो गया है ऐसी अवस्था में वह केवल स्थानीय सिंचन आदि का प्रयोग करता था। शरीर का ताप स्वाभाविक अवस्था से घटने पर वह सर्व प्रथम उष्ण जल से भरी बोतलों या घर्षण का प्रयोग करता था। पश्चात् उन्हीं स्थानों पर शीतल जल का प्रयोग करता था। इससे रक्ताभिसरण क्रिया तीव्र होती है। शरीर का ताप बढ़ता है। भूख बढ़ती है। शरीर के कल पुर्जे शक्तिशाली एवं क्रियाशील बनते हैं।

कुछ मनुष्य स्नायुक एवं उत्तेजित स्वभाव के होते हैं—ऐसे लोगों को प्रथम साधारण ताप का जल का प्रयोग करते हुए उत्तरोत्तर शीतल जल का प्रयोग करना चाहिए। मेद प्रधान मनुष्यों की चर्बी घटाने के लिये एवं शरीर-शुद्धि के लिए उसने वाष्पस्नान उपयोगी बतलाया है। दर्द एवं घाव लगने पर शीतल जल का स्नान, जलन एवं चुंभन में साधारण ताप का जल, कब्ज में एनीमा। स्नायुक अवस्था के आरम्भ में नंगे पैर टहलना। दर्द में उष्ण प्रयोग। किन्हीं हालतों में दर्द बढ़ना, रोग घटने का चिह्न है। कफ गिरना दस्त होना, किसी भाग में दर्द होना, यह सूचित करता है कि प्रकृति शरीर से विजातीय द्रव्य को तेजी से बाहर निकाल रही है।

क्नाइप ने नंगे पैर टहलना, शीतल पट्टी, डूस, सभी प्रकार के स्नानों को मान्यता दी है। परन्तु जलोपचार की उपयोगिता बढ़ाने के निमित्त वह कुछ औषधियां भी मिलाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,-Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। वह प्रातः अर्द्ध स्नान लेता था। वह जब ऊपरी अंगों को पोंछता था तो पानीमें खड़ा रहता था। वह खुली हवा में रहता था। शीत ऋतु में भी वह खिड़कियां खुली रखता था, उसका कहना था कि कपड़े इस प्रकार पहने जांय कि वायु शरीर में प्रवेश कर सके। पसीना आदि बाहर निकल सके, रक्त-संचार में बाधा न पड़े। वह एक प्रसिद्ध एवं जन्मसिद्ध चिकित्सक था। (प्लेटन)

कूने का जीवन भी जलोपचार से बच सका जब कि उसका एक पैर कब्र में था और उसके सामायिक एलोपैथिक चिकित्सकों ने असाध्य की घोषणा कर दी थी। उसका कहना है कि सभी रोगों का कारण विजातीय द्रव्य है। यही विजातीय द्रव्य रक्त में मिलकर उसे दूषित करता है। इसलिए हर बीमारी में उसने वाष्प-स्नान की राय दी है। वाष्प-स्नान के बाद घर्षण कटिस्नान लेना भी आवश्यक है। प्रथम प्रयोग से पसीना निकलता है। दूसरे से विसर्जन क्रिया तीव्र होती है इस प्रकार शरीर शुद्ध हो जाता है। केवल जीर्ण रोगों में ही कुछ समय अधिक लगता है। शरीर में विजातीय द्रव्य, अति भोजन, अप्राकृतिक खाद्य, जैसे मांस, मसाले, मदिरा, नींद की दवा। उत्तेजक रासायनिक पदार्थ, पेटेन्ट दवाइयां, टीका, तंबाकू आदि से उत्पन्न होता है। इसलिये उसने दूध फल, नारियल, अनाज-भाजी एवं पानी को आहार में स्थान दिया है।

'अमेरिका में जलोपचार'

डा. ए. विलफोर्ड हाल पी. एच. डी., एल. एल. डी. ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलचिकित्सा का प्रचार खूब जोरों से किया। उसने स्वयं ४० वर्ष तक जलचिकित्सा द्वारा लोगों को आराम पहुंचा कर प्रमाणित किया। २९ वर्ष की उम्र में उसने अनुभव किया कि 'क्षय' क्या है जैसा कि वह वर्षों से लोगों द्वारा सुनता था। उसका भाई जल्द ही इस रोग का शिकार हो चुका था। उसके 'फेमिली डाक्टर' ने जब उसकी परीक्षा की तो साफ जवाब दे दिया कि छः माह से अधिक जीना कठिन है। दूसरे अनुभवी चिकित्सक को बुलाया गया। उसने जब छाती परीक्षक यंत्र से फेफड़े की जांच की तो बताया कि एक फेफड़ा बिलकुल खराब हो चुका है और दूसरा भी बुरी तरह प्रभावित हो चुका है। स्वस्थ होने की आशा न रही। औषधोपचार की सीमा में न रहा। बड़ी कठिनाई से वर्ष बीत जाएगा। शरीर में मांस न रहा। केवल हड्डियों का ढांचा मात्र था। शरीर फीका पड़ गया था। चलना फिरना कठिन था। शरीर का वजन घटकर १२० पौण्ड हो गया। वृद्ध दिखाई देता था। पिछले अठारह वर्षों में उसका वजन २०० पौण्ड, अच्छा स्वास्थ्य, तीव्र मस्तिष्क शक्ति, आश्चर्यजनक आत्मीय शक्ति बनी रही।

ऐसा मालूम पड़ा कि जलोपचार का यह चमत्कार है। डा. हाल मृत्यु के निकट था, क्योंकि वह भी क्षय का शिकार बन चुका था। उसका स्वस्थ होना सचमुच ही आश्चर्य जनक चमत्कार था जो उसे जलोपचार से प्राप्त हुआ। उसने अपनी कथा प्रकाशित की, हजारों लोगों ने उसकी बताई हुई विधि से स्वास्थ्य प्राप्त किया। [विल्सन]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसने आंत की सफाई के लिए एनीमा पर जोर दिया, क्योंकि वह भी आँतों में विजातीय-द्रव्य का संचय होना सभी रोगों का मूल मानता था।

वाशिंगटन के डा. एच. टी. टर्नर (टर्नर्स न्यु हाइजिनिक ट्रीटमेंट) के लेखक भी जल चिकित्सा के अनुयायी थे और उन्होंने भी एनीमा को प्रधान माना है। उन्होंने लिखा है कि मैंने एक मनुष्य आंत-चीर कर देखा जो आँत की सूजन से मरा था। पाँच फीट की लम्बाई तक आँतें विजातीय द्रव्य से भरी थीं। बहुत सी जगहों पर एकदम सूखी एवं स्लेट के समान कड़ी थीं जिसके कारण रास्ता रुक सा गया था। यहाँ तक कि महीने में दो बार दस्त होता था। ऐसा वर्षों तक चलता रहा। चिकित्सकों ने इस तकलीफ को दूर करने के लिए-शक्तिशाली दवाओं का प्रयोग किया। सभी चिकित्सकों ने मान लिया कि विजातीय-द्रव्य आँतों में बहुत समय से पड़ा हुआ है। उसकी मृत्यु का कारण वर्षों से संचित विजातीय द्रव्य था। मैंने स्वयं देखा कि २८४ केसों में से २८ की आँतें विजातीय द्रव्य रहित थीं। बहुत की आँतों में ६ इंच के कीड़े, अंडों की थैली एवं बच्चे पाए गए। (विल्सन)

न्युयार्क का डा. डब्ल्यू. ई. फॉरेस्ट बी. एस., एम. डी. ने 'न्यु मेथड' नामक पुस्तक प्रकाशित की। उन्होंने भी एनीमा को मान्यता दी है। वह एक स्त्री के बारे में लिखता है कि उसकी आँतों की सफाई छः सप्ताह से नहीं हो रही थी जिससे पूर्ण खुराक न लेने से दुबली एवं पीली पड़ गई थी। उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँतें एनीमा द्वारा साफ करने से वह स्वस्थ होगई और उसका-शरीर गुलाबी रंग में परिवर्तित हो गया।

मिस्टर प्राइस अमेरिका के जल चिकित्सक का कहना है एक टाइपिस्ट (स्त्री) की आँतें भी विजातीय द्रव्य से ग्रसित थीं। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। मैंने उसे एनीमा की मदद से ठीक किया।

वियना के संसार प्रसिद्ध जल चिकित्सक विंटर निट्ज की पुस्तक 'मैग्नस ओपस' का अनुवाद १८८४ में हुआ जिसकी उपयोगिता से प्रभावित होकर कोलम्बिया विश्व-विद्यालय में जल चिकित्सा कोर्स भी सम्मिलित कर लिया गया। डा. बैरेंच प्रथम जल चिकित्सा (अमेरिका) के अनुयायी हुये।

'जल चिकित्सा विषैली दवाओं के विपरीत उपचार का सुन्दर साधन है'

श्री जान स्मीडले इंगलैण्ड के 'राक साइड एण्ड मैटलाक ईन्स्टीट्यूट आफ हाइड्रोपैथी' की नींव डालने वाले लिखते हैं:-जल चिकित्सा का उद्देश्य और सिद्धान्त है कि शरीर के विकारों को निकालकर असली स्थिति में लाना। इसके विद्वान पीढ़ियों से प्रचलित औषधोपचार तथा अन्य व्यवहृत साधनों को व्यर्थ समझते हैं—

श्री जे. डब्ल्यू विल्सन न्युयार्क के प्रसिद्ध जल चिकित्सक लिखते हैं।—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई एक शताब्दी पहले रक्त निकलना, विरेचन, वमनादि डाक्टरी-व्यवसाय के सुन्दर तथा सामान्य साधन थे। जार्ज वाशिंगटन की जान-डाक्टरों की मूर्खता से चली गई। जार्ज वाशिंगटन का शरीर शुष्क हो चला था। डाक्टरों ने परामर्श में ही समय गँवा दिया जिससे पाँच मिनट में ही उसकी जीवनलीला समाप्त होगई। वह बच सकता था यदि डाक्टरों ने प्रकृति की पुकार पर ध्यान दिया होता और मूर्खता में समय न गँवाया होता। क्योंकि वह अंतिम समय तक पानी माँगता रहा, परन्तु उसे पानी नहीं दिया गया। यह है वैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली का जीता जागता चित्र।

हनीमैन (होम्योपैथी के आविष्कर्त्ता) ने प्रथम बार एलोपैथी के विरुद्ध आवाज उठाई और समान लक्षणों वाली दवाओं का सूक्ष्म रूप में प्रयोग करने की मान्यता दी। परन्तु हमारे भाई वैज्ञानिक चिकित्सक कोलतार सेवनी दवाओं तथा सुइयों का प्रयोग कर क्षणिक लाभ पहुँचाकर रक्त को बराबर अशुद्ध करते रहे जो कि भविष्य में तकलीफों को और बढ़ा देती थी।

यदि शरीर के किसी भाग में रक्ताधिक्य है तो दूसरे में रक्त-कमी अवश्य होगी जिससे रक्त संचालन क्रिया में खिचाव पैदा होगा। शरीर में आवश्यकता से अधिक रक्त नहीं होता। कुछ होम्योपैथी दवाओं से रक्त संचार ठीक होता है या जल के प्रयोग से तथा घर्षण से रक्त संचार ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। रक्त शुद्ध होता है। जहाँ दवायें रक्त संचार तेज करती हैं और बाद में रोगी को अशक्त बना देती हैं। वहाँ जल चिकित्सा रक्त संचार को ठीक करती है और शुद्ध करती है।

दवा की अपेक्षा मिक्चर एवं सुई अधिक हानिकर है। खर्च भी बढ़ता है। खतरा बढ़ जाता है। जीवनी शक्ति क्षीण हो जाती है। रोगपर विजय पाने के लिए विषैली दवाओं का प्रयोग किया जाता है। यदि रोगी, जीवनी शक्ति अच्छी रहने पर बच गया तो डाक्टर धन्यवाद का पात्र बनता है। यदि रोगी मर गया तो कह दिया जाएगा कि प्रकृति के आगे किसी की नहीं चलती। डाक्टर बेचारा क्या कर सकता है?

डा. बी. एम. कुलकर्णी (भूतपूर्व चिकित्सक राय एण्ड कं. होम्योपैथ प्रिंसेस स्ट्रीट बम्बई) के पास एक सुतार चिकित्सा के लिए आया। डाक्टर ने उसे नेट्रमम्यूर ३० की कुछ बूँद शुद्ध पानी में डालकर दिन में दो बार पीने को दिया। रोगी ने देखा दवा रंगरहित है। उसने कार्क हटाया और सूंघा। एक चमच दवा जीभपर डाली और कहा कि आप रोगियों को केवल सादा पानी देते हैं। मैं जब बीमार पड़ा था तो दूसरे डाक्टर ने मुझे रंगीन सुगंधित दवा दी थी। परन्तु आपने जो दवा दी है उसमें न तो कोई रंग है और न दवा की गंध। आप मुझसे भले ही पैसा अधिक लें परन्तु रंगीन, स्वादयुक्त एवं गंधयुक्त दवा दीजिए और उसने शेष दवा को फेंक दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस वर्ष के बाद पुनः वही रोगी बुरी दशा में आया। डाक्टर ने पुनः वही दवा उच्च शक्ति में पीने के लिए दी जिससे वह ठीक हो गया। उसने डाक्टर को धन्यवाद दिया एवं पूर्व के किये गये व्यवहार के लिए क्षमा माँगी।

एक समय था जब लोग बीमार पड़ते ही डाक्टर के पास जाते थे। परन्तु आजकल बहुत से लोग होम्योपैथी एवं बायोकेमिक की गाइड द्वारा चिकित्सा कर डाक्टर के कीमती बिल से मुक्त रहते हैं। केवल आफिस में कार्य करने वालों या उपदेश-रोगियों को रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर का दरवाजा खटखटाना पड़ता है।

बहुत से एलोपैथिक डाक्टरों ने होम्योपैथी एवं बायोकेमिक चिकित्सा प्रणाली को अपना लिया। कुछ ने इलिमेन्ट्री होम्योपैथी, नेचरोपैथी को स्थान दिया।

डा. बी. मेस्नर का कथन है कि सभी मेडिकल कालेजों का उद्देश्य होना चाहिए कि वह सभी विषरहित दवाओं की खोज करें जिसका उपयोग रोग चिकित्सा, शल्य चिकित्सा में सहायक हो। जल चिकित्सा को भी पाठ्य क्रम में सम्मिलित करें। (प्लेटन)

जल चिकित्सा प्रकृति का स्वास्थ्य प्रदायक हाथ और स्वास्थ्य-मंत्री है। दूषित वायु, दूषित खाद्य, गलत आदतों, गलत रहन-सहन से आई हुई खराबी जल-चिकित्सा द्वारा ठीक होती हैं। (मेरी निकालस)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं मेडिकल स्कूल की चिकित्सा प्रणाली और शिक्षक के बारे में अध्ययनकर प्रभावित और दुखी हुआ जो कीटाणुओं को मारकर रोगों की व्यर्थ चिकित्सा करने की राय देते थे। (डाक्टर हण्टर)

जल चिकित्सा रोगों का कारण कीटाणुओं में नहीं बल्कि अशुद्ध रक्त में मानती है। डाक्टरों को चाहिए कि व्यक्तियों को स्वच्छ वायु, प्रकाश एवं प्राकृतिक नियमों के अनुकूल रखें। चीन में यदि किसी डाक्टर के अन्तर्गत कोई संरक्षक बीमार पड़ता है तो उसकी तनखवाह तब तक रुकी रहती है। जब तक रोगी स्वस्थ न हो जाय ; इस प्रकार चिकित्सक रोगी की देखरेख भली भाँति करते हैं और उन्हें प्राकृतिक नियमों के अनुकूल रखते हैं। (विल्सन)

प्रो. पार्कर का कथन है यदि हम बनावटी साधनों की अपेक्षा प्रकृति में अधिक विश्वास रक्खें तो मृत्यु संख्या घट जाय।

रोग की अपेक्षा औषधियों से अधिक आदमी मरते हैं।
(ब्लुमर)

जल की बनावट

वातावरण की वायु में ओक्सजन तथा नत्रजन का मिश्रण है। जल ऐसे ही रासायनिक योग का परिणाम है अर्थात् ओसजन एवं हाइड्रोजन के मेल से जल की उत्पत्ति है। यदि एक भाग ओक्सजन एवं दो भाग हाइड्रोजन मिलाया जाय तो इसे 'आक्सी हाइड्रोजन गैस' कहेंगे। यदि इन्हीं गैसों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रण पर हिपटिट लैम्प द्वारा लपटें डाली जायँ तो रासायनिक क्रिया द्वारा दोनों मिलकर पानी का रूप देंगी। [न्युमैन]

शुद्ध जल

इस प्रकार शुद्ध जल का फार्मूला हुआ H 2० [H=1, O=16] प्राकृतिक जल में एक भाग हाइड्रोजन एवं आठ-भाग ओक्सजन होता है। जल में सामान्य रूप से चूना, मैग्नेशिया, लोहा, सोडियम क्लोराइड, कार्बोनिक एसिड, रेत, एवं वातावरण की वायु मिश्रित है। [वेल]

जल में मिश्रित धातु में जैसे चूना गल प्रदाह, गुर्दा प्रदाह का कारण, मैग्नेशिया दस्त का कारण, लोहा यकृत की बीमारी, अपच आदि का कारण बनता है। जब कि वनस्पति और पशु द्वारा प्राप्त जलीय अंश मलेरिया, टाइफाइड, हैजा, दस्त तथा पेचिश का कारण बनता है। ऐसा अशुद्ध जल जिह्वा के लिए बुरे स्वाद, अरुचिकर एवं पेट के लिए हानिकर होता है।

प्लेटन का कहना है कि जिस जल में वानस्पतिक एवं पशु-अंश का मिश्रण होता है वह सदा स्वास्थ्य के लिए घातक है। इस बात का पता लगाने का नियम है कि जल को शीशी में कुछ दिनों के लिए रख दिया जाय तो यदि उपर्युक्त चीजें होंगी तो तल में जमजायेंगी या सूंघने पर जल से दुर्गंध आयेगी।

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

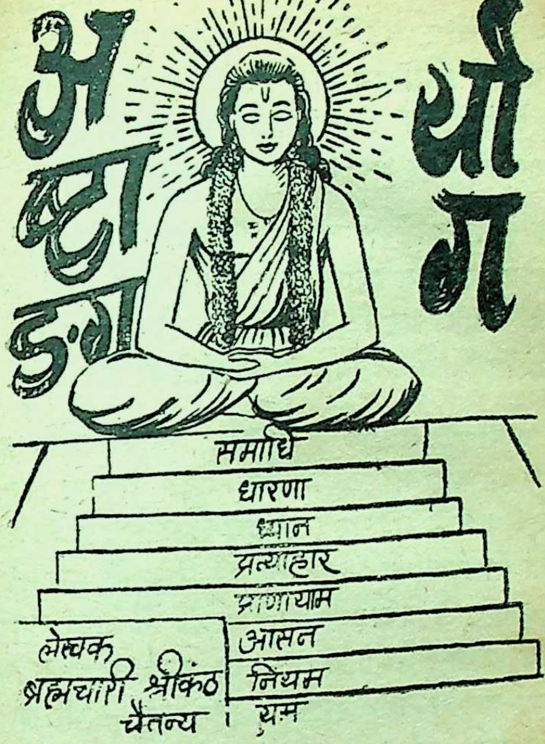

योग शब्द 'युज समाधौ' धातु से बना है, इसलिए योग का अर्थ समाधि है। व्यास-भाष्य में भी 'योगः समाधिः' समाधि अर्थ ही लिया है। वास्तव में राज योग ही एक ऐसा प्रशस्त राज मार्ग है जिस मार्ग से चलकर साधक अन्तिम लक्ष्य तक पहुंच सकता है एवं आत्म दर्शन करके पूर्णत्व प्राप्त हो सकता है। उक्त राज योग के आठ अंग हैं यथा— 'यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि' ॥२-२९॥ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारणा, ध्यान और समाधि—ये योग के आठ अंग हैं। योग का प्रथम अंग है यम, यह पांच प्रकार के हैं—'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः' ॥ योग २-३० ॥ अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—ये पांच यम हैं।

(१) अहिंसा-अहिंसा यह है-'अहिंसासर्वथासर्वदासर्वभूतानामनभिद्रोहः ॥ योग व्यास भाष्यम् ॥ सर्वदा सब ओर से प्राणी मात्र के प्रति मन से, वाणी से और ताड़नादि हस्त कर्म से सर्वथा हिंसा का त्याग देना अहिंसा है।

(२) सत्य—सत्य का अभिप्राय 'सत्यंयथार्थेवाङ्मनसे यथा दृष्टं यथा अनुमितं तथा वाङ्मनश्च' यथार्थ कथन का नाम सत्य है। जैसी भी वस्तु इन्द्रिय से साक्षात् की हो, मन से अनुमान या विद्या से जानी गई हो, ऐसा ही मन एवं वाणी का होना अर्थात् जै । मन में ऐसा वाणी में, जैसा वाणी में वैसा मन में, अर्थात् जैसा कहना ऐसे मानना, जैसा मानना वैसा करना-कहना भी चाहिए। इस मन वाणी के द्वारा यथार्थ मनोभाव को प्रकट कर देना सत्य है।

(३) अस्तेय—'स्तेयमशास्त्रपूर्वकं द्रव्याणां परतः स्वीकरणं तत्प्रतिषेधः पुनरस्पृहारूपमस्तेयम्' ॥ योग. व्यास भाष्यम् ॥ अशास्त्र विधि अर्थात् शास्त्र विरुद्ध उपाय से दूसरों के द्रव्यों को ग्रहण करना स्तेय (चोरी) है ऐसा न करना अस्तेय है।

(४) ब्रह्मचर्य—वीर्य शक्ति की रक्षा करना ब्रह्मचर्य है। यथा-'ब्रह्मचर्यमुपस्थसंयमः ॥योग. भोज वृत्ति ॥ उपस्थेन्द्रिय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संयम करना अर्थात् इन्द्रिय विकार कामोद्दीपनादि का प्रशमन-शांत करना और कामिनी के विषय स्मरण, गुह्य भाषण, उनसे क्रीड़ा करना आदि आठ प्रकार के मैथुनों का त्याग देना ब्रह्मचर्य है।

(५) अपरिग्रह—जीवन पर्यन्त वित्तों के संग्रह में लगे रहना, उनकी रक्षा करना आदि से उपरत हो कर उसमें क्षय, विनाश, संग, हिंसादि दोष देख कर जीवन निर्वाह के अतिरिक्त मुमुक्षु मात्र को किसी भी पदार्थ की आशा न रखना अपरिग्रह है।

नियम

नियम भी पांच हैं, यथा—'शौचसन्तोषतपस्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानियमाः ॥ योग. १-३२ ॥ शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान, ये पांच नियम हैं।

(१) शौच-शौच दो प्रकार का है, बाह्य और आभ्यान्तर। नेती, धोती, बस्ती आदि योगिक क्रियाओं के द्वारा शरीर को शोधन करना बाह्य शौच है और काम, क्रोध, लोभ, मदादि मानसिक विकारों को मैत्री करुणादि शुद्ध भावनाओं से दूर करना आभ्यान्तर शौच है।

(२) सन्तोष—जिस स्थिति में हो, जिस अवस्था में हो, कर्तव्य कर्मों को करते हुए प्रारब्ध वशात् जो भी कुछ वित्त लब्ध होवे उसी में सन्तोष रहना, मनमें किसी भी प्रकार विकलता उत्पन्न न होने देना और सर्वदा प्रसन्न चित्त बने रहना सन्तोष है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) तप—'तपोद्वन्द्वसहनम्' तात्पर्य यह है कि लक्ष्य वस्तु प्राप्ति में जो प्रतिबन्धक रूप भूख प्यास सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों को सहन करते हुए दृढ़ता पूर्वक साधना में डटे रहना तप है।

(४) स्वाध्याय—वेद, उपनिषद, दर्शन, पुराण एवं स्मृत्यादि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करना और 'ॐ' कार का या इष्ट मन्त्र अथवा गायत्री आदि मन्त्रों का अनुष्ठान पूर्वक जप करना आदि सब स्वाध्याय के अन्तर्गत है।

(५) ईश्वर प्रणिधान—ईश्वर के प्रति भक्ति विशेष को ईश्वर प्रणिधान कहते हैं। आध्यात्मोन्नति के लिये ईश्वरोपासना अवश्य करणीय है।

आसन

आसन भी ध्यानासन और स्वास्थ्यासन के भेद से दो प्रकार का है। स्वस्तिक, पद्म, सिद्ध एवं सुखादि कतिपय आसन ही ध्यानासन हैं, तदतिरिक्त जितने भी आसन हैं सब स्वास्थ्यासन के अन्तर्गत है। ध्यान समाधि अभ्यास के लिये स्वस्तिकादि आसन ही अनुकूल हैं, क्योंकि योग दर्शन में भी कहा है—'स्थिरसुखमासनम्' ॥ योग. २-४६ ॥ हिलना डुलना आदि से रहित स्थिरता पूर्वक एकासन में सुख से बहुत समय तक बैठना आसन है। आचार्यपाद जी ने भी कहा है—सुखेनैवभवेद्यस्मिन्नजस्रंब्रह्मचिन्तनम्। आसनं तद्विजानीयान्नेतरत्सुखनाशनम्' ॥ शंकराचार्य ॥ जिस आसन पर बैठ कर सुख पूर्वक निरन्तर ब्रह्माभ्यास [ब्रह्मचिन्तन]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सके उसे ही आसन समझना चाहिए, और जो सुख नाशक शरीर में पीड़ा उत्पादक है वह आसन नहीं है। ध्यानाभ्यासियों के लिये ३-४ घण्टे तक आसन पर बैठने का अभ्यास बना लेना चाहिए, और तभी ध्यानादि में प्रगति होती है अन्यथा नहीं। आसन समय बढ़ाने का उपाय योग शास्त्र में इस रूप बतलाया है—'प्रयत्नशैथिल्यानन्तसमापत्तिभ्याम्' ॥ योग. २-४७ ॥ शारीरिक प्रयत्न के अभाव से और अनन्त आकाश में अंग २ की समापत्ति-एकता रूप में मिला देने से बनता है। योगाभ्यास में विशेष रूप से बाह्य और आन्तरिक अंगों की चेष्टा निवृत्ति सर्वथा अपेक्षित है। व्यास भाष्य के अनुसार 'प्रयत्नोपरमात्' अंग प्रत्यंग का हिलना डुलना आदि प्रयत्न शैथिल्य करके निश्चेष्ट हो कर बैठना और मानस वृत्ति को अनन्त्य अर्थात् आकाशादि में रहने वाली अनन्तता में एक भाव अर्थात् न प्रतीत होने जैसा बना देने से आसन जय होता है।

आसन अभ्यास के अनन्तर प्राणायाम का भी अभ्यास करना अनिवार्य है। बाहर की वायु को नासा पुटों द्वारा अन्दर प्रवेश करना श्वास और कोष्ठ स्थित प्राणवायु को नासिका रन्ध्रों द्वारा बाहर निकालना प्रश्वास कहलाता है। जैसे कहा है—'तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ॥ योग. २-४९ ॥ श्वास प्रश्वास की गतियों को रेचक, पूरक और कुंभक द्वारा बाह्याभ्यन्तर दोनों ओर रोकना प्राणायाम है। प्राणायाम करने से पहले नाड़ी शोधन करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की परमावश्यकता है, क्योंकि नाड़ी शोधन किये बिना प्राणायाम ठीक-ठीक संपादन नहीं हो पाता। इसीलिये हठ-योगाचार्यों का अभिमत है कि—'आदौस्थानं तथा कालं मिताऽहारं ततः परम्। नाडीशुद्धिततः पश्चात्प्राणायामं च साधयेत्' ॥ हठ. संहिता ॥ प्राणायाम करने के पूर्व साधक को चार बातों पर विशेष ध्यान रखना अत्यावश्यक है। पहिली बात तो निर्विघ्न एकान्त अनुकूल स्थान होना आवश्यक है, दूसरी बात नित्य नियमित निर्दिष्ट समय पर प्राणायाम का अभ्यास करना और तीसरी बात मिताहार का अभ्यास अर्थात् हल्का आहार करना, चौथी बात नाड़ी शोधन करना अर्थात् प्राणायाम से पूर्व नाड़ी शोधन करना चाहिये।

प्रत्याहार

प्रत्याहार का तात्पर्य बहिर्मुखी इन्द्रियों को प्रयत्न पूर्वक अन्तर्मुख करना प्रत्याहार है। जैसे योग शास्त्र में कहा है—'स्वविषयसम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः' ॥ योग. २-५४ ॥ इंद्रियों को अपने-अपने विषयों से हटा कर या स्वयम् ही हट जाने पर चित्त स्वरूप के अनुसार हो जाना या इन्द्रिय शक्तियों का मन में विश्राम पा लेना प्रत्याहार है।

धारणा

चित्त को किसी देश विशेष पर स्थिर करना—बांध देना धारणा है। योग दर्शन में कहा है—'देशबन्धश्चित्तस्यधारणा'। योग. ३-१। किसी भी लक्ष्य वस्तु में चित्त को एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[प्रव]ाह से प्रवाहित करना धारणा है। टीकाकारों ने भी [क]हा है—

'देशे नाभिचक्रनासाग्रादौ चित्तस्यबन्धो विषयान्तर परि-[हा]रेणयत् स्थिरीकरणं' ॥ योग. भोजवृत्ति ॥ विषयान्तर चित्त [क]ो प्रयत्न पूर्वक प्रत्याहृत करके देश विदेश विशेष—नाभिचक्र [आ]ज्ञाचक्र, हृदय कमल, नासिका का अग्रभाग, मूर्धादेश [अ]थवा ब्रह्मरन्ध्र आदि स्थानों पर स्थिर करना धारणा है। [इ]सके अतिरिक्त पार्थिव धारणा, जलीय धारणा, आग्नेय [धा]रणा, वायवीय धारणा एवं शाब्दिक धारणा आदि अनेक [प्र]कार हैं।

ध्यान

धारणा की परिपक्व अवस्था आने पर यदा कदा स्वतः [ह]ी ध्यान की अवस्था आ जाया करती है। जब साधक को [ल]क्षित विषय के अतिरिक्त देश, काल एवं अपने अस्तित्व [क]ी भी विस्मृति होने लगे तब उसे ध्यान का वास्तविक [स्]वरूप कहा जाता है। जैसे—'तत्रप्रत्ययैकतानताध्यानम्' ॥ [य]ोग. ३–२॥ लक्षित वस्तु में स्थिर किया हुआ मन क्षण मात्र [क]े लिये भी स्थान भ्रष्ट न होकर तैलधारावत् एक प्रत्यय की [प्र]वाहना अर्थात् उस धारावाहिकता को ध्यान कहा गया है। [ध्]यान दो प्रकार का है, मूर्त और अमूर्त, अर्थात् सगुण और निर्गुण ध्यान। स्थूल वस्तु आलम्बन युक्त ध्यान को मूर्त या सगुण ध्यान, और सूक्ष्म वस्तु आलम्बन युक्त ध्यान को अमूर्त निर्गुण ध्यान कहा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाधि

योग शास्त्र के कथनानुसार मुख्यतः समाधि दो प्रकार की है सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात। परन्तु स्थिति एवं अवस्था के तारतम्य भेद से सम्प्रज्ञात समाधि के पुनः चार अवान्तर भेद किए गए हैं,

यथा–'वितर्कविचारानन्दास्मितानुगमात्सम्प्रज्ञातः'॥ योग. १-१७॥ वितर्क, विचारा, आनन्द, और अस्मितानुगत-ये चार सम्प्रज्ञात समाधि के भेद हैं। इन का क्रम पूर्वक वर्णन निम्न प्रकार है।

(१) वितर्कानुगत—जिस भावना के द्वारा ग्राह्य रूप किसी भी स्थूल विषय, जैसे विराट महाभूत, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र अथवा अस्मदादि स्थूल शरीर विषयक किसी देश विशेष पर ध्यान दृष्टि को केन्द्रित करके संशय विपर्यय रहित उस पदार्थ के यथार्थ स्वरूप को ज्ञात होना-विस्पष्ट साक्षात्कार कर लेना वितर्कानुगतसम्प्रज्ञात समाधि है। यह वितर्कानुगत समाधि भी सवितर्क और निर्वितर्क भेद से दो प्रकार की है।

यथा–'तत्रशब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णासवितर्का समापत्तिः'॥ योग. १-४२॥

सवितर्क का अभिप्राय जिस में शब्द, अर्थ और ज्ञान, इन तीनों समाधि काल में भिन्न-भिन्न प्रतीति हो, वह सवितर्क समापत्ति है। जैसे 'गौ' एक पशुविशेष शब्द है, गौ एक अर्थ भी है और 'गौ'-यह एक ज्ञान भी है। इन तीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द अर्थ और ज्ञान का परस्पर जो तादात्म्य अर्थात् अभेद सम्बन्ध है, उसको विषय गत करने वाले विकल्पों अर्थात् भेदों से संकीर्ण या विकल्पों से मिली हुई जो समापत्ति है वही सवितर्क समापत्ति है। निर्वितर्क यह है-'स्मृतिपरिशुद्धौ-स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का' ॥ योग. १-४३॥ स्मृति के परिशुद्ध हो जाने पर शब्द, अर्थ और ज्ञान से शून्य अर्थ मात्र भासने वाली साक्षात्कार निर्वितर्क समापत्ति है।

(२) विचारानुगत-वितर्क समाधि द्वारा जब स्थूल पदार्थों का साक्षात्कार हो जाता है जब उस योगीकी दृष्टि सूक्ष्मता की ओर बढ़ती है। तब जिस भावना के द्वारा ब्रह्मरन्ध्र गत सत्रह तत्त्वों से बना सूक्ष्म शरीर अर्थात् ग्रहण रूप दसों इन्द्रियां, मनो मण्डल, बौद्धिक मण्डल अथवा समष्टि तन्मात्रिक मण्डल अर्थात सूक्ष्म महाभूतों का साक्षात्कार करना विचारानुगत सम्प्रज्ञात समाधि है। विचारानुगत समाधि भी दो प्रकार की है सविचार और निर्विचारा। यथा-'एतयैवसविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्याख्याता' ॥ योग. १-४४॥ पूर्व कहे हुए विकल्पित स्थूलाकार युक्त सवितर्क और अविकल्पित स्थूल विषय वाली निर्वितर्क समापत्ति के कथनानुसार ही इस सूक्ष्म विषय वाली विकल्पित सविचारा और अविकल्पित निर्विचारा समापत्ति की भी पूर्ववत् व्याख्या की हुई समझनी चाहिये।

(३) आनन्दानुगत—विचारानुगत के निरन्तर अभ्यास से जब चित्त की एकाग्रता इतनी बढ़ जाय कि शक्ति मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इन्द्रियों तथा तन्मात्राओं के कारण रूप अहंकार को विषय करता हुआ उसे साक्षात् किये जाने से उसे आनन्दानुगत सम्प्रज्ञात समाधि कहेंगे।

(४) अस्मितानुगत–चेतन से प्रतिबिम्बित चित्त जिस में बीज रूप में अहंकार रहता है, अर्थात् चित्त और बीज रूप में अहंकार एवं अहंकारोपाधित् पुरुष (चेतनात्मा) जहाँ से चित्त और पुरुष में अभिन्नता आरोप होती है उसका नाम अस्मिता अहंकार का कारण है। प्रयत्न पूर्वक जब चित्त की एकाग्रता अधिक बढ़ जाय तब अस्मिता अर्थात् 'एकात्मिका संविद् अस्मिता' में धारण करने से या अस्मिता आलम्बन समाधि के द्वारा उस का यथार्थ स्वरूप साक्षात्कार किया जाने से उसे अस्मितानुगत सम्प्रज्ञात समाधि कहेंगे। वही सबीज समाधि है।

असम्प्रज्ञात समाधि

'विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः' ॥ योग. १-१८॥ सर्ववृत्ति निरोध रूप जो कारण अर्थात् परम वैराग्य है उसके पुनः पुनः अनुष्ठान करने पर जो उसके (निरोधके) संस्कार शेष रह जाते हैं वही असम्प्रज्ञात समाधि है। पूर्वोक्त सम्प्रज्ञात समाधि की पराकाष्ठा तो विवेक ख्याति है जिस से चित्त रूप दर्पण पर आत्मा का साक्षात्कार होता है। तात्पर्य यह है कि दृग शक्ति और दर्शन शक्ति के भेद साक्षात्कार के साथ साथ उत्पन्न होने वाले पुरुष प्रकृति विषयक विवेक ज्ञान को विवेकख्याति कहते हैं, और उस से भी विरक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना परम वैराग्य है। उस काल 'प्रसंख्यानेऽप्यकुसीदस्य विवेकख्यातेर्धर्ममेघ समाधिः' उपस्थित होती है। और जब वह शोक राहित्य रूपी अवान्तर फल देने को उद्यत होती है तब वह प्रसंख्यान कहलाती है। उसके पश्चात् द्रष्टा पुरुष की अपने स्वरूप शुद्ध चेतन परमात्म स्वरूप में अवस्थिति होना स्वरूप स्थिति कहलाती है। यही निर्बीज समाधि है एवं पुरुष की केवली अवस्था या सर्वथा अकेला पन है और वही परम पुरुषार्थ है।

अपने घर पर ही सबसे नये मौडल की कार पर
एक सप्ताह में मोटर चलाना सीखें, ४२ वर्ष में
२५००० से अधिक प्रशिक्षित हुए,
सदा याद रखें

जंजीरा मोटर स्कूल

भिंडी बजार बम्बई ३ — शाखायें — फोन : ७३२१५

७, क्वीस रोड चर्नी रोड रेल्वेस्टेशन के सामने
फोन : २८४१५

क्राफर्ड मार्केट, बम्बई ३.

ब्रोडवे सिनेमाके पास दादर मध्यरेल्वे बम्बई १४

महिलायें निपुण महिलाओं द्वारा
शिक्षित की जाती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशान्ति के भंवरमें

ले. आर. एस. शास्त्री

जिस भी किसी समय में भारतीय संस्कृति के नाम पर कोई प्रश्न आया या कोई ऐसा आक्रमण हुआ कि जिससे इस के उन्नत ध्वज का मूल लड़खड़ाया, उसी समय इस का उद्धार जब मानव की सामर्थ्य से बाहर हुआ तो भगवान् ने स्वयं इसकी रक्षा की।

वास्तव में भगवान् का धरती पर अवतरित होना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है कि धर्म ध्वजा खतरे में है। क्यों कि सृष्टि का मूल तो धर्म है। और धर्म का अधिपति ईश्वर है, जो कि धर्म में से कहीं व कभी भी प्रगट हो सकता है। परन्तु जब भी उसे यह दिखता है कि धर्म की मानव अवहेलना कर रहा है तो फिर वही अवहेलना उसकी शांति को भंग कर देती है। फिर ईश्वर धर्म की स्थापना के लिये आवश्यकता समझता है तो सृष्टि का विनाश भी कर देता है क्यों कि इस सृष्टि का निर्माण और विनाश प्रभु परमात्मा के लिये दोनों ही संकल्प माना है।

अब यदि कोई मनुष्य धर्ममय संसार में अधर्म की शरण लेता है अथवा यूं कहिये कि सृष्टि के किसी भी प्राणी को पीड़ा दुख या हानि पहुंचाता है, फिर उसके पश्चात् वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सुख का स्वप्न संजोता है तो यह विद्रोह उसका ईश्वर से है न कि मानव से, एवं मानव उसे दे ही क्या सकता है जो देने वाला है उससे तो वह धोखा कर रहा है फिर यह उसके जीवन में कैसे संभव होगा कि वह सुख की सांस ले सके ?

भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का अभिप्राय यही था कि उसका कर्त्तव्य ईश्वर के लिये होता था, इस देश की जनता धर्मभीरु थी, यहां के लोगों में जब तक यह धर्म भीरुता की भावना रही तब इस राष्ट्र ने जीवन का सदुपयोग किया, परन्तु जब से यह धर्म भीरुता समाप्त हुई तब से मानव का अन्तर एकदम खाली हो गया उसने बाह्य साधनों द्वारा उस हीनता को ढकने की भरसक कोशिश की परन्तु समस्या बजाय सुलझने के और अधिक उलझती गई और अन्त में वह समय आ पहुंचा कि मानव समस्त साधनों को अपनाने पर भी सुख की प्राप्ति नहीं कर सका, बेचैन मानव जीवन को मृत समझ उस आत्म तत्व की अमरता से हाथ धो बैठा पर फिर भी उसकी समझ में वह बात नहीं आ सकी कि आखिर गलती कहां से आरंभ हुई है ?

वास्तविक गलती यही हो गई कि मानव ईश्वर को भूल गया और ईश्वर के भूलते ही मन में कोई आकर्षण नहीं रह जाता है और नांही शांति रह जाती है फिर अशान्त आदमी जो भी करता है वही उसके लिये दुख का साधन बन जाता है क्यों कि सुख का साधन ईश्वर एवं दुख का साधन संसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविक सत्य है। ईश्वर की स्मृति धर्म में मनुष्य को लगाती है और संसार की स्मृति पाप में। तथा धर्म का परिणाम सुख और पाप का दुख है। बस यही आज की संस्कृति में घुन घुस चुका है जिसके परिणाम में मानव समझ नहीं रहा है कि आखिर यह दुख कहां से व किस प्रकार आ गया है?

आज सामाजिक व्यवस्था में धन तथा ऐश्वर्य की ऐसी पिपासा बढ़ गई है कि मानव ने मानव को ही अपना भोज्य बना डाला है, उस भोज्य में जैसे भी उसकी कुत्सित बुद्धि उसे कुप्रेरणा दे रही है उसी के इशारे पर वह नाचता चला जा रहा है, कुछ समय के लिए उसे यदि यह लक्ष्मी मिल भी जाती है तो फिर वही मानव जिन निरीह मानवों को लेकर धनी बनता है। उनसे घृणा करना शुरु कर देता है। श्रद्धा के स्थान पर ईर्ष्या तथा प्रेम के स्थान पर घृणा बढ़ जाती है, और मध्यस्थ प्राणी इन दोनों के बीच अभिमान को लेकर ऐसा पिसता चला जा रहा है, कि उसे यही प्राप्य ऐश्वर्य अशांतिके गर्तमें ढकेलनेके लिये साधन बन जाता है।

अब इस अज्ञान ने भारत पर अपना आधिपत्य तो जमा लिया जिसका परिणाम अशान्ति-कलह एवं अव्यवस्था प्रत्यक्ष है जो कि प्राणी के चिन्तन पर भी हावी है। आखिर अज्ञान-अधर्म तथा पाप से फिरा प्राणी सोच ही कहां सकता है कि वास्तविक गलती क्या है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज और अभी यदि मनुष्य इस बात पर विचार करना प्रारंभ करे कि धर्म के बिना जीवन कभी सम्पन्नता को प्राप्त नहीं कर सकता है तो ही उसके जीवन में शांति संभव है अन्यथा सांसारिक साधनों को अपना कर तो मानव ने देख लिया और देख रहा है अथवा आगे भी देखने को उसे मिलेगा कि यही वे साधन हैं जिन्होंने मानव को धर्म से विमुख किया—ईश्वर के फल से मुक्त किया, स्वच्छन्दता को प्रश्रय दिया और अन्तिम साधन अशांति के समुद्र में जन्म-जन्मान्तर के लिये फैंक दिया। जिस से कोई भी साधन उसका उद्धार कर सकेगा यह सर्वथा, तीनों कालों में असंभव है, केवल धर्मभीरुता ही उसकी रक्षा कर सकती है। उसके बिना अपनाए मानव का कल्याण न कभी हुआ न हो ही रहा है और न होने को आशा है।

इस लिए जिसकी छत्र छाया में हमारा पलपल का जीवन पल रहा है उसके भय से यदि हम मानवता को अपना कर धर्म की शरण में कार्य करते हैं तब तो हम शांत हैं ही, पर यदि इसी में हम से बेईमानी हो जाती है तो समझ लो फिर इसका उपाय अशांति भी नहीं बल्कि इसका उपाय एक दम विनाश को आमन्त्रित करने पर मानव कमर कसके तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मोपदेश

सर्व धर्म–समाधान

मैं जब कुछ वर्ष पहले भारतवर्ष में था, तब मेरे (राम के) पास एक अमेरिकन पादरी जो एक स्कूल में प्रोफेसर था,—की लिखी हुई पुस्तक आई। इसका नाम था 'मृत्यु के पश्चात्'। इस पुस्तक में एक सुन्दर रूपक द्वारा उसने बताया कि यह लोक एक स्टेशन के समान है और परलोक दूसरे स्टेशन के समान। जो लोग परलोग में समुद्र के भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस पार—पहुंचना चाहते हैं, उन्हें टिकट खरीदना पड़ता है। जिन लोगोंके पास सच्चा टिकट नहीं होता, उन्हें भरे समुद्र में फेंक दिया जाता है और जिनके पास टिकट होता है, उन्हें उनके लक्ष्य स्थानपर पहुंचाया जाता है। यह टिकट प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी आदि में विभक्त हैं। इनमें कुछ बनावटी टिकट भी होते हैं और उनका रंग-श्वेत काला, पीला और नीला होता हैं, परन्तु जो सच्चे टिकट होते हैं और जिनके खरीदने से निर्धारित स्थानपर पहुंचने में बाधा नहीं होती, उनका रंग लाल होता है, क्यों कि वह ईसा के रक्त से रंजित होता है। जिसके पास लाल रंग का टिकट होता है, वही मात्र सफल होते हैं, किसी अन्य को यह सफलता कदापि नहीं। श्वेत और अन्य रंग के टिकट अन्य धर्म के अनुयायियों के पास होता है और लाल टिकट मात्र ईसाइयों के पास ही होता है। पुस्तक का विषय यही था और उसका वर्णन बहुत अच्छी तरह से किया गया है। उस पादरी ने अपनी सारी विद्वत्ता इस पुस्तक में भर दी है।

मात्र ईसाई धर्म में ही नहीं, अपितु सभी धर्मों में यह विश्वास विद्यमान है। मुसलमानों का कहना है कि हजरत मोहम्मद सबका हिसाब चुकाते हैं अथवा टिकट देखते हैं अथवा यह कहना चाहिए कि बड़ा स्टेशन मास्टर वही हैं और जिन लोगों के पास मोहम्मद के निशान का टिकट नहीं होता, वह नरक में जाता है। अन्य धर्म भी यही बात कहते है। जिन लोगों की मृत्यु हो जाती है—भले ही मृत्यु अमे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिका में हुई हो अथवा युरोप में, अफ्रीका में हुई हो अथवा एशिया में या आस्ट्रेलिया में, परन्तु उनका न्याय एक ही व्यक्ति करेगा और वह होगा ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, जोरोस्टर कृष्ण अथवा ऐसा ही कोई एक ही मान्य व्यक्ति न्यायाधीश बनता है। सभी धर्मों के बीच यही एक बड़े क्लेश का कारण है। सभी वादविवादों और मत भेदों का मूल यही है।

अत: आज यह बताया जायेगा कि इस सम्बन्धमें वेदान्त का मत क्या है? वेदान्त इन सभी धर्मों का उचित समाधान कर देता है और कहता है कि अन्य धर्म की असत्यता प्रमाणित किये बिना प्रत्येक धर्म की मान्यता सत्य हो सकती है। आपको अपनी सत्यता सिद्ध करने के लिये यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अन्य लोग सच्चे पथपर नहीं। विषय बहुत बड़ा और थोड़े ही समय में इसका निरसन करना है, अतः मात्र मूलभूत बातें ही बताऊंगा।

जगत् का विकास-क्रम बहुत ही मनोहर ढंग से निरन्तर चलता रहता है। और यह क्रम एक विशेष लकीर पर ही चला जा रहा है। प्रत्येक का उत्थान पतन एक नियम विशेष के साथ बंधा हुआ है। दिन और रात एक ही नियम के अन्तर्गत आते-जाते रहते हैं। जब हम चलते हैं, तब पहले एक पैर उठाते हैं और फिर दूसरा। ऋतुएं भी क्रमानुसार एकके बाद दूसरी आती रहती है और कुछ समय के पश्चात् यथा समय वही ऋतु पुनः आ उपस्थित होती है। नित्य प्रभातकाल में जाग जाते हैं और पुनः रात आने पर निद्राधीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। वेदान्त का कथन है कि जन्म और मृत्यु निश्चित नियम के अनुसार एकके बाद एक होते रहते हैं। अखिल विश्व में अमुक देश और अमुक काल–इनमें से आगे बढ़ने की क्रिया एकदम स्थगित नहीं होती। काल कभी स्थगित होता है? कभी नहीं। वह कब शुरू हुआ, यह कौन जानता है? यह भी कौन जानता है कि आकाश कहां विरमित होता है? उसका अन्त ही नहीं। नदी के प्रवाह में कभी गतिभंग होता है? आप कहेंगे नहीं, कभी नहीं। नदी का प्रवाह कभी अवरुद्ध नहीं होता। जो नदियां सागर में जाकर मिलती हैं, वे पुनः वाष्प में रूपान्तरित होकर उच्च आकाश में जा पहुंचती हैं और वर्षा के रूप में भूमिपर गिरती हैं नदी के रूप में वे पुनः प्रवाहित होकर समुद्र से जा मिलती हैं। इसी प्रकार एक मोमबत्ती लीजिये। वह जल जाती है, इससे हम कहते हैं कि उसका नाश हो गया। यह भी गलत है। यह मात्र रूपान्तरण होता है। इसका कुछ अंश वनस्पतिरूप में पुनः उत्पन्न होता है। वस्तुतः इस विश्व में कुछ भी नष्ट नहीं होता, निरन्तर एक ही रूप में घूमते रहते हैं। जो मानव जन्म–धारण करता है, उसकी मृत्यु भी होती है, किन्तु मृत्यु की यह स्थिति सदाकाल नहीं रहती, यह कहने का किसी को अधिकार नहीं, यह कहना प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है। मृत्यु के पश्चात् जन्म नहीं यह कहना सर्वथा मिथ्या है। मृत्यु के पश्चात् यदि मानव को सदा के लिये बहिष्कृत कर दिया जाये, तो ईश्वर को बड़ा ही घातकी माना जायेगा—प्रतिशोधक माना जायेगा। ७० वर्ष का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन प्राप्त एक मानव दिवंगत हो जाता है। बेचारे को कोई ऐसे संयोग न मिले होंगे, कि शिक्षा प्राप्त कर वह अपने जीवन का विकास साधन कर सकता। उसने निर्धन स्थिति को पार किया था और उन्नति क्रम की सीढ़ियां चढ़ने का कोई साधन न मिला। ईसा के रुधिर से रंगा हुआ लाल रंग का टिकट उसके पास न था। ऐसी दशा में उसे क्या सदा के लिये नरक में ही डाल रखा गया! यदि ईश्वर का न्याय ऐसा ही हो तो उसे अत्यन्त क्रूर कहा जायेगा। ऐसा कहने या अधिकार किसी को भी नहीं। वेदान्त के मतानुसार मृत्यु के पश्चात् मानव एक ही स्थिति में सदैव नहीं रहता। प्रत्येक मृत्यु के पश्चात् पुनः जीवन है और प्रत्येक जीवन के के पश्चात् मृत्यु। वस्तुतः मृत्यु एक नाम मात्र ही है। मृत्यु का परिणाम है रूपान्तर, स्थिति-परिवर्तन। मृत्यु में भयावह या घृणा स्पद-कोई भी स्थिति नहीं। जगत् में मृत्यु का इतना बड़ा भय और आतंक माना जाता है, वह अज्ञान मूलक है।

जब तक जीते हैं—७०-८० वर्ष तक इस शरीर में रहते हैं-तब तक जाग्रत् अवस्था का उपभोग करते हैं और मृत्यु के पश्चात् वेदान्त के अनुसार गहरी निद्रा में डूब जाते हैं। जैसे जीवन में २४ घण्टे में ३-४ घण्टे निद्रा लेकर जाग जाते हैं, उसी तरह मृत्यु रूपी विश्राम लेकर जगत् में पुनः जन्म लेते हैं। वेदान्त की दृष्टि से पुनर्जन्म का अर्थ है पुनर्जागरण, वेदान्त के मतानुसार मृत्यु के पश्चात् मनुष्य तुरन्त दूसरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म नहीं लेता। वृक्ष से गिरते ही बीज तत्काल अंकुरित नहीं हो सकता, बल्कि कुछ समय लेता है। इसी प्रकार एक घर छोड़ कर मनुष्य को दूसरे घर में जाने में भी कुछ समय लग जायेगा, अतः मृत्यु के पश्चात् तुरन्त ही मानव जन्म धारण नहीं करता। मृत्यु के पश्चात् प्रगाढ़ निद्रा-जैसी एक बिचली स्थिति में मनुष्य कुछ समय तक रहता है। तो मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच की स्थिति कैसी होगी? यह स्थिति प्रत्येक प्रकार से निद्रासे मिलती-जुलती है। जाग्रदवस्था में जो-जो कार्य और विचार हम चित्त लगाकर करते हैं, उन्हीं विचारों और कार्यों का स्वप्न हमें निद्रा में आता है। यह एक नियम ही है। कुछ अपवाद भी होते हैं। परन्तु सामान्य रूप से निद्रा में वही सब दृष्टिगोचर होता है, जो जाग्रदवस्था में हम देखते हैं। जो कालेज में अध्ययन करते हैं, वे मेरी यह बात तुरन्त समझ जायेंगे, क्यों कि जब परीक्षा का दिन निकट आ जाता है, तब विद्यार्थी बहुत श्रम करते हैं, निद्रा में भी उन्हें परीक्षा का ही विचार आता है। परीक्षा हो जाने के पश्चात् वे परिणाम की उत्कण्ठा पूर्वक प्रतीक्षा करते हैं, उस दशा में उन्हें स्वप्न में भी परिणाम ही दिखाई देता है। जो विशेष वस्तु या विषय मानव को अधिक रुचिकर होता है, उसी को वह स्वप्न में देखता है।

मैं जब स्कूल में पढ़ता था, तब मेरे साथ एक और विद्यार्थी था। यह सहपाठी बड़ा खिलाड़ी था। अपना सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय वह नाच-गान, खेल-कूद और इधर उधर घूमने-फिरने में बिता देता था। एक दिन एक व्यक्ति ने उससे पूछा 'तुम दिन का कितना अंश पढ़ने में लगाते हो।' उस विद्यार्थी ने हंसते हुये कहा—'१८ घण्टे।' उक्त व्यक्ति ने कहा—'क्या बकता है? पांच घण्टे तो मैं तुम्हें खेलते देखता हूं और ८-९ घण्टे नींद में निकल जाते होंगे, इस प्रकार १०-१२ घण्टे शेष रहे। फिर भी तुम कहते हो कि मैं १८ घण्टे पढ़ता हूं।

विद्यार्थी ने कहा—आपने गणित शास्त्र का अध्ययन नहीं किया। मैं साबित कर दूंगा कि मैं १८ घण्टे पढ़ता हूं।

उस व्यक्ति ने कहा—अच्छा बताओ किस तरह?

विद्यार्थी ने कहा—मैं तथा 'राम' (स्वामी रामतीर्थ) एक ही कमरे में रहते हैं। वस्तुतः मैं १२ घण्टे पढ़ता हूं और 'राम' २४ घण्टे इस प्रकार १२+२४=३६ घण्टे हुए। हम दोनों एक ही कमरे में रहते हैं, इसलिये औसत रूप से १८ घण्टे मेरे हिस्से में आते हैं।

उस व्यक्ति ने कहा—मानलो कि तुम १२ घण्टे पढ़ते हो, परन्तु 'राम' २४ घण्टा पढ़ता है, यह मैं स्वीकार कर नहीं सकता। ऐसा हो ही कैसे सकता है? मैं जानता हूं 'राम' अनेक बिषयों के लिये तैयारी करता है, अति कठोर श्रम करता है। और अन्य कर्मों भी चौगुना समय देता है। फिर भी, प्रकृति के विरुद्ध २४ घण्टे तो वह पढ़ ही नहीं सकता।

विद्यार्थी ने कहा—जब 'राम' भोजन करने बैठता है, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी बेकार नहीं रहता, कुछ-न कुछ उसके पास रहता ही है। कोई पाठ अथवा कोई दृष्टान्त अथवा ऐसा ही कुछ वह करता ही होता है। नींद में होता है, तब भी किसी दृष्टान्त का विचार करते हुए सोता है और सदा मनपर लिये हुए विषय के स्वप्न देखता है इस प्रकार २४ घण्टे वह अध्ययन में ही लगा रहता है।

सहपाठी के इस कथन में कुछ सत्यांश अवश्य था। जो मनुष्य पूरे १८ घण्टे पढ़ता है, वह निद्रा में भी वही सब करता रहता है, जो जाग्रदवस्था में करता है। वेदान्त का कथन है कि ऐसा सम्भव ही नहीं। एक मनुष्य कहता है कि मैं ने स्वप्न में सिंह का मस्तक, ऊंट की पीठ, सर्प की पूंछ और मण्डूक (मेंढ़क) के पैर—इस प्रकार के अंगों से युक्त राक्षस देखा ऐसा प्राणी जगत् में तो है ही नहीं। वेदान्त का कथन है कि भाई ! तुमने मानव देखा है, सर्प देखा है, सिंह देखा है, ऊंट देखा है, और मेंढ़क भी देखा है, इससे इन सबको अपने स्वप्न में एकत्र करके एक नई विचित्र आकृति का निर्माण तुमने स्वयमेव किया है। इसलिये निद्रा में स्वप्न में जो कुछ देखते हो, वह जाग्रदवस्था में तुम देख चुके हो। जो मनुष्य रूस कभी नहीं गया, और रूस के सम्बन्ध में कभी कुछ सुना भी नहीं, वह कभी स्वप्न में यह नहीं देखता कि वह सेंट पीटर्सबर्ग में है।

यदि ऐसा है तो मृत्यु रूपी निद्रा में कैसी स्थिति की सम्भावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदान्त का कथन है कि मृत्यु के पश्चात् का समय—जैसी तुम्हारी मान्यता होगी, तदनुसार स्वर्ग या नरक में व्यतीत होगा। स्वर्ग-वैकुण्ठ, नरकादि क्या हैं! मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच की यह स्वप्नभूमि है। एक ईसाई बड़ा ही पवित्र धार्मिक जीवन व्यतीत करता है। प्रति रविवार को चर्च (देवस्थान) में जाता है। प्रातः सायं प्रार्थना करता है। भोजन के समय प्रभु के अनुग्रह की मांग करता है। हर समय ईसा का (+) अपनी छाती पर लगाये रहता है। खाते-पीते और हिलते-चलते वह ईसा का स्मरण करता रहता। इस मानव ने ७० या ९० वर्ष की आयु तक अपने सभी कार्य और विचार ईसा सम्बन्धी ही किये हैं। उसकी यही हार्दिक इच्छा रही कि मृत्यु के पश्चात् वह ईसा के सहवास में रहेगा। अतः वेदान्त के मतानुसार ऐसा पवित्र और धार्मिक भावापन्न ईसाई मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म से पहले की स्वप्नभूमि में अपने को निस्सन्देह ईसा के पास ही सर्वदेवों से घिरा हुआ बैठा पायेगा। ऐसा न होने का कोई भी कारण नहीं। वेदान्त का कथन है कि हे ईसाई धर्मियो! यदि आप पवित्र होंगे, सच्चे धर्मवान् होंगे, तो बाइबल में जो कुछ लिखा है, तदनुसार अवश्य अनुभव करेंगे, परन्तु इससे मुसलिमों या हिन्दुओं के धर्म को बुरा-भला न कहना। यदि एक मुसलमान स्वयं सच्चा धार्मिक होगा, अपना समग्र जीवन जन सेवा में लगाता होगा और नमाज पढ़ता होगा तो प्रकृति के नियमानुसार मृत्यु के पश्चात् मानव को वैसे ही स्वर्ग की उपलब्धि होगी, जिसके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जीवन भर उत्कण्ठित रहा। वेदान्त का कहना है कि प्रकृति में ऐसा दूसरा नियम नहीं, जो इस क्रिया को अवरुद्ध कर सके। स्वयं जैसी धारणा होगी, वैसा ही स्वर्ग उसे प्राप्त होगा।

इसलिये वेदान्त का कथन है कि हे मुसलमानो! तुम्हें यह कहने का कोई अधिकार नहीं कि मृत्यु के पश्चात् समस्त जगत् के लोगों की स्थिति मुहम्मद के आदेशानुसार ही होगी। ईसाई को उनके विश्वास-विचार के अनुसार चलने दो। युरोप, अमेरिका, ईस्टइण्डीज, जापान या चीन कहीं भी उनकी मृत्यु हुई हो, तो भी मुहम्मद साहब की दया का पात्र उन्हें न बनाना। यदि वे मुहम्मद में श्रद्धा रखते हों तो दूसरी बात है, किन्तु यदि ईसा को ही मानते हों तो तुम्हें इस प्रकार कहना उचित नहीं। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने धार्मिक विचार सच्चे अन्तःकरण से मानता होगा तो वह अपने समग्र जीवन में जैसी-जैसी इच्छाएं रखता है, वैसा ही मृत्यु के पश्चात् उसे उपलब्ध होगा। वस्तुतः स्वर्ग और नरक हमारे अपने ऊपर ही आधार रखते हैं। मृत्यु के पश्चात् अपना स्वर्ग या नरक हम स्वयं उत्पन्न करते हैं, परन्तु स्वर्ग या नरक दोनों स्वप्न ही हैं। जैसे स्वप्न में हमें सब कुछ सत्य ही भासित होता है, उसी तरह वहां भी सत्य का आभास मिलेगा, परन्तु वास्तव में वह कुछ है ही नहीं, मात्र स्वप्न ही है।

लोगों का कहना है कि हमारे शास्त्रों के अनुसार मृत्यु के पश्चात् हमें या तो अनन्त सुख की अनुभूति होगी या अनन्त दुःख की। किन्तु क्या ऐसा सम्भव है? वेदान्त के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतानुसार अनन्तता क्या है ? अनन्तता का अर्थ है इतना समय, जिसका माप किया जा न सके। परन्तु जाग्रदवस्था का समय स्वप्नावस्था के समय से भिन्न है। कभी ऐसी वस्तु एकाएक स्वप्न में दिखाई दे जाती है, जिसको ५ हजार वर्ष हो गये हैं। स्वप्न में हम पर्वत उत्पन्न हुआ देखते हैं और स्वप्नकालीन हिसाब के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है, मानो इस पर्वत को ५ हजार वर्ष हो गये हों। वेदान्त का कथन है कि स्वप्न में भी ऐसा प्रतीत होता है, मानो हमारा अस्तित्व अनन्तकाल से इस धरा-धाम पर विद्यमान् है, अतः यह सत्य है कि स्वप्नस्थिति में स्वर्ग में भी अनन्तकाल से है, परन्तु जाग्रदवस्था के स्तर के अनुसार यह बात असत्य ही है।

—क्रमशः

उन्नति के पथ पर निरंतर अग्रसर
आयुर्वेद और स्वस्थ-साहित्यकी प्रतिनिधि-पत्रिका

स्वास्थ्य सरिता

[श्री ज्ञानप्रकाश जैन–द्वारा सम्पादित]

प्रतिमास पढ़ें :

* स्वास्थ्य-सम्बन्धी बौद्धिक-लेख
* सामाजिक-पृष्ठभूमि पर लिखी मनोरंजक-कहानियां
* नवोदित-रचयिताओं की कवितायें
* पारिवारिक-गुत्थियोंको सुलझानेवाले स्थायी-स्तम्भ

और * नये साहित्य पर कृष्णमुनि प्रभाकर का निर्भीक विवेचन

एक प्रति पचास नये पैसे * वार्षिक-शुल्क केवल पाँच रुपये

नमूनांक मुफ्त नहीं भेजा जाता। अपना चन्दा आज ही भेजें।

स्वास्थ्य-सरिता प्रकाशन, कोटगेट, बीकानेर (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

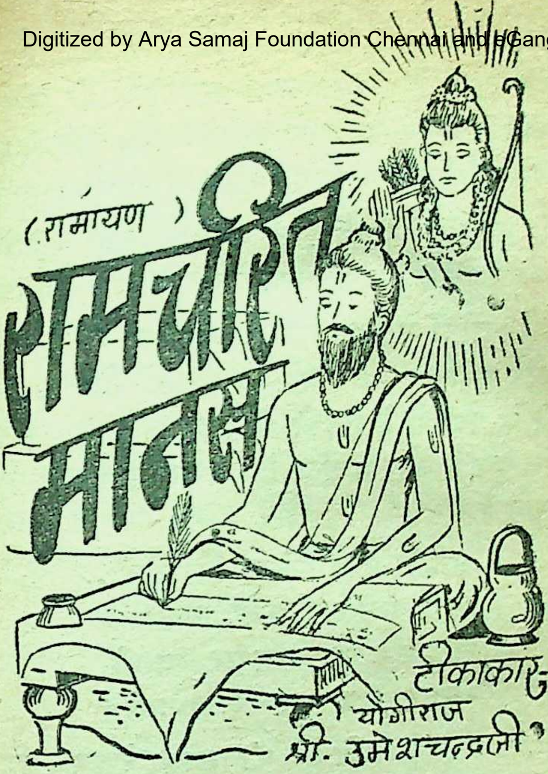

(मार्च अंकसे आगे)

तन बिनु परस, नयन बिनु देखा,
ग्रहै घ्राण बिनु वास अशेषा,
अस सब भांति अलौकिक करनी,
महिमा जासु जाय नहिं बरनी।

बिना शरीर के अर्थात् निराकार होकर भी जो सब का सतत स्पर्श करता रहता है और बिना नेत्रों के ही जो सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ देखता रहता है। बिना घ्राण-नाक के ही जो अशेष वासगन्ध को निरन्तर ग्रहण करता रहता है, जिसकी महिमा-महानता का वर्णन करना सम्भव नहीं।

जेहि इमि गावहिं वेद, बुध, जाहि धरहिं मुनिध्यान,
सोइ दशरथसुत भगतहित, कोशलपति भगवान्।

वेद और ज्ञानी महात्मा जिसके गुणगान में सतत मग्न रहते हैं और मुनिगण ध्यानावस्थित होकर जिसका साक्षात्कार करने के प्रयासों में मनको निरन्तर पिरोये रखते हैं, वही दशरथ पुत्र हैं और भक्तजनों के परम हितकारी कोशलपति भगवान् हैं।

काशी मरत जंतु अवलोकी,
जासु नाम बल करौं विशोकी,
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी,
रघुवर सब उर अन्तर्यामी।

पुण्यनगरी काशीमें प्राणियों की मृत्यु देखकर जिसके नाम के बलपर मैं उन्हें दुःखों से मुक्त कर देता हूँ अविनश्वर आनन्दधाम में पहुँचाता हूँ—वही चराचर स्वामी और मेरे प्रभु सर्वान्तर्यामी भगवान् राम हैं।

विवशहु जासु नाम नर कहहीं,
जन्म अनेक रचित अघ दहहीं,
सादर सुमिरन जे नर करहीं,
भववारिधि गोपद इव तरहीं।

विवश भाव से भी मानव जिसके नाम का स्मरण करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं तो अनेकशः जन्मों के पापताप दग्ध हो जाते हैं और जो लोग सादर-प्रेमपूर्वक जिसके नाम का स्मरण करते हैं वे इस भवसागर को गोपद की तरह पार कर जाते हैं।

राम सो परमातमा भवानी,
तहँ भ्रम मति अविहित तव बानी
अस संशय आनत उर माहीं,
ज्ञान-विराग सकल गुण जाहीं।

हे भवानी! वह राम प्रत्यक्ष परमात्माके अवतार हैं। वहां भ्रमकी स्थिति हो, यह तुम्हारा कथन मति अविहित-ज्ञानविरुद्ध है ऐसा संशय हृदय में उत्पन्न होते ही ज्ञान-वैराग्य आदि सभी महद् गुण साथ छोड़कर चले जाते हैं।

सुनि शिवके भ्रम-भंजन बचना,
मिट गइ सब कुतर्क की रचना,
भइ रघुपति-पद प्रीति प्रतीती,
दारुण असंभावना बीती।

भगवान् शिवके यह भ्रम भंजन (सन्देह-निवारण करने वाले) वचन सुनकर पार्वती जी की सारी कुतर्कमयी रचना-बौद्धिक विभ्रान्ति मिट गई। भगवान् राम के चरणों में प्रेम और विश्वास का उदय हुआ और दारुण असंभावना का अन्त हो गया।

पुनि-पुनि प्रभु-पद कमल गहि, जोरि पंकरुह पानि,
बोली गिरिजा वचन वर, मनहु प्रेम रस सानि।

पुनः-पुनः प्रभु शंकर-के चरण कमलों को पकड़कर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंकरुह पानि (कर-कमल) जोड़कर गिरजा मानो परम प्रेम रस से परिपूर्ण मनोहर बचन बोली।

शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी,
मिटा मोह शरदातप भारी,
तुम कृपालु संशय सब हरेऊ,
राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ।

शशि- कर चन्द्रमा की शान्तिदायिनी किरणों के समान आप की दिव्य वाणी सुनकर मेरा मोहरूपी शरद् आतप- आतप-शरद्कालीन धूप का दुःखदायी प्रभाव मिट गया। आप कृपामय हैं, इसलिये आपने मेरे संशय का निराकरण कर दिया, इसलिये अब मेरे अन्तःपटपर भगवान् राम का वास्तविक स्वरूप पूर्णतया जगमगा उठा है और मैं अब उसे भलीभांति समझ रही हूं।

नाथ कृपा अब गयौ विषाद
सुखी भयौं प्रभु-चरण-प्रसादा,
अब मोहि आपनि किंकिरि जानी,
यदपि सहज जड़ नारि अयानी।

हे देव! आपके अनुग्रह से मेरा सारा विषाद दूर हो गया और आप प्रभु-चरणों के प्रसाद से मैं अतीव सुख की अनुभूति कर रही हूं। अब मुझे अपनी किंकिरी-अनुचरी समझ- कर यद्यपि मैं नारी होने से स्वभावतः जड़ और अज्ञाना- भिभूत हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू,
जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहूं,
राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी,
सर्वरहित, सब उर-पुर वासी।

जो कुछ मैंने आपसे पूछा है, वह सब बताइये, यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं। हे प्रभो! उन भगवान् रामने-जो चिन्मय-चैतन्य-ज्ञान स्वरूप और अविनाशी हैं, सब से परे होकर भी सब के हृदय धाम में निवास करते हैं—

नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू,
मोहिं समझाय कहौ वृषकेतू,
उमावचन सुनि परम विनीता,
राम कथापर प्रीति पुनीता।

हे प्रभो! किस हेतु (उद्देश्य) से मानव-शरीर धारण किया, हे वृषकेतु-शिव-मुझे यह सब भलीभांति समझाकर बताइये यह परम विनीत वचन सुनकर और राम कथा के प्रति उनका पवित्र प्रेम देख कर—

हिय हरषे कामारि तब, शंकर सहज सुजान,
बहुविधि उमहिं प्रशंसि तब, बोले कृपानिधान।

तब-पार्वतीजीकी उत्कण्ठा देखकर कामारि-कामदेव के शत्रु स्वाभाविक सद्ज्ञानवान् और कृपानिधान भगवान् शंकर का हृदय अत्यन्त प्रसन्न हो और भगवती उमाकी अनेक प्रकार से प्रशंसा करके कहने लगे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनु शुभ कथा भवानि, रामचरित मानस विमल,
कहा भुशुण्डि बखानि, सुना विहंगनायक गरुड़।

हे भवानी! विमल-पावन रामचरित-मानस की शुभ कथा सुनो, जिसका वर्णन काकभुशुंडिने किया और विहंग-नायक-पक्षीराज गरुड़ने श्रवण किया।

सोइ संवाद उदार, जेहि विधि भा आगे कहब,
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुन्दर अनघ।

वही काकभुशुण्डि और गरुड़ शुभ संवाद (कथा-कथन-श्रवण) जिस प्रकार हुआ, वह सब आगे बताऊँगा। अभी भगवान् राम के अवतार का परम दिव्य और अनघ-निष्कलंक चरित का विस्तृत वर्णन सुनो।

हरि-गुण-नाम अपार, कथा रूप अगणित अमित,
मैं निज मति अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु।

भगवान् के गुण और नाम अनन्त हैं, तदनुसार कथा का विस्तार भी अगणित और अपरिमित है। वह मैं अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन कर रहा हूं। हे उमा! इसे आदर-पूर्वक सुनो।

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये,
विपुल विशद निगमागम गाये,
हरि अवतार हेतु जेहि होई,
इदमित्थं कहि जाय न सोई।

हे गिरिजा भगवान् राम के मनोहर चरित्र सुनो, जिनका विपुल, विशद और विस्तृत रूपमें वेद-पुराणादि में गान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया है। भगवान् के अवतरण का जो हेतु या उद्देश्य होता है, उसे यह नहीं कहा जा सकता कि वस्तुतः 'अवतार' का यही कारण है।

राम अतर्क्य बुद्धि-मन-बानी,
मत हमार यह सुनहु सयानी,
तदपि सन्त मुनि वेद-पुराना,
जस कछु कहँ स्वमति अनुमाना।

हे परम बुद्धिमती पार्वती! मेरा यह दृढ़ मत है कि भगवान् राम बुद्धि, मन और वाणी से अतर्क्य हैं-तर्क से परे हैं, तथापि सन्त-महात्मा और वेद-पुराणादि शास्त्र इस सम्बन्धमें अपनी बुद्धि-शक्ति के बल पर जैसा कुछ कहते हैं—

तस मैं सुमुखि सुनावौं तोहीं,
जानि परै जस कारण मोहीं,
जब-जब होय धरमकी हानी,
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।

हे असुरों कर वैसे ही यथावत् रूपमें मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, जैसा कारण मेरी समझमें आ रहा है। जब संसार में धार्मिक-नैतिक व्यवस्था पर प्रहार होता है और अहंभाव मूलक अधम आसुरी तत्त्व बढ़कर जगत् पर छा जाता है।

करहिं अनीति जाय नहिं बरणी,
सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब-तब प्रभु धरि मनुज शरीरा,
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।

वे असुर तत्त्व जगत् में जब अवर्णनीय अन्याय और अनीति परक कार्यों में प्रवृत्त होते हैं तथा गो, ब्राह्मण, देव और पृथ्वी को अकथनीय दुःख पहुंचाते हैं, तभी दयामय परम प्रभु मानव-शरीर धारण कर सज्जन-समुदाय के कष्टों का निवारण करते हैं।

असुर मारि थापहिं सुरनि, राखहिं निज श्रुति-सेतु,
जग बिस्तारहिं विशद यश, राम-जन्म कर हेतु।

वे असुरों का संहार जगत् में देवताओंकी-दैवी गुणों की स्थापना करते हैं, तथा अपनी वैदिक मर्यादा की रक्षा करते हैं तथा अपने विशद यश का विस्तार करते हैं, यही राम के जन्म का उद्देश्य है।

सो यश गाय भक्त भव तरहीं,
कृपासिन्धु जनहित तनु धरहीं,
राम-जन्म के हेतु अनेका,
परम विचित्र एक ते एका।

भगवान् की उसी पावन यशोगाथा का गान कर भक्त-जन इस सांसारिक जीवन को अनायास ही पार कर जाते हैं। वे कृपासिन्धु प्रभु अपने भक्तजनों के लिये ही मानव-शरीर धारण करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म-एक-दो कहौं बखानी,
सावधान सुनु सुमति भवानी,
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ,
जय अरु विजय जान सब कोऊ।

भगवान् के एक-दो जन्मों की कथा सुनाता हूँ। हे बुद्धिमती! भवानी सावधान-एकाग्र मन होकर सुनो। भगवान् विष्णु के दो परम प्रिय द्वारपाल थे, जिनका नाम जय और विजय था और जिन्हें सभी जानते हैं।

विप्र शापते दोनों भाई,
तामस असुरदेह तिन पाई,
कनककशिपु अरु हाटक लोचन,
जगत विदित सुरपति-मदमोचन।

ब्राह्मणोंके शापके प्रभाव से इन दोनों ही भाइयों को तामसी असुर-समाज में जन्म हुआ। इनका आसुरी नाम कनक कशिपु और हाटक लोचन था और इन्होंने सुरपति इन्द्र को पराजित किया, जिसकी कथा विश्वविख्यात है।

कहा जाता है कि सनकादिक ऋषि प्रवर भगवान् का दर्शन करने के लिये वैकुंठ गये, किन्तु भगवान् के इन दोनों अभिमानी द्वारपालों ने ऋषियों को भगवान् के पास जाने नहीं दिया और कहा कि पहले भगवान् से पूछ लें। यदि वे आज्ञा देंगे तो आप लोग उनके समीप पहुंच सकेंगे, अन्यथा नहीं। उनका यह अहंकार देखकर ऋषिप्रवर कुपित हो उठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और उन्हें शाप दिया कि तुम दोनों का जन्म राक्षस कोटिमें होगा। तीन जन्मतक इस प्रकार घोर नारकीय जीवन व्यतीत करने के बाद तुम्हारी इस योनिसे मुक्ति होगी। इस शाप के प्रभावसे जय-विजय का जन्म राक्षस के रूपमें हुआ, जिन के नाम कनककशिपु-हिरण्यकशिपु और हाटक लोचन (हिरण्याक्ष) थे।

विजयी समर वीर विख्याता,
धरि वराह वपु एक निपाता,
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा,
जन प्रल्हाद सुयश विस्तारा।

वे विश्वविजयी युद्धवीर के रूपमें विख्यात हुए इनमें से एक को तो भगवान् ने वराह का शरीर धारण कर मार डाला और दूसरे का संहार नृसिंह बनकर किया तथा भक्त प्रह्लाद की रक्षा कर अपने सुयश का विस्तार किया।

भये निशाचर जाय ते, महावीर बलवान,
कुंभकरण रावण सुभट, सुरविजयी जगजान।

इसके बाद पुनः महावीर बलशाली राक्षस के रूपमें उनका जन्म हुआ, जिनका नाम रावण और कुम्भकर्ण हुआ और जो सुरविजयी-देवताओंपर विजय पानेवाले महान् योद्धाके यश से जगत् में सर्वत्र ख्याति प्राप्त की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु बलि

ले. व्रजवल्लभ विशारद

धर्म प्रधान भारत के लिये पशु-बलि एक कलंक स्वरूप प्रथा है। मानव जाति के विकास के संबंध में अनुसंधान कर्त्ता वैज्ञानिक आखेट-युग नामक एक ऐसे समयका अनुमान करते हैं कि जब मानव अपने अल्प साधनों एवं अल्पज्ञता के कारण विवश हो जीवों को मार कर अपना निर्वाह किया करता था। 'बुभुक्षितम् किम् न करोति पापं' के अनुसार उस समय के लिये इसे क्षम्य माना जा सकता है। किन्तु आखेट-युग के किसी धर्म-बुद्धि मानव द्वारा प्रतिपादित बलि प्रथा को आज के सर्व साधन सम्पन्न मानव भी मानते रहें यह तो हास्यास्पद ही कहा जायगा। इसके मूल में धार्मिक भावना न होकर अपनी जिह्वा-लोलुपता ही प्रमुख कारण है। आज के सर्व साज सज्जा से सुसज्जित, सुरक्षित जल-यान के रहते पुराने किसी पेड़ के खोखले तने को नाव बना कर उपयोग करने को आवश्यक बतलाना हास्यास्पद एवं जन साधारण को अस्वीकार्य ही होगा। इसी प्रकार पशु-बलि प्रथा को भी इस युग में कोई भी समझदार हिन्दू स्वीकार न करेगा।

हमारा इतिहास अति प्राचीन है। विचार-स्वातंत्र्य भी भारतीय संस्कृति एवं धर्म का प्रमुख अंग रहा है। अतः पशु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलि समर्थक मित्र हमें अपने ही इतिहास और धर्म-ग्रन्थों के प्रमाण दे कर हमारा मुख बन्द करने का यत्न कर सकते हैं, किन्तु ऐसी परिस्थिति में हम अपने उन मित्रों को यही कह सकते हैं कि ऐसी कितनी ही प्राचीन प्रथायें हैं, जिन्हें अनुपयुक्त समझकर हम छोड़ चुके हैं। क्या मेरे वे मित्र स्वीकार करेंगे कि बहुपति प्रथा को इस काल में भी चालू रखा जाय? क्या नियोग प्रथा को भी इस काल में स्वीकृति मिल सकेगी? अतः हमारा दृष्टिकोण उत्तरोत्तर विकसित भावना एवं सिद्धान्तों को आदर देने एवं अविकसित काल के त्याज्य सिद्धान्तों को अनुचित ठहराने का होना चाहिए।

प्रथमतः अहिंसा-प्रधान हिन्दू धर्म के प्रत्येक सदस्य को वर्णाश्रम व्यवस्था का पूर्ण रूपेण आचरण करना चाहिये। उनमें से जिनके लिये प्राणिज आहार की व्यवस्था है वे चाहें तो अपना आहार वैसा रख सकते हैं, किन्तु उसे देवता के नाम पर बलि करने का नाम देना तो किसी प्रकार भी न्याय संगत नहीं। आप बलि तो देवता के नाम पर देते हैं और जिह्वा की तृप्ति आप करते हैं। मेरे विचार से ऐसा करके आप दो पाप करते हैं। पहला जीव-हिंसा का और दूसरा बिना देवता की अनुमति उसके नाम से बलि देने का। आप को क्या अधिकार है कि पिताजी धन को देख कर प्रसन्न होंगे, अतः आप डाका डाल कर अन्याय पूर्वक भी धन लावें? आपके पिता आपके इस कृत्य से प्रसन्न ही होंगे इसका निर्णय आप कैसे कर सकते हैं? इसी प्रकार पशु-बलि से देवी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न होती ही होंगी इसका आप के पास क्या प्रमाण है? देखिये देवी जी भगवान् शंकर से क्या कह रही हैं:—

> स्वयं कामाशयो भूत्वा योऽज्ञानेन विमोहितः।
> हन्त्यन्यान विविधान जीवान कृत्वा मान्नापशंकरः॥
> तद्राज्य वंश सम्पत्ति ज्ञानानि दारादि सम्पदाम्।
> साचिराद्धैः भवेन्नाशो मृतः सः नरकं व्रजेत्॥

'हे भगवान्! स्वयं फल की इच्छा वाला होकर अज्ञान से मोह को प्राप्त जो व्यक्ति मेरे नाम से विभिन्न जीवों का वध करता है। उसका राज्य, वंश, सम्पति, ज्ञान और स्त्री आदि समस्त ऐश्वर्य कुछ ही समय में नष्ट हो जाते हैं। और वह मृत्यु को प्राप्त होकर नरक में जाता है।

> मद् व्याजेन पशून हत्वा यो यज्ञेन सह बन्धुभिः।
> तंगोत्रलोम संख्यादे रसिपत्रगवने वसेत्॥

मेरे बहाने से जो मनुष्य पशु का वध कर के अपने सम्बधियों सहित मांस खाता है। वह मनुष्य पशु के शरीर पर जितने रोम होते हैं उतने वर्ष तक असिपत्र नामक नरक में निवास करता है।

बलि समर्थक सिद्धान्ती कहते हैं कि यज्ञ में आहूत पशु अथवा देवता के नाम पर बलिदान किये जाने वाला जीव स्वर्ग को जाता है। आज के विज्ञान प्रधान काल में उक्त सिद्धान्त को मान्यता मिल सकना असंभव बात है। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त जिसका स्वयं का विचार आपके भेजे हुए स्वर्ग में जाने का नहीं है। उसे उसकी अनिच्छा पूर्वक जबर्दस्ती आप स्वर्ग में भेजने का क्यों कष्ट करते हैं? किसी कवि द्वारा पद्य बद्ध बलि के लिये लाये जाने वाले पशु के विचार एवं प्रश्न पर दृष्टि पात कीजिये। क्या आप उसके प्रश्न का उत्तर दे सकेंगे?

नाह स्वर्गफलो योगतृषितो नाभ्यर्थिस्तस्त्वं मया।
संतुष्टस्तृण भक्षणेन सततं साधो! न युक्तं तव॥
स्वर्गं यान्ति यदा त्वदा विनिहता यज्ञध्रुवं प्राणिनो।
यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवैः॥

'मुझे स्वर्ग फल भोगने की इच्छा नहीं है। न मैंने तुमसे यह प्रार्थना ही की है कि तुम मुझे यज्ञ में बलि देकर स्वर्ग में पहुंचाओ। मुझे तो घास पात खा कर ही सन्तोष है। इस लिये तुम्हें यह काम शोभा नहीं देता। यदि यही मान लिया जाय कि यज्ञ में होमे जाने वाले प्राणी स्वर्ग में जाते हैं तो फिर तुम अपने प्रिय से प्रियतर माता, पिता, पुत्र और भाइयों को यज्ञमें होम करके उन्हें स्वर्ग क्यों नहीं पहुंचाते?'

धर्म ग्रन्थों में शुनःशेष नामक एक द्विज बालक का आख्यान मिलता है। जिसके पिता ने धन के लोभ में आकर उसे यज्ञ में बलि देने के लिये एक राजा को बेच दिया था। जिस समय वह राजा उस बालक को रस्सों से बांध कर अपने रथ में डाल कर लिये जा रहा था। मार्ग में उस बालक को उसका मामा मिला। पिता द्वारा परित्यक्त बालक को आशा की एक किरण दिखाई दी। उसके धैर्य का बांध टूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया। उसने मर्मस्पर्शी शब्दों में रुदन करते हुए अपने ऊपर आने वाले संकट का वर्णन अपने मामा से किया। वह स्थल आज भी नृशंस से नृशंस व्यक्ति के हृदय को भी विदीर्ण कर देने वाला है। यदि पशु भी बोल सकते तो वे भी वही बात कहते जो शुःनशेष ने मामा से कही है।

आत्मा को परमात्मा मानने वाले ऐ हिन्दुओ! इन मूक पशुओं पर दया करो। अपने धर्म ग्रंथों की अवहेलना न करो, जो सर्वत्र उस परम पिता की सत्ता स्वीकार करते हैं। जो उस विश्वम्भर को सर्व व्याप्त बतलाते हैं और जो प्राणी मात्र के हृदय में उसका निवास मानते हैं। देखिये गीता सर्वत्र समदर्शन की आज्ञा देती है।

विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणेगवि हस्तिनी।
शुनि चैवश्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः॥ गी. ५-१८॥

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध में एक कथा है कि रोहिताश्व को उसका पिता यज्ञ-पशु बना कर यज्ञ में उसे बलि देना चाहता था। उस समय रोहिताश्व को सावधान करते हुए इन्द्र कहता है—

भूमेः पर्यटनं पुण्यं तीर्थ क्षेत्र निषेवणै।
रोहितायादिशच्छक्रः सोऽप्यरण्यऽवसन्॥
श्रीमद्भागवत ९-७-१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बेटा रोहित ! यज्ञ--पशु बन कर मरने की अपेक्षा तो पवित्रतीर्थ और क्षेत्रों का सेवन करते हुए पृथ्वी में विचरना ही अच्छा है।' इन्द्र की बात मान कर रोहिताश्व भाग कर बन में चला गया और एक वर्ष तक वहीं रहा। और जब वापिस लौटा तो शुन:शेष को अपनी जगह यज्ञ-पशु बनाने के लिये क्रय करके साथ लाया। यहां विचारणीय है कि यदि यज्ञ में बलि दिये जाने पर स्वर्ग प्राप्त हो सकता तो इन्द्र रोहिताश्व को उपरोक्त शिक्षा न देता।

पशु-बलि एक अत्यन्त जघन्य कर्म है। "जैसा करोगे वैसा भरोगे' 'जैसा बोवोगे वैसा काटोगे' के अनुसार बुरे कर्म का फल बुरा ही मिलेगा। धर्म ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर ऐसे वाक्य मिलते हैं जो पशुबलि देने वाले को नरक गामी होना सिद्ध करते हैं।

यूपं छित्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिर कर्दमम्।
यद्येव गम्यते स्वर्गं नरके केन गम्यते॥

'यूप को काट कर तथा पशुओं का वध करके तथा उनके रक्त से भूमि को कीचड़ युक्त बना देने से यदि स्वर्ग मिल सकता है तो फिर नरक में कौन जायगा?'

देवोपहार व्याजेन यज्ञ व्याजेन येऽथवा च।
घ्ननन्ति जन्तुन् गत घृणा घोरां ते यान्ति दुर्गतिम्॥

'जो लोग देवताओं के नाम पर अथवा यज्ञ के नाम पर पशुओं को मारते हैं। वे दुष्ट घोर दुर्गति को प्राप्त होते हैं।'

॥ हरि ओ३म् तत्सत् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर संगीत

लेखक
रामसमझ शर्मा

चेतना के उन गीले पन्नों में एक अमर संगीत है, जो सदैव बहा करता है। उसको पाने के लिये मनुष्य सदैव लालायित है। उसे खोजता रहता है, पर पाता नहीं। जीवन में सुख की अनेक लहरें आती हैं। उनमें से अंतिम सुख संगीत है। यह मनुष्य में तभी आता है, जब वह व्यक्ति पूर्ण आस्वस्थ रहता है। उसको प्राप्त करने के लिये लोगों ने अनेकों यंत्र तंत्र बना रखे हैं। जब इसको पाने की इच्छा होती है, तब उनको छेड़ देते हैं। फिर क्या है? एक मधुर गुंजार फैल जाती है और चारों ओर आनन्द की लहर गूंज उठती है। इसको सुन कर लोग मस्ती से झूमने लगते हैं और उनकी भावनाओं का विस्मरण हो जाता है। लोग अपनी आत्मा से आनन्द लूटने लगते हैं। उन्हें यह पता नहीं चलता कि हमने कितना पिया। पर फिर भी पीने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा बनी रहती है। वे इसी में अपने सम्पूर्ण समय को बिताना चाहते हैं। पर मनुष्य का सम्बन्ध दस इन्द्रियों से है। उनमें से एक पर एक जागती रहती हैं। जिनको समयानुकूल तृप्त करना पड़ता है। कभी भूख, कभी प्यास, कभी दृश्य, कभी काम और कभी निन्द्रा आदि सताते रहते हैं। पर संगीत तो स्वयं पूर्ण है। इसलिये मनुष्य कुछ समय तक अपनी आवश्यकताओं को दबाकर भी श्रवण करता रहता है। जहां उसकी अन्य भावनाएं प्रबल हो जाती हैं, वह संगीत से ऊब जाता है। पर संगीत साधना का अभ्यासी इसको पीकर कभी तृप्त नहीं होता। वह धीरे धीरे अपनी सारी भावनाओं पर विजय पालेता है। जिससे अपने अभ्यास में पूर्ण पारंगत हो जाता है। उसके जीवन में केवल एक ही चीज रह जाती है, वह है अमर संगीत।

मानव सदैव अपनी विपत्तियों से खेलता रहता है। इन क्षणों में भी वह कुछ गाना चाहता है। पर गा नहीं पाता। इसका कारण यह है कि 'जीवन एक समस्याओं का जाल है।' जिस पर विजय पाना आवश्यक है। क्योंकि बिना विजय के वह जी नहीं सकता। यदि हार जाता है, तो सदा के लिये दब जाता है। इस विजय को प्राप्त करने के लिये वह अनेकों उपकरण जुटाता है। कभी विद्या, कभी विवाह और कभी काम। पर यदि वह जीवन में खेलना नहीं जानता, तो वह स्वयं इनका भार अपने ऊपर लाद लेता है। जीवन को विद्याध्ययन में ही लगा देने से वह केवल ज्ञानी मात्र बन कर रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। उसकी उपयोगिता का कोई फल प्राप्त नहीं होता। विवाह के बाद गृहस्थ जीवन पर अधिक जोर देने से वह संतानों का भण्डार बन कर रह जाता है। वहां तृप्ति के आनन्द का कोई स्थान नहीं रह पाता और कामों के जाल में अधिक पड़ने पर कभी धन और कभी निर्धनता बाधक बन जाती है। हम कोई चीज उतना ही अपनायें, जिससे हमें सुख हो और इसी से शांति मिलती है।

सुख की व्याख्या वही है, जहां न कोई चीज अधिक हो और न कोई चीज कम। इससे जीवन में संतुलन आता है। यह संतुलन लाना ही जीवन की साधना है। परलोग समझ नहीं पाते। जो जिसकी ओर अधिक लालायित होता है, वह उसको सम्पूर्ण रूप से अपनाना चाहता है। इससे कभी एक ही चीज के अधिक और कभी कम होने का रोग हो जाता है। फिर वह जीवन के संतुलन से दूर हट जाता है और अतृप्ति, असंतोष तथा दुःख का भागी बन जाता है। कभी वस्तु के प्राप्त होने पर दूसरे की पूर्णता की ओर बढ़ता है। इसमें कभी कभी अपनी पहले की प्राप्त वस्तु का भी बलिदान (त्याग) करना पड़ता है और वह व्यक्ति प्राप्त वस्तु की तुलना में अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने के लिये ऐसा कर देता है। जैसे विलास के लिये मनुष्य धन का अपहरण और अतिव्यय करता है। भोग के लिये वह अपनी पत्नी को छोड़ कर या पत्नी के बाधक होने पर उसे मृत्यु दंड देकर अपनी भोग लिप्सा को तृप्त करना चाहता है। पर अंत में ऐसे लोग सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ से हाथ धो बैठते हैं। कभी २ नारी भी अपनी वासना की तृप्ति के लिये ऐसा कर देती है। अंत में ये सब दुर्भाग्य बन कर जीवन के अंत तक झेलने पड़ते हैं। इन वस्तुओं के अप्राप्त होने पर वह व्यक्ति कभी २ मृत्यु को अपना लेता है। इसलिये ऐसे विचार और काम जीवन से त्याज्य हैं।

पर संगीत अपनी अनुपम लहरी से जीवन को तृप्त करता रहता है। इसका ओज माधुर्य और स्वर कानों को बेध कर अंतर को गुंजायमान किया करता है। जिससे जीवन की सरलता अपने आप निखरती जाती है। मनुष्य २ के और आत्मा २ के सम्पर्क में आता जाता है। इससे जीवन की समीपता अन्य जीवों से बढ़ती जाती है और मानव एक दूसरे का घनिष्ट बन जाता है। यह लहरी जीवनकी आनन्द दायनी है। जिससे जीवन की चेतना बढ़ जाती है। मनुष्य अधिक बुद्धिमत्ता, कार्यशील और प्रखर (प्रवीण) हो जाता है। उसकी सरलता उसके जीवन को बुराइयों से दूर ले जाती है। अतृप्त-अवस्था में भी उसको तृप्ति का आनंद मिलता है। यही इसकी पूर्णता है। इसलिए जीवन में स्थल स्थल पर संगीत का विधान है। कोई भी कार्य बिना शांति के अधूरा लगता है। उत्सव, विवाह, गोष्ठी, सभा, नाटक, चित्रपट कहीं भी देखा जाय, वहां संगीत का पूर्ण विधान है। इससे मनुष्य को सरलतम ढंग से शिक्षा भी दी जाती है। प्रार्थना भी इसी का एक रूप है। इससे आत्मशुद्धि बढ़ती है और हर काम में चित्तवृत्ति रमती है। जिस कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में संगीत का समावेश रहता है, वह कार्य कठिन होने पर भी आसानी से किया जा सकता है। रास्ता चलने वालों के लिए भी संगीत का विधान है। जहां लोग नगरों में इसकी स्वर लहरी को प्राप्त करने के लिए विविध यंत्रों का प्रयोग करने लगे हैं, वहां गावों में अब भी लोग गीतों के रूप में आनन्द प्राप्त किया करते हैं।

संगीत के लिए स्वर साधना आवश्यक है। बिना स्वर साधना के यह अधूरा है। स्वर ईश्वर प्रदत्त वस्तु मानी गई है। इसके लिये नारियां पूर्ण अधिकारिणी कही जाती हैं और हैं भी। कुछ पुरुष वर्ग भी इसके अधिकारी होते हैं। जो मानव जीवन को अपनी स्वर लहरी से तृप्त किया करते हैं। इन अल्प संख्यक लोगों का समाज में पूर्ण सम्मान है। इसका कारण संगीत है। पर पूर्ण कला विशारद नारियों को इससे दूर रखा जाता है। क्यों कि इन पर समाज का कड़ा बन्धन है। यह बन्धन सम्पूर्ण मानव जाति के लिये एक अभिशाप है। क्योंकि पुरुष अपनी ही वस्तु पर प्रतिबन्ध लगा कर अपने जीवन को इस सुख से वंचित कर देता है। यही मानव जाति के उत्थान का बाधक है। बंधन तो अपनी कलुषित वासनाओं पर लगाना चाहिये। जहां से बुराई अपना घर बनाती है और वही बढ़ कर सम्पूर्ण मानव जाति को दूषित कर देती है। संगीत के लिये बन्धन मुक्त और सात्विक जीवन होना चाहिए। आहार, निद्रा, भय और मैथुन को सात्विक बनाना ही सात्विक जीवन है। इन चारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बानों के पवित्र होने पर ही वह सुखमय संगीत का आनन्द प्राप्त कर सकता है, पवित्र (सात्विक) भोजन शुद्ध खून पैदा करता है। शुद्ध खून से निद्रा या आलस्य अधिक नहीं रहता। निद्रा की कमी से चैतन्यता बढ़कर भय को दूर करती है। सम्पूर्ण मानव अपनी विवशता रूपी वासना या आंतरिक भय को दूर करने के लिये मैथुन करता है। चैतन्य के कारण मनुष्य में वासना रूपी भय पैदा नहीं होता, जिससे मैथुन की विशेष इच्छा नहीं रहती। यही पवित्र जीवन की सात्विकता है इसको गरीब अमीर सब कर सकते हैं। केवल अपने खाने की वस्तुओं पर ध्यान देना चाहिये। इस सात्विकता से भावना पवित्र बनती है। तथा अपने विचार और कार्य सीधे साधे होते हैं। ऐसी आत्मा में संगीत की मधुर ध्वनि सदैव गूञ्जती रहती है और वह व्यक्ति सब के मुख पर हंसी, होठों पर संगीत और जीवन में कांति देखना चाहता है। परन्तु यह तभी मिल पाता है, जब हमारे अन्दर हर जीवों के प्रति प्रेम, श्रद्धा और भक्ति हो। यही प्रेम श्रद्धा और भक्ति आत्मा को अमरता की ओर प्रेरित करती है। जहां से राग का संचार होता है। ऐसी आत्मा से 'जीवो और जीने दो' की धारा फूट निकलती है और वह अमर संगीतज्ञ एक अपूर्व आनन्द की प्राप्ति सदैव करता रहता है।

संगीत सुक्ष्म तारों की ध्वनि है। जो पहले शब्द, शब्द से आवाज, और आवाज से ध्वनि बनाता है। शब्द आकाश का एक गुण है। जो वायु की लहरों पर तरंगित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन शब्दों को लय में बांधना ही संगीत है। प्रत्येक स्थान के लोग इसको अपनी भाषा भाव और ज्ञान के आधार पर स्वर बद्ध करते हैं। संगीत अनेक राग रागिनियों में बद्ध है। ये राग-रागिनियों स्वर, लय और ताल पर आश्रित हैं। ये स्वर लय और ताल मानव जीवन के संगीतात्मकता की पहुंच हैं। जहां से वह राग रागनियों को अपनाता है। ये छः राग और छत्तीस रागनियां मनुष्य के संगीतात्मकता की साधना के फल हैं। मनुष्य इससे अधिक संगीतात्मकता प्राप्त कर सकता है। पर अभी तक इसके आगे प्राप्त नहीं कर सका है। संगीत मानव जीवन के चरम विकास का एक फल है। जहां बैठ कर वह जीवन के अतुल आनन्द को प्राप्त करता रहता है। संगीत की छन्दात्मकता कविता के रूप में बढ़ी। यह कहने सुनने और जीवन के साथ अपनाने में अधिक सरल लगी। इसलिए लोग इसकी ओर अधिक बढ़े। इसके रचनेवाले कवि भी अधिक लोकप्रिय बने और आज यह कविता हमारी शिक्षा में पूर्ण सहयोगिनी है। अर्थात् हमारे जीवन की आवश्यक सीखों में एक यह भी है।

जीवन के अन्य क्षेत्रों के साथ साधना क्षेत्र में संगीत का एक विशिष्ट स्थान है। भक्ति सम्प्रदाय तो संगीत का ही पूर्ण अवलम्बन लेता है। साथ ही ईश्वर के प्रति उनकी सम्यक् बुद्धि तृप्त होती है। यहां उनकी आत्मा को सम्पूर्णता (सम + पूर्णता) अर्थात् शांति का आभास होता है। जहां भावना रूपी चेतनता (चैतन्यता) ईश्वर में विलीन होती हुई प्रतीत होती है। और भक्त एक अद्भुत रस का आनन्द प्राप्त करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जो अमरता का एक प्रतीक माना जाता है। इसीमें उसको सत्-चित-आनन्द की प्राप्ति होती है। जो पूर्ण ब्रह्ममय है। इस संगीत में ईश्वरत्व की एक अपूर्व झलक मिलती है। उसी के सहारे भक्त अपनी जीवन धारा को उसी ओर बहाता जाता है। जहां उसके संगीत का अंतिम राग समाप्त होता है। इस अमर संगीत को हम ईश्वर प्राप्ति की एक सरल मीठी और शांत वाणी कह सकते हैं।

जीवन की पूर्णता वही है, जहां अमरता है। अनश्वर वस्तुओं में आत्मा, जगत और ईश्वर ये तीन माने गए हैं। पर आत्मा को ईश्वरत्व का ज्ञान कराने वाले सत्य संगीत और प्रेम हैं। सत्य, इस संसार के वास्तविक और नश्वर तत्वों का ज्ञान कराता है। संसार में जो चीजें नित्य हैं, वे सत्य हैं। नित्य वस्तुओं में सौन्दर्य, कला और तत्व हैं। सत्य नित्य (अमृत) बन कर हमारी आत्मा के साथ टकराता है। जब इन दोनों का घर्षण होता है, तो संगीत का जन्म अपने आप हो जाता है। यह संगीत ईश्वर के आनन्दस्वरूप इस संसार में भरा पड़ा है। उस परमानन्द की प्राप्ति ही प्रेम है। प्रेम आत्मा को अजर अमर और महान बनाता है। यही महानता ईश्वर का स्वरूप है।

जब तक आत्मा देह रूप से इस संसार में भ्रमण करती रहती है, तब तक वह अमर संगीत के आधार पर उस महान् ईश्वर की स्तुति व गुण गान किया करती है। यह अक्षय गुण गान उस ईश्वर की महानता और उस आत्मा को ईश्वरत्व की प्राप्ति का द्योतक है। जब लोग उस आत्मा को ईश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का रूप दिखाने को कहते हैं या वह स्वयं आनन्दित होकर कुछ कहने लगता है। तो उसमें ईश्वर की कुछ कला कृतियों का वर्णन करके उसे अनादि अनन्त की संज्ञा देकर और अवर्णनीय कह कर भक्त जन छोड़ देते हैं। संसार की हर वस्तुओं से विरक्ति देखकर लोग उस व्यक्ति को योगी, विरागी, सन्यासी आदि कहने लगते हैं। नित्य ईश्वर का गुणगान करने से लोग उसे भक्त (भजने वाला) कहने लगते हैं। जब कि ईश्वर का अर्थ जीवन की अक्षय निधि से है। यही निधि उसकी ईश्वरता है। ईश्वर शब्द अधिक प्रयोग में आने के कारण वह व्यक्ति विशेष का सूचक बन गया है। यही ॐ अमर संगीत का अंतिम रूप है। जो आकाश रूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में छाया हुआ है। ॐ (अहिंसा) का दूसरा रूप ईश्वर और अमर संगीत है।

प्रेम, सेवा और जागृति का का प्रमुख हिन्दी पाक्षिक

समाज-हितैषी

जिसमें साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, व आर्थिक लेख, कवितायें एवं कहानियों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्तम्भ भी रहते हैं।

* सम्पादकीय
* महिला-जगत
* शिशु-जगत
* जनमत
* राजस्थान का रंगमंच
* हास्य-व्यंग
* प्रश्नोत्तर
* भविष्य फल

साधारण एक प्रति २५ पै. विशेषांक के सहित वार्षिक ६) आज ही नमूने की प्रति के लिए लिखें अथवा वार्षिक ग्राहक बनकर लाभ उठावें।

पता-समाज-हितैषी कार्यालय, बिसाऊ (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[यह स्तम्भ पाठकों के शारीरिक आध्यात्मिक प्रश्नों के समाधान हेतु रखा गया है यदि आप किसी समस्या का समाधान चाहते हों तो प्रश्न लिख कर भेजें—सम्पादक]

रमेशचन्द बंसल, आगरा

पत्र संख्या १–प्रश्न १.

हमारी रिस्तेदारी में एक १२ वर्ष का लड़का है जिसको चलते-फिरते और बैठे २ हिस्टेरिया यानी बेहोशी आ जाती है और उस समय पर उसे कुछ भी होश नहीं रहता परन्तु ८/१० मिनट के बाद बिल्कुल ठीक हो जाता है। यह शिकायत करीब डेढ़ साल से है कृपया कोई चिकित्सा बताइये। डाक्टरी इलाज काफी कराया जा चुका है पर कोई लाभ नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर १—मानसिक चिन्ता, वायु रोग, अपौष्टिक आहार से मस्तिष्क के अवयवों का समुचित विकास नहीं हुआ है। कब्ज की शिकायत, पढ़ाई के लिए अधिक देर तक रात्री को जागरण करना, व्यायाम न करना, भय आदि अनेक हिस्टेरिया रोगके कारण हो सकते हैं। प्रत्यक्ष रूपमें जब तक नाड़ी, उम्र, हाव भाव की जानकारी न हो तब तक उपचार का अन्तिम रूप नहीं बताया जा सकता फिर भी निम्नांकित उपचार को करने के लिए अपने रिस्तेदार से कह सकते हो।

(१) आधा भाग महानारायण तैल और आधा भाग रामतीर्थ ब्राह्मी तैल मिलाकर हर रोज प्रातःकाल सारे शरीर तथा सिर पर ४० मिनट तक मालीश करें। कानों के छिद्रों में यह तेल छोड़ें। मालीश के ३० मिनट बाद ठंडे जल से स्नान करावें।

(२) आसन प्रयोग

शीर्षासन आरंभ में १ मिनट करें, हर रोज एक मिनट बढ़ाते जावें, २५ मिनट तक अभ्यास चालू रखें। शीर्षासन के बाद शवासन ८ मिनट करें। बादमें उर्ध्वसर्वांगासन २ से ४ मिनट तक, हलासन १ से ३ मिनट तक, सुप्त धनुरासन १ मिनट, सुप्त वज्रासन २ मिनट तक प्रति दिन करें। रात को आठ घंटे कमसे कम निद्रा लेनी चाहिये। दिन में सोना वर्जित है।

आहार—चोकरसहित गेहूँ के आटे की रोटी, सब्जी तुवर की छिलके वाली दाल। दाल में हींग छोड़ना। खाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में यथेच्छ मात्रा में लाल प्याज और मूली कच्ची खावें। ब्राह्मी घृत रोटी के साथ खावें, ब्राह्मी और आंवला की चटनी अवश्य लेनी चाहिये। किसी भी दशामें कब्जियत नहीं रहने पावे।

मानसिक उपचार

इस प्रकार के रोगियों का मन दुर्बल, डरपोक, तथा चिन्तामग्न रहता है। घरमें अथवा बाहर में उनके साथ सात्विक व्यवहार और आहार रखना चाहिये। पढ़ने के लिये, भोजन के लिये अथवा अन्य प्रसंगोंपर चिल्लाते या झल्लाते हुए, डराते हुए न कहें। प्रेम का व्यवहार सब जगह होना चाहिए। हर गलती को प्रेम से समझाकर ध्यान में लाना चाहिए। रोगी को सदा प्रसन्न चित्त रखने का प्रयास करना चाहिए।

वस्त्र परिधान—हरे, नीले, काले और सफेद कपड़े पहनावें। अन्य रंगों के कपड़े न पहनावें। मस्तिष्क और मन पर वस्त्र का प्रभाव पड़ता है।

जल सेवन—दिन में १ लीटर से २ लीटर तक पानी का सेवन करें। भोजन के समय आवश्यकता पड़ने पर ही जल पीयें। भोजन के साथ दूध लेना वर्ज्य है। ऊपरोक्त उपचार महत्वपूर्ण है अवश्य रोग मिट जायगा। बीमारी अवश्य दूर होगी और सदा के लिए दूर होजायगी। परन्तु अनुकूल यौगिक और प्राकृतिक उपचार करना अनिवार्य है। दवा के ऊपर भरोसा रखना बेकार है। सर्वोपरि दवा आसन-प्राणा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ग्राम तथा पंच महाभूत हैं। प्रथमतः प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने के लिए श्रद्धा संपन्न होना अनिवार्य है। जीवन हमारी इच्छानुसार बन सकता है। पहले इच्छा सात्विक हो फिर कार्य भी सात्विक ही होंगे।

श्री रामेश्वर नाथ शर्मा

पत्र संख्या २

प्र. (१) जीव प्रकृति और ब्रह्म की पारस्परिक व्यापार क्रिया क्या है?

प्र. (२) शरीर में आधार चक्र तथा कुण्डलिनी इत्यादि शक्तियों से क्या तात्पर्य है? विस्तृत जानकारी के लिये भी संदर्भ भेजें।

प्र. (३) एक शरीर से दूसरे शरीरके लिये गर्भधारण तक की बीच वाली स्थिति में प्राण का क्या स्वरूप होता है?

प्र. (४) स्त्री-पुरुष जगत के अस्तित्व का मूल कारण होने से एक दम एक दूसरे से भिन्न हैं। यह भी कहते हैं कि प्रकृति के अनुसार [स्त्री-पुरुष] में जो लिङ्ग-भेद है वह जन्म-जन्मान्तर में भी परिवर्तन नहीं होता। जगत में आने वाले जीवधारी हैं हर जीव की [स्त्री-पुरुष भी] अपने २ कर्मानुसार जीव की गति होती है। इस न्यायानुसार स्त्री-पुरुष को अलग २ प्रयत्न [ईश्वर प्राप्ति] के लिये करना चाहिये। परन्तु जहां तहां केवल पुरुष विशेष को ही संकेत हैं स्त्री को क्यों नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर १—आत्मज्ञान प्राप्त हो जाने पर जीव ही शिव स्वरूप हो जाता है। आत्म ज्ञान के अभाव के कारण ही जीव दुःखी और दीन हीन दशामें जीवन यापन करता है। अपने मूल स्वरूप का भान होते ही ब्रह्म स्वरूप जीव बन जाता है। पंच महाभूत, पंच तन्मात्रा, अहंकार, महतत्व, प्रकृति और परमात्मा कहा जाता है। उत्तम प्रकार की कृति वह प्रकृति है। रज, सत्व और तमोगुण से प्रकृति का कार्य होता है। सत्व और तमोगुणी अवस्थामें प्रकृतिमें कोई क्रिया नहीं होती, रजोगुणी अवस्थामें आने पर ही क्रिया चालू होती है। तब परिवर्तन शील द्वन्द्वात्मक क्रिया होती है। रजो गुण जब प्रधानावस्थामें होता है तब विशेष प्रवृत्ति हुआ करती है जब सत्व और तम गुणों की प्रधानता रहा करती है तब उन गुणोंके अनुसार शान्ति और अशान्ति का रूप बन जाया करता है।

जीव जब तक अज्ञानावस्था में रहा करता है तब तक प्रकृति के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान उसे नहीं हो पाता और वह प्रकृति का दास बना हुआ सुख दुःख के चक्कर में फिरा करता है। जीव प्रकृति के वशमें रहता है और प्रकृति ब्रह्म आधीन। जब जीव को प्रकृति की वास्तविकता का भान हो जाता है तो प्रकृति सामने से हट जाती है और जीव को ब्रह्मवत् होने का मौका मिल जाता है। ब्रह्म और जीव को जुदा रखने वाली प्रकृति ही है वैसे ब्रह्म और जीव का अशांशी का संबंध है। प्रकृति का काम उत्पत्ति का है ब्रह्म के साक्षीत्व में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर—२ गुदास्थान (मलद्वार), में मूलाधार चक्र है। गणपति देव है। कुण्डलिनी शक्ति स्वाधिष्ठान चक्र में उपस्थित है। महामुद्रा, महाबंद मुद्रा, शक्ति चालन मुद्रा आदि अनेक प्रकार की मुद्राओं के अभ्यास और अन्य महत्वपूर्ण अभ्यास द्वारा कर्माशय कोष को ३।। अंगुल वेष्टित कर आराम से लेटी हुई कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत करके चन्द्र भेदन क्रिया द्वारा ब्रह्म रंध्र में ले जानी पड़ती है। विस्तार के लिए स्वामी विष्णु देव जी द्वारा लिखित कुण्डलिनी शक्ति पढ़ें। यह पुस्तक विज्ञान प्रेस ऋषिकेश से प्राप्त हो सकती है। उत्तर ३—शास्त्रानुसार पूर्व पक्ष का यह मत है कि जबतक जीव को मोक्ष प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक कर्मानुसार ८४ लक्ष योनियों में घूमना पड़ता है। जैसा जिसने कर्म किया हुआ रहता है। उसी प्रकार का शरीर धारण करने को मिलता है। सत्कर्म करने वाले को मानव योनि प्राप्त होती है और दुष्कर्म करने वाले को मानवेतर योनियों में भटकना पड़ता है। जब मृत्यु हुआ करती है तो मन अपनी सहायक इन्द्रियों के साथ कर्माशय कोश का निर्माण कर अपने कर्मानुसार यथास्थान प्रस्थान कर जाता है। प्राण वायु अपने विस्तृत आकाश में मिल जाती है जब मन अपने कर्माशय के द्वारा शरीर धारण करता है तब उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है।

उत्तर ४—स्त्री-पुरुष जगत के अस्तित्व के मूल कारण होने से एक दूसरे से कतई भिन्न नहीं, अपितु एक दूसरे के पूरक हैं। एक गाड़ी के दो पहिये के समान स्त्री-पुरुष की स्थिति है। जैसे एक पहिये से गाड़ी का चलना कठिन होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उसी प्रकार से अकेले पुरुष व स्त्री जगत को बनाये रखने में समर्थ नहीं हो सकते। लिंग भेद जन्मान्तर से बदल भी सकता है यह तो कर्म की गति है। कभी कोई स्त्री बनता है तो कभी पुरुष और इस प्रकार यह संसार चक्र चलता रहता है। आज कल सर्जरी से (शल्य चिकित्सा से) पुरुष का स्त्री और स्त्री का पुरुष बनने की खबरें यदा कदा अखबारों में भी प्रकाशित होती रहती है इसलिये यह मानना कतई गलत है कि जन्मान्तर में योनि परिवर्तन नहीं हुआ करता। यह ठीक है कि जगत में आने वाले जीवधारियों की कर्मानुसार स्त्री-पुरुष की गति हुआ करती है। प्रयत्न भी जुदा २ करना चाहिये और संयुक्त भी प्रयत्न हो सकता है जैसे लोक में यज्ञ-याग आदि कर्म के फल की प्राप्ति देखी गई है। स्त्री अपने पति में जब परमेश्वर का आरोपण कर कर लिया करती है तो पति के कर्म का फल उसे प्राप्त होजाया करता है।

जहां तहां जो केवल पुरुष विशेष का ही संकेत है उसका कारण यह है कि वस्तुतः इस जगत् में स्त्री-पुरुष जैसी कोई संज्ञा नहीं। एक ही परमेश्वर विभिन्न रूपोंमें प्रकट हुआ करता है और अन्तमें सभी रूप उसी परमेश्वर में प्रविष्ठ हो जाया करते हैं। वही परमेश्वर उत्तम पुरुष के नाम से सदैव एक ही बना रहता है। इसीसे लोक में पुरुष की ओर संकेत किया जाता कि सभी को उसी उत्तम पुरुष-परमेश्वर की प्राप्ति करनी है। इसी से स्त्री संज्ञा गौण रखी जाती है। उसके गौण रखने का एक तात्पर्य यह भी है कि उसी प्रकृति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचानने की आवश्यकता इस जीवन की सफलता के लिये आवश्यक है, जिस वस्तु का जितना ही अधिक महत्व होता है उसे उतना ही अप्रकाशित रखा जाता है यह हम लोक व्यवहार में भी देखा करते हैं।

श्री कादम्बरी सिन्हा, लखनऊ
प्रश्नपत्र ३ प्रश्न संख्या १—

'श्रीमद्भागवत' में लिखा है कि भगवान् के स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार के रूपों का श्रवण करके पहले स्थूल रूप में चित्त को स्थिर करे, फिर धीरे २ वहां से हटाकर उसे सूक्ष्म में लगा दे।

कृपाकर उक्त पंक्तियों के अर्थ की कठिनाई का समाधान करने का कष्ट करें। तथा स्थूल रूप और सुक्ष्म रूप क्या है इसे भी सुलझाने की कृपा करें।

प्रश्न नं. २—दूसरी बात यह है कि जैसे खाना खाने के करीब ३ घन्टे बाद प्राणायाम करने का विधान है। तो कृपया इसका भी समाधान करें कि केवल दूध पीकर कितनी देर बाद प्राणायाम कर सकते हैं, तथा यदि फल खाया जाये तो उसके कितनी देर बाद कर सकते हैं?

उत्तर--१—प्रारंभिक कक्षा के जिज्ञासुओं के मन को प्रभु की ओर आकृष्ट करने हेतु भगवान् के स्थूल स्वरूप के दर्शाने के लिये पत्थर, सुवर्ण, चान्दी, पीतल, काष्ठ आदि अन्यान्य पदार्थों की मूर्तियां बनाई जाती हैं। स्थूल दृष्टिकोण से मूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस किसी भी पदार्थ की बनी है वही पदार्थ है। परन्तु वही दृष्टिकोण श्रद्धा भक्ति से युक्त हो जाता है तो वही स्थूल मूर्ति भगवान् का स्वरूप ज्ञात होता है। यह ज्ञान सद्बुद्धि से होता है। उसी से व्यक्ति स्थूल को छोड़कर सूक्ष्म तत्व में प्रवेश करता है। स्थूल काया से बुद्धि सूक्ष्म है, किन्तु आत्मदर्शन की भावना से वही बुद्धि जड़ है। प्रकृति जन्य पदार्थों में स्थूल और सूक्ष्म का भेद तो है। स्थूल प्रत्यक्ष प्रमाण होने से सामान्य बुद्धि तुरन्त ग्रहण कर लेती है। इसलिये प्रारंभिक अवस्था के साधकों के लिये मूर्तिके ऊपर भगवान् के स्वरूप का ध्यान करने को कहा जाता है। यह अवस्था तभी तक रहती है जबतक साधक को प्रकृति के मूल सिद्धान्तों का पता नहीं लगता। जबतक मन्द बुद्धि और अज्ञान रूपी तिमिर है तभी तक मूर्ति को अपने लक्ष्य को पाने के लिये केन्द्रित करना पड़ता हैं। फिर जैसे २ ध्यान में प्रगति होती जाती है, फलतः पुरुष और प्रकृति का भेद स्पष्ट होने लगता है और स्थूल सूक्ष्म का भेद स्पष्ट हो जाता है, जैसे वृक्ष लतादि, जल-स्थलादि, अग्नि आकाशादि, सूर्य चन्द्रादि का स्वरूप स्थूल है और इनसे भिन्न आकारादि रहित पदार्थ सूक्ष्म गिने जाते हैं।

भागवतादि अनेक ग्रंथ में सर्व सामान्य जनता के मन मंदिर में रहे हुये स्थूल दृष्टि, जड़ भावना, अज्ञान, सन्देहात्मक विचार दुःख के कारणों से दूर होने का स्थूल उपाय आदि बताये गये हैं। अज्ञानावस्थामें मूर्तिका दर्शन, पूजन, वन्दन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आश्रय लिया जाता है। जैसे बाल्यावस्था में अक्षर ज्ञान कराने के लिये बालक को कोई भी चिन्ह, बताकर उससे कहा जाता है कि यह अमुक अक्षर है, बाद में उसे जब ज्ञान हो जाता है तो उसे इस प्रकार कहने की जरूरत नहीं रहती। इसीसे भागवत में कहा गया है कि पहले आकार प्रकारवाली वस्तुओं को समझो फिर निराकार-सूक्ष्म वस्तुओं में चित्त का ध्यान लगाओ।

उत्तर-२— गरिष्ट भोजन जल्दी पच नहीं सकता इसलिये ही ३ घंटे से अधिक समय के अन्तर से आसन-प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिये। दूध, फल सेवन के बाद १ या २ घंटे के बाद जब शरीर हल्का मालूम पड़े योगाभ्यास करें। अल्पाहार के १ घंटे के बाद भी योगाभ्यास किया जा सकता है। समय की मात्रा तो आहार की सात्विकता पर निर्भर है। यदि अल्प मात्रा में सात्विक आहार लिया गया हो तो थोड़े से समय के बाद से भी अभ्यास कर सकते हैं। और मैं तो ऐसे ही नौलीकर्म, आसन, प्राणायाम कर लेता हूँ।

छैल बिहारी गुप्त हाथरस

प्रश्नपत्र ४-प्रश्न १— मैं जब कोई भी चीज खाता या पीता हूँ (सिर्फ चाय को छोड़कर) तो मेरे सीने में गले के निचले भाग में दर्द होता है। और लेकिन चाय पीते समय ऐसा नहीं होता है। और मेरे सारे शरीर में दर्द होता है। मेरी अभी कुछ उम्र भी नहीं है। सिर्फ १७ साल की है। कृपया इस दर्द का क्या कारण है। और यह किस प्रकार ठीक हो सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सुबह आसन भी करता हूँ। मगर होते नहीं है। लेकिन जब खाना खा लेता हूँ। फिर कोई आसन करूँ, तो वह शीघ्र ही हो जाता है। उसमें कठिनाई नहीं होती लेकिन भूखे पेट पर आसन नहीं होते हैं। जैसे सर्वांगासन में खाली पेटपर पाँव ऊपर उठाकर जमीन से नहीं छूते हैं लेकिन भरे पेट पर छू जाते हैं। ऐसा क्यों? तथा इसी प्रकार जानुशिरासन में पाँव सीधा नहीं होता है। लेकिन भरे पेट पर बहुत कुछ सीधा हो जाता है। कृपया कारण बतावें।

उत्तर-१— चाय पीते समय दर्द नहीं होता है और अन्य वस्तु के सेवन करने पर दर्द होने के अनेक कारण होने संभव हैं। जैसे त्वचा की कोमलता, उष्णता का अंश अधिक, पित्त विकार, अन्न प्रणाली का संकोचन आदि। इन सबमें पित्त-विकार होने की संभावना अधिक समझनी चाहिये। अनेकानेक रोग ऐसे होते हैं कि प्रत्यक्ष परामर्श कर निश्चित रूपमें समझने की आवश्यकता होती है।

उपचार— दिन में दो बार नींबू का शर्बत सेवन करें। तली हुई वस्तुओं का सेवन छोड़ दें। मिर्च मसाले की मात्रा में अत्यधिक कमी करें। आसन का अभ्यास प्रातःकाल स्नान के बाद करें। आकर्ण धनुरासन २ मिनट, शलभासन २ मिनट करें। पद्मासन में बैठकर नासिका के दोनों छिद्रों से १० बार दीर्घ श्वास प्रश्वास करें। ३ मास तक यह अभ्यास चालू रखें। आसनाभ्यास के लिये तनिक हिम्मत से परिश्रम करना पड़ेगा। शरीर की संधियाँ कड़ी हो जाने से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसन करने में कठिनाई मालूम पड़ती है। अभ्यास से अवश्य ही शरीर लचीला होता है।

उपरोक्त आसनों के साथ अन्य आसनाभ्यास भी कर सकते हैं। छाती, पेट कमर, हाथ पैर के सांधों के लिये भिन्न २ प्रकार के आसन हैं वे सब आसन हरदिन नियमित करिये। जिस आसन में कठिनाई मालूम पड़ती हो उसका अभ्यास देर तक करने से अधिक लाभ होगा। आसनाभ्यास से प्राणायाम करने की शक्ति बढ़ जाती है। अनायास प्राणायाम होने का लाभ भी प्राप्त होता है। वायु निरोध से मनकी गति में परिवर्तन होता है। मनकी चंचलता दूर हो जाती है। मन पवित्र के साथ एकाग्र भी हो जाता है अतः नित्य नियमानुसार आसनाभ्यास चालू रखिये।

श्री फूलचन्द्र मिश्र अलीगढ़
प्रश्न पत्र ५ प्रश्न-१

तीन वर्ष से मेरी कमर में बाईं ओर दर्द रहता है। बीसियों दवा खा चुका हूँ। स्वास्थ्यसंबंधी नियमों का यथा योग्य पालन करता हूँ। मेरी आयु ८१ वर्ष की है। कृपया यह बतायें कि यह दर्द किस प्रकार दूर हो सकता है।

उत्तर १— आपकी आयु अधिक है। जैसे २ उमर बढ़ती जाती है वैसे २ संधियों में कठोरता आती जाती है। ४० या ५० वर्ष की आयु के पश्चात् शरीर की सप्तधातुएँ सुचारू रूप से काम नहीं कर पातीं। इसीसे योगाभ्यास के बारे में अधिक महत्व दिया गया है। आप इस प्रकार के आसन नहीं करते जिससे सर्वांग को उचित प्रकार से व्यायाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता हो। हाथों के लिये भुजंगासन, लोलासन, मत्स्यासन, पावों के लिये शलभासन, उत्थानपादासन, गरुड़ासन, पेट के लिये नौली कर्म, पवन मुक्तासन, सुप्त धनुरासन, कंठ के लिये उर्ध्वसर्वांगासन, सर्वांगासन। कमर के लिये शलभासन, पश्चिमोत्तानासन, जानुशिरासन, सुप्त वज्रासन, मत्स्यासन में से आप कमर के लिये जो आसन अनुकूल समझें उसीको अधिक समय ध्यान से करते हुये अन्य आसनों का अभ्यास चालू रखें।

बड़ी उमर वालोंको तेल मालिश से भी लाभ होता। तेल मालिश करके आधा घंटे के बाद स्नान कर आसनाभ्यास कीजिये। यह क्रम हर रोज चालू रखें। बादाम, माल कांगणी, सरसों, तिल्ली, नारियल अथवा नारायण तेल में से किसी भी अनुकूल तेल की मालिश कर सकते हैं। सायंकाल के समय शुद्ध हवा तथा पवित्र स्थान में यथा शक्ति २ से ३ मील तक घूमने को जायें।

आहार ऐसा लिया करें जो जल्दी से पच सके। जैसे गेहूँ का दलिया, चावल, मूंग की दाल, सब्जियाँ, मीठे फलों का रस और दूध। वर्ज्य पदार्थ टिमाटर, नींबू, खट्टे अंगूर और अन्य खट्टी वस्तुयें।

आनन्दस्वरूप अग्रवाल मेरठ शहर

पत्र ६– प्रश्न १—

मैं हमेशा पेशाब करने के बाद पानी की प्यास अनुभव करता हूँ क्या ये किसी होनेवाले रोग के आसार है या नहीं या स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं सविस्तार उत्तर दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न नं० २— मुझे कभी भी अच्छी भूख नहीं लगती सदैव थोड़ा २ खाना खाता हूं। सुबह ८ बजे १ या २ प्याला चाय कुछ नाश्ता जैसे टोस्ट या कोई तली नमकीन चीज १२ बजे रोटी (चावल दाल) ६ बजे शाम फिर खाना १२ व ६ के बीच में कुछ सब्जी वगैरह पर अब ऐसी इच्छा होती है कि खाना दिन में एक बार ही लिया करूं आप संक्षेप में समझाइयेगा।

उत्तर–१— पेशाब कर लेने के बाद जल की प्यास लगती है यह अनारोग्य का लक्षण है। आपके शरीर में खुश्की अधिक मात्रा में हैं। शरीर में चिकने पदार्थ की मात्रा कम है और जठराग्नि तेज है।

उपचार— आहार में शुद्ध और ताजे घी का यथेष्ट सेवन करें। मुखमें काली किशमिश रखकर उसे मुंह से निकलने वाले रसों के साथ घुला मिलाकर रस युक्त कर निगल जावें। स्नान के समय प्रातःकाल ५ से १० मिनट तक कटिस्नान करें। दिन में २ से ३ सेर ठंडे जल का सेवन करें। सप्ताह में तीन दिन रामतीर्थ ब्राह्मी तेल की सारे शरीर और सिर में मालिश करें फिर १० मिनट के बाद ठंडे जल से स्नान करें। स्नान करने से पहले छाछ में चिकनी मिट्टी ४ तोला और २ तोला चने का आटा मिलाकर सारे शरीर और सिर पर लेपन करें। फिर स्नान करें, साबुन का उपयोग न करें। ऐसा करने से आपकी शिकायत दूर हो जायेगी।

उत्तर २— विशेषतः वकील, डाक्टर, अध्यापक आदि बुद्धि जीवियों को शारीरिक श्रम नाममात्र ही होता है। बिना शारीरिक श्रम किये भूख नहीं बढ़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौलीकर्म, कपालभाति, शीर्षासन १० मिनट, शवासन ५ मिनट, मयूरासन १ मिनट, पूर्ण पद्मासन २ मिनट, सिंहासन १ मिनट करें। आपके भोजन का प्रबन्ध अच्छा है फिर भी साथ में सलाद (गाजर, टमाटर, पात गोभी मूली) लेना जरूरी है। भोजन के बाद मौसंबी, संतरा, चीकू, अंजीर आम आदि फल जो ऋतुमें उपलब्ध हों उनका सेवन करें। सलाद और फल से पाचन शक्ति बढ़ाने के साथ २ भूख भी बढ़ जाती है। मल विसर्जन तथा सप्त धातुओं की शुद्धता बढ़ जाती है। हर एकादशी के दिन निराहार उपवास रखें क्योंकि १५ दिन में एक बार पेटको आराम देना रूजरी है।

प्राकृतिक चिकित्सा-साहित्य का अग्रदूत

'प्राकृतिक जीवन'

प्रधान सम्पादक : डा० के० आर० दिलकश
संयुक्त सम्पादक : डा० गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर'

एक प्रति—३७ नये पैसे : वार्षिक ४) रुपये मात्र

स्वास्थ्य सम्बन्धी सुन्दर और उपयोगी साहित्य के साथ अपने प्रश्नों के उत्तर लें। शंकाओं का समाधान करावें तथा अपने स्वास्थ्य को उन्नत करने, नीरोग रखने तथा दीर्घजीवी बनने के उपाय जानें। आज ही ४) रुपया भेजकर ग्राहक बन जाइये और मौका न चूकिये। नमूने की प्रति मुफ्त मंगावें।

कार्यालय—
आरोग्य निकेतन, डालीगंज
लखनऊ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[श्री रामतीर्थ योगाश्रम के व्याख्यान खंड में हर शनिवार सायंकाल ७ बजे और हर रविवार प्रातःकाल १० बजे व्याख्यान होता है। उसके सारांश रूप में आश्रम समाचार स्तंभ से प्रकट किया जाता है। सप्ताह में एकबार आश्रम के संचालक योगीराज श्री० उमेशचन्द्रजी का व्याख्यान होता है और एक बार अन्य आगन्तुक उच्चकोटि के योगी, ऋषि, महात्मा, साधु संत एवं प्रखर विद्वानों का व्याख्यान होता है। बहुधा सप्ताह में एक बार शारीरिक आरोग्य और एक बार आत्मदर्शन के बारे में योग, वेदान्त, भक्ति आदि के बारेमें सार्वजनिक सत्संग होने से सर्व धर्म के अनुयायी वर्ग इस सत्संग का लाभ उठा सकते हैं।

—व्यवस्थापक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्ता—वैद्य श्री विश्वेश्वर नारायण शुक्ल, साहित्य रत्न, बी., एससी, आयुर्वेदाचार्य।

विषय—यकृत रोग निवारणार्थ आयुर्वेद चिकित्सा

[वैद्यराज जी का परिचय—पंडित जी की वर्तमान आयु ८० वर्ष की है। फिर भी आपका मनोबल तथा शारीरिक बल युवकों के समान है। आपकी सभी इन्द्रियां सतेज तथा सशक्त हैं। आपके विचार उच्च कोटि के हैं। आपके विषय में एक विशेष बात यह है कि आप व्याख्यान के समय अनेक प्रकार की ताजी (हरी) तथा सूखी वनस्पतियां प्रदर्शनार्थ साथ में लाते हैं और भाषण करते समय श्रोताओं को औषधिका नाम, गुण, स्वभाव रूप आदि का वर्णन करते हुए उपचार बताते हैं; कम से कम ३०-४० वनस्पतियों को आप प्रत्येक व्याख्यान में साथ लाते हैं। आपकी स्मरण शक्ति इतनी प्रबल है कि हर बात का व्यौरे वार विवरण प्रस्तुत करते हैं। फलतः श्रोता वर्ग का मन मुग्ध हो जाता है और आनन्दित हो उठते हैं। आप कन्नड़, तुळु, मलयालम, कोंकणि, मराठी, हिन्दी, गुजराती, अंग्रजी, तामिल, तेलगु, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के जानकार पंडित हैं। आपके अनेकों पुत्र पुत्रियां हैं। पुत्र अच्छे वेतन भोगी हैं अर्थात् आपका सुसंपन्न परिवार है फिर भी आपका जीवन सरल और सादा है। आप अधिकांशतः देहली, मद्रास बम्बई, कोयंबतूर में भ्रमण करते हैं। आपके गुण, कर्मों, व स्वभाव की जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी ही है। —सम्पादक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय मित्र बंधुओ तथा बहिनो ! मेरी उम्र आज ८० वर्ष की है। बचपन से ही मेरा आयुर्वेद की ओर झुकाव था। मेरे माता पिता जी आयुर्वेद के प्रति अतीव निष्ठा रखते थे। पहले के समय में डाक्टरों की संख्या बहुत ही कम थी, वह भी बड़े २ शहरों में पाये जाते थे। जैसे आजकल शारीरिक पीड़ा दूर करने के लिये हर घड़ी डाक्टरों का सहारा लेने की एक आदत सी बन गई है वैसे उस जमाने में न थी। किसी भी प्रकार की बीमारी हो जाने की दशा में घर के लोग बड़ी उमर वाले ज्ञानी जनों या प्राकृतिक चिकित्सा एवं आयुर्वेदिक चिकित्सकों की सलाह ले लेते थी। तुरन्त धर्म का आश्रय लेकर आहार में परिवर्तन आवश्यक होने पर उपवास, मिट्टी का प्रयोग, मालीश, मानसिकोपचार, सूर्य किरण चिकित्सा तथा आयुर्वेद के आधार से रोग अच्छा किया जाता था। आज के जैसे व्यसनी लोग उस समय न थे। तम्बाकू और चाय का आज जैसा प्रचार न था। व्यसनाधीन व्यक्ति का शरीर तथा मन दुःखदाई बन जाते हैं और सदा दुःखी रहते हैं।

मेरा स्वानुभव

मैं जब १६ वर्ष का था तब मुझे पित्त कामला का रोग हो गया था। मेरे पिता श्री ने मुझ से गरिष्ठ अन्न का त्याग करा दिया। चने और उसका उबाला हुआ पानी, गन्ने का रस, नारियल का पानी, दूध, तथा फलों का रस देना शुरू किया। फलतः ३ दिन में ही मैं रोग मुक्त हो गया। रोग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तीन दिनों में हाईस्कूल में जाना तथा अन्य घरेलू कर्म चालू थे।

आयुर्वेद में सर्व प्रथम पथ्य के ऊपर ध्यान दिया जाता है। पथ्य प्राकृतिक चिकित्सा का माध्यम है। आयुर्वेद में प्राकृतिक चिकित्सा का आरंभ होता है। पश्चात् शरीर में जिस तत्व का (रस का) का अभाव है। उस रस की पूर्ति की जाती है।

सज्जनो! प्राचीन काल में आज कल के से उपाधिधारी वैद्य न थे। आयुर्वेद के निष्णात ऋषि पुनर्वसु आयुर्वेद विषय के विशेषज्ञ थे। अध्ययन, अध्यापन, तथा स्वानुभव से रोगियों के रोग दूर कर दूसरों के कल्याण का अभय मार्ग अपनाते थे।

मानव देह और आठ प्रकार के कुंड

भाइयो तथा बहनो! हमारे शरीर में आठ प्रकार के कुण्ड हैं। पुनर्वसु ऋषि कहते हैं कि 'ज्ञातानि अष्ट कुण्डानि'। सर्व प्रथम आठ प्रकार के कुण्डों का जानना जरूरी है। इन्हीं कुण्डों में रोग के उदय होने की संभावना रहती है। यदि इन कुण्डों को प्रारंभ से ही सशक्त व शुद्ध रखा जाय तो रोगों का भय हमें नहीं सतायेगा। इन आठ कुण्डों में दांतों का अर्थात् मुख प्रथम कुण्ड है। अतः मसूढ़े, दांत तथा जीभ को स्वच्छता पूर्वक नीरोग रखें। इसका उपाय है—मात फल को नींबू के रस में मिश्रण कर दांत, मसूढ़ों तथा जीव पर थोड़ी देर तक लगावें फिर जल से धो डालें। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखरूपी प्रथम कुण्ड को शुद्ध रखना चाहिए।

द्वितीय कुण्ड मलद्वार है। उसे स्वच्छ रखने के लिये गणेश क्रिया (यौगिक क्रिया) और बस्ती कर्म (योग के छः प्रकार के कर्मोंमें से एक है) आयुर्वेद की दृष्टि कोण से सागर गोटा के अन्दर की गुद्दी को जल में अथवा छांछ में घिस कर गुदा द्वार में ३ घण्टे तक लगा रहना चाहिए। मलावरोध के कारण मलद्वार दूषित एवं दुर्गंधि युक्त रहता है। अधिक समय तक यही अवस्था रहने से बवासीर होने का डर रहता है या पेट में गैस उत्पन्न होकर अन्यान्य रोग होने का भय रहता है। कृमि रोग भी हो सकता है। जैसे एनीमा के जल में नमक, अरंडी का तैल, छाछ, और अन्य वनौषधियों को मिलाकर उसके प्रयोग से सारे मलद्वार का मल साफ कर उसे रोग मुक्त किया जाता है। वैसे ही सागर गोटा के प्रयोग से कृमि रोग का निवारण एवं मलद्वार को स्वच्छ रखा जा सकता है। मानव शरीर में स्थित आठ कुण्डों में मलद्वार द्वितीय कुण्ड है और इसे ही योग की भाषा में मूलाधार चक्र कहते हैं और इसी का अधिष्ठाता देवता गणेश है।

तृतीय कुंड जठर याने उदर है। जठराग्नि मंद हो गई है अथवा तीव्र है ऐसा आम कहने में आया करता है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जठर का साफ रखना आवश्यक है। वेखंड (वज गुजराती में) को चावल के पानी में घीस कर प्रातःकाल १ से २ तोला जल का सेवन ३ से ५ दिन तक करें। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जठराग्नि प्रदीप्त होगी, अधिक प्रमाण में शरीर में रहे हुए वात, पित्त, कफ यथा प्रमाण में होकर मन्दाग्नि दूर हो जायगी। क्षुधा बढ़ जायगी। पेट हल्का मालूम पड़ेगा।

चतुर्थ कुण्ड मूत्र द्वार है। शरीर के आन्तरिक और बाह्य हरेक अंग को स्वच्छ रखने से सदा नीरोग रहा जा सकता है। कुटिकि (कटुकि) के टुकड़े को अच्छी तरह से चबाकर रस का सेवन रात्रि में सोते समय कर पश्चात जल का सेवन कर लें। यदि दूध का सेवन करना हो तो ३० मिनट बाद करें। इससे रुक-रुक कर मूत्र का निकलना, मूत्र रोकने में कठिनाई, मूत्र करते समय वेदना, तथा पत्थरी का रोग मिटता है। इसका सेवन ३ से ५ दिन तक करें। पत्थरी रोग की अवस्था में इसका सेवन ७ से २१ दिन तक उसकी अवस्थानुसार करें। जलका सेवन दिन में अधिक मात्रा में करें। वात और कफ प्रधान प्रकृति वाले आजवाईन को जल में उबाल कर ठंडा करके पी लें। पित्त प्रकृति वाले बड़ी सौंफ को जल में उबाल कर ठंडा करके पीयें। प्रकृति के अनुसार नारियल का जल, गन्ने का रस, छाछ आदि का उपयोग करें। ताकि मूत्र पिण्ड, गुर्दे, तथा मूत्र नलिका में किसी प्रकार का विजातीय अशुद्ध द्रव्य उत्पन्न नहीं होने देना चाहिए। भोजन के समय यदि आवश्यक समझा जावे तो २ से ४ औंस जल का सेवन करें। नहीं तो भोजन के ३० मिनट बाद जल पीवें। दिन में दो ढाई सेर जल पीना हितकर है। इससे रोगोत्पादक विजातीय द्रव्य मूत्र द्वारा शरीर से बाहर निकल जाता है। समयाभाव, शर्म, और भयवश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक प्रसंगों में अनेक नर-नारी मूत्र त्याग की वेदना होते हुए भी रोके रहते हैं। जिससे मूत्र में उष्णता का बढ़ जाना, मूत्र पिण्ड की बीमारी, रुक-रुक कर मूत्र निकलना, बार २ मूत्र त्याग की वेदना होना आदि रोग हो जाते हैं।

पांचवां कुण्ड यकृत है। इसे नीरोग रखने के लिए २१ दिन तक गंधिका दिन में ३ बार चबाकर सेवन करें। यह सुगंध युक्त औषधि है। यकृत के लिये विशेष लाभप्रद है। भोजन के बाद पान सुपारी के साथ भी सुगंधिका वनौषधि का सेवन कर सकते हैं। इसके प्रयोग से मधुप्रमेह पित्त-कामला रोग भी मिट सकता है। तथा यकृत नीरोग रहेगा।

छठा कुण्ड प्लीहा है। यकृत के ऊपर जितने विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है उतना ही प्लीहा के ऊपर देना चाहिये। चिरायता के मूल का काढ़ा १४ दिन तक दिन में दो बार एक एक औंस सेवन करने से प्लीहा रोग मुक्त होकर यदि जीर्ण ज्वर, कमजोरी या पित्त ज्वर होगा तो वह भी दूर होगा।

सातवां कुण्ड—दिल गुर्दे याने मूत्र जहां से उत्पन्न होता है। इसके ऊपर भी ध्यान देना जरूरी है। आसकंद (अश्वगंध) का चूर्ण एक छोटे चाय के चिम्मच बराबर ठंडे दूध में दिन में एक बार या २ बार सेवन करें। इससे दिल गुर्दे रोग मुक्त रहेंगे और रक्त शुद्ध होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवां कुण्ड अण्ड कोष है। इसे नीरोग रखने के लिए भी अश्वगंध को दूध के साथ लें।

मित्रो ! आज के व्याख्यान में शरीर में स्थित आठ महत्वपूर्ण कुण्डों के बारे में तथा उनको नीरोग रखने के लिये औषधि के विषय में कहा हूं।

वर्ज्य आहार

शरीर को सदा नीरोग रखने के लिए सदा मांस, मदिरा मच्छली, तम्बाकू, चाय, अधिक मिर्च-नमक-इमली का सेवन नहीं करना चाहिए।

पथ्य आहार

शरीर की आरोग्यता बनाये रखने के लिये दूध, घी, दही, फल, अन्न, दाल, सलाद, गन्ने का रस, नींबू का शरबत लेना चाहिये।

आयुर्वेद औषधसे जीवन तत्व प्राप्त होता है। आसन, प्राणायाम से प्रत्येक शारीरिक अवयव का हलन चलन बराबर रहता है। रोग दूर रखने में योगासन मददगार होते हैं। हमेशा के लिये आसन-प्राणायाम द्वारा लाभ प्राप्त होता है।

आज के कार्यक्रम के अध्यक्ष पद पर श्री योगीराज उमेशचन्द्र जी विराज मान हैं, आप प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद, योग तथा वेद आदि के बारे में अच्छे जानकार हैं। मेरे बम्बई निवास के समय अपने यहां मेरे व्याख्यान का प्रबन्ध करते हैं तदर्थ योगिराज का धन्यवाद करता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्ता—श्रीमती सुमित्रा देवी मिश्राजी बी. ए.

विषय—योग और जीवन

स्थान—श्रीरामतीर्थ योगाश्रम का व्याख्यान कक्ष

आत्म बंधुओं तथा देवियो ! योग और जीवनका घनिष्ट संबंध है। आज पाश्चात्य लोग योग विद्या को अमृत के समान अपना रहे हैं और हम भारत वासी उसकी ओर दुर्लक्ष्य एवं संकुचित वृत्ति अपना रहे हैं। विदेशों में दुर्व्यसनी लोग कम होते जा रहे हैं और अपने यहाँ बढ़ते जा रहे हैं। सुधारवादी सभ्य समाज की परिस्थिति दिनबदिन बाहर से आकर्षक और अन्दर से दुःखदाई बनती जा रही है।

योग विद्या की उदार नीति

सनातन काल से योगविद्या की परम्परा चली आरही है। उसके पुजारी महा भाग समझे जाते हैं। हम महान् मानव उद्धारक ऋषि–मुनि, योगियों की संतान कहलाने में गौरव अनुभव करते हैं, किन्तु उन महा पुरुषों सा आदर्शमय जीवन व्यतीत करने के लिये तत्पर नहीं होते हैं। सर्वप्रथम मन की कमजोरी हमारे में दिखाई देती है। योग, वेदान्त, कर्मकाण्ड, यज्ञ–याग, व्रत नियम के विषय में घंटों व्याख्यान समय समय पर सुना करते हैं। किन्तु अपने जीवन में उतारने के लिये अनधिकारी, समयका अभाव, स्थानका अभाव, देश काल ऋतु अनुकूल नहीं है ऐसे अनेक कारणों से जीवन व्यतीत कर आत्म ज्ञान के मूल को ज्ञात करने का प्रयत्न चालू नहीं रखते। योग विद्या को जीवन में स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने से नर से नारायण बना जा सकता है। योग विद्या के सहारे से मन की शाश्वत शान्ति प्राप्त होगी। उससे जटिल तम प्रश्न सर्व सुलभावस्था में परिवर्तित हो जायगा।

योग विद्या से अन्तःकरण की कमजोरी दूर होगी तथा ८४ लक्ष योनियों से मुक्त होने का महाद्वार खुले जायगा। इस महा विद्या के प्रचार और प्रभाव से सारा जगत एक परिवार में परिणित हो जायगा। किसी भी लक्ष्य-बिन्दु तक हम इसके सहारे आसानी से पहुँच सकते हैं। इसके अभ्यास से मनोवांछित फल प्राप्त किया जा सकता है। इसका सहारा लेने वाला व्यक्ति कभी दुःखी नहीं हो सकता।

मन-प्राण और योग

जिसने मन को जीता उसने प्राण के ऊपर जय प्राप्त कर ली, जिसने मन और प्राण के ऊपर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया उसने सारे जगत को जीत लिया। योग विद्या के बारे में भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्रजी विशेष महत्व देते हुए अर्जुन से कहते हैं कि तू योगी बन जा। योग का मार्ग स्वीकार कर क्योंकि तपस्वियों, ज्ञानियों, व कर्मियों से योगी उत्तम है अतः योगी बन जा।

तपस्विभ्योऽधिको योगी, ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद् योगि भवार्जुनः। गी. ६.४६

योगके विषयमें बहुधा अन्य धर्मों के ग्रंथोंमें उल्लेख रहता है। योग विना धर्म नहीं है।

आत्म स्वरूप बन्धुओ तथा बहिनो! आज के व्याख्यान में योगविद्या क्या है? इसके विषय में आप लोगों ने सुना। वर्तमान समय में मेरे पतिदेव अमेरिका के विभिन्न शहरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में योग विद्या का प्रचार कर रहे हैं। तदर्थ १० सेन्टरोंमें व्याख्यान तथा प्रत्यक्ष वर्ग चला रहे हैं। अमेरिका के सभ्य समाज के उच्चस्तरीय नर-नारी अधिक संख्यामें लाभ उठा रहे हैं। मेरे पतिदेव जब पिछले दिनों २ मास की स्वदेश यात्रापर आये थे तो आपके कई स्थानों पर प्रत्यक्ष व्याख्यान हुए थे। श्री रामतीर्थ योगाश्रममें भी एक बार भाषण हुआ था। अमेरिका में व्याख्यान सुनाने के लिए व्यवस्था की जाती है, सुननेवालो के लिए टिकट रखा जाता है। वे व्याख्यान सुनने के लिए धन व्यय करते हैं। ऐसा होने पर भी हजारों की संख्या में नर-नारी व्याख्यान सुनने के लिए आते हैं। व्याख्यान खंड खचाखच भर जाते हैं और यह सब होता है समय के पांच मिनट पहले ही। सब बिना शब्द किये अपनी अपनी जगह पर शान्तता से बैठ जाते हैं। जाते समय व्याख्याता की प्रशंसा, बहुमान तथा प्रेम भावना प्रकट करते हुए जाते हैं। भाषण के दौरान में श्रद्धापुर्वक आवश्यक तथ्यों को नोट करते चलते हैं। यदि योगसंबंधी कोई साहित्य विक्रय के लिए होता है तो उसे भी खरीद देते हैं। वे ऐसा अनुभव करते हैं कि जीवनमें अनुपम घड़ी प्राप्त हुई, जीवन में सफलता की कुंजी अवगत हुई, जीवनोद्धार की सुसंधि प्राप्त हुई। धन्य है। श्रेय है। आनन्द है ऐसे ही अनेक सहानुभूति पूर्ण शब्दोंमें अपने पारिवारिक जनों, साथियों को बताते हैं। व्याख्यान करने वाले का पता नोट करते हैं। उसका तन, मन, धनसे सहयोग करते हैं यह है अमेरिका का अनुभव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचनकार—पं. हेमचन्द्र नरसीभाई

विषय—गीता रहस्य

स्थान—श्री रामतीर्थ योगाश्रम व्याख्यान कक्ष

उपस्थित योगिराज उमेशचन्द्रजी, विद्वद् बंधुओ, तथा माताओ एवं बहिनो ! आज की सभा के अध्यक्ष स्थानपर स्वामीजी (योगिराजजी) बैठे हैं। गीतामें कर्म, उपासना और ज्ञान के विषयमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी ने मार्ग दर्शन किया है। गीतामें वेदान्त का सार ग्रथित कर १८ अध्यायों में विस्तार से लिखा गया है। सकाम कर्म को निष्काम कर्म में कैसे परिवर्तित करना, सगुण उपासना को निर्गुणोपासना में कैसे बदलना और सामान्य ज्ञान से विज्ञान तथा विज्ञान से ब्रह्म ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? इस तथ्य को भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्रजी ने अर्जुन को लक्ष्य कर जगत् हितार्थ गीता का उपदेश किया है।

कर्म से कौन मुक्त रह सकता है ?

सज्जनो ! कर्म से मुक्त रहने के अनेक प्रकार के प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। सुनिए गीता ३-४ में कहा है—

न कर्मणारम्भा नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च सन्यासना देव सिद्धिं समधि गच्छति ॥

अर्थात् किसी भी मार्ग के अनुसार कर्मों को स्वरूप से त्यागने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मनुष्य न तो कर्मों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के न करने से निष्कर्मता को प्राप्त होता है और न कर्मों को त्यागने मात्र से भगवत् साक्षात्कार रूप सिद्धि को प्राप्त होता है।

विवेचन—श्वासोच्छ्वास की गति कर्म से ही होती है। आंखों के द्वारा किसी दृश्य को देखना सूक्ष्म कर्म से होता है। कर्णों से श्रवण करना सूक्ष्म कर्म से होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्राणीमात्र नित्य कर्मोंसे मुक्त नहीं रह सकता, अलिप्त नहीं रह सकता। गाढ़ी निद्रा के समय श्वासोच्छ्वास की गति चलती रहती है। वह सूक्ष्म कर्म है। मलमूत्र त्यागना, भोजन करना, जल का सेवन, संध्योपासन यह सब नित्य कर्मों में गिने जाते हैं। कर्म से अलिप्त रहने का प्रयत्न करने वाले पुरुष चालू कर्म से विरत होकर दूसरे कर्म अपनाते हैं। शरीर विना कर्म के रह ही नहीं सकता!

अब सुनिए भगवान् का आदेश

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वं गतं ब्रह्म नित्य यज्ञे प्रतिष्ठितम्। गी. ३-१५

अर्थात् हे अर्जुन उस कर्म को तू वेद से उत्पन्न हुआ जान और वेद अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। इससे सर्व व्यापी परम अक्षर, परमात्मा सदा ही कर्म रूपी यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

विवेचन—पंच कर्मेंद्रियों से स्थूल कर्म होते हैं। पंच ज्ञानेन्द्रिय से सूक्ष्म प्रकार के कर्म होते हैं। यज्ञ कर्म से होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। केवल मनुष्य तो कर्म के नियमों का पालन करता है, ऐसा नहीं। देव, असुर, किन्नर, भूचर, जलचर, खेचर जीव जन्तु कर्म के नियमों का पालन करते हैं। विना क्रिया कर्म के कोई भी प्राणी अलिप्त नहीं रह सकता। इस नियम का उल्लंघन कभी यदि कोई करता है तो वह मनुष्य ही करता है मानवेतर प्राणी नहीं।

हमारे ऋषि मुनि योगियों ने सनातन काल से ब्रह्मचर्य गाहर्स्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम वासियों के लिये कर्म के परिवर्तन का स्वरूप बतलाया है। अतः कर्म से सर्वथा मुक्त रहने के लिए नहीं कहा है। कर्म के फल को त्यागते हुए और फल की इच्छा न रखते हुए कर्म करना चाहिए ऐसा कहा है। सर्वथा इच्छा विना कर्म करने की कठिनाई प्राप्त होगी। इस हेतु सकाम कर्म को निष्काम कर्म में परिवर्तन करें। निष्काम कर्म से अन्तःकरण में षट्रिपुओं का स्थान न रहने पायेगा। पवित्र अन्तःकरण में परमात्माका मूल स्वरूप जानने में कठिनाई नहीं आयगी। यह नित्यकर्म नैमित्तिक कर्म की परिभाषा है। निंद्य कर्म का सर्वथा त्याग कहा है। आपत्तिकाल में भी स्वधर्म पालन करने वाले पवित्र कर्म के पुजारी कहे जावेंगे। 'प्राण जाय पर वचन न जाय' पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के अभय वचन के अनुसार विचार शक्ति महान् सिद्धिमें परिवर्तित हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(कहानी)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्मत का खेल

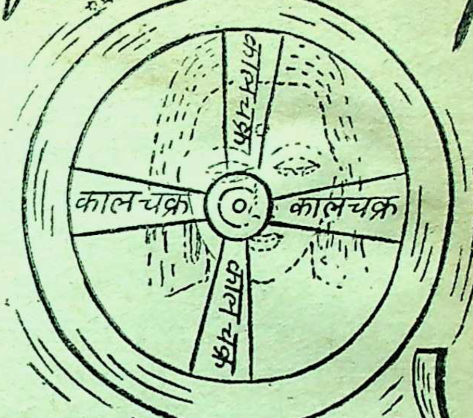

लेखक
वीरेश्वर फडके
(मुंडाजे)

कमला एक अमीर पति की पत्नी थी। उसके पति नारायण सोने के व्यापारी थे। घर में किसी वस्तु की कमी न थी। कमला हर रोज नई नई साड़ियां पहनकर रंग बिरंगे पतंगों के जैसे देखनेवालों का मन लुभा लेती थी। लक्ष्मी तो उनके यहां पंगु बनकर पड़ी थी। कमला के दो बच्चे थे। उनमें बड़ा एक स्कूल जा रहा था। दूसरा अभी छोटा था। कमला के घर में धन जितना भी हो, फिर भी कोई भिक्षुक घर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वार पर आया तो उसको मुट्ठी भर चावल भी न मिलता था। कोई मेहमान घर आये तो शतप्रयत्न करके उसे घर से भेज देने की कोशिश होती थी। धन उस घर में जितना ही हो तो भी ऐश्वर्य की अभिलाषा उन्हें अभी पूरी नहीं हुई थी। उनके घर में कोटि संख्या में रुपये जमे हुये थे। घर के लोग तो अपने आडंबर के लिये चाहे जितना भी खर्च करते, फिर भी औरों को एक पैसा भी नहीं मिलता था। उनका बेटा बड़े ठाटबाट से ही स्कूल जाता था। इन दंपतियों को लक्ष्मी के साथ घमंड भी एक वरदान ही था। रहने के लिये उन्हें दुमंजिला मकान था। फिरने के लिये मोटरकार थी। हर रोज सिनेमा जाते थे। हर पंद्रह दिन कहीं दूर प्रवास के लिये निकलते थे। तो भी एक पाई, किसी को कर्ज के रूप में भी न मिल सकती थी।

* * * *

एक दिन, दुपहर का समय। पांच साल का एक बालक दीनवदन होकर गलियों में फिर रहा था। उसे एक बड़ा दुमंजिला मकान नजर आया। वह धीरे से उस मकान की तरफ चला। वह था एक भिखारी। उसे खाना खाये दो दिन बीत गये थे। शरीर पर एक चिथड़ा भी न था। पूर्ण नंगा था। दो दिन से भात न मिलने के कारण पेट और पीठ चिपक गये थे। शरीर तो इतना कृश था कि हृदय की हड्डी और पसलियां आसानी से गिनी जा सकती थीं। इस तरह यह दरिद्र बालक किसी कट्टर के कलेजे को भी पानी पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देता था। वह कमला के मकान के आंगन में आया और "भिक्षा दीजिये" कहते चिल्लाया।

कमला अंदर रेडियो पर एक मधुर गान सुनती बैठी थी। बेटा स्कूल गया था। छोटा बच्चा वहीं बिस्तर पर सोया हुआ था। रेडियो पर इस वक्त, इस तरह स्वर्गीय संगीत सुनते, बाहर एक आर्त हृदय से आई हुई "भिक्षा" की आवाज कमला को कैसे सुनाई देगी? भिखारी बालक ने फिर कई बार चिल्लाया। चिल्लाते चिल्लाते उसका गला सुख गया, और बाद को उसके मुंह से शब्द न निकल सके। आखिर उसमें खड़े रहने की ताकत भी न रह गयी। वह "हाय माँ!!" कहते मूर्छित हो जमीन पर गिर पड़ा।

कमला को इसका कुछ भी पता ही न था। वह संगीत में तन्मय होकर, इस लोक से दूर, एक दूसरे ही लोक में फिर रही थी। उस भिखारी बालक ने बाहर से इतना चिल्लाया कि अंत में वह बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर भी कमला के कानों पर वह आवाज पड़ी ही नहीं। मालूम नहीं, ये कान ही थे या पत्थर के टुकड़े! कहाँ यह रेडियो का स्वर्गीय संगीत, और कहाँ उस दरिद्र दुःखार्त बालक की करुणाभरी वेदना की आवाज!

रेडियो सुनते सुनते कमला को आखिर नींद आ गयी। वह नींद की झेंप से पास ही बिछे हुये बिस्तर पर धड़ाम से गिर गई। भिखारी बालक तो बाहर के आंगन में चिल्लाने की शक्ति भी न होते बेहोश होकर गिर पड़ा, और कमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो का मधुर संगीत सुनती सुनती उसी में तल्लीन होकर बाह्य जगत् का ज्ञान भी न होते नींद के मारे बिस्तर पर गिर पड़ी। इतना ही फरक था इन दोनों में !

जब कमला ने आंखें खोलीं, ठीक उसी समय दीवार पर रखी घड़ी ने "ठन् ठन्" करके पांच बार आवाज दी। कमला झट से उठी तो अभी रेडियो पर विविध भारती का सुमधुर कार्यक्रम सुनाई दे रहा था। उसको अब मालूम हो गया कि, रेडियो की बेट्री बहुत ही खर्च हो गयी है। फौरन ही उसने रेडियो आफ किया, और मुंहपर पानी लगाकर बाहर आयी। इसी वक्त बेहोश भिखारी बालक को होश आ रहा था। वह धीरे से उठ बैठा। जब कमला ने उसे देखा तो पूछा,-"तुम कौन हो ?" "माँजी, कुछ खाने को दीजिये। खाना खाकर दो दिन बीत गये हैं।" बालक ने उत्तर दिया। कमला के हृदय में, वह करुणापूर्ण दृश्य देखकर भी, दया तिलमात्र भी उत्पन्न न हुई। वह डांटकर बोली, "ए छोकरे, क्या, तु भिक्षा मांगने आया है ? तुझे काम करने को क्या, अपने हाथों पर भगवान् बैठा है क्या ? जल्दी हट जा यहां से। यहां कुछ न मिलेगा।" कमला का जवाब सुनकर बालक को दुःख उमड़ आया। तो भी उसने पहले से भी अधिक दयापूर्ण बातों से फिर कहा, "अम्मां, मैं भात खाये दो दिन बीत गये। मेरी मां भी नहीं है। वह भी दो दिन पहले परलोक चल बसी। अब तो मैं अकेला हूं। भूख से मर रहा हूं। खड़े रहने की ताकत भी मुझमें बची नहीं। कुछ खाना दे दें तो मरते दम तक आपका एहसान मानता रहूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला को गुस्सा आया। उसने कड़ककर कहा, "तू अभी यहाँ से निकलेगा या नहीं? तुझे भात कहां से दूं? यहां कुछ न मिलेगा। तुरन्त हट जा यहां से। नहीं तो तेरी दशा अच्छी नहीं होगी। हूं.... जल्दी!"

कमला का लोहे की तपी हुई पट्टी के जैसा जवाब सुनकर बालक जर्जरित हो गया। उसमें आगे बोलने की न ताकत थी, न हिम्मत भी थी। वह आग्रह से अपने पैरों को खींचता हुआ, वार बार पीछे देखते देखते वापस लौट गया।

*　　*　　*　　*

केशवरायजी नामी वकील थे। रोज उनके यहां मुवकिलों की भीड़ ही जमी रहती थी। बड़े बड़े मुकदमों को उन्होंने आसानी से जीत लिया था। इसीलिये अपने मुकदमे लेकर लोग उन्हीं के यहां आते थे। केशवरायजीने बहुत ही धन कमाया था। नगर के हरेक बैंक में भी उनका एकाउंट था। फिरने के लिये मोटरसाइकिल थी। रहने के लिये बड़ा मकान था। मुवकिलों के साथ बातचीत करने के लिये अलग ही एक बड़ा कमरा था। घरके द्वार पर सदैव एक अल्से-शियन कुत्ता पहरा देता था। घर के सामने फूलों का बड़ा बाग, उसमें फूले हुये, रंगबिरंगे, खुशबूदार, विविध जाति के फूल, देखनेवालों के मनको इतना लुभा देते थे कि उसके दर्शक उस लोक में अपना अस्तित्व ही भूल जाते थे। इससे मिलनेवाला जो आनन्द था वह स्वर्गीय आनन्द था। कुल मिलाकर कहें तो केशवरायजी के घर के फूलबाग की सजा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वट देखकर ही लोग आसानी से कह सकते थे कि यह बड़े अमीर हैं।

वकील साहब का वैशिष्ठ्य यह था कि वे इतने बड़े आगर्भ श्रीमंत होनेपर भी, उनमें घमंड तिलमात्र भी न था। बड़े दयालु आदमी थे। घर के द्वार पर कोई आया तो उसे वे आदर से ही अच्छा भोजन खिलाते थे, चाहे वह भिखारी ही क्यों न हो? गांव में जो कोई बड़े२ अफसर आये तो उन्हीं के यहां ठहरते थे। बच्चों पर केशवरायजी का जो प्यार था,— अवर्णनीय था। बच्चे कहीं दिखाई दें तो भी उन्हें प्यार से बुलाकर पेप्परमेंट या चाकलेट खिलाते थे। गरीब विद्यार्थियों को बहुत ही धन सहाय करते थे। इस तरह वे साधु तथा सुशील होकर नगर में बड़े कीर्तिवान् हो गये थे। नगर का हरेक व्यक्ति भी उनकी प्रशंसा करनेवाला था।

सुशीला केशवरायजी की पत्नी थी। जैसे उसका नाम था उसी प्रकार वह बड़ी सुशील थी। केशवरायजी इतने बड़े धनवान होकर भी उन्हें एक चिन्ता सदा दुःख दे रही थी। वह यह थी कि उन्हें कोई संतान न थी। इसी चिन्ता से वे अकसर तंग रहते थे। इसीलिये वे पराए बच्चों को बहुत ही प्यार करते थे।

एक दिन दुपहर के वक्त एक नंगा भिखारी बालक उनके घर आया। और "भिक्षा दीजियेगा" कहते अपनी करुणापूर्ण ध्वनि से चिल्लाया। केशवरायजी उसकी, कलेजा पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेवाली आवाज सुनकर पिघल गये। उसका नंगा शरीर, आसानी से गिनी जानेवाली उसके हृदय की हड्डियां, दो दिन से भात न मिलने के कारण उसके पेट की दशा देख कर केशवरायजी की आंखों में आंसू आ गये। उन्होंने उस बालक से पूछा, "बेटा, तुम कितने दिनों से भूखे हो?" "दो दिनों से!" भिखारी ने जवाब दिया। बाद को केशव-रायजी को उसके साथ बतचीत करने की इच्छा न हुई। उन्होंने तुरन्त ही एक नौकरानी को बुलाया और कहा कि, इस बालक को ले जाकर अच्छी तरह नहलाओ, और पेटभर खाना खिलाओ। नौकरानी बालक को अन्दर ले गयी और वकील साहब की आज्ञा का पालन किया। बालक को अब यह सब स्वप्न सा दीख पड़ता था। पेटभर खाना खाने से उसके हाथ पैरों में एकदम एक नवचैतन्य का उदय हो गया। उसके मुख की छबि ही बदल गयी। अच्छी तरह से नहलाने के कारण उसका मुख शुभ्र तथा सुन्दर दिखाई देने लगा।

केशवरायजी आफिस में अकेले किसी सोच में बैठे हुये थे। तभी वह बालक धीरे २ उनके आफिस में आया, और प्रसन्नता से पूछा, "दादा, मैं जाऊं?" केशवरायजी उसकी ध्वनि सुनकर अपने आलोचना लोक से बाहर आये और सामने खड़े बालक को देखा। पूर्णचन्द्र की भांति बालक के मुख ने रायजी को आकर्षित कर लिया। उन्होंने प्यार से, उसके मुंह की कान्ति देखकर, उसे अपनी ओर खींच लिया, और प्रेम से उसके गाल को चूम लिया। उसे अपने अंक पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिठाकर उन्होंने पूछा, "बेटा, क्या कहा ?" बालक ने फिर प्रश्न किया, "दादा, मैं जाऊं ?" मगर रायजी यह नहीं चाहते थे कि वह बालक अपने घर से जाये। उन्होंने पूछा, "बेटा, तुम कहां रहते हो ?" "मैं तो फिरता ही रहता हूं, मेरा घरबार नहीं है। मेरी एक मां थी। वह भी दो दिनों के पहले मुझे अकेला बनाकर स्वर्गस्थ हो गई। मैं इसी तरह भिक्षा मांगकर फिरता हूं। जहां रात हुई वहीं सो जाता हूं।" लड़के की करुण कहानी सुनकर रायजी खिन्न रह गये। "तुम यहीं रहोगे ? तुम्हें स्कूल भेजकर अच्छी तरह से पढ़ाऊंगा। तुम्हें खेलने के लिये अच्छे २ खिलौने ला दूंगा। मेरी भी कोई संतान नहीं है। तुम मेरे बच्चे बनकर रहोगे क्या ?" उन्होंने पूछा। लड़के को और क्या चाहिये था ? उसने खुशी से अपनी सम्मती दे दी। इसके बाद रायजी और सुशीला उसे "रामनाथ" कहकर पुकारने लगे। वे दोनों उसका पालन पोषण बड़े प्यार से करने लगे। उन दोनों ने रामनाथ को अपनी ही संतान माना। वह स्कूल जाने लगा। पढ़ने में वह बहुत ही होशियार था। इसलिये अध्यापक भी उसे प्यार करने लगे। उसके पालक, केशवरायजी और सुशीला, रामनाथ की विद्यालय की प्रगति देखकर खुश होते थे। इसी तरह पंद्रह वर्ष बीत गये।

केशवरायजी अब बूढ़े हो गये थे। उन्होंने अपनी सारी जायदाद, रामनाथ के नाम पर लिख दी थी। रामनाथ एम., एस. सी. तक पढ़ कर कालेज में लेक्चरर बन गया था। उसे अब हर महीने में पांच सौ रुपये वेतन के रूप में मिलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। अभी वह वकील साहब की आज्ञानुसार उनको विधेय होकर रहता था। इसलिये रायजी को उस पर दिन ब दिन प्यार बढ़ता ही गया था। उसको भी रायजी के संपर्क में, दयालुता, न्यायपरता, गरीबों के प्रति आदर भाव, ये सब अच्छे गुण आये थे। रायजी की तरह लोग उसकी भी प्रशंसा करते थे।

एक रविवार के दिन दुपहर का समय था। वकील साहब भोजन के बाद आरामकुर्सी पर लेटे हुए थे। रामनाथ भी छुट्टी का दिन होने के कारण एक पुस्तक लेकर पढ़ रहा था, इसी समय दरवाजे पर 'अम्मां, भिक्षा दीजिये' की ध्वनि रामनाथ को सुन पड़ी। वह आवाज उसकी परिचित सी लगी। तब कुतूहल से उसने बाहर जाकर देखा तो दंग रह गया।

एक जमाने में बड़े अमीर, साहूकार नारायण की पत्नी कमला आंगन में खड़ी थी। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। रामनाथ ने तुरन्त ही उसे पहचान लिया। मगर कमला रामनाथ को न पहचान सकी। उसकी हालत देखकर रामनाथ को बड़ा दुःख हुआ। कमला के गतवैभव के संदर्भ में एक दिन कमलाने दो दिनों से भूखे रामनाथ को निर्दई होकर होकर भगाया था। उस समय उसकी आंखों को दुनिया दीख नहीं पड़ती थी। किन्तु रामनाथ को वह घटना कभी ही भूल गई थी। कालचक्र के घुमाव में कमला और रामनाथ के जीवन में कैसी उलट-फेर हो गई! लक्ष्मीधीश, साहूकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायण की पत्नी हाथ में भिक्षापात्र लिये भिखारी बनकर निकली है। पिछले दिनों में आवारा होकर, भिक्षा मांगते, कहीं कोई मुट्ठी भर दिया भात खाकर जीवन चलाया हुआ रामनाथ, आज श्रीमंत वकील केशवरायजी के आश्रय में पलकर, एम. एस.सी. तक का विद्याभ्यास पाकर, कालेज में लेक्चरर का काम करते हर माह में पांच सौ रुपये तनख्वाह पा रहा है। केशवरायजी की कमाई लक्ष संपत्ती का अधिपति रामनाथ! कालचक्र के कारण क्या से क्या हो गया!

रामनाथ ने कमला को अन्दर बुलाया। उसे पेट भर भोजन कराया। इसके बाद उससे पूछा कि, मामला क्या है, कमला अपनी कहानी सुनाने लगी। तभी उसको मालूम न था कि रामनाथ कौन है। उसने शुरू किया—

"मैं पहले एक बड़े अमीर की पत्नी थी। मेरे पति सोने के व्यापारी थे। मेरे दो बच्चे थे। उनमें बड़ा बालक पांच साल पहले मैसूर से आते समय मोटर की आक्सिडेंट में......परलोक वासी हो गया।"

कमला ने एक बार आंचल से, बहते हुए आंसुओं को पोंछ लिया, और फिर शुरू किया।

"इसके बाद लड़के की मृत्यु के दुःख से हमने चार साल बिताये। एक रात में मेरे पति, बेटी तथा मैं सोये हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में लग भग बारह बजे के वक्त गरम हवा से जाग पड़े। गरम हवा जोर-जोर बहने लगी तो हमने बाहर आकर देखा कि हमारा मकान जल रहा था। हम भय के मारे जोर से चिल्लाए। लेकिन आधी रात को हमारी चिल्लाहट किसको सुनाई देगी! फिर भी बहुत चिल्लाने से आधे घंटे के बाद कई लोग इकट्ठे हुए। इसके अन्दर ही सारा मकान जल गया था। इसके बाद लोग आकर भी क्या करते? बचाने के लिये भी वहां शेष कुछ न या। इसलिये आये हुए लोग भी वापस लौट गये। हमारी सारी सम्पति अग्निदेव की आहुति बन गई। हमें पहनने के लिये भी वस्त्र न था। जो हमारे शरीर पर था उतना ही बचा था। और क्या करें? लड़की को अनाथ आश्रम में भिजाया गया। मेरे पति बदनाम को सह न सकें, और मुझ अकेली को छोड़कर कहीं भाग गये। मैं अकेली क्या करूं आत्महत्या के लिये दो बार कोशिश की। मगर लड़की की याद आकर हिम्मत हार बैठी। अब तो भीख मांगती फिर रही हूं। जबतक शरीर में प्राण पंखेरू रहेगा तबतक इसी तरह दिन बिताऊंगी। यही मेरी कहानी है।" इतना कहकर कमला ने अपनी कहानी खत्म कर दी, और फिर आंसू पोंछ लिये।

रामनाथ एक चित्त से कमला की दुःख पूर्ण कथा सुन रहा था। उसकी आंखों से अनजाने ही अश्रुधारा बह रही थी, कहानी के खत्म होते ही वह निजलोक पहुंचा और एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्षण तक सन्नाटे में आ गया। बाद को उसने पूछा—'अम्मां

(किस्मतका खेल)

क्या आप मुझे पहचान सकते हैं ?' कमला ने एक क्षण तक गौर से उसे देखा, मगर वह अभी रामनाथ को न पहचान सकी। उसने अचरज से पूछा—'बेटा तुम कौन हो ? मैं तुम्हें पहचान नहीं सकती।' रामनाथ ने भी अपना सारा वृत्तांत सुनाया। सुनकर कमला दंग रह गई। उस दिन की घटना जिस दिन कमला ने भूखे रामनाथ को, बिना भिक्षा दिये भगाया था, याद आकर, अपमान से उसने सिर झुकाया। कुछ क्षण के बाद उसने कहा—'रामनाथ, मुझे क्षमा दो! मैंने उस दिन तुम्हें मुट्ठी भर भी भात न देकर भगाया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मगर....तुम...उसे याद न रख लेना बेटा! मैं अपराधिनी हूं! फिर भी मुझे तुमने आज आदर से भोजन कराया! तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी नहीं भूलूंगी। भगवान् तुम्हें मंगल करें। कमला रोने लगी।

रामनाथ ने उसे बहुत समझाया। कमला के हृदय परिवर्तन से उसे बड़ा आनन्द हुआ। इससे रामनाथ ने कमला को अपने यहां ही रहने को कहा, कमला की बेटी शांता को वह अनाथाश्रम से ले आया।

शांता की उम्र अब सोलह वर्ष की थी। वह अब सयानी हो गई थी। जन्म से ही वह बहुत खूबसूरत लड़की थी। अब तो उम्र के कारण, उसके सौन्दर्य में और भी मुग्धता तथा लावण्य समा गया था। इसके कारण वह प्रत्यक्ष रति सी दीख पड़ती थी। रामनाथ भी स्फुरद्रूपी तथा गुणवान युवक था।

एक दिन एक मंगलमय मुहूर्त में शांता और रामनाथ का विवाह बड़ी धूमधाम से हो गया। रामनाथ का मधुर संसार प्रारंभ हुआ। केशवरायजी और सुशीला, रामनाथ का विवाह अनायास से ही हो चुकने के कारण फूले न समाये। कमला भी उन्हीं के साथ रहने लगी।

विधि के सामने हमारा कुछ नहीं चलता। कालचक्र के उलट फेर से क्या से क्या हो गया? किसी आदमी को भी काल को झुककर रहना होगा। कहा भी है कि 'कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर।'

—जयमंगलम्—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वानुभव

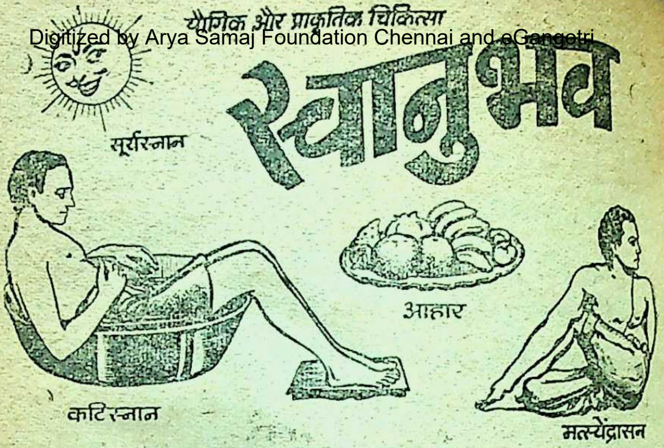

मैं २४ वर्षीय युवक हूं। नवयुवकों में योगाभ्यास तथा सत्संग करने की आदत नहींवत् है। वे यह समझते हैं कि ४०-५० वर्ष की आयु के पश्चात् ही भगवान् भजन, समाधि, वेदांत, महात्माओं के उपदेशामृत का पान करने का समय है। इस प्रकार की भावना मेरी भी कालेज जीवन में थी।

दुर्दशा के कारण

विशेषतः दुःख की आपबीती ही लिखी जाती है। एम.ए., पी. एच डी. की उपाधि की परीक्षाकाल में मेरी बड़ी दुर्दशा हुई। अस्थिर मन था। स्मरणशक्ति कमजोर पड़ गई थी। बार-बार दिन में नींद मुझे घेर लेती थी। छाती में धड़कन बढ़ने लगी। लगातार १ घण्टे तक किसी भी विषय को दत्त चित्त होकर लिखना पढ़ना मेरे लिये दूभर हो गया। ऐसी दशा में मुझे जीवन नीरस लगने लगा। मन में ऐसे विचार बार २ आने लगते कि मैं उत्तीर्ण न होऊँगा, व्यर्थ परिश्रम है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता में दिन काटने पड़ेंगे । उन्नति में बाधा आ गई । जीवन बर्बाद होगया ।

एकान्त और परिवर्तन

परीक्षा नहीं दी । भूतकाल के संस्मरण तरंगों के समान मन में आने लगे । सिनेमा, सिग्रट, पिकनिक में जीवन शक्ति का दुर्व्यय । विभत्स कहानियां, धारावाहिक उपन्यास को पढ़ना, तमोगुणी आहार का सेवन, माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन, धन का भोग बिलास में खर्च, दुर्व्यसनी मित्रों का समागम, कलबों में रात्री के १२ बजे तक ताश, बैट मिंटन बिलियार्ड और अन्य खेलों में समय व्यतीत करता, २४ घण्टे में केवल ४ घण्टे नींद लेता, वर्ष भर में केवल परीक्षा के दिनों में १५ दिन नियमित अभ्यास करना शेष दिनों में केवल ४ घण्टे प्रति दिन पढ़ता । इस प्रकार के जीवनयापन से जीवन में अशान्ति घर कर गई थी । मुझे अच्छे वेतन की नौकरी मिलेगी और मैं माता-पिता के साथ सुख से जीवन बिताऊंगा । ऐसा विचार मन में ही रह गया । कार्य रूप में परिणित होने के आसार कम नजर आने लगे ।

ऐसी दशा केवल मेरी ही हो ऐसा नहीं, किन्तु कालेज के अनेक छात्र-छात्राओं की यही दशा है । मेरे पिता जी नित्य प्रति योगाभ्यास करते हैं । सत्संग के प्रेमी हैं । दयालु स्वभाव के हैं किसी के हानि पहुंचाने पर भी क्षमा कर देते हैं । प्रभु कृपा से उनकी आमदनी अच्छी है । उच्च कोटि के अनेक व्यक्तियों से जान पहचान है ।

एक दिन मैंने डरते २ अपनी दुर्दशा को पिताजी सम्मुखके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख दिया। पिता जी बोले—'बेटा! मैंने तो बार २ प्रेम से तुम्हें दुर्दशा के कारण से बचने के लिए तथा योगाभ्यास सत्संग करने को कहा करता था। तुमने समय पर माना नहीं अब कष्ट उठा रहे हो। इसका मुख्य कारण तुम्हारी माता के सदुपदेश का अभाव तथा माया से प्रेम करने का आदेश था अर्थात् मिथ्या प्रेम के वशीभूत होकर अनेक माताएं बच्चों को कुमार्ग से दूर रहने के लिये कोई रुकावट नहीं डालतीं। बेटा आज से मेरा कहना मानो। अबका वर्ष व्यर्थ तो चला ही गया है अगले वर्ष तुम पहले नम्बर में आओगे, ऐसी मैं गारंटी देता हूं। सत्संग तथा योगाभ्यास में महान शक्ति निहित है। अभी तुम तो २४ वर्षीय नवयुवक हो। आज से तुम चिन्तामुक्त रहो। अब तक के किये गये दुर्व्यवहारों की आपबीती को श्री रामतीर्थ योगाश्रम द्वारा संचालित मासिक रामतीर्थ में प्रकाशनार्थ प्रायश्चित स्वरूप लिख भेजना और सम्पादक जी से निस्संकोच निवेदन करना कि मेरे समान भारत भर में अनेक नवयुवक युवतियां दुःखी होंगे। मेरी आपबीती के कारणों को पढ़कर उनकी आंखें खुल जायेंगी। तन-मन-धन से दुःखी छात्र छात्राओं को जीवन दुःख से सुख में बदल देने का मौका प्राप्त होगा।

उन लोगों का धन्यवाद मुझे न मिलकर मेरे पिता श्री तथा आपको मिलेगा। इतने में ही मैं अपना जीवन सफल समझूंगा।

सदा आज्ञाभिलाषि
कार्तिकेय विश्वंभर दीक्षित
इम्फाल (मणिपुर राज्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबला सबला भी है

लेखक
श्री महादेव बा. पालकर
सा. रत्न, पारगत

अत्यन्त आश्चर्यों से और अद्भुत आविष्कारों से आविर्भूत आजकल का अवरोध वैज्ञानिक-युग अपने प्रचण्ड वेग के साथ प्रगतिपथ पर बढ़ रहा है। इसकी रफ्तार के साथ ही संसार के जन मानस में भी परिवर्तनीय प्रगतिपर धारणाएं दिन ब दिन जुड़ती-बढ़ती जा रही हैं। लेकिन इस विचित्र लीलामय संसार में कुछेक लकीर के फकीर भी हैं। इनके दिमाग में कहिये या अनुभव में भूत-भविष्य वा वर्तमानकाल की कल्पना की झलक तक नजर नहीं आती है। यहां पर हम दुनियावालों को छोड़ देंगे; सिर्फ अपने स्वदेश के बगुले भगतों की विचारवाहिनी में दिव्य जोत रूपी (बेलगांव शहर में घटित सत्य घटना का वर्णन करके) नांव बहाकर अमरशक्ति के स्वरूप दर्शन (भारतीय सति शक्ति) करायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज भी अपने स्वतंत्र भारत में ऐसे बुद्धू लोगों की कमी नहीं है कि "अबला केवल अबला ही है, वह प्रबला अथवा सृष्टि की सर्व शक्तियों से पूर्ण सबला नहीं है।" हां, यहां पर हमें यह लिखते हुये महान् राष्ट्रीय कविश्रेष्ठ श्री मैथिलीशरण गुप्तजी के मानस के मार्मिक अंश का जरूर स्मरण हो आता है कि.......

"अबला जीवन ! हाय ! तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में दूध और आंखों में पानी !!"

समष्टिरहित व्यष्टिपूर्ण दृष्टिकोणों से तथा जगज्जननी अबलाओं को अनादर की सीमापर खड़े करनेवालों को यह सदा ध्यान में रखना जरूरी है कि पुरुष के समान ही नारियां भी सृष्टिकी याने तीनों गुणशक्तियों से (राजस, तामस व सात्विक) परिपूर्ण हैं, थीं और रहेंगी। इस निर्विवाद निर्णय को समझने के लिये सुज्ञ पाठकों से नम्र निवेदन है कि निम्नांकित सत्य घटना का वर्णन जरूर पढ़ें। सत्यकथा के चित्रण के पूर्व हम महाभारत के निम्न दिव्य दृष्टांत का उल्लेख प्रसंगोचित समझते हैं। महाभारत में महाराजा धृतराष्ट्र ने कहा है कि "सति द्रौपदी की क्रोधपूर्ण दृष्टि से सारी पृथ्वी भस्म हो सकती है।" जी हां, वास्तव में सतियों में ऐसी ही अमरशक्ति होती है। कारण उनके मानापमान से विराटशक्ति प्रतीक रावण और कौरवों जैसे महारथी लोगों का भी सत्यानाश हो गया। तो अब औरों की बात ही क्या है?

कथा एक रात की बात है। उस घोर रात के दो घंटों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमांसपूर्ण प्रसंग ही कथा की सामग्री है। कथा की मुख्य नायिका सुचित्रा बहन है जो स्त्रीयोचित सभी रूपगुणों की संपन्न सौंदर्यराशी की स्वामीनी है। विदुषी होने के साथ ही वीरांगना भी है तथा अपने प्राणप्रिय पतिराज कुंवर सुदर्शनलाल की सेवा, पूजा और आज्ञाओं के कार्यपालन को ही सच्ची सेवा व देवपूजा माननेवाली है। अतः ऐसी धर्मपरायणा सतिसाध्वी सुचित्रा बहन की रक्षा श्री प्रभुने स्वयं करके सतिशक्ति की महत्ता प्रकट करके भारतीय सन्नारियों के पातिव्रत्य को परमशक्ति प्रदान कर गौरवान्वित किया है।

कुंवर सुदर्शनलाल अपनी धर्मपत्नी सुचित्राबहन के साथ बेलगांव शहर में सद्‌सदविवेक रीति से वाणिज्योद्योग द्वारा सुख-शांतिपूर्ण जीवन यापन कर रहा था। चंद दिनों में ही कुंवर सुदर्शनलाल अपने सदुद्योग की कुशलकला की बदौलत अमीरों में गिना जाने लगा व साथ ही इधर अपने घरके अड़ोस-पड़ोस में अपने लालित्ययपूर्ण स्नेहमयी व्यवहार के कारण अपनी सभी सहेलियों की रानी-सी मानी जाने लगी सतिश्रेष्ठ सुचित्राबहन। इस प्रकार पति-पत्नी की जीवननौका अपार सागर की तरफ शांतिपूर्ण विजय पताका फहराती आगे और आगे ही बढ़ी जा रही थी। न जाने आगे चलकर इन मानव प्राणियों की जिंदगी में क्या क्या होनेवाला है? क्या किसी को होनहार के बारेमें ज्ञात हो सकता है? नहीं, होनहार होकर ही रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुचित्राबहन जब तीन साल की थी तभी इसे छोड़कर माँ चल बसी और जब यह ग्यारह साल की हुई तब पूज्य पिता श्री सदा के लिये छोड़ चले गये। अपने बड़े भाई सुरेशकुमार के साथ ननिहाल जाकर रहने लगी। नानाजीने अपने इन मासूम हृदयखंडों को बड़े ही लाड़-प्यार के साथ पढ़ाया-लिखाया तथा वयस्क होने पर पवित्र हिन्दू धर्म के शास्त्रानुसार सुचित्राबहन का विवाह कुंवर सुदर्शनलालजी के साथ कर दिया। जब सुचित्राबहन अपने ननिहाल में थी उस वक्त वह अपने नानाजी के साथ रोज सुबह-शाम हरि-मंदिर आया-जाया करती थी। मंदिर में भगवान् की पूजा, आरती, भजन व कीर्तन के विविध कार्यों में बड़ी ही श्रद्धा से भाग लेती थी। इसके लिये प्रमुख कारण यह भी एक था कि सुचित्राबहन के नानाजी श्रीहरि के बड़े श्रद्धालु भक्त होने के साथ ही साथ नामी कीर्तनकार थे। नानाजी के मुखामृतसे निकली हुई महाभारत, रामायण, भागवत् आदि की कथायें एवं महामहिमामयी-मातायें सीता, द्रौपदी, अहिल्या, तारा, मंदोदरी, सावित्री, अन्नपूर्णा,आदि जगज्जननियों की पुण्य-मयी लीलाओं का श्रवण कर अपने बालमन में ही भविष्य के लिये बड़े लंबे अरमानों की अंबारी खड़ी कर दी थी। अतएव सुचित्राबहन को अपने विवाहोपरांत अपने पतिराज कुंवर सुदर्शनलालजी में ही श्री भगवान् का स्वरूप पाना साहजिक तमन्ना-सी थी।

घरके अन्य कार्यों को करने के लिये पतिराज ने नौकर रखने की इच्छा प्रकट की, मगर सुचित्रा बहन ने मोदमयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा से नौकरों की जरूरत को अनावश्यक बताया। घर के सभी काम मुझे ही करने चाहियें। यही मेरा इरादा है। क्योंकि आप मेरे देवता हैं, आपकी सेवा ही पूजा है, आपकी सफलता ही मेरी सफलता है। सारांश यह कि पति-पत्नी एक दूसरे के परम हितैषी, मधुर भाषी, तथा परमात्मा के निष्ठावंत भक्त श्रेष्ठ होते हुये सामाजिक जीवन में स्वर्गीक सुख संसार विहार कर रहे थे। ऐसे ही दिनों में एक दिन की रात को एक कामान्ध धनलोलुप नरपिशाच ने अपने भयानक तथा क्रूर कारस्थानों से भारतीय ललना सुचित्राबहन के शील और मनोधैर्य की सत्व परीक्षा ली थी।

उस रातको अमावस्या थी। चारों ओर घोर अंधेरी-रातने अपने सन्नाटेपन का साम्राज्य फैला रखा था। कहीं भी हलकी सी एक प्रकाश की किरण नहीं दिखायी देती थी। दैवयोगसे उसी रात कुंवर सुदर्शनलाल अपने मित्रों के साथ राजा हरिश्चंद्र-नाटक देखने बाहर चला गया था। नित्यकर्म से निपटकर सुचित्राबहन भगवन्नामस्मरण के साथ निद्रा-देवी की शरणमें लीन हो गयी है। नाटक रात के तीसरे प्रहर के बाद छूटने वाला था। अचानक यह क्या ?? सुचित्राबहन की आँखें खुल गयीं। क्या सपने में अमावस्या का भूत सम्मुख हुआ या बिजली ही शैतान के रूप में सामने नाच उठी ? भयानक मुखाकृति काले रंग से पूर्ण है, एक हाथ में पिस्तौल और दूसरे में कालीमाता की जिह्वा की तरह चमचमाती खंजर ! खूँखार आवाज और भरेपूरे छः फीट के लंबे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौड़े मजबूत मानवाकृति का नृशंस नरराक्षस सुचित्राबहन के सम्मुख दो बजे की रात के घोर अंधेरे में प्रकट हुआ।

'सोना-चाँदी, रुपये-पैसे सबके सब फौरन मेरे हवाले करो! वरना.......'

भयानक मुखाकृति की खूँखार आवाज के साथ वाक्य सुचित्राबहन के कान तक पहुँचा और उक्त वाक्य पूरा होते ही पिस्तौल की एक गोली हवा में तीक्ष्णध्वनि के साथ गूँज उठी तथा दूसरे हाथ की खंजर झट सुचित्राबहन के सीने तक पहुँचकर सहसा रुक गयी।

अहा! भाग्य! क्षणभर में तेरा यों काया पलट! एक अबला नारी पर, सुकुमार कुसुम कली पर, तेरा यों प्रहार! न जाने भगवान् को क्या मंजूर था!! सुचित्राबहन की जिंदगी में प्रलय मच गया। भाग्य फूट पड़ा। पति बिछुड़ गये। संसार की माया मर गयी। दिल पत्थर बना। स्वगृह मौत सी हुई। अरमान आकाश में उड़ गये। शरीर काँप उठा। हृदय रो पड़ा, कंठ सूख गया। सिसकियाँ सिकुड़ने लगीं और अपने आप ही आँखें बंद होने लगीं मगर मन से धैर्य तथा जबान से भगवन्नाम दूर न होने पाये। दोनों कैसे दूर हो सकते! बालपन के ये उसके साथ रहे थे। अतः ऐसे भयानक संकट काल में भी हरिने ही सुचित्राबहन को एक युक्ति सुझायी। इतना सब कांड सिर्फ एक मिनट में ही हुआ था।

सुचित्राबहन ने बड़े ही धैर्य के साथ अपनी आँखें खोल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उस नर पिशाच से विनम्र स्वरमें कहा कि 'ओ लुटेरे जी! आप मुझे मत मारिये। मैं तुम्हें जो चाहोगे सो दूँगी, सोना-चाँदी के साथ सभी रुपये दूँगी और अच्छे कपड़े तथा खाने के लिए बढ़िया चीजें भी दूँगी तथा मेरे पति को छोड़कर सदा तुमारे साथ ही रहूँगी ताकि मेरा पति हमेशा सिनेमा-नाटक देखने जाता है इसलिए मुझे कुछ गृहसुख नसीब नहीं हुआ है बल्कि यह सभी मेरी दौलत आपके साथ रहेगी व मैं भी तुम्हारे ही साथ रहूँगी......विश्वास करें और मुझे इस दौलत के साथ स्वीकार करें।" यों कहती हुई सुचित्राबहन ने खुद ही अपने हाथों से संदूकादि खोलकर सोने चाँदी के जेवर तथा रुपये पैसे आदि सामने पेश किये। और ऐसे ही मीठे शब्दों में बोलते हुये एक घंटे में ही सब कार्य याने खान-पान करके कपड़े-लत्ते समेटकर ट्रेन द्वारा दूसरे शहर भाग जाने की तैयारी करने लगी। सतिशक्ति की महिमा ही मानिये या हिन्दू पातिव्रत्य की दिव्य गरिमा!

उस नरराक्षस के नृशंस दिल में कुछ जरूर ही तबदिली हुई। सौंदर्य शालिनी सुचित्राबहन अपार संपत्ति के साथ उसे मुफ्त में मिल रही है। तब क्यों न वह तन की सुध-बुध खोकर आनंद मनाये!!! उसे जरूर ही फूला न समाना होगा। पाँच-दस मिनटोंतक सुचित्राबहन ने उसके रुपये पैसे बटोर ने के काम में मदद पहुँचायी और तुरंत ही एक बड़ी कढाही में तेल गरम करने के लिये रख दिया। तेल काफी गरम करके उसे शीघ्र भोजन के लिए मिठाइयाँ परोसने लगी व ताजी भजिया तथा गरम-गरम पूरियाँ कढाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से निकालकर उस नरराक्षस को परोसती हुई बीचमें पदार्थ खुद खाने लगी। जब वह नरपिशाच खाने में खूब तल्लीन था ऐन मौके पर सुचित्राबहन ने गरमागरम कड़कड़ाते तेल की कढाही एकदम उठाकर उस नरपिशाच पर उंडेल दी। बस, क्या पूछना और क्या देखना! क्षणार्ध में कान के परदे फटने की चिल्लाहट के साथ उस नरराक्षस का शरीर जल-कर रसोई घर भर में इधर-उधर लुढकने लगा।

भयानक रात्री की इस चिल्लाहट से पड़ोसी जाग पड़े। तुरंत ही गली के नर-नारी घटनास्थान पर उपस्थित हुये।

अविलंब कुंवर सुदर्शनलालजीको और पुलीस को इस दुर्घटना की सूचना पहुँचायी गयी।

घोर अन्धेरी रात बीतकर पूर्वदिशा से मंद मंद सूर्य किरणें अपनी आलोक पूर्ण आल्हादित रोशनी के साथ झाँक रही थीं। ठीक इसी समय पुलीस के बड़े अफसर ने जमीन पर पड़ी उस नर पिशाच की पिस्तौल तथा नागिन सा खंजर देखा और सभी ने यह भी देखा कि उस नरराक्षस की काली करतूतोंकी लाश किस प्रकार रक्त नरक में लोट रही है। घटना स्थलपर एकत्र सन्नारियोंने सुचित्राबहन के मनोधैर्य तथा प्रसंगोचित प्रसंगावधान की भूरा-भूरी प्रसंशा करते हुये भारतीय अबलाओं में सबला का तथा दुर्गावतार नारी का दर्शन किया।

सरकारी न्यायमूर्तिने सुचित्राबहन के स्त्री प्रसंगावधान का हार्दिक अभिनंदन किया। समाजने सुचित्राबहन की कार्यवाही को पुरष्कृत किया और अनंत सत्याश्चर्य 'अद्भुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीलामय कर्ता श्री हरिने सुचित्राबहन और कुंवर सुदर्शन-लाल के सुखद जीवन में अगाध भक्ति, ज्ञान, श्रद्धा निर्माण कर जग-जीवन के सम्मुख साफ जाहिर किया कि अबला केवल अबला ही नहीं, बल्कि पतिसेवा के साथ भगवन्नाम द्वारा अमर सतिशक्ति की अधिकारिणी होते हुये पूर्णरूपेण सबला भी है।

भारतमाता की जय!!

वि. सू:—कथा-पात्र के नाम कल्पित हैं और उक्त घटना का चित्रण सत्य है। गत चार साल पूर्व उपरोक्त घटना बेलगाँव शहर में प्रत्यक्ष हुई है।

श्री हरि ॐ तत् सत् !!!

'सम्पदा'

हिन्दीमें अर्थ शास्त्रीय साहित्य का पर्याय बन गई है।
सम्पदा हिन्दी की सबसे पुरानी आर्थिक पत्रिका है।
सम्पदा में सार्वजनिक और निजी उद्योग विषयक संतुलित
और युक्ति संगत दृष्टिकोण

सम्पदा के विशेषांक अनुपम होते हैं।
सम्पदा के स्थायी स्तंभ-योजना, कृषि, उद्योग, श्रम,
परिवहन, कोयला, बिजली, बैंक, बीमा, सर्वोदय आदि
सम्पदा विविध राज्योंद्वारा शिक्षालयों के लिए स्वीकृत है।
सम्पदा छात्रों, कालेज के प्राध्यापकों के लिए आर्थिक
विश्व कोष है।

ज्ञान वर्द्धक, नवीनतम आर्थिक जानकारी से युक्त 'सम्पदा' के आज ही ग्राहक बनिये। वार्षिक मूल्य ८ रु. ५० न. पै. भेजें।
नमूनांक के लिए ६० न. पै. भेजें।

व्यवस्थापक—सम्पदा २८/११ शक्ति नगर दिल्ली ६.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के अभिमत

(१) मैं आपकी रामतीर्थ मासिक पत्रिका को पढ़कर चन्द्र-चकोर की तरह नाच उठता हूं। आपके इस मासिक को पढ़कर ही हमें आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि करने का सुअवसर प्रदान हुआ है। मैं प्रतिदिन नये २ आसनों को करता रहता हूं। यहांतक की २०-२५ आसनों को आसानी से कर लेता हूँ। इसके अलावा नौलिकर्म को भी। मेरी आयु १६ वर्ष की है। मैं विस्तृत-पाद-वक्ष-भूस्पर्शासन का भी प्रतिदिन अभ्यास करता हूं। परन्तु करने का फायदा नहीं जानता हूं। अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे इस आसन को करने का अच्छी तरह तरीका बता दें।

आपका चरण सेवक:- अयोध्यासिंह
१० वां वर्ग (क)
राष्ट्रीय हाईस्कूल डिलियां
डाकखाना:- डिहरी औन सोन।
जिल- शाहाबाद, प्रान्त- बिहार

(२) मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि जब तक रामतीर्थ मासिक के ५१ वार्षिक ग्राहक नहीं बनाऊंगा तब तक रामतीर्थ मासिकके बारेमें अपना मत प्रदर्शित न करूंगा। मेरे इष्ट-मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ से पूछते थे कि "आप रामतीर्थ मासिक के वार्षिक ग्राहक बनाने के लिये इतने आतुर तथा आग्रह क्यों करते हैं ?" मेरा उत्तर हुआ करता था कि "मुझे अनेक प्रकार से रामतीर्थ मासिक के अध्ययन से लाभ हुआ है, उस लाभ से आप लोगोंको वंचित नहीं रखना चाहता।"

अब वही मेरे ५१ मित्र सम्पूर्ण समाधान से मुझे बताया करते हैं कि हम लोग प्रत्येक ५१-५१ रामतीर्थ मासिक के ग्राहक बनावेंगे।

मेरे जीवन में परिवर्तन होने से ही मैं रामतीर्थ मासिक के प्रचार और प्रसार में सहयोग देना चाहता हूँ तथा उसके संचालकों को सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु बधाई देता हूं।

आपका शुभेच्छु
कोदंडराव वि. जगताप
सतारा (महाराष्ट्र)

(३) सफल जीवन की कुंजी उच्च साहित्य में है। अल्प-कालीन समाधान देनेवाले साहित्य के अनुभव से जीवन की प्रगति रुक जाती है। उच्चपदीय एवं जीवनभर प्रेम व आनन्द के अनुभव प्राप्त करने के लिये वैसे ही उच्च कोटि के साहित्य से सदा संलग्न रहना होगा। रामतीर्थ मासिक मेरे जीवन बनाने में उपयोगी हुआ है। हर मासमें नियमित रूप से प्राप्त होता है। किन्तु अपवाद रूप से कभी देर से प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है तब मन प्राप्ति के लिये चिन्तित हो उठता है। आशा है आप हमेशा समय पर ही मासिक भेजनेकी योजना करेंगे।

कृपाभिलाषी
राजकमल वन्द्योपाध्याय
चौबीस परगना (प. बंगाल)

(४) मैं आयुर्वेद का पुजारी हूं। आयुर्वेद चिकित्सामें पथ्य पालन में प्राकृतिक चिकित्सा का अंग रहता है। इतना ही नहीं जैसे योग में ६ प्रकार के मलशोधन कर्म की व्यवस्था है वैसे ही आयुर्वेदिक सिद्धान्त में वमन, विरेचन आदि पंच कर्म की विधि निश्चित है। गहरे विचारों के अन्त में मैं आयुर्वेद विषयक श्रद्धा सम्पन्न हुआ हूं। वनस्पतियों से बनी दवा, योगाभ्यास तथा प्राकृतिक चिकित्सा से युक्त अनेक लेख लगभग हर मास में रामतीर्थ में छपते हैं। मेरी दृष्टि में रामतीर्थ मासिक प्रशंसा एवं जनता–जनार्दन के लिये उत्तम है।

सत्साहित्य जिज्ञासु
श्रीमती कमलाक्षि व्यासराव
ब्रिटिश गायना

(५) मेरे घरके आंगन में बहुत पुराना अश्वत्थ वृक्ष है। जब हवा तेजी से चलती है तब उसके पत्तों की कर्णप्रिय आवाज सुनाई देती है। जब कभी समय मिलता मैं घर में पद्मासन पर बैठ कर ध्यान करती हूं तो हृदय के स्पंदन के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वस्थ वृक्ष के पत्तों की आवाज टकराने लगी, थोड़ी देर के बाद हृदय से ॐ की ध्वनि उठने लगी। तभी से मेरा मन संसार से उदास होने लगा। घर के लोग मेरे प्रति अशांति के मार्ग अपनाने लगे। मेरे पास पुरानी रामतीर्थ मासिक की एक प्रति थी। योंही उसे अवलोकन करने लगी, उसमें मेरी नजर एक स्थान पर पड़ी जहां पर लिखा था—'मानव जन्म सफल करने हेतु संसार में रहते हुए, संसार का कार्य चलाते हुये, आत्म ज्ञान प्राप्त हो सकता है।' मेरे ऊपर उसका इतना असर हुआ कि मैं रामतीर्थ की नियमित ग्राहक बन गई हूं। और नियमित पढ़ती हूं।

सद्गुण ग्राहक

श्रीमती शांताबाई एम. कानाणी।

मांडवी (कच्छ)

(६) जैसे मुखके प्रतिबिम्ब देखने के लिये शीशे की आवश्यकता होती है। वैसे ही जीवन की भूल सुधारने के लिए रामतीर्थ मासिक के समान उत्तम साहित्य की आवश्यकता होती है। पूर्वजों के आदर्श पर न चलकर आधुनिक ढंग के सुधारवादी नर-नारी अपने ही मनमाने ढंग पर चलने की तैयारी करते हैं। उन्हें यह जानना चाहिये कि हमारे पूर्वजों के आदर्श चरित में विशेष जीवनोपयोगी तत्व भरे हैं, इसकी अवहेलना करने से स्वयं और अन्यों को दुःखी करते हैं। मैं आधुनिकता में विश्वास रखते हुए भी पूर्वजों के आदर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर चलती हूं। रामतीर्थ मासिक में आधुनिक तथा प्राचीन शैली का समन्वय होने से अपने जीवन सुधारने में सहायता मिलती है।

गुण ग्रहणाभिलाषिनि
श्रीमती मंदाकिनी शेषनाथ
मडगांव-गोवा

इस साल से मैं ग्राहक हूं। एक दैनिक पत्र में रामतीर्थ का विज्ञापन देखा और रामतीर्थ यहां प्राप्त न होने के कारण एक-दो बार बंगलौर से लाया।

(७) अब मेरा मन चाहता है कि मैं हमेशा के लिये इसका ग्राहक बना रहूं। रामतीर्थ की योजना बहुत अच्छी योजना है। वह पाठक और लेखक सभी के लिये उत्साह और स्फूर्ति देने वाला सर्वोत्तम मासिक है। इसमें महत्वपूर्ण विषय होते हैं।

रामतीर्थ कम दाम में बहुत सामग्री देती है। मैं आशा करता हूं कि रामतीर्थ का प्रचार तेज गति से चले।

आपका सद्भावक
जी. आर. विजय कुमार 'विशारद'
हिन्दी प्रचारक
चिन्तामणी-मैसूर प्रांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति की परंपरा

लेखक
चांदमल महेश्वरी,
एम.ए. बी.एड.

भारतीय संस्कृति का प्रथम प्रतिनिधि-साहित्य 'वेद' है। भारतीय दर्शन की विचार धारा के अनुसार वेद अनादि एवं अपौरुषेय माने जाते हैं। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् मैक्समूलर ने वेदों का रचना काल ईसा से १२०० ई. पूर्व से १५०० ई. पूर्व तक माना है, जब कि लोकमान्य तिलक का कथन है कि वेदों की रचना को अनुमानतः आठ हजार वर्ष हो चुके हैं।

वेद 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है जानना। वेद चार हैं:—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। वेद अधिकांशतः पद्य में हैं और प्रत्येक पद को 'ऋचा' कहते है। वेदों के बाद उपनिषदों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना हुई। इन ग्रन्थों में कर्मकांड की विस्तृत रूप से व्याख्या की गई है।

प्राचीन भारतीय धर्म के दो उद्देश्य माने गये हैं:—प्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्युदय एवं द्वितीय निश्रेयस। सांसारिक अभ्युदय के लिये वे यज्ञों के कर्मकांड में विश्वास करते थे। ब्राह्मण ग्रन्थों में इन विविध यज्ञों की प्रतिक्रिया उनके विधि-विधानों एवं उनसे प्राप्त होने वाले फलों का विशद् रूप में वर्णन किया गया है, परन्तु भारतीय संस्कृति में यज्ञों से प्राप्त होने वाले फलों को ही मानव जीवन का परम लक्ष्य नहीं समझा गया था। निश्रेयस एवं मोक्ष प्राप्ति के लिये चिंतन एवं मनन किया जाता था, ताकि आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हो।

इस काल में आर्य लोग मुख्यतया कृषि पर निर्भर थे। जहां कहीं भी ये एकत्रित होकर रहते तो वह 'ग्राम' कहलाता था। ग्राम का प्रत्येक सदस्य जन एवं उनका मुखिया 'ग्रामीण' कहलाता था। इस प्रकार अनेक ग्रामों के मुखिया 'राजा' कहलाते थे और शासित प्रदेश को राष्ट्र कहा जाता था जनता स्वयं मुखिया एवं राजा को निर्धारित करती थी। राजा दो सभाओं—समिति व सभा—की सहायता से राष्ट्र का संचालन करता था।

यदि तात्कालिक सामाजिक जीवन पर भी दृष्टि पात किया जाये तो हमें ज्ञात होगा कि उस काल के व्यक्तियों का जीवन अत्यन्त सादा एवं उच्च था। पर्दा प्रथा नहीं थी, स्त्रियां समाज के सभी कार्यों में स्वेच्छा पूर्वक भाग लेती थीं। अग्नि, जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी और आकाश आदि विविध देवताओं के रूप में उपासना की जाती थी और उनको प्रसन्न करने के लिये यज्ञादि किये जाते थे।

तत्पश्चात् रामायण और महाभारत का काल आया। इन दोनों कालों में शासन सूर्यवंशी एवं चन्द्रवंशी राजाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हाथ में रहा वर्ण व्यवस्था का ह्रास, कर्मकाण्ड की जटिलता, जाति-पाँति का भेद, यन्त्रों और अस्त्र-शस्त्रों की प्रगति इस काल की मुख्य विशेषतायें रहीं। इस युग के पश्चात् महर्षि वेदव्यास द्वारा अठारह पुराणों की रचना की गई, छः दर्शनों की उत्पत्ति भी इस काल में हुई इस प्रकार भारतीय संस्कृति की निधि चारों वेद, शिक्षा, कला, व्याकरण निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये छः वेदांग, पुराण, न्याय मीमांसा और धर्म शास्त्र ये चार शास्त्र मिलकर चतुर्दश विद्यायें मानी जाती हैं।

वैदिक कालीन हिंसा और बलिप्रथा के व्यापक प्रचार के कारण बौद्ध और जैन धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। वैदिक हिंसा का व्यापक विरोध इन धर्मों का मूल उद्देश्य था, उस समय बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक महात्मा बुद्ध एवं जैनों के २४वें तीर्थकर महावीर स्वामी अवतरित हुये, परन्तु इन धर्मों के प्रवर्तकों के पश्चात् इनके अनुयायियों में भी आडम्बर की वृद्धि होने लगी फलतः भारत में भक्ति प्रधान पौराणिक धर्म का विकास हुआ, जिसमें भागवत धर्म, शैव धर्म के प्रवर्त्तक श्री कृष्ण माने जाते हैं।

गुप्त सम्राटों के समय भारतीय संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार भारत में ही सीमित नहीं रहा अपितु विदेशों में भी हुआ। विदेशों में भारतीय संस्कृति के इस व्यापक प्रचार के कारण ही भारत विश्व का सांस्कृतिक गुरु कहलाया।

इस युग में विदेशों में भी हमारी संस्कृति का जो व्यापक प्रचार हुआ है उसका श्रेय बौद्धों, शैवों, वैष्णवों सभी को दिया जाता है गुप्त कालीन सम्राटों के पश्चात् भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
संस्कृति के पोषक, प्रवर्द्धक और प्रचारकों की श्रेणी में आने वाले जिन आचार्यों एवं सन्तों के नाम स्मरण किये जाते हैं वे अद्वैतवाद के प्रवर्तक श्री शंकराचार्य, विशिष्टाद्वैत के श्री रामानुजाचार्य, द्वैत के माधवाचार्य, द्वैताद्वैत के श्री निम्बाकाचार्य एवं शुद्धाद्वैत के प्रतिष्ठापक श्री वल्लभाचार्य एवं अन्य सन्त, ज्ञानेश्वर, सूर, तुलसी, चैतन्य, समर्थ रामदास, नानक, परमहंस, एवं विवेकानन्द आदि हैं।

अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारत में यवन, शक, यहूदी कुशान, हुण, तुर्क एवं अफगानों के आक्रमण होते रहे। मध्य तथा वर्तमान काल में भी भारत मुगल एवं अंग्रेजों के आक्रमण, शोषण एवं शासन में भी अपना समय व्यतीत करता रहा। इनके विविध प्रकार के सम्पर्क से प्राचीन भारतीय सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक व्यवस्था में थोड़ा बहुत परिवर्तन आ गया लेकिन फिर भी हमारी संस्कृति के मूल तत्व बिलकुल विनष्ट नहीं किये जा सके।

सौभाग्य से आज हम स्वतंत्र हैं, और गत १५ वर्षों में हमने हमारी प्राचीन संस्कृति के चिन्हों पर चलना ही श्रेयस्कर समझा है। अब हमें उन कारणों पर विचार करना है। जिनके आधार पर हमारी संस्कृति के मौलिक तत्वों को हमने विनष्ट होने से बचा लिया है। और संसार के सन्मुख हमने आदर्श प्रस्तुत किया है। प्रथम तो यह है कि भारतीय संस्कृति अपने आप को जिस रूप में अभिव्यक्त करती आ रही है उसकी मुख्य विशेषता अध्यात्म की भावना है। 'जो अपने को सबमें, और सबको अपने में देखता है, वही असल में देखता है।' की विचारधारा में विश्वास करने वाले इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का किसी भी अन्य देश से किसी भी प्रकार का विद्वेष नहीं हो सकता है।

विविध धर्मों एवं देशवासियों के प्रति सहिष्णुता एवं सम्मान का भाव भी भारतीय संस्कृति का प्रधान अंग रहा रहा है। आज भी अशोक द्वारा प्रतिपादित मेल-जोल के सिद्धान्त की भावना भारतीय इतिहास में ओत-प्रोत है। आज भी भारत के महान् विचारक एवं नेता शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बड़ा जोर देते आ रहे हैं। इन व्रतों एवं आदर्शों पर वैदिक, बौद्ध, जैन एवं पौराणिक विचारकों ने भी समान रूप से जोर दिया है। इसमें किसी की भी दो राय नहीं हो सकती हैं, कि हमारे देश की वैयक्तिक एवं सामाजिक साधन के लिये ये (साधन) आदर्श ही मूल-सूत्र रहे हैं। इन आदर्शों को पालन कर जहां हमारे देश के प्राचीन गृहस्थ एवं परिव्राजकों ने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न किया है, वहां हमारे आधुनिक कालीन सामाजिक नेताओं ने भी इन्हीं की साधना में अपनी सम्पूर्ण शक्ति को लगा दिया है।

धर्म + संस्कृति + उपासना और ज्ञान का

प्रचारक मासिक

श्रीधर संदेश

वार्षिक चंदा रु. ४) (वी. पी. की पद्धत बंद है।)

श्रीधर सन्देश कार्यालय

७२२, सुन्दर नारायण, नासिक शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मतेज का प्रभाव

लेखक
प्रो. श्याम मनोहर व्यास, एम.एस.सी.

विशाल सृष्टि के प्राणियों में अनेक गुप्त रहस्यमयी शक्तियां विद्यमान हैं। आत्मतेज भी उनमें से एक है। आत्म तेज क्या है? मन की एकाग्रता के कारण जिस उन्नत मानसिक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, वही आत्मतेज है। सभी प्राणियों में उनके स्तरानुकूल यह आत्मतेज होता है। यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति है जिसका विकास योगीजन योग से करते हैं। ईश्वर भक्ति, योग साधन एवं स्वाध्याय द्वारा इसे विकसित किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलवान बनने के लिये किसी पहलवान से बल-प्राप्ति के साधन पूछने पड़ेंगे, धन पैदा करने के लिये धनवान से धन प्राप्ति के उपाय ज्ञात करने पड़ेंगे, डिग्रियां प्राप्त करने के लिये प्रोफेसरों या अध्यापकों के पास जाकर अध्ययन करना पड़ेगा। इसी प्रकार आत्म तेज को विकसित करने के साधन ज्ञात करने के लिये हमें प्राचीन ऋषि-मुनियों एवं योगियों की शरण में जाना पड़ेगा। उनके रचित पवित्र आध्यात्मिक ग्रन्थों का अवलोकन करना पड़ेगा। मनीषी ऋषियों ने आत्म तेज बढ़ाने के साधन वेद, उपनिषद्, पुराण एवं अन्य धर्म ग्रन्थों में लिपिबद्ध किये हैं।

सुमार्ग का अवलम्बन करने पर आत्मतेज अबाध गतिसे बढ़ता है। आत्मतेज का अत्यधिक विकास होने पर उसका प्रभाव साधक तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि दूर २ तक उसका प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार अग्नि का ढेर जितना विशाल और प्रदीप्त होगा उतना ही दूर उसके तेज का प्रभाव पहुंचेगा। आपने पढ़ा या सुना होगा कि ऋषि-मुनियों की तपोभूमि में जाने पर हिंसक जीव जन्तु और दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति भी अहिंसक बन कर सात्विक बन जाते हैं।

मुनि नारद के आत्मतेज के प्रभाव के कारण बाल्मिकी ने डाका डालना छोड़ दिया और आगे जाकर महान् तपोधनी एवं विश्व विख्यात ग्रंथ रामायण के रचियिता बने। आत्मतेज एक ऐसी शक्ति है जिसके सामने बड़े बली और अत्याचारी भी थर २ कांप उठते हैं। धनी व्यक्तियों का धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का गर्व उनके सामने तिरोहित हो जाता है। आत्मतेजवान् पुरुष के मुखमण्डल पर एक विशेष प्रकार का प्रकाश जिसे तेजस या ओज कहते हैं रहता है और उसके शरीर से आकर्षण-शक्ति की सूक्ष्म तरंगें (वेवस) निकलती रहती हैं। इसलिये जो भी व्यक्ति उसके पास आता है और जितनी देर उसके निकट रहता है कम से कम उतनी देर के लिये तो आवश्यक ही उसके प्रभाव में रहता है।

इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि एक तेजस्वी ने अनेक उपद्रवियों को वश में कर लिया। नैमिषारण्य, विन्ध्याचल और अमरकण्टक क्यों पवित्र और पाप नाशक हैं? इसीलिये कि उनके घनघोर विकट वनों में हजारों ऋषि-मुनियों ने सैकड़ों वर्षों तक तप किया और कर रहे हैं जिसके कारण आत्मतेज की सूक्ष्म तरंगें आज भी वहां व्याप्त हैं।

गंगा और यमुना क्यों पापनाशक व पुण्यदायक सरितायें हैं इसीलिये कि उनका जल महान् ऋषियों की तपोभूमि से बहकर आया है जहां तेजस की दिव्य लहरें चारों ओर व्याप्त हैं एवं इनका जल उन तपोधनियों का शरीर स्पर्शित जल है।

आत्मतेज का दूसरा नाम ब्रह्मतेज भी है।
आत्मतेजस्वी व्यक्ति सदैव निर्भीक होता है।
वह प्रभावशाली व दीर्घजीवी होता है।

वेदों में भी यही प्रार्थना की गई है कि—'हे ईश्वर!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे आत्मतेज से परिपूर्ण करो, तेजस्वी बनाओ।'

वेदों की स्वर्णिम सूक्तियां कहती हैं—

तेजसा दिशऽउद्दृहह। (अथर्व ८।१।६)

अर्थः— 'तुम अपने तेज से दिशाओं को दृढ़ करो।'

आसाऽन्तरिक्षमापृण, ज्योतिषा दिवमुत्तभान। (यजुर्वेद)

अर्थः- ['अपनी ज्योति से आकाश में चमक पैदा करदो। अपनी सामर्थ्य से स्वर्ग को ऊँचा स्थिर करो।']

मनुष्य में ही नहीं पशुजगत् में भी आत्मतेज का होना पाया जाता है। सिंह, सर्प एवं अजगर अन्य पशु पक्षियों की अपेक्षा अधिक तेजस रखते हैं।

अजगर के तेजस के कारण अन्य पशु पक्षी सम्मोहित हो उसकी तरफ खिचे आते हैं।

थियोसोफीकल सोसाइटी की रिपोर्ट में लिखा हुआ था कि एक बार एक चूहे और एक अजगर को इकट्ठा एक पिंजड़े में बन्द कर दिया गया। पहले पहल चूहा घबराया। परन्तु वह घबराहट आकर्षण में परिणत हो गई। चूहा शनैः २ अजगर के निकट आता गया, यद्यपि अजगर अपनी चमकती हुई आंखों के साथ जबड़े खोले अपने ही स्थान पर बैठा रहा। चूहा अन्त में उसके मुंह में चला गया और अजगर उसे पूरा निगल गया।

आत्म तेजस्वी पुरुष शक्तिशाली चुम्बक की तरह है जिसके कारण अन्य न्यूनतर आत्मतेज वाले और निस्तेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112555

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणी उसी की ओर खींचते चले आते हैं और उनके वश में हो जाते हैं। वीरों, वैज्ञानिकों, विद्वानों एवं योगियों में विभिन्न प्रकार का आत्मतेज होता है।

जुलियस सीजर, सिकन्दर महान्, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, नेपोलियन, छत्रसाल, रणजीतसिंह एवं हरिसिंह नलवा आदि में गुप्त आत्मिक शक्ति थी जिसके कारण वे अपनी सेनाओं को वश में रखते थे, हर सिपाही उन्हें देवता तुल्य समझता था। एक घटना है—

नेपोलियन अलबा से वापिस आरहा था। बोर्बान सेनायें उसे पकड़ने के लिये बन्दुकों का निशाना बांधे पंक्ति-बद्ध खड़ी थीं। नेपोलियन पैदल था। वह आते ही सेनाओं की ओर बढ़ा। उसकी आंखें सिपाहियों की आंखों से लड़ रही थीं। सेनापतियों ने गोली चलाने का हुक्म दिया। परन्तु सिपाहियों पर नेपोलियन के आत्मतेज का इतना असर पड़ा कि उनमें से एक ने भी नेपोलियन की तरफ बन्दूक नहीं उठायी। उल्टे सिपाही 'हमारे सम्राट हमारे सम्राट' कहकर उससे मिल गये। महाराजा रणजीतसिंह के सेनापति हरिसिंह नलवा का भी अफगानिस्तान के पठानों पर अपने तेज का अद्भुत प्रभाव था। उसके नाम से पठानों के रोते बच्चे भय से चुप हो जाते थे।

गुरु शंकराचार्य, ऋषि दयानंद, स्वामी विवेकानंद एवं रामतीर्थ तथा योगीराज अरविन्द आदि में भी आत्मतेज प्रचुर मात्रा में था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेले स्वामी विवेकानन्द ने हजारों अमेरिकावासियोंके बीच तीन घण्टे तक शिकागो में भाषण दिया।

श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो उनका भाषण सुन रहे थे। ऋषि दयानन्द जब भाषण देने बैठते थे तब पहले वे नेत्र बन्दकर ध्यान लगाते थे फिर आँखें खोलकर एक दृष्टि से श्रोताओं को देखते।

इस दृष्टि से सब श्रोता चित्रवत् हो जाते और मंत्र मुग्ध होकर उनका सम्पूर्ण व्याख्यान सुनते।

स्वामी रामतीर्थ हिमालय के गहन वनों में अकेले घूमते थे। कई बार शेर, रीछ एवं अन्य हिंसक पशु उनके सामने आये पर सब उनके आत्मतेज के कारण उनका कुछ न बिगाड़ सके और उनके सामने गर्दन झुकाकर चले जाते थे। उन्होंने जापान व अमेरिका जैसे प्रगतिशील देशों को वेदान्त का रहस्य समझाया।

महात्मा गांधी में भी अपूर्व आत्मतेज था जिसके कारण बड़े २ अंग्रेज तक उनके सामने आकर उनसे बात-चीत करने में हिचकते थे।

आपने देखा होगा कि कम व्यक्तियों की उपस्थिति में वक्ता अच्छा भाषण नहीं दे पाता। पर अधिक व्यक्तियों से भरी सभा में वक्ता अच्छा व्याख्यान दे सकता है। इसका कारण केवल यही है कि श्रोताओं की ओजस-शक्ति एक दूसरे के साथ मिलकर बहुत बढ़ जाती है और बोलनेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रभाव को दूना कर देती है। आत्मतेज के कारण मनुष्य कई अलौकिक कार्य करता है जिन्हें चमत्कार कहा जाता है। चमत्कार कोई दुर्लभ वस्तु वस्तु नहीं बल्कि मानसिक शक्ति का ही खेल है। यह आत्मतेज आपमें भी है। इसे विकसित करने की कला सीखिये। मन को कुत्सित विचारों से दूर रखकर स्वतन्त्रतापूर्वक साधना करिये। विरक्त व्यक्ति में आत्मतेज खूब विकसित होता है। तीर्थस्थानों एवं मन्दिरों में जा से आत्मतेज बढ़ता है। गायत्री साधना, सन्ध्या, योग साधना एवं आत्मचिन्तन से आत्मतेज अबाध गति से बढ़ता है। आत्मतेज के विकसित होने पर अनेक मानसिक व शारीरिक रोग नष्ट हो जाते हैं। ब्रह्मचर्य व्रत से आत्मतेज तीव्र गति से प्रस्फुटित होता है। यह सत्य समझिये कि आत्मतेज द्वारा आप कोई भी महान् शुभ कार्य करने में अपने आपको समर्थ पायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(शेष पृष्ठ ८६ का)

१–किसी लक्ष्य तथा समस्या का हल न होना।

२–शारीरिक व मानसिक शक्ति का क्षीण होना।

३–एक ही कार्य करते रहने के कारण और उसमें किसी बाधा का उपस्थित होना।

४–प्रतिरोध के कारण

५–अनुचित व्यवहार व प्रेम का अभाव होना।

६–कामुकता तथा किसी बीमारी के कारण।

७–असत्य बातों तथा निन्दापूर्ण कार्य से।

८–इच्छाओं का दमन करना या वे अधूरी रहना।

९–अनिन्द्रा, पाचन क्रिया की गड़बड़ी आदि से।

१०–भूख व गरीबी के कारण।

११–वातावरण के कारण।

१२–घबराहट, चिन्ता तथा रोष के उत्पन्न होने से।

१३–वक्त के डिगने या कहे हुए कार्य के न करने पर।

१४–किसी बात अथवा असन्तुष्ट कार्य से क्रोध का तन्तु सूत्र उत्तेजित होकर।

जब मस्तिष्कमें अन्य शक्ति रखने वाले तन्तुओंमें सिश्रण हो जाता है, जब अधिक शक्ति का मस्तिष्क में खिचाव होने लगता है उन क्रोध के तन्तुओं का, तब क्रोध का आविर्भाव होता है।

क्रोध का मनोवैज्ञानिक आधार है:—

क्रोध प्राणी के लड़ने की मूल प्रवृति का एक अंग है, जब किसी व्यक्ति अथवा प्राणी से लड़ने की इच्छा रखेंगे तब लड़ने से पूर्व हमें क्रोध करना होगा। क्रोध करना संवेगात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रक्रिया है जो विशेष अवस्था में विशेष परिस्थिति से स्वतः ही उत्पन्न होती हैं। यह आदत जन्मजात होती है। यदि व्यक्ति क्रोध तन्तु सूत्रों को किसी भी रूप में उपयोग नहीं लेता है तब इसका भयानक रूप हो जाता है और कोई बीमारी अथवा बुरी आदत या ऐसी अवस्था में पहुँच सकता है जिससे व्यक्ति की मृत्यु तक हो सकती है, क्रोध की मात्रा बढ़ने पर व्यक्ति बीमार, चिड़चिड़ा, डरपोक, निकम्मा, आत्मविश्वास-हीन एवं मानसिक व शारीरिक रोगी या पागल, बेहोश, लकवे की बीमारी आदि आदि हो सकते हैं। क्रोध दो प्रकार का होता है—१- आन्तरिक २- बाह्य।

आन्तरिक क्रोध में आत्म ग्लानि, नपुंसकता, अव्यक्तित्व, मूर्छा, आत्मभर्त्सना का भाव, मेलन्कोलिया व सभी प्रकार के घातक रोग हो सकते हैं। बाह्य क्रोध इतना हानि नहीं पहुँचाता जितना कि आन्तरिक। इसमें केवल वस्तुओं का तोड़-फोड़ शरीर पर चोट के लगने का ही भय रहता है। व्यक्ति का क्रोध जब तक किसी रूप में या अन्य तन्तु सूत्रों में परिवर्तित नहीं होता तब तक यह शान्त नहीं होता व्यक्ति का मन व मस्तिष्क विचार-जन्य संघर्ष करते रहते हैं। इस पर नियन्त्रण करने की सही, सरल प्रणाली यही है कि उसे किसी अच्छे कार्यलीन तन्तु सूत्रों में बदल दें। दया, क्षमा, प्रेम, सहनशीलता, मौन, शान्ति आदि क्रोध पर नियन्त्रण करने की अचूक दवा है। क्रोध करने से आपही नहीं, आपके परिवार के जन, आपके मित्रगण, आपसे खिन्न रहते हैं और इसका परिणाम कभी २ बहुत बुरा पड़ता है, ऐसी अवस्था में पागलपन, लकवे की बीमारी, मिर्गी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
112555

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमारी (मूर्छा) हाथ पाव का सिकुड़ना आदि रोग हो सकते हैं। आपके व्यक्तित्व का विकास नहीं होता। आपका सामाजिक जीवन प्रायः दुःखी रहता है। क्रोध पर नियन्त्रण करने से आप किसी भी, कैसी भी परिस्थिति में आई हुई कठिनाई का सामना कर सकते हैं, क्रोध पर नियंत्रण करने के लिये पति-पत्नी, भाई-बहन, पिता-पुत्र, बहू-बेटी आपस में क्रोध को प्रेम या अनुशासन द्वारा दमन कीजिये। जिस प्रकार तापमापक यन्त्र में मनुष्य का ताप बिन्दू ९८°६ रहता है और उसके ऊपर ताप अधिक बढ़ने से व्यक्ति को बुखार या निमोनिया आदि की शिकायत होती है उसी प्रकार से आपका क्रोध भी एक विशेष बिन्दू पर रहता है यदि इससे क्रोध ताप अधिक बढ़ गया तो वह शारीरिक व मानसिक दोनों में ही हानिप्रद है। क्रोध से आप फिर कुछ कार्य कर न सकेंगें, आपका सिर भन्नाता रहेगा पूरे दिन और पूरा परिवार एक चहल पहल से दूर शान्त-क्षुब्ध हो आपसे रुष्ट रहेगा।

आप क्रोध को शान्ति में, प्रेम, दया, क्षमा, सहनशीलता तथा वात्सल्य में परिवर्तन करें तो आप अवश्य ही क्रोध पर नियंत्रण पा सकेगें और अनुभव करेंगे की पूर्व के जीवन से अब का जीवन आनन्दमय है। क्रोध आनन्द का बाधक है। आप, आपका परिवार सुखी रहना चाहते हैं, तो क्रोध पर नियंत्राण कीजिये, क्रोध कीजिये किन्तु साधारण। अन्त में स्मरण रखिये कहीं आपका क्रोध तेज तो नहीं है ? यदि आपका क्रोध उग्र रूप धारण करता है तो निश्चय ही कभी आपको हानि हो सकती है। आप बच्चों व परिवार में, चाहे स्त्री हो या पुरुष, क्रोध न करें, क्योंकि इससे मानसिक, शारीरिक व आत्मिक शक्ति क्षीण होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री रामतीर्थ योगाश्रम नियम

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१–इस योगाश्रम में प्रविष्ठ होने के बाद साधक को बीड़ी-सिगरेट, शराब आदि व्यसनों से दूर रहना होगा। यदि ऐसे किसी दुर्व्यसन अथवा दुश्चरित्रता की बात संचालक को मालूम होगी तो उसे किसी अग्रिम सूचना के बिना आश्रम से हटा दिया जायेगा।

२–ली हुई फीस किसी भी दशामें वापस न होगी।

३–टूवाल, नोटबुक, नेति, धौति, ब्रह्मदातून आदि आवश्यक साधन की वस्तुयें उपयोग में लाने के बाद साफ कर निर्दिष्ट स्थान में रखनी होंगी।

४–सामान्य आरोग्य के साधारण अभ्यास में साधक यदि पारंगत समझे जायेंगे, तभी उन्हें योग के अन्तरंग अभ्यास की शिक्षा दी जायेगी इस सम्बन्ध में संचालक को पूर्ण सं[illegible] होना आवश्यक होगा।

५–योगाश्रम के संचालक उचित और सात्विक दा[illegible] स्वीकार कर सकते हैं और उसमेंसे एकत्रित सम्पत्ति संचालक की इच्छानुसार योगविद्या के प्रचारार्थ खर्च की जायेगी।

६–कमसे कम आठ वर्ष और इससे ऊपर की अवस्था वाले ही योगाश्रम में प्रवेश पा सकेंगे।

७–आश्रम में प्रवेश पाने की फीस ५रु. है। रोगियों को रोग के आधार पर अधिक फीस देनी होगी। नीरोगियों के के लिये १ महीनेकी फीस १० रुपये और ३ मास के२७रु. है

८–नवीन प्रवेश पहली या १५ को ही किया जाता है। बीच में प्रवेश करनेवालों की फीस पहली या १५ तारीख से प्रारम्भ मानी जायेगी। साधकको फीस अग्रिम देनी होगी। समय प्रातःकाल ७।। से ९।। और सायंकाल ६ से ७।। है। इन दो में से किसी भी समय को अपने अनुकूल बना सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar